॥ विज्ञापनम् ॥



इस अनादि अनंत ससार मे अनादि काल से वारंवार जन्म मरण करते करते जीव थावर योनि मे रहा, किसी एक अशुभ कर्मकी लघुता से जैसे पहाडी नदी मे पत्थर गुडते गुडते आपसे चिकना और गोल हो जाता है, तैसे जीव भी जन्म मरण करते करते पुण्यप्रकृतिरूप यथाप्रवृत्ति नाम करण से थावर पणे को छोड त्रसपने बेइंद्रियादिक मे उपजता है, अथवा पचेंद्रियतिर्यन्चयोनि मे, फेर किसी एक कर्मकी लघुता से मनुष्ययोनि मे पैदा होता है, उसमे भी शक यवन म्लेच्छ देशको छोड आर्य मगधादि जो साढे पचीस देश हैं उनमे जन्म होना—आर्यदेश मे जन्म होने पर भी अत्यजादि जाति को छोड उत्तम जाति और कुल मे जन्म होना—उत्तम जाति और कुल पाने पर भी सब अगोपाग सुदर प्रमाण सहित होना—शरीर के सुदर होने पर भी दीर्घायु होना—सब अशुभकर्म के कम होजाने और शुभकर्म के बढजाने से होते हैं, नहीं थोडे आयुवाला पुरुष इसलोकसबधी या परलोकसबधी काम कुछ कर सक्ता है, इसी कारण भगवान् वीतरागने भी हे आयुष्मन् (हे बडे आयुवाले) गौतम ऐसा कहके आयुको सब गुणो से बडा दिखलाया है, और भी अशुभकर्म क लघुता से और शुभकर्मके उदय से धर्मकी रुचि, धर्म का उपदेश करने

वाला गुरु और उनके वचन का सुनना मिलजाने पर भी देव गुरु धर्म रूप तत्व पर सच्ची श्रद्धा होना ब हुत दुर्लभ है, जिनोक्त तत्व पर सच्ची श्रद्धा होना यही सम्यक्त है, और सब तो मिथ्यादृष्टियो को भी होता है, यह सब अशुभकर्म के कम होजाने और शुभकर्म के बढने से जीवको मिलते हैं, इस हेतु अशुभकर्म का क्षय और शुभकर्म के बढने मे यत्न करना अवश्य है, अशुभकर्मका क्षय और शुभको बढाने के लिये धर्मके सेवाय और कोई भी यत्न नही है, इस हेतु धर्म करो २ धर्म ही का सेवन करो, जैसा के घरके कार्य सिद्ध करने में अनेक तरह से परिश्रम करते हो कुछ काल धर्मके वास्ते भी परिश्रम करते रहो, कारण की धर्मी (धर्म सेवन करने वाले पुरुष) की इन्द्र आदि देवता भी केवल प्रशंसा, अनुमोदना और भक्ति करके अपना जन्म सफल करते हैं, इतनी ऋद्धि पाके भी उनको धर्मका सेवन दुर्लभ है, और भी धर्मी को त्रिभुवन की लक्ष्मी, कल्पवृक्ष, चिंतामणि और कामधेनु आप से दास हो मिलते हैं, तो पुत्र, कलत्र, घर, सवारी और राज्य मिलजाना क्या बडी चीज है, धर्म साधन करनेवालेका दो घडी का जीना भी सफल और कार्य कारक है, परतु धर्म हीन (अर्थात् पेय, अपेय, कृत्य, अकृत्य, गम्य, अगम्य, भक्ष्य, औ भक्ष्य इत्यादि विचार रहित) का कोटा कोटी वर्ष जीना भी निष्फल औ अकिंचित्कर है, पशुवत अपना आयु पूर्ण कर मरता है, इंद्रिय का निग्रह कराने वाला, सकल कल्याण और सुगति का कारण, भवसागर तरने के लिये नौका रूप तीर्थंकरो का कहा हुआ केवल धर्म ही है और धर्म का मूल दया "विना मतलब पराये

दुख को दूर करने की इच्छा,, है दया से धर्म की प्राप्ति और धर्म से जीव मुक्त होते हैं, इसलिए दया सर्वो त्कृष्ट पदार्थ है । जैन दर्शन मे दया के अनेक “स्वदया परदया द्रव्यदया भावदया निश्चयदया व्यवहारदया स्वरूपदया अनुबंधदया,, भेद विस्तार से वर्णन किये हैं सर्व दर्शनी दया का उपयोग रखते है परन्तु सर्वांशों दया का उपयोग तो जैन दर्शन ही में स्वीकार है इसवास्ते जैन मत श्रेष्ठ भी कहाता है, दयाके सर्वांश उपयोग होनेकी रीति यह है कि जैसे भोजन के वास्ते कोई एक पक्वान्न बनाया जाय तो घृत पिष्ट चीनी इत्यादि सामग्री अवश्य अपेक्षित होती है सामग्री होने पर भी यथाविधि यथार्थ एकठा होने से तथाविध स्वादिष्ट पक्वान्न तयार होता है परन्तु हीनाधिकवस्तु हो जाने से कदापि वैसा पक्वान्न नही होता तैसेही यथाविधि दया पालीजाय तो तथाविध धर्मोपलब्धि होय यद्यपि सर्व दर्शनो मे दयाका मान है परतु उस के स्वरूप मे फेरफार कर देने से गतप्राय (अर्थात् अकिंचित्कर वृथा) है, जब के उसका स्वरूपही शास्त्रानुसार यथार्थ नही जानशक्ते हैं तो पालन करना कैसे हो शके, फेरफार ऐसा के—कोई कहते हैं पशुप्राण घात अर्थात् पशुजन्मसे छोडाना दया है, कोइ जिस शरीर को धारण करके जीव सुखी न होय प्रत्युत दु खित होय व्याधिग्रस्तादि दोष युक्त होय तो ऐसे प्राणीको तादृश शरीर से मुक्तकरदेना भी दया ही है, कोई सूक्ष्म अथवा स्थूल प्राणी जो मनुष्यको दुख देते हैं उनका नाश करना दया है, कोई बलि यागादिक में प्राणिवधकरने से भी पुण्य मानते हैं और कोइ स्थूल प्राणिरक्षामात्र को दया कहते हैं, इस तरह दया

का उपयोग अन्यदर्शनी रखते हैं लेकिन यह भ्रम हैं, और एकरीत से—आचारधर्म दयाधर्म क्रियाधर्म और वस्तुधर्म यह चार प्रकार धर्म होता है, इन चारों धर्मो के दान शील तप और भाव चार कारण हैं, जब धनबल होय तो दान होय, मनबल होय तो शील पाला जाय, शरीर बल होय तो तप होय, और सम्यग्ज्ञान होय तो भाव होय, यह भावधर्म दान शील तप से श्रेष्ठ है किसवास्ते के भावधर्म का कारण ज्ञानबल है "जिस्से वस्तुका स्वरूप यथार्थ जानाजाय उसको ज्ञान कहते हैं,, ज्ञानसे जैसी आत्मधर्म की वृद्धि और सरक्षण होता है उतना दान शील तपसे कदापि नही, क्योंकि नय, निक्षेप, प्रमाण, चारो अनुयोग का विचार, सप्तभंगी, षड्द्रव्यविचार, आदिक सब ज्ञानहीसे जीवको परिपूर्ण प्राप्त होते हैं। दशवैकालिक में लिखा है के—ज्ञानहीन पुरुष की क्रिया केवल क्लेशरूप है अर्थात् क्रिया ज्ञानकी दासी है, और मरुदेवी तथा भरत महाराज वैसी अवस्थासे भी रहके जो कर्म विमुक्त हुए यह ज्ञानहीका माहात्म्य है, ज्ञानकी जो तीक्ष्णता सो ही यथाचारित्र है, जो निकाचित कर्म कोटिवपपर्यंत दानादि करनेसे भी नष्ट नही होता वह ज्ञानी के एकस्वासोत्स्वास में नष्ट होशका है इसीलिए ज्ञानीगुरु को रत्नाकर और क्रियागुरु को पीपल के पान जैसा कहा है, ज्ञान विना सम्यक्त अहिंसा और सिद्धान्तोक्त समस्तक्रिया का मूल श्रद्धा नही होते इस कारण ज्ञानोपार्जन के लिये अवश्य यत्न करना चाहिए ज्ञानके पाच भेद—मति श्रुत अवधि मनपर्यव और केवल हैं परन्तु श्रुतज्ञान सबसे अधिकोपयोगी है क्योंकि यह पदार्थमात्र लोकालोक स्वमत

परमत का प्रकाशक अज्ञानतिमिर को दूर करने के वास्ते सूर्य और दुस्समकालरूप रात्री मे दीप सदृश है, उद्देश समुद्देश आज्ञा इत्यादि व्यवहार का लाभ भी श्रुतज्ञान सेही होता है इस श्रुतज्ञान के सुनने से शुद्ध स्वरूप विशुद्ध श्रद्धान की प्राप्ति होती है इस्से शुद्धात्माका आचरण आसेवन अनुभवन होता है और इस्से परमपदप्राप्ति होती है, यही श्रुतज्ञान से पूर्वकाल मे श्रीगौतमादिक केवली हो ससार से मुक्त हुए वर्तमान मे महाविदेह क्षेत्र से विरहमान जिनेन्द्रो से सुनके जीव मुक्त होते है, आगामिकालमें पद्मनाभ आदि तीर्थंकरोसे सुन अनेक जीव मुक्त होंगे, इस श्रुतज्ञान की वाचना पृच्छना परावर्त्तना अनुप्रेक्षा और धर्मकथा होती है, श्रीउवाई सूत्रमे धर्मकथा चार प्रकार की कही है—आक्षेपिणी विक्षेपिणी निर्वेदिनी और संवेदिनी, जिस्से तत्व मार्ग में प्रवृत्ति होय उस्को आक्षेपिणी, जिस्से मिथ्यात्व की निवृत्ति होय उस्को विक्षेपिणी, जिस्से मोक्ष की अभिलाषा होय उस्को निर्वेदिनी, जिस्से वैराग्य की भावना होय उस्को संवेदिनी कहते हैं यह श्रुतज्ञान रूप कथा श्री अरिहन्त देवाधिदेव तीर्थंकर परमेश्वर समवसरणमें बैठ "उप्पन्नेइवा विगमेइवा धुवेइवा,, त्रिपदी उच्चारण पूर्वक करते हैं, और त्रिपदी से ही गणधर द्वादशाग की रचना करते हैं (उस्को सूत्र कहते हैं) इस कालमें जितने सूत्र है सब श्रुतज्ञान के भेद हैं यह श्रुतज्ञान सर्वोपकारी है इसलिए इस्की वृद्धि और सरक्षणके हेतु अवश्य यत्न करना चाहिये वर्त्तमान कालमें जितने ज्ञानवृद्धि के उपाय है सब से उत्कृष्ट मुद्रायन्त्र है इस कारण पुस्तक सुलभता ज्ञानवृद्धि की अति उत्कृष्ट अति सुगम रीति को स्वीकार करना जो

का उपयोग अन्यदर्शनी रखते हैं लेकिन यह भ्रम है, और एकरीत से—आचारधर्म दयाधर्म क्रियाधर्म और वस्तुधर्म यह चार प्रकार धर्म होता है, इन चारो धर्मो के दान शील तप और भाव चार कारण हैं, जब धनबल होय तो दान होय, मनबल होय तो शील पाला जाय, शरीर बल होय तो तप होय, और सम्यग्ज्ञान होय तो भाव होय, यह भावधर्म दान शील तप से श्रेष्ठ है किसवास्ते के भावधर्म का कारण ज्ञानबल है "जिस्से वस्तुका स्वरूप यथार्थ जानाजाय उस्को ज्ञान कहते हैं,, ज्ञानसे जैसी आत्मधर्म की वृद्धि और सरक्षण होता है उतना दान शील तपसे कदापि नही, क्योंकि नय, निक्षेप, प्रमाण, चारो अनुयोग का विचार, सप्तभंगी, षड्द्रव्यविचार, आदिक सब ज्ञानहीसे जीवको परिपूर्ण प्राप्त होते हैं। दशवैकालिक में लिखा है के—ज्ञानहीन पुरुष की क्रिया केवल क्लेशरूप है अर्थात् क्रिया ज्ञानकी दासी है, और मरुदेवी तथा भरत महाराज वैसी अवस्थासे भी रहके जो कर्म विमुक्त हुए यह ज्ञानहीका माहात्म्य है, ज्ञानकी जो तीक्ष्णता सो ही यथयचारित्र है, जो निकाचित कर्म कोटियपपयत दानादि करनेसे भी नष्ट नही होता वह ज्ञानी के एकस्वासोत्स्वास में नष्ट होशक्ता है इसीलिए ज्ञानीगुरु को रत्नाकर और क्रियागुरु को पीपल के पान जैसा कहा है, ज्ञान विना सम्यक्त अहिंसा और सिद्धान्तोक्त समस्तक्रिया का मूल श्रद्धा नही होते इस कारण ज्ञानोपार्जन के लिये अवश्य यत्न करना चाहिए ज्ञानके पाच भेद—मति श्रुत अवधि मनपर्यव और केवल हैं परन्तु श्रुतज्ञान सबसे अधिकोपयोगी है क्योकि यह पदार्थमात्र लोकालोक स्वमत

गणधर आय सुधर्मास्वामी ने श्रीश्रमणसंघ और अपनी सन्तति के लिए सूत्ररूप से सङ्कलित किया है।

तहा अनुयोग की प्रवृत्ति, फल योग मंगल समुदायार्थ द्वारभेद निरुक्तिक्रम और प्रयोजन आदिद्वारों के निरूपण करने से होती है।

तहा पहले बुद्धिमान् पुरुषों की प्रवृत्ति होने के लिये फल अवश्य कहना चाहिये नही तो वृथा कटक शाखा मर्दन की तरह कोइ भी इस्मे प्रवृत्त न होगा, फल दो प्रकार है—प्रथम अर्थ का अवगम (ज्ञान) है इस्को अनन्तर फल कहते हैं, दूसरा अर्थावगम होने के बाद तत्पूर्वक अनुष्ठान से मोक्ष प्राप्ति, यह परम्पर फल कहाता है।

योग अर्थात् सबन्ध, यह कई प्रकार का होता है परन्तु इहा कौन इस्के देनेका काल और कौन इस्के देने के योग्य है ऐसा अवसर लक्षण संबंध जानना चाहिये।

मङ्गल जो विघ्न निवृत्ति के हेतु ग्रंथ के आदि मध्य और अंत मे किया जाता है।

वियाह पन्नत्ति इस पदका समुदायार्थ यह है कि—अभिविधि करके कथंचित्समस्तज्ञेयव्याप्ति अथवा मर्यादा से जो पूछे हुए जीव अजीव आदि अनेक पदार्थों का जुदे जुदे लक्षणो से कहना सो व्याख्या वही सुधर्मा स्वामीने अपने शिष्य जंबू को प्ररूपण की सो इस ग्रंथमे कही है, अथवा विशेष तया जीव अजीव आदि अनेक अभिलाप्य पदार्थों की वृत्ति इस्मे कही है, अथवा व्याख्यान का प्रकृष्ट ज्ञान इस ग्रंथमे है, तथा

के पूर्वाचार्योंने बडे परिश्रम से परोपकार के हेतु ग्रंथ बनाये है छपवाके प्रसिद्ध करना हर एक विद्वानोंको देना इस्से अधिक और कोई श्रेष्ठ कार्य नही है, यही सब कारण सोच श्रीमुर्शिदाबाद निवासी श्रीराय धनपतिसिह बहादुर ने ४५ आगम छपवाके हरेक जगे भंडार स्थापन किये है आप लोग भी यथाशक्ति इस्के करने को प्रयत्न होंय के जिस्से पुन जैनमत युवावस्था को प्राप्त होय इति शम् ॥

बनारस जैनप्रभाकर

नानक चन्द्र यती

भूमिका।

श्रीभगवती नामक पंचम अङ्गका अनुयोग समवायाङ्ग चतुर्थ अङ्गानुयोग के अनन्तर क्रमसे प्राप्त हुआ है। विवाहपन्नत्ति पंचम अंगानुयोग, राग और द्वेष आदि विषम भावशत्रुओ की सेना के दलन करनेसे तथा त्रिभुवन के समस्त पदार्थों को हस्तामलक समान देखना और जानना तत्पूर्वक निसवाद रहित वचन होने से त्रिभुवन रूप घरके आंगन में सुधासमान निर्मल जिनके यशकी राशि फैल रही है ऐसे जिनेन्द्र परम करुणावन्त श्रमण भगवन्त श्रीमहावीर वर्द्धमानस्वामि चौवीसमें तीर्थंकर महाराजने जैसा कहा उनके पांचवे

गणधर स्पाय सुधर्मास्वामी ने श्रीश्रमणसघ और अपनी सन्तति के लिए सूत्ररूप से सङ्कलित किया है ।

तहा अनुयोग की प्रवृत्ति, फल योग मगल समुदायार्थ द्वारभेद निरुक्तिक्रम और प्रयोजन आदिद्वारों के निरूपण करने से होती है ।

तहा पहले बुद्धिमान् पुरुषों की प्रवृत्ति होने के लिये फल अवश्य कहना चाहिये नही तो वृथा कटक शाखा मर्दन की तरह कोइ भी इसमें प्रवृत्त न होगा, फल दो प्रकार है—प्रथम अर्थ का अवगम (ज्ञान) है इसको अनन्तर फल कहते हैं, दूसरा अर्थावगम होने के बाद तत्पूर्वक अनुष्ठान से मोक्ष प्राप्ति, यह परम्पर फल कहाता है ।

योग अर्थात् सबन्ध, यह कई प्रकार का होता है परन्तु इहा कौन इसके देनेका काल और कौन इसके देने के योग्य है ऐसा अवसर लक्षण सबध जानना चाहिये ।

मङ्गल जो विघ्न निवृत्ति के हेतु ग्रथ के आदि मध्य और अत मे किया जाता है ।

वियाह पण्णत्ति इस पदका समुदायार्थ यह है कि—अभिविधि करके कथचित्समस्तज्ञेयव्याप्ति अथवा मर्यादा से जो पूछे हुए जीव अजीव आदि अनेक पदार्थो का जुदे जुदे लक्षणो से कहना सो व्याख्या वही सुधर्मा स्वामीने अपने शिष्य जबू को प्ररूपण की सो इस ग्रथमे कही है, अथवा विशेष तथा जीव अजीव आदि अनेक अभिलाप्य पदार्थो की वृत्ति इसमे कही है, अथवा व्याख्यान का प्रकृष्ट ज्ञान इस ग्रथमे है, तथा

व्याख्या मे विशेषतया शुद्धि की प्राप्ति इस ग्रथसे होने और विशिष्टनयप्रग्राह अर्थप्रग्राह इस ग्रथ मे कहने से व्याख्याप्रज्ञप्ति ऐसा नाम इस्का हुआ। जगवती, व्यावाध प्रज्ञप्ति, यह पर्याय है।

नाम यथाथ (जैसा प्रदीप) अयथार्थ (जैसा पलाश) अथशून्य (जैसा डित्य) भेद से त्रिधा होता है परन्तु शास्त्र का नाम यथार्थ ही होना चाहिये क्योंकि समुदायार्थ की समाप्ति यहांई होती है।

व्याख्या प्रज्ञप्ति यह नाम स्थापना द्रव्य क्षेत्रादि भेद से १५ प्रकार का होता है सो स्थानाग के समान इहाजी जानना, व्याख्याप्रज्ञप्ति इहा अङ्ग का निक्षेप क्षायोपशमिक भावरूप प्रवचन पुरुष के अग की तरह अग होने से हुआ है इसलिए व्याख्याप्रज्ञप्ति अग ऐसा नाम हुआ। यद्यपि अग निक्षेप नाम स्थापना द्रव्य और भाव भेदसे चार तरहका होता है तथापि इहा केवल भावागहीका अधिकार है क्योंकि यह ग्रथ क्षायोपशमिकादि भाव का कारण है।'

इस व्याख्या प्रज्ञप्ति पचम अङ्ग का तात्पर्य शीघ्र जानने के लिए उपक्रम १ निक्षेप २ अनुगम ३ और नय ४ अनुयोग अर्थात् सूत्र का अर्थ स सबन्ध अथवा सूत्र का अथ प्रतिपादनरूप अनुकूल व्यापार अर्थात् सूत्रार्थ प्ररूपणरूप क्रियाविशेष कहे हैं, यही चारों जैसे नगर मे सुख से प्रवेश करने को चार द्वार होते हैं तैसे इस प्रवचन में प्रवेश करने को चार अनुयोगरूप द्वार (प्रवेशमुख) हैं। शास्त्र को न्यासदेश के समीप करदेना सो उपक्रम लौकिक और शास्त्रीय भेद से दो प्रकार होके क्रमसे प्रत्येक नाम स्थापना

द्रव्य क्षेत्र काल भाव और आनुपूर्वी नाम प्रमाण वक्तव्यता अर्थाधिकार और समवतार भेद से छ प्रकार है, निक्षेप अर्थात् न्यास स्थापन, ओघ नाम सूत्रालापक से तीन भेद हैं । तहा सूत्रालापकनिष्पन्ननिक्षेप सूत्र के आलाओं का नाम देना जैसे कि व्याख्याप्रज्ञप्ति इत्यादि । अनुगम सूत्रका स्थापनानुकूल परिच्छेद । नय अनन्तधर्मात्मक वस्तुके एक अंशका ज्ञान को कहते हैं जो उपक्रान्त नही है उस्का निक्षेप नामादि नही हो सक्ता जिस्का निक्षेप नही हुआ नयो से विचार भी नही होता है इसलिए इन अनुयोगद्वारो से एकश्रुत स्कन्ध, सातिरेक अध्ययनशतसमाय, ४२ शतक १०००० उद्देश रूप व्याख्याप्रज्ञप्तिसूत्रकथित जीवाजीवादि पदार्थ ज्ञात होने से तत्वज्ञानरूप परम पुरुषार्थ सिद्ध होता है इस कारण इसके पढने पढाने में अवश्य यत्न करना चाहिये। परन्तु पढने का अधिकारी वही होगा जो के मोक्षमार्ग अभिलाषी गुरूका आज्ञाकारी ओदीक्षालिये जिस्के १५ वर्ष व्यतीत हुआ होय। व्याख्याप्रज्ञप्ति अग सूत्रदेनेका अवसर भी वही है इति शम् ।

मकसूदाबाद

अजीमगज

राय धनपतसिंह बहादुर—

व्याख्या मे विशेषतया वुद्धि की प्राप्ति इस ग्रंथसे होने और विशिष्टनयप्रवाह अर्थप्रवाह इस ग्रंथ मे कहने से व्याख्याप्रज्ञप्ति ऐसा नाम इसका हुआ। भगवती, व्यावाध प्रज्ञप्ति, यह पर्याय हैं।

नाम यथार्थ (जैसा प्रदीप) अयथार्थ (जैसा पलाश) अर्थशून्य (जैसा डित्थ) भेद से त्रिधा होता है परन्तु शास्त्र का नाम यथार्थ ही होना चाहिये क्योंकि समुदायार्थ की समाप्ति वहांई होती है।

व्याख्या प्रज्ञप्ति यह नाम स्थापना द्रव्य क्षेत्रादि भेद से १५ प्रकार का होता है सो स्थानाग के समान इहाभी जानना, व्याख्याप्रज्ञप्ति इहा अङ्ग का निक्षेप क्षायोपशमिक भावरूप प्रवचन पुरुष के अंग की तरह अंग होने से हुआ है इसलिए व्याख्याप्रज्ञप्ति अंग ऐसा नाम हुआ। यद्यपि अंग निक्षेप नाम स्थापना द्रव्य और भाव भेदसे चार तरहका होता है तथापि इहा केवल भावांगहीका अधिकार है क्योंकि यह ग्रंथ क्षायोपशमिकादि भाव का कारण है।

इस व्याख्या प्रज्ञप्ति पंचम अङ्ग का तात्पर्य शीघ्र जानने के लिए उपक्रम १ निक्षेप २ अनुगम ३ और नय ४ अनुयोग अर्थात् सूत्र का अर्थ स संबन्ध अथवा सूत्र का अर्थ प्रतिपादनरूप अनुकूल व्यापार अर्थात् सूत्रार्थ प्ररूपणरूप क्रियाविशेष कहे हैं, यही चारों जैसे नगर मे सुख से प्रवेश करने को चार द्वार होते हैं तैसे इस प्रवचन में प्रवेश करने को चार अनुयोगरूप द्वार (प्रवेशमुख) हैं। शास्त्र को न्यासदेश के समीप करदेना सो उपक्रम लौकिक और शास्त्रीय भेद से दो प्रकार होके क्रमसे प्रत्येक नाम स्थापना

॥ अथ भगवती सूत्र पंचमाङ्ग प्रारम्भ ॥

॥ विज्ञापनम् ॥

धात्रीभूषणलोकप्रथुयशा श्रीवीरवाणीजिनशास्त्रोद्धुषसिद्धान्तयशास्तुमुक्तवीयोगुणी । स्यात श्रीलमसामविश्वविश्रुती मायापुरीयामवी
तस्यश्रीमहतानामविदितागुरुसदीपावभूत् ॥ १ ॥ तदात्मीतिपदारधर्मवृद्धी लक्ष्मीपतेः सोदरः श्रीमद्रायधनाड्डरोधनपतिः सिद्दोगुणग्रामणी ।
श्रीजैनागमसद्भ्रसमधरोनोचोपकर्म्मैरिरम् टीकावार्त्तिकयुतसूक्तिपरिभिःसमुद्धृयित्वाशुभम् ॥ २ ॥ कृत्वापञ्चशतस्यलपुस्तपुनस्तायगल्यहोपुस्तका गा
रास्यपुस्तपुस्तकानिसकलान्यस्थापयत्सादरम् । प्रवचनागमपाठनञ्चपठन सरसाधवःश्रावकाः स्थिरयैश्रीजिनशासनस्यपुनर्विधानधर्मस्पृये ॥ ३ ॥
यामस्त्रसप्तुपवीमवतीभूतामिधानोयुना मामापुस्तकपाठभेदयुतोसप्रमाक्षरापि । दुवाप्यःसमुत्पतिवार्त्तिकपूतपाठतयामासनं श्रीमत्सूत्रिसतरा
मयन्तपांडितज्ञातयनुष्यामया ॥४॥ सशोध्यातिपरिश्रमेणमितरां पावकरैसुपूत स्यात्तत्रापिचविप्लिदोषवगतोस्मादासशुद्धयदि । धान्त्याक्षोप्यमु
दारमुद्रिविनवैविधे कृपादृष्टिवो सिप्यादुष्कृतमस्तुनवचसासम्प्रायपी सज्जनाम् ॥ ५ ॥

प्रमारम

जैनप्रभाकर

मानकचन्द्र यती

॥ श्रीमद्गणधराय नमः ॥ श्रीजिनाय नमः ॥ सर्वज्ञमीश्वरमनन्तमसङ्गमग्र्यं सार्वीयमस्मरमनीशमनीहमिद्धम् । सिद्धं शिवं शिवकरं करणव्यपेतं श्रीमज्जिनं जितरिपुं प्रयतः प्रणौमि ॥ १ ॥ नत्वा श्रीवर्द्धमानाय श्रीमते च सुधर्मणे । सर्वानुयोगवृद्धेभ्यो वाण्यै सर्वविदस्तथा ॥ २ ॥ एतट्टीकाचूर्णी जीवाभिगमादिवृत्तिलेशांश्च । संयोज्य पञ्चमाङ्गं विवृणोमि विशेषतः किञ्चित् ॥ ३ ॥ व्याख्यातं समवायाख्यं चतुर्थमङ्गमथावसरायातस्य विवाहपन्नत्तिरिति सञ्ज्ञितस्य पञ्चमाङ्गस्य समुन्नतजयकुञ्जरस्येव ललितपदपद्धतिप्रबुद्धजनमनोरञ्जकस्य उपसर्गनिपाताव्ययस्वरूपस्य घनोदारशब्दलिङ्गविभक्तियुक्तस्य सदाख्यातस्य सलक्षणस्य देवताधिष्ठितस्य सुवर्णविरचितोद्देशकस्य नानाविधाद्भुतप्रवरचरितस्य षट्त्रिंशत्सहस्रप्रमाणसूत्रदेहस्य चतुरनुयोगचरणस्य ज्ञानचरणनयनयुगलस्य द्रव्यास्तिकपर्यायास्तिकनयद्वितयदन्तमुसलस्य निश्चयव्यवहारनयसमुन्नतकुम्भद्वयस्य योगक्षेमकरयुगलस्य प्रस्तावनावचनरचनाप्रकाशकबृहदवरस्य निगमनवचनातुच्छपुच्छस्य कालाद्यष्टप्रकारप्रवचनोपचारचारुपरिकरस्य उत्सर्गापवादपार्श्वसमुल्लसदतुच्छघण्टायुगलघोषस्य यशःपटह-

प्रतिरवापूरितदिक्चक्रवालस्य स्याद्वादविशदाङ्कुशवशीकृतस्य विविधहेतुहेतिसमूहसमन्वितस्य मिथ्यात्वाज्ञानाविरमणलक्षणरिपुबलदलनाय श्रीमन्महावीरमहाराजेन नियुक्तस्य सकलनिपुणकल्पनायकमतिप्रकल्पितस्य मुनियोधैरनायासमधिगमाय पूर्वमुनिशिल्पिकल्पितयो यद्युभयगुरुत्वेऽपि प्रस्तुतया महताभव वाञ्छितवस्तुसाधनसमर्थया वृत्तिचूर्णिनामिकयो सचन्ययान्ध जीवाभिगमादिविविधविवरणस्थनरफलेशानां सङ्कुट्टनेन वहसरावत्पया महता मय्युपकारिणी हस्तिमायकादेशादिव गुरुजनवचना सूत्रमुनिशिल्पिकुलोत्पन्ने रसानि भाक्तिकेवय वृत्ति रारभ्यत इति शास्त्रप्रस्तावना । अथ विवाहपन्नत्तित्ति कः शब्दार्थः ? उच्यते विविधा जीवाजीवादिप्रचुरतरपदार्थविषया आ अभिविधिना कथञ्चिन्निखिलज्ञेयव्याप्त्या मर्यादया वा परस्परासङ्कीर्णलक्षणाभिधानरूपया ख्यानानि भगवतो महावीरस्य गौतमादिविनेयान् प्रति प्रश्नितपदार्थप्रतिपादनानि व्याख्याः ताः प्रज्ञाप्यन्ते प्ररूप्यन्ते भगवता सुधर्मस्वामिना जम्बूनामानमभि यस्याम् १ । अथवा विविधतया विशेषेण वा आख्यायन्त इति व्याख्या अभिलाप्यपदार्थ

यदाह–मोमग्रुमुपरयत्तनरमूतुति ॥ यतः प्राग्रस्या दायेव परमेष्ठिपञ्चकनमस्कार मुपदर्शयन्नाह ॥ नमोअरहंताणमित्यादि ॥ तत्र नमइति नैपा तत्र पदं न्यनावगकृनाथम माहच–मयाइयपदंइ प्रमायसकोपयपपत्यो ॥ नमः करचरणमस्तकसुप्रणिधानरूपो नमस्कारो भवत्वित्यर्थः । केभ्यइत्याह परहंत्र अमरवरविनिर्मिताशोकादिमहाप्रातिहार्यरूपा पूजा मर्हन्ती त्यहन्तो यदाह–परिहतिवदणनम सकारियमरिहतिपूयसक्कार । सिद्धिगम णंचपरहा अरहंतातय यपति ॥ १ ॥ अत सान्य दहच चतुष्पर्यैपट्ठी प्राकृतशैलीवशा दविद्यमानवा रह एकान्तरूपो देशो अन्य मध्य गिरिगुहा दीना मवदस्तिपा नमस्तयस्तुदोमगतप्रच्छन्नस्यस्या भावेन येषान्ते अरहोन्तरो स्त सोभ्यो ऽरहोन्तर्भ्यो ऽथवा ऽविद्यमानो रथः स्यन्दनः सकलपरि ग्रहोपलक्षणभूतो भाव यिनाशो जराद्युपलक्षणभूतो येषांते ऽरथान्ता अत सोभ्यो ऽथवा ऽरहतार्थेति क्वचिद् प्यासक्ति मगच्छद्भ्यः वीतरागत्वा द्य वा ऽरहयद्भ्यः प्रकृष्टरागादिहेतुभूतमनोज्ञेतरविषयसम्पर्केऽपि वीतरागत्वादिकस्वभाव मत्यजद्भ्य इत्यर्थः अरिहंताणमितिपाठान्तरम् तत्र कर्मारिहन्तृ भ्यः आहच–अठविहंपियकम्म अरिभूयंहोइसयलजीयाणं । तंकम्ममरिहंता अरिहंतातेणवुच्चंति ॥ १ ॥ अरहंताण मित्यपि पाठान्तरम् तथा रोहन्त्यो ऽनुपजायमानेभ्यः क्षीणकर्मबीजत्वा दाहच–दग्धेबीजेयथात्यन्त प्रादुर्भवतिनांकुरः । कर्मबीजेतथादग्धे नरोहतिभवांकुरः ॥ १ ॥ नमस्करणीयता चैपा भीमभवगहनभ्रमणभीतभूतानाम नुपमानन्दरूपपरमपदपुरपथप्रदर्शकत्वेन परमोपकारित्वादिति ॥ नमोसिद्धाणंति ॥ सितं बद्धं मष्टप्रकारं कर्मेन्धनं ध्यातं दग्धं जाज्वल्यमानशुक्लध्यानानलेन यैस्ते निरुक्तविधिना सिद्धाः अथवा षिधुगतौ इतिवचनात् सेधन्तिस्म पुनरावृत्त्या निर्वृतिपुरी मगच्छन्

॥टब्बा॥ णमोअरिहंताण णमोसिद्धाण

पविन्नहोव भगवतोअरहंता पूज्या । हिवेपंचपरमेष्ठि नमस्कार मंगलपर्वकहीयेछे । नमस्कारहोये नमस्कार कुणा केहने? अरहंताण अरहंता अरहंतनेकाजि ते अरहंतगण्मा यन कहेछे उत्कृष्ट यशाअादिमहाप्रातिहार्यरूप पूजाने योग्य ते अरहंत कहीये । तथा अष्टकर्मरूप वैरी हण्या ते अरिहंत । तथा अरहंताण इसविपाठ । नमोअरहंता नमस्कारहुया केहने ? सिद्धाण सिद्धनेकाजे अष्टप्रकारकर्मबंध प्रज्वालनरूप अग्निकरी ज्वालीने जे मोक्षपहता।

प्रज्ञाप्यन्ते यस्याम् २। अथवा व्याख्याया अर्थप्रतिपादनायाः प्रकृष्टा ज्ञप्तयो ज्ञानानि यस्यां सा व्याख्याप्रज्ञप्तिः ३। अथवा व्याख्या-
प्रज्ञस्य भगवतः तदुपभूतबोधस्य व्याख्यासु वा प्रज्ञाया आप्तिः प्राप्तिः आत्तिर्वा आदानं यस्याः सकाशात् असौ व्याख्याप्रज्ञाप्तिः व्याख्याप्रज्ञा-
त्तिर्वा भगवतः सकाशात् ज्ञानानि राशिर्वा गणधरस्य यस्याः सा तथा ४। अथवा विवाहा विविधा विशिष्टा वा प्रवाहा नयप्रवाहाः प्रज्ञाप्यन्ते प्ररू-
प्यन्ते प्रबोध्यन्ते वा यस्यां विवाहा वा विशिष्टसन्तानाः विबाधा वा प्रमाणाऽबाधिताः प्रज्ञाप्यन्ते यस्यां विबाधा वा सोऽसौ प्रज्ञप्तिः वाच्यप्ररूपणा वि-
वाहप्रज्ञप्तिः विवाहप्रज्ञाप्तिः विबाधप्रज्ञप्तिः विबाधप्रज्ञाप्तिर्वा ५। इयं च भगवतीत्यपि पूज्यत्वेनाभिधीयत इति। इह च व्याख्यातारः शास्त्रव्याख्याना-
रम्भे फलयोगमङ्गलसमुदायार्थादीनि द्वाराणि वर्णयन्ति तानि चाव्याख्याताया विशेषावश्यकादिभ्यो ऽवसेयानि। शास्त्रकारास्तु विघ्नविनायकोपशान्ति-
निमित्तं विनेयजनप्रवर्तनाय च शिष्टजनसमयसमाचरणाय च मङ्गलाभिधेयप्रयोजनसम्बन्धा नुदाहरन्ति तत्र सकलकल्याणकारणतया ऽभिरूपत्वेन श्रेयस्य
श्रेयोभूतत्वेन विघ्नाः सम्भवन्तीति तदुपशमनाय मङ्गलान्तरव्यपोहेन भावमङ्गल मुपादेयं मङ्गलान्तरस्या नैकान्तिकत्वा दनात्यन्तिकत्वाच्च भावमङ्गल-
स्य तु तद्विपरीततया ऽभिलषितार्थसाधनसमर्थत्वेन पूज्यत्वात् आह च—किंपुनरपयोगरतेयं भवत्ययमिव्यभिधानात्। तद्विपरीयंजाये तेषामिसंवेपतस्-
च ॥ १ ॥ भावमङ्गलरूपं च यद्यपि नमस्कारादिकमनेकविधत्वेऽपि परमेष्ठिपञ्चकनमस्काररूपं विशेषेणोपादेयं परमेष्ठिनां मङ्गलत्वलोकोत्तमत्वशर-
ण्यत्वाभिधानात् आह च—चत्तारि मंगलमित्यादि ॥ तत्र नमस्कारस्य च सर्वपापप्रणाशकत्वेन सर्वविघ्नोपशमहेतुत्वात् आह च—एसपञ्चनमुक्कारो सव्वपा-
वप्पणासणो। मङ्गलानां च सर्वेषां प्रथमं भवति मङ्गलम् ॥ १ ॥ अतएवाय समस्तश्रुतस्कन्धानां आदौ उपादीयते अतएवाय तेषां मध्यन्तरतया निधीयते

श्रीवीरपरमात्मनेनमः। देवदेवजिननत्वा गुरवश्चश्रुतदेवतां। धार्मिकपथमोयस्य भवेदयमनुसारतः ॥ १ ॥ समवायनामे चोथाअंग कह्यो, हिवे विवाह
पन्नतीनाम पंचमांगकहीयेछे। ते विवाहपन्नतो सूं कहिये ? विविधप्रकार नानाप्रकार जीवादिकपदार्थ श्रीमहावीरदेवें गौतमादिकशिष्यपूछ्या प्रज्ञप्या
ं तेहथकी तेविवाहपन्नतीकहीये; अथवा विविधप्रकार सम्बन्धवाता प्रवाहरूपना प्रवाहरूपनीये नेहनेविषे तिका विवाहपन्नतीकहीये अथवा भगवती

मो पाधिना उपाधीया यायो लाभः श्रुतस्य येषा उपाधीनांवा विशेषणानां प्रथमा व्योजगामा मायो लाभो येभ्यो ऽथवा उपाधिरेव सन्निधिरेव मायं इष्टफलदैयत्रमितस्यन आयाना मिष्टफलानां समूह सादकत्वेतुत्वा ध्यायं अथवा आधीमा मन पीडाना मायो लाभ आध्यायः अधियावा नञः कुत्सार्थत्वा कुबुद्धीना मायो ध्यायः ध्यैचिन्तायामित्यस्य धातोः प्रयोगा नञः कुत्सार्थत्वा दैव दुर्ध्यानवा अध्याय उपहतो ऽध्याय आध्यायोया ग्रैस्ते उपाध्याया थत स्तेभ्यो नमस्यता येषां सुसम्प्रदायासज्जिनवचनाध्यापनतो विनयेन भव्याना मुपकारित्वादिति ॥ नमोलोएसव्वसाहूणंति ॥ साधयन्ति ज्ञानादिशक्तिभि र्मोक्षमिति साधव समतांवा सर्वभूतेषु ध्यायन्तीति निरुक्तिन्यायात्साधवो यदाह–निव्वाणसाहएजोए जम्हासाहेंतिसाहुणो । समायसव्वभूएसु तम्हातेभावसाहुणो ॥ १ ॥ साहायकंवा संयमकारिणां धारयन्तीति साधवो निरुक्तेरेव सर्वपते सामायकादिविशेषणा प्रमत्तादयः पुलाकाद्या जिनकल्पिक प्रतिमाकल्पिक यथालन्दकल्पिक परिहारविशुद्धिकल्पिक स्थविरकल्पिक स्थितकल्पिक स्थितास्थितकल्पिक कल्पातीतभेदाः प्रत्येकबुद्ध स्वयंबुद्ध बुद्धबोधितभेदा भारतादिभेदाः सुषमदुःषमादिविशेषितावा साधवः सर्वसाधवः सर्वग्रहणंच सर्वेषां गुणवता मविशेषनमनीयताप्रतिपादनार्थं एवंच एवादिपदेष्वपि बोद्धव्यम् न्यायस्य समानत्वादिति अथवा सर्वेभ्यो जीवेभ्यो हिता सार्वा स्तेच ते साधवश्च सार्वस्य वा ऽर्हतो न तु बुद्धादेः साधवः सार्वसाधवः सर्वेभ्या शुभयोगान् साधयन्ति कुर्वन्ति सार्वान्वा ऽर्हतः साधयन्ति तदाज्ञाकरणा दाराधयन्ति प्रतिष्ठापयन्तिवा दुर्नयनिराकरणादिति सर्वसाधवः सार्वसाधवोवा अथवा श्रव्येषु श्रवणार्हेषु वाक्येषु अथवा सव्यानि दक्षिणा न्यनुकूलानि यानि कार्या

णमोलोएसव्वसाहूणं

थोर ते उपाध्याय कहीये । नमस्कारहतो नमस्कार हुवो माहरोवालो ? सव्वसाहूण सर्वसाधुनेवालो जे ज्ञानादि शक्तिवरी मोक्षमार्ग साधे ते साधु, एवो समस्तेवरी सामायिकप्रविशेष प्रमत्तादिक पुलाकादिक जिनकल्पिक परिहारविशुद्धिकल्पिक प्रतिमाकल्पिक यथालन्दादिकल्पिक प्रत्येकबुद्ध स्वयंबुद्ध बुद्धबोधितप्रमुख जे आपणि जे गुणवंत सव तेहने भक्तिभेवरी नमस्कार थाओ । ए सर्वमाधमागमनावकारवेवरी उपकारी छे । नमो अरहंता नमस्का

अथवा षिघुसरात्राविलितवचना रिसथ्मिसिस निष्ठिताथाजवमितस यथवा षिघुस्‌गाव्ले माङ्गस्वे वेतियवमा रमधन्तिम्म झामितारो ऽनूयन् मङ्गस्यरू पता वामुनवन्तिस्सति सिद्वा अथवा सिद्धा जिसा मपयवशानस्पिसिकस्या रमत्यास्मातावा जथ्वे कपसथ्यगुणसन्दोहश्या दारुष–ध्यातसितंपमपु राजकम्म योधागतोनिर्वृतिसौभमूर्वमि । स्मातामुग्रास्तापरिनिष्ठितार्थो यःसोस्तुसिद्धःकृतमङ्गलोमे ॥ १ ॥ पत स्तोज्यो ममः ममस्करश्लायतां येमा म विमवाशिप्रामदयातसुखवीर्योविगुणयुक्ततया स्वविषयप्रमोदप्रकर्षोत्पादनेन भव्यानां मतीवायकारहेतुत्वादिति ॥ नमोमायरियाणंति ॥ मा मयाद् या तद्विषयविनयरूपया चयन्ते सेव्यन्ते जिनशासनार्थोपदेशकतया तदाकांक्षिभि रित्याचार्यो उक्तम्य–सुतत्यविऊलयखग्ग गुरूगे च्छस्समठिजूडप । गवतत्तिविप्पमक्को सत्यवाएइमायरिठोति ॥ १ ॥ अथवा आचारो ज्ञानाचारादि पञ्चधा मा मर्यादया वाचारो विहार भाचार स्तम माधय स्वयंकरना रमलापवात् प्रदर्शना वेत्याचार्याः भाइच–पञ्चविहमाचार आयरिमाणातहापयासंता । भायारदंसता आयरियातेणवुचति ॥ १ ॥ य यत्र या ईषत् अपरिपूर्णाइत्यय चारा हेरिका ये ते आचारा चारकल्पाहत्यर्थो युक्तायुक्तविभागनिरूपणनिपुणा विनया भत स्तेपु साधवा यथा वच्चार्योपदेशकतये त्याचार्यो मत स्तेभ्यो ममस्यता येषा माचारोपदेशकतयोपकारित्वात् ॥ नमोउवज्झायाणंति ॥ उप समीप मागत्य अधीय ते इदमध्ययने इतिवचना त्पठ्यते इत्यवसायितिवचना द्वा अधि आधिक्येन गम्यते इत्यस्मरणे इतिवचना द्वा स्मयते सूत्रतो जिनप्रवचन येभ्य स्त उपाध्याया यदाह–बारसगोजिणक्खाउ सिज्झाउकहिउबुहे । तउवरसतिजम्हा उवज्झायातेणवुच्चति ॥ १ ॥ अथवा उपाध्यान उपाधि सन्निधि स्ते

णमोआयरियाण णमोउवज्झायाण

सिधपणो पाम्या ते सिद्धहोये । नमाथयतां नमस्कार हुआ केवलज्ञान ? भायरियाण आचायेभ्यक्षे जिनशासनना पथ उपदिशे मर्यादि तेहने सांबल विनयादिकरी सेवीये ते भाचाय कहीये अथवा ज्ञानादि पञ्च भाचार पोते भादरे उपदिशे भवाये ते आचाय । नमाथयतां नमस्कार हु वा केवलज्ञाने ? उपाध्याय कहतां उपाध्यायभेज्ञाने च रूपादिदेण पाठपाग २१ भर्पे २१ भगावे २५ पचीमगुमे सहित । तेमा चेतने समीप भ

मो पाधिमा उपाधीया ध्यायो लाभः श्रुतस्य येषां उपाधीमांवा विशेषणानां प्रकमा ध्योजमानाः मायो लाभो येभ्यो ऽथवा उपाधिरेव सन्निधिरेव भायं इष्टफलदैवप्रनितत्यन आयामा सिष्टफसामां समूह स्रादकहेतुत्वा घोषा अथवा आधीना मनःपीडाना मायो लाभ आध्यायः अधियाना मजः कुत्सार्थत्वा रुकुयुटोमा मायो ध्यायः ध्यैचिन्तायामित्यस्य धातोः प्रयोगा त्मजः कुत्सायात्वा देव दुर्ध्यानवा अध्याय उपहतो ऽध्याय आध्यायोवा ये भ्ये उपाध्याया एत श्लोभ्यो नमस्यता येषां सुधर्मप्रवापातजिनवचनाध्यापनतो विनयेन भव्याना मुपकारित्वादिति ॥ नमोलाइसाहूणति ॥ साधयन्ति ज्ञानादिशक्तिभि मोक्षमिति साधव समतांवा सर्वभूतेषु ध्यायन्तीति निरुक्तिन्यायाया स्वाधवो यदाह–निव्वाणसाहएजोए जम्हासाहेंतिसाहुणो। समायसव्वभूएसु तम्हातेभावसाहुणो ॥ १ ॥ साहायकवा संयमकारिणा धारयन्तीति साधवो निरुक्तोरेव सर्वेषते सामायकादिविशेषणा प्रमत्तादयः पुलाकाभ्यो जिनकल्पिक प्रतिमाकल्पिक यथालंदकल्पिक परिहारविशुद्धिकल्पिक स्थविरकल्पिक स्थितकल्पिक स्थितास्थितकल्पिक कल्पातीतभेदाः प्रत्येकबुद्धस्वयंबुद्धबुद्धबोधितभेदा भारतादिभेदाः सुषमदुःषमादिविशेषिताया साधवः सर्वसाधवः सर्वग्रहणच सर्वेषां गुणवतां माविशेषेणनमोयतामतिपादनार्थं इत्वा इत्यादिपदेष्वपि बोद्धव्यम् न्यायस्य समानत्वादिति अथवा सर्वेभ्यो जीवेभ्यो हिता सार्वा स्तेष ते साधवश्च सार्वस्या ऽर्हतो नतु बुद्धादेः साधवः सार्वसाधवः सर्वान्वा शुभयोगान् साधयन्ति कुर्वन्ति सार्वान्वा इतः साधयन्ति तदाज्ञाकरणा दाराधयन्ति प्रतिष्ठापयन्तिवा दुर्नयनिराकरणादिति सर्वसाधय सार्वसाधवोवा अथवा श्रव्येषु श्रवणार्हेषु वाक्येषु अथवा सव्यानि दक्षिणा न्यनुकूलानि यानि कार्याणि

णमोलाएसव्वसाहूण

थोड़ ते उपाध्याय कहीये। नमोकहतां नमस्कार हुवो होजमेवाचे। सव्वसाहूण सवसाधुनेवाचे जे ज्ञानादि गुणेंकरी मोक्षमार्ग साधे ते साधु, इर्णा सवमन्देकरी सामायिकपविशेष अप्रमत्तादिक पुलाकादिक जिनकल्पिक परिहारविशुद्धिकल्पिक प्रतिमाकल्पिक यथालंदादिकल्पिक प्रत्येकबुद्ध स्वयबुद्ध बुद्धबोधितप्रमुख श्रीआपवि वे गुणवंत सर्व तेहनें पविशेषेकरी नमस्कार थाओ। ए सर्वसाधुसमान्यपणेंकरी उपगारीछे। नमो कहतां नमस्का

षि सेपु साधवो निपुणाः मव्यसाधवः सव्वसाधवोवा ऽत सोभ्य नमोलोएसव्वसाहूणमितिव्यचित्पाठः तत्र सव्वशब्दस्य देशसर्वतायामपि दर्शनं
दपरिशेषसमस्तापदर्शनाय मुच्यते लोके मनुष्यलोक नतु गच्छादौ ये सर्वसाधव स्तेभ्यो नमइति एषाच नमनीयता मोक्षमार्गसाहायककरणेनो प
कारित्वात् आहच—असहायसहायत्त करेंतिमेसंजमंकरेंतस्स। एएणकारणेणं नमामिहंसव्वसाहूणंति ॥ १ ॥ ननु यद्यप संक्षेपेण नमस्कार स्तदा सि
द्ध साधूनामेव युक्त स्तद्द्वये स्तेषा मव्यहेदादीनां भावा यतो ऽर्हदादयो न साधुत्व व्यभिचरन्ति ? अथविस्तरेण तदा ऋषभादिव्यक्तमनुच्चारय
ऽसौ वाच्य स्यादिति ? नैव यतो न साधुमात्रनमस्कारे ऽर्हदादिनमस्कारफल मवाप्यते मनुष्यमात्रनमस्कारे राजादिनमस्कारफलवदिति फल
विशेषतो ऽसौ प्रतिव्यक्तितु नासौ वाच्यो ऽशक्यत्वादेवेति। ननु यथाप्रधानन्याय मङ्गीकृत्य सिद्धादि रानुपूर्वी युक्ता न सिद्धाना सर्वथा कृतकृ
न सर्वप्रधानत्वा ? नैव अर्हदुपदेशेन सिद्धाना ज्ञायमानत्वा दर्हतामेवच तीर्थप्रवर्त्तनेना त्यन्तोपकारित्वा दित्यर्हदादिरेव सा नन्वेवं माचा
र्हद् सा प्राप्नोति क्वचित्काले आचार्येभ्यः सकाशा दर्हदादीनां ज्ञायमानत्वादिति यतएव तेषामेव चात्यन्तोपकारित्वा ? नैव आचार्याणा मुपदे
ऽदानसामर्थ्यं मर्हदुपदेशतएव नहि स्वतन्त्रा आचार्यादय उपदेशतो ऽर्थप्रापकत्व प्रतिपद्यन्त यतो ऽर्हन्तएव परमार्थेन सर्वार्थज्ञापका स्तथा ऽर्हत्प
रिषद्रूपाएवा चार्यादयो ऽत स्ता नमस्कृत्यार्हन्नमस्कारस्य युक्त उक्तंच—नयकोइविपरिसाए पणमित्तापणमइरण्णोसि ॥ एवं तावत्परमेष्ठिनो नम
स्कृत्य मुमातमवनानां मुतज्ञानस्या त्यन्तोपकारित्वा तस्यच द्रव्यभावश्रुतरूपत्वा द्भावश्रुतस्यच द्रव्यश्रुतहेतुकत्वा त्संज्ञाक्षररूपद्रव्यश्रुतनमस्कुर्वन्न
ह ॥ नमोबम्भीएलिवीएत्ति ॥ लिपि पुस्तकादौ अक्षरविन्यासः सा चाष्टादशप्रकारापि श्रीमन्नाभेयजिनेन स्वसुताया ब्राह्मीनामिकाया दर्शिता ततो
ब्राह्मी त्यभिधीयत आहच—लेहंलिवीविहाणं जिणेणबंभीएदाहिणकरेण। इत्यतो ब्राह्मीति स्वरूपविशेषणं लिपेरिति नन्वधिकृतशास्त्रस्येयमङ्गल

णमोबम्भीएलिवीए

रवमाबेहने। बभीएलिपिने ब्राह्मीलिपिने पुस्तकादिकनेविषे अक्षरस्थापनारूप ते अठारेप्रकारे जाणवी। पोतानीपुत्री ब्राह्मीने देखाडी तेमाटे ब्राह्मी

स्यात्किमङ्गलेनानवस्थादिदोषप्रसङ्गात् ? सत्यं किन्तु शिष्यमतिमङ्गलपरिग्रहार्थं मङ्गलोपादानं शिष्टसमयपरिपालनाय चेत्युक्तमेवेति अभिधेयादयः पुनरस्य सामान्येन व्याख्याप्रज्ञप्तिरिति नामैवोच्यावति तेषुमनोऽभ्यस्तो ततएव आप्तप्रवृत्त्यादीष्टफलसिद्धे तथापि इह भगवता व्याख्यास्याभिधेय तयोक्ता सामीच प्रज्ञापना योयोक्ता अनन्तरफल परम्पराफलतु मोक्ष- यथा स्या प्रवचनत्वादेव फलतया शिवो मक्षाम साक्षात् पारम्पर्येणवा यत्र मोक्षाङ्ग तत्प्रतिपादयितु मुत्सहत यथासत्यप्रसङ्गा यथा यमेव सम्बन्धो यदुतास्य शास्त्रस्येद प्रयोजनमिति ? तदेव मस्यशास्त्रस्यै कमुतस्कन्धरूपस्य मातिरेकाध्ययनशतस्यनायस्य चतुरशीतसहस्रप्रमाणस्य षट्त्रिंशत्प्रश्नसहस्रपरिमाणस्या ष्टाशीतिसहस्राधिकलक्षद्वयप्रमाणपदराशे मङ्गलादीनि दर्शितानि अथ प्रथमे शत ग्रन्थान्तरपरिज्ञायमानाध्ययने दशो देशकामवति, उक्तञ्च शताध्ययनार्थसंज्ञाभिधायिनो ऽध्ययनविभागाः । उद्दिश्यते उप धानविधिना शिष्यस्या चार्येण यथै तावन्त मध्ययनभाग मधीष्वेत्युदेशा स्तएवो द्देशका तांश्च सुखधरवस्मरणादिनिमित्त माद्याभिधयाभिधानद्वा रेण मङ्गतीषु मिमागाथामाह ॥ रायगिहेत्यादि ॥ अभिहितगाथायां यद्यपि प्रथमोद्देशकपदकाभिगमे स्वयमेवावगम्यते तथापि बालाना सु खावबोधाय अभिधीयते तत्र रायगिहेत्यादि लुप्तसप्तम्येकवचनस्या द्राजगृहेनगरे प्रथमोद्देशकस्यार्थो भगवता श्रीमहावीरेण दर्शित इतिव्याख्ये यं एव मन्यत्रापी ष्टविभक्त्यन्तता यसेया ॥ चलणति ॥ चलनविषयः प्रथमोद्देशकः चलमाणेचलिए इत्याद्यर्थनिर्णयार्थत्वत्य ॥ दुक्खेति ॥ दु-

रायगिह चलण १ दुक्खे २

निवि कहोवे । आदव सेहनिमोतिज्ञार्थ जिनवरभोऽष्ठाभिवयारय हति । शास्त्रविधिना ललम विशेष भावना, द्विविपकनोसामविषोएसे, एमगम तोभूर्वे ।१८ गतकवे, अत्र श्लोकसहस्रप्रमाणके, पद वेलाणयवासोसहस्रप्रमाणके ॥ तिवे प्रथमशतके दश उद्देसा गोमहावीरदवे रायगिहनगरनेविये क प्रातेहमा नाम माबासिंकरो कहेछे, यथा ॥ चलमाणेचलिए इत्यादि । यथ विषयथको निषयरूप पहिलोउद्देशो गव प्रश्नमा भाषवो १ । दुक्खेति ॥ हेमभयत जीव भापना कमादूनतहवतां कमवेदे ? इत्यादि प्रश्नो निषय पूछ ना ते बीजोउद्देशो २ । कह्मपाभेय आधा मिथ्यात्वमोहनीयकर्मने उद

वि तेषु साधवो निपुणाः सर्वसाधवः सर्वसाधवोवा' इति सोऽस्मः नमोलोएसव्वसाहूणमितिद्वितीयपाठ तत्र सर्वशब्दस्य देशसर्वतायामपि दर्शनात् अपरिशेषसर्वतोपदर्शनाय मुच्यते लोके मनुष्यलोके न तु गच्छादौ ये सर्वसाधव तेभ्यो नमइति' एषांच नमनीयता मोक्षमार्गसाहाय्यकरणेनो पकारित्वात्' आह च–असहायसहायत्त करेंतिमेसंजमकरेंतस्स । एएणकारणेणं नमामिहंसव्वसाहूणं ॥ १ ॥ ननु यद्यय संक्षेपेण नमस्कार स्तदा सिद्ध साधूनामेव युक्त सद्भूषे न्येषा मप्यर्हदादीनां यस्मात् अतो ऽर्हदादयो न साधुत्व व्यभिचरन्ति ? अथविस्तरेण तदा ऋषभाजितादिव्यक्तिमनुच्चारणतो ऽसौ वाच्यःस्यादिति ? नैव यतो न साधुमात्रनमस्कारे ऽर्हदादिनमस्कारफल मवाप्यते मनुष्यमात्रनमस्कारे राजादिनमस्कारफलवदिति' कर्त्तव्यो विशेषतो ऽसौ प्रतिव्यक्तितु नासौ वाच्यो ऽशक्यत्वादेवेति । ननु यथाप्रधानन्याय मङ्गीकृत्य सिद्धादि रानुपूर्वी युक्ता न सिद्धाना सर्वथा कृतकृत्यत्वेन सर्वप्रधानत्वा ? नैव अर्हदुपदेशेन सिद्धाना ज्ञायमानत्वा दर्हतामेव तीर्थप्रवर्त्तनेना त्यन्तोपकारित्वा दित्यर्हदादिरेव सा' नन्वय माचार्यादे सा प्राप्नोति क्वचित्काले आचार्येभ्य' सकाशा दर्हदादीनां ज्ञायमानत्वादिति अतएव तेषामेव चात्यन्तोपकारित्वा ? नैव आचार्याणा मुपदेशदानसामर्थ्यं मर्हदुपदेशतएव नहि स्वतन्त्रा आचार्योदय उपदेशतो ऽर्थज्ञापकत्वं प्रतिपद्यन्त अतो ऽर्हन्तएव परमार्थेन सर्वार्थज्ञापका स्तथा ऽर्हत्परिषद्रूपा एवा चार्यादयो ऽत स्ता न्नमस्कृत्यार्हन्नमस्कारः युक्त उक्त च–नयकोइ विपरिसाए पणमित्ताणमस्सए लोसि ॥ एवं ताव त्परमेष्ठिनो नमस्कृत्या धुनातनजनानां श्रुतज्ञानस्या त्यन्तोपकारित्वा तस्यच द्रव्यभावश्रुतरूपत्वा द्भावश्रुतस्यच द्रव्यश्रुतहेतुकत्वा त्संज्ञाक्षररूपद्रव्यश्रुतनमस्कुर्वन्नाह

णमोबंभीएलिवीए ॥ लिपिः पुस्तकादा वक्षरविन्यासः सा चाष्टादशप्रकारापि श्रीमन्नाभेयजिनेन स्वसुताया ब्राह्मीनामिकाया दर्शिता ततो ब्राह्मीत्यभिधीयते आह च–लेहंलिवीविहाणं जिणेणबंभीएदाहिणकरेण । इत्यतो ब्राह्मीति स्वरूपविशेषण लिपेरिति अन्वधिकृतशास्त्रस्यैवमङ्गल

णमोबंभीएलिवीए

हवे ^१णमोबंभीएलिवीए नाम्नीलिपिने पुस्तकादिकनेविषे अक्षरस्थापनारूप ते अढारेप्रकारे ऋषभदेवें पोतानीपुत्री ब्राह्मीने देखाडी तेमाटें ब्राह्मी

स्यात्किमङ्गलेमानवस्थादिदोषप्राप्ते ? सत्यं किन्तु शिष्यमतिमङ्गलपरिग्रहार्थं मङ्गलोपादानं शिष्टसमयपरिपालनाय चेत्युक्तमेवेति अभिधेयादयः पुनरस्य सामान्येन व्याख्याप्रज्ञप्तिरिति नाम्नैवोक्ताइति तेपुनर्नोच्यन्ते ततएव माद्यमङ्गलस्यादीष्टफलसिद्धे सत्यापि इह भगवता व्याख्यास्याभिधेय तयोक्ता स्तात्मार्थ प्रज्ञापना योपोषा ऽनन्तरफलं परम्परफलन्तु मोक्षः सचा स्या सवचनत्वादेव फलतया सिद्धो नद्यासः साक्षात् पारम्पर्येणवा यत्र मोक्षाङ्गं तत्प्रतिपादयितु मुत्सहन्त चनाप्तत्वप्रसङ्गा तथा यमेव सम्बन्धो यथुतास्य शास्त्रस्येदं प्रयोजनमिति ? तदेव मस्यशास्त्रस्यै कमुतस्कन्धरूपस्य मातिरेकाध्ययनगतस्वभावस्य उद्देशकदशसहस्रीप्रमाणस्य षट्त्रिंशत्प्रश्नसहस्रपरिमाणस्या ष्टाशीतिसहस्राधिकलक्षद्वयप्रमाणपदराशे मङ्गलादीनि दर्शितानि अथ प्रथमे शत ग्रन्थान्तरपरिज्ञायपाध्ययने वयो देशकाभवसि, उद्देशका याध्ययनार्थदेशाभिधायिनो ऽध्ययनविभागाः । उद्दिश्यते उप धामविधिना शिष्यस्या कार्येव यथै तावन्त मध्ययनप्राण मथोद्देशमुद्देशा स्तएवो द्देशका सांय सुखधरपस्सरवादिनिमित्त माद्याभिधयाभिधानद्वा रेण सङ्ग्रहीतु मिमांगाथामाह ॥ रायगिहेत्यादि ॥ अधिकृतगाथायाँ यद्यपि वक्ष्यमाणोद्देशकदशकाभिगमे स्वयमेवावगम्यते तथापि बालानां सु गाथयोधाय मभिधीयते तत्र रायगिहेत्यादि सुगमसम्बन्धमत्वा द्राजगृहेनगरे वक्ष्यमाणोद्देशकस्यार्थो भगवता श्रीमहावीरेण दर्शित इतिव्याख्ये यं एव मन्यत्रापी हृयिमत्वमस्तात पवेया ॥ चलणत्ति ॥ चलनविषयः प्रथमोद्देशकः चलमाणेचलिए इत्याद्यर्थनिर्णयार्थत्वत्वात ॥ दुक्खेत्ति ॥ दु

रायगिह चलण १ दुक्खे २

मिपि करोथि । पाठव सेदभिधाभिधायं जिनचउभाष्यादिभवस्य दति । पाप्राधिविना मरूप विशेष जाणवा, द्विविषयनोमानभिषोएपे, एभगव तीसूत्रे(१८ शतवके, प्रश्न छत्तीसहजारप्रमाणवे पदवेलाख अठासीहजारप्रमाणवे । हिवे प्रथमशतके दश उद्देशा श्रीमहावीरदेवे राजगृहनगरनेविषेक ह्या तेहना नाम गाथायेंकरी कहेछे, चलण । चलमाणेचलिए इत्यादि । चलन विषयपणो निषयरूप पहिलोउद्देशो तथ प्रथमो जाणवो १ । दुक्खेत्ति । हेभगवत जीव आपणा कमायादुक्खकहता वमयेदे ? इत्यादि प्रश्ना निरुप पूछना ते बीजोउद्देशो २ । कंखपपाश्वेय कांक्षा मिथ्यात्वमोहनीयकर्म उद

षि सेषु साधवो निपुणाः भव्यसाधव सव्यसाधवोवा' इत सोभ्य नमोलोयसव्वसाहूणमितिअपिपाठ ' तत्र सर्वशब्दस्य देशसर्वतायामपि दर्शना दपरिशेषसर्वतायत्वमार्थ मुच्यते लोके मनुष्यलोके ननु गच्छादौ ये सर्वसाधव स्तेभ्यो नमइति एषाच नमनीयता मोक्षमार्गसाहायककरणेनो प कारित्वात् भाष्य–असहायसहायत्त करेंतिमेसंजमंकरेंतस्स । एवमकारेण नमामिसव्वसाहूणंति ॥ १ ॥ ननु यद्ययं सर्वेषेव नमस्कार स्तदा सि द्व साधूनामेव युक्त सद्भहणे भ्यया मध्यर्हदादीना यस्मा द्यतो ऽर्हदादयो न साधुत्वं व्यभिचरन्ति ? अयविस्तरेण तदा ऋषभादिव्यक्तमुच्चारण तो ऽसौ वाच्य स्यादिति ? नैव यतो न साधुमात्रनमस्कारे ऽर्हदादिनमस्कारफल मवाप्यते मनुष्यमात्रनमस्कारे राजादिनमस्कारफलवदिति अस द्यो विशेषतो ऽसौ प्रतिपादितु नासौ वाच्यो ऽशक्यत्वादेवेति । ननु यथाप्रधानन्याय मङ्गीकृत्य सिद्धादि रानुपूर्वी युक्ता त्र सिद्धानां सर्वथा कृतकृ त्यत्वेन सर्वप्रधानत्वा ? नैव मर्हदुपदेशेन सिद्धाना ज्ञायमानत्वा दर्हतामेव तीर्थप्रवर्तनेना त्यन्तोपकारित्वा दित्यर्हदादिरेव सा' नन्वेव माचा र्याद' सा प्राप्नोति क्वचित्काले आचार्येभ्य सकाशा दर्हदादीनां ज्ञायमानत्वादिति यतएव तेषामेव चात्यन्तोपकारित्वा ? नैवं आचार्याणा मुपदे शदानसामर्थ्यं मर्हदुपदेशतएव नहि स्वतन्त्रा आचार्योदय उपदेशतो ऽर्थज्ञापकस्य प्रतिपद्यन्त यतो ऽर्हन्तएव परमार्थेन सर्वार्थज्ञापका स्तथा ऽर्हत्प रिषद्रूपत्वा चार्यादयो ऽत सा कमसकृत्यार्हन्नमस्कार मयुक्त उक्तच–पकोइविपरिसाए पणमित्तापणमएरन्नोत्ति ॥ एवं ताव त्परमेष्ठिनो नम स्कृत्या पुनासन्नजानां श्रुतज्ञानस्या त्यन्तोपकारित्वा तस्यच द्रव्यभावश्रुतरूपत्वा द्भावश्रुतस्यच द्रव्यश्रुतहेतुत्वा त्संज्ञाक्षररूपद्रव्यश्रुतनमस्कुर्वन्ना ह ॥ नमोबंभीएलिवीएत्ति ॥ लिपिः पुस्तकादा वक्षरविन्यास सा चाष्टादशप्रकारापि श्रीमन्नाभेयजिनेन स्वसुताया ब्राह्मीनामिकाया दर्शिता ततो ब्राह्मी त्यभिधीयते भाष्य–लेहंलिवीविहाणं जिणेणबंभीएदाहिणकरेण । इत्यतो ब्राह्मीति स्वरूपविशेषण लिपेरिति मन्वधिकृतशास्त्रस्यैवमङ्गल

णमोबंभीएलिवीए

रा मावेहने । णमोएमिवोष ब्राह्मीलिपिने पुस्तकादिकनेविषे अक्षरस्थापनारूप ते अठारेप्रकारे ऋषभदेवे पोतानीपुत्री ब्राह्मीने देखाडी तेमाटे ब्राह्मी

स्यादिकमङ्गलेनानवस्थादिदोषप्राप्तेः ? सत्यं किंतु शिष्यमतिमङ्गलपरिग्रहार्थं मङ्गलोपादानं शिष्टसमयपरिपालनाय चेत्युक्तमेवेति अभिधेयादयः पुनरस्य सामान्येन व्याख्याप्रज्ञप्तिरिति नाम्नैवोक्ता इति तेषु मनोऽभ्यनो ततएव मोक्षमहत्त्वादीष्टफलसिद्धेः साधाक्ति इह भगवता व्याख्यास्यामभिधेय तयोक्ता लाभाय प्रज्ञापना योधोवा अनन्तरफल परम्पराफलन्तु मोक्षः सचा स्या सवधनत्वादेव फलतया सिद्धो महाप्तः साक्षात् पारम्पर्येणवा यत्र मोक्षाङ्ग तत्प्रतिपादयितु मुत्सहत अनाप्तत्वप्रसङ्गा तथा यमेव सम्बन्धो यदुतास्य शास्त्रस्येव प्रयोजनमिति ? तदेव मस्य शास्त्रस्यै कमुतस्कन्धरूपस्य मातिरेकाध्ययनशतस्यत्तावस्य उद्देशकदशसहस्रीप्रमाणस्य षट्त्रिंशत्प्रश्नसहस्रपरिमाणस्या ऽष्टाशीतिसहस्राधिकलक्षद्वयप्रमाणपदराशे मंङ्गलादीनि दर्शितानि अथ प्रथमे शते ग्रन्थान्तरपरिज्ञायमाध्ययने दशो देशकाभवति उद्देशका ध्ययनार्थदशाभिधायिनो ऽध्ययनविभागाः । उद्दिश्यते चप धानयिष्यता शिष्यस्या चार्येण यथे तावन्त मध्ययनभाग मधोग्येवमुद्देश्या सएवो द्देशका साय सुखधारणस्मरणादिनिमित्त माद्याभिधेयाभिधानद्वा रेण सङ्ग्रहीतु मिमांगाथामाह ॥ रायगिहेत्यादि ॥ अभिहितगाथार्थो यद्यपि वक्ष्यमाणोद्देशकदशकाभिगमे स्वयमेवावगम्यते तथापि बालानां सु खावबोधाय मभिधीयते तत्र रायगिहेत्यादि सुत्रसमस्त्येकवचनत्वा द्राजगृहेनगरे वक्ष्यमाणोद्देशकस्यार्थो भगवता श्रीमहावीरेण दर्शित इतिव्याख्ये यं एव मन्यत्रापी दृविभक्तवस्तता वसेया ॥ चलणत्ति ॥ चलनविषयः प्रथमोद्देशकः चलमाणेचलिए इत्याद्यर्थनिर्णयार्थत्वात्स्यः ॥ दुक्खेत्ति ॥ दु:

रायगिह चलण १ दुक्खे २

लिपि कहीये । नमश्च लघुलिपीदिकाय विशेषभोक्तव्याक्षिकरण इति । ब्राह्मीलिपिना स्वरूप विशेष जाणवा, हिवेग्रन्थनोमानमित्थीयछे, एमगव तीसूत्रे१३८ शतकछे, मध्य छमोमहस्रप्रमाणछे, पदबेलाखअक्यासीसहस्रप्रमाणछे । हिवे प्रथमशतके दश उद्देशा श्रीमहावीरदेवे राजगृहनगरनेविषे ब प्रा तेहना नाम मात्रसंगरो कहेछे चलण । चलमाणेचलिए इत्यादि । चलण विषयपणेको निष्पयरूप पहिलोउद्देशा तथ प्रश्नना जाणवा १ । दुक्खेत्ति । हेभगवंत जीव आपणा समाधानकृतदुःखते जाणवेछे १ इत्यादि प्रश्नयो निश्चय पूछयो ते बीजाउद्देशा २ । कंखपयोसेय जीवा मिथ्यात्वमोहनीयकर्मनेउद

कविपयो द्वितीयो बीजो भवन्त । कयकत सु य वेदयतीत्यादि प्रश्ननिर्णयार्थइत्यर्थः ॥ कयपठसेति ॥ काघा मिथ्यात्वमोहनीयोदयसमुत्थो ऽन्या
स्यदर्शनपक्षरूपो जीवपरिणाम सयव प्रकृष्टा दोषो जोवदूषण कांक्षाप्रदोष स्तद्विषय स्तृतीयः जीवेन भदन्त । कांक्षामोहनीय कर्म कृत मित्याद्य
र्थनिर्णयार्थइत्यर्थः चकार समुच्चये ॥ पगइत्ति ॥ प्रकृतयः कर्मभेदा चतुर्थोद्देशकस्यार्थः कतिभदंत । कर्मप्रकृतय इत्यादिकार्थो ? ॥ पुढवीउत्ति ॥
रत्नप्रभादिपृथिव्य पञ्चमेवाच्याः कतिभदंत । पृथिव्य इत्यादि च? सूत्रमस्य ॥ जावतत्ति ॥ यावच्छब्दोपलक्षित षष्ठः यावतोऽभदंत । प्रकाशांतरा दसूर्य
इत्यादिसूत्रयासौ ॥ नेरइएत्ति ॥ नेरयिकशब्दोपलक्षितः सप्तमो नैरयिको भदंत । निरये उत्पद्यमानइत्यादिच तत्सूत्र ॥ बालेत्ति ॥ बालशब्दोपलक्षि
तो ऽष्टमः एकान्तबालो भवन्त । मनुष्यइत्यादि सूत्रयासौ ॥ गुरुएत्ति ॥ गुरुकविषयोनवमः कथं भदन्त । जीवागुरुकत्व मागच्छन्तीत्यादिच ? सूत्र मस्य
चासमुच्चयाय ॥ चलणत्ति ॥ चलनाभिधेया चलनाख्या दशमोद्देशकस्याद्य तत्सूत्र चैव मन्यपूर्यका भदत । एवमाख्यांति चलत् अचलित मि
त्यादीनि प्रथमशतोद्देशकस्थपरिमाणार्थः ॥ तदेव शास्त्रादेौ शतमंगलादिकत्वेऽपि प्रथमशतस्यादौ विशेषतो मंगलमाह ॥ नमोसुयस्सत्ति ॥ नमस्का

कखपदोसेय ३ पगइ ४ पुढवीठ ५ जावते ६ येरइए ७ वाले ८ गुरुएय ९ चलणाइ १० ॥ णमोसुयस्स ॥

वे चयचय्य व्ययनपक्षपपरिणाम तेहिज प्रकार माटा जपवे दाय जोवदूषण तेनोवा मदोष हेभगवन् जावे कांक्षामोहनीयकर्मबांधे ? इत्यादि ।
धर्मनिरूपण तीजा ३ । च प्रश्न बहुवचमो । पगइ । प्रकृति कहतां कर्मनाभेद, हेभगवन् केतलो कर्मप्रकृति ? इत्यादि प्रश्न चोथा ४ । पुढवीयोत्ति । रत्न
प्रभा पृथिवी हेभगवन् केतलोहे ? इत्यादि प्रश्ननिर्णय पंचमा ५ । जावतेत्ति हेभगवन् केतले आकाशे अंतरे सूर्य ऊगतोदीसे तेनिर्णयरूप छठो ६ ।
नेरइए । हेभगवन् नरकनेविषे नारकी ऊपजे किंवा अनारकी ऊपजे ? इत्यादि प्रश्न सातमो ७ । बाले । बालिशेए बालपाच हेभगवन् मनुष्यइत्यादि ? प्रश्न आठ
मा ८ । गुरुए । हेभगवन् किया जीवभारीहोय ? इत्यादि प्रश्ननिर्णय ते नवमा उद्देशो ९ । चलणाणां । हेभगवन् अन्यदर्शनी इमकहे, चलमाणे अचलि
ए इत्यादि प्रश्न ? निर्णय ते दसमो उद्देशो १ । इत्यादिक प्रथमशतकेमांहे गाथाय । णमोसुयस्सेति । नमस्काराद्यर्थी केहमे श्रुतने ? श्रुत द्वादशांगीरूप

रोसु श्रुताय द्वादशाङ्गीरूपाया इदमवचनाय । मन्विष्टदेवतानमस्कारोमङ्गलार्थोजयति मथश्रुतमिष्टदेवतेतिकथमयमङ्गलायइति? मत्रोच्यते श्रुतमि
ष्टदेवतै यार्हतां नमस्करणीयत्वा स्सिद्धव नमस्कुर्येसिष श्रुत महँतो नमस्तीर्थायेति प्रवचनात् तीर्थंच श्रुत संसारसागरोत्तरणासाधारणकारणत्वात्स
दाधारस्येमैयच सङ्घस्य तीर्थशब्दाभिधेयत्वात् तथा सिद्धानपि मङ्गलार्थे महतोनमस्कुर्वंत्येव–काऊणनमोक्कारं सिद्धाणमभिग्गहंतुसोगिण्हे । इतिव
चनादिति' अथताय स्थानमशतीद्देशकाभिधेयाध्ययनः प्राग्वर्णित स्तस्य यथोद्देशं निर्देश इतिन्याय माश्रित्यादितः प्रथमोद्देशकार्थमपपोयाव्य स्त
स्य गुरुपर्वक्रमलक्षणं सम्बन्ध मुपदर्शयन् भगवान् सुधर्मस्वामी जम्बूस्वामिन माश्रित्येदमाह ॥ तेणंकालेणंतेणंसमएणमित्यादि ॥ अथ कथं सिद्धम
वसीयते यदुत सुधर्मस्वामी जम्बूस्वामिन मभिसम्बन्ध्यमन्यमुख्यवामिति? उच्यते सुधर्मस्वामिवाचनायाएवा नुवृत्तत्वा दाहच–तित्थञ्चसुहम्माओ निर
वचागणहरावेसा ॥ सुधर्मस्वामिनश्च जम्बूस्वाम्येव प्रधानशिष्यो ऽत सामायित्वे पंचावमा प्रवृत्तेति' तथा षष्ठाङ्गे उपोद्घात एवदृश्यते यथाकिल सु
धम्मस्वामिनंप्रति जम्बूनामा प्राह ॥ जइणं भंते । पञ्चमस्स अङ्गस्स वियाहपण्णत्तीएसमणेणं भगवया महावीरेणं अयमट्ठे पण्णत्ते छट्ठस्सणं भंते! के अट्ठे
पण्णत्तेति ॥ तत एव मिहापि सुधर्मैव जम्बूनामानं प्रत्युपोद्घात मयथ्य मभिहितवा नित्यवसीयतइति' अयं चोपोद्घातग्रन्थो मूलटीकाकृता समस्तश्च
त माश्रित्य व्याख्यातो व्यक्ताभिः प्रथमोद्देशक माश्रित्य व्याख्यायते प्रतिज्ञात मत्युद्देशक मुपोद्घातस्येह शास्त्रे नेवधाभिधानादिति अयञ्च प्राग्
व्याख्यातो नमस्कारादिको ग्रन्थो वृत्तिकृता न व्याख्यातः कुतोपि कारणादिति ॥ तेणंकालेणति ॥ तेइति प्राकृतशैलीवशात् तस्मिन् यत्र तन्नगर मा
सीत् णं कारो न्यत्रापि वाक्यालङ्कारार्थो । यथा–इमाणं भंते । पुढवी इत्यादिषु काले अधिकृतावसर्प्पिणीचतुर्थविभागलक्षणे ॥ तेणंति ॥ तस्मिन् य
त्र सौ भगवान् धर्मकथा मकरोत् ॥ समएणंति ॥ समये कालस्यैवविशिष्टे विभागे अथवा; वसीयेवेयं तत स्तेन कालेन हेतुभूतेन तेन समयेन हे

तेणकालेण तेणसमएण

पीतराम प्रवचन कहोगे, हिवे भगवत श्रीसुधर्मास्वामी पोतानाशिष्य जम्बूप्रते इमकहेछे । तेणकालेण॥ चउथाआरानेअवसरे ते अवसप्पिणी कालना दुषम

तुमृतेनैव ॥ रायगिहेति ॥ एवार प्रथमैकवचनप्रजव । कयरेआगवआदिसयवेत्यादाविव–तत्र राजगृहनाम नगर ॥ होत्थेति ॥ अभवत् नन्विदानी मपि तन्नगर मस्ती त्यतः कथमुक्त मभवदिति ? उच्यते वर्णकग्रथोक्तविभूतियुक्त तदैया नय अनु सुधर्मस्वामिनो वाचनादानकाले ऽवसर्पिणी त्वा दभासस्य तदीयगुणप्रावाभा हानिजावात् ॥ वण्णओति ॥ इहस्थानके नगरवर्णको वाच्यः ग्रथगौरवजयादिह तस्यालिखितत्वात् सचैव–रिद्धत्थिमियसमिद्ध ॥ रिद्ध पुरभवनादिभि र्वृद्ध स्तिमित स्थिर स्वचक्रादिभयवर्जितत्वात् समृद्ध धनधान्यादिविभूतियुक्तत्वा तता पदत्रयस्य कर्मधारय ॥ पमुइयजणजाणवए ॥ प्रमुदिता हृष्टाः प्रमोदकारकवस्तूना सद्भावा ज्जनानगरवास्तव्यलोका जानपदाश्च जनपदजवा स्तत्रायाता सतो यत्र त त्प्रमुदितजनजानपदमित्यादि रौपपातिका स्तथाख्यानो ऽवसेय ॥ तस्सणति ॥ पष्ठराः षष्ठ्यर्यत्वा तस्य राजगृहनगरात् ॥ बहियत्ति ॥ बहि स्तात् ॥ उत्तरपुरच्छिमेति ॥ उत्तरपौरस्त्ये ॥ दिसीभाएत्ति ॥ दिशां भागो दिग्भागोवा भागो गगनमण्डलस्य दिग्भाग स्तत्र गुणसिलकनाम ॥ चेइयत्ति ॥ चित लेप्यादिचयनस्य भावः कर्मवेति चैत्य संज्ञाशब्दत्वा द्देवबिंब तदाश्रयत्वा तद्गृहमपि चैत्यं तचह व्यंतरायतनं नतु भगवता मर्हता माय

रायगिहेणाम णयरेहोत्था थमतं तस्सणरायगिहस्सणयरस्स
बहिया उत्तरपुरच्छिमेदिसीभाए गुणसिलएणामचेइएहोत्था

गुणमानान चौथा भरानेविषे । तेणसमएणं । चवाआसवारे जेसमयनेविषे भगवत महावीर ते समवे । रायगिहेणामणयरेहोत्था ॥ राजगृह,, इसेनामे नगरेवहतो नगरहाता हुवो इहां वर्तमानकाले राजगृहनगरछेतोपणि भतीतकाले नगरनो जेहवो वर्णवहतो तेहवो वर्तमानकाले नहीं भवसर्पिणी काल माटे इवाचक्षो । वणओ । वणततेहनगरायपसेणीनो जाणवा । तस्सणरायगिहस्सणयरस्सवहिया । पोताआश्रयारे इमसर्वेआणवो तेहने राजा राजगृहनगरने बाहिर । उत्तरपुरच्छिमेदिसीभाए । उत्तरपूर्वना दिशिना भाग विभागनेविषे एतलेईशानकोणनेविषे गुणसिल इसेनामे व्यंतरायतना चैत्यछे चिद भवता जिनवर आयतन नामयत हुवा । समणसेणियराया । तिहां राजगृहनगरे श्रेणिकनामे राजाछे तेमद जिनहो एव गुरुतत्र

तर्न ॥ होत्यति ॥ यनूय एव पव्याख्यास्यते तत्प्रायः सुममस्वा दिस्यवसेयमिति ॥ तेणकालेणतेणसमएणसमणेति ॥ श्रमतपस्विखेदेमेतियचनात् मास्यति तपस्यतीति समणः समया सह शोभनेन मनसा वर्ततइति समनाः शोभनत्वच मनसो व्याख्यातं सम्यक्तावाम् मनोभावसत्वस्या साव त्यात् समतवा यथा ममात्येव भवतिप्रायते समोवा सर्वभूतेषु समच इत्यनेकार्थत्वा द्वातूना प्रवर्ततइति समणो भिक्षाकिवत्वात् ॥ भगवतिॐ भगवा नैश्वर्यादियुक्तः पूज्यइत्यर्थः ॥ महावीरइति ॥ वीरः शूरवीरविक्रांताविति वचनात् रिपुनिराकरणतो विक्रांत स च कषायादिरिपुरस्या दसो विशि ष्यते मया यासौ दुर्जयांतररिपुतिरस्करणा द्वीरयेति महावीर एतच देवैः भगवतो गौणनाम कृतं यदाह—अयलेभयभेरवाण खंतिखमेपरीसहोवस ग्गाणं देवेकयसमहावीरेति ॥ आदिकरेति ॥ आदौ प्रथमत श्रुतधर्माचारादिग्रंथात्मक करोति तदर्थप्रणायकत्वेन प्रथमती त्येवंशील आदिक रः ॥ आदिकरस्या वासौ चिविधत्याह ॥ तित्थयरेति ॥ तरति तेन संसारसागरमिति तीर्थं प्रवचन तदव्यतिरेका चेह संघ सोपंच तत्करणशी लत्या तीर्थंकरः तीर्थकरत्वच तस्य नान्योपदेशपूर्वक मित्यतमाह ॥ सहसंबुद्देति ॥ सप आत्मनैव सार्द्धं मनन्योपदेशतइत्यर्थः सम्यक् यथाव बु द्धो हेयोपादेयोपेक्षणीयवस्तुतत्व यिविदितवानिति सहसंबुद्धः सहसंबुद्धस्य चास्य नमाकृतस्य सतः पुरुषोत्तमत्वा दित्यतआह ॥ पुरिसोत्तमेति ॥ पु रुषाणां मध्ये तेन तेन रूपादिना तिशयेनोद्भूतत्वा दूर्ध्ववर्तित्वा दुत्तमः पुरुषोत्तमः अथ पुरुषोत्तमत्वमेवास्य सिंहाद्युपमानत्रयेण समर्थयत्राह ॥ पु

तत्थणसेणिएराया चिल्लणादेवी तेणकालेणं तेणसमएणं समणेभगवमहावीरे आदिगरे तित्थगरे सहसंबुद्धे

मादे मधो । चिल्लणादेवी । चकणानामे राणीछे । तणकालेण । अवसर्पिणोभाम चौथाआरामेविषे ॥ समणेभगवमहावीरे । श्रमणतपस्वी ऐश्वर्यादिगुण युक्त पूज्य इस्यव महावीर इसेनामें । आदिगरे । श्रुतधर्मआचारांगादिसूत्रनो आदिना करणहार । तित्थगरे ॥ तरीयें जेणें तेणेतीर्थ प्रवचन तथा सं घ तेहना कर्त्ता । सयसंबुद्धे । आपणोज परउपदेश विना हेयोपादेयवस्तुस्वरूप जाण्यु । पुरिसुत्तमे । पुरुषमांहि उत्तम रूपादिअतिशयेकरी अथवा उत्त मपणेकरी । पुरिससीहे । पुरुषमांहि सिंहनीपरें सौम्यगुणेकरीसहित तेमाटे पुरुषसिंह । पुरिसवरपुंडरीए । पुरुषमांहिवरश्रेष्ठ प्रधान श्वेतकमलनी परें

गुरुनेनैव ॥ रायगिहेति ॥ एकारः प्रथमैकवचनप्रत्यय । अपरेष्वागमादिसूत्रेष्वत्याद्यपि-सति राजगृहनाम नगरं ॥ होत्थेति ॥ अभवत् नन्विदानी मपि तदस्ति सतो त्वतः कथमुक्त मभवदिति ? उच्यते वर्णकग्रन्थोक्तविभूतियुक्त तदैवा जय मतु सुधर्मस्वामिनो वाचनादायकाले अवसर्पिणी त्वा दन्यासस्य तदीयगुणानामहानिभावात् ॥ वण्णओत्ति ॥ इहस्थानके नगरवर्णको वाच्यः ग्रन्थगौरवभयादिह तस्यालिखितत्वात् सचैव-रिद्ध त्थिमियसमिद्धे ॥ रिद्ध पुरभवनादिभि र्वृद्ध स्तिमित स्थिर स्वचक्रादिभयवर्जितत्वात् समृद्ध धनधान्यादिविभूतियुक्तत्वा तत पदत्रयस्य कर्मधार य ॥ पमुइयजणजाणवए ॥ प्रमुदिता हृष्टा प्रमोदकारणवस्तूना सद्भावा ज्जनानगरवासिलोका जानपदाश्च जनपदभवा स्तत्रायाता यतो यत्र त त्प्रमुदितजनजानपदमित्यादि रौपपातिका त्सव्याख्यानो ऽवसेय ॥ तस्सणति ॥ षष्ठया पञ्चम्यर्थत्वा त्तस्य राजगृहनगरात् ॥ वहियत्ति ॥ यहि स्तात् ॥ उत्तरपुरत्थिमेत्ति ॥ उत्तरपौरस्त्ये ॥ दिसीभाएत्ति ॥ दिशा भागो दिग्भागो वा भागो गगनमण्डलस्य दिग्भाग स्तत्र गुणसिलयनाम ॥ चेइय त्ति ॥ चित संज्ञादिकरणस्य भावः कर्मवेति चैत्यं संज्ञापद्रत्वा द्देवबिंबे तदाश्रयत्वा त्तद्गृहमपि चैत्यं तचेह व्यन्तरायतनं नतु भगवता महेता माय

रायगिहेणाम णयरेहोत्था वण्णओ तस्सणरायगिहस्सणयरस्स
बहिया उत्तरपुरत्थिमेदिसीभाए गुणसिलएणामचेइएहोत्था

सुधर्मास्वामी चौथा आरामेविषे । तेणंसमएणं । तेसमयनेविषे भगवंत वर्त्तमानहे ते समये । रायगिहेणामणयरेहोत्था ॥ राजगृह,, इसेनामे वररिद्धवंतो नगरहोता हुवो हवा वर्त्तमानकाले राजगृहनगरछे तोपिण अतीतकाले नगरनो जेहवो वर्णवंतो तेहवो वर्त्तमानकाले नहीं यवस पिण्यी काल माटे हुवापनो । वण्णओ । वर्णकजेवनगरनोवर्णकसेवीयो जाणवा । तस्सणरायगिहस्सणयरस्सबहिया । ताणायासकारे एससर्वनावचनो तेहने राजा राजगृह नगरने बाहिर । उत्तरपुरत्थिमेदिसीभाए । उत्तरपूर्वना दिशिना भाग विभागनेविषे पतईशानकोणनेविषे गुणसिल इसेनामे व्यन्तरयत मा चैत्यच्छे जिन भवना विवधत आयतन स्थानक हवा । सत्तसेविएरायाः । तिहां राजगृहनगरे श्रेणिकनामें राजाछे चेलण निश्चरी एक मुख्य

कारात्मारिस्ता स्मीपइव प्रदीपः इदंविशेषणं तुष्टलोकमाश्रित्योक्तं भयहृदयलोकमाश्रित्याह ॥ लोगपज्जोयगराणंति ॥ लोकस्य लोकयतइतिलोको
नया व्युत्पत्त्या लोकालोकस्वरूपस्य समस्तवस्तुस्तोमस्वभावस्य स्वकमासप्रत्यक्षमिव निखिलभावस्वभावावभासनसमर्थकेवलालोकपूर्वकप्रवचन
प्रतापटलप्रवर्तनेनप्रद्योत प्रकाशं करोती त्येवंशीलो लोकप्रद्योतकरः अत्रविशेषणोपेतत्व मिहिरहरिहरहिरण्यगर्भादिरपि तत्तीर्थिकमतेन भवती
ति कारयिगप ? इत्याशङ्कायां तद्विशेषाभिधानायाह ॥ अभयदयाणंति ॥ नभय दयते ददाति प्राणापहारवधिक प्युपसर्गकारिप्राणिनी त्यभयदयः
भ्रमयायाः सर्वप्राणिभयपरिहारवती दया सुकम्पा यस्य सोऽभयदयो हरिहरमिहिरादयस्तु नैवमितिविशेषः नकेवल मसावपकारिणो तदन्येषांवा
ऽभयपरिहारमात्र कुरोती त्यपि त्वधेप्राप्तिमपि करोतीति दर्शयन्नाह ॥ चक्खुदयाणंति ॥ चक्षुरिवचक्षुः श्रुतज्ञान शुभाशुभार्थविभागोपदर्शकत्वात्
यदाह—चक्षुष्मन्तस्तएव येश्रुतज्ञानचक्षुषा सम्यक्सदैवपश्यन्ति भावान्हेयेतरान्नराः ॥१॥ तद्दयतइति चक्षुर्दयः, यथाहि—लोके कान्तारगतानां चौ
रैर्विलुप्तधनानां बद्धचक्षुषां चक्षुरुद्घाटनेन चक्षुर्दत्त्वा वाञ्छितमार्गदर्शनतो पकारी भव त्येव भगवानपि संसारारण्यवर्तिनां रागादिरिपुविलुप्तधर्म
धनानां कुवासनाच्छादितसज्ज्ञानलोचनानां तदपनयनेन श्रुतचक्षुर्दत्त्वा निर्वाणमार्गं यच्छ नुपकारीति दर्शयन्नाह ॥ मग्गदयाणंति ॥ मार्गं सम्यग्द
र्शनज्ञानचारित्रात्मकं परमपदपुरपथं दयतइति मार्गदय यथाहि—लोके चक्षुरुद्घाटन मार्गदर्शनञ्च कृत्वा चौरादिविलुप्ता निरुपद्रवं स्थानं प्राप
यन् परमोपकारीभवती त्यवमयमपीति दर्शयन्नाह ॥ सरणदयाणंति ॥ शरणं त्राणं नानाविधोपद्रवोपद्रुतानां तद्रक्षास्थानं तच्च परमार्थतो निर्वाण

लोगपज्जोयगराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं

न एवप्रदीपसमान । लोगपज्जोयगरा इत्थ लोकशब्दतो गणधरा तेषां ते पज्जोयसूर्यसमानको जिनसूर्यगोव्याखोतयातेकरा जगसारिं सघलैउद्योतकीय तिम
ज्यामोनि उपदेशवा विमलेश्वा ध्रुवेश्वा पवले निपजीने वयमेकारी द्वादशांगी रचे । अथवा, समस्तलोकालोकस्वरूपनेविषे प्रद्योतकरे । अभयदयाणं । उ
पसर्ग मरणभयनेविषे अभयनादे । अथव, दयावतेदोयेते । चक्खुदयाणं । श्रुतज्ञानरूपचक्षु दे तेभणी । मग्गदयाणं । ज्ञानदर्शनचारित्ररूप मोक्षमार्गना दा

रिसवीहेत्ति ॥ सिंहस्व सिंह पुरुष यासौसिंहश्चेतिपुरुषसिंहो लोके नहि सिंहे शौर्ये मतिप्रकृष्ट मभ्युपगत मतः शौर्ये स उपमान कृत शौर्य तु भगवतो वास्ये प्रत्यनीकदेवेन भाव्यमावस्या प्यनीतत्वात् कुलिशकठिनमुष्टिप्रहारप्रहतिप्रवृद्धमानामरशरीरकुब्जताकरणाच्चेति तथा ॥ पुरिसव रपुंडरीएत्ति ॥ वरपुंडरीक प्रधानधवलसहस्रपत्र पुरुषो वरपुंडरीकमिवेति पुरुषवरपुंडरीक धवलस्य चास्य भगवतः सर्वाशुभमलीमसरहितत्वात् सर्वैश्च शुभानुभावैः शुद्धत्वात् अथवा पुरुषाणां तत्सेवकजीवानां वरपुंडरीकमिव वरच्छत्रमिव यः सन्तापातपनिवारणसमर्थत्वात् भूपाकारस्या स स पुरुषवरपुंडरीकमिति तथा ॥ पुरिसवरगंधहत्थित्ति ॥ पुरुषएव वरगंधहस्ती पुरुषवरगंधहस्ती यथागंधहस्तिनो गंधेनापि समस्तेतरहस्तिनो भ ज्यंते तथा भगवत स्तद्देशविहरणेन ईतिपरचक्रदुर्भिक्षडमरमरकादीनि दुरितानि नश्यंतीति पुरुषवरगंधहस्तीत्युच्यते इत्यत उपमात्रया सुरूपो तमो यो भगवान् पुरुषोत्तमएव त्रिलोकस्या प्युत्तमो लोकनाथत्वा देतदेवाह ॥ लोगनाहेत्ति ॥ लोकस्य सविनयलोकस्य नाथः प्रभु लोकनाथो नाथत्वं योगक्षेमकारित्वं योगक्षेमकृन्नाथइतिवचनात् तथा त्वा प्राप्तस्य लोकस्य सम्यग्दर्शनादे र्योगकरणेन लब्धस्य परिपालनेनेति लोकना थत्वंच यथावस्थितसमस्तवस्तुलोकप्रदीपना देवेत्यतआह ॥ लोगपईवत्ति ॥ लोकस्य विशिष्टतिर्यग्नरामररूपस्या तरतिमिरनिराकरणेन प्रकृष्टप्र

पुरिसुत्तमे पुरिससीहे पुरिसवरपुंडरीए पुरिसवरगंधहत्थी लोगुत्तमे लोगनाहे लोगहिए लोगपदीवे

सकमायेकरी सवमवम पापरहित तमाटे । पुरिसवरगंधहत्थी ॥ पुरुषमांहि प्रधान गन्धहस्तीसमान जिमगंधहस्तीनीगन्धे घणेरा हाथी नासे तिम भ गवंत बेठेहेथणेथिये विचरे विहारतिहां ईतिदुर्भिक्षादिपरचक्रनासें ॥ लोगुत्तमे ॥ भव्यलोकमांहि प्रभावेकरी उत्तमछे । लोगनाहे । इहांलोकमध्ये पासगसिद्धि मायमामी सथवाईं भव्यजीव आववा तेहमध्ये भव्यजीवे योगक्षेमना करणहारछे जिवेथावे अप्राप्यनुंप्राप्त तेहने पमाडेछे ते योग कहीये पनेजिवे पामे घमतायोहे तेहने वाघाधको चवकद्यागलोसे मनमें क्षिरपणु उपजावेते क्षेमकहीये तेवेदुवाना स्वामीछे तेभणीलोकनाथ कहीये । इहांतोव यदविवधीयनिवाव तेहने रखाने वरते हितकारि । लोगपदीवे । इहांलोककहीये संज्ञीपंचेंद्रीजीव तिहने धर्मनो प्रकाशके तेह

२५

ते भवभिभ्योपरेअस्या मोपकारीभवतीति निष्प्रत्यूहताप्रतिपादनायाह—अथवा—कथमस्याप्रतिहतसर्वेत्मत्वं सम्पन्नम् । अत्रोच्यते मावरणाभावा देतमे वास्यायेदयमाह ॥ वियट्टछउमत्येति ॥ व्यावृत्तं निवृत्त मपगतं छद्म शाठत्व मावरणवा यस्यासौ व्यावृत्तछद्मा, छद्माभाव श्चास्य रागादिअभावात् इत्याह ॥ जिणेति ॥ जयति निराकरोति रागद्वेषादिरूपा मरातीं नितिजिनः, रागादिजय श्चास्य रागादिस्वरूपतज्जयोपायज्ञानपूर्वकएव भवतीत्ये तदस्याह ॥ जाणएत्ति ॥ जानाति छाद्मस्थिकज्ञानचतुष्टयेनति ज्ञायकः, ज्ञायकत्वमेनास्य स्वार्थसम्पत्त्युपायउक्तो ऽधुनातु स्वार्थसम्पत्तिपूर्वकं परार्थ सम्पादकत्वं विशेषणचतुष्टयेनाह ॥ बुद्धेत्ति ॥ बुद्धो जीवादितत्त्वम्बुद्धवान् तथा ॥ बोहएत्ति ॥ जीवादितत्त्वस्य परेषां बोधयिता, तथा ॥ मुत्तेत्ति ॥ मुक्तो बाह्याभ्यन्तरग्रन्थबन्धनेन मुक्तत्वात्, तथा ॥ मोयएत्ति ॥ परेषा कर्मबन्धना न्मोचयिता । अथ मुक्तावस्था माश्रित्य विशेषणान्याह ॥ सव्वण्णू सव्वदरिसीति ॥ सर्वस्य वस्तुस्तोमस्य विशेषरूपतया ज्ञायकत्वेन सर्वज्ञः, सामान्यरूपतया पुनः सर्वदर्शी, नतुमुक्तावस्थाया दर्शनान्तराभिमतपुरुषव ज्ञानविषु ज्ञानत्व एतत्पदद्वय मपि अदृश्यतइति । तथा ॥ सिवमयलमित्यादि ॥ तत्र शिवं सर्वबाधारहितत्वा, दयल स्वाभाविकप्रायोगिकचलनहे त्वभावात् अरुजं अविद्यमानरोगं तन्निबन्धनशरीरमनसोरभावात् अनन्त मनन्तार्थविषयज्ञानस्वरूपत्वात् अक्षय मनाशत्वाद्यपर्यवसितस्थितिकत्वात्

थियट्टछउमे जिणे जाणए बुद्धे बोहिए मुत्ते मोयए सव्वण्णू सव्वदरिसी सिवमयलमरुअमण तमक्खयमव्वाबाह

दिकरोइइत्यामायनहा एहवा मथान केवलज्ञान केवलदर्शन तणा धारनार्द्दे भगवत ॥ वियट्टछउमे ॥ निवर्त्तवीछे छद्मस्थपणो जेहवो ॥ जिणे ॥ रागादिक जीत्या जिणें ते जिन छाद्मस्थिकज्ञानधारीजो भणिक ॥ जाणए ॥ जाणें जीवादितत्त्व ॥ बुद्धे ॥ बूझ्या ॥ बोहिए ॥ जीवादितत्त्व परनें बुझवे ॥ मुत्ते ॥ बाह्या भ्यतर परिग्रहथी मुंकाणा ॥ मोयए ॥ औरनोमाने कर्मबन्धथी मुंकावे ॥ सव्वण्णू ॥ सर्वभावें जाणेंवरो ॥ सव्वदरिसी ॥ सर्वदेखे दर्शनेकरो । सुलिवपदप्राप्त्योकहेवे ॥ सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाह ॥ सर्वबाधाबाधारहित अचलाग्गो अभाव रोगरहित अनतअर्थविषयस्वरूपयको सादिअपर्यवसितयको अनेरा भेपोहनकरे ॥ अपुणरावत्तियं ॥ पुनरपिपाछोआवो योआयवतार नहीकरे ॥ सिद्धगइनामधेयं ॥ मोचआयानो गति सकलकर्मपूरा जिहांअयस्तनामधेयनो

तदुपसद्गति अरवदयः अरवदायकत्वमस्य धर्मदेशकमपीत्यतआह ॥ धम्मदेसएत्ति ॥ धर्मं श्रुतचारित्रात्मकं देशयतीति धम्मदेशकः ॥ धम्मदएत्ति ॥ पाठान्तरं; तत्र धर्मं श्रुतचारित्ररूपं ददात इतिधर्मदयः धर्मदेशनामात्रेणापि धर्मदेशक उच्यत इत्यतआह ॥ धम्मसारहित्ति ॥ धर्मरथस्य प्रव तकत्वेन सारथिरिव धर्मसारथिः यथा रथस्य सारथी रथ रथिक मश्वाय रक्षति एवं भगवान् चारित्रधर्माङ्गानां संयमात्मप्रवचनाख्यानां रक्षो पदेशा द्धर्मसारथि भवतीति तीर्थोत्तरीयमतेभ्यो न्यपि धर्मसारथयः सन्तीतिविशेषयन्नाह ॥ धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीत्ति ॥ त्रय समुद्रा चतुर्थ श्च हिमवान् एतेचत्वारोन्ता पृथिव्यन्ता एतेषु स्वामितया भवतीति चातुरन्तः सचासौचक्रवर्तीच वरचातुरन्तचक्रवर्ती राजातिशायो धर्मविषये यस्था तुरन्तचक्रवर्ती धर्मवरचातुरन्तचक्रवर्ती, यथाहि–पृथिव्यां शेषराजातिशायी वरचातुरन्तचक्रवर्तीभवति तथा भगवा न्धर्मविषय शेषप्रणेतृणा मध्ये सातिशयत्वा तथोच्यतइति । अथवा धर्मएव वर मितरचक्रापेक्षया कपिलादिधर्मचक्रापेक्षयाया चातुरन्तं स्थानादिभेदम चतुर्विभाग न्यत सृषावा नरकादिगतीना मन्तकारीत्वा चतुरन्तं तदेवचातुरन्तं चक्रं भवारातिच्छेदा तेन वर्तितुं शीलमस्य सतथा, एतच धर्मदेशकत्वादिविशेष णचतुष्कस्य महाप्रधानादिपोमेवति भवतीत्याह ॥ धम्मप्पडिहयवरनाणदंसणधरेति ॥ अप्रतिहते कटकुट्यादिभि रस्खलिते अविसंवादकेवा ऽतएव क्षा यिकत्वाद्वा वरे प्रधाने ज्ञानदर्शने केवलाख्ये विशेषसामान्यबोधात्मके धारयति यः सतथा, अज्ञवान ज्येयविषयसंवेदनसम्पदुपेतः कोपि दन्युपगम्य

योहिदए धम्मदए धम्मदेसिए धम्मनायगे धम्मसारहिए धम्मवरचाउरतचक्कवट्टी अप्पडिहय वरणाणदंसणधरे

तारवे। सरणदए। नानाविधउपद्रुत थायत एहामाम पतसी निर्वांपदीवे तेमाटे सरणदए। जावित्दए। सम्यक् चारित्ररूप तेहना देणहार। । धम्मदए। चारित्ररूप धर्मना देणहार। धम्मदेसिए। श्रुतचारित्ररूपधर्मनो उपदेशक। धम्मनायगे। धर्मना नायक ठाकुरछे। धम्मसारहीए। ध र्मरूपरथ प्रवर्ताववाने सारथीसमान। धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टी। जिम पृथिवीनेविषे समस्त राजामाहि चक्रवर्ती प्रधान तिम धर्मनायकमाहि भ गवान् चक्रवर्ति। अथवा चक्रवर्ति चारदिशिनो अतकरे चोथ समाधे तिम भगवन्त चारिगतिनो अंतकरे। अप्पडिहयवरनाणदंसणधरे जिन्हा

पृत: परिकरितइति ॥ पुव्वाणुपुव्विचरमाणे ॥ मपयागुपूर्व्योदिमा ॥ गामाणुगामदूइज्जमाणे ॥ ग्रामात् ग्रामानुग्रामं तदनन्तरग्रामो ग्रामानुग्राम तम्यन् गच्छन् ॥ सुहं सुहेणं विहरमाणे जेणेव रायगिहे णयरे जेणेव गुणसिलए चेइए तणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहं ओगि ण्हइ उगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइत्ति ॥ समवसरणवक्तव्य, समवसरणं भगवओ अंतेवासी थेरे समणा भगवतो अप्पेगइया उग्गपव्वइयाइत्यादि ॥ साध्व्यादिवक्तो वाच्य, तथा असुरकुमाराः आपभवनपतयो व्यंतरा ज्योतिष्का वैमानिका देवाश्च, भगवत समीप मागच्छन्तो वर्णयितव्याः ॥ परिसानिग्गयत्ति ॥ राजप्रभृतिलोको भगवतो वन्दनार्थं निर्गत इत्यर्थमेव ॥ तएणं रायगिहे णयरे सिंघाडगतिगचउक्कच च्चरचउम्मुहमहापहपहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं खलु देवाणुप्पिया समणे भगवं महावीरे इह गुणसिलए चेइए अहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ तं महप्फलं खलु तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं णामगोयस्सवि सवणयाए किमंगपुण वंदण णमंसणपडिपुच्छणपज्जुवासणयाए इत्यादिवाच्यो याव भगवंत नमस्यति पर्युपासतेचेति एवं राजनिर्गमो त पुरनिर्गमश्च तत्पर्युपासना चौपपातिकवद्वाच्या ॥ धम्मोकहिओत्ति ॥ धर्मकथेह भगवतो वाच्या साचैव-तएणं समणे भगवं महावीरे सेणियस्स रण्णो चिल्लणापमुहाणपदेवीए ती सेय महइमहालियाए परिसाए सव्वभासाणुगामिणीए सरस्सईए धम्मं परिकहेइ तंजहा अत्थिलोए अत्थिअलोए। एवं। जीवाअजीवा बन्धमोक्खे ॥ इ त्यादि तथा ॥ जहाजीवा बज्झन्ती ... रसाद्दुःखानतिरिक्तजीवाः ॥ इत्यादि ॥ पडिगयापरिसत्ति ॥ लोकः स्वस्थान गतः प्रतिगतश्च तस्या एव वाच्यः ॥ तएणंसमणस्सभगवओ महइ महालिया ॥ महइ परिसा ॥ महत्ति ॥ महती आलयप्रत्ययस्य स्वार्थिकत्वा दतिशयातिशयगुर्वी महत्परिषत् प्रभासतामधामभवत्। महत्यामात्यायामप्यात्मजा महापर्षद्वा परिषत् महार्षपदिति समणस्स भगवओमहावीरस्स अंतिए धम्मं सो

परिसाणिग्गया

वार उपाधिश तिम ... ॥ परिसाविभाषा ॥ पषदा बारह बेठो बार देवनी बारदेवीओ चतुर्विधसघ। अध्यात्मिका। भगवतेधर्मश्रवणो। तमहा भवि

भक्तितया परिपूर्णत्वा स्पौर्णमासीचन्द्रमण्डलवत् अव्याबाध परेषामपीडाकारित्वात् ॥ सिद्धिगइनामधेयंति ॥ सिध्यन्ति निष्ठितार्था भवन्ति यस्यां सा सिद्धिः सा चासौ गम्यमानत्वा द्गतिश्च सिद्धिगति सादेव नामधेयं प्रशस्तनाम यस्य तत्तथा ॥ ठाणंति ॥ तिष्ठति अनवस्थानिवृत्तनकमात्रायेन सदावस्थितो भवति यत्र तत्स्थानं क्षीणकर्मणो जीवस्य स्वरूप लोकाग्रंवा जीवस्वरूपविशेषणानित लोकाग्रस्य व्यवधर्मिणो माधारे ऽध्यारोपा दयमपाभि तदेवभूतं स्थानं ॥ संपाविउकामेत्ति ॥ प्राप्तुमना ननु तस्माप्तस्यास्याकारमत्वेन विवक्षितायाना प्ररूपणासम्भवात् मागुक्तामहतिं च पठ्यते तदुपचारा दन्यत्रापि निरर्निसायाएव भगवन्तः केवलिनो भवन्ति-मोक्षेभवेचसर्वत्र निस्पृहोमुनिसत्तम इतिवचनादिति ॥ जावसमोसरणंति ॥ ताव द्भगवद्वक्तव्यो वाच्यो याव त्समवसरणं समवसरणवक्तव्यता तच भगवद्वर्णकएव ॥ भुयमोयगभिंगनेलकज्जलपहट्ठभमरगणनिद्धनिकुरुंबनिचियकुंचियपयाहिणावत्तमुद्धसिरए ॥ भुजमोचको रत्नविशेषो, भृङ्गः कीटविशेष अङ्गारविशेषोवा नैलं नीलीविकारः कज्जलं मषी,प्रहृष्टभ्रमरगण प्रतीत एतएव स्निग्धः कृष्णच्छायो निकुरम्बः समूहो येषान्ते तथा तेच ते निचिताश्च निबिडा कुञ्चिताश्च कुण्डलीभूता प्रदक्षिणावर्ताश्च मूर्द्धि शिरो जायेष्वेतपा एव शिरोजवर्णकादि ॥ रत्तुप्पलपत्तमउयसुकुमालकोमलतले ॥ इति पादतलवर्णकान्तः शरीरवर्णको भगवतो वाच्यः,पादतलयि शेषकस्य चायमर्थः रक्तं लोहितं मुत्पलपत्रवत् कमलदलवत् मृदुकमस्तब्धं, सुकुमालानां मध्ये कोमलं, तत पादतलं यस्य स तथा तथा॥ अठ सहस्सवरपुरिसलक्खणधरे आगासगएणंचक्केणं आगासगएणंछत्तेणं आगासगयाहिं चामराहिं आगासफलिहामएणं सपायपीढेणं सीहासणेणं ॥ आ काशस्फटिक मतिस्वच्छं स्फटिकविशेष साम्यमेन उपलक्ष्यतइतिगम्यं ॥ धम्मज्झएणंपुरओकड्ढिज्जमाणेणं ॥ देवैरितिगम्यते ॥ चउद्दसहिं समणसाहस्सीहिं छत्तीसाए अज्जियासाहस्सीहिं सद्धिंसंपरिवुडे ॥ साहस्सीसए सहस्रपर्यायः साद्ध सह तेषां विद्यमानत्वापि साद्धमितिस्या दसं उच्यते संपरि

मप्पुणरावत्तिय सिद्धिगइनामधेयं ठाणसंपाविउकामे जाव समोसरणं

। ठाणसंपाविउकामे । काबायकाम केवीनामा... ते बोधमाकाम तिकाकानामेस्थापत । कायमनोयरच । कायद्रमभामरच्छाकर्णक जिन च

एसः परिकहितइति ॥ पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे ॥ अनयानुपूर्व्यादिना ॥ गामाणुगामं दूइज्जमाणे ॥ ग्रामश्च प्रतीतो ऽनुग्रामश्च तदनन्तरग्रामो ग्रामानुग्रामं तद्व्रजन् गच्छन् ॥ सुहं सुहेणं विहरमाणे जेणेव रायगिहे णयरे जेणेव गुणसिलए चेइए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हइ ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइत्ति ॥ समवसरणवर्णकेन, समणस्स भगवओ अंतेवासी बहवे समणा भगवंतो अप्पेगइया उग्गपव्वइयाइत्यादि ॥ भाष्यादिवर्णको वाच्य, तथा असुरकुमाराः शेषभवनपतयो व्यंतरा ज्योतिष्का वैमानिका देवाश्च, भगवत समीप मागच्छन्तो वर्णयितव्याः ॥ परिसानिग्गयत्ति ॥ राजप्रभृति जनसमूहो भगवतो वन्दनाय निर्गत स्तत्रिगमश्चैव ॥ तएणं रायगिहे णयरे सिंघाडगतिगचउक्कचच्चरचउम्मुहमहापहपहेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ एवं खलु देवाणुप्पिया समणे भगवं महावीरे इह गुणसिलए चेइए अहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ तं महप्फलं खलु तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं नामगोयस्सवि सवणयाए किमंगपुण अभिगमणवंदणनमंसणपडिपुच्छणपज्जुवासणयाए इत्यादिर्वाच्यो याव भगवंतं नमस्यति पर्युपासतेचेति एवं राजनिर्गमो नगरनिर्गमश्च तत्पर्युपासना चौपपातिकवद्वाच्या ॥ धम्मोकहिओत्ति ॥ धम्मकथेह भगवता वाच्या साचैव–तएणं समणे भगवं महावीरे सेणियस्स रण्णो चिल्लणापमुहाणयदेवीण ती सेय महइमहालियाए परिसाए सव्वभासाणुगामिणीए सरस्सईए धम्मं परिकहेइ तंजहा अत्थिलोए अत्थिअलोए। एवं जीवा अजीवा बंधेमोक्खे ॥ इत्यादि तथा ॥ जहानरगागम्मंती जहेरयाजायवेमणामरणसारीरमाणसा दुक्खाइतिरिक्खजोणीए ॥ इत्यादि ॥ पडिगयापरिसत्ति ॥ लोकः स्वस्थान गतः प्रतिगमश्च तस्या एव वाच्य ॥ तएणंसामहइमहालिया ॥ महइ परिसा ॥ महतीति ॥ महती आलयप्रत्ययस्य स्वार्थिकत्वा दतिशयातिशयगुर्वी महत्यपत् महालताप्रधानपयत् । महाकामाना सतपूजाना महाधीया परिषत् महाभंपषादिति समणस्स भगवओमहावीरस्स अंतिए धम्मं सो

परिसाणिग्गया

चार उपांगेव तिम कह्या ॥ परिसाविम्मसा ॥ पर्षदा बारह बेठी चार देवनी चारदेवीनी चतुर्विधसंघ ॥ बारहजिणी ॥ भगवद्धर्मकथा ॥ तंजहा अत्थि

मतिर्नया परिपूर्णस्या स्पौषमासीवन्मूमधलवत् मध्याबाध परेपा मपीडाकारित्वात् ॥ सिद्धिगइनामधेयति ॥ सिध्यन्ति निष्ठितार्था भवन्ति यस्या सा सिद्धिः सा चासौ गम्यमानत्वा द्गतिश्च सिद्धिगति स्तदेव नामधेय म्प्रशस्तनाम यस्य तत्तथा ॥ ठाणति ॥ तिष्ठति भवस्थानिबन्धनकर्माभावेन सदावस्थितो भवति यत्र तस्थाम जीवकर्मणो जीवस्य स्वरूप लोकाग्रवा जीवस्वरूपविशेषणानितु लोकाग्रस्य माध्यधर्माणा माधारे ध्यारोपा दयसयानि लब्धभूत स्थान ॥ सपाविउकामत्ति ॥ पातुमना मसु सम्प्राप्तस्त्वप्राप्तस्याकारकत्वेन विवक्षितायाना प्ररूपणासम्भवात् प्राप्तुकामइतिच यदुच्यत तदुपचारा दन्यथाहि निरभिलाषाएव भगवन्तः केवलिनो भवन्ति—मोक्षेभवेचसर्वत्र निस्पृहोमुनिसत्तम इतिवचनादिति ॥ जावसमोसर णति ॥ ताव द्भगवद्वर्णको वाच्यो याव स्समवसरण समवसरणवर्णकइति स च भगवद्वर्णकएव ॥ भुयमोयगभिङ्गनेलकज्जलपहट्ठभमरगणनिद्धनिकुरुंब निचियकुंचियपयाहिणावत्तमुद्धसिरए ॥ भुजमोचको रत्नविशेषो, भृङ्ग कीटविशेष अङ्गारविशेषोवा नैल नीलीविकारः, कज्जल मषी,प्रहृष्टभ्रमरगण प्रतीत एतएव स्निग्धः कृष्णच्छायो निकुरुम्बः समूहो येषान्ते तथा तेच ते निचिताय निबिडा कुञ्चिताय कुण्डलीभूता प्रदक्षिणावर्ताय मूर्द्ध शिरो जायस्य सतथा एव शिरोजवर्णकादिः ॥ रत्तुप्पलपत्तमउयसुकुमालकोमलतले ॥ इति पादतलवर्णकान्त शरीरवर्णको भगवतो वाच्यः, पादतलवि शेषणस्य चायमर्थः, रक्त लोहित मुत्पलपत्रव त्कमलदलवत् मृदुकमकाश्च, सुकुमाराणा मध्ये कोमल, तल पादतल यस्य स तथा तया ॥ अठ सहस्सवरपुरिसलक्खणधरे आगासगएणचक्केणं आगासगएणछत्तेण आगासगयाहिं चामराहिं आगासफालियामएणं सपायपीढेण सीहासणेण ॥ आ काशस्फटिक मतिस्वच्छ स्फटिकविशेष स्तन्मयेन उपलक्ष्यतइतिगम्य ॥ धम्मज्झएणपुरओपकड्डिज्जमाणेणं ॥ देवैरितिगम्यते ॥ चउद्दसहिं समणसाहस्सी हिं छत्तीसाए अज्जियासाहस्सीहिं सद्धिंसपरिवुडे ॥ साहस्सीश्रद्धाः सहस्रपर्यायाः साद्ध सह तेषा विद्यमानतयापि साद्धमितिस्या दत उच्यते सपरि

मप्पुणरायपित्तिय सिद्धगइनामधेयं ठाणसंपाविउकामे जाव समोसरणं

ठाणस । विउकाम । भावायत्थान पेगीलमाषभयवमया ते जीवमास्थान तिहा मागस्थान । जावसमोसरण । वाउप्समासरणमा वर्णक विम उ

स्यदतिवशानुग स्थागतमिति अन्येत्वाहु–विस्तारोत्सेधयो समत्वात् समचतुरस्र तच्चतत् संस्थानञ्चा कारः समचतुरस्रसंस्थानं तेन संस्थितो व्य वस्थितो यः सतथा अयञ्च हीनसंहननोऽपि स्यादित्यतआह ॥ वज्जरिसहनारायसंघयणत्ति ॥ इह संहननं अस्थिसञ्चयविशेष वज्रादीनां लक्षण मिद्–रिसभो पट्टो वज्रपुनकीलिकाविद्यागाहि । उभओमक्कडबंधो नारायतवियाणाहित्ति ॥ १ ॥ तत्र वज्रञ्च तत्कीलिका कीलितकाष्ठसम्पुटोपम सामर्थ्ययुक्तत्वात् ऋषभश्च लोहादिमयपट्टवत्काष्ठसम्पुटोपमसामर्थ्यान्वितत्वा द्वज्रर्षभः सचासौ नाराचश्च उभयतो मर्कटबन्धनियन्त्रकाष्ठसम्पुटोपम सामर्थ्योपेतत्वात् वज्रर्षभनाराच तत्संहनन मस्थिसञ्चयविशेषो नुत्तमसामर्थ्ययोगा द्यस्यासौ वज्रर्षभनाराचसंहननः । अन्येतुकी लिकादिमस्य मस्था मेव वक्ष्यन्ति अयञ्च निन्द्यवर्णोऽपि स्यादित्यतआह ॥ कणगपुलयनिघसपम्हगोरे ॥ कनकस्य सुवर्णस्य ॥ पुलगत्ति ॥ यः पुलको लव स्तस्य योनि कषः कषपट्टकेरेखालक्षणः तथा ॥ पम्हत्ति ॥ पद्मपक्ष्माणि केसराणि तद्वद्गौरो यः सतथा । वृद्धव्याख्यातु–कनकस्य न लोहादे यः पुलकः सारो व र्णातिशय स्तत्प्रधानो यो निकषो रेखा तस्य यत्पक्ष्म बहुलत्वं तद्वद्गौरो यः सतथा अथवा कनकस्य यः पुलको द्रुतस्वेसति बिन्दु स्तस्य निकषो व र्णतः सदृशो यः सतथा ॥ पम्हत्ति ॥ पद्म तस्य चेह प्रस्तावा त्केसराणि गृह्यन्ते ततः पद्मवद्गौरो यः सतथा ततः पदद्वयस्य कर्मधारयः । अय ञ्च विशिष्टचरणरहितोऽपि स्यादित्यतआह ॥ उग्गतवेत्ति ॥ उग्र मप्रधृष्य तपो ऽनशनादि यस्यसउग्रतपा । यदन्येन प्राकृतपुंसा नशक्यते चिन्तयितु

वज्जरिसहनारायसंघयणे कणगपुलगणिघसपम्हगोरे उग्गतवे

तत्र समाने संस्थितहे । वज्जरिसहनारायसंघयणे । हाडनासंचारविशेष तसबयण अव्यकहाय कोहिका ऋषभकहीये पाटा नारायकहीये बिहुपासे मकटबंध एहवा वज्रऋषभनाराचनो धरणहार । कणगपुलगनिघसपम्हगोरे । सुवर्ण कसोटी जिम कर्योहोय पद्म कमलनोपरे गोरवर्ण छे जेहनो शरी रना । उग्गतवे । घमरे विगडी आयरणवे पौतथ्या मजाय तपजेहनो एहवा उग्रतप अनशनादि ॥ दित्ततवे ॥ दीप्त जाज्वल्यमान कर्मरूपीया वनदहवा भणी अग्निसरीखा जेहनो तप । तत्ततवे । जेणेतपेकरी कर्म तपावीयेते तप्ततप कहीये । महातवे । आशंसादिदोषरहित तेमोटोतप । उराले । प्रधानतपे

घानिसम्मइठतुणासमर्थ ३ तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ २ वंदइनमसइ २ एवंवयासी सुयक्खाएणं भंते । निग्गंथेपावयणे नत्थिणं धम्मेभेइ समणेवा माहणेवा परिसधम्ममाइक्खित्तए एववदंता जामेवदिसिं पाउब्भूया तामेवदिसिं पडिगयत्ति ॥ तेणमित्यादि ॥ तेनकालेन तेनसमयेन श्रम

णस्य भगवतो महावीरस्य ॥ जेट्ठेत्ति ॥ प्रथमः ॥ अंतेवासित्ति । शिष्यः श्रमण पदद्वयेन तस्य सकलसद्गुणायकत्वमाह ॥ इंदभूइत्ति ॥ इन्द्रभूतिरि ति मातृपितृकृत नामधेय ॥ नामत्ति ॥ विनेयपरिणामात् नामेत्यर्थः अन्तेवासी किल विवक्षया श्रावकोऽपि स्यादित्यतआह ॥ अणगारेत्ति ॥ नास्यागारं विद्यत इत्यनगारः, अयञ्चा १ वगीतयोत्रोऽपि स्यादित्यतआह ॥ गोयमगोत्तेणत्ति ॥ गौतमसगोत्रइत्यर्थः, अयञ्च तत्कालोचितदेहमा नापेक्षयान्यूनाधिकदेहोऽपि स्यादित्यतआह ॥ सत्तुस्सेहेत्ति ॥ सप्तहस्तोच्छ्रयः अयञ्च लक्षणहीनोऽपि स्यादित्यतआह ॥ समचउरससंठाणसंठिएत्ति ॥ समं नाभेः उपरि अधश्च सकलपुरुषलक्षणोपेतावयवतयातुल्य तत् चतुरस्रञ्च प्रधान समचतुरस्र अथवा समाः शरीरलक्षणोक्तप्रमाणाविसंवा दिन्य चतस्रोऽश्रयो यस्य तत्समचतुरस्रं अश्रयस्त्विह चतुर्दिग्भागोपलक्षिताः शरीरावयवाइति, अन्येत्वाहु—समा अन्यूनाधिका चतस्रो प्यश्रयो यत्र तत्समचतुरस्रं अश्रयश्च पर्यंकासनोपविष्टस्य जानुनो रन्तरं आसनस्य ललाटोपरिभागस्य चान्तरं दक्षिणस्कन्धस्य वामजानुन आन्तरं वामस्कन्ध

घम्मोकहिया परिसापडिगया । तेणकालेणं तेणसमएणं समणस्सभगवओमहावीरस्स
जेट्ठेअंतेवासी इंदभूतीणाम अणगारे गोयमगोत्तेणं सत्तुस्सेहे समचउरससंठाणसंठिए

धोर एवंबोला घमोवा धर्मोछे इत्यादि ॥ परिसापडिगया ॥ पर्षदासमवोसरण थकीहवे पोतानां स्थानकनेविषे गया ॥ तेणकालेणं ॥ तेकालनेविषे ॥ तेणंसमएणं ॥ तेसमयनेविषे ॥ समणस्सभगवओ महावीरस्स ॥ श्रमणतपस्वी ऐश्वर्यादिगुणयुक्त महावीरस्वामीनो ॥ जेट्ठेअंतेवासी ॥ वडो समीपने विषे रहे नारो प्रथमशिष्य ॥ इंदभूतीणाम ॥ इन्द्रभूति एहवुं मातापितानुं दीधोनामछेजेहनो घररहित एतावतासाधु ॥ गोयमगोत्तेणं अणगारे ॥ गौतमनामा गोत्रनो धरनहार ॥ सत्तुस्सेहे ॥ सातहाथप्रमाण शरीरछे जेहनो ॥ समचउरंससंठाणसंठिए ॥ सकलपुरुषलक्षणयुक्त सम छन्न चारे अंसछे जेहना एहवे समचउ

तत्या श्मी चतुर्दशपूर्वी अनेन तस्य श्रुतकेवलितामाह सर्वाक्षरसन्निपातित्वेऽपि स्यादत आह ॥ चउनाणोवगएत्ति ॥ मतिश्रुतावधिमनःपर्यायज्ञानचतुष्कसमन्वितत्वात्। उक्तविशेषणद्वययुक्तोऽपि कश्चिन्न समग्रश्रुतविषयव्यापिज्ञानो भवति चतुर्दशपूर्वविदां षट्स्थानकपतितत्वेन श्रवणादित्यत आह ॥ सव्वक्खरसन्निवाइत्ति ॥ सर्वे च ते अक्षरसन्निपाताश्च तत्संयोगाः सर्वेषां वाऽक्षराणां सन्निपाताः सर्वाक्षरसन्निपाताः ते ज्ञेयतया सन्ति यस्य स सर्वाक्षरसन्निपाती, श्राव्याणि श्रवणसुखकारीणि अक्षराणि साकल्येन नितरां वदितुं शीलमस्येति श्राव्याक्षरसन्निपाती स च एवंगुणविशिष्टो भगवान् विनयराशिरिव साक्षादिति तस्या शिष्याचारत्वाच्च समणस्सभगवओमहावीरस्स। अदूरसामंते विहरतीति योग तत्र दूरं च विप्रकृष्टं सामन्तं च सन्निकृष्टं तन्निषेधाददूरसामन्तं तत्र नातिदूरे नातिनिकट इत्यर्थः, किंविधः सन्नत्र विहरतीत्यत आह ॥ उड्ढंजाणूत्ति ॥ ऊर्ध्वं जानुनी यस्य सावूर्ध्वजानुः शुद्धपृथिव्यासनवर्जना दौपग्रहिकनिषद्याया अभावाच्चोत्कुटुकासन इत्यर्थः ॥ अहोसिरेत्ति ॥ अधोमुखो नोर्ध्वं तिर्यग्वा विक्षिप्तदृष्टिः किन्तु नियतभूभागनियमितदृष्टिरिति भावः ॥ झाणकोट्ठोवगएत्ति ॥ ध्यानं धर्म्यं शुक्लं वा तदेव कोष्ठः कुशूलो ध्यानकोष्ठस्त मुपगत स्तत्र प्रविष्टो ध्यानकोष्ठोपगतो यथाहि—कोष्ठके धान्यं प्रक्षिप्त मविप्रसृतं भवत्येवं स भगवान् ध्यानतोऽविप्रकीर्णेन्द्रियान्तःकरणवृत्तिरिति ॥ संजमेणंति ॥ संवरेण ॥ तवसत्ति ॥ अनशना

चउणाणोवगए सव्वक्खरसण्णिवाती समणस्सभगवओमहावीरस्स
अदूरसामंते उड्ढंजाणू अहोसिरे झाणकोट्ठोवगए संजमेणतवसा

समद ॥ चेतनज्ञानवजित चारज्ञानना धरणहार ॥ सव्वक्खरसन्निवाई ॥ सर्व अक्षरना संयोग तेहना जाणछे । अथवा, श्रवणसुखकारी अक्षरनो समार्थे बोलीने वखाणना शीलव अहना अमच्छे । समणस्सभगवओमहावीरस्स । श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीने । अदूरसामंते । अतिवेगलो नहीं अति ढूंकडो नहीं । उड्ढंजाणू । जेहना जानुक जेहना ऊंचा ऊकडूआसनपणे अछे । अहोसिरे । अधोदृष्टि भूमिनेविषे । झाणकोट्ठोवगए । धर्मध्यान शुक्लध्या न रूपो कोठा तेहनेविषे उपगत पैठा जिम कोठामांहि धान्यो धान्य सरखोपरहो बीखरे नहीं तिम ध्यानमांहि रहतां इन्द्रियमननाविषय पसरे नहीं ।

मपि तद्विधेन तपसा युक्त इत्यर्थः ॥ दित्ततवेत्ति ॥ दीप्तं जाज्वल्यमानदहनवत् कर्मवनगहनदहनसमर्थतया ज्वलितं तपो धर्मध्यानादि यस्य स तथा ॥ तत्ततवेत्ति ॥ तप्तं तपो येनासौ तप्ततपाः एवं हि तेन तपसा तप्तं येन कर्माणि सन्ताप्यन्ते तेन तपसा स्वात्मापि तपोरूपः सन्तापितो यतोऽन्यस्यास्पृश्यमिव जातमिति ॥ महातवेत्ति ॥ आशंसादोषरहितत्वात् प्रशस्ततपाः ॥ उरालेत्ति ॥ भीम उग्रादिविशेषणविशिष्टतपःकरणात् पार्श्वस्थानामल्पसत्त्वानां भयानक इत्यर्थः अन्ये त्वाहुः ॥ उरालेत्ति । उदारः प्रधानः ॥ घोरेत्ति ॥ घोरो निर्घृणः परीषहेन्द्रियादिरिपुगणविनाशमाश्रित्य निर्दय इत्यर्थः अन्ये त्वात्मनिरपेक्षं घोरमाहुः ॥ घोरगुणेत्ति ॥ घोरा अन्यैर्दुरनुचरा गुणा मूलगुणादयो यस्य स तथा ॥ घोरतवस्सित्ति ॥ घोरैस्तपोभिस्तपस्वीत्यर्थः ॥ घोरबंभचेरवासित्ति ॥ घोरं दारुणमल्पसत्त्वैर्दुरनुचरत्वाद्यद् ब्रह्मचर्यं तत्र वस्तुं शीलं यस्य स तथा ॥ उच्छूढसरीरेत्ति ॥ उच्छूढमुज्झितमिवोज्झितं शरीरं येन तत्संस्कारत्यागात् स तथा ॥ संखित्तविउलतेयलेसेत्ति ॥ संक्षिप्ता शरीरान्तर्लीनत्वेन ह्रस्वतां गता विपुला विस्तीर्णा अनेकयोजनप्रमाणक्षेत्राश्रितवस्तुदहनसमर्थत्वात् तेजोलेश्या विशिष्टतपोजन्यलब्धिविशेषप्रभवा तेजोज्वाला यस्य स तथा मूलटीकाकृता तु ॥ उच्छूढसरीरसंखित्तविउलतेयलेसेत्ति ॥ कर्मधारयं कृत्वा व्याख्यातमिति ॥ चउदसपुव्वित्ति ॥ चतुर्दशपूर्वाणि विद्यन्ते यस्य तेनैव तेषां रचि

दित्ततवे तत्ततवे महातवे उराले घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्तविउलतेउलेस्से चउद्दसपुव्वी

पावकादि अग्निओपमे भयंकर ॥ घोरे ॥ निर्दय परीषह इन्द्रियादि रिपुविनाशवाभणी निर्दय ते घोरकहीये ॥ घोरगुणे ॥ अनेरेथीव आदरी नसके एहवा आचारना मूलगुणादि जेहना ॥ घोरतवस्सी ॥ घोरतपेकरी तपस्वीछे ॥ घोरबंभचेरवासी ॥ घोरदारुण ब्रह्मचर्ये अल्पसत्व जीवे आचरतां दोहिलो एहवा ब्रह्मचर्यनेविषे वसवानो शील ॥ उच्छूढसरीरे ॥ शरीरनी शोभारहित छांड्योछे देहनो ममता जिणे ॥ संखित्तविउलतेयलेस्से ॥ शरीरमांहि संक्षेप्योछे अनेक योजनप्रमाण क्षेत्राश्रितवस्तुदहनसमर्थ तेजोलेश्या जिणे एविशिष्टतपथी उपनी ॥ चउदसपुव्वी ॥ उत्पादादि चउदे पूर्वना धरनार ॥ चउनाणो

उच्यते यत उत्पन्नमहुदति हेतुत्वप्रदर्शनं व्योचितमेव वाक्यासङ्कारस्या तस्य यदाहु—प्रवृत्तदीपामप्रवृत्तभास्करां प्रकाशचन्द्रां बुबुधे विभावरीम्। इह यद्यपि प्रवृत्तदीपत्वादेया प्रवृत्तभास्करत्व मवगत तथापि अप्रवृत्तभास्करत्व प्रवृत्तदीपत्वादे हेतुतयो पन्यस्तमिति ॥ उप्पन्नसंसए उप्पन्नकोउहल्लेतिप्राग्वत् तथा सजायसड्ढ इत्यादि पदषट्कं प्राग्वत् नवरं मिह समूत्पः प्रकर्षादिवचनो यथा—सञ्जातकामोपलसिद्धिमूत्या मानात्प्रजाभिः प्रतिमानमनाय। ऐन्द्रैश्वर्यप्रकर्षेण जातेश्वः वार्त्तवीर्यइति अन्येतु—आयसड्ढेत्यादिविशेषणद्वादशकं मव व्याख्यान्ति जाताश्रद्धायस्य प्रभुं स आसन्नः किमिति आसन्नइत्यतमाह यस्माज्जातसंशय इव वस्त्वेवंस्या देववेति अथ जातसंशयोऽपि कथमित्यतमाह यस्मा ज्जातकुतूहल' कथना मा स्याय मवत्नोरस्ये इत्यभिप्रायवानिति, एतच विशेषणत्रय मवग्रहापेक्षया द्रष्टव्यमेव, मुत्पन्नसञ्जातसमुत्पन्नश्रद्धत्वादय ईहापायधारणाभेदेन याख्याः, अन्येत्वाहुः—जातश्रद्धत्वाद्यपदयो स्वव्रतभुत्वादयः समामार्थो विवक्षितार्थस्य प्रकर्षप्रवृत्तिप्रतिपादनाय स्तुतिमुखेन पन्यस्ततोक्ता, नचैव पुनरुक्तदोषाय यदाह—वक्ताइपत्नयादिभि रागिसमनाःसुवस्वानिष्वम्। यत्पदमसकृद्भूते तत्पुनरुक्तनदोषायेति, ॥ १ ॥ उठाएउठेत्ति ॥ उत्थाम मुत्था ऊर्ध्वं वर्त्तनं तया उत्थया उत्तिष्ठति ऊर्ध्वो भवति, उठेइत्युक्ते क्रियारम्भमात्रमपि प्रतीयते, यथा वक्तु मुत्तिष्ठतइति, तत उद्यच्छे दायो ऊ मुत्थायेति, ॥ उठाएउठेइत्ति ॥ उपागच्छती त्युत्तरक्रियापेक्षया उत्थानक्रियाया पूर्वकालताभिधानाय उत्थायोत्यायेति, क्त्वाप्रत्ययेन नि

उप्पराससए उप्पन्नकोउहल्ले सजायसड्ढे सजायससए सजायकोउहल्ले उठाएउठेति उठाएउठेत्ता

विशेष ओहने। उप्पनकोउहले। अपनाछेकौतूहलविशेषलेहने। सजायसड्ढे। सजातकहिये विशेषवो मवर्त्ती यहा वांछा ओहने ॥ सजायससए। सजात विशेषवी मवर्तीछे संदेहजेहने। सजायकोउहले। विशेषवो मवर्तीछे कौतूहलजेहने। समुप्पनसड्ढे। विशेषवो उपनीछे यदा जेहने ॥ समुप्पनससए ॥ विशेषवो उपनाछे संशयजेहने ॥ समुप्पनकोउहले ॥ विशेषवो उपणा कौतूहल जहने तिवारपछे ॥ उठाएउठेत्ति ॥ सामर्थ्यवको उठे उठीने उभा थया ॥ उठएउठेता ॥ उठीने उभाथईने ॥ जेणेवसमणेभगवंमहावीरे ॥ जिहां श्रमणभगवंत श्रीमहावीरस्वामीछे ॥ तेणेवउवागच्छइउवागच्छइत्ता ॥ ति

दिना चयाठ" समुचयार्थो तुशो अनुष्टव्यः संयमतपोग्रहणं चानयो प्रधानमोक्षाङ्गत्वख्यापनार्थं प्रधानत्वञ्च संयमस्य नवकर्मानुपादानहेतुत्वेन त पसश्च पुराणकर्मनिर्जरणहेतुत्वेन भवतिचाभिनवकर्मानुपादानात् पुराणकर्मक्षपणाच्च सकलकर्मक्षयलक्षणो मोक्षइति ॥ अप्पाणंभावेमाणेविहरइत्ति आत्मानं वासयं तिष्ठतीत्यर्थः ॥ तत्तणंसेत्ति ॥ ततो ध्यानकोष्ठोपगतविहरणानन्तरं अभिसिवाक्यालङ्कारार्थः ॥ सेइति ॥ प्रस्तुतपरामर्शार्थ स्तस्य तु सा मान्योक्तस्य विशेषावधारणार्थमाह ॥ भगवगोयमत्ति ॥ किमित्याह ॥ जायसड्ढेत्यादि ॥ जातश्रद्धादिविशेषणः समुत्तिष्ठतीतियोग स्तत्र जाता प्रवृत्ता श्रद्धा इच्छा वक्ष्यमाणार्थतत्त्वज्ञानम्प्रति यस्यासौ जातश्रद्धः तथा जातः संशयो यस्य स जातसंशयः संशयस्त्वनवधारितार्थज्ञानं सचैवं तस्य भगवतो जातो भगवताहि महावीरेण चलमाणेचलियइत्यादौ सूत्रे चलदर्थं चलितोनिर्दिष्ट स्तत्र यएव चलन् सएवचलितइत्युक्त स्तत्रैककार्यविषया वे तौ निर्देशौ चलन्निति वर्त्तमानकालविषयः चलितइतिचा तीतकालविषयः ततोऽत्र संशयः कथन्नाम वर्त्तमानः सन्नथा तीतो भवतीति? वि रुद्धत्वा दनयोः कालयोरिति तथा ॥ जायकोऊहल्लेत्ति ॥ जात कुतूहलं यस्य सजातकुतूहलो जातौत्सुक्यइत्यर्थः कथ मेतान् पदार्थान् भगवा न् प्रज्ञापयिष्यतीति तथा ॥ उप्पन्नसड्ढेत्ति ॥ उत्पन्ना प्रागभूतासती भूता श्रद्धायस्य सउत्पन्नश्रद्धः, अथ जातश्रद्ध इत्येतावदेवास्तु किमर्थं मुत्पन्न श्रद्ध इत्यभिधीयते प्रवृत्तश्रद्धत्वेनैवोत्पन्नश्रद्धत्वस्य लब्धत्वा न्नह्यनुत्पन्ना श्रद्धा प्रवर्त्ततइति? अत्रोच्यते हेतुत्वप्रदर्शनार्थं तथाहि—कथं प्रवृत्तश्रद्ध

अप्पाणंभावेमाणे विहरइ तएणं सेभगवंगोयमे जायसड्ढे जायसंसये संजायकोउहल्ले उप्पन्नसड्ढे

॥ संयमेन ॥ संवरेकरी नवाकर्म आवतांरोकी ॥ तवसा ॥ तपेकरी पुरातनकर्म निर्जरे एहवा श्रीगौतमस्वामी ॥ अप्पाणंभावेमाणेविहरइ ॥ आत्माने भावतां थ का विचरे ॥ तएणंसेभगवंगोयम ॥ तिवारे ते भगवंत गौतम ॥ जायसड्ढे ॥ प्रवर्त्तीछे श्रद्धा तत्त्वजाणवानी वांछा जेहने ॥ जायसंसए ॥ प्रवर्त्तीछे संशय श्रीमहावीरदेवे" चलमाणेचलिए इहां वर्त्तमानकाल अने अतीतकाल सरीखोकिमथाय्या एसंशय ॥ संजायकोउहल्ले ॥ प्रवर्त्तीछे उत्सुकपणो जेहने स्वामी एपदार्थकिमपरूपिस्यै एहवाउतावलो ॥ उप्पन्नसड्ढे ॥ तत्त्वाणजाणवानी श्रद्धाजेहने किमकारण उपनीनिश्चयसहितहवो ॥ उप्पन्नसंसए ॥ उपनोछे संदेह

उच्यते यत उत्पन्नश्रद्धइति हेतुत्वमदर्शन ज्योतितमेव वाक्यालङ्कारत्वा तस्य यदाहुः—प्रवृत्तदीपामप्रवृत्तभास्करां प्रकाशचन्द्राम्बुदवेविजावरीम्। इह यद्यपि प्रवृत्तदीपत्वादेवा अप्रवृत्तभास्करत्व मवगत तथापि अप्रवृत्तभास्करत्वं प्रवृत्तदीपत्वादे हेतुतयो पन्यस्तमिति॥ उप्पन्नसंसए उप्पन्नकोउह इह यद्यपि... ल्लेतिप्राग्वत् तथा संजायसड्ढइत्यादि पदषट्कं प्राग्वत्, नवरं मिह सम्‌शब्दः प्रकर्षादिवचनो यथा—सञ्जातकामोबलभिद्विभूत्या मानात्प्रजाभि प्रतिमाननाय। येन्द्रैश्वर्यमकर्षेण जातेच्छः कार्त्तवीर्य इति अन्येतु—आयसड्ढेत्यादिविशेषणद्वादशक मेव व्याख्यान्ति जातश्रद्धस्य प्रवृत्त स जातम् कुः किमिति जातश्रद्धत्वस्याह यस्माज्जातसंशय इह यस्स्येवस्या देववेति अथ जातसंशयोऽपि कथमित्याह यस्मा ज्जातकुतूहलः कथमेना मा स्याथ मयज्ञोस्ये इत्यभिप्रायवानिति, एतच्च विशेषणत्रय मवग्रहापत्तया द्रष्टव्यमेव, मुत्पन्नसञ्जातसमुत्पन्नश्रद्धत्वादय ईहापायधारणाभेदेन याख्याः, अन्येत्वाहुः—प्रातश्रद्धत्वाद्यपेक्षयो त्पन्नश्रद्धत्वादयः समानार्था विवक्षितार्थस्य प्रकर्षवृत्तिप्रतिपादनाय स्तुतिमुखेन ग्रन्थकतोक्ता, यथैव पुनरुक्तदोषाय यदाह—वक्ताहर्षभयादिभि राक्षिप्तमना स्तुवत्तथानिन्दन्। यत्पदमसकृद्ब्रूते तत्पुनरुक्तमदोषायेति, ॥ १ ॥ उठाएउठेति ॥ उ त्थान मुत्था ऊर्द्धं वर्त्तनं तया उत्थया उत्तिष्ठति ऊर्द्धो भवति, उठेइत्युक्ते क्रियारम्भमात्रमपि प्रतीयते, यथा वक्तु मुत्तिष्ठतइति, तत स्तद्व्यवच्छे दायो क्त मुत्थायेति, ॥ उठाएउठेइत्ति ॥ उपागच्छती त्युत्तरक्रियापेक्षया उत्थानक्रियायाः पूर्वकालताभिधानाय उत्थायोत्थायेति, क्वामत्ययेन नि

उप्पणसंसए उप्पण्णकोउहल्ले संजायसड्ढे संजायसंसए संजायकोउहल्ले उठाएउठेति उठाएउठेत्ता

विशेष जेहन। उप्पन्नकोउहल्ले। उपनोछेकौतूहलविशेषजेहने। संजायसड्ढे। संजातछेविशे विशेषथी प्रवर्त्ती श्रद्धा वांछा जेहने॥ संजायसंसए॥ संजात विशेषथी प्रवर्त्योछे संदेह जेहने। संजायकोउहल्ले। विशेषथी प्रवर्त्योछे कौतूहल जेहने। समुप्पन्नसड्ढे। विशेषथी उपनीछे श्रद्धा जेहने॥ समुप्पन्नसंसए॥ विशेषथी उपनोछे संशय जेहने॥ समुप्पन्नकोउहल्ले॥ विशेषथी उपना कौतूहल जहने तिवारपछी॥ उठाएउठेति॥ उत्थानवक्ते उठे उठीने उभा थया॥ उठाएउठेत्ता॥ उठीने उभाथईने॥ जेणेवसमणेभगवंमहावीरे॥ जिहां श्रमणभगवंत श्रीमहावीरस्वामीछे॥ तेणेवउवागच्छइउवागच्छइत्ता॥ ति

रिना चरबर्छ ममभुयार्थी सुसो अपभृत्थ्य सयमतपोग्रहण चानयो प्रधानमोक्षाङ्गत्वस्थापनार्थे प्रधानत्वञ्च सयमस्य नवकर्मानुपादानहेतुत्वेन त
पसश्च पुराणकर्मनिर्जरणहेतुत्वेन प्रवत्तिकाजिनवकर्मानुपादानात् पुराणकर्मक्षपणाच्च सकलकर्मक्षयलक्षणमोक्षइति ॥ अप्पाणज्ञावेमाणेविहरइति
आत्मानं वासय स्थितीत्यर्थः ॥ तएणसेति ॥ ततो ध्यानकोष्ठोपगतविहरणानन्तरं अमितियावाक्यालङ्कारार्थः ॥ सेइति ॥ प्रस्ततपरामर्शार्थ स्तस्यतु सा
मान्योक्तस्य विशेषावधारणार्थमाह ॥ भगवगोयमेति ॥ किमित्याह ॥ जायसड्ढेत्यादि ॥ जातश्रद्धादिविशेषण मनुतिष्ठतीतियोग तत्र जाता प्रवृत्ता
श्रद्धा इच्छा वक्ष्यमाणार्थतत्त्वज्ञानंप्रति यस्यासौजातश्रद्धः तथा जात संशयो यस्य स जातसंशय संशयस्त्वनवधारितार्थज्ञान सचैवं तस्य भगवतो
जातो भगवतावि महावीरेण चलमाणेचलिएइत्यादौ सूत्रे चलदर्थ चलितोनिर्दिष्ट तत्रच यच्च चलत् तच्चलितइत्युक्त तत्रैकार्थविषया य
तो निर्देशो चलमितिवर्तमानकालविषय चलितइतिचातीतकालविषय तताऽत्र संशयः कथन्नाम यदेवार्थोवर्तमान तदेवातीतो भवतीति? वि
रुद्धत्वा दनयो कालयोरिति तथा ॥ जायकोउहल्लेत्ति ॥ जात कुतूहल यस्य सजातकुतूहलो जातौत्सुक्यइत्यर्थः कथ मेतान् पदार्थान् भगवा
न् प्रज्ञापयिष्यतीति तथा ॥ उप्पन्नसड्ढेत्ति ॥ उत्पन्ना प्रागभूतासती भूता श्रद्धायस्य सउत्पन्नश्रद्धः , अथ जातश्रद्ध इत्येतावदेवास्तु किमर्थ मुत्पन्न
श्रद्ध इत्यभिधीयते प्रवृत्तश्रद्धत्वेनैवोत्पन्नश्रद्धत्वस्य लब्धत्वा दनुत्पन्ना श्रद्धा प्रवर्त्ततइति? अत्रोच्यते हेतुत्वप्रदर्शनार्थ तथाहि—कथं प्रवृत्तश्रद्ध

अप्पाणज्ञावेमाणे विहरइ तएण सेभगवगोयमे जायसड्ढे जायससये संजायकोउहल्ले उप्पणसड्ढे

॥ सयमेन ॥ सयमेनरी नवाश्रवकरतायोनकरो ॥ तपसा ॥ तपेकरी पुरातनकर्म निर्जरे एहवा योगेतिमत्तामो ॥ अप्पाणंभावेमाणेविहरइ ॥ आत्मानेभावताथ
का विचरे ॥ तएणसेभगवगोयम ॥ तिवारे ते भगवंत गौतम ॥ जायसड्ढे ॥ प्रवर्त्तीछे श्रद्धा तत्त्वजाणवानो वांछा जेहने ॥ जायसंसए ॥ प्रवर्त्तीछे संसय
श्रीमहावीरदेवे" चलमाणेचलिए" इहां वर्त्तमानकाल पणे अतीतकाल सरीखोकिमथाय एसंशय ॥ संजायकोउहल्ले ॥ प्रवर्त्तीछे उत्सुकपणो जेहने स्वामी
एपदार्थनिरूपिस्यामर्थ एहवाउत्सुकपणो ॥ उप्पणसड्ढे ॥ तत्त्वानाजाणवानोछे श्रद्धाजेहने [illegible]

दिरमना स्याञ्जलिहता ॥ पज्जुवासमाणेत्ति ॥ पर्युपासीन सेवमानो अनेनच विनोपचयदस्यकेन ययविधि उपदर्शितं माह च–विद्वायिगधापरि य जिणपासिसुतसिर्पजलिउडहि । मत्तिबहुमाणपुव्व उवउत्तसिसुयेयव्वति ॥ १ ॥ एवयथासिति ॥ एव यचयमाणप्रकारं वस्तु यवादी दुक्तयाम् ॥ से इति ॥ सत् मनुक्त पूर्वे यसचलितमित्यादि ॥ गृणाति ॥ एय मर्थे तत्र तत्रा स्यैवव्याख्यातत्वात्, अथवा से इति शब्दो भागधदेशीप्रसिद्धो ध्यत्र द्वार्थे वर्तते ममप्रश्नस्त वाक्यायन्यासाय, परिप्रश्नार्थोवा ; यदाह–अथप्रक्रियाप्रश्नानन्तयमङ्गलोपन्यासप्रतिवचनसमुच्चयेषु, ॥ नूनमिति निश्चित मंतत्ति ॥ गुरो रामन्त्रणं ततच हेभदन्त । कल्याणरूप सुखरूपेतिवा भविषस्यासेसुखचेतिवचनात् रभाकृतशेस्यावा भवस्य ससारस्य भयस्यवा भी त रन्तक्तुस्या भयान्तो भयान्तोवा तस्याम त्रणं, हेभयान्त । हेजयान्त । भाम् । या भानादिदीप्यमान भाद्रीप्ताविरितिवचनात्, भाजमाना या दी प्यमान भ्राजृदीप्ताविरितिवचनात्, अयच आदित आरभ्य भतीति यथतो यत्यो भगवता सुधर्मस्वामिना पञ्चमाङ्गस्य प्रथमशतस्य प्रथमोद्देशक स्य मथमथाय मभिहितः यथा नेनसम्बन्धना यातस्य पञ्चमाङ्गप्रथमशतप्रथमोद्देशकस्ये दमादिसूत्रम् ॥ चलमाणेचलिएइत्यादि ॥ अथ केनाभिमा येव भगवता सुधर्मस्वामिना पञ्चमाङ्गप्रथमशतप्रथमोद्देशकस्या घोनुकथनं कुर्वते यमथवाचक सूत्र मुपन्यस्त नान्यामीति ? अत्रोच्यते इह चतुर्षु पुरुषार्थेषु मोक्षाख्य पुरुषार्थो मुख्यः सर्वातिशायित्वात् तस्यच मोक्षस्यसाध्यस्य साधनानांच सम्यग्दर्शनादीना साधनत्वेना व्यभिचारिता मुज

पज्जुवासमाणे एववयासी सेणूणभंते चलमाणे चलिए १

टी॰ गद्य कल्याणरूप सुखरूप एहवा गदमा मामचच भवत भावता, भय परासको यासुधर्मास्वामीये "चलमाणेचलिए" एहवागद्य सूत्रनी आदि मा ल्या घनेरागन्द आदिमास्मा रमपृष्ठा ? उत्तर, पुरुषार्थ चिहुमांहि मुख्य मोक्ष, तेहनो साधन सार तेतो कर्मक्षय छयले ते कर्मक्षयनामनुक्रम'च ठिताभणी एहवंप्रश्नमा तिहहे 'चलमाणेचलिए चलमाणेचलिये उत्तम पापमी स्थितिथको चलवामांड्या भागवा सन्मुखवर्त्या तेचमपडिएकहिये उदेमाश्रान्त वडोये।ते विम चलमानाक्षयको भागवकाल असख्यातसमयसगोढ तिहाजे पहिलो चलनसमय तेहनेविषे चलवामांड्या तेपचावकर्षी ये वि

र्द्विमतीति ॥ वेवेवेत्यादि ॥ इह प्राकृतप्रयोगा दृश्यपस्याहुः ॥ येनेति ॥ यस्मिन्नेव दिग्भागे श्रमणो भगवान् महावीरो वर्तते ॥ तेणेवत्ति ॥ तस्मिन्नेव दिग्भागे उपागच्छति, तत्कालापेक्षया वर्तमानतया वागमनक्रियाया वर्तमानविभक्त्या निर्देश इत, उपगतवानित्यर्थः, उपागम्य च श्रमण ३ कर्म तापकं ॥ तिक्खुत्तोत्ति ॥ त्रीन् वारान् त्रिःकृत्वः ॥ आयाहिणपयाहिणंकरेइत्ति ॥ आदक्षिणा दक्षिणहस्ता दारभ्य प्रदक्षिणः परितो भ्राम्यतो दक्षि णएव आदक्षिणप्रदक्षिणो ऽत सं करोतीति ॥ वदइत्ति ॥ वन्दते वाचा स्तौति ॥ नमसइत्ति ॥ नमस्यति कायेन प्रणमति ॥ नच्चासन्नेति ॥ न नैव प्रत्यासन्नो ऽतिनिकटः अवग्रहपरिहारात् आसन्नो वा स्थाने वर्तमानइति गम्यम् ॥ णाइदूरेत्ति ॥ न नैवा तिदूरो ऽतिविप्रकृष्टो नौचित्यपरिहा रात् नातिदूरे वा स्थाने ॥ सुस्सूसमाणेत्ति ॥ भगवद्वचनानि श्रोतुमिच्छन् ॥ अभिमुहेत्ति ॥ अभि भगवन्त मुखमस्य त्यभिमुखः, तथा ॥ विणएणत्ति ॥ विनयेन हेतुना ॥ पंजलिउडेत्ति ॥ प्रकृष्टः प्रधानो ललाटतटघटितत्वेन अञ्जलि र्हस्तन्यासविशेषः कृतो विहितो येन सो ऽञ्जलिकृता

जेणेवसमणेभगवमहावीरे तणेवउवागच्छइ उवागच्छित्ता समणभगवमहावीर
तिक्खुत्तोआयाहिणपयाहिण करेइ करेइत्ता वदइ णमसइ वदित्ता णमसित्ता
णच्चासन्ने णातिदूरे सुस्सूसमाणे णमसमाणे अभिमुहे विणएण पजलिउडे

श्रावे जिहांथावीमें ॥ समणभगवमहावीर ॥ श्रमण भगवंत श्रीमहावीर स्वामीप्रते ॥ तिक्खुत्तोआयाहिणपयाहिणंकरेइत्ता ॥ तीनवार दाहि णे हाथथी मांडी प्रदक्षिणा फेरो करी करीने ॥ वंदइ ॥ स्तुतिकरे वचनेकरी ॥ णमसइ ॥ कायायेकरी नमस्कारकरे ॥ वंदित्ता ॥ वांदीने ॥ नमंसि त्ता ॥ नमस्कारकरीने ॥ णच्चासन्ने ॥ अतिआसन्ननढूकडानही ॥ णातिदूरे ॥ अतिदूर वेगळापणि नही ॥ सुस्सूसमाणे ॥ भगवंत श्रीमहावीरस्वामीनां व चनसांभलवा वांछता ॥ णमसमाणे ॥ नमस्कारकरतो ॥ अभिमुहे ॥ भगवंतदिसे मुखकरी ॥ विणएण ॥ विनयवंतो ॥ [illegible] ॥ पंजलि उडे ॥ [illegible] ॥ पज्जुवासमाणे ॥ सेवाकरतापका [illegible] विधिकरी ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ सेवूभंते ॥ तेभिवे

येन प्रथमसमये न चलितं मुत्तरेषु चलतीति । अतः सर्वदैवा चलमप्रसङ्गः अस्ति चान्त्ये समये चलनं स्थितिपरिमितत्वेन कर्मांशावाभ्युपगमात् भत आवलिकाकालादि समयएव किञ्चिच्चलितं यत्र तस्मिं चलित तत्रोत्तरेषु समयेषु चलति यदितु तेष्वपि तदेवाद्य चलनं भवे तदा तस्मिं न्नेव समये सर्वथा मुदयावलिकाचलनसमयानां क्षय स्यात् यदिचित्तत् समयचलननिरपेक्षाण्यन्यसमयचलनानि भवन्ति ततो चरमचलनानुक्रमस्य मुच्येत नान्यथा सर्वं चलदपि तत्कर्मचलितमभवतीति ॥ १ ॥ तथा ॥ उदीरिज्जमाणउदीरिएत्ति ॥ उदीरणानाम अनुदयप्राप्त चिरेणा गामिना कालेन यद्वेदितव्यं कर्मदलिकं तस्य विशिष्टा व्यवसायलक्षण करणेना कृष्योदयेप्रक्षेपण, सा चा सङ्ख्येयसमयवर्तिनी तयाच पुनरुदीरयणा उदीरणा प्रथमसमयएवो दीयमानं कर्म पूर्वोक्तपक्षवृत्तान्तेनो दीरितं भवतीति ॥ २ ॥ तथा ॥ वेदिज्जमाणेवेइएत्ति ॥ वेदनं कर्म्मणो भोगो ऽनुभव इत्यर्थ, तच्च वेदनं स्थितिक्षया दुदयमागतस्य कर्मण उदीरणाकरणेन चोदय मुपनीतस्य भवति, तस्य च वेदनाकालस्या सङ्ख्येयसमयत्वा दाद्यसमये वेद्यमानमेव वेदितं भवतीति ॥ ३ ॥ तथा ॥ पहेज्जमाणेपहीणेत्ति ॥ प्रहाणंतु जीवप्रदेशैः सह संश्लिष्टस्य कर्मण स्तेभ्यः पतनं, एतदप्यसङ्ख्येयसमयपरिमाणमेव तस्यतु प्रहाणस्या दिसमये प्रहीयमाणं कर्म्म प्रहीणं स्यादिति ॥ ४ ॥ तथा ॥ छिज्जमाणेछिन्नेत्ति ॥ छेदनं तु कर्मणो दीर्घकालाना

उदीरिज्जमाणे उदीरिए २ वेदिज्जमाणेवेदिए ३ पहेज्जमाणे पहीणे ४

म थपणा युपते जे ऽचिते तत् युक्ता तेयुक्ताभवहोये परिवाततमीअपेचाये एविचभावर्य ॥१॥ उदीरिज्जमाणे उदीरिए । जेकम उदयभाव्यानवो घणें भागमो काले वेदवने तेहवमने शुभाध्यवसायनवीकरो भावयी उदयभावीये तेउदीरणाकहीये ते असङ्ख्यातसमये वर्त्ते ते तिणे उदीरणासेवरो प्रथमसमय जे उदीरणामांथा कम ते उदीरणाकहवाव तेप्रथमसमयनोअपेचाये पूर्वक्षा वख्यमाहष्टांत तिणनीपरे जांणवो ॥ २ ॥ वेदिज्जमाणेवेदिए । तथाकमनो भोगवा अनुभवत्यव ते असङ्ख्यातसमयलोमवर्त्ते तिहां प्रथमसमये वेदवामांथो जेकम तेवेद्योज कहीये प्रथमसमयनोअपेचाये पूर्वक्षो वख्यनो हष्टांत ते हनीपरें ॥ पहेज्जमाणे पहीणे ॥३॥ तथा जीवप्रदेशसहितमिल्यो कम तेहनो जीवप्रदेशथको पतनते पुण असङ्ख्यातसमयवर्त्ते तिहां प्रथमसमये प्रहीयमा

यमिममस्य शासना ख्यात सद्धि रियते उभयनियमस्त्वेव सम्यग्दर्शनादीनि मोक्षस्यैव साध्यस्य साधमानि नान्यस्या यस्य मोक्षय तेषामेवसा धमानां साध्यो नान्येषामिति, सच मोक्षो विपक्षतया तद्विपक्ष यन्य सधमुस्य कमाभि रात्मनः सम्यन्ध लोपातु सम्मता प्रतये यमनुक्रम उक्ता, चलमाद्येत्यादि ॥ तत्र ॥ चलमायेत्ति ॥ चलत् स्थितिक्षया तुदय मागच्छत्, विपाकाभिमुखीभय दतकर्मेति प्रकरणगम्यम्, तच्चलित मुदितमिति व्यपदिश्यते चलनकालो ह्यदयावलिका तस्याच कालस्या सङ्ख्येयसमयत्वा दादिमध्यान्तयोगित्व कर्मपुद्गलाना मप्यनन्ताः स्कन्धा अनन्तप्रदेशा स्तत्र ते क्रमेण प्रतिसमयमेव चलन्ति तत्र योसा वाद्यचलनसमय स्तस्मिं श्चलदेव तच्चलित मुच्यत कथपुन स्तद्वर्तमानम् दतीतं भवति ? त्यपोच्यत —यथा– प॰ उत्पद्यमानकाल प्रथमतन्तुप्रवेशे उत्पद्यमानएवो त्पन्नोऽयमिति, उत्पद्यमानत्वच तस्य प्रथमतन्तुप्रवेशकाला दारभ्य पट उत्पद्यत इत्येवं व्यपदेशदर्शना दविच्छिन्नेवो त्पन्नस्त्व नुपपत्त्यामसाध्यते तथाहि—उत्पत्तिक्रियाकालएव प्रथमतन्तुप्रवेशो ऽसावुत्पन्नो यदि पुन

नोत्पन्नोऽभविष्य तदा तस्यां क्रियाया वैयर्थ्यमभविष्य क्रियाक्षणत्वा दुत्पाद्योत्पादनार्थोहि क्रियाभवन्ति, यथाच प्रथमेक्रियाक्षणे नासावुत्पन्न स्तथो त्तरेष्वपि क्षणे ष्वनुत्पन्नएवासौ प्राप्नोति कोऽनुत्तरक्षणक्रियाणा मात्मनि रूपविशेषो येन प्रथमसमये नोत्पन्न स्तदुत्तराभिस्तूत्पाद्यते अतः सर्वदैवा नुत्पत्तिप्रसङ्गः दृष्टाचोत्पत्ति रन्त्यतन्तुप्रवेशे पटस्य दर्शनात् अतः प्रथमतन्तुप्रवेशकालएव किञ्चिदुत्पन्न पटस्य यावच्चोत्पन्न नतदुत्तरक्रिययोत्पा द्यते यदि पुनरुत्पाद्येत तदा तदेकदेशो त्पादनएव क्रियाणां कालाभाव्य कथः स्यात्, यदिहि तदयोत्पादननिरपेक्षा स्याः क्रिया भवन्ति तदोत्तरांशानुक्रमणं पुज्येत नान्यथा, तदेव यथा पट उत्पद्यमान एवोत्पन्न स्तथैवा सङ्ख्येयसमयपरिमाणत्वा दुदयावलिकाया आदिसम या रम्भति चलदेव कर्मचलित, कथ यतो यदिहि—तत्कर्मचलनाभिमुखीभूत मुदयावलिकाया आदिसमयएव नचलितं स्या तदा तस्या द्यस्य चलनसमयस्य वैयर्थ्यस्या तत्रा चलितत्वात् यथाच तस्मिन् समये नचलित तथा द्वितीयादिसमयेष्वपि नचलत् कोहि तेषा मात्मनि रूपविशेषो

मत प्रथमसमये मचलित मुत्तरेषु चलतीति ? अतः सर्वदैवा चलमप्रसङ्गः अस्ति चान्त्ये समये चलन स्थितिपरिमितत्वेन कर्मांशाभावानुपपत्तात् अत आवलिकाकालादि समयएव किञ्चिच्चलित यच्च तस्मि चलित तथोत्तरेषु समयेषु चलति यदितु तेषपि तदेवाद्य चलन स्यात् तदा तस्मि क्षेत्र चलने सर्वथा मुख्यावलिकाचलनसमयानां चय स्यात्, यदिहि तत् समयचलननिरपेक्षाण्यन्यसमयचलनानि भवन्ति तदो तच्चलनानुक्रमण मुच्येत मान्यथा तदेवं चलदपि तत्कर्म चलितम्भवतीति ॥ १ ॥ तथा ॥ उदीरिज्जमाणेउदीरिएत्ति ॥ उदीरणानाम अनुदयप्राप्त चिरेणा गामिना कालेन यद्वेदितव्यं कर्मदलिक तस्य विशिष्ट व्यवसायलक्षण करणेन क्षयोदयेप्रक्षेपण, साचा सङ्ख्येयसमयवर्तिनी तयाच पुनरुदीरणया उदीर णा प्रथमसमयएवो दीर्यमाणं कर्म पूर्वोक्तपत्तदृष्टान्तेनो दीरित म्भवतीति ॥ २ ॥ तथा ॥ वेइज्जमाणेवेइएत्ति ॥ वेदनं कर्मणो भोगो ऽनुभव इत्यर्थ, तत्र वेदन स्थितिक्षया दुदयप्राप्तस्य कर्मण उदीरणाकरणेन चोदय मुपनीतस्य भवति, तस्यच वेदनाकालस्या सङ्ख्येयसमयत्वा दाद्यसमये वेद्यमानमेव वेदित म्भवतीति ॥ ३ ॥ तथा ॥ पहेज्जमाणेपहीणेत्ति ॥ प्रहाणंतु जीवप्रदेशैः सह संश्लिष्टस्य कर्मण स्तेभ्यः पतनं, एतदप्यसङ्ख्येयसमय परिमाणमेव तस्यतु प्रहाणस्या दिसमये प्रहीयमाण कर्म प्रहीण स्यादिति ॥ ४ ॥ तथा ॥ छिज्जमाणेछिन्नेत्ति ॥ छेदन तु कर्मणो दीर्घकालाना

उदीरिज्जमाणे उदीरिए २ वेदिज्जमाणेवेदिए ३ पहेज्जमाणे पहीणे ४

म चपडा पुच्छते जे अछिदे तत् पुच्छा तेदुचा भणहीसे पलिसाततनीभपेचाये एपिचलामर्न् ॥१॥ उदीरिज्जमाणे उदीरिए । जेकर्म उदय आव्यानवो चर्चे चा गामो कालि वेदस्ये तेहवमने शुभाध्यवसायरुपकरी खायर्यो उदेयावीये तेउदीरणाकहीये ते असख्यातेसमये वर्त्ते ते तिये उदीरवायेकरी प्रथमसम य जे उदीरणामांडया कर्म ते उदीरा कहवाय तेप्रथमसमयनोअपेचाये पूर्वका वश्वनोदृष्टांत तिमनीपरे जाणवो । २ । वेदिज्जमाणेवेदिए । तदाचरमनो भामशो अनुभवहत्वर्थ ते असंख्यातसमयसोमवर्त्ते तिहां प्रथमसमये वेदवामांड्यो जेकर्म तेवेद्योज कहीये प्रथमसमयनोअपेचाये पूर्वकह्यो वस्त्रनो दृष्टांत ते ममोपरे ॥ पहेज्जमाणे पहीणे ॥२॥ तथा जीवप्रदेशसहितमिल्यो कर्म तेहनो जीवप्रदेशथको पतनते पुण असंख्यातसमयेवर्त्ते तिहां प्रथमसमये प्रहीयमा

स्थितीनां ह्रस्वताकरणं तथापवर्त्तनाभिधानेन करणविशेषेण करोति तदपिच च्छेदम संख्येयसमयमेव तस्य स्यादिसमये स्थितित च्छिद्यमानं कर्म छिन्नमिति ॥ ५ ॥ तथा ॥ भिज्जमाणेभिन्नेत्ति ॥ भेदस्तु कर्मणः शुभस्या शुभस्यवा तीव्ररसस्या पवर्त्तनाकरणेन मन्दताकरणं मन्दस्य चोद्वर्त्तना करणेन तीव्रता करणं सोऽपिचा संख्येयसमयएव, ततश्च तदाद्यसमये रसतो भिद्यमानं कर्म भिन्नमिति ॥ ६ ॥ तथा ॥ डज्झमाणेदड्ढेत्ति ॥ दाहस्तु कर्मदलिकस्याकर्मता भ्यामाग्निना तद्रूपापनयन मकर्मत्वजननमित्यर्थ तथाहि—काष्ठस्याग्निना दग्धस्य काष्ठरूपापनयन भस्मात्मनाच भव न दाह स्तथा कर्मणोऽपीति, तस्या प्यन्तमुहूर्त्तवर्त्तित्वेना संख्येयसमयस्यादिसमये दह्यमानदग्धमिति ॥ ७ ॥ तथा ॥ मिज्जमाणेमडेत्ति ॥ म्रिय माण मायुःकर्म मृतमितिव्यपदिश्यते, मरणं ह्यायुःपुद्गलानाक्षय स्तचा संख्येयसमयवर्त्ति भवति तस्यच जन्मना प्रथमसमया दारभ्यावीचिकमरणे ना तुल्यं मरणस्यताया म्रियमाणं मृतमिति ॥ ८ ॥ तथा ॥ निज्जरिज्जमाणेनिज्जिण्णेत्ति ॥ निर्जीयमाण मितरा मपुनर्भावेन क्षीयमाणकर्म निर्जीर्णं

छिज्जमाणेछिन्ने ५ भिज्जमाणेभिन्ने ६ दज्झमाणेदड्ढे ७ मिज्जमाणेमडे ८ णिज्जरिज्जमाणेणिज्जिण्णे ९

भवन ते मतोच भवतां मनेध्याकारीवे पूर्वोक्त भजहदांत तेहनोपरे ॥ ४ ॥ छिज्जमाणेछिन्ने ॥ तथा वेदनकरता दीर्घकालस्थितिकर्मनो ह्रस्वकालकरिवो ते अपवर्त्तननामकरणविशेषेकरी करें ते पणिछेदन असंख्यातेसमयेवर्त्ते तेहनेपहिले समयेस्थितिनो छेदमान छेदायोकहीये ॥ ५ ॥ भिज्जमाणेभिन्ने ॥ तथा भेदकहिये शुभना अशुभा अथवा कर्मना भेदनो तीव्ररसना अपवर्त्तनाकरणेकरी मंदपणे करवो मंदरसने उद्वर्त्तनाकरणेकरी तीव्ररसकरवो ते पणि असंख्या तसमये वर्त्तेविषा पहिले समये रसनो भिद्यमानपणे भेद्योकहिये ॥ ६ ॥ डज्झमाणेदड्ढे ॥ तथा दाहकहिये कर्मरूपियाकाष्ठनो ध्यानाग्नियेकरी तद्रूप अपनयन अकर्मरूपीकरिवा जिम काष्ठअग्निकरी बाल्या तभस्मरूप तिम कर्मने पणि ते पणि असंख्यातसमये वर्त्ते तेपहिले समये बालता बाल्या कहेतेवाल्यो कहो ये पूर्वपरे हटोत ॥ ७ ॥ मिज्जमाणेमडे ॥ तथा मरणकहिये आउखापरमाणुना क्षय जे मरणाभावी ते मूवोकहीये तेपणि असंख्यातसमयेवर्त्ते तेहना जन्मना प्रथमसमयथी आरंभी आवीचिमरणकरी प्रतिसमयमरणमा आयुनो मरणमांथा ते मूवा पूर्वोक्त परेहटोत ॥ ८ ॥ णिज्जरिज्जमाणेणिज्जिण्णे ॥

क्षीणमिति व्यपदिश्यते निर्जरत्वस्या सख्येयसमयमात्रित्वेन तत्प्रथमसमयएव पतिष्यतिदृष्टान्तेन निर्जीर्णत्वस्यो पपद्यमानत्वादिति, पटदृष्टान्तश्च नयपदयु सम्भावनिकाबाध्य॥८॥तदेव मेताञ्चयप्रश्नाम् गौतमेनभगवता भगवान् महावीरः प्रष्टःस चवाच॥इतेत्यादि॥ अथकस्मा द्भगवन्त गौतमः पृच्छति? विरचितद्वादशाङ्गतया विदितसकलश्रुतविषयस्वेन निखिलसंशयातीतत्वेनच सर्वज्ञकल्पस्या तस्य, आहच-सखाईएठवे साहमवेयाप रोऽणुवेज्जा। नयवमयाद्सवी वियाणइएसकठमत्याति?॥१॥ नैव मुक्तगुणत्वपि छद्मस्थतया नानोपसम्भवात् यदाह—नहिनामानाभोगः छद्मस्थस्येहकस्यचिन्नास्ति। यस्माज्ज्ञानावरणं ज्ञानावरणप्रकृतिकर्मेति॥१॥ अथवा जानतएव तस्यप्रश्नः सम्भवति, स्वकीयबोधसंवादनार्थं अज्ञलो कबोधनाय शिष्याणांवा स्ववचसि प्रत्ययोत्पादनार्थं सूत्ररचनाकल्पसम्पादनार्थंचेति, तत्र॥ इत्यागोयमेति॥ इतइति कोमलामन्त्रणार्थो दीर्घत्वंच मागधदेशीप्रभव मुत्तरपक्षापि, चलमाणेत्यादेः प्रत्युच्चारणम् चलदथ चलित मित्यादीनां स्वानुमतत्वप्रदर्शनार्थं, यद्वाः पुनराह:—इंतागोयमाहत्य प्र इंतइति, एवमेतादि त्यभ्युपगमवचने यदनुमत तत्प्रदर्शनाय चलमाणेत्यादि प्रत्युच्चारितमिति, इह यावत्करणसम्यानि पदानि सूत्रती तान्येव एव मेतानि नवपदानि धर्मोपदिष्ट्य वर्तमानातीतकालसामानाधिकरण्यजिज्ञासया पृष्टानि निर्णीतानिच, अथै तान्येव चलनादीनि प रस्परतः किं तुल्यार्थानि भिन्नार्थानि वेति? पृच्छा निर्णयच दर्शयितुमाह॥ एएणंभन्ते॥ इत्यादिप्रश्न नवरम्॥ एगठति॥ एकार्था न्यनन्यवि

हतागोयमा चलमाणेचलिएजायणिज्जरिज्जमाणेणिज्जिण्णे एएणन्नतेनवपदाकिएगठा

नया औत्पद्गयखो यम निजरवार्माया येअमाकरवामांचा ते कमनिजरा वगद्यामोघा जहोये तेपणि असख्यातसमयभावीछे, प्रथमसमयनो अपेक्षाये मेवा पूर्वोक्तपट इत्ति ए कल्पद्दष्टांत जवांपदे जाणवा॥८॥ इसे गौतमेपूछ्या? भगवतें माख्या॥ हतागोयमा॥ चलमाणेचलिए जावणिज्जरिज्जमाणे निज्जिण्णे॥ इत इमा कोमलामनणे,अथवा इत कहतां हेगौतम मे मय इमहीज अनुमाणितछिए, चालवामांडो ते चाल्योज कहीये यावत् निजरवामां मांते निज्जराजकहीये, वलीगौतमजी चलमानवरजप्रभधिकारोने वर्तमानअतीतकालसमाधिकरणेपूछ्या तेनिर्णयजोधा पहि॥ एएणंभंतेनवपदाणि

यथापि एकप्रयोजनानिवा ॥ नाणाघोसत्ति ॥ इह घोषा उदात्तादयः ॥ नाणावञ्जणेति ॥ इह व्यञ्जना न्यक्षराणि ॥ उदाहुत्ति ॥ उताहो निपातो विकल्पार्थः ॥ नायव्वत्ति ॥ निक्षिप्तिचेयानि इत्थ चतुर्भङ्गीपदेषु द्रष्टा, तत्रच कानिचिदेकार्थान्येकव्यञ्जनानि यथा क्षीरक्षीरमित्यादीनि ॥ १ ॥ तथा न्यानि एकार्थानि नानाव्यञ्जनानि यथाक्षीर पय इत्यादीनि ॥ २ ॥ तथा नेकार्थान्येकव्यञ्जनानि, यथा अगव्यमाहिषाणि क्षीराणि ॥ ३ ॥ तथा न्यानि नानार्थानि नानाव्यञ्जनानि यथा घटपटकुटादीनि ॥४॥ तदेव चतुर्भङ्गीसम्भवेपि द्वितीयचतुर्थभङ्गौ प्रश्नसूत्रे गृहीतौ, परिदृश्य मानमानीव्यञ्जनतया तदन्ययो रसत्त्वात्, निर्वचनसूत्रेषु चलनादीनि चत्वारियदा न्याश्रित्य द्वितीयः, विगमानादीनितु पञ्चपदान्याश्रित्य चतुर्थ इति, ननु चलितादीना मर्थाना व्यक्तभेदत्वा त्कथ मायानि चत्वारि पदा न्येकार्थानी? त्याशङ्क्याह ॥ उप्पन्नपक्खस्सत्ति ॥ उत्पन्न मुत्पादो नाशे

णाणाघोसा णाणावंजणा उदाहु णाणट्ठा

एमहा नाणाघोसा । हेभगवन् एनवपदमांएकना एक मथवे, एकप्रयोजनवे नायगन्द एकोदात्त अनुदात्त स्वरित एमघ्द नाणघोस आगवा उच्चारण रूपतेवडावडाथे, नाणा तेहनो जुदा२ मथवा व्यञ्जनछे । उदाहु निपात विकल्पार्थेछे एतले अथवा नाणट्ठा नानाप्रकारनो अर्थछे । नाणा० ना नानप्रकारना घा उच्चार, ना नानाप्रकारना व्यञ्जनअक्षर इहां चउभंगी जाणवी ते एकमन्द एकअर्थ एकव्यञ्जन क्षिरक्षीरक्षीर इत्यादि १ तथा एकअर्थ अनेकव्यञ्जन यथा क्षीरपय इत्यादि २ तथा अनेक अर्थ एकव्यञ्जन यथा अज गाय महिषीनो क्षीर ३ तथानाना अर्थ नानाव्यञ्जन यथा घट पटादि ॥ इहां चउभंगीनो सम्भवछे तोपणि बीजो चौथोभांगो ग्रह्या, बीजाथीयभांगाना प्रश्नभणवो एसूत्रनेविषे चलनादि चारपद भाश्री बीजोभांगो अनेकविध्वमादि इत्यादि पञ्चपदभाश्री चौथोभांगो जाणवो । भगवंतकहे हेगौतम च चलमाणेमांहि तेहनो चलितकहिये एपहिलो १ । उ उदीरणा मां घ् तेहनो उदीरियोकहीये एबीजो २ ॥ तथा वे वेदमानाथी तेहनो वेदयोकहिये एत्रीजो ॥ प्रहीणमानमांहि तेहनो प चीनथयु कहीये एचोथो ॥ ए एच० चारिपद ए एकार्थवाचक । एहोनो एकपदंजे वा अनेक प्रकारना घो० घोष उदात्तादिक तथा वा नानाप्रकारना व व्यञ्जन

कप्रत्ययविधानात्, तस्य पक्ष परिग्रहो ऽङ्गीकारः पक्षपरिग्रह इति धातुपाठादिति उत्पन्नः पक्ष इहेव पक्षश तृतीयार्थस्या दुत्पन्नपक्षेण उत्पा दाङ्गीकारस्य उत्पादाख्य पर्याय परिग्रहे कार्या ख्याता न्युच्यन्ते अथवा उत्पन्नपक्षस्य उत्पादाख्यवस्तुविकल्पस्या भिधायकानी तिशेष, सर्वथा मे पा मुत्पाद माश्रित्ये कार्यकारित्वा देकान्तमुहूर्तमध्यजावित्वेन तुल्यकालत्वा चैकार्थिकत्व मितिभावः, स पुन उत्पादाख्यः पर्यायो विशिष्टः केव लोत्पादएव, यतः कर्मचिन्तायाकुर्म्मणः प्रधान फलद्वयं केवलज्ञानमोक्षप्राप्ती, तत्रैतानि पदानि केवलोत्पादविषयत्वा देकार्थान्युक्तानि, यस्मात् कयलज्ञानपर्यायो जीवेन न कदाचिदपि प्राप्तपूर्वो यस्मात् प्रधान सत सार्थपद पुरुषप्रयास सत्सा त्वएव केवलज्ञानोत्पत्तिपर्यायो भ्युपगत, एषा न्व पदानामेकार्थानामपि सता भयमर्थः सामर्थ्यप्रापितक्रमो पतुन पूर्व न्तवलति उवेतीत्यर्थः उदितश्च वेद्यते अनुभूयत इत्यर्थ तत्र द्विधा स्थितिक्षया दुदयप्राप्त मुदीरणया चोदयमुपनीतं ततश्चा नुजवानन्तर तस्महीयते इतफलत्वा ज्जीवा दपयातीत्यर्थ एतच टीकाकारमतम व्याख्या त मन्वेतु व्याख्यान्ति स्थितिबन्धाध्यवसायितसामान्यकर्मोपायत्वा देकार्थिका न्येतानि केवलोत्पादपक्षस्यैव साधकानीति चत्वारि चलमादीनि प दा न्येकार्थिकानी त्युक्ते शेषा त्वनेकार्थिकानीति सामर्थ्यादवगतमपि सुखावबोधाय साक्षा त्प्रतिपादयितुमाह ॥ छिज्जमाणेत्यादि ॥ व्यक्तं नव

णाणाघोसा णाणावंजणा । गोयमा । चलमाणेचालिए उदी
रिज्जमाणेउदीरिए वेइज्जमाणेवेइए पहिज्जमाणेपहीणे एएण
चत्तारिपया एगठा णाणाघोसा णाणावंजणा उप्पन्नपक्खस्स

ते भयर चलमादिक पदने भव भवभेदकनो जिम पहिला चारिपद एकार्थकता हवी भाखवाये करेछे । उप्पन्नपक्खस्सेत्ति चलमाणेचलिए इत्यादि चारिपद उत्पन्नपदे पक्षे जिनवारण हज़ाविभागनको तेउत्पादनामपर्यायविशेष केवलउत्पाद तीज कहवारचको समपितानेविषे कमने पयछुवे कम नाम एकत्रेसमाम तोभाभाव, निश्चारचारिपद केवलउत्पादविषयको एकार्थ कह्या, केवारणे केवलज्ञान पर्यायजोवे पहिलेकिवारे पाम्योनथी प

र ॥ मायछत्ति ॥ मानार्थोपि नानार्थत्वं स्येव छिद्यमान छिन्नमित्येत त्पद स्थितिबन्धाश्रयं यतः अयोगिकेवली अन्तकाले योगनिरोध कतुकामो वे दनीयनामगोत्राख्याना त्रिसृणां प्रकृतीनां दीर्घकालस्थितिकाना सर्वापवर्तनया न्तर्मौहूर्तिक स्थितिपरिमाण करोति तथा भिद्यमानभिन्नमित्येत त्पद मनुभावबन्धाश्रयं तत्र च यस्मिन् काले स्थितिघात करोति तस्मिन्नेव काले रसघातमपि करोति कथम रसघातः स्थितिघातश्चेत्य प्रमप्र देश्यो अनन्तगुणहान्यभिवी ततो नेन रसघातकरणेन पूर्वेणा द्वितीयपदं भवति तथा दह्यमान दग्धमित्येत त्पद प्रदेशबन्धाश्रयं, प्रदेशबन्ध स्वरूप स्तामासनन्तप्रदेशानामस्कन्धानां कर्मत्वापादन तस्य प्रदेशबन्धकर्मणःसत्कानां पञ्चह्रस्वाक्षरोच्चारणकालपरिमाणया ऽसङ्ख्यातसमयया गुणश्रेणीरचनया पूर्वरचितानां शैलेश्यवस्थाजाविसमुच्छिन्नक्रियध्यानाग्निना प्रथमसमयादारभ्ययावदन्त्यसमय तावत् प्रतिसमय क्रमेणा सङ्ख्येयगुणवृद्धानां कर्मपुद्ग लाना दहनं दाहो ऽनेन च दहनार्थेनेदं पूर्वेणा त्पदा द्वितीयपदं भवति, दाह शब्दश्चा न्यत्रापि द मोक्षचिन्ताधिकारा न्मोक्षसाधन उत्कर्ष कर्मविषयमेव पाश्चरति तथा म्रियमाणं मृतमित्येतत्पद मायु कर्मविषय यत आयुष्कपुद्गलानां प्रतिसमयं क्षयोमरण मनेन च मरणार्थेन पूर्वपदे भ्यो भिन्नार्थत्वा द्विभार्थेपद भवति तथा म्रियमाण मृतमित्यनेना युःकर्मणोक्तं यतः कर्मैव सिद्ध जीवती त्युच्यते कर्मैव च जीवादपगच्छ न्म्रियत इत्युच्यते, तच्चमरण सामान्येनो क्तमपि विशिष्टमेवा भ्युपगन्तव्यं यतः संसारवर्त्तीनि मरणा न्यनेकशो ऽनुभूतानि दुःखरूपाणिचेति किमिमेरर्थेरिह पुनः

छिज्जमाणेछिन्ने भिज्जमाणेभिन्ने दज्झमाणेदड्ढे मिज्जमाणेमए णिज्जरिज्जमाणे

नेवेकमप्रान प्रधान वली जीवनो प्रयासपदि केवलज्ञानमिमित्तेयके तेकारखयी तेहिज केवलज्ञानात्पत्ति पर्यायवाची । केवलपदिलो तेपसे प्रथम्नो ते उदयभावे धने वदयधावा ते वेदोयें धनुमविसे हलव । तेवेकस्थिति पयवनो छदोरणायेकारो उदयधावा ते पनुभवायाचे प्रयोषवाय, तेमाटे उत्पाद पदे एकार्थएकावावाचा । भवनः स्थितिवादि भविवेधित सामान्यम पायसवो एकार्थके केवलोत्पादपवनो साधवाचे ते उत्पवपदे समर्थिता ये तेवमे प्रयोषपदं तेववो ॥ हि एपदनेविये स्थितिनोविगमवाची । तथा सि॰ दह रसनोविगमवाची । द दहोवस दाहरूप विगमवाची । मि

पदे पुनरयं मत्य मन्त्य सयक्समयसकरित मपवगहेतुभूतमिति विवक्षितमिति । तथा निर्ज्जीयमानंनिर्ज्जीयमित्येतत्पद मवकर्मोभावविषय य त। मयकर्मनिर्जरयं न कदाचिद् प्यनुभूतपूर्व जीवेनेति यतो ऽनेन सर्वकर्माभावरूपनिर्ज्जरार्थेन पूर्वपदेभ्यो भिन्नार्थत्वा भिन्नार्थ पदं भवति य येतानि पदानि विशेषतो नानार्थान्यपि सन्ति सामान्यतः कस्यपक्षस्या भिधायकतया प्रवृत्तानी ? त्यस्या माशङ्कायामाह ॥ विगयपक्खस्सत्ति ॥ विगतं विगमो वस्तुनो ऽवस्थान्तरापत्त्याविनाशः ' सएव पक्षो वस्तुधर्म स्तस्यथापक्षः परिग्रहो विगतपक्ष स्तस्य विगतपक्षस्य वाचकानीतिशेष विगत स्त्विह शेषकर्माभावो भिमतो जीवेन तस्या प्राप्तपूर्वतया त्यन्तमुपादेयत्वा तदर्थत्वाच पुरुषप्रयासस्येति एतानि चैव विगमार्थानि भवन्ति, क्रिय मानपदेऽपि स्थितिखण्डन विगम उक्तो, छिद्यमानपदे त्वनुभावभेदो विगमो, दह्यमानपदे त्वकर्मताभवन विगमो, म्रियमाणपदे पुन रायु कर्माभावो विगमो, निर्ज्जीयमाणपदे त्वशेषकर्माभावो विगमस्त, सदेव मेतानि विगतपक्षस्य प्रतिपादकानी त्युच्यते एवञ्च यत्पञ्चमाङ्गादिसूत्रोपन्यासे प्रेरित मुत केनाभिप्रायेणेदं सूत्र मुपन्यस्तमिति ? तत्केवलज्ञानोत्पादकस्याविगमाभिधानरूपसूत्राभिप्रायव्याख्यानेन निर्णीतमिति, एतत्सूत्रस्वादि तिद्धमेनाचार्योप्याह—उप्पज्जमाणकाल उप्पन्नविगयंयविगच्छन्तं । दवियंपन्नवयंतो तिकालविसयविसेसेइति ॥ १ ॥ उत्पद्यमानकालमित्यनेन माद्य समया दारभ्यो त्पत्तसमयं यावदुत्पद्यमानत्वस्ये ष्टत्वा द्वर्तमानभविष्यत्कालविषयं द्रव्य मुक्त, मुत्पन्न मित्यनेन तु मतीतकालविषय, मेवं वि गत विगच्छदि त्यनेनापीति, ततश्चो त्पद्यमानादिप्रज्ञापयन् भगवान् द्रव्य विशेषयति कथ त्रिकालविषय यथा भवतीति सवादगाथायाः मन्येतु

णेणिज्जिरो एएणपचपदा णाणट्ठा णाणाघोसा णाणायजणा विगयपक्खस्स

एर्गा थायुक्तमना पमावदविगम । तथा विभ्र्रस्मिमाये एर्गासयममना विगमकाद्या एकार्थे विगतपक्षे एकार्था ॥ ए एव पं पोये हैं पदने चाचड़ा नानापयपर्यूहाव ॥ नाना नानाप्रकारता घोसा घायउदात्तादिक ॥ नाना नानाप्रकारता व्यंजणा अक्षरमयर ॥ विगतपक्खस्स• वि गतवस्तुनो भवस्थांतरा पेक्षायें विनाश शेहमाईणपत्त परिग्रह ते विगतपक्षकहोये हपयपद विगतपक्षनो वाचकाछे ए सवपदने विषे मयपर्यायछे ॥

कर्मेतिपदस्य सूत्रे मभिधाना चलनादिपदानि सामान्येन व्याख्यान्ति न कस्मापेक्षयैव तथाहि ॥ चलमाणेचलिएत्ति ॥ इह चलन मस्थिरस्यपर्यायेण वस्तुन स्तपादः ॥ वेदज्जमाणेवइएत्ति ॥ व्यज्यमानं कम्पमान व्येजित कम्पितं मजूकम्पन इतिवचनात् व्येजममपि तद्रूपापेक्षयो त्पादव्यय ॥ उदीरिज्जमाणेउदीरिएत्ति ॥ इहो दीरणं स्थिरस्य सतः प्रेरणं तदपि चलनमेव ॥ पहेज्जमाणेपहीणेत्ति ॥ प्रहीयमाणं प्रध्वंसम् परिपततीत्यर्थ , प्रहीण प्रबाह परिपतितमित्यर्थ इहापि प्रहीण चलनमेव चलनादीनां चैकार्थत्वं सर्वेषां गत्यर्थत्वात् ॥ उप्पन्नपक्खइमत्ति ॥ चलत्यादिना पर्यायशो त्पन्न त्वलक्षणपक्षसाभिधायका न्येतानीति तथा छेज्जवदज्झमरत्यमिज्जरणा न्यक्रमाणान्यपि व्याख्येयानि, तथाल्पालक्ष प्रतीसमेव, विशायता पुन रेपाक्षय–कुठारादिना लतादिविषयश्च, तोमरादिना शरीरविषयो नेप्ने, इन्मिना दारादिविषयो दाहः , मरणन्तु प्राणत्यागो, निर्जरा त्वतिपु रातीभवनमिति ॥ विगयपक्खस्सत्ति ॥ विभागोन्यपि सामान्यता विनाशाभिधायका न्यतानीत्यर्थ , नच वक्तव्य किमते चलनादिनि रिहनिरूपिते रतत्स्वरूपत्वादेयामिति प्रतत्स्वरूपस्यासिद्धत्वात् तत्सिद्धिय निश्चयनयमतेन वस्तुस्वरूपस्य प्रज्ञापयितु मारब्धत्वा–तथाहि–व्यवहारनय चालित मेव चलितमितिमन्यते, निश्चयस्तु चलदपि चलितम् अत्र बहुवक्तव्य तच विशेषावश्यका दिहैया विचार्यमाणजमालिचरितावायसेयमिति , इहा च प्रश्नोत्तरसूत्रद्वये मोक्षतत्व चिन्तित, मोक्षः पुन जीवस्य, जीवाश्च नारकादय चतुर्विंशतिविधा, यदाह—नेरइयासुराइ पुढवाइं बेंदियादउचेव पचेंदियतिरियनरा वतरजोइसियवेमाणी २४ ॥ १ ॥ तत्र नारका स्तावत् स्थित्यादिभि श्चिन्तयन्नाह ॥ नेरइयाणमित्यादि ॥ निगत मयमिष्टफल कर्म येभ्य स्ते निरया सपुत्रवा नैरयिका नारका स्तेषां नैरयिकाणां ॥ भन्तेति ॥ भदन्त ॥ केवइयंकालत्ति ॥ कियन्तमं कालयेति कियत्काल

णेरइयाणन्तेकेवइयकालठिइ पणत्ता । गोयमा । जहण्णेणदसवासससहस्साइठिइं

पाहे मायनो वार्तामानी तेमाव तो जोतमेहाय जोयते नारको पाहिरिते चउवीसदडक कहाके तेचउमास मृडवमा माम । नारको असुरादि ११ पृथि वीयादि १६ बेइन्द्रीयादि १८ पचेन्द्री तिर्यच २ मनुष्य २१ व्यतर २२ ज्योतिषी २३ वैमानिक २४ इति ॥ हिवे नारकीनो स्थितिपूछेछे ? नेरइयाणं

सं कियत्कालमयायत् ॥ ठिइत्ति ॥ स्थितिरायुःकर्मवशात् नरके अवस्थानं ॥ पण्णत्तेति ॥ प्रज्ञप्ता प्ररूपिता भगवद्भिः रन्यतीर्थकरैर्वेति प्रश्न ॥ गोयमा
त्यादि ॥ निवचनं व्यक्तमेव नवरं ॥ दसवाससहस्साइंति ॥ प्रथमपृथिवीप्रथमप्रस्तरापेक्षया ॥ तेत्तीससागरोवमाइंति ॥ सप्तमपृथिव्यपेक्षयेति मध्य
मात् जघन्यापेक्षया समयाद्यधिका सामर्थ्य गम्येति अनन्तरं नारकाणां स्थितिरुक्ता तेषोच्छ्वासादिमन्त इत्युच्छ्वासादिनिरूपणायाह ॥ नेरइया
णमित्यादि ॥ व्यक्तं नवरं ॥ केवइकालस्सत्ति ॥ प्राकृतशैल्या कियत् कालात् कियता कालेनेत्यर्थ ॥ आणमंतित्ति ॥ आणमन्ति अनप्राणनेइतिधातुपाठा
त् नकारस्यागमिकत्वात् ॥ पाणमंतित्ति ॥ प्राणन्ति वाशब्दौ समुच्चयार्थौ एतदेवपदद्वयं क्रमेणाह स्पष्टयन्नाह ॥ ऊससंतिवा नीससंतिवेति ॥
यदुक्तं आणमंतित्तदुक्तं उच्छ्वसन्तीति तथा यदुक्तं प्राणन्तितदुक्तं नि श्वसन्तीति अथवा आणमन्तिप्राणमन्तीति अनुभूतत्वे इत्यस्या ने
कार्थत्वेन श्वसनार्थत्वात् अन्येत्वाहुः—आणमंतिवा पाणमंतिवेत्यनेना व्यात्मक्रिया परिगृह्यते उच्छ्वसन्तिवानिःश्वसन्तिवेत्यनेन बाह्येति ॥ अत्र
उच्छ्वासप्रवृत्ति । एतस्य प्रश्नस्य निर्वचनं यथोच्छ्वासपदे प्रज्ञापनायाः सप्तमपदे तथावाच्यं तदेव ॥ गोयमा सययसंतयामेव आणमंतिवा पाणम

पण्णत्ता । उक्कोसेणतेत्तीससागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता । णेरइयाणंभंतेकेवइयका
लस्सआणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा णीससंतिवा ॥ जहाऊसासपदे

नारकीनी । भंते । हेभगवन् केवडकाल केटलाकालनी । ठिई । स्थिति । पण्णत्ता । कही स्थिति ते मर्यादाकाल भवाक शुभवमना भव तेहने नारकीमा
होवे इत्यादि । उत्तर, हेगोतम । जहन्नेण । जघन्यथको दसवाससहस्साइ । दसवरससहस्सनी ठिइ पण्णत्ता स्थितिकही । एह रत्नप्रभा पृथिवीना प्रथम प्रता
र पाथोस्थितिजाणवी ॥ उक्कोसेण । उत्कृष्टी तेत्तीसं । तेत्तीस ॥ सागरोवमाइ । सागरोपमनी । ठिइपण्णत्ता । स्थिति । कही ते सातमी पृथिवीनी अपेक्षा
ये जाणवी ॥ ते आउखो सासोसासे हुवे ते अणीपूछेछे ? णेरइयाणं । नारकीने । भंते । हेभगवन् ! केवइयकालस्स । केतलेकाले । आणमंतिवा पाणमंति
वा । अभ्यंतर सासलेवो । ऊससंतिवाणीससंतिवा । बाहिरउसासले । अथवा आणमंतिवा ऊससंतिवा अनेपाणमंतिवा एहमो पर्याय नीसस

तिवा ऊससतिवा नीससंतिवा इति ॥ तत्र सततं अनवरतं आतिदुःखितादि ते अतिदुःख्याप्तस्य निरन्तरमेवो च्छ्वासादि स्यातो इत्यपेते सतत त्वच प्रायो हस्यापि स्यादित्यतआह ॥ संतयामेवत्ति ॥ सन्ततमेव नैकसमयोपि सहिरहो स्तोतिभावः दीर्घत्वम्चेह प्राकृतत्वात् आगमन्तीत्यादे पुनरुच्चारणं शिष्यवचने आदरोपदर्शनार्थं गुरुणि राद्रियमाणवचनादि शिष्याः सन्तोषवन्तो भवन्ति तथाच योग पुन्येन भयश्रवणाचमिच्छया दिपु पठन्ते सोचे चारेयवचना भवन्ति तथाच जन्योपकार स्तीर्थोभियुञ्जियति अथ तेषामेवाहारमरुपणमाह ॥ नेरइयाणमित्यादि ॥ व्यक्त न वरम् ॥ आहारठ्ठित्ति ॥ आहार अर्थेयन्त प्रार्थेयन्त इत्येवंशीला अर्थीवा प्रयोजनमेषामस्तीत्यर्थिन आहारेण प्रोजने नार्थिन आहारस्य भोजन स्या र्थिन आहारार्थिनः ॥ जहापन्नवणायत्ति ॥ आहारठी इत्येतत्प्रभृति यथा प्रज्ञापनाया यतुर्थोपाङ्गस्य ॥ पढमएत्ति ॥ आद्ये ॥ आहारउ हेसरत्ति ॥ आहारपदस्या ष्टाविंशतितमस्य उद्देशकः पदमुद्देसोपा दाहारोद्देशक स्तत्र भणितम् ॥ तहाभाणियव्वत्ति ॥ तेन प्रकारेण वाच्यमिति तत्र नारकाहारवक्तव्यताया बहूनि द्वाराणि भवन्ति तत्संग्रहाय पूर्वोक्तस्थित्युच्छ्वासरूपणद्वारद्वयदर्शनपूर्विका गाथामाह ॥ ठिइगाहा ॥ व्या ख्या स्थितिर्नारकाणां वाच्या उच्छ्वासस्तैवोक्तावेव तथा ॥ आहारेत्ति ॥ आहारविषयो विधिर्वाच्यः सचैवम् ॥ नेरइयाण भंते! आहारठी ? हं ताआहारठी ३ नेरइयाणं भंते! केवइ कालस्स आहारठे समुप्पज्जइ ? ॥ आहारार्थं आहारप्रयोजन माहारार्थित्वमित्यर्थः ॥ गोयमा! नेरइयाणं

नेरइयाणन्तेआहारठी । जहापन्नवणाए पढमसए आहारुद्देसए तहान्नाणियव्व ॥ गाहा ॥
ठितिउस्सासाहारे किंवाहारेइसव्वउवावि । कइभागसव्वाणिव कीसवज्जुओपरिणमति ॥ १ ॥

तिवा उसासनिसासपरे। एविमपवचवा मांहि सातमेपदे कह्याछे तिमजाणवा, ते इम । सततं सतत ॥ नीनिरंतर समयमात्रनो विरह विनामें श्वा सुषमाटें ॥ नेरइयाणं । नारकीने। भंते । हेभगवन् । आहारट्ठी। आहारनाअर्थीछे, आहारना वांछकछे ॥ जहा । जिम पन्नवणाए । पन्नवणानो अट्ठावीस मां पदना ।पढमसए । पहिला शतकना। आहारुद्देसए । आहार पदेंमांहि जिमकह्याछे।तहाभाणियव्वं । तिमआणवो। माहाठिति । स्थितिनारकी

प्तिए ॥ तत्र भोगो ऽभिसन्धि स्तेन निर्वर्तित कृत भामो
च्वा मन्तरेणापि प्रावृट्काले प्रचुरतरपस्त्रवणाद्यभिव्यग्य
शीतपद्गे ... भाहारठे समुप्पज्जइ ॥ अनुसमयं प्रतिक्षणं सन्ततातितीव्रक्षुद्वेद
नीयकर्मोदयत ग्रभ्याहा... ...ालतन्यायावृपि न विरहितः अथवा; प्रदीपकालोपजोग्याहारस्य सरुद्ग्रये
पि भोगो मुसमयंस्या इतो भवस्यापि सातत्यभात... ...विरहितमित्याह ॥ तत्थ णं जे से आभोगनिव्वत्तिए सेणं असंखेज्जसमइए अंतोमु
हुत्तिए आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥ असंख्यातसामयिकः पल्योपमादिपरिमाणोपि स्यादतआह ॥ अंतोमुहुत्तिएत्ति ॥ इदमुक्तंभवति आहारयामी त्यभि
लाष मतयां गृहीताहारद्रव्यपरिणामतीव्रतरक्षुद्वेदनपुरस्सर मन्तर्मुहूर्तो निर्वर्त्तत इति ॥ किमाहारेंतित्ति ॥ किंस्वरूपंवा वस्तु नारका आहारय

न्तीति वाच्यं ? वाचक: समुचये तत्रेदं प्रश्ननिर्वचनसूत्र ॥ नेरइयाणं भंते ! किमाहारमाहारेंति ? गोयमा ! दव्वओ अणंतपएसियाइं ॥ अनन्तप्रदेशवन्ति
पुद्गलद्रव्याणीत्यर्थ, तदन्यथा अयोग्यत्वात् ॥ खेत्तओ असंखेज्जपएसावगाढाइं ॥ न्यूनतरप्रदेशावगाढानितु न ग्रहणायोग्यानि अनन्तप्रदेशावगाढा
नितु न नवन्त्येव सकललोकस्या प्यसङ्ख्येयप्रदेशप्रमाणत्वात् ॥ कालओ अण्णतरठियाइं ॥ जघन्यमध्यमोत्कृष्टस्थितिकानीत्यर्थः, स्थितिश्च आहारयोग्य
स्कन्ध परिणामेऽवस्थानमिति ॥ भावओ वण्णमताइं गंधमताइं रसमताइं फासमताइं आहारेंति ५। जाइं भावओ वण्णमताइं आहारेंति किं ताइं एगव
ण्णाइं आहारेंति जाव किंपंचवण्णाइं आहारेंति ? गोयमा ! ठाणमग्गणं पडुच एगवण्णाइंपि आहारेंति जाव पंचवण्णाइंपि आहारेंति विहाणमग्गणं
पडुच कालवण्णाइंपि आहारेंति जावसुक्किलाइंपि आहारेंति ॥ तत्र ॥ ठाणमग्गणं पडुच्चेति ॥ तिष्ठत्यस्मिन्निति स्थानं सामान्य यथा – एकवर्णं द्वि
वर्णमित्यादि ॥ विहाणमग्गणं पडुच्चेति ॥ विधानं विशेषः कालादिरिति ६। जाइं वण्णओ कालवण्णाइं आहारेंति ताइंकिं एगगुणकालाइं आहारें

तिवा ऊससतिवा नीससंतिवा इति ॥ तत्र सततं अनवरतं आतिदु:खिताहि ते अतिदुःखत्वात्तस्य निरन्तरमेवो च्छ्वासनिःश्वासौ हश्येते सतत त्वेन प्रायो वृत्त्यापि स्यादित्यतआह ॥ सततामेवत्ति ॥ सन्ततमेव नैरन्तर्येणोपि तद्विरहो स्तोकमात्रः दीर्घस्यमोह प्राकृतत्वात् आगमस्सीत्यादेः पुनरुच्चारणं शिष्यवचने आदरोपदर्शनार्थं गुरूणि रात्रियमगयवचनाहि शिष्याः मुक्तोपवस्तो भवन्ति तथाच पौनःपुन्येन प्रश्नस्य यथार्थनिश्चया दिषु भवन्ते लोके वादेयवचना भवन्ति तथाच प्रश्नोपकार स्तीर्णामिपृच्छियति अथ तेषामेवाहारप्रश्नमाह ॥ नेरइयाणमित्यादि ॥ व्यक्त म वरम् ॥ आहारट्ठित्ति ॥ आहार पर्यवन्ते आश्रयन्त इत्येवंशीला यदीवा प्रयोजनमेषामस्ती त्यर्थिन आहारेण भोजने आर्थिन आहारस्य भोजन स्या र्थिन आहारार्थिनः ॥ जहापन्नवणाएत्ति ॥ आहारट्ठी इत्येतत्पदप्रभृति यथा प्रज्ञापनाया चतुर्थोपाङ्गस्य ॥ पढमएसि ॥ आदे ॥ आहारउ द्देसयत्ति ॥ आहारपदस्या ष्टाविंशतितमस्य उद्देशकः पदखण्डरूपा दाहारोद्देशकः स्तत्र भणितम् ॥ तहाभाणियव्वत्ति ॥ तेन प्रकारेण वाच्यमिति तत्र नारकाहारवक्तव्यतायां बहूनि द्वाराणि भवन्ति तत्संग्रहार्थं पूर्वोक्तस्थित्युच्छ्वासलक्षणद्वारद्वयलक्षणपूर्विका गाथामाह ॥ ठिइगाहा ॥ व्या स्या स्थितिर्नारकाणां वाच्या उच्छ्वासवक्तव्यतोक्तावेव तथा ॥ आहारेत्ति ॥ आहारविषयो विधिर्वाच्यः सचैवम् ॥ नेरइयाणं भंते । आहारट्ठी हं ता आहारट्ठी ? नेरइयाणं भंते । केवइ कालस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ ? ॥ आहारार्थे आहारप्रयोजन माहाराभिलाषमित्यर्थः ॥ गोयमा । नेरइयाणं

णेरइयाणन्तेआहारट्ठी । जहापन्नवणाए पढमसए आहारुद्देसए तहाभाणियव्व ॥ गाहा ॥
ठितिउस्सासाहारे किंवाहारेइसव्वठवावि । कइभागसव्वाणिय कीसवभुज्जोपरिणमति ॥ १ ॥

तिवा ऊसासनीसासपदे । पन्निमपनवणा मांहि सातमेंपदें कह्याछे तिमकहिवा, ते इम । सतत सतत ॥ निरन्तर समयसमयनो विरह विमासे घना दुसमार्टे । नेरइयाणं । नारकीने । भंते । हेभगवन् । आहारट्ठी । आहारनाअर्थी, आहारना वांछक छे । जहा । जिम पन्नवणाए । पन्नवणाना अठावीस मां पदना । पढमसए । पहिला सतकनां । आहारउद्देसए । आहार उद्देशामांहि जिमकह्याछे । तहाभाणियव्वं । तिमभणवो । गाहा । ठिति । स्थितिनारकी

तुविहे आहारे पन्नत्ते ॥ अभ्यवहारक्रियेत्यर्थः ॥ तंजहा आभोगनिव्वत्तिए अणाभोगनिव्वत्तिए ॥ तत्रा भोगो ऽभिसन्धि स्तेन निर्वर्तितः स्त आभो गनिवर्तित आहारयामीती च्छापूर्वकइत्यर्थः अनाभोगनिवर्तितस्तु आहारयामीति विशिष्टेच्छा मन्तरेणापि प्रावृट्काले प्रचुरतरप्रस्रवणाद्यभिव्यंग्य शीतपुद्गलाद्याहारवत् ॥ तत्थणं जेसे अणाभोगनिव्वत्तिए सेणं अणुसमयमविरहिए आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥ अनुसमय प्रतिक्षणं सततातितीव्रक्षुद्वेद नीयकर्मोदयत ओजआहारादिना प्रकारेणेति ॥ अविरहिएणंति ॥ तुकस्वलितन्यायादृपि न विरहितः अथवा ॥ प्रदीर्घकालोपभोग्याहारस्य सकृद्ग्रहणे पि भोगो नुसमयंस्या दतो प्रहणस्यापि सातत्यप्रतिपादनार्थं अविरहितमित्याह ॥ तत्थणं जेसे आभोगनिव्वत्तिए सेणं असंखेज्जसमइए अंतोमु हुत्तिए आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥ असंख्यातसामयिकः पल्योपमादिपरिमाणोपि स्यादतआह ॥ अंतोमुहुत्तिएत्ति ॥ इदमुक्तंभवति आहारयामी त्यभि लाष मृतया गृहीताहारद्रव्यपरिणामतीव्रतरदुःखमनपुरस्सर मन्तर्मुहूर्तो भिवर्ततइति ॥ किमाहारेंतित्ति ॥ किंस्वरूपंवा वस्तु नारका आहारय

न्तीति वाच्यं ? वाशब्दः समुच्चये तथेदं प्रश्नमिदमसूत्र ॥ नेरइयाणं भंते ! किमाहारमाहारेंति ? गोयमा ! दव्वओ अणंतपएसियाइं ॥ अनन्तप्रदेशावन्ति पुद्गलद्रव्याणीत्यर्थः, तदन्येषा मयोग्यत्वात् ॥ खेत्तओ असंखेज्जपएसावगाढाइं ॥ न्यूनतरप्रदेशावगाढानितु न ग्रहणायोग्यानि अनन्तप्रदेशावगाढा नितु न भवन्त्येव सकललोकस्या प्यसंख्येयप्रदेशप्रमाणत्वात् ॥ कालओ अण्णतरट्ठियाइं ॥ जघन्यमध्यमोत्कृष्टस्थितिकानीत्यर्थः, स्थितिश्च आहारयोग्य स्कन्धः परिणामेऽवस्थानमिति ॥ भावओ वण्णमंताइं गंधमंताइं रसमंताइं फासमंताइं आहारेंति ५ । जाइं भावओ वण्णमंताइं आहारेंति किं ताइं एगव ण्णाइं आहारेंति जाव किंपंचवण्णाइं आहारेंति ? गोयमा ! ठाणमग्गणं पडुच्च एगवण्णाइंपि आहारेंति जाव पंचवण्णाइंपि आहारेंति विहाणमग्गणं पडुच्च कालवण्णाइंपि आहारेंति जावसुक्किलाइंपि आहारेंति ॥ तत्र ॥ ठाणमग्गणं पडुच्चत्ति ॥ तिष्ठत्यस्मि न्निति स्थानं सामान्य यथा — एकवर्णं द्वि वर्णमित्यादि ॥ विहाणमग्गणं पडुच्चत्ति ॥ विधानं विशेषः कालादिरिति ६ । जाइं वण्णओ कालवण्णाइं आहारेंति ताइंकिं एगगुणकालाइं आहारें

ति जाव दसगुणकालाइं आहारेंति संखेज्जगुणकालाइं असंखेज्जगुणकालाइं अणंतगुणकालाइं आहारेंति ? गोयमा ! एगगुणकालाइंपि आहारेंति जाव अणंतगुणकालाइंपि आहारेंति ७। एवं जावसुक्किलाइं ११। एवं गंधओवि १३। रसओवि १८। जाइं भावओ फासमंताइं ताइं ठाणमग्गणं पडुच्च नो एगफासाइं आहारेंति नोदुफासाइं आहारेंति नोतिफासाइं आहारेंति ॥ एकस्पर्शानामसम्भवः द्व्यादयो चाल्पप्रदेशिकतासूक्ष्मपरिणामाभ्यां ग्रहणायोग्यत्वात् ॥ चउफासाइं आहारेंति जाव अट्ठफासाइं आहारेंति ॥ बहुप्रदेशिकताबादरपरिणामाभ्यां ग्रहणयोग्यत्वादिति ॥ विहाणमग्गणं पडुच्च कक्खडाइंपि आहारेंति जाव लुक्खाइंपि आहारेंति १९। जाइं फासओ कक्खडाइं आहारेंति ताइं किं एगगुणकक्खडाइं आहारेंति जाव अणंतगुणकक्खडाइं आहारेंति ? गोयमा ! एगगुणकक्खडाइंपि आहारेंति जाव अणंतगुणकक्खडाइंपि आहारेंति २०। एवं अट्ठवि फासा भाणियव्वा जाव अणंतगुणलुक्खाइंपि आहारेंति २७ जाइं भंते ! अणंतगुणलुक्खाइं आहारेंति ताइं किं पुट्ठाइं आहारेंति अपुट्ठाइं आहारेंति ? गोयमा ! पुट्ठाइं आहा-

---

रेंति नो अपुट्ठाइं आहारेंति २८। पुट्ठाइंति ॥ आत्मप्रदेशस्पर्शवन्ति तत्पुनः आत्मप्रदेशस्पर्शनं अवगाहक्षेत्राद् बहिरपि भवति अत उच्यते ॥ जाइं भंते ! पुट्ठाइं आहारेंति ताइं किं ओगाढाइं आहारेंति अणोगाढाइं आहारेंति ? गोयमा ! ओगाढाइं नो अणोगाढाइं ॥ अवगाढानीति आत्मप्रदेशेष्वेवैकक्षेत्रावगाढानीत्यर्थः २९ ॥ जाइं भंते ! ओगाढाइं आहारेंति ताइं किं अणंतरोगाढाइं आहारेंति परंपरोगाढाइं आहारेंति ? गोयमा ! अणंतरोगाढाइं नो परंपरोगाढाइं आहारेंति ॥ अनन्तरावगाढानीति येषु प्रदेशेष्वात्मावगाढः तेष्वेव यान्यवगाढानि तान्यनन्तरावगाढानि अन्तराभावेनाव्यवहितत्वात्, यानि च तदनन्तरवर्तीनि तान्यवगाढसम्बन्धात् परम्परावगाढानीति ३० ॥ जाइं भंते ! अणंतरोगाढाइं आहारेंति ताइं किं अणूइं आहारेंति बायराइं आहारेंति ? गोयमा ! अणूइंपि आहारेंति बायराइंपि आहारेंति ॥ तत्राणुत्वं बादरत्वं चापेक्षिकं तेषामेव द्रव्याणां स्कन्धानां प्रदेशवृद्ध्या पद्धाना अवसेयं ३१ । जाइं भंते ! अणूइंपि आहारेंति बायराइंपि आहारेंति ताइं किं उड्ढं आहारेंति एवं अहेवि

तिरियपि ? गोयमा ! उड्ढपि आहारेंति एवं अहेवि तिरियंपि ३२ । जाई भंते ! उड्ढपि आहारेंति अहवि तिरियपि आहारेंति ताइ किं आइंमाहा रेंति मज्झे आहारेंति पज्जवसाणे आहारति ? गोयमा ! तिहावि ॥ अयमथ आभोगनिर्वर्तितस्या हारस्या न्तर्मौहूर्तिकस्या दिमध्यावसानेषु स यथा हारयन्तीति ३३ ॥ जाइं भंते ! जाइं मज्झे अवसाणेवि आहारेंति ताइं किं सविसए आहारेंति अविसए आहारेंति ? गोयमा ! सविसए मो अविसए आहारेंति ॥ तत्र स्वो स्वकीयो विषयः स्पृष्टावगाढानन्तरावगाढास्या स्वविषय स्तांस्ते आहारयन्ति ३४ ॥ जाइं भंते ! सविसए आहा रंति ताइं किं आणुपुव्विं आहारेंति अणाणुपुव्विं आहारेंति ? गोयमा ! आणुपुव्विं आहारेंति नोअणाणुपुव्विं आहारेंति ॥ तत्रा नुपूर्व्या यथासन्न नार तिक्रम्य ३५ ॥ जाइं भंते ! आणुपुव्विं आहारेंति ताइं किं तिदिसिं आहारेंति जाव छद्दिसिं आहारेंति ? गोयमा ! नियमा छद्दिसिं आहारेंति ॥ इह नारकाणां लोकमध्यवर्तित्वेन षण्णा मप्यूर्ध्वादिदिशा मलोकेना नावृतत्वात् षट्सु दिक्ष्वाहारणीयमस्ति तत उक्तं नियमात् षड्दिशि दि

ग्ययादिविकल्पास्तु लोकान्तवर्तिषु पृथिवीकायिकादिषु दिशां त्रयस्य द्वयस्य एकस्या चालोकेना वरणे भवन्तीति यद्यपि वर्णतः पञ्चवर्णानी त्या द्युक्तं तथापि प्राचुर्येण यद्वर्णगन्धादियुतानि द्रव्या ण्याहारयन्ति, तानि दर्शयति ॥ ओसण्णकारणं पडुच्चति ॥ बाहुल्यलक्षणकारण माश्रित्य [illegible] प्रशस्तप्रशुभानुभावस्य कारणमिति ॥ वण्णओ कालनीलाइं गन्धओ दुब्भिगंधाइं रसओ तित्तकडुयरसाइं फासओ कक्खडगरुयसीयलुक्खाइं ॥ एतानि च मा यो मिथ्यादृष्टय एवा हारयन्ति न तु भविष्यत्तीर्थकरादयइति अथ तानि यथास्वरूपाण्येव नारका आहारय न्त्यन्यथावे ? त्यस्या माशङ्काया म तिपीयत ॥ तेसिं पोराणे वण्णगुणे गंधगुणे रसगुणे फासगुणे विप्परिणामयित्ता परिपीलयित्ता परिसाडइत्ता परिविद्धंसइत्ता ॥ विपरिणामादयो विनाशार्थत्वे मैकार्थाएव ध्वनयः ॥ अन्नेय अपुव्वे वण्णगुणे गंधगुणे रसगुणे फासगुणे उप्पाइत्ता आयसरीरोगाढे पोग्गले सव्वप्पणयाए आहार माहारेंति सव्वप्पणयापएति ॥ सर्वात्मना सर्वैरात्मप्रदेशै रित्यर्थः ३६ व्याख्यात सूत्रे' संग्रहगाथायाः किंवाहारेंतीतिपद अथ सव्वेवावीति व्या

ध्यामते तत्र सर्वतः सर्वप्रदेशै नैरयिका आहारयन्तीति आपीतिवक्षमा दृजीव आहारयन्ती त्यपिवाच्यं तथैवं ॥ नेरइयाणं भंते। सव्वओ आहा रेंति सव्वओ परिणामेंति सव्वओ ऊससति सव्वओ नीससति अभिक्खणं आहारेंति अभिक्खणं परिणामेंति अभिक्खणं ऊससति अभिक्खणं नीससति आहच्च आहारेंति ? ४ हंता गोयमा। नरयणासव्वओ आहारेंति १२ सव्वओत्ति ॥ सर्वात्मप्रदेशै ॥ अभिक्खणंति ॥ अनवरत पर्याप्तत्वेसति ॥ आह च्चति ॥ कदाचि असर्वदा अपर्याप्तकावस्थायामिति १३ तथा ॥ कइभागंति ॥ आहारतयोपात्तपुद्गलाना कतिथ भाग आहारयन्तीतिवाच्यं त थैव ॥ नेरइयाणं भंते। जे पोग्गले आहारत्ताए गेण्हंति तेसि णं तेसिं पोग्गलाणं सेयालंसि कइभागं आहारेंति कइभागं आसाएंति ? गोयमा। असंखेज्जभाग आहारेंति अणंतभागं आसाएंति सेयालंसित्ति ॥ एष्यत्काले ग्रहणोत्तरकाल मित्यर्थः असंखेज्जइभागमाहारेंतीत्यत्र कचि व्याचक्षते गवादिप्रथमवृहद्ग्रासग्रहणवत् कांचित् गृहीतासंख्येयभागमात्राम् पुद्गला नाहारयन्ति तदन्येतुपतन्तीति अन्येत्वाचक्षते प्रज्ञप्तिसूत्रपदर्शनात् स्वय रीतया परिणताना मसंख्येयभाग माहारयन्ति प्रज्ञप्तिरोदि – गवादिप्रथमवृहद्ग्रासग्रहणवत् गृहीताना शरीरत्वेना परिणताना माहारतांगच्छति' शरीरतया परिणतानामपि केषांचिदेव विशिष्टाहारकार्यकारिका ता मभ्युपगच्छति शुष्कुलयत्वा तस्येति अन्य पुनरित्य मभिदधति ॥ असंखे ज्जइभागमाहारेंतित्ति ॥ शरीरतया परिणमन्ति शेषास्तु किट्टीभूय मनुष्यान्यवहृताकारत्व म्मलीभवन्ति न शरीरत्वेन परिणमन्तीत्यर्थः ॥ अण तभागमासाएंतित्ति ॥ आहारतया गृहीताना मनन्तभाग मास्वादयति तद्रसादीन् रसनादीन्द्रियद्वारे णोपलभन्त इत्यर्थः १८ सव्वाणिवत्ति ॥ द्वार तत्र सर्वास्तेषा हारद्रव्या न्याहारयन्तीतिवाच्यं वाक्यत्वाः समुचये तथैवं ॥ नेरइयाणं भंते जे पोग्गले आहारत्ताए परिणामेंति तेसिं किं सव्वे

गो बहुली जघन्य। उत्कृष्ट तेतोस सागरोपम उश्वासआहारे। सासासास बहुना निरतर आहारे अहारनो पर्याप्ति फिर हारेद। वलि आहार करे समतांवावि। सगले आत्माने प्रदेशेकरो आहारसें॥ कतिभाग। केतला आहारे आहार निमित्त जेतला पुद्गल ग्रह्या तेहना असख्यातमो भा

माहारेंति पोसद्वे माहारेंति ? गोयमा ! सव्वे अपरिसेसिए आहारेंति ॥ इह विशिष्टग्रहणशीला आहारपरिणामयोग्याएव ग्राह्या उक्तिलक्षेणा इत्यथः अन्यथा पूर्वापरसूत्रयो विरोधःस्यात् इहापैव व्याख्या यदाह अजहन्नुक्कोसविय तहेवअहन्नविग्गहणमत्थि। किकासियासुठगो दिठो दिठिप्पदायेहिं ३८ ॥ १ ॥ कीसत्तुज्जोपरिणमतित्ति ॥ द्वारगाथापद [illegible] ॥ कीसत्ति ॥ पदावयवे पदसमुदायोपचारात् ॥ कीसत्ताएत्ति ॥ द्वय किं स्वतया किं स्वभावतया कीदृशतयावा केनप्रकारेण किस्वरूपतयेत्यर्थः वाशब्दः समुच्चये ॥ भुज्जोत्ति ॥ भूयोभूयः पुनःपुनः परिणमन्ति आहारद्रव्याणीति प्रकृतं इत्येत इत्यर्थः तथैव ॥ नरइयाणं भंते ! जेपोग्गले आहारत्ताए गण्हंति तेणं तेसिं पोग्गला कीसत्ताए भुज्जोभुज्जो परिणमंति ? गोयमा ! सोइंदियत्ताए जाव फासिंदियत्ता अणिट्ठत्ताए अकंतत्ताए अपियत्ताए असुभत्ताए अमणामत्ताए अणिच्छियत्ताए अभिज्झियत्ताए अहत्ताए नोउड्ढत्ताए दुक्खत्ताए नोसुहत्ताए एएसिं भुज्जोभुज्जो परिणमंति ॥ तत्र अनिष्टतया सदैव तेषां सामान्येना वल्लभतया तथा-ऽकान्ततया सदैव तद्भावना कमनीयतया, तथा-ऽप्रियतया सर्वेषामेव द्वेष्यतया, तथा-ऽमनोज्ञतया कथया प्यमनोरमतया, तथा-ऽम नोम्यतया चिन्तयापि असंभोगम्यतया तथा-ऽनीप्सिततया आसुमनिष्टतया, एकार्था वैतेशब्दाः ॥ अभिज्झियत्ताएत्ति ॥ अभिध्येयतया दर्शनस्या दकस्येन पुनरप्यभिलाषनिमित्ततया, अहत्वात्वे भेत्यन्ये असुभत्वेनेत्यर्थः ॥ अहत्ताएत्ति ॥ गुरुपरिणामतया ॥ नोउड्ढत्ताएत्ति ॥ नोलघुपरिणामत येति संग्रहगाथार्थः, इत्य संग्रहणिगाथाविवरणसूत्रं क्वचित्पुस्तकएव दृश्यतइति, अथ नैरयिकद्वाराधिकारात्तद्विषयमेव प्रश्नचतुष्टयमाह ॥ नेरइयाणमित्यादि ॥ पुव्वाहारियत्ति ॥ ये पूर्वमाहृताः पूर्वकाले अभ्यवहृताः संगृहीता इतियावत्, अभ्यवहृतावा ॥ पोग्गलत्ति ॥ स्कन्धाः ॥ परिण

स पाइरे घनता भाग सासारे। संभाविया। सगला आहारनां द्रव्य आहारे आहारपरिणाम जाग पुद्गलाश्रया। कोसय। किसमकारेंकरीने। भुज्जोभु ज्जो। वारंवार। परिणमंति। १ परिणमे इंद्रियपणे दुःखपणे परिणमे एहनो विस्तारपन्नवणा मांहिथी जाणवो। हिवेनारकीना आहाराधिकारथकी

यति ॥ ते परिणता: पूर्वकाले शरीरेकत्र सम्पृक्ताः परिणति कृता इत्यर्थ इति प्रथम भंग १। इहच–सर्वत्र प्रशस्तं काकुपाठा द्वगम्यते, तथा ॥ आ
यति ॥ ते परिणता: पूर्वकाले शरीरेकत्र सम्पृक्ताः परिणति कृता इत्यर्थ इतिप्रथम भंग १ । इहच–सर्वत्र प्रशस्तं काकुपाठा द्वगम्यते , तथा ॥ आ
हारियत्ति ॥ पूर्वकाले आहृता संगृहीता अभ्यवहृताः ॥ आहारिज्जमाणत्ति ॥ येच वर्तमानकाले आह्रियमाणा अभ्यवह्रियमा
णाः पुद्गलाः ॥ परिणमंति ॥ ते परिणता इतिद्वितीयः २ । तथा ॥ अणाहारियत्ति ॥ ये अतीतकाले अनाहृता ॥ आहारिज्जस्समाणत्ति ॥ ये
चानागतेकाले आहरिष्यमाणाः पुद्गला स्तेपरिणता इतितृतीयः ३ । तथा ॥ अणाहारिया अणाहारिज्जस्समाणेत्यादि ॥ अतीतानागतयोरनाह
तानिपेक्षा चतुर्थः ४ । इहच यद्यपि चत्वारएव भंगा उक्ता , तथाप्येते त्रिषष्टिः सम्भवन्ति , यतः पूर्वाहृता आह्रियमाणा आहरिष्यमाणा च
इत्येता अनाह्रियमाणा अनाहरिष्यमाणावेति षट् पदानीह सूचितानि , तेषुच एकैकपदाश्रयणेन षड्भंगायोगे पञ्चदश, त्रिकयोगे विंशति, च

णेरइयाणन्तेपुव्वाहारियापोग्गलापरिणया १ आहारियाआहारिज्जमाणापोग्गलापरिणया २ अणा
हारियाआहारिज्जस्समाणापोग्गलापरिणया ३ अणाहारियाअणाहारिज्जस्समाणापोग्गलापरिणया ४

आहारविषय प्रश्नकरे छे १ नेरइयाण । नारकीने मते । हेभगवन् ! कांइ पूर्वाहारितापुद्गलापरिणया । जेपूर्वकाले शरीर संघाते एकीभाव थ
या एहवा आहारा जेपुद्गल ग्रहे तेहने परिणाम्या एमनिश्चेप्रश्न १ तथा आहारिया अणाहारिज्जमाणा । पूर्वकाले आहारता संघाता आ० व
र्तमानकाले आहारकरीछे एहवा संघाते ते पोग्गला । एहवा परिणया परिणम्या ए बीजो प्रश्न १ २ तथा । अणाहारिया । अतीतकाले अणाहार
वी आहारतामईं आहारिज्जस्समाणा । अनागतकाले आहारसे संघातेत पोग्गला । एहवा परिणया परिणम्या एत्रीजोप्रश्न १ ३ तथा । अणाहा
रिया । अतीतकाले आहारतामईं अनागतमईं अने अणाहारिज्जस्समाणापोग्गलापरिणया । अनागतकाले पणि आहारस्येनहीं संगृहसेनहीं ते प
हवपरिणम्या एचोथोप्रश्न १ ४ इहां सूत्रने प्रश्नकारिवाना तथा चेवठिमाणा एकमाहारते देखाडिवे अतीतकाले अहारया १ वर्तमानकाले आहारेछे
२ आगामिकाले आहारस्ये ३ एम अणाहारया ४ अणाहारेछे ५ अणाहारस्ये ६ ए ६ पदकह्या । तेहनेविषे असंयोगी ६ द्विकयोगी १५ त्रिकसंयोगी २

तुष्कयोगे पञ्चदश, पञ्चकयोगे षट् षट्योगे एकइति, अथोत्तरमाह ॥ गोयमेत्यादि ॥ अर्थ नवरं ये पूर्वमाहृता स्ते पूर्वकालएव परिणता प्र हणानन्तरमेव परिणामभावात् १। ये पुन राहृता आह्रियमाणाश्च ते परिणता, आहृतानां परिणामभावादेव परिणमन्तिच, आह्रियमाणानां परिणामभावस्य वर्त्तमानत्वादिति २। वृत्तिकृतातु द्वितीयः प्रश्नोत्तरविकल्प एवंविधो दृष्टो, यदुत आहृता आहरिष्यमाणा पुद्गलाः परिणताः प रिणंस्यन्तेच यतो यं तेनैवं व्याख्यातो यदुत येपुन राहृता आहरिष्यन्ते, पुन स्तेषां कश्चित्परिणताः परिणताश्च ये सम्पृक्ताः शरीरेण सह येतु नतायत् सम्पृष्यन्ते, कालान्तरेतु सम्पृक्यन्ते, तेपरिणंस्यन्तइति, येपुन रनाहृता आहरिष्यन्ते, पुन स्ते नोपरिणता, अनाहृतानां सम्ब न्धाभावेन परिणामाभावात् यस्मा दाहरिष्यन्ते, ततः परिणंस्यन्ते, आहृतस्या वश्यंपरिणामभावादिति, ३ चतुर्थे त्वतीतभविष्यदाहरणवि षया भावेन परिणामाभावा दयसेयइति एतदनुसारेणैव प्राग्दर्शितविकल्पानां मुत्तरसूत्राणि व्याख्यानीति, अथ शरीरसम्पर्कवज्जपरिणामा

गोयमा णेरइयाणपुब्वाहारियापोग्गलापरिणया १ आहारियाआहारिज्जस्समाणापोग्गला परिणयापरिणम तिय २ अणाहारियाआहारिज्जस्समाणापोग्गला णोपरिणयापरिणमिस्सति ३ अणाहारियाअणाहारिज्ज

चतुष्पदभाषी १६ पंचम ६ छठ्ठ १ इम्पव ११ ए हो भगवंत उत्तरकहेछे—हेगौतम। नेरइयाने। नारकीने। पुब्वाहारिया। पूर्वकालेमाहारपण सपज्या पोग्गला परिणया। पुद्गलते परिणम्या सर्वथा तेह परिणाममा आवग्या १। अने आहारिया। जे पूर्वकाले आहार्याछे। आहारिज्जस्समाणा पोग्गला अने वर्त्तमानकाले आहारीछे ते पुद्गल। परिणया। परिणम्या अने परिणमेछे। परिणमतिय। २ आहियमाणने परिणमभावना वर्त्तमानछे २ तथा अणाहारिया। अतीतकाले आहारपणानथी सग्रह्यानथी अने अनागतकाले। आहारिज्जस्समाणा। आहारपणे लेसे। पोग्गला। ते पुद्गल। णोपरिणया। प रिणम्यानथीछे पूर्व अणग्रह्याथी अने। परिणमिस्सति। परिणमसे ग्रह्याने अनंतरे ३। अणाहारिया तथा अतीतकाले आहारपणानथी सग्रह्यानथी अने अणाहारिज्जमाणा। अनागतकाले पणि आहारपणे नथी। पोग्गला। तेपुद्गल। णोपरिणया। परिणम्यानथी। णोपरिणमिस्संति। परिणमसे पणि

त् पुद्गलाना ममारयो भवन्तीति, तदर्थमार्थं प्रश्नयमाह ॥ नेरइयाणमित्यादि ॥ चयादिसूत्राणि परिणामसूत्रसमानीति कृत्वा तिदेशतो ऽधीता नीति तथाहि ॥ जहापरिणया तहा चियावीत्यादि ॥ इहच पुस्तकेषु वाचनाभेदो दृश्यते, तत्र न सम्मोहः कार्य, सर्वत्राभिधेयस्य तुल्यत्वात् केवल स्वरितसूत्रानुसारेण प्रश्नसूत्राणि व्याकरणानिच मतिमता ध्यायानीति, तत्र चिताः शरीरे चयंगता, उपचिता पुन यदुश प्रदेशसामीप्येन शरीरेचितास्वेति, उदीरितास्तु स्वभावतो ऽनुदितान् पुद्गलान् उदयमाहे कर्म्मरसिके करणविशेषेण प्रक्षिप्य या न्वेदयते, उदीरकालस्य ममद बकरवेषावाक्रेय उदरदिवसउदीरणाएसा ॥ तथा वेदिताः स्वन रसविपाकेन प्रतिसमय मनुजयमाना अपरिसमाप्ता क्षेपानुभावाइति, तथा निर्जीर्णाः कात्स्न्येना नुसमयमक्षेपतद्विपाकतामिदुक्तादति ॥ गाहेति ॥ परिणतादिसूत्रार्थो सङ्ग्रहणाय गाथा भवति, सा चेयं परिणयत्यादि व्याख्यातार्था, नवर एकैकस्मिन् पदे परिणतचितोपचितादौ चतुर्विधा आहृता १। आहृताः आह्रियमाणाय, २। अनाहृता आहरिष्यमा

स्समाणापोग्गलाणोपरिणया णोपरिणमिस्सति ४ णेरइयाणत्तेपुव्वाहारियापोग्गलाचिया ॥ पुच्छा ॥ जहा
परिणया तहा चियावि एव चिया उवचिया उदीरिया वेइया णिज्जिणा ॥ गाहा ॥ परिणतचियायउवचिया ४

णा ॥ ४ चिवे शरीर उपकरण परिणामपणा पहलगो पयादिक हवे त देखाडवानी प्रश्नकरेछे—नेरइयाणभंते । नारकीने हेभगवन् । पुव्वा हारिया । पूर्वआहारिया । पोग्गलाचिया । तेपुद्गल ते चियाकहीये सघसपूराव्यावि शरीरकेविषेचिया । पुच्छा । ए प्रश्न पूछ्यो चिवे उत्तर कहेछे— जहा । जिम । परिणया । परिणम्या । तहा । तिमतिम । चियावि । चयपाम्या । एवं । इम । चिया । चयपाम्या । उवचिया । गाढाविस्या घणूहवि पाम्या । उदीरिया । जमावे उदयनथीपाम्या पणेते उदयपाम्या । वेइया । पोताने रसविपाके प्रतिसमये भोगव्या । णिज्जिया । रसपरिणामेकरी निज रा जोगमरेयवी जराजीवा । गाहा । परिणय । गाथा । जिमपरिणामे परिणम्या । चिया । चयपाम्या । उवचिया । घणूहविपाम्या । उदीरिया । भावेकरी उदी रिया । वेदियाव । भावेकरोवेदिया । णिज्जिणा । रसकरजीवा तेहमो चामितव कहीने । परिणमिपएसि । एवेमापदनेविषे चारि चारिभेदेपुद्गलकहवा

गाय ३। समाहता समाहरिष्यमाणाचे ४। त्येव चतुरूपाः पुद्गला भवन्ति, प्रश्ननिर्वचनविषयाः स्युरिति, पुद्गलाधिकारादेवेमा मष्टादशसू त्रीमाह ॥ नेरइयाणं भंते। कइविहा पोग्गला भिज्जंतीत्यादि ॥ व्यक्तं नवरं ॥ भिज्जंतिति ॥ तीव्रमन्दमध्यमतया नुभागभेदेन भेदवन्तो भवन्ति उद्वर्त्तनाकरणापवर्तनकरणाभ्यां मन्दरसा तीव्ररसा, तीव्ररसास्तु मन्दरसा भवन्तीत्यर्थः, उत्तरं ॥ कम्मदव्ववग्गणमहिकिच्चत्ति ॥ समानजातीय द्रव्याणां राशि र्द्रव्यवर्गणा साचौदारिकादिद्रव्याणां मध्यस्ती त्यतआह—कर्मरूपा द्रव्यवर्गणा कर्मद्रव्याणांवा वर्गणा कर्मद्रव्यवर्गणा तामभिकृत्य तामाश्रित्य कर्मद्रव्यवर्गणासत्काइत्यर्थः कर्मद्रव्याणामेवच मन्देतरानुभावविशेषास्ति न द्रव्यान्तराणा मितिकृत्वा कर्मद्रव्यवर्गणा मधिकृत्येत्युक्तं ॥ अणूचेवबायरावेवत्ति ॥ चैवशब्दः समुच्चयार्थः सतय अणवय बादराय' सूक्ष्माय स्थूलायेत्यर्थः सूक्ष्मत्वं स्थूलत्वं चैषां कर्मद्रव्यापेक्षयैवा वसे यम् नान्यापेक्षया, यत औदारिकादिद्रव्याणां मध्ये कर्मद्रव्याण्येव सूक्ष्माणीति, एवं चयोपचयोदीरणावेदननिर्ज्जराः सूत्रार्थभेदेन वाच्याः

उदीरितायेइयायणिज्जाणा। एक्केक्कम्मिपदम्मि चउव्विहापोग्गलाहोंति ॥ १ ॥ णेरइयाणंभंते कतिविहा पोग्गलाभिज्जंति गोयमा कम्मदव्ववग्गणमहिगिच्च दुविहापोग्गलाभिज्जंति तंजहा अणूचेव बायराचेव १

तेविम। चउव्विहापोग्गलाहोंति। बांधाणा १ बांधीये २ अबांधणा ३ अबांधस्ये ४ एवाररूपमा ॥ चिवे पुद्गलनो अधिकारथको ए अठार सूत्रकहेछे—नेरइयाणंभंते। नारकीने हेभगवन्। कइविहापोग्गला। केतलाप्रकार विशेषप्रकारे करीने ? भिज्जंति। अनुभाग भेदेकरी ने भेदावछे तीव्रम न्दमध्यभेदेकरी भेदपामे पुद्गलभेदपाय इत्यर्थः, उद्वर्त्तन अपवर्त्तन करणथकी मन्दरस तीव्ररसथाय, तीव्ररस मंदरसथाय इतिप्रश्न ? गोयमा। हेगौतम! समान जातीय द्रव्यानो राशिते द्रव्यवर्गणाकहीये तिवा औदारिकादि द्रव्यनेविषे तेमाटे कहेछे—कम्मदव्ववग्गणमहिगिच्चदुविहा। कर्मरूप द्रव्यवर्गणा अथवा कर्मद्रव्यनो वर्गणा ते आश्रीने कर्मद्रव्यनेज मन्दतरानुभावविशेष अन्यद्रव्यांतरनेनथी तेमाटे कर्मद्रव्यवर्गणा अधिकरीने इसकहो ए विधु प्रकारेकरीने। पो ग्गलाभिज्जंति। पुद्गलभेदपामे। तंजहा। तेविम। अणूचेव। अणते सूक्ष्मपुद्गल। बायराचेव। बादरते स्थूलपुद्गलकहीये सूक्ष्मपणुं स्थूलपणुं ए बोते कर्मद्रव्य अपेक्षा

किम्तुचयसूत्रे उपचयसूत्रेच ॥ आहारदव्वग्गमहिकिच्चेति यदुक्तं तत्राय अभिप्राय, शरीर आश्रित्य चयोपचयौ प्राग्व्याख्यातौ, तौचा हारद्रव्येष्वेव भवतो नान्यतो ऽतआहारद्रव्यवर्गणा अधिकृत्ये सुत्तमिति, उदीरणादयस्तु कर्मद्रव्याणामेव भव, अपत त्तत्सूत्रे पूर्व कर्मद्रव्यवर्ग अधिकृत्येति ॥ उवट्टिसुत्ति ॥ अपवर्तितवन्त, इहापवर्तनं कर्मणा स्थित्याद्यध्यवसायविशेषेण हीनताकरण, अपवर्तनस्य चोपलक्षणत्वा दुद्द

णरइयाणन्तेकतिविहापोग्गलाचिज्जंति गोयमा आहारदव्वग्गणमहिकिच्च दुविहापोग्गलाचिज्जंति तंजहा अणूचेव बायराचेव २ एव उवचिज्जंति ३ णेरइयाणन्तेकतिविहापोग्गलाउदीरंति गोयमा कम्मदव्वग्गणमहिकिच्च दुविहापोग्गलाउदीरंति तंजहा अणूचेव बायराचेव ४ सेसायिएवचेव भाणियव्वा । वेइंति ५ णिज्जरंति ६ उयट्टिंसु ७ उयट्टंति ८ उयट्टिस्संति ९ संकामिंसु १० संकामंति ११ संकामिस्संति १२ नि

र्वे वाचना मवलोक्य अपेक्षावशात् उमा ठ ओदारिकादि द्रव्यमाश्रित्य समुद्रव्याणि सूत्रवे । णेरइयाणभंते । नारकोने हे भगवन् ! कइविहा । केतला प्रकार पोग्गलाचिज्जंति । पुद्गल चिणे इतिप्रश्न ? गोयमा । हे गौतम ! इहाए अभिप्राय शरीर आश्रयीने चय उपचय पूर्व व्याख्याने ते चय उपचय आहारद्रव्यनो ज हवे, अवकाशहवे तेहीज कहेछे—आहारदव्वग्गणमहिकिच्च । आहारद्रव्यवर्गणा आश्रयीने अधिकरीने । दुविहापोग्गलाचिज्जंति । बिहुप्रकारे पुद्गल चिणे । तंजहा । तेकहेछे—अणूचेव । अणुकहतां सूक्ष्म चेतलोअन्य १ । बायराचेव । बादर कहतां सूक्ष्म परमाणुपणे इत्यर्थः २ । एवं । इम । उवचिज्जंति । उपचयपणे अहिपामें ३ । णेरइयाणभंते । नारकोने हे भगवन् ! कइविहापोग्गले । केतलेप्रकारे पुद्गल । उदीरेंति । उदीरणापामे इति प्रश्न ? । गोयमा । उत्तर हे गौतम । उदीरणादिक कर्म । कम्मदव्वग्गणमहिकिच्च । दृष्यमेव द्ये तेमाटे कर्म वर्गणा आश्रयीने । दुविहे पोग्गले । बिहुंप्रकारे पुद्गल उदीरणापामे तेकहेछे—अणूचेव । सूक्ष्म । बायराचेव । बादर ४ । सेसावियएवचेव । शेष बाकता समस्तपदोने कहिवरे । भाणियव्वा । कहवा ए इम । वेइंति । वेदे ५ । निज्जरे ति । कर्मनिर्जरा रोग वरचे ते निर्जरणकरीने ६ । उवट्टिंसु । अपवर्तितवत इहां अपवर्तनाते कर्मस्थिति आदिकनूं अध्यवसाय विशेषकरी हीनकरण इहां

तनमपीह पूर्वं, तत्र स्थित्यादि पूर्वं विकरणस्वरूपं ॥ सङ्क्रामेसुत्ति ॥ सङ्क्रमितवन्त, तत्र सङ्क्रमणं मूलप्रकृत्यभिन्नानां मुत्तरप्रकृतीनां मध्यवसायविशे षेण परस्परं मन्यारव, तथाचाह—मूलप्रकृत्यभिन्ना सङ्क्रमयतिगुणत उत्तराःप्रकृतीः नत्वात्मामूर्तत्वा दध्यवसायप्रयोगेण ॥ १ ॥ मपरस्त्वाह मोहूबआउयाउ दसणमोहचरित्तमोहंच । सेसाणंपगइण उत्तरविहिसंकमोनायिव्वं ॥१॥ एतदेव निदिश्यते यथा कस्यचि त्सद्वेद्य मनुभवतो ऽसुभ कर्मपरिणति रेवंविधा जाता, येन तदेव सद्वेद्य मसद्वेद्यतया सङ्क्रामती त्येवं मन्यत्रापि योज्यम् ॥ निधत्तेसुत्ति ॥ निधत्ताम् कृतवन्त, इदय वि भिन्नानां परस्परतः पुद्गलानां निचय कृत्वा धारण कविमुक्तत्वेन निधत्त मुच्यते उद्वर्तनापवर्तनव्यतिरिक्तकरणानां मविषयत्वेन कर्मणो वस्था नमिति ॥ निकाइंसुत्ति ॥ निकाचितवन्तो नितरां बद्धवन्त इत्यर्थः, निकाचनञ्च तथामेव पुद्गलानां परस्परविशिष्टानां मेकीकरण मन्योन्यावगाहि ता, अग्निप्रतप्तप्रतिहन्यमानसूचीकलापस्येव सकलकरणानां मविषयतया कर्मणो व्यवस्थापनमिति यावत् ॥ निच्छतीत्यादि ॥ यदानां सद्गुणी

हृत्तिसु १३ निहृत्तति १४ निहृत्तिस्सति १५ निकाइंसु १६ निकायंति १७ निकाइस्सति १८। सव्वेसुविं

अपरत्तनना उपमयवचनो उत्तम वविषेधू उत्तनाते जिवादिकन् यथारत्। उपदिंसु। जिवादिकन् पोमयरत् अतीतकाले १ उवदेति। जिवादिक जी मनरे वर्तमानकाले २। उपदिस्संति। जिवादिकजीव करसे अनागतकाले ३। संकामेति। मूलप्रकृति अभिन्न उत्तरप्रकृति वीने अध्यवसायविशेषेकरी मां हो मांहि संचारियो संक्रामण कहीये संक्रमाव्यो अतीतकाले।१ संक्रमावि वर्तमानकाले। संक्रमावसे अनागतकाले ११। निहत्तिसु। बांधवा पुद्गलकर्म ने मांहो मांहि निचय करवो एकठा करवो तेहने कठिनपणे निधत्त कहीये अतीतकाले एकठाकीधा १२ निहत्तिति। २ वर्तमानकाले एकठायापेहे निहत्तिस्सति १। ११ अनागतकाले एकठा थापसे। निकायसु ४। १४ निकाचितकर्म जिम सईना गुच्छा अग्निमांहि तपावीने ठपीने तिवारे गाढा कठिनपणेय निकाच्या अतीतकाले। निकायति। निकाचे वर्तमान काले। निकाइस्सति १। १८ निकाचसे अनागतकाले। सव्वेसुविकम्मसव्वसव्वसहि मिच। एवं सर्वसमुच्चयणो अंगीकार करीने कहणो। गाथा। माया। मेदिय। भेदिया। चिया। चिच्चा। उवचिया। पुष्ठोधा। उदीरिया। उदीरि

यथा ॥ नेरइयस्सादि ॥ गाथा गतार्था नवरं अपवर्त्तनसंक्रमनिधत्तनिकाचनपदेषु त्रिविधः कालो निर्देष्टव्य, अतीतवर्त्तमानाऽनागतकालनिर्देशेन तानि वाच्यानीत्यर्थः इह च अपवर्त्तनादीनामिव चेतादीनामपि त्रिकालता युक्ता न्यायस्य समानत्वात् केवल अविवक्षा अ तन्निर्देशः सूत्रे कृतइति अथ पुद्गलाधिकारा दिदं सूत्रचतुष्टय माह ॥ नेरइयाणमित्यादि व्यक्त नवरं ॥ तेयाकम्मत्ताएत्ति ॥ तेजः कार्म्मण शरीरतया तद्रूपतये त्यर्थः ॥ अतीतकालसमयएत्ति ॥ कालरूपः समया नतु समाचाररूपः कालोपि समयरूपो नतु वर्णादिस्वरूपइति, परस्परेण विशेषणा त्कालस समयः अतीत कालसमयो अतीतकालस्य वोत्सर्पिण्यादेः समयः परमनिकृष्टो अंशो तीतकालसमय स्तत्र ॥ पडुप्पन्नत्ति ॥ प्रत्युत्पन्नो वर्त्तमानो नो

कम्मदव्वमग्गणमाहिकिच्च ॥ गाहा ॥ जेदियचिताउवचिता उदीरितावेदियायणिज्जिणा । उव्वट्टणसंकामण णिहत्तणिकायणेतिविहकालो ॥ १ ॥ णेरइयाणंतेजेपोग्गला तेया कम्मत्ताएगिण्हंति तेकिं तीतकालसमए गिण्हंति पडुप्पन्नकालसमएगिण्हंति अणागयकालसमएगिण्हंति गोयमा णोतीतकालसमएगिण्हंति पडु

भावे। दिवाय। वेदिया। निज्जिया। निकया। ववदय। संकमया। सकामय। संकमाया। निहत्तय। समूहकरा। निकायय। निकाया एमपदे ति त्रिविधकालो १। अतीतअनागतवर्तमानरूप त्रिविधकालकहवू। हिवे पुद्गलनो अधिकारथकी एयारसूत्रकहेछे—नेरइयाणंभते। नारकी हेभगवन्! जे पुद्गलतेजाकम्मताए। जेपुद्गल तेजस शरीर तथा कार्मणशरीर तथा कार्मणशरीरें करीने पणेछे एतावता तेजसकार्मण शरीररूप पुद्गल। गिण्हति। ग्रहे। तेकिं। तेसुं अतीतकालरूप समयपणि समाचाररूप नहीं कालनो समय ते परमपणि समयरूपपणि वर्णादिरूपनहीं तेमांहोमांहि वि शेषणो कालसमयइति अतीतकाल ते उत्सर्पिणादिकनो समय ते परमनिकृष्टपण ते अतीतकाल समयनेविषे तेअतीतकाल समयेग्रहेछे। पडुप्पन्न काल समए गिण्हंति। ग्रहेछे। अणागयकालसमए गिण्हंति। अनागतकालसमये ग्रहेछे इतिप्रश्न १। गोयमा। हेगौतम। णोतीतकालसमए। अतीतकालसमये। गिण्हति। ग्रहेनहीं १। पडुप्पन्नकालसमए। वर्त्तमानकाल समये करीने। गिण्हंति। ग्रहे। अणागयकालसमए। अनागत

तातकालेत्यादौ पतीतानागतकालविषयपदप्रतिषेधो विषयातीतत्वा द्विषयातीतत्वञ्च तयो र्विनेष्टानुत्पन्नत्वेना सत्वादिति ' प्रत्युत्पन्नत्वे प्यनिसुगाम् पदाति माम्याम् ॥ गहणसमयपुरक्खडेति ॥ ग्रहणसमयः पुरस्कृतोवर्त्तमानसमयस्य पुरोवर्त्ती येषान्ते ग्रहणसमयपुरस्कृताः प्राकृतत्वा दवं निर्देशो ऽन्यथा पुरस्कृतग्रहणसमया इतिस्यात् गृहीष्यमाणाइत्यर्थः उदीरणाच पूर्वकालगृहीतानामेव भवति ग्रहणपूर्वकत्वा दुदीरणायाः यतउक्त पतीतकालसमयगृहीता नुदीरयन्तीति गृह्यमाणानां गृहीष्यमाणानां चागृहीतत्वा दुदीरणाभाव सातउक्त ॥ णोपडुप्पन्नेत्यादि ॥ वद

प्पन्नकालसमएगिण्हइति णोअणागयकालसमएगिण्हइति १ णेरइयाणंभंतेजेपोग्गला तेयाकम्मत्ताएगहिएउदी रति तेकिं तीतकालसमयगहिएपोग्गलेउदीरंति पडुप्पन्नकालसमयघिप्पमाणेपोग्गले उदीरंति गहणसमय पुरक्खडेपोग्गले उदीरंति गोयमा तीतकालसमयगहिएपोग्गले उदीरंति णोपडुप्पन्नकालसमयघिप्पमाणेपो ग्गलेउदीरंति णोगहणसमयपुरक्खडेपोग्गलेउदीरंति २ एव वेदंति ३ णिज्जरंति ४ णेरइयाणंभंतेजीवाओकिंच

समये करोति । गिण्हंति । गृह्णन्ति । णेरइयाणं भंते । नारकाणां हेभगवन् । जेपोग्गला । येपुद्गला । तेयाकम्मत्ताए । तैजस कार्मणत्वे । उदीरंति । उदीरे । तेकिंतीयकालसमयगहीए । तेक्ष्ं पतीतकालसमये गृहा । पोग्गले । पद्गल । उदीरंति । उदीरे । पडुप्पन्नकालसमए । वर्त्तमानकालसमये । घे प्पमाणे । गृह्यमाणा । पोग्गले । पुद्गल । उदीरंति । उदीरे । गहणसमय पुरक्खडे । गृहणसमयवर्त्ती आगतसमये । पोग्गले उदीरंति । पुद्गलनी उ दीरणाकरे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा । हेगौतम । तीतकालसमय गहीए । पतीतकालसमय गृहीत । पोग्गले । पुद्गलप्रते । उदीरंति । उदीरे । णोपडुप्प न्नकालसमए घेप्पमाणे । वर्त्तमानकालसमये गृह्यमाण वर्त्तता गृहीता । पोग्गले । पुद्गल तेहनी । उदीरंति । उदीरणानकरेनही । णोगहणसमय पुरक्खडे पोग्गले । जेगृहणसमयवर्त्ती पुद्गल आगन्य जेसमय तेहमेविषे गृहसे जेपदगल तेहनी । उदीरंति । उदीरणानकरे । एवं । इम । वेदेंति । वेदे । णिज्जरंति । इमजनिजरे वेदनानिजरा सूत्रेपवि उत्पत्तिएहीज जाणवो । हिवे कर्माधिकारथकी एपण्णसूत्रोनिहेछे—णेरइयाणंभते । नारको हेभ

यथा ॥ नेरइयाइत्यादि ॥ गाथा गतार्था नवरं अपवर्तनसंक्रमनिधत्तनिकाचनपदेषु त्रिविधः कालो निर्देष्टव्यः, अतीतवर्त्तमानाऽनागतकालनिर्देशेन तानि वाच्यानीत्यर्थः इह च अपवर्तनादीनामिव भेदादीनामपि त्रिकालता युक्ता न्यायस्य समानत्वात् केवल मविवक्षया न तन्निर्देशः सूत्रे इत्यवगति अथ पुद्गलाधिकारा दिद सूत्रचतुष्टय माह ॥ नेरइयाणमित्यादि व्यक्तं नवरं ॥ तेयाकम्मत्ताएत्ति ॥ तेजः कार्म्मण शरीरतया तद्रूपतये त्यर्थः ॥ अतीतकालसमएत्ति ॥ कालरूपः समयो नतु समाचाररूपः कालोपि समयरूपो नतु वर्णादिस्वरूपइति, परस्परेण विशेषणा त्काल समयः अतीतः कालसमयो ऽतीतकालस्य चोत्सर्पिण्यादे समयः परमनिकृष्टो यो ऽतीतकालसमय सत्र ॥ पडुप्पन्नत्ति ॥ प्रत्युत्पन्नो वर्त्तमानो नो

कम्मदव्वमग्गणमहिक्किच्च ॥ गाहा ॥ नेरइयचिताउवचिता उदीरितावेदियायणिज्जिणा । उव्वट्टणसंकामण णिहत्तणिकायणेतितियिहकालो ॥ १ ॥ णेरइयाणंभंतेजेपोग्गला तेया कम्मत्ताएगिण्हति तेंकि तीतकालसमए गिण्हति पडुप्पन्नकालसमएगिण्हति अणागयकालसमएगिण्हति गोयमा णोतीतकालसमएगिण्हति पडु

यावे। इवाव। वेदिया। विजिवा। निजरा। उवट्ट। ग्रोमकरा। सकामण। संक्रमाया। निहत्तण। समूहकरा। णिकायण। निकाचना एसवपदे ति विहकालो १। अतीतअनागतवर्त्तमानरूप त्रिविधकालकहवूं। हिवे पुद्गलना अधिकारथको एचारसूत्रकहेछे—णेरइयाणभंते। नारकी हेभगवन्। जे पुद्गलतेयाकम्मताए। जेपुद्गल तैजस शरीर तथा कार्मणशरीर तथा कार्मणशरीरें करीने पणेछे एतावता तैजसकार्मण शरीररूप पुद्गल। गिण्हति। ग्रहे। तेंकि। तेसूं अतीतकालरूप समयपणि समाचाररूप नहीं कालनो समय ते परमपणि समयरूपपणि वर्णादिरूपनहीं तेमाहोमाहि वि शेषणो कालसमयइति अतीतकाल ते उत्सर्पिण्यादिकनो समय ते परमनिकृष्टपण ते अतीतकाल समयकहिये तेअतीतकाल समयेपणेछे। पडुप्पन्न काल समए गिण्हंति। गृहेछे। अणागयकालसमए गिण्हति। अनागतकालसमये गृहेछे इतिप्रश्न १। गोयमा। हेगौतम! णोतीतकालसमए। अतीतकालसमये। गिण्हति। नग्रहेंरे १। पडुप्पन्नकालसमए। वर्त्तमानकाल समये करीने। गिण्हंति। गृहे। णोअणागयकालसमए। अनागतकाल

न्यः गातम नाच नियमा चलितस्स कम्मणो मार्चलितस्येति इह सङ्ग्रहणीगाथा बन्धोदये त्यादि गौविलाया कयन मुदयशब्दे गोदीरणा गृहीतति उक्ता नारकवक्तव्यता अथ चतुर्विंशतिदण्डकक्रमायता मसुरकुमारवक्तव्यतामाह ॥ असुरकुमाराणमित्यादि ॥ तत्रासुरकुमारवक्तव्यता नारकवक्तव्यताव भवा यतः ॥ ठिइऊसासाहारेत्यादि ॥ गाथोक्तानि सूत्राणि ४७ ॥ परिणयचियेत्यादि ॥ गाथागृहीतानि ६ ॥ भेइयचियेत्यादि ॥ गाथा गृहीतानि १८ ॥ यथोदयेत्यादि ॥ गाथागृहीतानि ८। तदव द्विसप्तति सूत्राणि नारकप्रकरणोक्तानि प्रयोविधता असुरादिप्रकरणेषु समानि

णिज्जरेंति ८ ॥ गाहा ॥ बंधोदयवेदोयह संकमणणिहत्तणिकाएसु । अचलियकम्मंतुभवे चलियजीवाउणि ज्जरए ॥ १ ॥ असुरकुमाराणंभंते केवइयंकाल ठिई पण्णत्ता गोयमा जहण्णेणंदसवाससहस्साइंठिई पण्णत्ता

निज्जरै नथि । बांधवानियबंध । अचलितकर्म । णिज्जरेंति । निर्जरेनहीं एपाठसूत्रकहा । इहांगाथा । संग्रहणीगाथाकहेछे—बंधति । नवाकर्मना ग्रहण १ । उदय । उदयतेविपाक वेदनकर्म उदयेआव्यो ते चालव्यो उदयेप्राप्तीये तेउदीरणा २ । वेद । तथा वेदवो ३ । भवइ । अपवर्त्तनादि अध्यवसाय विशेषकरीघणुकरव ते अपवर्त्तन ४ । संकमे । सदेयकर्मते असदेयपणे संक्रमावे ते संक्रामणकहीये ५ । तह । तथा । निहत्त । तीव्रपणा पुद्गलना मांहोमांहि समस्करी बांधवू ते निधत्त ६ । निकाए । तीव्रपणे पुद्गल तेमांहोमांहि निर्बाधपणेकरीबे एनिकाचन जिमसूईनोसमह अग्निसू तपावे सूटी एकीभावकरवाने तिम ए आठमे विषे ७ । अचलियकम्मतभवे । अचलितकर्मबांधे अने आठमो सूत्र निर्जरा । चलिय । चलितकर्म । जीवाओ जीवप्रदेशथकी । णिज्जरए । निर्जराकरे ८ एनारकीनी वक्तव्यताकही ॥ हिवे चउवीस दंडक क्रमागत असुरकुमारनी वक्तव्यता कहेछे—असुरकुमारा ण । असुरनिकायने विषे उपना अने कुमारनी परेक्रीडाते हना देव ते असुरकुमारदेव कहीये, असुरकुमारनो । भंते । हेभगवन् ! केवइयकाल । केतलाकालनो ठिइ पण्णत्ता । स्थिति कही इतिप्रश्न, उत्तर । गोयमा । हेगौतम । जहन्नेणं । जघन्यता । दसवाससहस्साइं । दशसहस्रवर्षनो । ठिइ पण्णत्ता । स्थिति कही । उक्कोसेणंसातिरेगसागरोवम । उत्कृष्टपणोतो एकसागरोपम झाझेरी स्थितिकही ते उत्तरश्रेणीना असुरेन्द्र जे बलीन्द्र, त्यापवो । वली मो

मानिक्ष।सूप्रपो रप्पयँ वोपपत्तिरिति अथ कर्माधिकारादेवेय मष्टसूत्री ॥ नेरइयाणमित्यादि ॥ व्यक्ताथ नवर ॥ ओयाइक्रियलियति ॥ जीवम देशेम्प घलितं सेद्धमवस्थानशील तदितर मचलित तदेव बध्नाति यदाह—कस्तेदेशो ष्पकदे ग्रास्परागादिपरिणतोयोग्य। बध्नातियोगश्रेतो: म मेकोइशाधइवचमस ॥ १ ॥ एव मुदीरणावेदनापवर्तनासंक्रमणनिधत्तनिकाचनानि व्याख्यानि निर्जरातु पुद्गलानां निरनुभावीकृतानां मात्मप्रदेशे

लियकम्मबंधति अचलियकम्मबंधति गोयमा णोचलियकम्मबंधति अचलियकम्मबंधति १ णेरइयाणन्तेजी वाणंकिंचलियकम्मउदीरेति अचलियकम्मउदीरेति गोयमा णोचलियकम्मउदीरेति अचलियकम्मउदीरेति २ एवं वेदेति ३ उयट्टेति ४ संकामेति ५ निहत्तेति ६ णिकायेति ७ सव्वेसु अचलियणोचलियं ॥ णेरइयाणन्ते जीवाणं किं चलियकम्मंणिज्जरेंति अचलियकम्मंणिज्जरेंति गोयमा चलियकम्मंणिज्जरेंति णोअचलियकम्म

भवन् । जीवाणा । जीवप्रदेशपक्षो । विचलितकर्म । पूर्वमूक्त ते । बधति । बधे भवता । भचलियकम्म । जीवप्रदेशयो चल्पूंगको तेकम । मधति । घां वे । इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा । हेगौतम । नाचलितकर्म । तेजसकर्मने यागेकरी चलितकम । बधति । बांधेनहीं । भचलितयकम्म । भचलितकर्म । बंधति बांधे । एसूत्रपहिलोकह्यो १ । नेरइयाणमंते । नारकी हेभगवन् । जीवाणो । जीवप्रदेशयो । विचलितकर्म । चलितकर्मनो । उदीरेति । उदीरणाकरै भचलितकर्म । भवत जीवप्रदेशयो भचलितकर्मनो । उदीरेति । उदीरणाकरे इतिप्रश्न, उत्तर । गोयमा । हेगौतम । नोचलितकर्म उदीरेति । चलित कर्म नो उदीरणा करेनहीं । भचलितकर्म । भचलितकर्मनो । उदीरेति । उदीरणाकरे एबीजोसूत्रकह्यो २ । एवं । इम । वेदेति । वेदे एत्रीजो ३ । उयट्टे ति ४ । हीनकरवा । संकामेति ५ । संक्रमावे । निहत्तेति ६ । धारवो । णिकायेति ७ । निकाचे । सव्वेसु । एसघलेविषे । भचलितं । भचलितकर्मनेविषे चावकिर्त । भचलितकर्म । ईहे पाठमो सूत्रकहेहे—नेरइयाणंभंते । नारकीने हेभगवन् । जीवाणो । जीवप्रदेशयो । किंचलितकर्म । पूर्वचलित कम । णिज्जरेति । निर्जरे । भचलितकर्म । वापचलितकर्म ८ । णिज्जरेति । निर्जरे इतिप्रश्न, । उत्तर । हेगौतम । चलितकर्म । चलितकर्म । णिज्जरेंति ।

गणिव्वत्तिएय । तत्थण जेसेअणाभोगणिव्वत्तिए सेअणुसमयंअविरहिएआहारठेसमुप्पज्जइ । तत्थणजेसेआ भोगणिव्वत्तिए सेजहन्नेणचउत्थभत्तस्स उक्कोसेणसाइरेगस्सवाससहस्सस्सआहारठेसमुप्पज्जइ । असुरकुमा राणन्नं तेकिमाहारमाहारेंति गोयमा दव्वओअणंतपएसियाइंदव्वाइं खेत्तकालभावपन्नवणागमेण सेसजहाणेरइ याण जाव तेणंतेसिंपोग्गलाकीसत्ताएभुज्जोभुज्जोपरिणमंति गोयमा सोइंदियत्ताए सुरूवत्ताए सुवण्णत्ताए इठ

निवर्तितबरीवे ते अनाभोगनिवर्तित कहीये । अणाभोग । अजाणता आहार ते अनाभोगवणो । निव्वत्तिए । निपजों ते अनाभोगनिवर्तित कहिये । तत्थ । तिहांजे आहरमांहे, जामे माक्याबकारे । अणुसमयअविरहिएसे । तेजीव अनाभोग अजाणता आहारनकरे ते अनाभोगनिवर्तित आहार । अणुसमय । ते जीव समयसमय प्रतें । अविरहिए । अविरहितपणा करे तेहने समये २ अनाभोगनिवर्तित । आहारठे । आहारनुं अर्थ समुप्पज्जइ । उपजे । तत्थजेसे । तिहांजे । आभोगनिवत्तिए । आभोगे जाणता आहारनो निवर्तितकरे । सेजहन्नेण । ते जघन्यपणोतो । चउत्थभत्त स्स । चतुर्थभक्तते एक उपवासनो अर्थाते एकदिनेआहारकरो पछे बीजादिन अतिक्रमो चोथेदिनपणो आहारकरे । उक्कोसेण । उत्कृष्टपणोतो । साइरे गस्स । सातिरेकधकार्ड अधिक । वाससहस्स । वर्षसहस्रे । आहारठे । आहारनोवांछा । समुप्पज्जइ । उपजे चतुर्थभक्तते जघन्यस्थिति आयुषोडे अनेसा धिकवर्ष सहस्र ते उत्कृष्टस्थितिआयुषो आयुषो, वली गौतम पूछे—असुरकुमाराणभंते । असुरकुमार हेभगवन् । किमाहार । कांइ आहारप्रत्ये आहारेंति । आहारेपूछे इतिप्रश्न, उत्तर । गोयमा । हेगोतम । दव्वओ । द्रव्यथी । अणंतपएसियाइंदव्वाइं । अनंतप्रदेशात्मक द्रव्यप्रतें आहारे । खेत्तकाल भावपन्नवणागमेणं । क्षेत्रकाल भावथी जिम श्रीप्रज्ञापनासूत्र अठावीसमा चौथाउपांगमाहे कह्युं छे — तिम विचारवा । सेस । शेष वाकता । जहा । जि म । णेरइयाण । नारकीने पूर्वकह्या विचार तिम इहांपणि करवो । जाव । यावत् । तेणं । तेकारणथको । तेसिं । तेअसुरकुमारदेवताने । पोग्गला । पुद् गल । कीसत्ताए । केहीपणे । भुज्जोभुज्जो । फिरीफिरी वारवार । परिणमंति । परिणमे पूछताय । इतिपृच्छा, उत्तर । गोयमा । हेगोतम । सोइंदियत्ताए

मवरं विशेषोयं ॥ उक्कोसेणं साइरेगं सागरोवममिति ॥ यदुक्तं नीइलिसभ्यं असुरकुमारराज मात्मित्योर्क यदाह—चमर १ बलि २ सार १ माहियं १ तिसत्तरयोवावति ॥ सहाना लावाना मुपरी तिगम्यते सोमसवर्ं चेय मापशते—हृष्टस्सअणवगल्लस्स निरुवकिठस्सजंतुणो ॥ एगेऊसासयी सास एसयाणुतिवुश्चइ ॥ १ ॥ सत्तपाणूकिसथोवे सत्तथोवाणिसेलवे । लवाणसत्तहत्तरिए एसमुहुत्तवियाहिएत्ति ॥ २ ॥ इह जघन्य मुच्छ्वासादि त ज्जघन्यस्थितिकाना मित्या वगन्तव्य मुत्कृष्ट मोत्कृष्टस्थितिकाना मित्येति ॥ पचत्यजत्तरपति ॥ चतुर्यजक्त मित्येकोपवासस्य सञ्ज्ञा ततः सास्यो

उक्कोसेणंसाइरेगंसागरोवम । असुरकुमाराणंभंते केवइयकालस्सआणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नी ससंतिवा । पुच्छा । गोयमा जहन्नेणंसत्तण्हंथोवाणं उक्कोसेणंसाइरेगस्सपक्खस्सआणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा । असुरकुमाराणंभंतेआहारट्ठी हंता आहारट्ठी । असुरकुमाराणंभंते केवइयकाल स्सआहारट्ठेसमुप्पज्जइ गोयमा असुरकुमाराणंदुविहे आहारे पण्णत्ते तंजहा आभोगणिव्वत्तिएय अणाभो

तमपूर्छहे । असुरकुमाराण भंते । असुरकुमार हे भगवन् । केवइयकालस्स । केतलेकाले । आणमंतिवा । सासोसास लेमूके ॥ । पुच्छा । इसीमप्रश्नको था तिवारे भगवंतकहे । गोयमा । हे गोतम । जहन्नेण । जघन्यथकी । सत्तण्हं थोवाण । सातेस्तोके एजघन्यस्थिति भावनीवकह्यं ॥ रोगरहित पुरुषने सा ते सासासासे एक स्तोक कहीये । उक्कोसेण । उत्कृष्टथको ना । साइरेगस्सपक्खस्स । एकपक्षमाझेरे । आणमंतिवा । सासोस्वासलेवे उत्कृष्टस्थिति भा वी जांणवा ॥ । असुरकुमाराण भंते । असुरकुमारदेवता हे भगवन् । आहारट्ठी । आहारार्थी भोज्यवांछकछे आहारनो मनकहीये प्रयोजनछे जेहमेते आहारार्थी कहीये । इतिप्रश्न, उत्तर । गोयमा । हंता । कोमलानुभाव । आहारट्ठी । आहारना अर्थीवांछकछे, वली गोतमपूछेछे—असुरकुमाराणंभंते । असरकुमारने हे भगवन् । केवइयकालस्स । केतलेकाले । आहारट्ठे । आहारनोअर्थ । समुप्पज्जइ । उपजेतिवारे भगवंतवाच्या—गोयमा । हे गोतम । असुर कुमाराण । असुरकुमार देवताने । दुविहे । बेप्रकारनो । आहारे । आहार । पण्णत्ते । कह्यो । तंजहा । तेकहेछे—आभोगनिव्वत्तिएय । जाणता जेआहारकरी

तरकहि म मित्या यमयं यटाइ-दाहिवदिगअ्छरसियं शीटमुपुतरिताबमिति ॥ मुहुतपुहुत्तस्मति ॥ मुहूत उत्ता नवबएव पृथमातु हिमचति रा

यमा जहणणसत्तरहयोयाण उक्कोसेणमुहुत्तपुहुत्तस्सआणमतिवा पाणमतिवा ऊससतिवा नीससतिवा । णागकुमाराणन्नतआहारठी हता आहारठी । णागकुमाराणन्नतेकेवइयकालस्सआहारठेसमुप्पज्जइ गोयमा णागकुमाराणदुविहेआहारेपन्नते तजहा आभोगणिव्वत्तिएय अणाभोगनिव्वत्तिएय । तत्थणजेसेअणाभोग

नागकमाराणभते । नागकमारदेवने हेभगवन् । केवइयकालस्सआणमतिवा ४ । केतलेकाले सासोसास हुवे इतिप्रश्न, उत्तर । गायमा । हेगोतम । जघ न्नसमसत्तवारथावाण । जघन्य सात स्तोक सासोसास आवेश जघन्यस्थिति पाम्यऊने । उक्कोसेणमुहुत्तपुहुत्तस्सआणमतिवा ४ । उत्कृष्टथको तो बेथीसवे तिहमर सासोसास एक मुहुर्त ते पृथक्त्वे बेथको मांडी नवतार सम्यामिमेयनो सिद्धांतमांहे पृथक्त्व सप्ताहे ए उत्कृष्ट स्थितिनावयोने हुवे, वली गौत म पूछे—नागकमाराणभते । नागकुमारने हेभगवन् । आहारठो । आहारनी वांछाछे ? हंता । जिम तू कहे ते तिमज इसे मर्वे हंता इहां कहीयेछे आहारठो । आहारनीवांछा वली गौतम पूछेछे—नागकुमाराणभते । नागकमारने हेभगवन् । केवइयकालस्सआहारठे । केतलेकाले आहारनी इच्छा समुप्पज्जइ । जपछे इसे पूछ्यांथका उत्तर । गोयमा हेगोतम ! नागकमाराण दुविहे आहारे पन्नत्ते । नागकुमारने बिभेदे आहार कह्यो । तजहा । ते कहेछे—आभोगनिव्वत्तिएय । पर्याप्ता मनसायें तथावाभ्यावे जाणता आहारकरे ते आभोगनिवर्तित । अणाभोगनिव्वत्तिएय । अपजवाने समये अ पर्याप्ता मनसायें मनना जाणता आहारकरे ते अनाभोगनिवर्तित । तत्थणजेसेअणाभोगनिव्वत्तिए । तिहां जे अनाभोगनिवर्तित आहारकरे । सेअणु समयअविरहिए । तेजीव समय समय प्रतें अविरहितपणा करे निरंतरकरे । आहारठे । ते अविच्छिन्नपणे निरंतर आहाराभिलाष । समुप्पज्जइ । उप जे । तत्थण जेसे आभोगनिव्वत्तिए । तिहां जे आभोगनिवर्तित आहार करे । सेजहन्नेण चउत्थभत्तस्स । ते जघन्य चतुर्थभक्त एकांतरे आहारनी इच्छा ऊपजे । उक्कोसेण दिवसपुहुत्तस्स । उत्कृष्टथकोतो दिवसपृथक्त्वे बेथीमांडी नवतार पृथक्त्व कहीजे तेनसे । आहारठे समुप्पज्जइ । आहारनी इच्छा ऊ

त्ताए इच्छियत्ताए अभिज्झियत्ताए उड्ढत्ताए णोअहत्ताए सुहत्ताए णोदुहत्ताए भुज्जोभुज्जोपरिणमंति । असु
रकुमाराणन्नंते पुव्वाहारियापोग्गलापरिणया असुरकुमाराभिलावेण जहाणेरइयाणं जावचलियकम्मंणिज्जरेंति२
णागकुमाराणन्नंते केवइयकालठिइपण्णत्ता गोयमा जहण्णेणंदसवाससहस्साइंठिइंपण्णत्ता उक्कोसेणंदेसूणाइंदो
पलिउवमाइं । णागकुमाराणन्नंते केवइयकालस्सआणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा । गो

वांछे करीविशेष पनाभिलाषमात्र जोमिलवा । सुरूपत्ताए । सर्वोत्कृष्ट मनोहररूपेकरो । सवचत्ताए । सर्वोत्कृष्ट मनोहरवर्णेकरो । इट्ठत्ताए । सवभगा
पोनसुखकारि पवावणो । इच्छियत्ताए । ईपितेंकरी वस्तु सवसुखोपजावी । अभिज्झियत्ताए । वारवाररसोईवयाय तीभवारसीवांछाये । उड्ढ
ताए । ऊंचावे तेहदेन प्रमानप्रवो । णोअहत्ताए । अधोभवोनाकमपवें नारकोनीअपेक्षाये । सुहत्ताए । सुखभावे मनुष्यनी अपेक्षाये । णोदुहत्ताए ।
नही दुःखकरो सवमनसावनपयावणो । भुज्जोभुज्जोपरिणमंति । वारवार परिणमें भयातावें नमो
नवे नवो गौतमपूछेछे—असुरकुमाराणन्नंते । असुरकुमारने हेभगवन् । पुव्वाहारियापोग्गलापरिणया । पूर्वपहेला पुद्गल पुष्ट अपुष्टरूप ते परिणया
उदयआया । असुरकुमाराभिलावेणं । असुरकुमारनां आलापनेविषे । जहाणेरइयाणं । जिम नारकोने आलावें पूर्वकह्यूं तिम असुरकुमारने विषे पणि
कहवं जाव यावत् चोथसेमकी । चलियकम्मंणिज्जरेंति । चलितकर्म निर्जरे अथवारे इहाय, ए असुरकुमारनी वक्तव्यता कही । हिवे नागकुमारनी
वक्तव्यता पूछेछे—णागकुमाराणं भंते । नागकुमारदेवने । हेभगवन् । केवइयंकालंठिइपण्णत्ता । केतले कालनी स्थिति कही ? ईमे प्रश्नकीधे उत्तर
भगवान बोल्या हेगौतम । जहण्णेणंदसवाससहस्साइं । जघन्यथकी दश सहस्र वर्षनी । ठिइंपण्णत्ता । स्थिति कही ए सामान्यदेवनी अपेक्षायें । उक्कोसेण
देसूणाइं दोपलिओवमाइं । उत्कृष्टथकी देसेऊणा दोय पल्योपमनीस्थिति एह उत्कृष्टस्थिति उत्तरश्रेणीना इन्द्रभाश्रयी जाणवो   वली गौतम पूछेछे—

गरपुढवी २२ । एगंपारसमचोदस मोलमअठारनायोसति ॥ १ ॥ वमायाएसि ॥ विपमा विविधाधा मात्रा कानविमामो विमात्रा तया इतमुक्त नयति ग्रिपमकासा पृथिवीकायिकाना मुच्छामादिक्रिया इयत्कासा विति म निरूपयितु मक्यत ॥ जहानेरइयाणमित्यतिदेशात् ॥ ऐसठं पसस्रे उत्तरममो गाहारं मानत्ं भयपरठिइयाव इत्यादि ॥ वृत्य ॥ निव्वाघाएणं छद्दिसिमिति ॥ व्याघात माहारस्स लोकान्तनिष्कुटेपु सम्भवति मान्यत्र ततो निकटव्यो व्यव पदसु दिशु यम यतसपु पुर्वादिदिपु अनु मपथ पुद्गलग्रहणं करोति तस्य स्थापना ॥ वाघायमपुडुपति ॥ व्याघात ममती त्यव्याघातम निष्कुटेषु तत्र ॥ सियतिदिसिमिति ॥ स्यात्पदाधिनिसपु दिशु माहारग्रहण स्यवति, कम यदा पृथिवीकायिको ऽधस्तने उपरितनेवा

ससतिया नीससतिवा गोयमा वेमायाए आणमतिवा पाणमतिवा ऊससतिवा नीससतिवा । पुढवि काइयाण न्नतेआहारठी हंतागोयमा आहारठी । पुढविकाइयाणन्नतेकेवइयकालस्स आहारठे समुप्पज्जइ गोयमा अ णुसमयअविरहिए आहारठे समुप्पज्जइ । पुढविकाइयाणन्नतेकिमाहारमाहारेंति गोयमा दव्वओजहाणेरइयाणं

पृथिवीकायना एतमिश्राने सासाम्वास पहमा करो सवोये नथी ॥ वली गौतम पूछे छे । पुढविकाइयाणभंते आहारठी । पृथिवीकायना जीवने हेभ गवन् । आहारनीइच्छा छे ? भगवंत कहेछे—हंतागोयमा आहारठी । हांगौतम पृथिवीकायया आहारना अर्थी छे । पुढविकाइयाणं भंते केवइय । पृ थिवी कायना जीवने हेभगवन् । केतला । कालना आहारने समुपजवा । कालि आहारनी इच्छा उपजे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा अणुसमय अविरहिय अणुसमये सातत्यपणे अविरहित निरंतरे । आहारठे समुपज्जइ । आहाराभिलाष उपजे । पुढविकाइयाणं भंते । पृथिवीकायना जीव हेभगवन् । किमाहार माहारेंति । स्यं आहार आहारे ए इत्यं इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा द्रव्यथीजेम नेरइयाण । हेगौतम । द्रव्यथी जिम नारकीमे पूर्वेकह्यो तिम इहांपणि जाणवा । निव्वाघाएण छद्दिसिमाहारयएजम । व्याघात आहारनो लोकांतनिष्कुटनेविषे संभवे पोलेसामवे नहीं तेमाटे लोकमा निष्कु टठामो दोजेमानजे छदिसिना आहारपुगले जिम पूर्वादि ४ ऊर्ध ५ अधो ६ एव छदिसिनो पुद्गलग्रहण करे व्याघातप्रमाणो लोकांतमे सूचे । सिय

भवन्य: सङ्गाविशेष: समयेमवित् ॥ एवं सुवर्णकुमाराणामिति ॥ नागकुमाराणामिव सुवर्णकुमाराणामपि स्थित्यादि वाच्य । इदञ्च किंपर्यन्त यावद्वाच्य मित्याह ॥ यावत्स्तनितकुमाराणामिति ॥ यावत्करणात् विद्युत्कुमारादिपरिग्रह यथा चैतावक्रमो यसैव—असुरा १ नाग २ सुवर्णा ३ विज्जू ४ अग्गी ५ दीव ६ उदहीय ७ । दिसि ८ वाऊ ९ थणियाविय १० दसभेया भवणवासीण ॥१॥ अथ भवनपतिप्रकरणानन्तर दण्डकक्रमादेव पृथिव्यादीना स्थित्यादि निरूपयन्नाह ॥ पुढवीत्यादि ॥ अत्र भावनस्पतिसूत्रा अवर ॥ अतोमुहुत्तसि ॥ मुहूर्तस्या त: रन्तर्मुहूर्त भिन्नमुहूर्तमित्यर्थ: ॥ उक्को सेण बावीस वाससहस्साइति ॥ यदुक्त तत् खरपृथिवी माश्रित्या वगन्तव्य यदाह—सण्हाय १ सुद्ध १२ वालुय १४ मणोसिला १६ सक्कराय १८

णिव्वत्तिए संखुणसमयअविरहिएआहारठेसमुप्पज्जइ तत्थणजेसेआभोगणिव्वत्तिए सेजहणेणचउत्थभत्तस्स उक्कोसेणदिवसपुहत्तस्सआहारठेसमुप्पज्जइ सेसजहा असुरकुमाराणं जाव चलियकम्मंणिज्जरेंति ॥ एवं सुवण्णकुमाराणवि जाव थणियकुमाराणंति ॥ पुढविकाइयाणंभंते केवइयकालंठिईपण्णत्ता गोयमा जहण्णेणअं तोमुहुत्तं उक्कोसेणबावीसवाससहस्साइं । पुढविकाइयाणंभंतेकेवइयकालस्सआणमंतिवा पाणमंतिवा ऊ

पजे । मम जथा । बावना मर्व जिम । असुरकुमाराव । असुरकुमारने कह्या तिमसघलकहवो । जाव चलित कर्म । यावत् चलितकर्म । निर्जरेंति । नि र्जरे अवकरे रहत । एव सुवर्णकुमारावपि । इम सुवर्णकुमारनेपणि कहवा । जावथणियकुमाराणंति । यावत् स्तनितकुमार तांइ कहवो । ए भुवन पतीनो अधिकार कह्यो । हिवे दण्डकक्रमागत पृथिवीनो अधिकार कहेछे—पुढविकाइयाणं भंते । पृथिवीकायनी हेभगवन् ! केतलाकालनीस्थिति कही रतिमध्य । उत्तर । गोयमा जहन्येण अन्तर्मुहूर्त । हेगौतम ! जघन्यथको अन्तर्मुहूर्त । उक्कोसेणबावीस वाससहस्साइं । उत्कृष्टथको बावीसहजारवर्ष पर्यन्त पृथिवीकायनोआउखो कह्यो । पुढविकाइयाणंभंते । पृथिवीकाय हेभगवन् ! केतलाकालनेअंतरे आणमंतिवा । केतलेकाले सासोश्वास ल्ये मूंके इसे गौतम पूछ्यो थका भगवन्त उत्तर कहेछे—गोयमा वेमायाए आणमंतिवा ४ । हेगौतम ! जेहनो सासोश्वासनो मर्यादानथी विविध मात्रा काल विभाग एतले

गरपुरुषी २२ । मगधारमचोदस गौतमप्रकारयावोधार्ति ॥ १ ॥ वेमायाएति ॥ विषमा विविधाया मात्रा कालविभागो विमात्रा तया यदमुक्तं भवति विषमकाला पृथिवीकायिकाना मुच्छ्वासादिक्रिया इयत्कालास्थिति न निरूपयितु शक्यत ॥ बहानेरइयाणमित्यतिदेशात् ॥ सेसठ मसंखे ज्जसमओ गाहारे कालठं भवसरठिईयाए इत्यादि ॥ दृश्य ॥ निव्वाघाएणं छद्दिसिंति ॥ व्याघात माहारस्य लोकान्तनिष्कुटेषु सम्भवति नान्यत्र ततो निष्कटम्यो ऽन्यत्र यद्स्तु दिक्षु षट् पतसपु पूर्वादिदिषु ऊर्ध्व मधश्च पुद्गलग्रहण करोति तस्य स्थापना ॥ वाघायंपडुच्चति ॥ व्याघात मप्रती त्यव्याघातम निष्कुटु तत्र ॥ सियतिदिसिंति ॥ स्यात्कदाचित्तिसृषु दिक्षु भाहारग्रहण भवति, कथं यदा पृथिवीकायिको ऽधस्तने उपरितनेवा

ससतिवा नीससतिवा गोयमा वेमायाएश्राणमतिवापाणमतिवा ऊससतिवानीससतिवा । पुढविकाइयाण न्नतेश्राहारठी हंतागोयमा श्राहारठी । पुढविकाइयाणन्नतेकेवइयकालस्सश्राहारठेसमुप्पज्जइ गोयमा श्र णुसमयश्रविरहिएश्राहारठेसमुप्पज्जइ । पुढविकाइयाणन्नतेकिमाहारमाहारेंति गोयमा दव्वठंजहाणेरइयाणं

पृथिवीकायाने पतलेकाल सासश्वास पश्वा नहीं सबोधे नहीं ॥ वली गौतम पूछेछे । पुढविकाइयाणंभते आहारठी । पृथिवीकायना जीवने हेभ गवन् । आहारनोइच्छा छे ? भगवत कहेछे—हंतागोयमा श्राहारठी । हांगोतम पृथिवीकायना आहारनो अर्थीछे । पुढविकाइयाणं भंते केवइय । पृ थिवी कायना जीवने हेभगवन् । केतल । कालमां आहारठे समुपज्जइ । वांछे आहारनोइच्छा उपजे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा अणुसमयं अविरहिए अणुसमये सातत्यपने अविरहित निरंतरे । आहारठे समुपज्जइ । आहाराभिलाष उपजे । पुढविकाइयाणं भंते । पृथिवीकायना जीव हेभगवन् । किमाहार माहारेंति । स्य आहार आहारे ए इसय इतिप्रश्न उत्तर । गायमा दव्वओजहा नेरइयाणं । हेगोतम । द्रव्यथी जिम नारकोने पूर्वकह्यो तिम इहांपणि जाणवा । निव्वाघाएण छद्दिसिआहारपदमं । व्याघात आहारना व्याघातनिष्कुटनेविषे संभवे लोकेस्थानके नहीं तेमाटे लोकना निष्कु टटालो लोकेस्थानके छद्दिसिना आहारलेवेते जिम पूर्वादि ४ ऊर्ध्व ५ अधो ६ एम छद्दिसिनो पुद्गलग्रहण करे व्याघातपायो लोकांतने सूचे । सिय

कोचे वस्थित स्या तदा त्यक्ता दसीकः पूर्वदक्षिणयो रालोक इत्येव तिसृषा मलोकेना सुतस्था तदन्य सु तिसृषु पुद्गलग्रहण मेवमुपरिस्तनकोणे पि वाच्य यदा पुन रथ उपरि चालोको भवति तदा यतसृषु दिशु यदाद् पूर्वोदीना पक्षो दिशा मन्यतरस्या मलोकोनवति तदा पञ्चस्वि ति ॥ वासहंवण्णकाइति ॥ इह वर्णादयो कृष्णाद्याः स्पर्शा दृश्यया ॥ संमतहंचति ॥ शप ज्ञपितावसर्प तथव, यथा नारकाणा तथा पृथिवी कायिकानामपि तथह ॥ आह भंत सुक्खाई आहारेंति ताइ कि पुठाइ अपुठाइ अइ पुठाइ किं ठंगाढाइ इत्यादि ॥ नाणतसि ॥ नानात्व भेदः पुनः पृथिवीकायिकानां नारकापेक्षया शार प्रतीद यथा ॥ कडजागमित्यादि ॥ तत्र ॥ फासाइतिसि ॥ स्पर्श कुर्वन्ति स्पर्शयन्ति स्पर्शेन्द्रि

गिह्याघाएणछदिसियाघायपडुच्च सियातिदिसि सियचउदिसि सियपचादिसि वण्णउ कालनीलपीयलोहियहा लिद्दसुक्किलाण गधउ सुब्भिगधदुब्भिगधाइ रसउ तित्ताइ फासउ कक्खडाइ ८ । सेसतहेव णाणत्त कइभाग

तिदिसि । कदाचित् तीन दिशना आहारले विचारविचारे पृथिवीकायना जीव लोकन तवाअपरलेकूंन खणले तिवारे जीवे अलाक पूर्वादि दिदि सि अलाक हुवे तिवारे तीनदिशिनो आहारले तथा । सियचउदिसिसियपचदिसि । अपरे तथा जीवे पर्नीव मदुवे तिवारे चारदिशिनो आहार ले तथापि वदिगमादिको घनेरी एकदिशें अलाकहुवे तिवारे पंचदिशिना आहारले जिहां व्याघात निम्फुटहुवे तिहां विचारो भवनाकरवो । वण्ण आलमोलपीयलोहियहालिद्दसुक्किलाण । पृथिवी कायना पचवर्ण तेकहेछ—वर्णतोकाला आहारतुण्य १ नीला नीलवर्णसरीषा २ पीला मयव सरीषा ३ लाहित कुमकुमवर्ण सिसरीषा ४ शुक्लस्फटिक रत्नादिक सरीषा ५ पचप्रकारे पवलआहारे । गंधघासुब्भिगंध २ । गधथको सुगंध १ दु र्गंध २ वेहप्रकारे आहारे । रसआतित्ताइ ५ । रसथो तितादि पांच सूंठ आदिदेइ तेनीपरे । फासघावकक्खडाइ ८ । स्पर्शथो करो कर्कश आदिदे स्पर्शवत आठेगृहवा । सेसंतहेव आवत्त । वाकाथो शेष नारकीनीपरे जांणवा एतलाविशेष आहारयाको पछ । कइभाग आहारेंति । केतलाभाग आहारें । कइभाग फासाइति । केतला भाग आस्वादे इतिमग उत्तर । गोयमा । हेगोतम । असखेज्जइभाग आहारेंति । पवमको असख्यातमो भा

येषाहारपुद्गलाना कतिभागं स्पृशन्तीत्यर्थः, अथवा स्पर्शेना स्वादयन्ति, प्राकतदीस्या कासायन्ति स्पर्शेनवा घारदति गृह्ण स्मुपसन्नगताहति फासाईति ॥ इद मुक्त भवति यथा रसनेन्द्रियपप्राप्तिविषयात्मका रसनेन्द्रियद्वारेण हारसुपभुञ्जाना आस्वादयन्तीत्यपदिश्यते, एव मेते स्पर्शेने न्द्रियद्वारेणेति ॥ ससंज्ञानेरइयाणंति ॥ सर्वेष ॥ पुढविकाइयाणंभंते ! पुढवाहारियापोग्गला परिणया इत्यादि ॥ प्राग्वत् व्याख्येयमिति ॥ एवं जाव वणस्सइकाइयाणंति ॥ अनेन पृथिवीकायिकसूत्रमिवा प्कायिकादि चत्वारि सूत्राणि समानी सुक्त, स्थितौ पुन विशेषो तत्त्वाह नवर ॥ ठिई जवमग्रा आउस्सति ॥ तत्र जघन्या सर्वेषा मन्तर्मुहूर्त मुत्कृष्टा त्वपां सप्तवर्षसहस्राणि, तेजसां महोरात्रत्रय वायूनां त्रीणि वर्षसहस्राणि वनस्पतीना

आहारेंति कइभागफासाइंति गोयमा असंखेज्जइभागआहारेंति अणंतभागफासाइंति । जाव तेणपोग्गला कीसत्ताएभुज्जोभुज्जोपरिमंति । गोयमा फासिंदियवेमायाएभुज्जोभुज्जोपरिणमंति सेसजहाणेरइयाण जाव णोअचलियकम्मणिज्जरेंति एवंजावयणस्सइकाइयाण णवर ठितीयजेतस्स जाजस्स उस्सासोवेमायाए येइ

ग एतावता मतिसूत्र स्वाम पाधारे । असंतभाग फासाविति । अनंतभाग असख्यातावशो पनि प्रतिसूक्ष्मतर समयत पुद्गलापत आहारकरे । जाव तेष तेमिपोग्गला कीसत्ताए भुज्जो २ परिणमति । यावत् तेपृथिवीकायिक कोणने पदस्य विसोरीते वार वार परिणमें पवोवासे इतिप्रश्न । उत्तर । गों यमा । हेगौतम । फासिंदिय । स्पर्शेन्द्रिये पहिल्मोपे । वेमायाएभुज्जो २ परिणमति । विषममात्रा अथवा विविधमात्रा कालविभाग तिर्यकरी एत मे मर्यादा पढोनताव इम वारवार परिणमे । सेसजहाणेरइयाण । कह्यांवो बाकता जिम नारकीने कह्या तिम जाणवुं तेहम । पुढविकाइयाण भंते पुढवाहारिया पोग्गला परिणया । इत्यादि निर्जरातांइ । जाव णो अचलियकम्म णिज्जरेंति । यावत् नहीं ओविवो अचलितकर्म निर्जरे अथवारे पदवातो २ कहवा । एवंजावयणस्सइकाइयाण णवर ठितीयजेतव्वा । इम पृथिवी सूत्रनोपरे अप्कायादिक चारिसूत्र सरीषा कहवा यावत् वनस्पतीकाय लगे एतलाविशेष स्थितिने विषे भेदकहवा तेकहेवे—तिहां जघन्यता सघलो अन्तर्मुहूर्तनो स्थितिछे अने उत्कृष्टीतो अप्कायनो सातसहस्रवर्ष ते

दशेति, उक्तश्चैव पृथिव्यादिक्रमेण—बावीसा सहस्सा१ सत्तसहस्साई २ तिण्णिहोरत्ता ३। वाएतिण्णिसहस्सा ४ दसवाससहस्सियारुक्खत्ति १॥१॥ बेइंदियाणठिइत्तिविढवडसासोवेमायाएत्ति॥ वक्तव्य इतिशेषः स्थितिश्च द्वीन्द्रियाणां द्वादशवर्षाणि द्वीन्द्रियाणां आहारसूत्रे, यदुक्त—तत्थणजे से आभोगनिव्वत्तिए॥ सेण असंखेज्जसमइए अंतोमुहुत्तिए वेमायाए आहारट्ठे समुप्पज्जइत्ति॥ तस्या यमर्थः, असङ्ख्यातसामयिक आहारकालो भवति, यथा चक्षुरिस्पादिरूपो पसी त्यत उच्यते, आन्तर्मौहूर्त्तिक तत्रापि विमात्रयान्तर्मुहूर्त्तस्यासङ्ख्यातत्वस्या सङ्ख्येयभेदत्वा दिति॥ बेइं

दियाणठितीनाणियव्वा ऊसासोवेमायाए। बेइंदियाणआहारेपुच्छा अणाभोगनिव्वत्तिएतहेव। तत्थणजेसे आभोगनिव्वत्तिए सेणअसंखेज्जसमइए अंतोमुहुत्तिएवेमायाए आहारट्ठेसमुप्पज्जइ सेसंतहेव जाव अणंत भागआसायंति। बेइंदियाणंतेजेपोग्गलेआहारत्ताएगेण्हंति तेकिंसव्वेआहारेंति णोसव्वेआहारेंति गोयमा

उत्तारनो तोन सहारादि बाउकायनो तोनसहसवप वनस्पतीकायनो दससहसवप पृथिवीआदिकेइ पांचेइनो भेदो स्थिति कहेछे—बावीसाइसह स्सा १ सत्तसहस्साइ २ तिण्णिहोरत्ता ३ वाएतिण्णिसहस्सा ४ दसवाससहस्सियारुक्खा। बेइंद्रियानीस्थितीभाणिवव्वा। पंचवादरनो वक्तव्यताकहो। द्वि वे बेइंद्रियादिकहेछे—बेइंद्रीनो स्थिति बारेवरसनो कहनो। उ सासवेमायाए। सासो सासपणि मर्यादा रहितजोव। बेइंद्रियाने आहारे पुच्छा। अणाभोगने आहारनो पृच्छा आहारनो अप्रयोगो। अणाभोगनिव्वत्तिए कहेइ। अवांछता आहार करेते योमाहारनो अपेक्षायेकथं अंन्यथा ओजा हार तो समयाइमेंइ ताअमोधं कहनो। तत्थण जेसे आभोगनिव्वत्तिए सेणअसंखेज्जसमइए। तिहांजि के आहारयके तेअसंख्यातसमयिक आहारका मइने तेमा अतमध्यिहोवालगदि असंख्यात समयिकाछे तेमाटेकहेछे—अंतोमुहुत्तिएवेमायाए आहारट्ठेसमुप्पज्जइ। तिहांपणि वेमायायें अंतर्मुहूर्तने वि षे समय असंख्यात एकेकरी। सेसंतहेव। सेषथाकतो तिमहीजकहवो। जावअणंतभागंआसायंति। यावत् पूर्वोक्तसवकहवो अनंतमाग आस्वादेताव गें कहवो। बेइंद्रियाभते जेपोग्गले आहारत्ताए गिण्हंति। बेइंद्रिय भगवन्। जेपुद्गल आहारपणे ग्रहे जाव। तेकिं सव्वेआहारेंति। तेसर्व

दियाणं दुविहे आहारे पन्नत्ते लोमाहारे पक्खेवाहारेयत्ति ॥ तत्र लोमाहारः स्वल्पोपेतो वर्षादिषु यः पुद्गलप्रवेशः समूत्रादवगम्यतइति, प्रक्षेपा हारस्तु कावलिक स्तत्र प्रक्षेपाहारे कवलो ऽस्पृष्टाश्च शरीरा दस्तबहिश्च विध्वसन्ते त्वीस्पर्शाल्यात्म्यां, अतएवाह ॥ जे पोग्गले पक्खेवाहार त्ताए गेण्हंतीत्यादि ॥ अणेगाइंचणं भागसहस्साइंति ॥ अनन्तभागा इत्यर्थ ॥ अणासाइज्जमाणाणंति ॥ रसनेन्द्रियतः ॥ अफासाइज्जमाणाइंति स्पर्शनमिन्द्रियतः ॥ कयरेत्यादि ॥ यत्पदं तदेवं दृश्यम् ॥ कयरेकयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावत्ति ॥ अयन्त्व ॥ चतुर्त्योधापो

बेइंदियाणदुविहेआहारेपन्नत्ते तंजहा लोमाहारेयपक्खेवाहारेय जेपोग्गलेलोमाहारत्ताएगिण्हंति तेसव्वेअप रिसेसिएआहारेंति जेपोग्गलेपक्खेवाहारत्ताएगिण्हंति तेसिणंपोग्गलाणंअसंखेज्जइभागआहारेंति अणेगाइंच णंभागसहस्साइंअणासाइज्जमाणाइं अफासाइज्जमाणाइं विद्धंसमावज्जंति एएसिणंभंतेपोग्गलाणंअणासाइज्ज

पुनम आहारे। बालम्ब आहारंति। किया सब आहारमयी इत्यादि उत्तर। गौतम। हेगौतम। बेइन्द्रियने दुविहे आहारे पन्नत्ते तंजहा। बे इन्द्रिने स्पर्श रसना बेप्रकारे आहार कहा तेकहे—लोमाहारेय पक्खेवाहारेय। लोमाहार प्रक्षेपाहार तिहांलोमाहार जिहे रोमकूपवडे वर्षादि कालने विषे जेपुद्गलप्रवेश होय तेसूत्रमध्ये प्रक्षेपाहारते कवलरूप तिहां प्रक्षेपाहारनेविषे घणा अपपरमाणुवडा जेशरीरथकी माहि तथा बाहिर विध्वंसपामे सूत्र सूक्ष्मतो अतएव आह—जेपोग्गले इत्यादि। जेपुद्गल लोमाहारपणे ग्रहेछे। तेसव्वेअपरिसेसिए आहारेंति। तेसर्व अपरिशेष आहारे समस्तना भक्षणकरे। जेपोग्गलेपक्खेवाहारत्ताए गिण्हंति। प्रक्षेपाहारते कवलाहार जेपुद्गल प्रक्षेपाहारपणे ग्रहेछे। तेसिणं पोग्गलाणं असंखेज्जइभाग आहारेंति। तेह पुद्गलमते अपप्रय असंख्यातमोभागमते आहारकरे। अणेगाइंचणंभागसहस्साइं। अनेक घणा भागसहस्र। घणा भागसहस्र। अणासाइज्जमाणाइं। अनास्वाद्यमानरसनेन्द्रियेकरी आस्वादियानथी। अफासाइज्जमाणाइं। अस्पृश्यमानस्पर्शनेन्द्रियेकरी स्पर्शानथी। विद्धंसमावज्जंति। वि ध्वंसपामे। एएसिणंभंते पोग्गलाणं अणासाइज्जमाणाणं। एहने हेभगवन् पुद्गलने रसनेन्द्रिये अनास्वाद्यमानाने। अफासाइज्जमाणाणं। स्पर्शने

वसेति, उस्वासेयं पृथिव्यादिक्रमेण—सातीसाहस्सवस्सा१ सत्तवस्सहस्साई२ तिन्निहोरत्ता ३। वायतिन्निसहस्सा ४ दसवाससहस्सियारूक्खति ५॥१॥ बेइंदियाणठिइमजिकसओसासोवेमायाएत्ति॥ वक्तव्य इतिशेष स्थितिस्त द्वीन्द्रियाणां द्वादशवर्षाणि द्वीन्द्रियाणां माहारसूत्रे, यदुक्त—तत्थणजे से आभोगनिव्वत्तिए ॥ सेव असंखेज्जसमइए अंतोमुहुत्तिए वेमायाए आहारट्ठे समुप्पज्जइति ॥ तस्या ममयः, असङ्ख्यातसामयिक आहारकालो भवति, यथा वसप्पिस्यादिरूपो प्यसौ त्यत उच्यते आन्तर्मौहूर्तिक सत्रापि विमात्रयान्तमुहूर्तसमयासङ्ख्यातत्वस्या सङ्क्षेपभेदत्वा दिति ॥ यद

दियाणठिईनाणियव्वा ऊसासोवेमायाए। बेइंदियाणआहारेपुच्छा अणाभोगनिव्वत्तिएतहेव। तत्थणजेसे आभोगणिव्वत्तिए सेणअसंखेज्जसमइए अंतोमुहुत्तिएवेमायाए आहारट्ठेसमुप्पज्जइ सेसंतहेव जाव अणंत भागआसायंति। बेइंदियाणंतेजेपोग्गलेआहारत्ताएगिण्हंति तेकिंसव्वेआहारेंति णोसव्वेआहारेति गोयमा

... तीन प्रकारनि ... कायमो ... पृथिवीप्रादिकें पांचेइनी भेनो स्थिति कहेछे—बावीसहजारव रस१ सातसहस्सार २ तिनिअहोरत्ता ३ वाएतिनिसहस्सा ४ दसवाससहस्सियारुक्खा। बेइंदियाणठिईभाणियव्वा। पंचमात्रनी ... कहो। वि वे बेइंद्रियादिक कहे—बेइंद्रीनी स्थिति बारवरसनी कहवो। अ मासानेमायाए। सासो सासमपि मर्यादा रहितहोय। बेइंदियाण आहारे पच्छा। मक्षादिने आहारनो पूच्छा आहारनी ... । अनाभोगनिव्वत्तिए तहेव। अणाभोगता आहार करेते लोमाहारनो समेमायें ... पंच्यवा भोगा हार तो सगमा ... । तत्थ जेसे आभोगनिव्वत्तिए सेणअसंखेज्जसमइए। तिहां जे आहारयवे तेअसङ्ख्यातसमयिक आहारका मधूने तेवा ... असङ्ख्यात समयिकाहे तेमाटे कहे—अंतोमुहुत्तिएवेमायाए आहारट्ठेसमुप्पज्जइ। तिहांपनि वेमात्रायें अंतर्मुहूर्तने वि षे समय असङ्ख्यात पर्येकरी। सेसंतहेव। शेषबाकतो तिमहीज कहवो। जावअणंतभागआसायंति। यावत् पूर्वोक्तसवकहवो अनंतमाव आस्वादेतीम में कहवा। बेइंदियाणंते जेपोग्गले आहारत्ताए गिण्हति। बेइंद्रिय जेमयवन्। जेपुद्गल आहारपने ग्रहे जाय। तेकिं सव्वेआहारेति। तेवतू सर्व

दियाणं दुविहे आहारे पन्नत्ते लोमाहारे पक्खेवाहारेयत्ति ॥ तत्र लोमाहारः स्थूलोपतो वर्षादिषु यः पुद्गलप्रवेशः समूत्रादवगम्यतइति, प्रक्षेपा
हारस्तु कावलिक तत्र प्रक्षेपाहारे यद्यपो ऽप्युपायएव शरीरात् दृश्यतेऽपि विध्वंसगत स्यौस्यसौख्याभ्यां, अतएवाह ॥ जे पोग्गले पक्खेवाहार
त्ताए गेण्हंतीत्यादि ॥ अणेगाइंचणं भागसहस्साइंति ॥ असंख्येयभागा इत्यर्थः ॥ अफासाइज्जमाणाइंति ॥ रसनेन्द्रियतः ॥ अफासाइज्जमाणाइंति
स्पर्शनेन्द्रियतः ॥ अयरत्यादि ॥ यत्पदं तदेवं दृश्यम् ॥ अयरेअयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावत्ति ॥ व्यक्तम् ॥ चउत्थोवाप्पो

बेइंदियाणंदुविहेआहारेपन्नत्ते तंजहा लोमाहारेयपक्खेवाहारेय जेपोग्गलेलोमाहारत्ताएगिण्हंति तेसव्वेअप
रिसेसिएआहारेंति जेपोग्गलेपक्खेवाहारत्ताएगिण्हंति तेसिणंपोग्गलाणंअसंखेज्जइभागंआहारेंति अणेगाइंच
णंभागसहस्साइंअणासाइज्जमाणाइं अफासाइज्जमाणाइं विद्धंसमागच्छंइ एएसिणंभंतेपोग्गलाणंअणासाइज्जा

पुरुष आहारे। आसयमाहारेति। किवा सर्वआहारनहीं एमनिसोधो उत्तर। भायभा। हेगोतम। बेइंद्रियने दुविधे आहारे पन्नत्ते तंजहा। बे
इंद्रियने स्मरन रसनतने बेप्रकारे आहार कह्या तेकहे—लामाहारेय पक्खेवाहारेय। लोमाहार प्रक्षेपाहार तिहांलामाहार तिवे आयवनो वर्षादि
कालने विषे जेपुद्गलप्रवेश थाय तेसूत्रमाहे प्रक्षेपाहारते कवलरूप तिहां प्रक्षेपाहारनेविषे घणा अवयवस्यावका जेशरीरनो मांहि तथा बाहिर
विध्वंसपामे सूत्र सामर्थ्यो अतएव आह—जेपोग्गले इत्यादि। जेपुद्गल लोमाहारपणे ग्रहेछे। तेसर्वेअपरिसेसिए आहारेंति। येसव अपरिशेष आहारे
समस्तना भक्षकरे। जेपोग्गलेपक्खेवाहारत्ताए गिण्हंति। प्रक्षेपाहारते कवलाहार जेपुद्गल प्रक्षेपाहारपणे ग्रहेछे। तेसिणं पोग्गलाणं असंखेज्जइभाग
आहारेंति। तेह पुद्गलमाहे अपचय उपचयस्येवारी असंख्यातमोभागमाहे आहारपणे। अणेगाइंचणभागसहस्साइं। अनेक घणा भागसहस्र। अणा
साइज्जमाणाइं। अनास्वादमानरसनेन्द्रियेकरी आस्वादितानहीं। अफासाइज्जमाणाइं। अस्पृश्यमानस्पर्शनेन्द्रियेकरी स्पर्शानहीं। विद्धंसमागच्छइ। वि
ध्वंसपतेपामे। एएसिणंभंते पोग्गलाणं अणासाइज्जमाणाणं। एहाने हेभगवन् पुद्गलाने रसनेन्द्रिये अनास्वाद्यमानाने। अफासाइज्जमाणाणं। अग्रने

गसा अणासाएज्जमाणेत्यादि ॥ ये अनास्वाद्यमानाः केवल रसनेन्द्रियविषया स्ते स्तोका अस्पृश्यमानानां अनन्तभागवर्त्तिन इत्यर्थः, ये स्वरूपस्य
माना केवलं स्पर्शनविषया स्तेनन्तगुणाः रसनेन्द्रियविषयेभ्यः सकाशादिति ॥ तेइंदियचउरिंदियाणं आयंस डिंयति ॥ तवेद ॥ अहमपं अ
तोमुहुत्तं उक्कोसेण तइंदियाणं एगूणं पन्नासराइंदियाइं चउरिंदियाणं छम्मासा ॥ तथा आहारेपि आभार्व्यं तत्रैव ॥ तेइंदियाणं भंते ! जेपोग्ग

माणाणं अफासाइज्जमाणाणय कयरे२ हितोअप्पावा४ गोयमा सव्वत्थोवा पोग्गलाअणासाइज्जमाणा अफासाइज्जमाणाअणंतगुणा वेइंदियाणंजंतेपोग्गलाआहारत्ताएगिण्हंति तेणं तेसिंपोग्गलाकीसत्ताएभुज्जोभुज्जोपरिणमंति गोयमा जिब्भिंदियफासिंदियवेमायाएभुज्जोभुज्जोपरिणमंति । वेइंदियाणंजंतेपुव्वाहारियापोग्गलापरिणयातहेव जाव चलियकम्माणिज्जरेंति । तेइंदियचउरिंदियाणंणाणत्त

न्द्रिय अवस्पृश्यमानाने पतिवमावें । कवरे २ हिता अप्पाबा । बच २ बचो घाताचाय । बहमाबा । घनाचाय । तुमाबा । सरीखाचाय । विसेसाहिया
वा । विशेषाधिकवाव इतिमय उत्तर । गोयमा । हेगोतम ! सव्वथोवापोग्गला अणासाइज्जमाणा । सबबो थाडा पहल जे केवल रसनेंद्रियने विषयछे
ते अस्पृश्यमान पहलने अनंतमायवर्त्तीछे तेमाटे तेथको । अफासाइज्जमाणा अणंतगुणा । अस्पृश्यमान केवल स्पर्शनविषयछे ते अनंतगुणा रसनेंद्रिय
विषय पहलथकी । वेइंदियाणं भंते पोग्गला । कहो गोतम पूछेछे—वेइंद्रियजीव हेभगवन् । पहलाप्रते । आहारत्ताएगिण्हंति । आहारपणे भक्षणपणे
पहे । तेणंतेसिंपोग्गलाकीसत्ताए । ते ते पहलवेइंद्रियजीवाने किसोतरे । भुज्जोभुज्जोपरिणमंति । वारवार परिणमेए प्रश्न । उत्तर भगवंतकहेछे—गो
यमा । हेगोतम ! जिब्भिंदिय फासिंदियवेमायाए । रसनेंद्रिये स्पर्शनेंद्रिये विमात्रायें अनेकप्रकार व्यावविमागपणे । भुज्जो २ परिणमंति । वारवा
रपरिणमे । वेइंदियाणं भंते । वेइंद्रियजीवने हेभगवन् । पुव्वा हारिया पोग्गला परिणया तहेव । पूर्वआहारतायपणापहल परिणमे इत्यादिक पूर्व व
त्ताले विमबलबबो । जावचलियं कम्मं निज्जरेंति । यावत् चलितकर्म निर्जरे अयबारे । तेइंदियचउरिंदियाणं णाणत्तं द्विरुए । तेइंद्रिय चउरिंद्रियने

ग

से माहारताए गेवहति इत्यत आरभ्य तावत् सूर्य वाच्य यावत् ॥ अवेगाहणच मागसहस्साइ आयापाइज्जमाणाइं इत्यादि ॥ इयच द्वीन्द्रि यमूरापेक्षया ऽनाप्राप्यमावालीति पतिरिक्त मतो भानात्व पय मस्पत्रपुत्वसूत्रे परिवामसूत्रच चतुरिन्द्रियसूत्रेषुतु परिवामसूत्रे ॥ पक्षिदिय साय पाविदियताए ॥ इत्यपिकमिति नामात्वमिति पञ्चन्द्रियतिपसूत्रे ॥ ठिइ मधिकरति अवमेव मतोमुपत्त उक्कासेव तिन्निपलिउवमाइ

ठिईए जाव झुणेगाइंचणनागसहस्साइं अगाघाइज्जमाणाइं अणासाइज्जमाणाइं अफासाइज्जमाणाइं विद्ध समायज्जति । एएसिणत्तेपोग्गलाणअगाघाइज्जमाणाण अणासाइज्जमाणाण अफासाइज्जमाणाणयपुच्छा गोयमा सव्वत्थोवापोग्गलाअगाघाइज्जमाणा अणासाइज्जमाणाअणंतगुणा अफासाइज्जमाणाअणंतगुणा ते इंदियाणंघाणिंदिय जिब्भिंदियफासिंदिय वेमायत्ताए भुज्जोभुज्जोपरिणमति । चउरिंदियाणचक्खिंदियघाणि

नानात्वमिति ते इम वक्ष्यते पंताहुर्त्त उक्कोसेव २ दियाव अवापवदियाए ४८ इन्दियचउरिंद्रियाव अन्नासायाइए नेमिपेपचि नानात्व चाव घवेमाइ वचभागवचस्साईं । यावत् पनेक एतावता [illegible] आमखक । पचाघाइज्जमाचाइ । पनाघायमान ते घ्राणेंद्रिये । पचासाइज्जमाणाइ । पनासाय मानते रसनेंद्रिये । पफासाइज्जमाचाइ । पस्पृश्यमानते स्पर्शनेंद्रिये । विध्वंसमायव्वति । विध्वंसविनाशयामे । एएसिणं भंते । एतेषां हेभगवन् । पोग्ग लाण पचाघाइज्जमाणाण । पुद्गलानां पनाघ्रायमाणानां । पचासाइज्जमाणाण । पनास्वाद्यमानानां । पफासाइज्जमाणाणच पुच्छा । पस्पृश्यमानानां मा त्रामादि पन्न वक्ष्यच इत्यादिरूप उत्तर । गोयमा । हेगौतम । सव्वत्थोवा पोग्गला पचाघाइज्जमाणा । सर्वतो स्तोका पुद्गल पनाघ्रायमान घ्राणेंद्रि ये । पचासाइज्जमाणा पणंतगुणा । पनास्वाद्यमान रसनेंद्रिये ते पनंतगुणा । पफासाइज्जमाणापणंतगुणा । पस्पृश्यमान पुद्गल स्पर्शनेंद्रिये ते पनंत गुणा । तेइंदियाण । तेइन्द्रियने । घाणेंदिय । घ्राणेंद्रियने । जिब्भिंदिय फासिंदिय । जिह्वेंद्रिये स्पर्शनेंद्रिये । वेमायत्ताए । पनेकविध कालविभागपणे । भु ज्जो २ परिणमति । वारंवार परिणमे । चउरिंदियाण । चउरिंद्रियने । चक्खिंदिय । चक्षुरिंद्रिये । घाणिंदिय । घ्राणेंद्रिये । जिब्भिंदिय । जिह्वेंद्रिये ।

नमसा चनासाएज्जमाणेत्यादि ॥ ये चनास्वाद्यमानाः केवलं रसनेन्द्रियविषया स्ते स्तोका चस्पृश्यमानानामनन्तभागवर्त्तिन इत्यर्थः, ये स्पृश्य माणाः केवलं स्पर्शनविषया स्तेनन्तगुणाः रसनेन्द्रियविषयेभ्यः सकाशादिति ॥ तेइन्दियचउरिन्दियाणं माणस निर्दिशति ॥ सचेव ॥ चहन्नेय चं तोमुहुत्तं उक्कोसेणं तेइन्दियाणं एगूण पन्नासराइन्दियाइं चउरिन्दियाणं छम्मासा ॥ तथा चाहारेपि नानात्व तत्रच ॥ तेइन्दियाणं भंते । जेपोग्गला

माणाए चणासाइज्जमाणाणय कयरे२हिंतोप्पाबा य बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा गोयमा सव्वत्थोवा पोग्गला अणासाइज्जमाणा अणासाइज्जमाणा अणंतगुणा बेइन्दियाणं जे पोग्गला आहारत्ताए गिण्हंति तेणं तेसिं पोग्गला कीसत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमंति गोयमा जिब्भिंदियफासिंदिय वेमायाए भुज्जो भुज्जो परिणमंति। बेइन्दियाणं भंते पुव्वाहारिया पोग्गला परिणया तहेव जाव चलियं कम्मं णिज्जरेंति। तेइन्दियचउरिन्दियाणं णाणत्तं

न्हव चनस्वाद्यमान पविस्तुमारे। कयरे २ हिता चप्पाबा। कयरे २ बहो बाबाबाय। बहुया वा। बवाबाय। तुल्ला वा। सरीखाहोव। विसेसाहिया वा। विशेषाधिकहोय इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा। हेगोतम। सम्बत्थोवा पोग्गला अणासाइज्जमाणा। सबवी थोडा पगल ते केवल रसनेन्द्रियने विषयछे ते अनस्वमान पहचने अनतमा भागवर्त्तीछे तेमाटे तेथवी। अणासाइज्जमाणा अणंतगुणा। अस्वादमान केवल स्पर्शनविषयछे ते अनंतगणा रसनेन्द्रिय विषय पहचवो। बेइन्दियाणं भंते पोग्गला। बहो योतम पूछे—बेइन्द्रियजीव हेभगवन्। पुद्गलाप्रते। आहारत्ताए गिण्हंति। आहारपणे ग्रहणपणे ग्रहे। तेणंतेसिं पोग्गलाकीसत्ताए। ते ते पुद्गल बेइन्द्रियजीवाने किसोतरे। भुज्जो भुज्जो परिणमंति। वारवार परिणमेय प्रश्न। उत्तर भगवंतकहेछे—गो यमा। हेगोतम। जिब्भिंदिय फासिंदियवेमायाए। रसनेन्द्रिये स्पर्शनेन्द्रिये विमात्राये अनेकप्रकार आत्मविभागपणे। भुज्जो २ परिणमंति। वारंवार परिणमे। बेइन्दियाणं भंते। बेइन्द्रियजीवने हेभगवन्। पुव्वाहारिया पोग्गला परिणया तहेव। पूर्वआहारतापणापूर्वन परिणमे इत्यादिक पूर्वे ज णावे तिमकहवो। जावचलियं कम्मं णिज्जरेंति। जावत् चलितकर्म निर्जरे त्यांसुधी। तेइन्दियचउरिन्दियाणं णाणत्तं छिएप। तेइन्द्रिय चउरिन्द्रियने

मित्यादि ॥ व्यन्तराणां स्थितौ नानात्वं ॥ अवसेसति ॥ स्थितेरन्यत्रैव नागकुमारसमं मित्यर्थः, प्रागुक्त आहारादिवस्तु यथा – नागकुमाराणा मित्यादि ॥ व्यन्तराणां स्थितौ नानात्वं ॥ तथा हृद्यं व्यन्तराणां नागकुमाराणाञ्च प्रायः समानधर्मत्वात्, तत्र व्यन्तराणां स्थिति जघन्येन दशवर्षसहस्राणि, उत्कर्षेणतु पल्योपममिति ॥ ज्योतिष्काणामपि स्थिते रवशायं तथैव, यथा – नागकुमाराणां, तत्र ज्योतिष्काणां स्थिति जघन्येन पल्योपमाष्टभाग मुत्कर्षेण पल्योपम वर्षलक्षाधिकमिति, नवरं ॥ उस्सासति ॥ केवल मुच्छ्वास सर्वा न नागकुमारसमानः, किंतु जघन्यमाव सप्ताधाद ॥ जघन्येन मुहूर्तपृथक्त्वस्सेत्यादि ॥ पृथक्त्वं द्विप्रभृतिरानवभ्यः, तत्र जघन्यतो मुहूर्तपृथक्त्वं तद्द्विधा मुहूर्तौ, उत्कृष्टं तदष्टौ नववेति आहारोपि

मणिज्जंति वाणमंतराणंठिईएणाणत्तं अवसेसंजहाणागकुमाराणं एवंजोइसियाणवि णवरं उस्सासोजहन्ने णमुहुत्तपुहुत्तस्सउक्कोसेणविमुहुत्तपुहुत्तस्स आहारोजहन्नेणदिवसपुहुत्तस्स उक्कोसेणविदिवसपुहुत्तस्स से

निःश्वसवरे। वाणमंतरोनी स्थितिनो। वाणव्यंतरने आयु जघन्य सर्व सरीखुं स्थितिने विषे नानात्वभेद जाणवो। अवसेस जेम नागकुमा रानो। तेम आहारादिक वस्तु जेम नागकुमारने तेम जाणवो व्यंतरने नागकुमारने प्राये समानधर्मपणे स्थिति जघन्य व्यंतरने दशसहस्र वर्ष उत्कृष्ट एकपल्योपमनोछे। एमज ज्योतिषीनो पण स्थिति जाणवी। नागकुमारनी परे ज्योतिषीने स्थिति जघन्ये पल्योपमनो आठमो भाग उत्कृष्ट एक पल्योपम लाखवर्ष अधिक। एटलो विशेष उस्सास जघन्येपणि मुहूर्त पृथक्त्व बेथकीमांडी नवताईं न पृथक्त्व कहिये एटले जघन्य मुहूर्त उत्कृष्ट मुहूर्तपृथक्त्व। उत्कृष्टथी पणि मुहूर्त पृथक्त्व एटले उत्कृष्ट मुहूर्त पृथ क्त्व आठ तथा नव मुहूर्त जाणवा। आहार जघन्य दिवसपृथक्त्व। आहारपणि जघन्य दिवस पृथक्त्व बेथी मांडी नवताईं पृथक्त्वमाटे तेजघन्ये बे तथा त्रणदिवस जाणवो। उत्कृष्ट पणि दिवस पृथक्त्व उत्कृष्ट पणि दिवसपृथक्त्व ते आठ तथा नवदिन जाणवा। सेसंतचेव। शेष तेमज पूठिलीपरे। वैमानिकनाहिं भाणियव्वा भाणिया। वैमानिकनी स्थिति कहेछे सौधर्म एटले सामान्ये सर्व ताराने तेहना जघन्यथी एकपल्योपम

इत्येतद्रूपां स्थितिं जनित्वा ॥ उस्सासोत्ति ॥ उच्छ्वासो विमात्रया वाच्य इति तथा तिर्यक्पञ्चेन्द्रियाणां माहारार्थप्रति यदुक्त ॥ उक्कोसेण छट्ठभत्त स्सेति ॥ तद्देवकुरूत्तरकुरुतिर्यक्षु सम्यत मनुष्यसूत्रे यदुक्त मट्ठमभत्तस्सेति तद्देवकुर्वादिमिथुनकान् नाश्रित्य समवसेयमिति, ॥ वाणमन्तराण

दियजिब्भिदियफासिंदियत्ताए जुज्जोजुज्जोपरिणमंति । पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं ठिई भाणिऊण ऊसासो वेमायाए आहारो अणाभोगणिव्वत्तिए अणुसमयं अविरहिए आभोगनिव्वत्तिए जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं छट्ठभत्तस्स सेसं जहा चउरिंदियाणं जाव चलियकम्मं णिज्जरेंति एवं मणुस्साणवि णवरं आभोगणिव्वत्तिए जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अट्ठमभत्तस्स सोइंदिय ५ वेमायाए जुज्जोजुज्जो परिणमंति सेसं तहेव जाव चलियकम्म

फासिंदियताए । स्पर्शेन्द्रिपणे । जुज्जाजुज्जापरिणमंति । वार २ परिणमे । पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं । पंचेंद्रियतिर्यंचयोनिकने । ठिई भणिऊण । स्थिति कहवी ते जघन्यपणे अंतर्मुहूर्त उत्कृष्टे तीनपल्योपममात्र एतलो स्थिति कहीये । ऊसासो वेमायाए । उच्छ्वास विमात्राये मर्यादारहित कहवो । आहारो अणाभोगनिव्वत्तिए । आहारते अण ते अनाभोग अजाणपणे करता । अणुसमयं अविरहिए । अनुसमय प्रतिसमय तेहाविरहपणामेघवें विरह विना ते निरंतरकरे । आभोगनिव्वत्तिए । आभोगे जाणपणे करे ते आभोगनिवर्तित कहीये । जहन्नेणं अंतोमुहुत्त । जघन्यथी अंतर्मुहूर्त थकी उक्कोसेणं छट्ठभत्तस्स । उत्कृष्टो छट्ठभक्त ते देवकुरुउत्तरकुरुना तिर्यंचआश्री जाणवो । सेसंजहा चउरिंदियाणं । शेष जिम चौरिंद्रिय तिम जाणवूं । जावचलियं कम्मं णिज्जरेंति । यावत् जीवप्रदेशथकी चलितकर्मनी निर्जरा करे । एवं मणुस्साणवि । इमहीज तिर्यंचनीपरे मनुष्यनेपिण जाणवो । णवरं आभोगणिव्वत्तिए । एतला विशेष जाणता आहारनिवर्त्तकरे । जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं । ते जघन्ये अंतर्मुहूर्त । उत्कृष्टो अट्ठमभक्त ते छ दिन । उत्कृष्टा अष्टमभक्त एपिण देवकुरु उत्तरकुरु मनुष्यआश्रीजाणवा सुगमने इंद्रिय पांचमा श्रोत्र चक्षु घ्राण जिह्वा स्पर्श इन्द्रिय । वेमायाए जुज्जाजुज्जा २ परिणमंति । वेमायाइ वार २ परिणमयरोर पुष्टकरे । सेसंतहेव । शेषतिमज

यन्या दयमेवेति , तक्ता नारकादिषमवक्तव्यते यम्बारम्भपूविकेति चारम्भनिरूपवायाह ॥ जीवायमते । किं मायारंमेत्यादि ॥ मारम्भो जीवोपघात उपन्यममित्यग। सामान्येनवा मवद्वारमवृति तत्र मात्मान मारभन्ते मात्मनावा स्वय मारभन्ते इत्यात्मारम्भा तथा परमारभन्ते परेणवा रम्भयन्तीति परारम्भा तदुभय मात्मपररूप तदुभयेनवा रभन्तइति तदुभयारम्भा मात्मपरोभयारम्भवर्जिता स्त्वमारम्भा इतिप्रश्नः मत्रोत्तर स्पष्टमव नवर मस्ति शाब्दस्याव्ययत्वेन बहुत्वाच स्यादस्ति विद्यन्ते सन्तीत्यर्थः मथवा। मस्ति मय म्पक्षो बहुत ॥ एगयति ॥ एकका एके केचने त्ययः जीवा मात्मारम्भा मपीत्यादा वपिशब्द उत्तरपक्षापेक्षया समुच्चय स चात्मारम्भत्वादिधर्माणा मेकाश्रयतामतिपादनार्थः जिवाश्रयतामति पादनार्थोवा। म[illegible]पत्वञ्च कालभेदेना वगमत्वं तथाहि-कदाचि दात्मारम्भाः कदाचि त्परारम्भाः कदाचि तदुभयारम्भा मतएव नो मनारम्भा

आहारुद्दसगतहाजाणयद्वां एसोआढओणेरइयाणजतेआहारठी जायदुस्कआएजुज्जोजुज्जोपरिणमति जीवा
णजतकिआयारज्जा परारज्जा तदुज्जयारज्जा अणारज्जा गोयमा अत्थेगइयाजीवाआयारज्जाविपरारज्जायितदुज्ज

० । नेरइयाभमते भाहारता । नारको हेभगवन् । भाहारता थकी छे । जाव दुक्खताए मुजा २ परिणमति । यावत् दु खपणे ममातिपणे वार २ परि णमे पहिला नारकोना वक्तव्यताकही ते भारभ पूर्वकछे तेमाटे भारभनिरूपण करेछे । जीवाण भते कि भायारभा । जीवा ए हसे भाक्यानकारे छे भगवन् ! भ्वजीवना घात भापपणे करे ते भात्मारभी छे । परारभा । भनेरापाम जीववातकरावे ते परारभीछे । तदुभयारभा । भापपणेपणि जीव घातकरे भनेरापासेपणि करावे ते तदुभयारभी छे । भणारंभा । जीवनाघात नकरे न करावे न भनुमादे ते भणारभोछे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा । हे गोतम ! भत्थ गइया जीवा भायारभावि । केइएक जीव पातानि भर्ज भात्मारभो पणि छ भापपणअ दाथन्योने जीवनो घातकरे छे । परारंभावि । परारभीपणि जीवघात करावेछ । तदुभयारभावि । तदुभयारभीपणिछे भापपणे जीवघातकरे भनेरापासपणि जीवघात करावे । णो भणारभा । प णि भनारभो नथी । भत्थेगइयाजीवा । छे केइएक जीव । णोभायारभा । नथी भात्मारभी भापपणे जीवना घातनकरे । णोपरारभा । नथी परार

विशेषितएव तथाचाह ॥ आहारोइत्यादि ॥ वेमाणियाणंठिईजाणियव्वाठइयत्ति ॥ वैमानिकी सामान्या साधपल्योपमादिका, त्रयस्त्रिंशत्सागरो पमान्ता, तत्र जघन्या सौधर्म माश्रित्यो त्कृष्टा चानुत्तरविमानानीति, सप्तसागरप्रमाणंतु जघन्य जघन्यास्थितिरप्येषा नाश्रित्ये तत्तु उत्कृष्टस्थिति का माश्रित्येत्यर्थं यत्रगाथा–जस्सजइसागराइ तस्सठिईततिएहिं पक्खेहिं ॥ ऊसासोदेवाण वाससहस्सेहिं आहारोत्ति ॥ १ ॥ तदेवावता पल्योपमेषा पृथक्त्वतिसम्भवत्यमता इत्यन्य मेवुक्ति पृथग्पुत्राश्च ॥ एतठिईआहारोइत्यादिमा ॥ अतिदेशवाक्येन दर्शिता सावेतो यिवरण

सतचेय वेमाणियाणठिईजाणियव्वाठहिया उस्सासोजहस्सेणमुहुत्तपुहुत्तस्स उक्कोसेणतेत्तीसाएपक्खाण आहारोआभोगणिव्वत्तिउ जहस्सेणदिवसपुहुत्तस्स उक्कोसेणतेत्तीसाएवाससहस्साणसेसतचेव जावणिज्जरेंति ए वठितीआहारोयजाणियव्वो ठितीजहाठितीपदेतहाजाणियव्वा सव्वजीवाण आहारोयजहापन्नवणाएपढमे

आश्रिहेर उत्कृष्टो तेत्रीस सागरोपम पर्यंत ते जघन्य सौधर्मवासी उत्कृष्ट अनुत्तरविमान वासीने जाणवा। उश्वासाजहन्येण मुहूर्तपृथक्त्व। उ स्वास जघन्ये मुहूर्त पृथक्त्व ते जघन्य सौधर्मनीस्थिति वालाने जाणवो। उत्कृष्टेन तेत्तीसाएपक्खाण। उत्कृष्टो तेत्रीस पक्ष ते उत्कृष्टस्थिति अनुत्त र देव वाल्याने जाणवा। आहाराभोगनिवर्त्तितो जघन्येन दिवसपृथक्त्वस्य। इम आहारपणि जाणवो निवर्त्तित जघन्ये दिवस पृथक्त्व होय ते जघन्य स्थिति वालो जाणवो। उत्कृष्टे तेत्तीसाएवाससहस्साण। उत्कृष्टो तेत्रीस सहस्र वर्ष ए उत्कृष्ट स्थितिवालो जाणवो इहां गाथा जस्सजइसाग रा ठिइतस्सततिएहिंपक्खेहिं। ऊसासोदेवाणं वाससहस्सेहिंआहारोइति ॥ १ ॥ सेसतचेव। शेषसर्व तिमज जाणवो। जावणिज्जरेंति यावत् वलि तजम निर्जरे। एवठितो आहारोय भाणियव्वा। इम स्थिति आहारपणि जाणवो। ठितीजहाठितीपदे तहा भाणियव्वा। स्थिति जिम स्थितिपद जिम पन्नवणामांहि कह्यो छे तिम कहवू। सव्वजीवाण। सर्वजीवने। आहारोय जहा पन्नवणाएपढमे आहारउद्देसए तहा भाणियव्वो। आहार जिम पन्नवणामे बीजा उपांगनेविषे पहिले आहारने उद्देसे विस्तारथी छे तिम इहांपणि कहवो। एतोआरब्भ। इहांथी आरंभी

ग्रन्थ। दयमयति , उक्ता नारकादिषमवक्तव्यते यम्वारम्भपूर्विकेति भारम्भमिरूपणायाह ॥ जीवाणमंते । किं भायारंभेत्यादि ॥ भारम्भो जीवोपघात उपद्रवणमित्यर्थः सामान्येनवा। मनद्वारम्भवृत्ति सत्र आत्मान मारभन्ते आत्मनावा स्वय मारभन्त इत्यात्मारम्भा, तथा परमारभन्ते परेणवा रम्भयन्तीति परारम्भा स्तदुभय मात्मपररूप तदुभयेनवा रभन्तइति तदुभयारम्भा आत्मपरोभयारम्भवर्जिता स्त्वनारम्भा इतिप्रश्नः प्रश्नोत्तर स्पष्टमव नवरं प्रस्ति प्रत्यस्याव्ययत्वेन बहुत्वाय स्यादस्ति विद्यन्ते सन्तीत्यर्थः अथवा। प्रस्ति प्रय स्मर्यो यवुत ॥ एगयत्ति ॥ एकका एके केचने त्ययः जीवा आत्मारम्भा अपीत्यत्रा अपिशब्द उत्तरपदापेक्षया समुच्चय स चात्मारम्भत्वादिधर्माणा मेकाश्रयताप्रतिपादनार्थः भिन्नाश्रयताप्रति पादनार्थीया। म[illegible]पस्वम्व कालान्तरेण वगन्तव्य तथाहि—कदाचि दात्मारम्भाः कदाचि त्परारम्भाः कदाचि तदुभयारम्भा अतएव नो अनारम्भा

आहारुद्दसएतहाज्ञाणंयक्षो एक्षोभ्गतभोणेरइयाणन्तेआहारहो जायदुक्खहाएज्जुज्जोज्जुज्जोपरिणमंते जीवा णन्तनकिंआयारंभा परारंभा तदुभयारंभा अणारंभा गोयमा अत्थेगइयाजीवाआयारंभाविपरारंभावितदुभ

व। नेरइयाणभंते भाहारहा। नारकी हेभगवन्। भाहारना अर्थी छे। भाव दुःखताए मुज्ञा २ परिणमा। यावत् दु खपणे भमातिपणे वार २ परि णमे पहिला नारकोनो भवक्तव्यताकहो ते भारम पूर्वकहे तेमाटे भारभनिरूपण करेछे। जीवाणं भंते किं भायारंभा। जीवा णं इसे भात्मारंभकारे छे भगवन्। स्वजीवना घात भापणपे करे ते भात्मारंभी छे। परारंभा। भनेरापास जीवघातकरावे ते परारंभीछे। तदुभयारंभा। भापणपेंपणि जीव घातकरे भनेरापासेपणि करावे ते तदुभयारंभी छे। अनारंभा। जीवनाघात भकरे न करावे न भनुमोदे ते अनारंभीछे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा। हे गोतम। भस्थे गइया जीवा भायारंभावि। केइएक जीव पोतामें भवें भात्मारंभी पणि छ भापणपेज सघलाजि जीवनो घातकरे छे। परारंभावि। परारंभीपणि जीवघात करावेछ। तदुभयारंभावि। तदुभयारंभीपणिछे भापणपे जीवघातकरे भनेरापासपणि जीवघात करावे। णो अणारंभा। प णि अनारंभी नथी। भस्थेगइयाजीवा। छे केइएक जीव। भायायारंभा। नथी भात्मारंभी भापणपे जीवना घातकरे। णोपरारंभा। नथी परार

विशेषितएव, तथाचाह ॥ आहारोइत्यादि ॥ वेमाणियाणठिईजाणियव्वाठिइयत्ति ॥ औघिकी सामान्या सापपल्योपमादिका, त्रयस्त्रिंशत्सागरो पमास्ता तत्र जघन्या सौधर्म आश्रित्यो त्कृष्टा चानुत्तरविमानानीति, उच्छ्वासप्रमाणंतु जघन्य जघन्यस्थितिकदेवा नाश्रित्ये तरतु उत्कृष्टस्थिति का नाश्रित्येत्यर्थ, यत्रगाथा—जस्सजइसागराइ तस्सठिइतत्तिएहिपक्खेहि ॥ ऊसासोदेवाण वाससहस्सेहि आहारोत्ति ॥ १ ॥ तदेतावता पन्येमोक्ता चतुर्विंशतिदण्डकक्रमता इयन्त सेपुस्थित् सूत्रपुस्तकेषु ॥ एवंठिईआहारोइत्यादिना ॥ अतिदेशवाक्येन दर्शिता आचेतो विवरण

सतचेव वेमाणियाणठिईजाणियव्वाठिइया उस्सासोजहन्नेणमुहुत्तपुहुत्तस्स उक्कोसेणतेत्तीसाएपक्खाण आहारोआभोगणिव्वत्तिओ जहन्नेणदिवसपुहुत्तस्स उक्कोसेणतेत्तीसाएवाससहस्साणसेसतचेव जावणिज्जरेंति एवंठितीआहारोयणाणियव्वो ठितीजहाठितीपदेतहाजाणियव्वा सव्वजीवाण आहारोयजहापन्नवणाएपढमे

आदिदेई उत्कृष्टी तेत्रीस सागरोपम पर्यंत ते जघन्य सौधर्मआश्री उत्कृष्ट अनुत्तरविमान आश्रीने जांणवा। उस्सासजघन्यदेव मुहूर्तपृथुत्वं। उ त्कृष्ट तेत्रीस पक्ष ते जघन्य सौधर्मनीस्थिति आश्रयीने जांणवो। उक्कोसेण तेत्तीसाएपक्खाण। उत्कृष्टो तेत्रीसपक्ष ते उत्कृष्टस्थिति अनुत्त र देव आश्रीने जांणवा। आहाराभोगनिष्पत्तिनो जघन्येव दिनसपृथुत्वं। इम आहारपणि जांणवो निवर्त्तित जघन्ये दिवस पृथक होय ते जघन्य स्थिति आश्री जांणवो। उक्कोसेण तेत्तीसाएवाससहस्साण। उत्कृष्टो तेत्रीसहजारवर्ष ए उत्कृष्ट स्थितिआश्री जांणवो इहां गाथा जस्सजइसाग राइ ठितस्सतत्तिएहिपक्खेहि। ऊसासोदेवाणं वाससहस्सेहिआहारोइति ॥ १ ॥ सेसंतचेव। शेषसर्व तिमज जांणवा। जावणिज्जरेंति यावत् निर्ज रावंत निर्जरे। एवंठितो आहारोय भाणियव्वा। इम स्थिति आहारपणि जांणवो। ठितीजहाठितीपदे तहा भाणियव्वा। स्थिति जिम स्थितिपद जिम पन्नवणामांहि कह्याछे तिम कहवू। सव्वजीवाणं। सर्वजीवने। आहारोय जहा पन्नवणाएपढमे आहारउद्देसए तहा भाणियव्वो। आहार जिम पन्नवणानामे त्रीजा उपांगनेविषे पहिले आहारने उद्देशे जिमकह्यो छे तिम इहांपणि कहवो। पज्जत्ताकत्तो। इहांलगे जांणवो यावत

तमाह ॥ सुहजोगं पडुच्च इति ॥ शुभयोगउपयुक्ततया प्रत्युपेक्षणादिकरणं अशुभयोगस्तु तदेवानुपयुक्ततया आह च—पुढवीआउक्काए तेऊवाऊवणस्सइ तसाणं । पडिलेहणापमत्तो छण्हंपि विराहओ होइ ॥ १ ॥ तथा—सव्वो पमत्तजोगो समणस्स उ होइ आरंभोत्ति ॥ अतः शुभाशुभौ योगावाश्रित्यारम्भादि

तदुविहा पण्णत्ता तंजहा पमत्तसंजयाय अपमत्तसंजयाय तत्थणंजेतेअपमत्तसंजया तेणंणोआयारंभा णोपरारंभा जाव अणारंभा। तत्थणंजेतेपमत्तसंजया तेसुहजोगपडुच्च णोआयारंभा णोपरारंभा जावअणारंभा। असुहजोगपडुच्च आयारंभावि जावणोअणारंभा तत्थणं जेते असंजया ते अविरतिं पडुच्च आयारंभावि

वचगा। तिहां प्रमत्तरेखा, वेयम तेमांहे जे संसार चतुर्गति भ्रमण तेहनेविषे रह्याछेय। तेदुविहा प त। तेबेप्रकारे बेभेद कह्या तेकहेछे—संजया य असंजयाय। एकजीव संयता कहतां संयमी जीवाजीव चारित्र रहित पहिले गुणठाणे वर्त्ते ते। तत्थणं जेतेसंजया तेदुविहा प त। तिहां संयती असंयती मांहे जे संयती चारित्रवंत ते बेप्रकारे कह्या तेकहेछे—पमत्तसंजयाय। प्रमत्तसंयत छट्ठागुणठाणानेविषे वर्त्तं ते। अपमत्तसंजयाय। अप्रमत्त संयतप्रमाद रहित साधु सातमा आदिदेई गुणठाणानेविषे वर्त्तें। तत्थणंजेते अपमत्तसंजया। तिहां प्रमत्त अप्रमत्तमांहे जेतेअप्रमत्तसंयमी सातमादि गुणठाणे वर्त्ते तेसाधु। तेणंणोआयारंभा। ते साधु नही आत्मारंभी पोते आरंभ नकरे अप्रमादी भणीज। णो परारंभा। ते परारंभी पणि नहीं जाव अणारंभा। यावत् तदुभयारंभीपणि नहीं एतावता अनारंभीछे। तत्थणंजेतेपमत्तसंजया। ते विहुंमांहे जे प्रमत्तसंयती ते शुभ अशुभ त्रियोग जोय तिहां। तेसुहजोगपडुच्च। ते पडिलेहण आदि सावधानपणे करे ते अंगीकार करीने। णो आयारंभा णोपरारंभा जावअणारंभा। नही आत्मारंभी नहीं परारंभी नहीं तदुभयारंभी सर्व आरंभरहितछे एतावता अनारंभीछे। असुहजोगंपडुच्च आयारंभावि जाव णोअणारंभा। पडिलेहण आदि उपयोग रहित असावधान पणेकरे यथा—पुढवीआउक्काए तेऊवाऊवणस्सइतसाणं। पडिलेहणापमत्तो छण्हंपिविराहओहोइ॥ १॥ तथा सव्वो पमत्तजोगो समणस्सउहोइआरंभोत्ति। तेआत्मारंभो आत्मारंभी छे परारंभी छे तदुभयारंभी छे पणि अनारंभीनहीं एतले शुभ अशुभ योग तेहीज आरंभ

जिनागमस्य त्वेव एके जीवा इत्यत्र तात्पर्यं आत्मारम्भापरारम्भावेत्यादि प्रत्येकसत्त्वात् जीवाना भेद मसम्भावयन्नाह ॥ सकेणट्ठेणमिति ॥ यय येन कारणेनेत्यर्थं ॥ वुचिहारयतीति ॥ मया चाम्यैव केवलिभि रपीन समस्तसर्वविदा मताभेदमाह मतभेदेतु विरोधिवचनतया तेषां मसत्य वचनतापत्ति पाटलिपुत्रस्वरूपानिपायकविरुद्धवचनपुरुषवदमत्यवचिति प्रमत्तसंयतस्यशिवाशुभो योग स्ता स्वमतत्वात् प्रमादपरस्या त्मत्व

यारम्भावि णोआयारम्भा अत्थेगइयाजीवा णोआयारम्भा णोपरारम्भा णोतदुभयारम्भा अणारम्भा । सेकेणट्ठेण न्तेएवंवुच्चइ अत्थेगइयाजीवाआयारम्भावि एवंपडिउच्चारेयव्वं गोयमा जीवादुविहा पण्णत्ता तंजहा संसार समावण्णगाय असंसारसमावण्णगाय तत्थणंजेतेअसंसारसमावण्णगाय तेणंसिद्धा सिद्धाणंणोआयारम्भाजाव अणारम्भा । तत्थणंजेतेसंसारसमावण्णगा तेदुविहा पण्णत्ता तंजहा संजयायअसंजयाय । तत्थणंजेतेसंजया

भो भगवायास जीवघात नकराये । कातदुभयारंभा । नहीं तदुभयारंभो पापजीवघात नकरे पनेरापासपचि नकराये । अनारंभा । एतलामाटे भगा रम्भोवे । सेकेणट्ठेणभंते एववुच्चइ । गौतम पूछेछे तेहे भगवं केमसवम् । इमकह्यू । अत्थेगइयाजीवा आयारंभावि । केतलाएक जीवआपो आत्मारंभो पणिछे पाताने भवं भारमकरे । एवंपडिउच्चारेयव्वं । इमसव पूर्वकह्या तिमपाछिलू कहवू इमप्रश्न आगलपचि सघलापि कहवू उत्तर । गौयमा । हेगौतम । जो वाउविहापण्णत्ता तंजहा । जीव बेप्रकारना कह्या में भगवा पत्र जीवजीवें एतले समस्त तीर्थंकरना मतने विषे मदनवी इमकह्यू तेकहेछे—संसारसमा वण्णगाय । एतलेजीव देव १ मनुष्य २ तिर्यंच ३ नारकी ४ रूप चारिगतिने विषे संसरणकरे तेसंसारसमावण्णकहिये । असंसारसमावण्णगाय । जो ना जीव चारिगतिरूप संसारने पतले भांतिययो ते असंसारसमापन्न कहिये । तत्थ ण जेते असंसारसमावण्णगा । तिहां जे इसे वाक्यामांहि जेजीव चारि गति रूप संसार तिहां यकीजीवा अमोक्षमोक्षे समस्त कर्मक्षयरूप आतम पाम्यां । तेणंसिद्धा । ते पनरेभेदे सिद्ध कह्या । सिद्धाणं जो आयारंभा जाव अणारंभा । तेसिद्ध आत्मारंभो नहीं एतले परारंभी पण नहीं तदुभयारंभी पणि नहीं एतावता सिद्ध कर्मना आरंभ रहितछे तत्थणं जेते संजया

मयतामयतप्रमत्ताप्रमत्तभेदाः पूर्वोक्ताः सन्ति तत सो यथाजीवा तथा ऽध्येतव्या किन्तु संसारसमापन्ना इतरेष ते न वाच्या भववान्तत्वा देव तेषा मित्येतद्याह ॥ सिद्धविरहिएत्यादि ॥ व्यन्तरादयो यथा नारकास्तथा ध्येया असयतत्वसाधर्म्यादिति, आत्मारम्भकत्वादिनि धर्मे जीवा निरूपिता सोध सलेश्या यालेश्याश्च भवन्तीति, सलेश्या सा सैरेव निरूपयन्नाह ॥ सलेसाजहाओहियत्ति ॥ लेश्या कृष्णादिद्रव्यसान्निध्यजनितो जीवपरिणामो यदाह—कृष्णादिद्रव्यसान्निध्या त्परिणामोयमात्मन । स्फटिकस्येवतत्राय लेश्याशब्दः प्रयुज्यते ॥१॥ तत्र सलेश्या लेश्यावतो जीवाः ॥ जहाओहियत्ति ॥ यथा नारकादिविशेषणवर्जिता जीवाश्चोक्ताः ॥ जीवाण भंते ! किं आयारम्भा परारम्भेत्यादिना ॥ दण्डकेन तथा सलेश्या जीवा अपि वाच्या, सलेश्यानाम संसारसमापन्नत्वस्या सम्भवेना संसारसमापन्नके त्यादिविशेषणवर्जितानां आपाता संयतादिविशेषणाना तेषापि युज्यमानत्वा तत्राय पाठक्रमः ॥ सलेसाण भंते ! जीवा किं आयारम्भेत्यादि ॥ तदेव सव भवर् जीवस्थाने सलेश्याइति वाच्यमिति, अयमेको

वाणयरसिद्धविरहिताजाणियव्वा वाणमंतराजाववेमाणिया जहाणेरइया सलेस्साजहाओहिया किण्हलेसस्स नीललेसस्स काउलेसस्स जहाओहियाजीवा णवरपमत्तअप्पमत्ताणजाणियव्वा तेउलेसस्सपम्हलेसस्ससुक्कलेस

जारंभा । तेवेकारण वावतुमध्ये पभाव ज विरतिवन्त ते पणारम्भा पुणे मने प अविरती ते अनारम्भीनथी इत्थव । एवंजाण पचिंदिय तिरिक्खजोणिया । इम यावत् मध्ये असुरकुमार आदिदेइ पंचेंद्रिय तियच मानिव वग जाणवो अविरति पचाबी आत्मारम्भी परारम्भी तदुभयारम्भी होव पणि अनारम्भी नथी इमकहवो । मनुष्या जहाजीवा नवर सिद्धविरहिया भाणेयव्वा । मनुष्यनेंजिवे संयतासंयत प्रमत्ताप्रमत्त प कारभेद पूर्वे कह्याछे—तेमाटे जिमसंग म जीवधारीकह्या तिममनुष्य जाणवा पारभागे एतलाविशेष सिद्धारभागो रहित तेमाटे सिद्धविना कहवा । वाणमंतरा जाव वेमाणिया जहाणेरइ या मनेम्हा जहा जोहिया किण्हलेसस्स नीललेसस्स । वाणव्यंतरथाकिदेइ यावत् वेमानिकतांइ तिम कहवा जिम नारकीकह्या तिमज जाणवा एस प अविरतिपचे साधर्म्यछे तेमाटे आत्मारम्भपर्णेकरी जीवकह्या तिमे सलेशी अलेशीहुवे तेमाटे सलेशी कहेछे—लेश्यासहित तेजिमयोधे सामान्येकरी

कारवमिति ॥ मविरइपडुच्चेति ॥ इहा यम्भावो यद् प्यसयतानां सूक्ष्मैकेन्द्रियादीनां मास्मारम्भकादित्व साक्षादस्ति तथा प्यविरति मृती त्येत दसितेया नहि ते ततो मिवृत्ता मतो सयताना मविरति सत्र कारवमिति नियृत्तामांतु कपञ्चि दासाद्यारम्भकत्वे प्यमारम्भकत्वं यदाह — आ ज्ञयागस्सजवे विराहवासुत्तविहिसमग्गस्स ॥ साओइविज्जरयला भप्रत्यविसोहिजुत्तस्सत्ति ॥ १ ॥ सेतेणठेणति ॥ मय तन कारणेनेत्यय , मय मास्मारम्भकत्वा दित्वमव मारकादि चतुर्विंशतिदण्डके निरूपयन्नाह ॥ नेरइयाणमित्यादि ॥ व्यक्त मवर ॥ मणुस्सेत्यादौ ॥ मयमथः मनुष्येषु

जाव गोअणारम्भा सेतेणठेणगोयमा एवंयुच्चइ अत्थेगइयाजीवा जाव अणारम्भा ॥ णेरइयाणंभंतेकिंआयारम्भा परारम्भा तदुभयारम्भा अणारम्भा गोयमा णेरइया आयारम्भाविजावणोअणारम्भा सेकेणठेणंभंतेएवंवुच्चइ गोयमा अविरतिपडुच्च सेतेणठेणजावणोअणारम्भा एवंजावपंचिंदियतिरिक्खजोणिया मणुस्साजहाजी

वां कारवाजवा। तमथ वेते मसयमाते भविरति पडुच। तिवां मवें बधा जे वेपयमाहे मसयती छे ते भविरति भायोने एतावता भविरतीछे ते भायारम्भावि जाव वा अणारम्भा। भाम्भारम्भोछे भावपृमच्छे तदुभयारम्भो छे भवि मनारम्भो नहीं। सेतेणठेण। तेवें कारवे करो। गायमा। हेगौतम! एवंवदर। इवे प्रमारे बत। दत्वेमहत्वाजीवा जाव अणारम्भा। केतलाएक जीव भाम्भारम्भो भादिदेइ यावत् मध्दे भारम्भरहितछे एतलातार कहवा नेरइयाणभंते किंभायारम्भा परारम्भा तदुभयारम्भा अणारम्भा। हिवे भाम्भारम्भकादि पद तेहीज नारकादि चउवीसदण्डके कहेछे—नारको हेभगवन्! स्वभात्माने मवें भाप्रमापकरे पवन। परारम्भोछे पारकेभासे मावयमावयवरे बेऊने मवें पापकायकरे भथवा भनारम्भोछे भारम्भरहितछे इतिमश्न भमवत मवेछे—आयमा। हेगौतम। नेरइया भायारम्भावि जाव आणारम्भा। नारको भाम्भारंभपनि भारम्भतछे इम यावत् परारंभीपनिछे तदुभ यारम्भीपनि छे पनि भारम्भरहित नथी। एतावता भनारम्भो नहीं। सेकेणठेणभंते एवंवुच्चइ। तेकिसे भव हेभगवन्! इमवाय इतिमश्न भगवतकहेछे— गायमा। हेगौतम। नथी विरति जेहने ते भविरतो कहिये भविरति पवाभी भाम्भारम्भो भादिदेइ नोनेरइके पनि भनारम्भीनथी सेतेणठेण न जीव

नकल चिठी १

श्रीमज्जिनवरप्रसादलब्धशुद्धिप्रज्ञाञ्चितपमरवेषु श्री ५ रायधनपतिसिंहबहादुरेषु सविनयमावेदनम् ।

आगे, मैंने सुनाहै आप की एसी इच्छाहै कि पैंतालिसों जैनागम की पुस्तकें मूल टीका और भाषाटीका सहित पांच२सौ छापी जावें और साधु श्रावकों के पठन पाठन के लिये पांच सौ स्थानमें पुस्तकालय स्थापित हों सो यह अति आनंदकी बातहै, परन्तु जिन महाशयों का द्रव्य देकर पुस्तक लेने की इच्छा हो उन लोगों के निमित्त भी यदि आप की आज्ञा हो तो वेचने के वास्ते पांचसौ छापी जैन शुभ सुसाइटी की ओर से भी छपवा ली जावें यह पुस्तकें मैं अजीमगञ्ज से प्रकाश करूंगा भवे शुभम, संवत् । १९३३ । मि० । चै० । सु० । ११

द० जैन शुभ सुसाइटी

कार्यसम्पादक

मुमुक्षुपद

शहर मुरशीदाबाद

अजीमगञ्ज

नकल चिठी २

श्रीविविधविद्याविचारतत्परेषु जैन शुभ सुसाइटीकार्यसम्पादक महाशयेषु प्रतिनिवेदनम् ।

जो कि पत्र आपका द्रव्य देके खरीदनेवाले लोगों के लिये सुसाइटी की ओर से पैंतालिसों जैनागम की पांचसौ पुस्तक छपवा लेने की आज्ञा के विषय में आया सो मैं स्वीकार करता हूं कि आप जैन शुभ सुसाइटी की तरफ से, आगम की प्रत्येक पांच२ सौ पुस्तकें वेचने के वास्ते छपवा लेवें, परन्तु पांचसौ से अधिक छपानेकी आज्ञा मैं नहीं देता, यदि और कोई छपवाना चाहे तो उचित है कि पहले मुझ से आज्ञा लेलेवे क्योंकि इन ग्रन्थों पर रजस्टरी हुइहै, भवे शुभम् ।

संवत् । १९३३ । मि० । चै० । सु० । १३

द० रायधनपतिसिंह बहादुर

शहर मुरशीदाबाद

अजीमगञ्ज

दवकः कृष्णादिलेश्याभेदात् तदभेदः, तदेव मेते सत, तत्र ॥ किण्हलेसस्सेत्यादि ॥ कृष्णलेश्यस्य नीललेश्यस्य कापोतलेश्यस्य च जीवराशेर्दण्डको
यथौघिकजीवदण्डकस्तथा ध्येतव्यः प्रमत्ताप्रमत्तविशेषणवर्ज्जः, कृष्णादिषु हि अप्रशस्तभावलेश्यासु संयतत्वं नास्ति यदुक्तं ॥ पुव्वपडिवन्नओपु
णअन्नयरीएउलेसाएत्ति ॥ तद् द्रव्यलेश्यां प्रतीत्येति मन्तव्यं, तत तासु प्रमत्ताद्यभाव तस्मात् सूत्रोच्चारणमेवं ॥ किण्हलेसाणं भंते । जीवा किं आया
रंभा ? ४ गोयमा आयारंभावि जाव नो अणारंभा से केणट्ठेणं भंते । एवमुच्चइ ? गोयमा अविरइं पडुच्च ॥ एवं नीलकापोतलेश्यादण्डका व
वीति तथा तेजोलेश्यादेः जीवराशेर्दण्डका यथौघिकजीवास्तथावाच्या, नवरं तेषु सिद्धा न वाच्याः सिद्धानां अलेश्यत्वात्, तेचैव ॥ तेउलेसाणं
भंते । जीवा किं आयारंभा ? ४ गोयमा अत्थेगइया आयारंभावि जाव नोअणारंभा अत्थेगइया नो आयारंभा अत्थेगइया नो आयारंभा जाव
अणारंभा से केणट्ठेणं भंते। एवमुच्चइ ? गोयमा दुविहा तेउलेस्सा पन्नत्ता तंजहा संजयाय असंजयायस्यादि ॥ भवहेतुभूत ज्ञानमनिरूप्य भवान्तर
हेतुभूत ज्ञानादिषट्कस्वरूप निरूपयन्नाह ॥ इह भविए इत्यादि ॥ अत्र नवरं इहत्र भवे वर्तमानजन्मनि यद्वर्तते नतु भवान्तरे तदैहभविक
ज्ञानपाठो वैह प्रसत्तावसेयः तेन किमैहभविकं ज्ञानं सूत्र ॥ परभवियत्ति ॥ परभवे वर्तमानानन्तरजन्मनि अनुगामितया य द्वत्तते तस्मात्परभवि

स्स जहाणहियाजीवा णवरसिद्धाणणाणियव्वा इहभविएभंतेणाणे परभविएणाणे तदुभयभविएणाणे गोयमा

कहा सूत्रविगवायवो कृष्णलेश्योनीललेश्योने कापोतलेश्योने। कहा आघिकजीवा नवरं प्रमत्त अप्रमत्त नाणियव्या। जिम औघिक समुच्चये जीवन
ा तिम कहवा पणि एतला विशेष प्रमत्त अप्रमत्त वर्जितकहवा कृष्णादि तीन अप्रशस्तभाव लेश्याने विषे संयतपणुं नथी पने के काष्ठ पुव्वपडिव
न्नगाय अन्नयरातेउलेसी इति ॥ ते द्रव्यलेश्या आश्री कह्युं। तेजोलेश्या पद्मलेश्या शुक्ललेश्या। तेजोलेश्याने पद्मलेश्याने शुक्ललेश्याने। कहा आघिकजीवा।
जिम औघिक सामान्यसूत्र जीव कह्या तिमकहवा। नवरं सिद्धाननाणियव्वा। एतलोविशेष सिद्ध नकहवा सिद्धलेश्यारहितछे तेमाटे। इहभविएभंतेणा
ण परभविएणाणे। भवहेतुभूत आरंभ कहीने अथ भवहेतुभूत ज्ञानादि कहेछे—वर्तमानभवनेविषे जेभणवं। जेआगलाय तेहजभविकमान कहिये वर्त

नकल चिठी १

श्रीमज्जिनवरप्रसादलब्धशुद्धिप्रकाशितचमत्कारेषु श्री ५ रायधनपतिसिंहबहादुरेषु सविनयमावेदनम् ।

आगे मैंने सुनाहै आप की ऐसी इच्छाहै कि पैंतालिसों जैनागम की पुस्तकें मूल टीका और भाषाटीका सहित पांच२सौ छापी जावें और साधु श्रावकों के पठन पाठन के लिये पांच सौ स्थानमें पुस्तकालय स्थापित होंं सो यह अति आनन्द की बात है परन्तु जिन महाशयों का द्रव्य एक पुस्तक लेने की इच्छा हो उन लोगों के निमित्त भी यदि आप की आज्ञा हो तो येथम के वास्ते पांचसौ छापी जैन बृ० सुधाकरी की ओर से भी छपवा ली जावें यह पुस्तकें मैं अजीमगंज से प्रकाश करूंगा अधिं शुभम, संवत् । १९३३ । मि० । चै० । सु० । ११

द० जैन बृ० सुधाकरी

शहर मुरसीदाबाद — कार्यसम्पादक

अजीमगंज — [illegible]

नकल चिठी २

श्रीविविधविद्याधिकारतत्परेषु जैन बृ० सुधाकरीकार्यसम्पादक महाशयेषु प्रतिनिवेदनम् ।

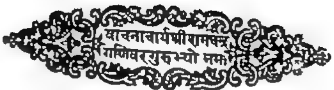
जो कि पत्र आपका द्रव्य देके खरीदनेवाले लोगों के लिये सुधाकरी की ओर से पैंतालिसों जैनागम की पांचसौ पुस्तकें छपवा लेने की आज्ञा के विषय में आया सो मैं स्वीकार करता हूं कि आप जैन बृ० सुधाकरी की तरफ से, आगम की प्रत्येक पांच २ सौ पुस्तकें छपने के वास्ते छपवा लेवें परन्तु पांचसौ से अधिक छपने की आज्ञा मैं नहीं देता यदि और कोई छपवाना चाहे तो उचित है कि पहले मुझ से आज्ञा लेलेवे क्योंकि इन ग्रन्थों पर रजिस्टरी हुई है। अधिं शुभम् ।

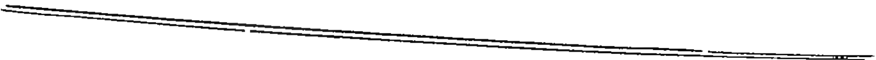
संवत् । १९३४ । मि० । चै० । सु० । १३

द० रायधनपतिसिंह बहादुर

शहर मुरसीदाबाद

अजीमगंज

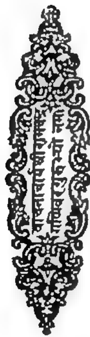

वाचनाचार्यश्रीरामचन्द्र
गणिवरगुरुभ्यो नमः



क ग्राह्योस्वित् ॥ तदुभयभविएत्ति ॥ तदुभयलक्षणयो रिह परलक्षयो र्जवयो यदनुगामितया वर्त्तते तत्तदुभयभविकं इदमेव नपारभविका क्रियत इति परतरभवेपि यदनुयातितत्याद्य, इह भवव्यतिरिक्तत्वेन परतरभवस्यापि परभवत्वात् प्रस्ततानिर्देश येह सर्वत्र प्राकृतत्वादिति, प्रश्नमिद वचनमपि सुगम नवरं ॥ इहभवियएविति ॥ इहभविकं यदिहैव वीतं नानन्तरभवे ऽनुयाति, पारभविकं यदनन्तरभवे ऽनुयाति, तदुभयभविकं तु य दिहाधीतं परभवे परतरभवेचानुवर्त्ततइति ॥ दसणंपि एवमेवत्ति ॥ दर्शन मिह सम्यक्त्व मवसेयं मोक्षमार्गाधिकारात्, यदाह – सम्यग्दर्शनज्ञान चारित्राणि मोक्षमार्ग यत्र ज्ञानदर्शनयोरेव प्रस्तावस्तत्र दर्शनं सामान्यावबोधरूप मवसेयमिति ॥ एवमेवेति ॥ ज्ञानवं दर्शनमिर्वचनाभ्यां समवसेयं चारित्रसूत्र, निर्वचने विशेष, तथाहि, चारित्र मैहभविकमेव नहि चारित्रवा निह भूत्वा तेनैव चारित्रेण युक्त चारित्री भवति यावज्जीवतावधि कत्वा तस्य किंच चारित्रि- ससारे सर्वविरतस्य देशविरतस्यच देवेष्वेवोत्पादा, तत्रच विरते रत्यन्त मभावा न्मोक्षगतावपि चारित्रसम्भवाभावा

इहभवियएविणाणे परभवियएविणाणे तदुभयभवियएविणाणेय । दसणंपिएवमेव । इहभवियएभंतेचरित्ते परभवि एचरित्ते गोयमा इहभवियएचरित्ते णोपरभवियएचरित्ते णोतदुभयभवियएचरित्ते । एवतवेसजमे । असवुडेण

मान ग्रनंतर भवे जेज्ञान ते पारभविकज्ञानकहीये । तदुभयभविएणाणे । इहभवपरभव बेजनेविषे ज्ञान ते तदुभयभविकज्ञानकहीये ? उत्तर । गोयमा हेगौतम । इहभवे भण्यं परभवे साथे नजाय ते इहभविकज्ञानपणि हाय । परभविएविणाणे । जेग्रनंतरभवे ज्ञानहोय तेपणि ज्ञानहोय । तदुभयभविएविणाणे जे बा भण्यं तेपरभवे परतरभवेपणि साथमावे तेपणि ज्ञानहवे । दसणपिएवामेव । जिमज्ञानकह्यं तिम दर्शनपणि जाणवं । इहभवियएभंतेचरित्ते । इहभ विक हेभगवन् चारित्रहाय पृच्छा । परभवियएचरित्ते । परभविक चारित्रहाय इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा । हेगौतम । इहभविकहोय चारित्र हाय या वज्जीवमवधिपणाथकी । णोपरभवियएचरित्ते । नहीपरभविक चारित्रहाय चारित्रवंतमरी वली परभव तेथाय चारित्रवंतमहोय । णोतदुभयभविए च रित्ते एवतवेसयमे । नही तदुभयभविक चारित्रहाय एचारित्रजणा ते तपसयम भेदथी बेप्रकारेछे तेमाटे इम तप इमहीज संयमपणि जाणवो । असी



र्म चारित्रि ॥ तदुभयभविए त्ति ॥ तदुभयरूपयो रिह परलक्षणयो भवयो यदनुगामितया वर्त्तते तत्तदुभयभविकं इदमेव नपारभविकं क्रियत इति परतरभवेपि यदनुयातितत्प्राग्य, इह भवव्यतिरिक्तत्वेन परतरभवस्यापि परभवत्वात् प्रस्तुतनिर्देशो येह सर्वत्र प्राकृतत्वादिति, प्रश्नमिद समपि सुगम मथरं ॥ इहभविएविति ॥ एहभविकं यदिहा धीतं नान्यत्र भवे ऽनुयाति, पारभविकं यदन्यत्र भवे ऽनुयाति, तदुभयभविकं तु य द्विरधीत भवान्तरेपरतरभवेचानुवर्त्तत इति ॥ दंसणंपि एवमेवत्ति ॥ दर्शन मिह सम्यक्त्व मवसेय मोक्षमार्गाधिकारात्, यदाह – सम्यग्दर्शनज्ञान चारित्राणि मोक्षमार्ग यत्र ज्ञानदर्शनयोरेव मवस्था तत्र दर्शन सामान्यावबोधरूप मवसेयमिति ॥ एवमेवेति ॥ ज्ञानवत् इममतिवचनाभ्या समवसेय चारित्रमूय मितचने विशय सप्ताहि, चारित्र मैहभविकमेव नहि चारित्रवा मिह भूत्वा तेनैव चारित्रेण पुन चारित्री भवति यावज्जीवतावधि कत्वा तस्य क्रिय चारित्रिक ससारे सर्वविरतस्य देशविरतस्य देवेषूत्पादा, तत्र विरते रत्यन्त मभावा न्मोक्षगतावपि चारित्रसम्भवाभावा

इहभविएभविणाणे परभविएभविणाणे तदुभयभविएभविणाणेय । दंसणंपिएवामेव । इहभविएभंतेचरित्ते परभवि एचरित्ते गोयमा इहभविएचरित्ते णोपरभविएचरित्ते णोतदुभयभविएचरित्ते । एवतवेसंजमे । अ(सवुडेण)

मान यन्तर भवे येज्ञान ते पारभविकज्ञानकहाये । तदुभयभविएनाणे । इहभवपरभव बेहुभवेविषे ज्ञान ते तदुभयभविकज्ञानकहीये ? उत्तर । गोयमा हेगोतम । इहभवे भणं परभवे साथ नआय ते इहभविकज्ञानपवि हाय । परभविएविणाणे । जेयन्तरभवे ज्ञानहोय तेपणि ज्ञानहोय । तदुभयभविएविणाणे जइहां भण्युं तेपरभवे परतरभवेपणि यावत्तें तेपणि ज्ञानभुवे । दंसणंपिण्यामेव । जिमज्ञानकह्यु तिम दर्शनपणि जाणवू । इहभविएभंतेचरित्ते । इहभ विक हेभगवन् ! चारित्रहाय भगवान् । परभविएचरित्ते । परभविक चारित्रहाय इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा । हेगोतम ! इहभविकहोय चारित्र हाय या वज्जीवपर्यन्तचारित्रपालवो । णोपरभविएचरित्ते । नहीं परभविक चारित्रहाय चारित्रवतमरी नहीं परभवे तेहाज चारित्रवतमहोय । णोतदुभयभविए च रित्ते एवतवेसंजमे । नहीं तदुभयभविक चारित्रहाय एचारित्रवतमा ते तपसंयम भेदथी येप्रकारेछे तेमाटे इम तप इमहोय संयमपणि जाणवो । असंवु

चारित्रंति चर्मवपचापा गृह्यते मोचेव तस्मा किंचि स्वरत्वात् यावज्जीवमिति प्रतिघाससमाप्ते सद्भ्यसा यापवणात् ' पमुद्धागरूपत्वाद चा रित्रस्य शरीरामावेन तद्योगा दतएवोच्यते ॥ सिद्धे चोचरित्ती नोचचरित्ती ॥ नोचचरित्रोतिच चचिरते रज्जावाद्विति, अमन्तर चारित्रमुक्त न्त च द्विधा तपः संयमलदाविति तपोनिरूपणायातिदेशमाह ॥ एवतवेसव्वमेति ॥ प्रसनिवचनात्मा चारित्रचतप संयमी चाव्यो चारित्ररूपत्वा तपोरिति नमु सम्यपि प्रामादेर्मोक्षहेतुत्वे दर्शनपव परितज्य तत्वेश्मोक्षहेतुत्वा चसाच—अठेचपरिसाठे सुठुपरवसवंगदेयद्यु ॥ सिज्झतिपर चरिया दंसवरियावविज्जनीति ॥१॥ चोमल्पेत तथिवयितु मरजवाद ॥ चसमुमेवमित्यादि ॥ चरत्त चरर ॥ चसमुमेचति ॥ चसवुतो इनिरुद्वा चनुर ॥ चचमारेति ॥ चविद्यमानपद सापुरित्यर्थ ॥ सिज्झइत्ति ॥ सिध्यति चचासचरमभजतया सिद्धिगमनयोग्यो भवति॥ बुज्झइत्ति ॥ स एव यदा समस्तकेवलज्ञानतया सचरपर्यायोपेता चिकिलान् जावादिपदार्थान् जानाति तदा बुध्यतइति व्यपदिश्यते ॥ मुचइति ॥ सएव सञ्जात केवलबोधो भवोपग्राहिकर्मांशान् प्रतिसमयं विमुच्यमानो मुच्यतइत्युच्यते ॥ परिनिव्वाइत्ति ॥ सएव तथा कर्मपुद्गलाना मनुसमयं यथा यथा क्षय माप्नोति तथातथा शीतीभवन् परिनिर्वातीति प्रोच्यते ॥ सव्वदुक्खाणमंतकरइति ॥ सएव चरमभवायुषोन्तिमसमये सपिताशेषकर्मा यदु खाना मन्तं करोतीति प्रस्यत इतिप्रश्नः उत्तरन्तु कण्ठ्य चवर ॥ गोयमोसेमकति ॥ गोमेव ॥ एवंडेति ॥ पथ मनन्तरोक्तत्वेन प्रत्यक्षोर्थो नाथः, समर्थो

नवेश्रणगारे सिज्झति बुज्झति मुच्चति परिणिव्वाति सव्वदुक्खाणमंतकरेति गोयमा णोइणठेसमठे सेकेणठेण

पूछे ? पसवुडेममते चचमारे। चसवृत संवर पायचवार रूप्या नयी चेममयम् । एवमी चाह । सिज्झति बुज्झति मुचति परिनिव्वाति । सिद्धगमन योग्यदाव केवलज्ञानेकरी जीवादिपदार्थकावो मधममवारो छूटे कर्मपुद्गलपयरी शीतलोभूत हुवे । सव्वदुक्खाणमंतकरेति । चाजमाने केवले सेवव मांयमां घन करे एम गोतम पूछो यको उत्तर भगवत कहे—गोयमा । हेगोतम । णाइणठेसमठे । एयव समर्थ नहीं । केणठेणं भंते आयर्वतमकरेति।ते केवारणे हेममवन् । वादयममे भंतनकरे? भगवतकहे उत्तर । गोयमा । हेगोतम । असवुडेअणगारे । असंवृत्त संवरे चाचवचार कनाम

यतयाम् बन्धमाश्रयूयमुद्गरप्रहारजर्जरितत्वात् ॥ आउयवज्जाओत्ति ॥ यस्मादेकम भवग्रहणे सकृदेवान्तर्मुहूर्तमात्रकालमायुर्बध्नन्ति सात उत्तमा पुव्वाइति ॥ सिढिलबन्धणबद्धाओत्ति ॥ सप्तबन्धनं स्पृष्टताया ; बद्धताया ; निधत्ततावा तेन बद्धा आत्मप्रदेशेषु सम्बन्धिताः पूर्वा बस्य या मधुनतर परिणामस्य कथञ्चि दभावादिति शिथिलबन्धनबद्धा एता यामुनापब द्रष्टव्याः प्रशमनमावस्य निष्प्रसत्वात् ताः किमित्याह ॥ धणियबन्धण बद्धाओपकरेइत्ति ॥ गाढतरबन्धना बद्धावस्थाया ; निधत्तावस्थाया निकाचितावा प्रकरोति प्रथमसमयादिकर्माधलया इकर्तुमारभ्यते असंवृतत्वस्या सुनयोगरूपत्वेन गाढतरप्रकृतिबन्धहेतुत्वा दाह च–जोगापयडिपएसंति ॥ पीनः पुन्यभावेऽसंवृतत्वस्य ता करोतीत्यवति तथा हस्सकालस्थि तिका दीर्घकालस्थितिकाः प्रकरोति तत्र स्थितिरूपात्तस्य कम्मणो ऽवस्थान ता महत्कालामवर्तौ करोतीत्यर्थः असंवृतत्वस्य कषायरूपत्वेन स्थिति बन्धहेतुत्वा दाह च–ठिइमणुभागकसायहोइत्ति ॥ तथा ॥ मंदाणुभावत्यादि ॥ इहानुभावो विपाको रसविशेषइत्यर्थः ततश्च मन्दानुभावाः परिपेलवरसाः सती गाढरसाः प्रकरोति असंवृतत्वस्य कषायरूपत्वा देवा नुभागबन्धस्य च कषायप्रत्ययत्वादिति ॥ अप्पपएसेत्यादि ॥ अस्य स्तोक

उते जाव अणुपरियट्टइ संवुडेणं भंते अणगारे सिज्झइ ? गोयमा संवुडेणं अणगारे आउयवज्जाओ सत्तकम्मपगडीओ धणियबन्धणबद्धाओ सिढिलबन्धणबद्धाओ पकरेइ दीहकालठितीयाओ हस्सकालठितीयाओ पकरेइ तिव्वाणुभावाओ मंदाणुभावाओ पकरेइ बहु

भी एमजसाधु । आउखावर्जी सातकर्मप्रकृतिओ शिथिलबन्धनबद्धा थकी प्रकरे हस्वकालस्थितीयाभी दीर्घकालस्थितीयाभी प्रकरे । मंदानुभावथकी मातकर्मनी प्रकृतिबांधीहुवी जेमाटे एकभवनेविषे एकवार अन्तर्मुहूर्त्तमानेविषे आउखानोबंध तमाटे आउखुं वर्ज्युं तेविशथो बांधीये शिथिल बंधपेशरीने बांधीहुवी ते गाढा बंधना निकाचितबंधन करे असो प्रसलाथ कहतां योगानावनो स्थितिबनो तेहनो दोषवालो अल्पकालनो स्थितिबरे एतावता अल्पोस्थिति करे । मंदानुभावाअतितीव्रानुभावाथापकरेइ । कम्मनो केमरस अनुभावकर्म अल्परसथकरनो हुवि ते तीव्रअनुभाव तेहमनो तीव्ररसबहु रे । अल्पप्रदेसगाभोबहुप्रदेसगाभापकरेइ । अल्पवालो प्रदेश भाग कहदलिक परमाणुं पुंजो ते अल्पप्रदेशभागवाले कर्मपणारे दलाय । आउयकम्मं सि

पारिभंगि कमलपत्राया मुद्रीयते मीवेन तस्य जिन्त्रि रुकरत्वात् यावज्जीवमिति प्रतिज्ञासमाप्ते सावद्यस्या यामरत्वात्, ' अमुप्रामरूपत्वाच चा रित्रस्य शरीरामावेन तद्योगा दृतएवाच्यते ॥ सिद्धे नोचरित्तो नोअचरित्ती ॥ नोअचरित्तीसिय चाविरते रजोयादिति, अनन्तर चारित्रमुक्त त्त च द्विधा तप संयमवदादिति तयोनिरूपवायातिदमाह ॥ एवतवेसंजमेति ॥ प्रशमिववनाख्या चारित्रवतपः समयी माथ्यो चारित्ररूपत्वा तयोरिति, ननु सन्यपि ज्ञानादेर्मोक्षहेतुत्वे दर्शनएव परितप्य तत्सेअमोक्षहेतुत्वा द्यदाज—अठेमचरित्ताओ सुडुपरक्कमकगवेषु ॥ सिज्झतिचर मरडिया इंवडरहियासिज्झतीति ॥ १ ॥ योमस्येत तव्रिकचिनु मयजमाह ॥ असंवुडेणमित्यादि ॥ व्यक्त नवर ॥ असंवुडेणति ॥ अनवृतो ऽनिरुद्ध मवद्वार ॥ अणगारेति ॥ अविद्यमानगृहः साधुरित्यर्थ ॥ सिज्झइत्ति ॥ सिध्यति महासयरममत्तया सिद्धिगमनयोग्यो भवति॥ बुज्झइत्ति ॥ स एव यदा समुत्पन्नकेवलज्ञानतया सम्परयद्योपेता विविताम् जावादिपदार्थान् जानाति तदा बुध्यतइति व्यपदिश्यते ॥ मुच्चइत्ति ॥ सएव सञ्जात केवलबोधो भवोपमाहिकर्मभिः प्रतिसमयं विमुच्यमानो मुच्यतइत्युच्यते ॥ परिनिव्वाइत्ति ॥ सएव तेषां कर्मपुद्गलाना मनुसमयं यथा यथा क्षय माप्नोति तथातथा शीतीभवन् परिनिर्वातीति प्रोच्यते ॥ सव्वदुक्खाणमंतकरइति ॥ सएव चरमभवायुषोन्तिमसमये चपिताशेषकर्मांशः सर्वदुःखाना मन्त करोतीति भण्यत इतिमक्तः उत्तरन्तु व्यक्त नवर ॥ नोइणट्ठेसमट्ठेति ॥ नोनैव ॥ इणट्ठेति ॥ अय मनन्तरोक्तत्वेन प्रत्यक्षोऽर्थो भावः समर्थो

...ते ऽणगारे सिज्झति बुज्झति मुच्चति परिणिव्वाति सव्वदुक्खाणमंतकरेति गोयमा णोइणट्ठेसमट्ठे सेकेणट्ठेण

पूछे ? असंवुडेभंते अणगारे । अर्थात रोके आश्रवद्वार जेणे एवा अणगार । एवो साधु । सिज्झति बुज्झति मुचति परिणिव्वाति । सिद्धगमन योग्य होय केवलज्ञानेकरी जीवादिपदार्थने जाणेभवकर्मकरी छूटे कर्मपुद्गलक्षयकरी शीतळीभूत थवे । सव्वदुक्खाणमंतकरेति । पाछलकाळे केवळे जीवन गोयमा एम करे इम गौतम पूछ्ये थके उत्तर भगवंत कहे—गोयमा । हे गौतम । णोइणट्ठेसमट्ठे । एनव समर्थ अर्थ नहीं । सेकेणट्ठेण भंते आवर्तनकरेति । ते केणे अर्थे हे भगवन् । एवमुच्यते भगवन्? भगवन्तकहे उत्तर । गोयमा । हेगौतम । असंवुडेअणगारे । अर्थात रोके आश्रवद्वार एवाम

मगारः प्रमत्तसयतादिः, सच चरमशरीरः स्या दचरमशरीरोवा, तत्र य चरमशरीर स्तदपेक्षयेव सूत्र, य स्त्वचरमशरीर स्तदपेक्षया परम्परयै मूत्रार्थो वमेयो ननु पारम्पर्येणा संवृतस्यापि सूत्रोक्तायस्या बन्धनावो यत मुक्तपाक्षिकस्यापि मोक्षोवश्यं भावी, तदेवं संवृतासंवृतयोः कस्तो भेदानावएवेति ? अत्रोच्यते सत्यं किन्तु यस्संवृतस्य पारम्पर्यं तदुत्कर्षत ससाप्तभवममात्रं यतो वक्ष्यति ॥ जहन्निय चारित्ताराहण आरा

असंवुडेणं अणगारेणो सिज्झइ संवुडेण जंते अणगारे सिज्झइ हंतासिज्झइ जाव अंतंकरेइ । सेकेणट्ठेणं जंते एवं वुच्चइ गोयमा संवुडेणं अणगारे आउयवज्जाओ सत्तकम्मपगडीओ धणिययधणयराओ सिढिलबंधणबद्धाओ पकरेइ दीहकालठितीयाओ हस्सकालठितीयाओ पकरेइ तिव्वाणुभावाओ मंदाणुभावाओ पकरेइ बहुपदेसगाओ अप्पपदेसगाओ पकरेइ आउयं च णं कम्मं न बंधइ असायावेयणिज्जं च णं कम्मं णो भुज्जो भुज्जो उवचिणइ अणादीयं च णं

यथा असंवृत अणगारे सिज्झइ । ते तिवारे हे गौतम ? वली साधु अणगार ईर्यादिको तिम अणगार साधु संवृत इत्यादि पूर्ववत् यावत् यावत् अंतकर नहीं वली गौतम पूछे—संवुडे भंते अणगारे सिज्झइ । वेवे आश्रवद्वार रुंधावे वमित्कोधादि आत्मा वेवे हिंसादि ! एहवो सरविवत अणगार साधु सीझे इत्यादि भगवंत इतिप्रश्न उत्तर । हंतासिज्झइ जाव अंतकरेइ । हांगौतम संवृत अणगार सीझे यावत् अंतकरे इम सर्वकथवो । सेकेणट्ठेणं भंते एवमुच्चइ । तेकीमाटे हे भगवन् इम कहो संवृतअणगार सीझे । गोयमा । हेगौतम ! संवृतअणगार वमित्कोधादि आत्मावंत एहवासाधु आठकर्म माहि थी चोथमी आयुकर्म टाली सात कर्मप्रकृति ते । धणियबंधणबद्धाओ सिढिलबंधणबद्धाओ पकरेइ । निविड गाढवें बंध्यें बांधीछे तेमतें सिथिलबंधनकरे तेवमठीआकरे इत्यादि । दीहकालठिईयाओ । दीर्घकाल वडवाले वेदवानीछे ते । हस्सकालठितीयाओ पकरेइ । अल्प कालकालवेद्य स्थितिकरे । तिव्वाणुभावाओ मंदाणुभावाओ पकरेइ । तीव्ररसवाला मंदरसकरे । बहुपदेसगाओ अप्पपदेसगाओ पकरेइ । घणाप्रदेश हुवे ते थोडाप्रदेश करे घणा प्रदेशवंत प्रतें अल्पप्रदेशवंतकरे । आउयं च णं कम्म नबंधइ । प्रकृतिचारित्र आयुकर्म तेहने नबांधे । असायावेयणिज्जं च णं कम्मं णो भुज्जो भुज्जो उव

मदेशाग्र कूमदसिमपरिमाबं पाशाता साया ता बहुमवृक्षाग्राः प्रकरोति प्रदेशमस्यस्यापि योगमत्ययत्वा दृसवृतत्वस्य योगरूपत्वादिति ॥ मा उपवेत्यादि ॥ चायुः पुनः कर्मत्सा रसत्ताथि मभाति स्यात्म बभाति मस्मा त्रिमामाद्यजन्नोपायुप परजन्माय प्रकुर्वन्ति तेन मदा त्रिमागादि सदा मभाति मन्यदा नवभातीति तथा ॥ ममारत्यादि ॥ ममातवेदनीयस्य तु सवेदनीय कूम्म पुन भूयोभूयः पुन रुपचिनोति उपचित करोति ममु कम्मसत्वकान्तर्वाशित्वा दृता सवेदनीयस्य पूर्वोक्तविशेषणस्यस्य तदुपचयप्रतिपत्ते किमतदु ग्रहणेन ? त्यत्रोच्यत, मसंवृतोत्यमतदुःखितो भवतीति प्रति पादनेन जपजनना दसवृतत्वपरिहारार्थे मिद मित्यदुष्टमिति ॥ ममारयति ॥ ममादिक मविद्यमानादिक ममातिकवा मविद्यमानस्वजन स्वकवा मतीत मवमन्तुः त्यमातिकान्तुः स्मतानिमिततयेति मभातीतं, मथवा, मघम पापमसिश्रयेनेत गत मघातीतं ॥ मववमग्गंति ॥ मवसम्गति वे मोक्षमों तत्रावक सत सन्निवेशात् मववयग्ग मनन्तमित्यर्थ मथवा मवनतमासव मम मत्तो यस्य ततपर, तन्निवेश दृनवमताम मसदेव सनाधार दृनवतामभिति मथवा मनवमत मपरिच्छम मग्र स्परिमाण यस्य ततथा, मतएव ॥ दीहमद्वति ॥ दृपार्द्वदीकालदीर्घोध्यवा दीपमार्गं ॥ चाउरंतति ॥ चतुरन्त देवादिगतिभेदा त्पूर्वादिदिग्भेदाच चतुर्विभाग, तदेव स्वार्थिकाण्प्रत्ययोपादाना चातुरन्तम् ॥ ससारकंतारंति ॥ भवा रत्स ॥ मणुपरियट्टइति ॥ पुन पुन भ्रमतीति, मसवृतस्य तावदिदं फल, संवृतस्य तु यत्स्यात् तदाह ॥ सवुडेणमित्यादि ॥ व्यक्त संवर, सवृतो

प्पपदेसगाह यक्षपदेसगाहपकरेह् घाउयचणकम्मासियवधइ सियनोवधइ असायावेयणिज्जचणकम्म नुज्जो भुज्जोउवचिणइ अणाइयचणअणवदग्गदीहमद्ध चाउरतससारकतारअणुपरियट्टति । सेतेणठेण गोयमा

सवर । पपुन मवाममामकारे भातुकम बिचारे पाथे । मिमता मवर । विचारे मथाथ । पमायावेयविच्छपपपमम । ममातावेदनीय पपुन पंचाप्रामसका रे मम । सुम्बामुम्बा तपविचर । बारवार बनोबनो पुष्ट बनिष्ट करे । मदादस्यपप मवमदग्गदोहमद्ध । जिम ससारमी पादिमवो मपम मवाममासका रे पागे पंतमवीं दोषमाम । चाउरत संसारकतार मणुपरियट्टति । चारगतिरूप भव ससार मवस्त उजाड वारवार परिभ्रमण करे । सेतेणट्ठेण गो

परमतः पापकमशमायरणाद्यमुर्ज कर्म येन स तथा ॥ इहेति ॥ एत प्रत्यापञ्चप्रत्यचा तिर्यंगवा मनुष्यजगाद्वा च्युतो मृत ॥ पंचेति॥ जन्मान्त रे दयः स्यादिति प्रश्नः ॥ जेइमेजीवत्ति ॥ य इम प्रत्यचासन्ना पञ्चन्द्रियतिर्यञ्चो मनुष्यावा। ॥गामेत्यादि॥ ग्रामादि ष्वधिकरणभूतेषु, तत्र ग्रामी जनपदप्रायजनाश्रितस्थानविशेष, आकरो लोहाद्युत्पत्तिस्थान, नकर करवर्जितं, निगमो वणिग्जनप्रधानं स्थानं, राजधानी यत्र राजा स्वय वसति खेटं धूलीप्राकारं, कर्बटं कुनगरं, मडम्ब सर्वतो दूरवर्ति सन्निवेशान्तरं द्रोणमुखं जलपथस्थलपथोपेतं पत्तन विविधदेशागतपण्य स्थानं, तच द्विधा, जलपत्तन स्थलपत्तनं चेति रत्नभूमि रित्यन्ये, आश्रम तापसादिस्थान, सन्निवेशो घोषादि रेषा द्वन्द्व स्तत स्तेषु, अथवा

इएदेवेसिया अत्थेगइएणोदेवेसिया सेकेणट्ठेण जाव इतोचुते पेच्चाअत्थेगइएदेवेसिया अत्थेगइएणोदेवेसिया

गोयमा जेइमेजीवा गामागरनगरनिगमरायहाणिखेडकब्बडमडंबदोणमुहपट्टणासमसन्निवेसेसु अकामतण्हा

अतमा...वश्याय। अत्थेगइया आदेवेसिया। केतमायक देवता भवाय। सेकेणट्ठेण जावइतोचुते। ते कैमर्थं हे भगवन्! इमकार्य यावत् इहांथकी चवी मराने। पेचा अत्थेगइएदेवेसिया। पञ्च कल्लाएक जीव देवताभाव देवतापणे उपजे। अत्थेगइएणोदेवेसिया। केतलाएक जीव देवता नथाय। गोयमा हेगौतम! जेइमजीवा। जे ए प्रत्यक्षजीव पंचेन्द्री तिर्यंच मनुष्य। गामागरनगरनिगमरायहाणिखेडकब्बडमडंबदोणमुहपट्टणासमसन्निवेसेसु। जे ए प्र त्यक्षजीव पंचेन्द्री तिर्यंच मनुष्य गामथकी...जन...रहितहाय जिहां ...पद्मादिक ते गाम आकरादि सातधातुना उत्पत्ति स्थानक तेआगर कर रहितनगर जिहां वाणिया प्रधान तेनिगम जिहां स्वयमेव राजावसे आडसहित तेराजधानी जिहां धूलिना प्राकार...तेखेडक कुत्सितनगर तेक ब्बड अनेक...दूर...नगरथी...आमत्रण तथा...जाय तेमडंब जलमार्ग स्थलमार्ग जलथको वस्तु आवे ते द्रोणमुख पट्टण ते ग्रामप्रकारना दाय... जिहां...भाव तयप्रकारे एकजलपत्तन बीजास्थलपत्तन एकने आदएक रत्नभूमिपत्तन कहेछे—आश्रम तापसादिस्थान सीरादिकनो ग्राम ते सन्निवेश। अकामतण्हाए। अकामनिजरा मनमभिलाषविना तथा एमे मनअभिलाषविना क्षुधाएमे भूखेपीडाता कामतृष्णापते। अका

चिता सतकजन्मस्वेपि सिज्झति ॥ यथा ऽसंवृतस्य पारम्पर्य तदुत्कपतोपार्त्तपुद्गलपरावर्त्तमानमपि स्या द्विरायनाफलत्वा तस्येति ॥ सीयय इति ॥ व्यतिव्रजति व्यतिक्रामतीत्यर्थः, अनगारः संवृतस्या रिसमतीत्युक्तं, यस्तु तत्त्व स विशिष्टगुणसिद्धः सन्, किम्बेऽतः स्या यत्रेति ; प्रश्न यमार ॥ जीवेणमित्यादि ॥ व्यस्त अवर ॥ असजरति ॥ असाधुः सयमरहितोवा ॥ अविरएति । प्राणातिपातादिविरतिरहितः, विशेषेणया त पसिरतो यो न भवति सो विरतः ॥ अप्पडिहएत्यादि ॥ प्रतिहत निराकृत मतीतकालकृत निन्दादिकरणेन प्रत्याख्यातन्च यद्भविष्यं अनागत कालविषयं पापकर्म प्राणातिपातादि येन स प्रतिहतप्रत्याख्यातपापकर्मा, तन्निषेधा दप्रतिहतप्रत्याख्यातपापकर्मा अनेना तीतानागतपापक मोनिषेधतः असयतो ऽविरतये त्यनेन वर्त्तमानपापासवस्य मभिहितं, अथवा न नैव प्रतिहतं तपोविधानेन मरणकालादारात् क्षपित प्र त्याख्यात न्च मरणकाले प्याश्रवनिरोधेन पापकर्म येन सतथा, अथवा न नैव प्रतिहतं सम्यग्दर्शनप्रतिपतित, प्रत्याख्यातन्च, सर्वविरत्याङ्गी

अणवदग्गदीहमद्धं चाउरंतससारकंतारंयोईवयइ सेतेणट्ठेण गोयमा एवंसवुडेअणगारेसिज्झइ जाव अंत करेइ । जीवेणंभंतेअसंजएअविरएअप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे इतोचुते पेच्चा देवेसिया गोयमा अत्थेग

विस्तार । भगवंता वेदनीयकर्मनजे मधों वारवार पुष्टकरे । अनादीयनन्त अनवदग्र सोकपंच चाउरंतससारकंतार वातोपवति । इमकेहनो भावि एनहुए अनगार विस्तार जावअंतकरे । ते तेणेअर्थे हेगोतम । इणेप्रकारे संवराव्रे इ दीजेवे एहवो अनगार ते अजकरे इतिभाव मोक्षजायदत्यर्थ । सेते हेव गोयमा तें बार इत्व यावत् सवदुःखना अंतकरे अनगार ते सहजपणाना मोक्षे इसोजसो तेहनो बोलो तेनिमित्तमन विस्तारका ध्वे । जीवेणंभंते असंजए अ विरए अप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे । देवहुवें अथवा मनुवे हसो प्रश्नकरेछे—हेभगवन् असाधु सयमरहित प्राणातिपातादि विरतिरहित सवोहणा नाप निरावेनरो तथा पचखावेनरो पापकर्म जेणे । इतोचुते । इहांथी मनुष्य...भवथी... पेच्चा देवेसिया

तस्तेषु वयनोकेषु देवामयषु ॥ देवताभ्यवहारोऽभवतीति ॥ येमेदत्यत्र यच्छब्दोपादाना त्ते दृषतयोपपत्तारो भवन्तीति द्रष्टव्यं ॥ ससिति ॥ यं वयनोके ग्रामामनिजरायतो येयतयो त्पद्यन्त तेषामिति ॥ सेजहाकामएति ॥ सेसि ॥ अथ यथा येनप्रकारेण ॥ नामेति ॥ संज्ञावने वाक्यालङ्का रेया ॥ एइति ॥ मामम्यवाप्यः अलङ्कारार्थेएववा ॥ इर्हति ॥ इह मत्यसोके ॥ असोगवणेइयत्ति ॥ अशोकवन, इतिशब्द उपप्रदर्शने, ऽनुस्वार लोपः संधिय प्राकृतत्वात् वाइति विकल्पार्थः, अथवा असोगवणइत्यत्र प्रथमैकवचनकल एकार, इवशब्दस्तु वाक्यालङ्कारे, अशोकवनमस्तु प्रसिद्धमेव नयर ॥ सत्तवणत्ति ॥ सप्तपर्णः सप्तच्छदइत्यर्थः ॥ कुसुमियत्ति ॥ सजातकुसुम ॥ माइयत्ति ॥ मयूरित, सञ्जातपुष्पविशेषमित्यर्थः ॥

एसुदेवत्ताएउववज्जारोजयत्ति । केरिसाणन्नते तेसियाणमंतराणदेवाणदेवलोगा पन्नत्ता गोयमा सेजहानामए इहंमणुस्सलोगंमि असोगवणेइवा सत्तवण्णवणेइवा चंपयवणेइवा चूयवणेइवा तिलगवणेइवा लाउयवणेइ वा निग्गोहवणेइवा छत्तोहवणेइवा असणवणेइवा सणवणेइवा अयसिवणेइवा कुसुंभवणेइवा सिद्धत्थवणे

तर कहेवे त म्यतरनेविषे देवतापणे उपजवावार थाय उपजेसवय । केरिसाण भंते तेसि वाणमंतराण देवाण देवलोका पन्नत्ता । केहवाछे हे भगवन् ! ते पक्कामनिजरायणो व्यंतरदेवता मांहि उपना ते वाणव्यंतरदेवताना देवमाव कह्या एतले व्यंतरीकदेवताना भवन केहवाछे इतिमन्त्र । गोयमा । हे गौतम ! सेजहानामए । ते यथानामेति वाक्यालंकारे । इहंमणुस्सलोगंमि । एह मनुष्यलोकनेविषे । असोगवणेइवा । अशोकवृक्षना वनने इ वाक्यालंकारे वा अथवा । सत्तवण्णवणेइवा । सप्तपर्ण माटो पुष्पजातिविशेष तेहना वन अथवा । चंपयवणेइवा । चंपकवन अथवा । चूयवणेइवा । आंबवन । तिलग वणेइवा । तिलकवृक्षनावन । लाउयवणेइवा । तुंबविशेष तेहना वन पाठांतरे लौंगवन । निग्गोहवणेइवा । वडवृक्षना वननेविषे । छत्तोहवणेइवा । छत्राकवन । असणवणेइवा । असनवृक्षविशेष तेहना वन । सणवणेइवा । शणवृक्षनावन । अयसिवणेइवा । अलसीवृक्षनावन । कुसुंभवणेइवा । कुसुंभव न । सिद्धत्थवणेइवा । धोलासरसव तेहनावन । बंधुजीववणेइवा । सांपहिरियाफूल विशेष तेहनावन । नित्यकुसुमित । सदैव बारेमास फूलायमान । मा

सवइयत्ति ॥ सवकितं सञ्जातपल्लवसय , अङ्कुरवदित्यथः ॥ थवइयत्ति ॥ सावकित सञातपुष्पस्तवकमित्यथ ॥ गुलुइयत्ति ॥ सञ्जातगुल्मम , गु
ल्मुश्च लतासमूहः ॥ गुच्छियत्ति ॥ सञ्जातगुच्छ गुच्छश्च पत्र समूहः यद्यपिच स्तवकगुच्छयो रविशेषो नाम कोश पीत तथापीह पुष्पपत्रक
तो विशेषो भावनीयः ॥ जमलियत्ति ॥ यमलतया समश्रेणितया ततरूका व्यवस्थितत्वा स्सञ्जातयमलत्वम यमलित ॥ जुयलियत्ति ॥ युगलतया
ततरूणां सञ्जातत्वेन युगलित ॥ विणमियत्ति ॥ विशेषेण पुष्पफलभरेण नमित मिलितरूपत्वा विनमित ॥ पणमियत्ति ॥ तेनैव नमयितु मारब्ध
त्वा त्प्रणमित प्रणम्यस्या विरूपोपेत्वा विति तथा सुविभक्त अतिविमला सुनिष्पन्नतया पिण्डको गुच्छो मञ्जरीच प्रतीता तापेवा वतंसकाः
शेखरका तान् धारयति य स सुविभक्तपिण्डीमञ्जरीवतंसकधर , तत कुसुमिताद्दीना कर्मधारयइति ॥ सिरीएत्ति ॥ श्रिया वनलक्ष्म्या ॥ उव

इया यधुजीववणेइवा निच्चकुसुमियमाइयलयइयथवइयगुलुइयगोच्छियजमलियजुवलियाविण मियपणमिय
सुविभत्तपिंडिमंजरिवडिंसगधरे सिरीए अतीवअतीवउवसोभेमाणे चिठ्ठइ । एवामेवतेसिवाण
मंतराणदेवाणदेवलोया जहन्नेण दसवाससहस्सठिईएहिं उक्कोसेण पलिउवमठिईएहिं बहुहिं वाणमंतरेहिं

दवनवृक्ष । मवरा पूवक्रमना मकथ । बवदल । नित्य पूलवाति । मुवइथ । लतासमूह । गाच्छिय । पत्रसमूह । जमलिय । समश्रेणेरचना । य
मलिय । डालडालप्रत्य पवठावे । विनमिय । पूलफलमे भारेनम्यो । पणमिय । मारेकरी प्रकर्षेनम्यो । सविभत्त । पतिप्रघट । पिंडिमंजरिवडिंसधरे
कुंडिया मजरा नवकपननो अवतंसक मयतस मुकुट तेनुमते धरे । सिरोए मतोव २ उवसोभमाणे २ चिट्ठइ । वनलक्ष्मीवडी पतिशो पतिशो ए
शोभितचकहु ते मध्यवर्ती एतलेवडा सदृश्यवे रहे । एवामेवतेसिवाणमंतराण देवाण देवलोया । एमज निश्चे तेहना वाणव्यंतर देवताना देवलोक पणे
जघा तेहनाल भावया । जहन्नेण दसवाससहस्स ठिईएहिं । जघन्यथको दशसहस्र १ कमनो स्थितिमांथवो स्थितिवडोये । उक्कोसेण पलिउवम
ठिईएहिं । उत्कृष्ट प्रयालो पल्योपमनी स्थिति भावथो । बहु हिं वाणमंतरेहिं । घणे वाणव्यंतर । देवेहिय । देवकरी । देवीहिय । देवीय

मानेमाचेति ॥ एव द्विवचन मानीश्व प्रमात्वे इत्यथः ॥ भाइम्रति ॥ कचिन्मरेहे देवाना देवीनाम्व पुन्दै रात्मीयात्मीयावासमर्यादानुल्लङ्घनेन व्या
सा भाकूमाम्नोत्र मयादाप्रति, तथा वचिनु ॥ विरथरति ॥ तैरेव पुन्दैर्भिआयासीमोल्लङ्घनेम व्याप्ता, विपाभ्दो विसेपशावो, ॥ उवत्यठति ॥
उपसीक्षा उपन्नाम्नः सामीप्यार्थ सृष्ट्य साच्चादनाय, सातय उत्पताङ्गि निपतङ्गिया मवरतकीठासक्ते सपर्युपरिच्छादिताः ॥ सपकति ॥ ससी
का सास्त्र परस्परसश्लेपाय सतत्र कपि तैरेव कीडमाने रन्योन्यस्पद्दया समन्तत यलङ्गि राच्छादितादति ॥ कुठति ॥ स्पष्टा मासनपयमरस
पपरिभोमझारेव परिभुक्ता स्फुटाक्षा समकाक्षा व्यन्तरसुरनिकरकिरणविसरनिराकृतान्धकारतया ॥ पयगाढगाढति ॥ गाढ याढ मवगाढा सौरे
य सकसक्रीडास्पानपरिभोमनिश्चितमनोज्ञि रयोपि व्याप्ता, गाढावगाढा इतिवाच्ये मात्रलत्यर दवगाढगाढा, इदम देवत्वयोग्यस्य मौवस्यापि
धानेन तदपाप्य सामर्थ्यो दवसीयतएवेति ॥ पत्यणइए मीत्रवेमिए श्यपतस्यादा तुल्लस्य पचस्य निवचन कृत इष्टव्यमिति, यथो हेमकनिगमना

दयेहिय देवीहिय ग्रातिग्रा चितिग्रा उवत्थडा सपडा फुडा ग्रवगाढगाढसिरीए अतीवम्रतीवउवसोभेमा
णा उवसोभेमाणा चिठति । एरिसगाण गोयमा तेसिवाणमतराण देवाणदेवलोगा पणत्ता सेतेणठेणगोय

मराने । पातिमा चितिमा उवत्थडा सपडा फडा पयगाढगिरीए पतीव २ उवसोभेमाणा २ चिठति । पायवो मरवासाढमो देव देवीने पुरुषगेने
यामा भायगोभूमिका मरवादाम्बा याम्या माडायेनदेवो ग्रारम्भावासा परसर मनो दूल्लेगो रमता सधारामो परे पायरा परसा मासन
सवन रमन मागहारेवरो भागवती तथा पवमार उचात सवनमोडा पभिमापा देवता मोचायगे याम्या गाढ मकयपचैरमा सभीरवरो पतीव २
मामता २ यमा रहेवे । एरिवमाय । एवना मेमप्रपोमाय वावे । मायमा । गोतम । तेसिवाणमतराण देवाण देवलोगा पणत्ता । तेवना पानमतर
देवना देवताय मवम कथा । तेतेनहु गायमा एवयुवर । ते तेवेवारणे वेगीतम एम इपेणकारे वायु । जोवेन पसमए । जोव पसमतो । मायदेवेसि
घा । वावत् देवनापवेजपजे । सेवमते २ तिभयव गोयमे । आमे पूर्ण्य साभगवतेवाम एसो दमजव पचवा मयो । एतसे भगवतमा महमोन देवाघा

तत् एव मित्यमेव प्रवृत्त । नान्यथा, यमेन जगद्गुरुणे बहुमान दर्श
धमाह ॥ सेवं भते ! सेवभतेत्ति ॥ यन्माया पूर्वं सद्भगवद्भिः प्रतिपादित तत् एव मित्यमेव प्रवृत्त । नान्यथा, यमेन जगद्गुरुणे बहुमान दर्श
यति द्विवचनम्भद्र भक्तिसंभ्रमकर्त्त एव कत्वा भगवान् गौतम श्रमण भगवत महावीर वन्दते नमस्यतिवेति ॥ प्रथमशते प्रथमोद्देशकविव
समाप्तमिति ॥ १ ॥ व्याख्यातः प्रथमोद्देशको ऽथ द्वितीय आरभ्यते, अस्य चैव सम्बन्धः प्रथमोद्देशके चलनादिधर्मकं कर्म
तदेवेह निरूप्यते तथो द्देशकार्थसङ्ग्रहस्या ॥ दुक्खेपत्ति ॥ यदुक्तं तदिहोच्यते तत्प्रस्तावनार्थश्च पूर्वोक्तमेव ग्रन्थ स्मरयन्नाह ॥ राय
सादि ॥ पूर्ववत् ॥ जीवेणमित्यादि ॥ तत्र ॥ सयकडंदुक्खंति ॥ यत्परकृत तद्वेदयतीति प्रतीतमेवातः स्वयकृतमिति पृष्टवानिति ॥ दुक्ख
सांसारिक सुखमपि वस्तुतो दुःखमिति दुःखहेतुत्वा दुःखं कर्म वेदयतीति काकुपाठात् प्रश्नः निर्वचनन्तु यदुदीर्णं तद्वेदयति अनुदी

वुच्छइ जीवेणभंतेसयकडंदुक्खवेदेइ गोयमा अत्थेगइ ॥ वागिहेणयरेसमोसरण परिसाणिग्गया जाव एववयासी जीवेणभंते सयकडंदुक्खं वेदेइ गोयमा अत्थेगइ
णमंसित्ता संजमेणतवसा अप्पाणंभावेमाणेविहरइ पढमसए पढमोउद्देसोसम्मत्तो ॥ १ ॥
सेवंभंतेसेवंभंतेत्तिभगवंगोयमे । समणंभगवंमहावीरंवंदइ णमंसइ वं

इत्यादि ॥ भगवत गौतम । श्रमण भगवत महावीरवन्दत । श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामीने वांदे । नमस्कार नमस्कारकरे वंदित्ता । वांदीने । नमंसित्ता ।
नमस्कारकरीने । सजमेन तपसाआत्मान भावितमाने विचरइ । सप्तभेदवाले संयमके पालनेवाले तपकेकरनेवाले पुरातनकर्म निर्जरे एहवा श्रीगौतमस्वामी आ
त्माने भावताथका विचरे । पढमसए पढमोउद्देसो सम्मत्तो । १ । प्रथमशते प्रथमउद्देशको विवरण समाप्तमिति ॥ १ ॥ चलना
दिक कह्या तेकर्म दुःखना हेतुभणी दुःखनो अधिकार कहेछे—तथा उद्देशकार्थ संग्रहणि गाथानेविषे । दुक्खेत्ति । इत्याधिकारी तेकहेछे—रायगिहेण
यरे समोसरणं । राजगृह नगरे श्रीमहावीरस्वामी समोसर्या । परिसाणिग्गया जाव एववयासी । परिषदा वांदीने पाछीगई वलीगया पूछवाने गौ
तमस्वामि श्रीमहावीरस्वामीने वांदीने यावत् एम कहे तेमगौतम कहेतो । जीवेणभंते सयंकडं दुक्खं वेदेइ गोयमा । जीव हेभगवन् ! जेने जे कीधो कर्म ते

मस्पादि तम्मनो येदममेय नास्ति सस्मा पुरीषयेन्यासि नानुदीर्णं, नपयस्थानमारमेवादेति चातो यद्यं येद्यमपि सर्भ वेदयति, एव मवेदय ती त्यय व्यपदिश्यते यथयं यद्यमेयय कम्म–कालायकम्माय समोवक्षो भत्सीतिवचनादिति ॥ एव जाय वेमाणिए इत्यमन चतुर्विंशतिदण्डक। मुचित। मचैव ॥ नेरइमक भत ! सयकम्मित्यादि ॥ यय मेकत्वेन दण्डक सापा बहुत्वे मान्य:, सचैव ॥ जीवाय भंते सयकड दुक्खं वेयतीत्या दि ॥ तया मरइयावं भत ! सयंकड दुक्खमित्यादि ॥ मन्येकत्वे योर्षा यहुत्वेपि सएवेति किं बहुत्वप्रममति ? अत्राप्यते मपि मस्तु न्येकत्वयु

यवेठइ ऋत्येगइयनोवेदेइ सेकेणठेणन्तेएयवुच्चइ ऋत्येगइययेदेति ऋत्येगइयनोवेदेति गोयमा उदिम्नवेदे ति गोऋणुदिणवेदेति । सेतेणठेणएवयुच्चइ गोयमा ऋत्येगइयवेदेइ ऋत्येगइमणोवेदेइ एयचउवीसदण्डएण जायवेमाणिए । जीवाणन्तेसयकडदुक्खवेदेति गोयमा ऋत्येगइयावेदेंति ऋत्येगइयाणोवेदेति । सेकेणठेण न्तेएययुच्चइ गोयमा उदिणयेदेति णोऋणुदिणवेदेति एय जाय वेमाणियाजीवेण न्तेसयकडऋाउयवेदेति

नवेदे इमाता मसिकहे पणि पातेकोषा दुक्ख नवेदे इतिमत्र । हेगोतम ! अत्येगइययवेदे । कोतलाएकजोव स्वकृतमसवेदे । भरनेगइसनोवेदेइ । कोतलाएक जोव स्वकृतमदुःख नवेदे । सेकेणठेणभते एवबुचइ । गोतम पूछे–ते स्यामाटे हेभगवन् ! इम कह्य । परयेगइएवेदेंति । कोतलाएक वेदे । अत्येग इयनावेदेंति । कोतलाएक स्वकृतदुःख नवेदे । गायमा । भगवतकहेछे–हेगोतम ! उदिण वेदेंति । उदयमाप्युतेकर्म वेदे । पी अनुदिर्ण वेदेति । नथी उदय याप्या तेकम वेदेनथी । सेतेणट्ठेणं एववुचइ । तेणकारणे इमकह्य । गोयमा । हेगोतम । अत्येगइय वेदेइ । कोतलाएक जोव स्वकृतदुःख वेदे । अ त्येगइयणावेदेइ । कोतलाएकजोव स्वकृतदुःख नवेदे सदय माप्या तेमाटे । एवचउवीसदण्डएणं । इम चउवीसदण्डकमेंविषे कहवो । जाव वेमाणिए । याव त् वेमानिकमर्मे जाणवा ए एकवचनपाठी कह्य ॥ हिवे बहुवचनपाठो कहेछे–जीवाणभंतेसयकडदुक्खवेदेंति । जीव हेभगवन् ! पोते कृतदुःखवेदे इ तिमत्र भगवतकहेछे–गोयमा ! हेगोतम । अत्येगइयावेदेंति । कोतलाएक जोव स्वकृतकर्म वेदे । अत्येगइयाणो वेदेंति । कोतलाएक जोव स्वकृतदुःख

स्यो र्यविक्षेपो दृष्टो, यथा—सम्यक्त्वादेरेक जीव माश्रित्य षट्षष्टिसागरोपमाणि साधिकानि स्थितिकाल उक्तो नानाजीवा नाश्रित्य पुनः सर्वा द्धेति, एव मत्रापि समये स्थितिशङ्काया मनुत्पन्नो मनुष्यः, यत्पत्तावुत्पन्नमात्रित्रिक्षिप्यनुत्पादनार्थेस्वा द्वेति यथा यु प्रधानत्वा कारकादिष्वप दयस्या युराश्रित्य दण्डकद्वयम् ॥ जीवेणमित्यादि ॥ एतस्य चेय पूर्वोक्तभावना यदा समर्जिता मायुर्यद्द पुनश्च कालान्तरे परिणामविशेषात् तृ तीयपर्वोपयोग्य निर्वर्तितं वासुदेवेनेव ततायुस्तु मभृतिकत्योच्यते पूर्वेषद कथि कवेदय त्यनुदीर्णत्वा तस्य, यदापुन यथैवमद्द तत्रैवो त्पद्य ते तदा वेदयतीत्युच्यते, तथैव तस्यो दितत्वादिति अथ चतुर्विंशतिदण्डक माहारादिभि र्विरूपयन्नाह ॥ नेरइयेत्यादि ॥ व्यक्त यावत ॥ स

गोयमा अत्थेगइयवेदेंति अत्थेगइयणोवेदेंति जहादुक्खेणदोदण्डगा तहाआउएणवि एगत्तपोहत्तिया एगत्तेण जाव वेमाणिया पुहत्तेणवितहेव । णेरइयाणं भंते सव्वेसमाहारा सव्वेसमसरीरा सव्वेसमुस्सासणिस्सासा गो

भवदे। नेरइयेभगते एवपूछ । गोतमकहेछे— ते आमाटे हेभगवन् एमकह्यु । गोयमा । हेगोतम । उदिर्णपदेंति । उदयआव्या ते वेदे । जीवस्थित वेदेंति । नही उदयआव्या ते नवेदे । एवंजावंवेमाणिया । इम चउवीस दण्डक यावत् वैमानिकवर्ग । जीवेणभते सयकड आउख वेदेंति । किंवे नार कादिकने आयु कर्म प्रधानथी तेमाटे आउखा आश्री दण्डकविषे कहेछे—जीव हेभगवन् आपणुकड आयुकर्म वेदे भगवंत कहेछे—हेगोतम । अत्थेगइ य वेदेंति । केतलाएक वेदे उदय आव्यु ते वेदे एटला । अत्थेगइयाणो वेदेंति । केतलाएक नवेदे उदयआव्या विना नवेदे । जहादुक्खेण दोदण्डगा । जिम दुःखनेविषे वेदवावना एकवचने बहुवचने अथवा उदयआव्युं वेदे उदयनआव्यो ते वेदेनही । तथा आउखविषेदोदंडगा । तिम आउखानेविषेपणि दोय दण्डक कहेवा । एगत्त । एकवचनआश्री एकजीव । पोहत्तिया । बहुवचनआश्री घणा जीव । एगत्तेणं जाव वेमाणिया । एकवचने एकजीव आश्री याव त् वैमानिकतांई कहेवा । पुहत्तेणवि तहेव । बहुबे घणा जीव आश्री पणि तिमहीज एतले वैमानिकतांई कहेवा । नेरइयाणभंते सव्वेसमाहारा । किंवे चउवीसदण्डक आहारादिकरी कहेछे—नारकी हेभगवन् । सगला सरीखा आहारवाळे । सव्वेसमसरीरा । सगला सरीखे शरीरेहोय । सव्वेसमु

हामरीरायमप्पमरीरायेत्यादि ॥ इहास्पत्व महत्यम्बा पेक्षिक तत्र अपन्यमस्पस्य मगुलासङ्ख्येयभागमात्रस्य गुरुरुष्टम्तु महत्य म्पम्बम्तु सतमा मत्य मताए नवधारणीयशरीरापेक्षया उत्तरवैक्रियापत्नयासु अपन्यमगुमसङ्ख्यातभागमात्रस्य मितरगु पनुःसहस्रमानस्वमिति एतेनच फिसमस रीरा इत्यत्र प्रश्न उत्तरमुक्त शरीरविषमताभिपानेसति पाहारोच्छ्वासयो वैषम्य सुगप्रतिपाद्य भवतीति शरीरमहस्य द्वितीयस्थानोक्तस्यापि प्र पर्म नियचन मुक्त पया हारोच्छ्वासप्रमयो र्निर्वचनमाह ॥ तत्वमित्यादि ॥ ये यतो महाशरीरा स्ते तदपेक्षया बहुतरा न्पुद्गला नाहारयन्ति महाशरीरत्वादेव दृश्यतेहि लोके दृहच्छरीरो बहु भुक्ते अल्पशरीरश्चाल्प इत्थमेव हस्तिशशकवत् बाहुल्यापेक्ष चेदमुच्यते अन्यथा दृहच्छरीरोपि

यमा णोइणट्ठेसमट्ठे सेकेणट्ठेण जते एवमुच्चइ णेरइयाणोसव्वेसमाहारा णोसव्वेसमसरीरा णोसव्वेसमुस्सासणि स्सासा गोयमा णेरइयादुविहा पणत्ता तजहा महासरीरायअप्पसरीराय तत्थणजेतेमहासरीरातेबहुतराए

स्सासनिस्सासा । समगाने सरीरना उमास नीसासनीय पछने प्रश्नोत्तर भगवत कहे—गोयमा । हे गौतम ! णोइणट्ठेसमट्ठे । एपर्थ समर्थनथी तुल्यथी इत्यत्र । सेकेणट्ठेणभते एवमुच्चइ । ते किसे कारणे हे भगवन् । इमकह्यु । णेरइयाणोसव्वेसमाहारा । नारकी सर्व सरखा सरीरना आहारवंत नहीं । णो सव्वेसमसरीरा । सगला सरीरे शरीरे सरखा । णोसव्वेसमुस्सासनिस्सासा । सगला सरीरे उमास नीसासे सरीख इमपूछ्या भगवंत कहे । गोयमा । हे गौतम । नेरइया दुविहा पन्नत्ता तजहा महासरीराय अप्पसरीराय । नारकी बेप्रकारे कह्या ते कहेछे—इक्ते पहमपणू तथा मनहपणू अपेक्षा स हित तिहां प्रथम महत्वप कहेछे उत्सेधांगुलनो असंख्यातमो भाग शरीर ने उत्कृष्ट महत्वपणू पांचसे धनुषमान ए भवधारणीय शरीरनी अपेक्षायें कहा उत्तर वै क्रिय शरीरनी अपेक्षायें जघन्य अंगुलने असंख्यातमें भाग शरीर उत्कृष्ट सहस्रधनुष हुवे तेमाटे नारकी महाशरीरपणाथे बीजा अल्पशरीरपणाथे एव बेभेदे । तत्थण जेतेमहासरीरा तेबहुतराए पोग्गले आहारेंति । तिहां पूर्वोक्त बेपदमायें जे महाशरीरी छे ते घणातपणा पुद्गलनो आहारकरे लोकमांहि पणि दीसेछे मोटाशरीरनो धणो घणो पुद्गलनो आहारकरे हाथीनीपरे तथा ससलानीपरे ते नारकी असातावेदनीय कर्मसहितथी तेजिम मोटाशरी

नापि दृश्यं भजति अल्पशरीरोपि कश्चित् भूरि भुंक्ते तथाविधमनुष्यवत् अपुनरेवमिह बाहुल्यपक्षस्यैव आश्रयणात् तेच नारकाउपपातादिसद्वेद्या
नुभवा दन्यथा सद्वेद्योदयवर्त्तित्वेन कालेन यथा–महाशरीरा दुःखिता तीव्राहाराभिलाषाय भवन्तीति ॥ बहुतराएपोग्गलेपरिणामेंतित्ति ॥
आहारपुद्गलानुसारित्वात् परिणामस्य बहुतरा नित्युक्तं परिणाम श्चापृष्टो प्याहारकार्य मितिकृत्वोक्तः तथा ॥ बहुतराएपोग्गलेऊससंतित्ति ॥
उच्छ्वासतया गृह्णन्ति ॥ निस्ससंतित्ति ॥ निःश्वासतया विमुञ्चन्ति महाशरीरत्वादेव दृश्यतेहि–बृहच्छरीरः स्वजातीयेतरापेक्षया बहूच्छ्वासनिः
श्वासइति, दुःखितोपि तथैव दुःखिताय नारकाइति, बहुतरा नाणुच्छ्वसन्तीति तथा आहारस्यैव कालकृतं वैषम्यमाह ॥ अभिक्खणमाहारंति
त्ति ॥ आभीक्ष्ण्येन पौनःपुन्येन यतो महाशरीरः स तदपेक्षया शीघ्रशीघ्रतराहारग्रहणवानित्यर्थः ॥ अभिक्खणंऊससंतिअभिक्खणंनीससंतित्ति ॥ एतेहि
महाशरीरत्वेन दुःखिततरत्वात् दृश्नीत्व अनवरतमुच्छ्वासादि कुर्वन्तीति तथा ॥ जेतेइत्यादि ॥ येते इह ये इत्येतावतैव वाक्यसिद्धौ यत्तेइत्युच्यते
तद्भाषामात्रमेवेति, ॥ अप्पसरीराअप्पतराएपोग्गलेआहारेंतित्ति ॥ ये यतो अल्पशरीरा स्ते तदाहारणीयपुद्गलापेक्षया अल्पतरान् पुद्गला नाहार

पोग्गलेआहारेंति बहुतराएपोग्गलेपरिणामेंति बहुतराएपोग्गलेऊससंति बहुतराएपोग्गलेणीससंति अभि
क्खणआहारेंति अभिक्खणपरिणामेंति अभिक्खणऊससंति अभिक्खणणीससंति तत्थणजेतेअप्पसरीरा तेण

रना घणीज्ञाय तेमज्ञाडुबोधवा तोभुआहारना अभिलाषी हुवे । बहुतराए पोग्गलेपरिणामेंति । मोटाशरीरना नारकीने घणापुद्गल शरीरे परिणमे आ
हारपुद्गलने अनुसारवको परिणामने बहुतरपणुंकह्युं । बहुतराएपोग्गले । इम नारकी घणापुद्गल वारवार । ऊससंति । ऊससे उश्वासरूपें ग्रहे । बहु
तराए पोग्गले णीससंति । अल्पत घणापुद्गल वारवार नीससे निश्वासरूपेंकरे तथा आहारना कालकृतवैषम्य कहेछे । अभिक्खणमाहारेंति । वारवार
आहारग्रहे । अभिक्खण परिणामेंति । एमोटाशरीरना घणो अने अतिदुःखिपणाथका वारवार परिणमे । अभिक्खणंऊससंति । घणो अतिदुःखवंतो वार
वार ऊसासले । अभिक्खणंणीससंति । वारवार नीसासामूके । तत्थणंजेतेअप्पसरीरा । तिहां पूर्वोक्त नेरइयामांहि जे अल्पशरीरी छोटाशरीरनाधणी ने

यन्ति अल्पशरीरत्वा देव ॥ आहच्चमाहारंतीति ॥ कदाचि दाहारयन्ति कदाचि नाहारयन्तीति, महाशरीराहारग्रहणान्तरालापेक्षया बहुतरका मान्तरालतयेत्यर्थः ॥ आहच्च ऊससंति आहच्च नीससंतित्ति ॥ एत अल्पशरीरत्वेनैव महाशरीरापेक्षया ऽल्पतरत्तु ऽस्त्वा दाहत्य कदाचि त्स्मातर मित्यर्थः, उच्छ्वासादिकुर्वन्ति, यच नारकाः सप्ततमे वोच्छ्वासादिकुर्वन्तीति, प्रागुक्त सम्महाशरीरापेक्षये त्यवगन्तव्यमिति, अथवा अपर्याप्तका ले ऽल्पशरीराः संतो लोमाहारापेक्षया ना हारयन्ति उच्छ्वासापर्याप्तकत्वेनच नोच्छ्वस त्यन्यदा त्वाहारयत्युच्छ्वसन्तिचे त्यत आहत्याहारयन्त्या हत्योच्छ्वसन्तीत्युक्त ॥ सेतेणट्ठेणगोयमा ! एवंवुच्चइ नेरइया सव्वेनोसमाहारत्यादि ॥ नियममिति, समकम्मसूत्रे ॥ पुव्वोववन्नगायपच्छोववन्नगा यन्ति ॥ पूर्वोत्पन्नाः प्रथमतरमुत्पन्ना स्तद्भवेतु पश्चादुत्पन्ना स्तत्र पूर्वोत्पन्नाना मायुष स्तदन्यकर्मणाञ्च बहुतरवेदना दल्पकर्मत्व, पश्चा दुत्पन्ना

अप्पतराएपोग्गले आहारेंति अप्पतराएपोग्गले परिणामेंति अप्पतराएपोग्गले ऊससंति अप्पतराएपोग्ग ले नीससंति आहच्च आहारेंति आहच्च परिणामेंति आहच्च ऊससंति आहच्च नीससंति सेतेणट्ठेण गोयमा

नारकीजाय । तेअप्पतराए पाग्गले आहारेंति । तेनारकी ज इक नाकालआर अल्पतर थोडापुद्गलनी अहारकर तेथाठा शरीरमाठ महाशरीरनो अ पेक्षावें थोडा इक्षनी थयी छे तेमाटेज इम तेनारकीनें । अप्पतराएपाग्गले परिणामेंति । अल्पतर थोडापुद्गल परिणमें थोडा आहारमाटे तेनारकी । अ प्पतराए पाग्गले ऊससंति । अल्पतर थोडापुद्गल उसासपणे ग्रहे । अप्पतराएपाग्गलनीससंति । अल्पतर थोडा पुद्गल नीसासपणें धरे ॥ आहच्च आहारें ति । रहो २ आहारकरें अंतरासहित आहारकरे । आहच्च परिणामेंति । अंतरासहित परिणमें रहो २ परिणमें । आहच्चऊससंति । अंतरासहितउ समे उसासपणे । आहच्चनीससंति । अंतरासहित नीसासपणे । सेतेणट्ठेणं गोयमा । ते तिणेप्रकारनें हेगौतम ! एवंवुच्चइ । इमकह्यु । नेरइयानोसव्वे स माहारा । नारकी सगळा सरीखा आहारवंत नथीसही । जावनोसव्वेसमुस्सासनीसासा । यावत्शब्दें सगळा समशरीरनथी सगळा समउसास नीसास नथीसही ॥ हिवे नारकीने कर्मस्वरूप पूछेछे । नेरइयाणंभंते सव्वेसमकम्मा । नारकी हेभगवन् ! सगळा सरीखा कर्मवंतछे उत्तर । गोयमा । हेगौत

माश्च नारकाणां मायुष्कादीनां मल्पतरायां वेदितव्या महाकर्मत्वं एतच्च सूत्र समानस्थितिका ये नारकास्तानङ्गीकृत्य प्रणीत, मन्यथाहि रत्नप्र भाया मुत्कृष्टस्थिते र्नारकस्य यद्ध न्यायुषि क्षयमिते पल्योपमासंख्येयेभागे तिष्ठति तस्यामेव रत्नप्रभायां दशवर्षसहस्रस्थिति र्नारको ऽन्यः कश्चि दुत्प न्न इतिहत्वा प्रागुत्पन्न पल्योपमायुष नारक मपेक्ष्य किमसौ अल्प महाकर्मेति, एव वर्णसूत्रे पूर्वोत्पन्नस्या शुभ कर्म तत स्तस्य विशुद्धी वर्ण

एव वुच्चइ णेरइयाणोसव्वेसमाहारा जाव णोसव्वेसमुस्सासणीसासा । णेरइयाणं भंते सव्वेसमकम्मा गोयमा णोइणठेसमठे सेकेणठेण भंते एव वुच्चइ गोयमा णेरइयादुविहा पणत्ता तजहा पुव्वोववन्नगाय पच्छोववन्नगाय तत्थणजेतेपुव्वोववन्नगा तेण अप्पकम्मतरागा तत्थणजेतेपच्छोववन्नगा तेणमहाकम्मतरा सेतेणठेण

म । चाहणेसमह । एवज समवनर्हों । मेकेनरेणमते । ते केणर्वे हेभगवन् इमकह्या । एववदइ । सव नारकी सरीखा कर्मवत नहीं उत्तर । नायमा । हे गौतम । नेरइया दुविहा पणत्ता तजहा । नारकी वेभेदे कह्या तेकहेछे—पुव्वोववन्नगाय । एक पूर्वे पहिला उपना ते पूर्वोपपन्न कहीये । पच्छोववन्न गाय । केनारकी पछे उपना एवोका भेद २ । तत्थ जेतेपच्छोववन्नगा तेण । जेपूर्वोक्त वेपूर्वमाहे तेपूर्वे उपना तेनारकी घणा थोडा कर्मवतछे ते किम वेपूर्वे उपना तेहने आयु कर्म घणा भोगवीया वेयाछे थोडारहे तेमाटे । अप्पकम्मतरागा तत्थणजेते पच्छोववन्नगा तेणंमहाकम्मतरा । महाकर्मी कह्या तिहां पूर्वक्त वे वेपूर्वमाहे जे पछे उपना तेनारकी महाकर्मा वधो कह्या तेकिम पछे नारकीने आउखा भाविदेर कर्म थोडा वेयाछे घणा रहे तेमाटेमहाकर्मी कह्या एसूत्र सरीखो स्थितिना धणी जेनारकी ते अङ्गीकारकरीने कह्योछे अन्यथा रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे कोइ एक नारक जीवनी उत्कृष्टो एकसागरोपमनो स्थितिछे तेमाहे घणीस्थिति भोगवी शेष एकपल्योपमरह्योछे एतले तेहीज रत्नप्रभा नारकीनेविषे दशसहस्रवर्षनी स्थिति वो बाळोज उपना ते पूर्वे उपनापल्योपमशेषआयुष्यनारकीनो अपवादे सूं महाकर्मी कहिसविषे एतावता वाहोनमविषे इम वर्णसूत्रनेविषे पहि कहवो सेतेणठेणं गमना एवंवदइ । ते तेणेकारणे हेगौतम इमकह्या । वली गोतमपूछेछे—णेरइयाणंभंते सव्वेसमवण्णा । नारकी हेभगवन् ! सगला सरीखावर्णे

पयादुत्पन्नस्य च पश्चादुत्पन्नस्य दविशुद्धतरायत्वादिति सर्व लेश्यापूर्वेपि, इह च लेश्याधिकारेण प्रायलेश्यापाला भावद्रव्यलेश्यातु वर्णद्वारवे यो रतति ॥ समयपर्याप्ति ॥ समयदना: समानपीडा: ॥ सम्यिनूपपत्ति ॥ सम्मा सम्यग्दर्शन, तद्युक्त सज्ञाना, सम्यिनोन्नता सम्यित्वयुता, सम्मी

गोयमा एयवुच्चइ णेरइयाणजतेसव्वेसमवण्णागा गोयमा णोइणठेसमठे सेकेणठेणतहचेव गोयमा जेतेपुव्वोव वण्णागा तेणविसुद्धवण्णतरागा तहेव सेतेणठेण गोयमा णेरइयाण जते सव्वेसमलेस्सा गोयमा णोइणठेस मठे सेकेणठेण जाय णोसव्वेसमलेस्सा गोयमा णेरइयादुविहा पण्णत्ता तजहा पुव्वोववण्णगाय पच्छोववण्ण गाय तत्थणजेतेपुव्वोववण्णगा तेणविसुद्धलेसतरागा तत्थणजेतेपच्छोववण्णगा तेणअविसुद्धलेसतरागा सेतेण

टीका उत्तर। गोयमा। हेगौतम। णाइणठेसमठे। एयद समर्थनहा युक्तनहीं। सेकेणठेण तहचेव गोयमा। ते शाकारणे हेभगवन्! इमकहा इत्यादि सव पूछिओवरे वळी हेगौतम। जे पुव्वोववण्णगातेणविसुद्धवण्णतरागा। जेपूर्व उपना ते तेहन पाच्छळ आकारथाये तेमाटे अशावपचे न पछे उपना ते उन यपाजमइ तेमाटे विशुद्धवरण तरनो। तहेव। एमज निमळकहवा। सेतेणठेण गोयमा। त तेणकारणे हेगौतम। नारकी सव समवरण नहीं। णेर इयाणंभते सव्वेसमलेस्सा। नारकी हेभगवन्। सगळा नारकी लेस्याना भवाछे लश्यायवें भावलेस्या कहवो। गोयमा। हेगौतम। णोइणठेसमठे। एयर्थ समर्थनहीं युक्तनहीं। सेकेणठेण। ते स्येकारण हेभगवन्। इमकहा। जाव णोसव्वेसमलेस्सा। यावत् नारकी सघळाई समलेस्यानहीं। गोयमा। हेगौतम। णेरइयादुविहा पण्णत्ता तजहा। नारकी वे प्रकारना कह्या ते कहेछे — पुव्वोववण्णगाय। एक नारकी पूर्वे उपनाछे। पच्छोववण्णगाय। बीजा नारकी पछे उपनाछे। तत्थणजेते पुव्वोववण्णगा। तिहां जेपहलाउपना नारकी पूर्व उपनाछे। तेणविसुद्धलेसतरागा। ते नारकी विसुद्धलेश्यावन्त घणी तेह भणी तेमाटे निर्मळलेश्यावन्तछे। तत्थणजेतेपच्छोववण्णगा। तिहां जेपहलाछे जेत पछे उपनाछे। तेण अविसुद्धलेसतरागा। ते नारकी अविशुद्धलेश्याछे घणीकममाटे निर्मळपणानथी। सेतेणठेण गोयमा। तेमाटे हेगौतम। नारकी सव सरखा नहीं। णेरइयाणंभते सव्वेसमवेदणा। नारकी हे

भूता, अथवा असञ्ज्ञिन सञ्ज्ञिभूताः सञ्ज्ञीभूता विमत्ययोगात् मिथ्यादर्शन मपहाय सम्यक्दर्शनजन्मना समुत्पन्नाइतियावत् तेषां पूर्वकृतकर्मविपाक मनुस्मरता महोमह दुःखसकटमिद मकस्मा दस्माक मापतित, न कृतो भगवदर्हत् प्रणीत सकलदुःखक्षयकरो विषयवि षमविषपरिभोगविमलश्चेतोनि र्धर्म, इत्यतो मह दुःख मानस मुपजायते, अतो महावेदना स्ते असञ्ज्ञीभूतास्तु मिथ्यादृष्टय स्तेतु स्वकृतक र्मफलमिद मित्येव मजानन्तो अनुपतप्यमानसा अल्पवेदना स्युरित्येके अन्येत्वाहुः सञ्ज्ञिनः सञ्ज्ञिपञ्चेन्द्रियाः सन्तो भूता नारकत्व गताः सञ्ज्ञीभूता स्ते महावेदना स्तीव्राशुभाध्यवसाये नाशुभतरकर्मबन्धनेन महानरकोपपातात् असञ्ज्ञीभूतास्तु अनुभूतपूर्वासञ्ज्ञिजन्मा तथा सञ्ज्ञित्वा

ठेण गोयमा । णेरइयाण भंत सव्वेसमवेदणा गोयमा णोइणठेसमठं सेकेणठण भंते गोयमा णेरइयादुविहा पण्णत्ता तंजहा सञ्ज्ञिभूयाय असञ्ज्ञिभूयाय तत्थणजेतेसञ्ज्ञिभूयातेणमहावेदणा तत्थणजेतेअसञ्ज्ञिभूया तेण

भगवन् । सगलासरीषा वेदनावत पोतावत भाव । उत्तर । गोयमा । हेगोतम । भाइयइ समड । ए यथ समयनहीं युक्तनहीं । सेकेयइ भगते । तेथी वारवे हेभगवन् इमकह्य उत्तर । गोयमा । हेगोतम । नेरइयादुविहा पण्णत्ता तंजहा । नारको बेभेदे कह्या तेकहेछे—सञ्ज्ञिभूयाय । सम्यग्दृष्टी नारको तथा बीजो । असञ्ज्ञिभूयाय । मिथ्यादृष्टी नारको तथा अन्यो । तत्थणजेतेसञ्ज्ञिभूया तेण महावेदना । तिहां वेपक्षमांहि जेनारको मिथ्यात्वमनाछोडी सम्यग्दर्शन उपना तेहने पूर्वकृत कर्मविपाक संभरवाथी महादुःख ते । किस्यं । अकस्मात् संकटमांहे पड्या तेहम पश्चात्तापकरे मैं परिग्रहकर्यो धर्म नपाम्यो तो तिणकारणे सम्यग्दृष्टीने मानसो दुःखघणो । तत्थणजेते असञ्ज्ञिभूया तेण अप्पवेयणतरागा । तिहां पूर्वोक्त वेपक्षमांहे असञ्ज्ञीभूत कहिये मिथ्यादृष्टी ते पोताना कीधाकर्म एहमा जाणता मानसोपोता कीधोवेदे तेमाटे अल्पवेदनावतकह्या अथवा कोईएक इमकहेछे—सञ्ज्ञी पंचेंद्रिय थका मरी नारकपणं पाम्या ते सञ्ज्ञीभूत कहीये ते महावेदनावत कह्या तेकिम तीव्रअशुभअध्यवसायें अशुभकर्मनो बधकोथी तेणेकरी नरकनेविषे उप ना अने असञ्ज्ञीभूत जे उपना तेणे पहिला असञ्ज्ञीपणा मागम्यो तेमाटे अल्पतर अशुभअध्यवसाय कहता ते रत्नप्रभाने विषे उपजे तेमाटे असञ्ज्ञीनो अ

देवा स्वमाशुनाध्यवसायाजाता शुभशुभा मनतितीव्रवेदननरकेषू स्यात् दल्पवेदना अथवा सम्यग्भूताः पर्याप्तकीभूता असज्ञिनरस्वपर्याप्तका स्तेष क्रमेण महावेदना इतरेच अल्पवेदना इति प्रतीयतव्यति ॥ समकिरियत्ति ॥ समा तुल्याः क्रियाः कर्मबन्धनिबन्धनभूता आरम्भिक्यादिका येषान्ते समक्रियाः ॥ आरंभियत्ति ॥ आरम्भः पृथिव्याद्युपमर्दः स प्रयोजन कारण यस्याः सा आरम्भिकी ॥ पारिग्गहियत्ति ॥ परिग्रहोधर्मोपकरणवर्जवस्तु स्वीकारो धर्मोपकरणमूर्च्छाच, स प्रयोजन यस्याः सा पारिग्रहिकी ॥ मायावत्तियत्ति ॥ माया अनार्जव मुपलक्षणत्वात् क्रोधादिरपिच सा प्रत्ययः

अप्पवेयणतरागा सेतेणट्ठेण गोयमा । णेरइयाण भंते सव्वेसमकिरिया गोयमा णोइणट्ठेसमट्ठे सेकेणट्ठेण भंते गोयमा णेरइयातिविहा पण्णत्ता तंजहा सम्माद्दिट्ठीय मिच्छाद्दिट्ठीय सम्मामिच्छाद्दिट्ठीय तत्थणजेतेसम्म द्दिट्ठी तेसिण चत्तारिकिरियाउ पण्णत्ताउ तंजहा आरंभिया पारिग्गहिया मायावत्तिया अपच्चक्खाणकिरिया

वेदावे अल्पवेदनावंत शोष अथवा सन्नीभूत जेपर्याप्ता तेहने महावेदना थाय अने असन्नीने अपर्याप्ता तेहने अल्पवेदनाहोय ते तेणेअर्थ हेगोतम ! इम कह्यु नारकी समता सरीखा वेदनावंतनथी । नेतिणट्ठेण गोयमा । वली गोतम पूछेछे—नारकी हेभगवन् सगला सरीखो किया कर्मबंधनहेतु आरंभिकी प्रमुखे थाय । उत्तर । गोयमा । हेगोतम । णोइणट्ठेसमट्ठे । एयअर्थ समर्थ तो युक्तनथी । सेकेणट्ठे भंते ते केणअर्थे हेभगवन् इमकहु नारकी समक्रि यानथी उत्तर । गोयमा । हेगोतम । णेरइयातिविहापण्णत्ता । नारकी तीनप्रकारे कह्या । तंजहा सम्माद्दिट्ठीय । तेकहेछे—सम्यग्दृष्टी समकिती चोथे गुण ठाणे वर्त्ते ते । मिच्छद्दिट्ठीय । मिथ्यादृष्टी पहिले गुणठाणे ते । सम्मामिच्छद्दिट्ठीय । सम्यग्मिथ्यादृष्टी मिश्रभावे वर्त्ते । तत्थणजेतेसम्मद्दिट्ठी । तेपूर्वोक्त तीनम ध्ये जेनारकी सम्यग्दृष्टीछेसमकितीछे । तसिणचत्तारिकिरियाओपण्णत्ताओतंजहा आरंभिया । तेहने तेनारकीने आरंभिया कर्मबंधनहेतु कह्या तेक हेछे—पृथिव्यादिकने उपद्रव तेहोज कारणछे जेहनो तेआरंभिकी । पारिग्गहिया । परिग्रह ते धर्मोपकरणवर्जित वस्तुनो अंगीकारकरवा अथवा धर्मो पकरणनेविषे मूर्च्छा ते पारिग्रहिकी किया । मायावत्तिया । अनार्जवपणा उपलक्षणथी क्रोधादिकपणि तेहोज प्रत्ययकारणछे जेहने तेमायाव

फारम्भ यस्या सामायाप्रत्यया ॥ अपच्चक्खाणकिरियासि॥ अप्रत्याख्यानेन निवृत्त्यभावेन क्रियाकर्मबन्धादिः अप्रत्याख्यानक्रियेति पञ्चकिरियाउ

फज्यतिति ॥ क्रियन्ते कर्म्मकर्तारिप्रयोगोयं तनभवन्तीत्यर्थः ॥ मिच्छादंसणवत्तियत्ति॥ मिथ्यादर्शनं प्रत्ययो हेतु यस्या सा मिथ्यादर्शनप्रत्यया ननु

मिथ्यात्वाविरतिकषाययोगाः कर्म्मबन्धहेतव इति प्रसिद्धि रिहतु आरम्भादयस्ते निर्दिष्टा इति कथमनविरोध? उच्यते' आरम्भपरिग्रहशब्दाभ्या

योगपरिग्रहो योगानां तद्रूपत्वा च्कषायेषु ग्रेयग्रन्थहेतुपरिग्रहः प्रतीयतएवति तत्र सम्यग्दृष्टीनां चतस्रएव मिथ्यात्वाभावात्, शेषाणान्तु पञ्चा

पि सम्यग्मिथ्यात्वस्य मिथ्यात्वेनै वह विवक्षितत्वादिति ॥ सव्वेसमाउयाइत्यादि ॥ प्रश्नस्य निर्वचनचतुर्भङ्ग्या भावमाक्षिपत निबद्धदसवपसहस्र

तत्थणजेतेमिच्छद्दिठी तेसिंणपंचकिरियाउकज्जंति तंजहा आरंभिया जाव मिच्छादंसणवत्तिया एवंसम्मामि
च्छद्दिठीणंपि सेतेणठेणं गोयमा। णेरइयाणंनतेसव्वेसमाउया सव्वेसमोववण्णगा गोयमा णोइणठेसमठे सेके

त्रिविधो क्रिया कहोये। अपचक्खाणकिरिया। अपचक्खाण निवर्तित अभाव क्रिया असंयमादिकारण अपचक्खाणक्रिया ४। तत्थणजेते मिच्छदिठी तिहां पूर्वोक्त तीन पद्यमांहि जेमिथ्यात्वीहै। तेसिंणपंचकिरियाउकज्जंति तंजहा आरंभिया जावमिच्छादंसणवत्तिया। तेहने पांचक्रियालागे तेकहेछे आरम्भकीक्रिया इत्यादिक आरम्भ ते पृथिव्यादिक नउपघात यावत् जीवने मिथ्यादर्शन कारणकहे जेहनो ते मिथ्यादर्शनप्रत्ययकी कहिये ५। एवं सम्मामि च्छद्दिठीणंपि। इम समदृष्टीनेपणि पांच इहा मिश्रदृष्टीने मिथ्यात्वसरीख विवक्षा कीधीछे। सेतेणट्ठेणंगोयमा। तेमाटे हेगौतम नारकी सगला समक्रि यावतनहीं। वली गौतमपूछेछे—णेरइयाणभंतेसव्वेसमाउया। नारकी हेभगवन्। सगला बरोबर आउखावंतछे। सव्वेसमोववण्णगा। सगला बरोबर ऊप जावा एकेसमें ऊपजाछे भगवन्त कहेछे—गोयमा। हेगौतम णोइणठेसमठे। एअर्थ समर्थनहीं युक्तनहीं। सेकेणट्ठेणंभंतेएवंवुच्चइ। ते स्यामाटे हेभगवन् इमकहु नारकी सगला समाउया समोववण्णगानहीं उत्तर। गोयमा। हेगौतम। णेरइयाचउव्विहापण्णत्तातंजहा। नारकी च्यारप्रकारे कह्या तेकहेछे— समाउयासमोववण्णगा। केतलाएक नारकी सरीखे आउखावाले जिम बेजीव इगसरखाआउखाने आउखे पणेऊपनापणि बेहुजीव एकेसमें ऊ

समासायुषो युगपदोत्पन्ना इतिप्रथमभङ्गः, तेष्वेव दशवर्षसहस्रस्थितिषु नारके ष्वेके प्रथमतउत्पन्ना अपरेतु पश्चा दिति द्वितीयः, अन्ये विषमसमा युत्पद्यन्ते येषि दशवर्षसहस्रस्थितिषु कैचित् पञ्चदशवर्षसहस्रस्थितिषू त्पत्ति युगपद्युगपद् इतितृतीय, कश्चि त्सागरोपमस्थितय, केपितु दशाय र्षसहस्रस्थितय इत्येव विषमायुषो विषममेव चोत्पन्ना इतिचतुर्थः इह संग्रहगाथा–आहाराखलु ३ समा कम्मेवन्नेतहयलेसाए। वेयणएकिरि याए आउयउववत्तिचउभंगी ॥ १ ॥ असुरकुमाराणं भंते! इत्यादिना असुरकुमारप्रकरण माहारादिपदनवकोपेत सूचितं, तत्र नारकप्रकरणवदेव, एतद्वाह ॥ असुरेसुइत्यादि ॥ तत्र नारकसूत्रे नारकसूत्रसमानेपि आलापाविशेषेण लिख्यते, असुरकुमाराणां महाशरीरत्व भवधारणीयशरी

पढेणत्तेएयवुच्चइ गोयमा णेरइयाचउव्विहा पण्णत्ता तंजहा अत्थेगइयासमाउयासमोववन्नगा अत्थेगइया समाउयाविसमोववन्नगा अत्थेगइयाविसमाउयासमोववन्नगा अत्थेगइयाविसमाउयाविसमोववन्नगा सेतेणट्ठेण गोयमा। असुरकुमाराणंभंतेसव्वेसमाहारा सव्वेसमसरीरा जहाणेरइयातहाभाणियव्वा णवरं कम्म

पनाले ते समाउवा समाउववन्नगा कहावे एकपहिलाभागा १। कष्टगइया समाउवा विसमावववन्नगा। कइएक नारकीना जीव सरीखें आउखेहे जिम देशजीव दसमहस्रवर्षने आउखई विषम उपनाछे एकपहिलेसमये उपना बीजा बीजसमयें पछना समयांतरे उपनो एवीजाभागो २। कइयेकइया विसमाउवा समावन्नगा। कैतलाएक नारकीनाजीव विषम आउखेहे जिम एकजीव दशसहस्रवर्षने आउखेहे बीजो इग्यारसहस्रवर्ष आउखेहे प ने एकै समये उपनाछे एत्रीजाभांगा ३। कइयेकइया विसमाउवा विसमावववन्नगा। कैतलाएक नारकीना जीव विषम आयुखे जिम एकादससहस्र वर्ष आयु घने एकसागरोपमने आयुखे उपनाप्रथि विषमछे एकपहिले समये उपना बीजा समयांतरे उपनो एचोथाभांगो ४। सेतेणठेणं गोयमा। ते तिणे अर्थे हेगोतम। नारकी सगला समाउवा समाववन्नगा नहीं ॥ हिवे गोतम प्रभुप्रमुखो असुरकुमारना प्रश्न पूछेछे—असुरकुमाराणं भंते सव्वेसमा हारा। असुरकुमार हेभगवन्! सगला सरीखा आहारवन्ता। सव्वेसमसरीरा। सगला सरीखा शरीरछे इत्यादि तिहां असुरकुमार प्रकरणनेविषे

रापतया, जघन्यतोऽङ्गुलासङ्ख्येयभागमानत्व' महाशरीरत्वमुत्कर्षतः सहस्रयोजनप्रमाणत्व मुत्तरवैक्रियापेक्षया अल्पशरीरत्वं जघन्यतोऽङ्गुलसङ्ख्येयभागमानत्वं, महाशरीरत्वमुत्कर्षतो योजनलक्षमानत्वमिति तत्रैते महाशरीरा बहुतरान् पुद्गला नाहारयन्ति मनोभक्षणलक्षणाहारापेक्षया देवा ना मसीसात्मप्रमाणव प्रयाणरपेक्षया शालोमिर्हेषो वस्तुना विशेषत ततो ऽल्पशरीरयाऽऽहारपुद्गलापेक्षया बहुतरां स्ते ता आहारयन्तीत्या रिमाश्रत् अभीक्ष्ण माहारयन्ति अभीक्ष्ण मुच्छ्वसन्ति ये त्वत्र ये चतुर्थादि रूप यो[?]आहारयन्ति स्तोकसमयादेवोपरि उच्छ्वसन्ति तानाभित्या भीक्ष्ण मित्युच्यते, उत्कर्षतो ये सातिरेकवर्षसहस्रो परिचाहारयन्ति सातिरेकपक्षस्योपर्युच्छ्वसन्ति ता नभीक्ष्णं तेषामल्पकालीनाहारोच्छ्वासत्वेन पुनः पुन राहारयन्तीत्यादि व्यपदेशविषयत्वादिति तथा अल्पशरीरा अल्पतरा न्पुद्गला आहारय न्युच्छ्वसन्ति च अल्पशरीरत्वादेव अल्पान् स्ते या कदाचित्कत्व माहारोच्छ्वासयो सामान्या शरीराहारोच्छ्वासान्तरालापेक्षया बहुसमान्तरालत्वा तत्र अन्तराले तेषा हारादि कुर्वन्ति, तद

वण्णलेस्साओपरिवत्तेयव्वाओ पुव्वोववन्नगा महाकम्मतरा अविसुद्धवन्नतरा अविसुद्धलेसतरा पच्छोववन्नगाप सत्था सेसंतहेव एवंजावथणियकुमाराणं पुढविकाइयाणं भंतेसव्वेसमवेदणा हंतासमवेदणा सेकेणठेणंभंतेसव्वे

नरपद कहवा। महावेदना तथा भाविवा। जिम तेनारकीना अधिकारमेंविषे कहवा पणि एतलाविशेष असुरकुमारनें शरीरनो अल्पपणो ते भव धारणीय शरीर जघन्यथी अंगुलनो असंख्यातमो भाग मात्र अने महाशरीरपणुं उत्कृष्टथी सातहाथ प्रमाण उत्तरवैक्रियशरीरनो अपेक्षायें अल्पपणुं ज घन्यथी अंगुलना असंख्यातमाभाग महाशरीरपणुं उत्कृष्टथी लक्षयोजन मात्र तिहां जे महाशरीरवंत ते घणापुद्गलप्रतें आहारे मनोभक्षण आहारनी अपेक्षायें। अभिक्षण आहारेंति। इहां चतुर्थादिकें आहारे। अभिक्षण उसससति। ते सातस्तोक पाछिटे आहारे उत्कृष्टथी जे साधिकवर्षसह स्रे आहारे तेसाधिकपक्षें उसासल्ये इत्यादिक नारकीनी अपेक्षायें असुरकुमारने विपरीतकहवा तथापि नारकी जेपूर्वे उपना तेअपकर्मक शुद्धतरवर्ण समतरवेदनी कह्या अने असुरकुमार जेपूर्वे उपनाते। महाकर्मतरा अविसुद्धवर्णतरा अविसुद्धलेसतरा पच्छोववन्नगापसत्था। महाकर्मी अशुद्धवर्ण अ

न्त्र कुथमीत्यव विवक्षितत्वादिति, महाशरीराणां मध्याहारोच्छ्वासयो रन्तरालमस्ति। किन्तु तदप्य मित्याविवक्षितत्वादेया मीत्व मित्युक्त सिद्धम्च महाशरीराणां तेषां माहारोच्छ्वासयोरल्पान्तरत्व मल्पशरीराणान्तु महान्तरत्व' यथा—सौधर्मदेवानां सप्तहस्तमानतया महाशरीराणां तयोरन्तर क्रमेव पक्षद्वयं पक्षद्वयञ्च, अनुत्तरसुराणाञ्च हस्तमानतया अल्पशरीराणां अपरिमितं त्रयस्त्रिंशतापि त्रयस्त्रिंशद्वर्ष पक्षाइति, एवाञ्च महा शरीराणां मभीक्ष्णाहारोच्छ्वासाभिधानेमा अपस्थितिकत्व मयसीयते इतरेषान्तु विपर्ययो वैमानिकदेवेषति, अथवा ; लोमाहारापेक्षया अभीक्ष्ण मनुसमय माहारयन्ति महाशरीराः पर्याप्तकावस्थायां उच्छ्वासन्तु यथोक्तमानेनापि सततपरिपूर्णमवापतया पुनः पुन रित्युच्यते, अपर्याप्तकाव स्थायां स्वल्पशरीरा लोमाहारतो माहारय न्त्योजआहारतया इरवादिति कदाचि न नाहारयन्ती त्युच्यते, उच्छ्वासापर्याप्तकावस्थायाञ्च नो च्छ्वसन्त्यदृत् उच्छ्वसन्तीत्यतउच्यते माहत्योच्छ्वसन्तीति ॥ कम्मवण्णलेसाउपरिवक्षेपद्वाउति॥ कर्माशीनि नारकापेक्षयाविपर्ययेणवाच्यानि तथापि नारका य पूर्वोत्पन्ना लोऽल्पकर्मकाशुभतरवर्णशुभतरलेश्या उक्ता असुरास्तु य पूर्वोत्पन्ना स्ते महाकर्माणो अशुद्धवर्णा अशुभतरलेश्यावेति कथं येति पूर्वोत्पन्ना असुरा स्ते अतिकन्दर्पदर्पाध्मातचित्तास्ता नारकान् अनेकप्रकारया यातनया यातयन्तः प्रभूत मशुभ कर्मोपचिन्वन्तीत्यतो निर्वीयन्त ते महाकर्माणः अथवा ये यद्युपुच स्ते तिर्यगादिभावोत्पादकर्मप्रकृतिप्रचुरा महाकर्माणः, तथा अशुद्धवर्णा अशुभलेश्याश्च ते पूर्वो त्पन्नानां हि तीव्रत्वा च्छुभकर्मणः शुभो वर्णो लेश्याच ह्रसतीति, पश्चादुत्पन्ना स्त्वनद्धायुषो ऽल्पकर्माणो बहुतरकर्मणा मभावात् शुभकर्मणाम

शुभतरलेश्यावतच तेविष छ पूर्वे उपन्ना त पत्नी पळपनां दृपणी घणां पद्मभवम संचेले तेमाटे महाकर्मी पवना तियच मनुष्यना आयु बांधी तेमना कर्मवत तथा पद्मभवन पद्मलेश्या ते पहिना उपना शुभवम ओछवपा माटे पछेउपना तेवे तिर्यञ्चादिकना आयु बांधीनथी पवना शुभवमयोबवसा मयो तेमाटे बनोदिकशुभवेदना सूत्रनिषे नारकीनो परे असुरकुमारने तथापि भावनामेनिये विशेषवे तेकहेवे—चित्तेसमोभूत ते महावेदनावतवे

सन्नवचेव । अइहोत्ततन्नवतो भवतकालोवर्सजवइ ॥ १ ॥ कस्मादिति चे ? उच्यते येवानमानिका नारका से खायुष्ककालसमाप्त उद्वर्तन्ते म सद्भातमेवच तदापु रत सत्वयतोद्वादशमीभूतिकामून्यकालापेक्षया सिमकालस्या नन्तगुणत्वाज्ञायप्रसङ्गादिति भाष्य – किकारक्रमादिठा नेरइ याचेहमम्मिसमयम्मि । तेठिइकालस्सते जम्हासवेकविम्मति ॥ १ ॥ सव्वत्थोवेअसुन्नकालसि ॥ नारकाणा मुत्पादोद्वर्तनाविरहकालस्सो त्कषतोपि द्वादशमुहूर्तप्रमाणत्वात् ॥ मीसकालेअणतगुणेति ॥ मिश्राख्यो विवक्षितनारकजीवनिर्लेपनाकालो शून्यकालापेक्षया अनन्तगुणो भवति, यतो सौ नारकेतरे घागमनगमनकाला, सच प्रसवनस्पत्यादिस्थितिकालमिश्रितः सअनन्तगुणोभवति प्रसवनस्पत्यादिगमनागमनाना मनन्तत्वा त्स्च नारकनिर्लेपनाकालो वनस्पतिकायस्थिते रनन्तभागेवर्ततइति उक्तञ्च – थोवोअसुन्नकालो सोतकालेअबारसमुहुत्तो । ततोयअणंतगुणो मीसोनि लेवणाकालो ॥१॥ आगमणगमणकालो तसाइतरमीसिओअणंतगुणो । अहनिल्लेवणकालो अणंतभागेवणस्सइए ॥२॥ सुन्नकालेअणंतगुणेति ॥ सर्वेषां विवक्षितनारकजीवाना प्रायो वनस्पति ष्वनन्तानन्तकाल मवस्थानात् एतदेव वनस्पति ष्वनन्तानन्तकालावस्थान जीवानां नारकभवान्तरकाल उत्कृष्टो हेमितः समयेइति उक्तञ्च – सुन्नोयअणंतगुणो सोपुणपायवणस्सइगयाण । एवचयअणेरय भवतरदेसियमेवइति ॥ १ ॥ तिरिक्खजोणि

काळस्स कयरेकयरेहिंतोअप्पेवा बहुएवा तुल्लेवा विसेसाहिएवा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा असुन्नकाले, मी

या वेदा वेदावहो बोलावाव । बहुएवा । घणाकेव । तुल्लेवा । सरीखाकेव । विसेसाहिएवा । विशेषाधिककेव इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा । चैयौत म ! सम्वमाया असुन्नकाले । सवथी थाडो अशून्यकालनारकोना ओपना उत्पादनाल उद्वर्तनाकालनो विरह उत्कृष्टो बार मुहुर्तनाछे तेमाटे तेहथी । मीसकालेअणतगुणे । मिश्रकाल अनंतगुणोछे मिश्रनामविवक्षित नारकजीवनिर्लेपनाकाल ते अशून्यकालनी अपेक्षायें अनंतगुणोछे जेमाटे नारकीथी नीकलीगतिमेविये जावत् आवर्नु ते काल त्रसवनस्पत्यादि स्थितिकाल मिश्रित थको अनंतगुणो हुवे ते मिश्रकालथको । सुन्नकालेअणंतगुणे । शून्य काल अनंतगुणोछे ते किम सघले विवक्षितनारकजीवाने प्राये वनस्पतीकायनेविषे अनंतकालरहवाथी तेहीज वनस्पतीनेविषे अनंतकालरहवु ते

याव सवृत्याये यसुसकालइति । सवान्तर्मुहूर्तमाश्र, ययप यद्यपि सामान्येनतिरश्चा सुत्त, तथापि विकलेन्द्रियसम्मूर्छिममामामेवा वसेय, ते
पामेया न्तर्मुहूर्तमानस्य विरहकालस्योक्तत्वात् यदाह–भिन्नमुहुत्तोविगसि दियसुसमुच्छिमेसुविसरव । एकेन्द्रियाणातू हर्तनोपपातविरहाभावे
न शून्यकालाभावयव्व याहय–एगोयसंसमाणो वहरठवहरोववायमि । एगनिगोएविव एवसेसेसुविसएव ॥ १ ॥ पृथिव्यादिषु पुन ॥ मसुसमय
यसंखेज्जसि ॥ यचना द्विरहाभावइति, ॥ मिस्सकालेयणतगुणेति ॥ नारकवत् शून्यकालस्तु तिरश्चा नास्त्येव यतो वार्तमानिकसाधारणवनस्पती
मां ततऽद्वृसानां स्याममम्यमाक्षि ॥ मसुस्सदेवाणं जहाणेरइयाणति ॥ यशून्यकालस्यापि द्वादशमुहूर्तप्रमाणस्या वृत्तगाथा–एवनरामरावयवि
तिरियाणनयरिमतिसुण्दुा । वनिम्मयायतेसि जायवमवतठवत्थि ॥ १ ॥ एयस्सेत्यादि व्यक्त किससारएवा यस्यानं वीवस्य स्या दुत मोक्षेपीति

सकालेऽणतगुणे , सुषकालेऽणतगुणे , तिरिक्खजोणियाणसव्वत्थोवे असुण्णकाले , मीसकालेऽणतगुणे ,
मणुस्साणयदेवाणयजहाणेरइयाण , एयस्सणं भंते णेरइयससारसंचिट्ठणकालस्स जावदेवससारसंचिट्ठणका

नारय भवना यनतवामरइव् ते नारकभवना यनतवास सम्पूटो याया । तिरिक्खजाणियानसमकावे । तिय यवामिकने यवस्तोक यमूल्यकाच ते
विमयतमुहत्त मावहे हमूप यद्यपि सामान्ये तिय यने यद्योहे तथापि विकलेन्द्रो यने सम्मूच्छिमने आवयो एवोमेव यंतमुहूर्तमाय विरहकालवयो
वे तथा एकेन्द्रीनितो उद्वर्तन उपपात विरहने यभावेकरी । यसुन्नकाले । यमूल्यकालमनो यभावयोवहे पृथिव्यादिकनेविषे यवोयवसमयम सखेज्जाह
तिवयनयो विरहनाभावछे । मीसकालेयणतगुणे । नारकीनीपरे शून्यकालनो तिय यने नथीयवे केमाटे वत्तमान समय साधारण वनस्पतीना
जीवने तिरोवो यथ्याने योजा स्थानक यायजनोवे । मनुष्याय देवाय यथा नेरइयाय । मनुष्य तथा देवने जिम नारकीनेकह्यु तिमजाणवो एकने
पणि यमूल्यकाल बारमुहूर्तनोछे । एयस्स यभंते णेरइयससारसंचिट्ठणकालस्स जाव देवससारसंचिट्ठणकालस्स जावविसेसाहियावा । एहने हेभगवन् !
नारकी ससारसंचिट्ठणकालने यावत्शब्दे तिय वससारसंचिट्ठणकालने मनुष्यससारसंचिट्ठणकालने देवससारसंचिट्ठणकालने केहा केहा थको थोडाछेय

तन्नयमेव । अइहोक्त्ततन्नयतो भवतकालोत्कर्संजवद ॥ १ ॥ कस्मादिति चे ? उच्यते येषामसातमिका नारका स्तो स्वायुष्ककालस्यान्त उद्वर्तन्ते च सञ्जातमेषव तदायु रत उत्पततोन्द्वाऽऽइसमौ भूतिकाशून्यकालापेक्षया मिश्रकालस्या नन्तगुणत्वाज्ञायमसङ्गावितिसि आह्च – किकारयमादिठा नेरइयालेइमम्मिसमयम्मि । तेठिदकालस्संते जम्हासव्वेवविज्जति ॥ १ ॥ सव्वत्थोवे असुन्नकालस्ति ॥ नारकाणा मुत्पादोद्वर्तनाविरहकालस्यो त्कृपतोपि द्वादशमुहूर्तप्रमाणत्वात् ॥ मीसकालेअणंतगुणेति ॥ मिश्राख्यो विवक्षितनारकजीवनिर्लेपनाकालो शून्यकालापेक्षया अनन्तगुणो भवति, यतो सौ नारकेतरे घागमनगमनकालः, स च असवनस्पत्यादिस्थितिकालमिश्रितः सन्ननन्तगुणोभवति, असवनस्पत्यादिममागमनाना मनन्तत्वा त्स्व नारकनिर्लेपनाकालो वनस्पतिकायस्थिते रनन्तभागेवर्ततइति, उक्तञ्च – थोवो असुन्नकालो सोउक्कोसेणबारसमुहुत्तो । ततोयमवतमुणो मीसोनि क्षेवणाकालो ॥ १ ॥ आगमणगमणकालो तसाइतरुमीसिओअणंतगुणो । अहनिल्लेवणकालो अणंतभागेवणस्सइस्स ॥ २ ॥ सुन्नकालेअणंतगुणेति ॥ सर्वेषां विवक्षितनारकजीवानां प्रायो वनस्पति ष्वनन्तानन्तकाल मवस्थानात् एतदेव वनस्पति ष्वनन्तानन्तकालावस्थान जीवाना नारकभवान्तरकाल उत्कृष्टो रेगितः समयेइति उक्तञ्च – सुन्नोयअणंतगुणो सोपुणपायंवणस्सइगयाणं । एवंचेवचारय भवतरद्देसियमेठति ॥ १ ॥ तिरिक्खजोणि

कालस्स कयरेकयरेहिंतोअप्पेवा बहुएवा तुल्लेवा विसेसाहिएवा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा असुन्नकाले, मी

सा मेला मेलावबो मोलवाय । अप्पवा । बहोतेव । तुल्लेवा । सरीखाछेव । विसेसाहियवर । विशेषाधिकछेय इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा । हेगोतम ! सव्वथोवा असुन्नकाले । सवथो थोडो अशून्यकालनारकीना जीवना उत्पादकाल उदवर्तनाकालनो विरह उत्कृष्टो बार मुहूर्तनाछे तेमाटे तेहथो । मीसकालेअणंतगुणे । मिश्रकाल अनंतगुणोछे मिश्रनामविवक्षित नारकजीवनिर्लेपनाकाल ते अशून्यकालनो अपेक्षायें अनंतगुणोछे जेमाटे नारकीनो जीवोगतिमेंविषे जावत् आवतूं ते काल असवनस्पत्यादि स्थितिकाल मिश्रित थको अनंतगुणो हुवे ते मिश्रकालथो । सुन्नकालेअणंतगुणे । शून्य काल अनंतगुणाछे ते किम सघले विवक्षितनारकजीवाने प्राये वनस्पतीकायमेंविषे अनंतकालरहवापो तेहोज वनस्पतीमेंविषे अनंतकालरहव् ते

त्ति ॥ १ ॥ मोऽस्ति येषां तेनवा चरति य से मियोगिका आभियोगिकावा तेच व्यवहारत चरणवतएव मंत्रादिप्रयोक्तारो यदाह—कोउयभूईय
म्म पसिणापसिणनिमित्तमाजीवी । इड्ढिरससायगरुओ अहिओगंभावणंकुणइसि ॥ १ ॥ कौतुक सौभाग्याद्यर्थं स्नपनक भूतिकर्म ज्वरितादिभूतिदा
न प्रश्नाप्रश्नंच स्वप्नविद्यादि ॥ सलिंगाइति ॥ रजोहरणादिसाधुलिंगयुक्ता मिथ्यादृष्टय इत्यर्थः ॥ दंसणवावन्नगाइति ॥ दर्शन सम्यक्त्वं व्यापन्न
न्नष्ट येषांते तथा तेपो मिथ्यात्वमासिताः ॥ एएसिणं देवलोएसु उववज्जमाणाणमिति ॥ अनेन देवत्वा न्यत्रापि केचि दुत्पद्यन्तइति प्रतिपादित ॥
विराहियसंजमाणं जहन्नेणं भवणवईसु उक्कोसेणं सोहम्मे कप्पे ॥ इह कश्चि दाह—विराधितसंयमानां मुत्कर्षेण सौधर्मे कल्प इति यदुक्त त त्कथं
घटते द्रौपद्याः सुकुमालिकाभवे विराधितसंयमाया ईशानेउत्पादश्रवणा ? दित्यत्रोच्यते, तस्याः संयमविराधनोत्तरगुणविषया बकुशत्वमात्रकारिणी

असन्निपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं सलिंगीदंसणवावन्नगाणं एएसिणंदेवलोएसु उववज्जमाणाणंकस्सकहिंउववाए पण्णत्ते ? गो
यमा ! असंजयभवियदव्वदेवाणं जहन्नेणंभवणवासीसु उक्कोसेणं उवरिमगेवेज्जएसु, अविराहियसंजमाणं
जहन्नेणंसोहम्मेकप्पे उक्कोसेणंसव्वट्ठसिद्धेविमाणे, विराहियसंजमाणं जहन्नेणंभवणवासीसु उक्कोसेणंसोह

[illegible] मम्मत्तो भवइ पतले मिश्र तेहनं १४। एवमुत्तदेवलोएसुउववज्जमाणाणकस्सकहिंउववाए पण्णत्ते। एहने हेभगवन् ! देवलोकनेविषे ऊपजता
ने केहने किस्यास्थानकनेविषे ऊपजवोकह्यो ? एतले देवगति टाणो कोनाओस्थानकनेविषे पणि केहनोऊपजवो इसो जघन्यो इतिप्रश्न भगवतकहेछे—गो
यमा ! हेगौतम ! असंजयभवियदव्वदेवाणं । असंयती भवियद्रव्यदेवने । जहन्नेणंभवणवासीसु । जघन्यथकी भवनपतीने विषे ऊपजवोकह्यो । उ
क्कोसेणंउवरिमगेवेज्जएसु । उत्कृष्टथकी उपरिले ग्रैवेयके एतले नवमे ग्रैवेयकेऊपजे । अविराहियसंजमाणं । अविराधित साधुने । जहन्नेणसोहम्मे
कप्पे । जघन्यथकी सौधर्मनामा देवलोके ऊपजवा होय । उक्कोसेणंसव्वट्ठसिद्धेविमाणे । उत्कृष्टथकी सर्वार्थसिद्ध विमाननेविषेजाय ऊपजे । विराहिय
संजमाणं । विराधित साधुने चारित्रविराधे तेहने । जहन्नेणं भवणवासीसु । जघन्यथी भवनपतीनेविषे ऊपजवोहोय । उक्कोसेणंसोहम्मेकप्पे । उत्कृष्ट

रियसंत्रमासजमावति ॥ तदूव्यतिरेकिणा ॥ मसबीजति ॥ मनोसभिरविताना मत्रामनिर्ध्वरावतो, तथा ॥ तावसावंति ॥ पतितपत्राधुपमोग वतो वासतपस्विना तथा ॥ कदप्पियावंति ॥ कन्दर्प्पः परिहासः स यषामस्ति तेमवा ये चरन्ति ते कन्दर्प्पिकाः कान्दर्पिकावा व्यवहारत धरणवन्तएव कन्दर्पकौत्कुच्यादिकारकाः तथाहि गाथा—कहकहकहस्सहसय कन्दप्पोअणिहुयायउल्लावा कंदप्पकहाकहय कंदप्पुवएससंसाय १॥ भुमनयणवयणदसण च्छदेहिंकरपायकन्नमाईहिं। तसकरेइजहजह हसइपरोअत्तणाअहसं॥ २॥ वायाकुक्कुइएपुण तकपयंसेइजस्सअप्पसो। नाणा विहजीवरुए कुव्वइमुहतूरएचचेत्यादि॥ ३॥ भोअहसणविरयणा सुअप्पसत्थासुभावणं कुणइ। सोतव्विहेसुगच्छइ सुरेसुजइहोइचरणजीवोत्ति॥ ४॥ ततस्ते चाकन्दर्प्पिकावा॥ चरगपरिव्वायगावंति॥ चरकपरिव्राजका धाटिभैक्ष्योपजीविन स्त्रिदण्डिन, अथवा; चरकाः कच्छोटकादयः परिव्राजकास्तु क पिलमुनिसूनवो स्तेषां॥ किब्बिसियावंति॥ किल्बिषं पाप तदस्ति येषां ते किल्बिषिका स्ते च व्यवहारत चरणवन्तोपि ज्ञानाद्यवर्णवादिनो य योक्तं—नाणस्सकेवलीणं धम्मायरियस्ससव्वसाहूणं। माईअवण्णवाई किब्बिसियभावणंकुणइत्ति॥ १॥ तत तेषां तथा॥ तिरिच्छियावंति॥ तिरश्चां गवाश्वादीनां देशविरतिभाजां॥ आजीवियाणंति॥ पाखण्डिविशेषाणां नाग्न्यधारिणां गोशालकशिष्याणा मित्यन्ये॥ आजीवंति वा ये अविवे किलोकतो लब्धिपूजाख्यात्यादिभि स्तपश्चरणादीनि ते आजीविकास्तित्वना जीविका अतस्तेषां, तथा॥ आभिओगियाणंति॥ अभियोजन विद्या मंत्रादिभि परेषांवशीकरणादि अभियोगः स च द्विधा, यदाह—दुविहोखलुअभिओगो दव्वेभावेयहोयनायव्वो। दव्वम्मिहोइजोगा विज्जामंतायभावम्मि

जमाण अससीण तावसाण कंदप्पियाण चरगपरिव्वायगाणं किब्बिसियाणं तिरिच्छियाण आजीवियाण

सेवतो दासो भसखरो नटपवहाना चउचत्तारेने ८। चरगपरिव्वायगाण। चिरंजिया कपिलमुनिना सवाभोसाभे ८। किब्बिसियाण। ज्ञानादिना अवचवादवादे तेरमे १ । तिरिच्छियाण। तिर्यंच गाय घघाहि यावकपनपाखे तेरमे ११ । आजीवियाण। पाखण्डीविशेष अथवा गोशालाना शिष्य तेरमे १२। आभिओगियाण। व्यवहारे चारित्रवत चका मंत्र यंत्रादिकना करणहार १२ । सलिंगीदंसणवावन्नगाणं। रजोहरणादि साधु वेषछे प

त्ति ॥ १ ॥ मोऽस्ति येषां तेऽनया चरन्ति च ते आभियोगिका आभियोगिकाश्च तेच व्यवहारत श्चरणवन्तएव मन्त्रादिप्रयोक्तारो यदाह—कोउयभूइकम्मे पसिणापसिणनिमित्तमाजीवी । इड्ढिरससायगरुओ अहिओगं भावणं कुणइत्ति ॥ १ ॥ कौतुकं सौभाग्याद्यर्थं स्नपनकं, भूतिकर्म ज्वरितादिभूतिदानं प्रश्नाप्रश्नं स्वप्नविद्यादि ॥ सलिंगाणंति ॥ रजोहरणादिसाधुलिङ्गवतां निह्नवानामित्यर्थः ॥ दंसणवावन्नगाणंति ॥ दर्शनं सम्यक्त्वं व्यापन्नं येषां ते तथा तेषां निह्नवानामित्यर्थः ॥ एएसिणं देवलोएसु उववज्जमाणाणंति ॥ अनेन देवत्वान्यथापि केचिदुत्पद्यन्त इति प्रतिपादितं ॥ विराहियसंजमाणं जहन्नेणं भवणवइसु उक्कोसेणं सोहम्मे कप्पे ॥ इह कश्चिदाह—विराधितसंयमानां उत्कर्षेण सौधर्मे कल्पे इति यदुक्तं तत्कथं घटते द्रौपद्याः सुकुमालिकाभवे विराधितसंयमाया ईशानेऽत्पादश्रवणात् ? इत्यत्रोच्यते, तस्याः संयमविराधनोत्तरगुणविषया बकुशत्वमात्रकारिणी

आजिहंगियाणं सलिंगीदंसणवावण्णगाणं एएसिणंदेवलोएसु उववज्जमाणाणंकस्सकहिंउववाए पण्णत्ते ? गोयमा ! असंजयभवियदव्वदेवाणं जहण्णेणंभवणवासीसु उक्कोसेणं उवरिमगेवेज्जएसु, अविराहियसंजमाणं जहण्णेणंसोहम्मेकप्पे उक्कोसेणंसव्वट्ठसिद्धेविमाणे, विराहियसंजमाणं जहण्णेणंभवणवासीसु उक्कोसेणंसोह

[illegible] भवद्दे एतले निश्चय तेहने १४ । एएसिणंदेवलोएसुउववज्जमाणाणंकस्सकहिंउववाए पण्णत्ते । एहने हेभगवन् । देवलोकनेविषे उपजता ते केहने किहांस्थानकनेविषे उपजवोकह्यो ? एतले देवमति टाली बीजास्थानकनेविषे पणि कोईएकउपजे इसो अभिप्राय इतिप्रश्न भगवतकहेछे—गोयमा । हेगौतम । असंजयभवियदव्वदेवाणं । असंयतो भविकद्रव्यदेवने । जहण्णेणंभवणवासीसु । जघन्यथको भवनपतीने विषे उपजवोकह्यो । उक्कोसेणंउवरिमगेवेज्जएसु । उत्कृष्टथको उपरिले ग्रैवेयके एतले नवमे ग्रैवेयकेउपजे । अविराहियसंजमाणं । अविराधित साधुने । जहण्णेणंसोहम्मेकप्पे । जघन्यथकी सौधर्मनामा देवलोके उपजवा थाय । उक्कोसेणंसव्वट्ठसिद्धेविमाणे । उत्कृष्टथकी सर्वार्थसिद्ध विमाननेविषेयावत् उपजे । विराहियसंजमाणं । विराधित साधुने चारित्रविराधे तेहने । जहण्णेणं भवणवासीसु । जघन्यथकी भवनपतीनेविषे उपजवोहोय । उक्कोसेणंसोहम्मेकप्पे । उत्कृष्ट

हियसजमासजमार्वति ॥ उक्कव्यतिरेकिता ॥ असमीवति ॥ समीसथिरहितानां मक्रामनिर्जरावतां, तथा ॥ सावसार्वति ॥ पतितपत्राद्युपभोग वता मासतपस्विनां तथा ॥ कंदप्पियावति ॥ कन्दर्प्पः परिहासः स यथामस्ति तेनवा ये चरन्ति ते कान्दर्प्पिकाः कान्दर्प्पिकावा व्यवहारत चरणवन्तएव कन्दर्प्पकौत्कुच्यादिकारकाः तथाहि गाथा—कहकहकहस्सहसणं कदप्पो अणिहुयाय उल्लावा कंदप्पकहाकहणं कदप्पुवएससंसाय १॥ भुमनयणवयणदसण च्छदेहिंकरपायकन्नमाईहिं । ततकरेइजहजह हसइपरोअत्तणाअहस ॥ २ ॥ वायाकुक्कुइओपुण तंजपइजेणहस्सए अन्नो । नाणा विहजीवरुए कुव्वइमुहतूरएचेत्यादि ॥ ३ ॥ भोसकुविएग सुथप्पसत्यासुभावकुसहर । सोतब्भिवेसुगच्छइ सुरेसुभरडेचरजीवोति ॥ ४ ॥ अतस्ते पाकन्दर्प्पिकाना ॥ चरगपरिवायगाणति ॥ चरकपरिव्राजका धाटिभैक्षोपजीविन स्त्रिदंडिन, अथवा चरकाः कच्छोटकादयः परिव्राजकास्तु क पिलमुनिसूनवो ।तस्तेषां ॥ किब्बिसियाणंति ॥ किल्बिष पाप तदस्ति येषां ते किल्बिषिका स्तेच व्यवहारत चरणवन्तोपि ज्ञानाद्यवर्णवादिनो य थोक्त—नाणस्सकेवलीणं धम्मायरियस्ससव्वसाहूणं । माईअवन्नवाई किब्बिसियभावणंकुणइत्ति ॥ १ ॥ अत तेषां तथा ॥ तिरिच्छियाणंति ॥ तिरश्चां गवाश्वादीनां देशविरतिजावां ॥ आजीवियाणंति ॥ पाखंडिविशेषाणां नाग्न्यधारिणां गोशालकशिष्याणा मित्यन्ये ॥ आजीवंति ये अविवे किलोकतो लब्धिपूजाख्यात्यादिभि राचरणादीनि ते आजीविकास्तेषां जीविका अतस्तेषां, तथा ॥ आभिओगियाणंति ॥ अभियोजन विद्या मन्त्रादिभि परेषां वशीकरणादि अभियोगः सच द्विधा, यदाह—दुविहोखलुअभिओगो दव्वेभावेयहोयनायव्वो । दव्वम्मिहोइजोगा विज्जामंतायभावमि

जमाणं असन्नीणं तावसाणं कंदप्पियाणं चरगपरिव्वायगाणं किब्बिसियाणं तिरिच्छियाणं आजीवियाणं

येमतो त्रासो समचरो चरपकणाना मरकारजे ८। चरगपरिव्वायगाण। त्रिदंडिया कपिलमुनिना सतानीयाने ९। किब्बिसियाण। ज्ञानादिना अवर्णवादवारे तेहने १० । तिरिच्छियाण। तिर्यंच माय श्रावादि यावकधर्मपाले तेहने ११ । आजीवियाण। पाखंडीविशेष अथवा गोशालाना शिष्य तेहने १२। आभिओगियाण। मन्त्रादिकना करनार १३ । सलिंगीदंसणवावन्नगाण। रजोहरणादि साधु वेषवे प

त्ति ॥ १ ॥ योऽस्ति येषां, तेमवा: चरति च ते मियोगिका आभियोगिकाया, तेच व्यवहारत श्चरणवन्तएव मन्त्रादिप्रयोक्तारो यदाह–कोउयभूईय
म्मे पसिणापसिणेनिमित्तमाजीवी । इड्ढिरससायगरुओ अहिओगं भावणं कुणइत्ति ॥ १ ॥ कौतुक सौभाग्याद्यर्थं स्नपनक भूतिकाम ज्वरितादिभूतिदा
नं प्रश्नाप्रश्न स्वप्नविद्यादि ॥ सलिंगावसि ॥ रजोहरणादिसाधुलिङ्गयुता किंचिपाना मित्याह ॥ दंसणवावण्णगाणति ॥ दर्शन सम्यक्त्व व्यापन्न
भ्रष्ट येषांत तथा तेषां निह्नवानामित्यर्थः ॥ एएसिणं देवलोएसु उववज्जमाणाणंति ॥ अनेन देवत्वा द्यन्यत्रापि केचि दुत्पद्यन्तइति प्रतिपादित ॥
विराहियसंजमाण जहन्नेण भवणवइसु उक्कोसेण सोहम्मे कप्पे ॥ इह कश्चिदाह–विराधितसंयमानां सुत्कर्षेण सौधर्मे कल्पे इति यदुक्त त स्कथ
घटते द्रौपद्याः सुकुमालिकाभवे विराधितसंयमाया ईशानउत्पादश्रवणा ? दिल्यत्रोच्यते, तस्याः संयमविराधनोत्तरगुणविषया बकुशत्वमात्रकारिणी

आभिओगियाण सलिंगीदंसणवावन्नगाण एएसिणंदेवलोएसु उववज्जमाणाणंकस्सकहिंउववाए पण्णत्ते ? गो
यमा ! असंजयभवियदव्वदेवाण जहन्नेणभवणवासीसु उक्कोसेण उवरिमगेवेज्जएसु, अविराहियसंजमाण
जहन्नेणसोहम्मेकप्पे उक्कोसेणसव्वट्ठसिद्धेविमाण, विराहियसंजमाण जहन्नेणभवणवासीसु उक्कोसेणसोह

चि समजावो अटवे एतवे मिश्र तेहने १४। एएसुणदेवलोएसुउववज्जमाणाणंकस्सकहिंउववाए पण्णत्ते। एहने केहमवन् । देवलोकनेविषे उपजता
ने केहने किस्याख्यानकनेविषे उपजवाकह्यो ? एतले देवगति ठाणो बीजास्थानकनेविषे पणि कोईएकउपजे एसो अभिप्राय इतिप्रश्न भगवंतकहेछे—गो
यमा । हेगौतम । असंजयभवियदव्वदेवाण । असयतो भविकद्रव्यदेवने । जहन्नेणभवणवासीसु । जघन्यथको भवनपतीने विषे उपजवोकह्यो । उ
क्कोसेणंउवरिमगेविज्जएसु । उत्कृष्टथकी उपरिले ग्रैवेयके एतले नवमे ग्रैवेयकेउपजे । अविराहियसंजमाणं । अविराधित साधुने । जहन्नेणंसोहम्मे
कप्पे । जघन्यथकी सौधर्मनामा देवलोके उपजवो होय । उक्कोसेणसव्वट्ठसिद्धेविमाणं । उत्कृष्टथको सर्वार्थसिद्ध विमाननेविषेजाय उपजे । विराहिय
संजमाण । विराधित साधुने चारित्रविराधे तेहने । जहन्नेणं भवणवासीसु । जघन्यथो भवनपतीनेविषे उपजवोहोय । उक्कोसेणंसोहम्मेकप्पे । उत्कृष्ट

नविष्यत्कालसताकरणस्य दर्शितेति कृतस्य कर्मण यथादयो भवन्तीति तान दर्शयन्नाह ॥ एवचियत्यादि ॥ व्यक्त नवर चय प्रदेशानुभागादे वेदन मुपचय सादेव पौन पुन्येन मन्यत्वाहुः—चयन कर्म्म पुद्गलोपादानमात्र उपचयनन्तु चितस्या बाधाकाल मुक्त्वा वेदनाय निषेक- सर्वे व-प्रथमस्थितौ बहुतर कर्म्मदलिक निषिञ्चति ततो द्वितीयायां विशेषहीन एव यावदुत्कृष्टायां विशेषहीन मिषिञ्चति उक्तञ्च—मोत्तूसस मबाहं पढमाइठिइए बहुतरदव्व । सेसविसेसहीण जावुक्कोसतिसव्वासि ॥१॥ उदीरण मनुदितस्य करणविशेषा दुदयप्रवेशन वेदन मनुभवन, नि र्जरणं जीवप्रदेशेभ्य कर्मप्रदेशानामपातनमिति इहच सूत्रसङ्ग्रहगाथा भवति साचगाहा ॥ कडचियएत्यादि ॥ भावितार्थाव नवर ॥ सादलिएत्ति ॥

वेमाणियाण, एथकरिस्सति, एत्थविदण्डजाय वेमाणियाण, एव चिए चिणिसु चिणति चिणिस्सति, उवचिए उवचिणिसु उवचिणति उवचिणिस्सति, उदीरेंसु उदीरति उदीरिस्सति, वेदेंसु वेदेंति वेदिस्स ति, णिज्जरेंसु णिज्जरेंति णिज्जारिस्सति, गाहा ॥ कडचिएयउवचिए उदीरियावेदियायणिज्जिण्णा । स्रा

करिष्यति । इहापिच वर्त्तमानकालेपिच इमनमारकोआदि यावत् वैमानिकपर्यन्तदण्डक कहवा, इम आगामिकालेपिच करसे । एत्थविदण्डओजावबेमा णिवाण । इहांपिच अनागतकाले नारकोआदिदेई यावत् वैमानिकतांई दण्डक कहवो । एवचिए । इम चयते प्रदेश अनुभागादिकनो वधारवो १ । चिणिसु । ते अतीतकाले चिणा २ । चिणति । वर्त्तमानकाले चिणेछे ३ । चिणिस्सति । अनागतकाले चिणसे । उवचिए । उपचय तेहीज वारवार पुष्टकरवो १ उवचिणिम् । अतीतकाले उपचय कीधो २ । उवचिणति । वर्त्तमानकाले उपचय करेछे ३ । उवचिणिस्सति । अनागतकाले उपचय करसे ४ । उदीरेंसु उदीरवा ते अनउदयआव्यावमने करणविशेषे उदय आणीसे उदीरणा १ । उदीरेंति । उदीरेछे । उदीरिस्सति । उदीरसे २ । वेदेंसु वेदेंति वेदिस्सति । वेदनत् अनुभवन् भोगववुं इत्यर्थ अतीतकाले वेद्यु १ वर्त्तमानकाले वेदेछे २ अतीतकाले वेदसे ३ । णिज्जरेंसु णिज्जरेंति णिज्जरिस्सति । निर्जरवो ते जीवप्रदेशथी कर्मप्रदेश दूरकरे, वा अतीतकाले निर्जरा १ वर्त्तमानकाले निर्जरे २ अनागतकाले निर्जरसे ३ । गाथा ॥ हिवे पूर्वोक्त सङ्ग्रहणीगाथा

फतचितापचितसळये ॥ चउत्रपत्ति ॥ सामान्यक्रियाकालत्रयाक्रियाभेदात् ॥ तिपत्तेयत्ति ॥ सामान्यक्रियाविरहात् ॥ पच्छिमत्ति ॥ सदीरितवेदितनिर्जी र्णा भावपुद्गलातिशय ॥ तिखित्ति ॥ अथ त्रिविधा इत्यच मन्धाद्ये सूत्रस्य कृतचितोपचितान्युक्ता न्युत्तरेषु कस्मादोदीरितवेदितनिर्जीर्णानी ति ? उच्यते कृत चित मुपचित कर्म्म चिरमप्यवतिष्ठत इति करवादीनां त्रिकालक्रियामात्रातिरिक्त स्थिरावस्थानलक्षण कृतत्वाद्याश्रित्य कृता दो न्युक्ता न्युदीरणादीनां तु नचिरावस्थानमस्तीति त्रिकालवर्त्तिना क्रियामात्रेणैव तान्यभिहितानीति जीवा कांक्षामोहनीयं कर्मवेदयन्तीत्यु क्त मथ तद्वेदनकारणप्रतिपादनाय प्रस्तावयन्नाह ॥ जीवाणन्तेइत्यादि ॥ अथ अवर ननु जीवा कांक्षामोहनीयकर्मवेदयन्तीति प्राग्निर्णीतं किं पुनः प्रश्नः ? उच्यते वेदनोपायप्रतिपादनार्थं उक्तम–प्रवचनविषयविपच्छा अजन्मरूतत्याचारय प्रश्न। पष्ठिसेहोयगयुक्ता हेउविसेसोवलम्भोत्ति ॥ १ ॥ तेहितहिंति ॥ तैसी रज्ञनान्तरमवबद्धलीर्थिंकसंसर्गादिभि र्विद्वलमतिभि र्द्विवचन चेह वीप्सायां कारणैः शङ्कादिहेतुभिः किमित्याह संशि

दितिएचउत्तेया तियत्तेयापच्छिमातिसि ॥ १ ॥ जीवाणन्ते ! कस्खामोहणिज्जकम्म वेदेति ? हन्तावेदेति । कहणन्नते ! जीवाकंस्खामोहणिज्जंकम्मवेदेति ? गोयमा ! तेहिंतेहिंकारणेहि संकियाकंखिया वितिगिच्छि

अर्थ—यथं पूर्वमुक्त्वा वशीक है। कडचियउवचियाव उदीरियावेदियावणिज्जिया। पादितिएचउमेया तियभेयापच्छिमातिषि ॥ १ ॥ कीधो चियो २ उपचय कीधा ३ उदीरिया ४ वेद्या ५ निजरा ६ पहिला आत चित उपचित समयभिवने चारभेद तीनकालथापी एक समुचये पवचार ते कीं चि येव एहने चिरकाल पवस्थानमई उदीरित वेदित निजरित ए तीनभेदे तीनकालहोय कहया, एहमे चिरकालअवस्थानलक्षणे पविधेय जीवकांक्षामोहनी यकम वदे इमाकह्या। हिवे तेहना वेदनाकारणकहवानेकाजे। जीवाणभंते कांक्षामोहणिज्जं कम्म वेदेति। जीव हेभगवन् ! कांक्षामोहनीयकम वेदे इ तिप्रश्न। हन्तावेदति। उत्तर हांगौतम ! वेदे। कहण्णंभंते। किसेप्रकारे हेभगवन्! जीवाकंखामोहणिज्जं कम्मं वेदेंति। जीव कांक्षामोहनीयकम वेदे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा ! हेगौतम ! तेहितेहिंकारणेहि संकियाकंखियावितिगिच्छिया। तिणेतिणेकारणेकरी मिथ्याशोभी संगतिथकी तथा परदम

प्रविप्यत्कालताकरणस्य दर्शितेति कृतस्यच कर्मण यथाख्यो भवतीति सान वृतायकाश ॥ एवचिमत्यादि ॥ व्यक्त ममर मयः प्रदेशानुभागादे बंधन मुपचय सदेव पीनः पुन्येन मन्यस्त्वाहुः—चयन कर्म्म पुद्गलोपादानमात्र उपचयनन्तु चितस्या बाधाकाल मुक्ता वेदनार्थं नियम सर्वे व—प्रथमस्थितौ बहुतर कर्म्मदलिक निषिञ्चति ततो द्वितीयायां विशेषहीन एव यावदुत्कृष्टायां विशेषहीन निषिञ्चति उक्तञ्च—मोत्तूणसग मबाहं पढमाएठिइएबहुतरंदव्वं । ससविसेसहीणं जाउक्कोसंतिसव्वासि ॥१॥ उदीरण मनुदितस्य करणविशेषा दुदयप्रवेशन वदन मनुभवन नि र्जरण जीवप्रदेशेभ्यः कर्मप्रदेशानांशातनमिति इहच सूत्रसङ्ग्रहगाथा भवति सावमाहा ॥ कडचियइत्यादि ॥ भावितार्थैव नवर ॥ चाइलिएत्ति ॥

वेमाणियाण , एवंकरिस्सति , एत्थविदण्डो जाव वेमाणियाणं, एवं चिए चिणिंसु चिणाति चिणिस्सति, उवचिए उवचिणिंसु उवचिणाति उवचिणिस्सति , उदीरिंसु उदीराति उदीरिस्सति , वेदेंसु वेदेंति वेदिस्स ति , णिज्जरेंसु णिज्जरेंति णिज्जरिस्सति , गाहा ॥ कडचिएयउवचिए उदीरियावेदियायणिज्जिण्णा । आ

करिस्सति । इहापणि वर्त्तमानकालेपणि इमअनारकीआदि यावत् वैमानिकपर्यन्तदण्डक कहवा, इम आगामिकालेपणि करसे । एत्थविदण्डओत्ताववेमा णियाण । इहापणि अनागतकाले नारकीआदिदेई यावत् वैमानिकताई दण्डक कहवो । एवचिए । इम वलि ते प्रदेश अनुभागादिकवी वधारवो १ । चिणिंसु । ते अतीतकाले चिणा २ । चिणति । वर्त्तमानकाले चिणे छे ३ । चिणिस्सति । अनागतकाले चिणसे । उवचिए । उपचय तेहीज वारवार पुष्टकरवो १ उवचिणिंसु । अतीतकाले उपचय कीधो २ । उवचिणति । वर्त्तमानकाले उपचय करेछे ३ । उवचिणिस्सति । अनागतकाले उपचय करसे ४ । उदीरेंसु उदीरवा ते अनउदयमांआवता करणविशेषे उदय आणेवी उदीरया १ । उदीरेंति । उदीरे छे । उदीरिस्सति । उदीरसे २ । वेदेंसु वेदेंति वेदिस्संति । वेदन अनुभवन भोगवत इत्यर्थ अतीतकाले वेद्या १ वर्त्तमानकाले वेदेछे २ अनागतकाले वेदसे ३ । णिज्जरेंसु णिज्जरेंति णिज्जरिस्सति । निर्जरवो ते जीवप्रदेशथी कर्मप्रदेश दूरकरे, ते अतीतकाले निर्जर्या १ वर्त्तमानकाले निर्जरे २ अनागतकाले निर्जरसे ३ । गाहा । इहि पूर्वोक्त सङ्ग्रहगाथा

कृतचितोपचितसत्रवे ॥ चउत्थपत्ति ॥ सामान्यक्रियाकालत्रयक्रियाभेदात् ॥ तियजेयत्ति ॥ सामान्यक्रियाभिधानात् ॥ पच्छिमत्ति ॥ उदीरितवेदितनिर्जो र्णा मोहपुद्गलाइतिप्राय ॥ तिसिति ॥ अथ त्रिविधा इत्यथः अन्याद्य सूत्रत्रय कृतचितोपचितान्युक्ता न्युत्तरेषु कस्मात्रोदीरितवेदितनिर्जीर्णानी ति ? उच्यते कृत चित मुपचित कर्म्म चिरमप्यवतिष्ठत इति करणादीनां त्रिकालक्रियामात्रातिरिक्त स्थिरावस्थानलक्षणं कालत्रयमित्य कता दो युक्ता मुदीरणादीनांतु नचिरावस्थानमस्तीति त्रिकालवर्तिना क्रियामात्रेणैव तान्यभिहितानीति जीवाः कांक्षामोहनीय कर्म्मवेदयन्तीत्यु क्त मथ तद्वेदनकारणप्रतिपादनाय प्रस्तावयन्नाह ॥ जीवाणन्तेइत्यादि ॥ अथ अवरं ननु जीवा कांक्षामोहनीयकर्मवेदयन्तीति प्रागेवोक्तं कि पुनः प्रश्नः ? उच्यते वेदनोपायप्रतिपादनाय उत्थाप-पुव्वजनिविधिपच्छा अप्रकृतत्वारम्भति । पडिवेतोयमपुत्त हेउविसेसोवलम्भोति ॥ १० तेहितहिति ॥ तैस्तै दर्शनान्तरश्रवणकुलीर्थिकसंसर्गादिभि विहृतमिति द्विवचनं चेह वीप्सायां कारणैः शंकादिहेतुभि किमित्याह शंकि

दितिएचउत्थेया तियत्नेयापच्छिमातिन्नि ॥ १ ॥ जीवाणन्ते ! कक्खामोहणिज्जंकम्म वेदेंति ? हंतावेदेंति । कहण्णंते ! जीवाकक्खामोहणिज्जकम्मवेदेंति ? गोयमा ! तेहितेहिंकारणेहिं संकियाकंखिया वितिगिच्छि

अर्थ—प्रथम पूर्वकथा तद्येम है। कृतचितउपचित उदीरितावेदितावनिर्जिरा । पादितिएपचमेवा तियभेदापच्छिमातिवि ॥ १ ॥ कोधो चित्तो २ उपचय योधा ३ उदीरिया ४ वेदू ५ निजरा ६ पहिला प्रत चित उपचित समकमिकनि चारभेद तीनकालयाश्रो एक समुचते एवचार ते वी बि मेव पडने चिरकाल पस्थानके उदीरित वेदित निजरित एतीनभेदे तीनकालयोग कहया, पढने चिरकालअवस्थानभयी एविधेव जीवकांखामोहनी यत्न वेदे इमाकहा । हिवे तेहना वेदनाकारणकहवानेवाले । जीवायभते कक्खामोहणिज्जं कम्म वेदेंति । जीव हेभगवन् ! कांखामोहनीयकर्म वेदे इ तिमय । हतावेदेंति । उत्तर हांगोतम । वेदें । कहण्णंभते । किसेपकारे हेभगवन् ! जीवाकक्खामोहणिज्ज कम्म वेदेंति । जीव कांखामोहनीयकर्म वेदें इतिमय उत्तर । गोयमा । हेगोतम । तेहितेहिंकारणेहिं संकियाकंखियावितिगिच्छिया । तिणेतिणेकारणेकरी मिथ्यात्वीनो संगतिकरी तथा परदर्श

पावसिकाया प्रवेशयति तथा ॥ गरहइत्ति ॥ चात्मनैव गहते निंदती त्यऽतीतकालकृत काल मरूपत सत्कारणगर्भप्रकारेणवा जातविशेषबोध स्सन् तथा ॥ संवरइत्ति ॥ संवृणोति नकरोति वर्त्तमानकालिक कुर्मस्वरूपत सद्धेतुसंवरप्रकारेणवेति यद्यपीह यद्यपि गुर्वादीनामपि सहका रित्वमस्ति तथापि न तेषा स्पाधान्य जीववीर्यस्यैव तत्कारणत्वा गुर्वादीनाञ्च वीर्योल्लासममात्रएव हेतुत्वादिति अथोदीरणामेवा श्रित्याह ॥ तंभंतेइत्यादि ॥ अथ सवरं अथो दीरयतीत्यादि पदत्रयोद्देशकपि कस्मात् तंकिंउदिण्णंउदीरेइइत्यादिना प्रपदस्यैव निर्देश कृतः ? उच्यते उदी र्णादिषु कर्मविशेषणचतुष्टये उदीरणामेवा श्रित्य विशेषणस्य सद्भावादितरयो स्तु तदभावा देव तत्सूत्रसूत्रेणर्हते संवृणोती त्येतत्पदद्वयं कस्मा दुपात्तं उत्तरत्रानिर्देश्यमानत्वात्तस्येति ? उच्यते कर्मणउदीरणाया गर्हासंवरौ प्रायउपाया वित्यभिधानाय एवमुत्तरत्रापिवाच्यमिति प्रक्रमाय यद्वो तरव्याख्याना द्बोद्धव्य तत्र ॥ नोउदिण्णंउदीरेइत्ति ॥ उदीर्णत्वादेव उदीर्णस्या प्युदीरणे उदीरणाविरामप्रसङ्गात् ॥ नोअणुदिण्णंउदीरेइत्ति ॥

उत्थाणेइवा। जवणं भंते ! अप्पणाचेवउदीरेइ अप्पणाचेवगरहइ अप्पणाचेवसंवरइ, तंकिंउदिण्णंउदीरेइ १ अणु दिण्णंउदीरेइ २ अणुदिण्णंउदीरणाभवियंकम्मंउदीरेइ ३ उदयाणंतरपच्छाकडंकम्मंउदीरेइ ४ ? गोयमा ! नोउ

आपहीज अतीतकालें कर्मकीधा तेहनें; बार २ निंदा ते भरता। अप्पणाचेवसंवरइ। आपहीज संवरै, वर्त्तमानकालें कर्म नकरें । हंतागोयमा। जीवाभंत। अप्पणाचेवतंचेवउदीरेइ। भगवंजीव कर्मपूरवें कम पूर्वपूर्व कर्मा, तिमज कहवूं। जंतंभंतेअप्पणा। जेते हेभगवन् ! आपपणेज। चेवउदीरेइ। निश्चेउदीरै। अप्पणाचेवगरहइ। आपपणेज निश्चे गरहै। अप्पणाचेवसंवरइ। आपपणेज निश्चे संवरै। तंकिंउदिण्णंउदीरेइ। तो स्युं उदयआव्यूं उदीरै। अथवा। अणुदिण्णंउदीरेइ। अणउदयआव्यूं ते उदीरै। अथवा। अणुदिण्णंउदीरणाभवियंकम्मउदीरेइ। उदयनथीआव्युं उदीरणायोग्यछे उदयपामवानें छ कमाय ते रमाडे तेकम उदीरै। उदयाणंतरपच्छाकडंकम्मउदीरेइ। जेकर्म उदयनें अनंतरसमय तेकर्मनेंविषे पश्चात्कृत अतीतपणामते पहुंतो तेकर्म उ दीरै। गोयमा। हेगौतम। नोउदिण्णंउदीरेइ। उदयआव्यूं ते उदीरै नहीं, उदयथवामाटे उदयआव्यामूं उदीरवूं ते नहुवे । नोअणुदिण्णंउदीरे

एवं मुदीर्णं चिरेण भविष्यदुदीरणं भविष्यदुदीरणस्य ततो दीरयति तद्विषयोदीरणायाः सम्भवत्यनागतकालसेवाभावात् ॥ अणुदिन्नंउदीरणाभविय कम्मउदीरइत्ति ॥ अनुदीर्णं स्वरूपेण किं त्वनन्तरसमयेएव यदुदीरणाभविक तदुदीरयति विशिष्टयोग्यताप्राप्तत्वात् तत्र प्रविष्यसीति यथा सैवन विशा उदीरणाभविकास्येति प्राकृतत्या दुदीरणाभविक मन्यथा भविकोदीरणमिति स्या दुदीरणायांवा भव्य योग्य मुदीरणाभव्यमिति ॥ नोउ

दिण्णउदीरेइ १ नोअणुदिन्नंउदीरेइ २ अणुदिन्नउदीरणाभवियकम्मउदीरेइ ३ नोउदयाणंतरपच्छाकडकम्मउदीरेइ ४॥ जतन्ते ! अणुदिन्न उदीरणाभवियकम्म उदीरेइ तंकिंउठाणेण कम्मेण बलेण वीरिएण पुरिसक्कारपरक्कमेण अणुदिन्नउदीरणाभवियकम्मउदीरेइ , उदाहूतंअणुठाणेण अकम्मेण अबलेण अवीरिएण

१। उदयमाव्यं तेपणि उदीरे नहीं, पर्वेकाले उदयआवल्ले तेहनेंविषे उदीरणानुं सामर्थ्यनथी। अणुदिन्नउदीरणाभवियकम्मउदीरेइ । अनुदये उदय आव्यं नथी किंतु अनंतरसमयनेंविषे जे उदीरणायोग्य तेकर्म उदीरे, विशिष्टयोग्यतो पाम्यो, अथवा उदीरणाने भव्य कहता योग्य ते उदीरणाभव्य क होये उदीरणा भावे कर्मउदीरे। नोउदयाणंतरपच्छाकडकम्मंउदीरेइ। जेकर्मने उदयने अनंतरसमय तेहनेंविषे पश्चात्कृतकर्म अतीतपणामते पहुंतो जे तेपणि उदीरेनहीं तेहने अतीतपणाथको अतीत ते गयं, अत ते अनुदीरणीय नथी, इहां यद्यपि उदीरणादिकनेंविषे कालस्वभावादिकनो कारणपणे, तथापि प्राधान्यपणें पुरुषवीर्यनेंज कारणपणो देखाडे छे—तंभंतेअणुदिन्नउदीरणाभवियकम्मउदीरेइ। जे ते हेभगवन् ! उदयआव्यं नथी अनंतरसमयें ते कर्म उदीरवें तेकर्मउदीरें। तंकिंउठाणेण। तेशुं उठाणेकरी। कम्मेण। कम्मसमादि। बलेण। शरीरनोसामर्थ्य। वीरिएण। वीर ते जीवनो उत्सा ह। पुरिसक्कारपरक्कमेण। पुरुषाकार अभिमानविशेष पुरुषक्रियानेंविषेहीज गोपणाथी पोतानाविषय। अणुदिन्नउदीरणाभवियंकम्मउदीरेइ। एतले एवारेकरी अनुदयने पणें उदीरणानुं भूतपे जेकर्म ते उदीरे उतांव—अत्तावत्ताविवत्ताला। इतिवचनात्, उदाहुतअणुठाणेणं। अथवा ते उत्थानवि ना। अकम्मेणं। कर्मविना। अबलेणं। बलविना। अवीरिएण। वीर्यविना। अपुरिसक्कारपरक्कमेण। पुरुषाकार पराक्रमविना। अणुदिन्नंउदीरणाभवि

पायसिकाया प्रवेश्यति तथा ॥ गरहइत्ति ॥ आत्मनैव गर्हते निंदती त्यतीतकालकृत कर्म स्वरूपत सत्कारणगर्हद्वारेणवा जातविशेषबोध स्सन् तथा ॥ संवरइत्ति ॥ संवृणोति नकरोति वर्त्तमानकालिकं कूर्मस्वरूपत सद्धेतुसंवरद्वारेणवेति यद्यपि गुर्वादीनामपि सकका रित्वमस्ति तथापि न तेषां प्राधान्य जीववीर्यस्यैव तत्कारणत्वा गुर्वादीनाञ्च वीर्योल्लासमात्रस्य हेतुत्वादिति यथोदीरणामेवा मित्याह ॥ तत्जनेइत्यादि ॥ अथ नवरं यथो दीरयतीत्यादि पदत्रयोद्देशकेपि यस्मात् तकिंउदिन्नंउदीरेइइत्यादिना प्रश्नस्यैव निर्देश कृत ? उच्यते उदी र्णादिषु कर्मविशेषचतुष्टये उदीरणामेवा स्तित्व विशेषकस्य गर्हणादितरयो सु तदभावा देव तद्गुणत्वानुप्रेक्ष्यते संवृणोती त्येतत्पदद्वय यस्मा दुपात्तं उत्तरत्रानिर्देश्यमानत्वात्तस्येति ? उच्यते कर्मण उदीरणायां गर्हासंवरणे प्रायउपायत्वात् तत्प्रदर्शनार्थं एवमुत्तरत्रापिवाच्यमिति प्रस्ताव वेशे तत्प्रत्यास्थाना होतव्य तत्र ॥ नोउदिन्नंउदीरेइत्ति ॥ उदीर्णत्वादेव उदीर्णस्या प्युदीरणे उदीरणाविरामप्रसङ्गात् ॥ नोअणुदिन्नंउदीरेइत्ति ॥

उच्चारेयव्वं। जतन्नते! अप्पणाचेवउदीरेइ अप्पणाचेवगरहइ अप्पणाचेवसंवरइ, तंकिंउदिन्नंउदीरेइ १ अणु दिन्नंउदीरेइ २ अणुदिन्नंउदीरणाभवियंकम्मंउदीरेइ ३ उदयाणंतरपच्छाकडंकम्मंउदीरेइ ४ ? गोयमा! नोउ

आपणेज अतीतकालेकरेला जेजे कर्मनें, वार२ निंदा ते करता। अप्पणाचेवसंवरइ। आपणेज संवरे, वर्त्तमानकाले कर्म नकरे। हंतागोयमा। हांगोतम। अप्पणाचेवतंचेवउच्चारियव्वं। आगलसरीखो कर्मनवकरे इम पूर्वपूर्वे जाणवो, तिमज कहवूं। जंतन्नतेअप्पणा। जेते हेभगवन्! आपणपेज। चेवउदीरेइ। निश्चैउदीरे। अप्पणाचेवगरहइ। आपणपेज निंदे करे। अप्पणाचेवसंवरइ। आपणपेज निश्चे संवरे। तंकिंउदिन्नंउदीरेइ। ते स्युंउदयआव्युं उदीरे। अथवा। अणुदिन्नंउदीरेइ। अणउदयआव्युं ते उदीरे। अथवा। अणुदिन्नंउदीरणाभवियंकम्मंउदीरेइ। उदयनथीआव्युं उदीरणायोग्यछे उदयआववाने अ नमाव नथी एहवो तेकर्म उदीरे। उदयाणंतरपच्छाकडंकम्मंउदीरेइ। जेकर्म उदयने अनंतरसमय तेहनैविषे पश्चात्कृत अतीतपणाप्रते पहुंतो तेकर्म उ दीरे। गोयमा। हेगोतम। नोउदिन्नंउदीरेइ। उदयआव्युं ते उदीरे नहीं, उदयथयामाटे उदयआव्यानुं उदीरवुं ते नहुवे। नोअणुदिन्नंउदीरे

रहा मुदीर्णं चिरेण प्रविष्यदुदीरय मज्ञविष्यदुदीरणम्न तस्रो दीरयति तद्विषयादीरणायाः सम्प्रत्यनागतकालेवाभावात् ॥ अनुदिन्नउदीरणाज्ञविर्य कम्मउदीरयत्ति ॥ अनुदीर्ण स्वरूपेण किं त्वनन्तरसमयेएव यदुदीरणाभविक तदुदीरयति, विशिष्टयोग्यतामासत्वात् तत्र प्रविष्यतीति यथा सेवन यिका उदीरणामविकास्येति प्राकृतत्वा दुदीरणाजविक मन्यथा भाविकोदीरणमिति स्या दुदीरणायावा भव्य योग्य मुदीरणाभव्यमिति ॥ नोउ

दिणउदीरेइ १ नोअणुदिन्नउदीरेइ २ अणुदिन्नउदीरणाजवियकम्मउदीरेइ ३ नोउदयाणतरपच्छाकडकम्मउदीरेइ ४॥ जतन्नते ! अणुदिन्नं उदीरणाजवियकम्म उदीरेइ तंकिंउठाणेण कम्मेण बलेण वीरिएण पुरिसक्कारपरक्कमेण अणुदिन्नउदीरणाजवियकम्मउदीरेइ , उदाज्ञतअणुठाणेण अकम्मेण अबलेण अवीरिएण

१। उदयनाम् तेपणि उदीरे नहीं, घणेंकाळे उदयभावणे तेहनेंविषे उदीरणानें आमतिपभावहे। अणुदिन्नउदीरणाभवियकम्मउदीरेइ। सरूपे उदय पाम्ये नथी किंत अनंतरसमयनेंविषे जे उदीरणाभूमें तेहज उदीरे, विशिष्टयोग्यतो माटेयो, अथवा उदीरणाने भव्य कहता योग्य ते उदीरणाभव्य कहीये उदीरणा भावे कर्मउदीरे। नोउदयाणंतरपच्छाकडकम्मउदीरेइ। जेकर्मने उदयने अनंतरसमय तेहनेंविषे पश्चात्कृतकर्म अतीतपणामते पहुतो जे तेपणि उदीरेनही तेहनें अतीतपणाथको अतीत ते असत्, असत् ते अनुदीरणीय थयो, इहां यद्यपि उदीरणादिकनेंविषे कालस्वभावादिकनो कारणहे, तथापि प्राधान्यपणे पुरुषवीर्यनोज कारणपणो देखाडेहे—तंभंतेअणुदिन्नउदीरणाभवियकम्मउदीरेइ। जे ते हेभगवन् ! उदयपाम्यं नथी अनंतरसमये ते कर्म उदीरणें तेहनउदीरें। तंकिंउठाणेणं। तेस्युं उठाणथको। कम्मेणं। कम्मगमनादि। बलेण। शरीरनोसमर्थाइ। वीरिएण। वीर ते जीवनो उत्सा ह। पुरिसक्कारपरक्कमेण। पुरुषाकार अभिमानविशेष पुरुषक्रियानेंविषेहीज नीपजाव्यो पोतानोविषय। अणुदिन्नउदीरणाभवियकम्मउदीरेइ। एतले प्रकारेकरी अनुदयहे, अनें उदीरणायें भूतके जेकर्म ते उदीरे उतन—अनाकतांविभक्ताका। इतिवचनात्, उत्थानादिवचनोपेण। अथवा ते उत्थानवि ना। अकम्मेणं। कर्मविना। अबलेणं। बलविना। अवीरिएण। वीर्यविना। अपुरिसक्कारपरक्कमेण। पुरुषाकार पराक्रमविना। अणुदिन्नउदीरणाभवि

यावलिकायां प्रवेशयति तथा ॥ गरहइत्ति ॥ आत्मनैव गर्हते निन्दति त्यऽतीतकालकृत कर्म स्वरूपत स्तत्कारणगर्हाद्वारेणवा जातविशेषबोध स्सन् तथा ॥ संवरइत्ति ॥ संवृणोति नकरोति वर्तमानकालिक कर्मस्वरूपत स्तद्धेतुसंवरद्वारेणवेति गर्हादौच यद्यपि गुर्वादीनामपि सहका रित्वमस्ति तथापि न तेषा म्प्राधान्य जीववीर्यस्यैव तत्कारणत्वा द्गुर्वादीनाञ्च वीर्योल्लासनमात्रएव हेतुत्वादिति यथोदीरणामेवा श्रित्याह ॥ वर्तंजतेइत्यादि ॥ अत्रचापर यदो दीरयतीत्यादि पदत्रयोद्देशकेपि कस्मात् तंकिंउदिण्णंउदीरेइत्यादिना यपदस्यैव निर्देश कृत ? उच्यते उदी र्णादिके कर्मविशेषणचतुष्टये उदीरणामेवा श्रित्य विशेषणस्य सद्भावादितरयो स्तु तदभावा देव तत्सूत्रासूत्रणमर्थते सत्यतोऽपि स्येतत्पदद्वयं कस्मा दुपात्तं तत्रयानिर्देशस्याभावात्तस्येति ? उच्यते कर्मणउदीरणायां गर्हासंवरणे प्रायउपाया वित्यभिधानाय एवमुत्तरत्रापिवाच्यमिति प्रकार्थ यदो तत्रमत्यस्याना द्रोढुम् तत्र ॥ नोउदिण्णंउदीरेइत्ति ॥ उदीर्णत्वादेव उदीर्णस्या प्युदीरणे उदीरणाविरामप्रसङ्गात् ॥ नोअणुदिण्णंउदीरेइत्ति ॥

उच्चारेयव्वं। जत्तन्नते ! अप्पणाचेवउदीरेइ अप्पणाचेवगरहइ अप्पणाचेवसंवरइ, तंकिंउदिण्णंउदीरेइ १ अणु दिण्णंउदीरेइ २ अणुदिन्नउदीरणाभवियंकम्मंउदीरेइ ३ उदयाणंतरपच्छाकडंकम्मंउदीरेइ ४ ? गोयमा ! नोउ

भावार्थ अतीतकालेकमकीवा तमरहै; वार२ निंदातगरहा। अप्पणाचेवसंवरइ। आपहीज संवरै, वर्तमानकाले कम नकरे। इहांगोयमा। हेगौतम। अप्पणाचेवतंचेवउच्चारियव्वं। भाषाविकरोज कर्मक्षयकरे इम पूर्वपूर्वे कह्यो, तिमज कहवूं। जंतंभंतेअप्पणा। जेते हेभगवन् ! आपपणे। चेवउदीरेइ। निश्चेउदीरे। अप्पणाचेवगरहइ। आपपणेज निश्चे गरहे। अप्पणाचेवसंवरइ। आपपणेज निश्चे संवरे। तंकिंउदिण्णंउदीरेइ। ते शुं उदयआव्यूं उदीरे। अथवा। अणुदिण्णंउदीरेइ। अणउदयआव्यूं ते उदीरै। अथवा। अणुदिण्णंउदीरणाभवियंकम्मंउदीरेइ। उदयनथीआव्युं उदीरणायोग्यछे उदयपामवाने ए क्षमाय बरे रमाडे तेथम उदीरे। उदयाणंतरंपच्छाकडंकम्मंउदीरेइ। जेकम उदयने अनंतरसमय तेकर्मविषे पश्चात्कृत अतीतपणापाम्ते पहुंतो तेकर्म उ दीरै। गोयमा। हेगौतम! नोउदिण्णंउदीरेइ। उदयआव्यूं ते उदीरे नहीं, उदयथयामाटें उदयआव्यानूं उदीरवूं ते नहुवे। णोअणुदिण्णंउदीरे

न्युपगम कुर्यादित्यर्थः ॥ वीरियत्ताएत्ति ॥ वीर्ययोगा द्वीर्यः प्राणी, तद्भावो वीर्यता, अथवा वीर्यमेव स्वार्थिकप्रत्यया द्वीर्यता वीर्याभावा भावो वीर्यता तया ॥ अवीरियत्ताएत्ति ॥ अविद्यमानवीर्यतया वीर्याभावेनेत्यर्थः ॥ नोअवीरियत्ताएत्ति ॥ वीर्यहेतुकत्वा दुपस्थानस्येति ॥ बालवीरियत्ताएत्ति ॥ बालः सम्यगर्थानवबोधा त्सद्बोधकार्याविरत्यभावाच्च मिथ्यादृष्टि स्तस्य या वीर्यता परिणतिविशेष सा तथा तया ॥ पण्डियवीरियत्ताएत्ति ॥ पण्डितः सम्यग्दृष्टेः सदस्यस्य परमार्थतो निश्चयस्येना पण्डितत्वा यदाह – तज्ज्ञानमेवनभवति यस्मिन्नुदिते विभाति रागगण । तमसः कुतोस्तिशक्ति र्दिनकरकिरणाग्रतःस्थातुमिति ॥ १ ॥ सर्वविरतइत्यर्थः ॥ बालपण्डियवीरियत्ताएत्ति ॥ बालो देशेविरत्यभावा त्पण्डितो देशएव विरतिसद्भावा दिति बालपण्डितो देशविरत एव मिथ्यात्वे उदिते मिथ्यादृष्टिस्या ज्जीवस्य बालवीर्येण वोपस्थान स्या दतराज्या मेतदेवा

सेत्तते गोयमा ! किं वीरियत्ताए उवठाएज्जा अवीरियत्ताए उवठाएज्जा ? गोयमा ! वीरियत्ताए उवठाएज्जा , नोअवीरियत्ताएउवठाएज्जा , जइ वीरियत्ताएउवठाएज्जा , किंबालवीरियत्ताएउवठाएज्जा , पण्डित

भगवन् । मिथ्यात्वमोहनीय कोरा । कर्मेउदयेष । कर्मने उदयेकरी । उवठाएज्जा । परलोकक्रिया अंगीकारकरे, अथवाउद्यमकरे । हता गोयमा । हां गौतम । उवठाएज्जा । परलोकक्रिया अंगीकारकरे रहे । सेभंतेकिंवीरियत्ताएउवठाएज्जा । ते हेभगवन् । एहवूं जीवसहित अंगीकारकरे रहे, अथवा । अवीरियत्ताएउवठाएज्जा । अवीर्यपणे जीवनेअभावे अंगीकारकरे इतिप्रश्न, गोयमा वीरियत्ताएउवठाएज्जा । हेगौतम । जीवपणे परलोकक्रिया अंगीकारकरे पणि । नोअवीरियत्ताएउवठाएज्जा । अवीर्यपणे परलोकक्रिया अंगीकार नकरे, वली गौतम पूछेछे—जइवीरियत्ताएउवठाएज्जा । जो वीर्यपणे अंगीकारकरता थाय । किंबालवीरियत्ताएउवठाएज्जा । तो एवूं अज्ञानपणेनो आगमयी अथवा विरतिरहित मिथ्यादृष्टि तेहनी क्रिया वीर्यता परिणतिविशेष तेणेकरी अंगीकारकरे । पण्डियवीरियत्ताएउवठाएज्जा । पंडित जेणे समस्तसावद्यनोत्याग तेहनो जोरजे परमार्थमको अज्ञानपणु वजो ये, अथवा । बालपंडियवीरियत्ताएउवठाएज्जा । देशे अविरतिपणानो बालक कहीये,, देशेथी विरतिपणानो पंडितकहीये,, तेमाटे बालपंडितकहता

किरवंचइत्ति ॥ द्वार मित्येवं—कहन्न भंते ! जीवे अट्ठकम्मपगडीओ बंधइ गोयमा ? नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं दंसणावरणिज्जं कम्मं नि गच्छइ ॥ विशिष्टोदयावस्थं जीव सा प्राप्नोतीत्यर्थः दरिसणावरणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं दंसणमोहणिज्जं कम्मं णिगच्छइ ॥ विपाकावस्थं करोतीत्यर्थः ॥ दंसणमोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं मिच्छत्तं णिगच्छइ मिच्छत्तेणं उदिण्णेणं एवं खलु जीवे अट्ठकम्मपगडीओ बंधइ ॥ इत्यादि नचैव मितरेतराश्रयदोषः कर्मबन्धप्रवाहस्या नादित्वादिति ॥ कइहिं च ठाणेहिंति ॥ द्वार तत्रैव—जीवेणं भंते ! नाणावरणिज्जं कम्मं कइहिं ठाणेहिं बंधइ ? गोयमा ! दोहिं ठाणेहिं तंजहा रागेणय दोसेणये त्यादि ॥ वेएइव्वत्ति ॥ द्वार मिदं चैव—जीवेणं भंते ! कइ कम्मपगडीओ वेएइ ? गोयमा ! अत्थेगइए वेएइ अत्थेगइए णोवेएइ जे वेएइ से अट्ठ इत्यादि ॥ जीवेणं भंते ! नाणावरणिज्जं कम्मं वेएइ ? गोयमा ! अत्थेगइए वेएइ अत्थेगइए नोवेएइ ॥ केवलिनो अवेदनात् ॥ नेरइएणं भंते ! नाणावरणिज्जं कम्मं वेएइ ? गोयमा ! नियमा वेएइ इत्यादि ॥ अणुभागो कइविहो कस्सत्ति ॥ कस्य कर्मणः कतिविधो रसइति द्वार मिदंचैव—नाणावरणिज्जस्सणं भंते ! कम्मस्स कइविहे अणुभागे पन्नत्ते ? गोयमा ! दसविहे पन्नत्ते तंजहा सोयावरणे सोयविन्नाणावरणे इत्यादि ॥ द्रव्येन्द्रियावरणो भावेन्द्रियावरणयेत्यर्थः अथ कर्मचिन्ताधिकारा न्मोहनीय माश्रित्याह ॥ जीवेणमित्यादि ॥ मोहणिज्जेणति ॥ मिथ्यात्वमोहनीयेन ॥ उदिण्णेणति ॥ उदितेन ॥ उवठाएज्जत्ति ॥ उपतिष्ठेत् उपस्थान मूर्ध्वलोकक्रिया स्व

गोसम्मत्तो ॥ गाहा ॥ कतिपगडीकहंबंधइ कतिहिंठाणेहिंबंधएपगडी । कइवेदेइयपगडी अणुभागोकति विहोकस्स ॥ १ ॥ जीवेणंभंते ! मोहणिज्जेणं कडेणं कम्मेणं उदिण्णेणंउवठाएज्जा ? हंतागोयमा ! उवठाएज्जा ।

पहली संग्रहगाथाकहे छे—गाथा । कतिपगडीकहंबंधइति । केटली कर्मप्रकृति केटला भेद १, प्रकृति केम बांधे, ए बीजो द्वार २, कतिहि ठाणेहिंबंधएपगडी । जीव केटले स्थानके करी कर्मप्रकृति ३, कतिवेदेइयपगडी । जीवे केटली प्रकृति वेदीये ४, अणुभागोकतिविहोकस्स ॥ १ ॥ अनुभाग कहतां रस ते केटलाप्रकारनो किसाकर्मनो हिवे कर्मचिंताधिकारथकी मोहनीयआश्री कहे छे । जीवेणंभंतेमोहणिज्जेणंकडेणं । जीव हे

भ्युपगमं कुर्यादित्यर्थः ॥ वीरियत्ताएत्ति ॥ वीर्ययोगात् वीर्यः प्राणी, तद्भावो वीर्यता, अथवा वीर्यमेव स्वार्थिकप्रत्ययात् वीर्यता वीर्याभावा भावो वीर्यता तया ॥ अवीरियत्ताएत्ति ॥ अविद्यमानवीर्यतया वीर्याभावेनेत्यर्थः ॥ नोअवीरियत्ताएत्ति ॥ वीर्यहेतुकत्वा दुपस्थानस्येति ॥ बालवीरियत्ताएत्ति ॥ बालः सम्यगर्थानवबोधा त्सद्बोधफलविरत्यभावाच्च मिथ्यादृष्टिः तस्य या वीर्यता परिणतिविशेषः सा तथा तया ॥ पंडियवीरियत्ताएत्ति ॥ पण्डितः सकलसावद्यवर्जकः सम्यक्त्वस्य परमार्थतो मिथ्यात्वेना पण्डितत्वात् यदाह – तज्ज्ञानमेव न भवति यस्मिन्नुदिते विभाति रागगणः । तमसः कुतोऽस्ति शक्ति दिनकरकिरणाग्रतः स्थातुमिति ॥ १ ॥ सर्वविरतइत्यर्थः ॥ बालपंडियवीरियत्ताएत्ति ॥ बालो देशेविरत्यभावा त्पण्डितो देशएव विरतिसद्भावा दिति बालपण्डितो देशविरत इह च मिथ्यात्वे उदिते मिथ्यादृष्टित्वा ज्जीवस्य बालवीर्येणैवोपस्थानं स्या न्नेतराभ्यां मेतदेवा

सेज्जते गोयमा ! किं वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा अवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ? गोयमा ! वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा, नोअवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा, जइ वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा, किं बालवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा, पंडित

भगवन् । मिथ्यात्वमोहनीय कर्म । उदय आवे । कर्मने उदयेकरी । उवट्ठाएज्जा । परलोकक्रिया अंगीकार करे, अथवा अपक्रमणे । हंता गोयमा । जो गौतम । उवट्ठाएज्जा । परलोकक्रिया अंगीकार करे । सेभंते किं वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा । ते हे भगवन् ! एवं वीर्यसहित अंगीकार करे रहे, अथवा । अवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा । अवीर्यपणे वीर्यनेअभावे अंगीकार करे इतिप्रश्न, गोयमा वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा । हे गौतम ! वीर्यपणे परलोकक्रिया अंगीकार करे पणि । नोअवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा । अवीर्यपणे परलोकक्रिया अंगीकार नकरे, वली गौतम पूछेछे—जइवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा । जो वीर्यहेतु उपाधिजे अंगीकार करता थाय । किंबालवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा । ता एवं अज्ञानपणे बालकनी परेपणा विरतिरहित मिथ्यादृष्टि तेहनी जिका वीर्यता परिणतिविशेष तेणेकरी अंगीकार करे । पंडियवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा । पंडित जेणे समस्त सावद्यनां त्याग कीधा छे परमार्थथी सम्यग्दृष्टि जेनो ते, अथवा । बालपंडियवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा । देशे अविरतिपणाथी बालक कहीए, देशथी विरतिपणाथी पंडित कहीए, तेमाटे बालपंडित कहता

निदवधइत्ति ॥ द्वार मिद्दंचेव–कइय भंते ! जीवे अट्ठकम्मपगडीओ बंधइ गोयमा ? नाणावरणिज्जस्स कम्मस्सउदएणं दंसणावरणिज्जं कम्म नि गच्छइ ॥ विशिष्टोदयावस्थं जीव स्य दासादयतीत्यर्थः दरिसणावरणिज्जस्स कम्मस्स उदएण दंसणमोहणिज्जं कम्म निगच्छइ ॥ विपाकाऽवस्थं करोतीत्यर्थः ॥ दंसणमोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएण मिच्छत्त निगच्छइ मिच्छत्तेण उदिण्णेण एव खलु जीवे अट्ठकम्मपगडीओ बंधइ ॥ इत्यादि मचैव मितेतरेतराश्रयदोषः कर्मबन्धप्रवाहस्या नादित्वादिति ॥ कइहिं च ठाणेहिंति ॥ द्वारं तवेव–जीवेण भंते ! नाणावरणिज्जं कम्मं कइहिं ठाणेहिं बंधइ ? गोयमा ! दोहिं ठाणेहिं तंजहा रागेणय दोसेणये त्यादि ॥ कइवेएइत्ति ॥ द्वार मिदं चैव–जीवेण भंते ! कइ कम्मपगडीओ वेएइ ? गोयमा ! अत्थेगइए वेएइ अत्थेगइए नोवेएइ जे बंधइ से वेइ इत्यादि ॥ जीवेण भंते ! नाणावरणिज्जं कम्मं वेएइ ? गोयमा ! अत्थेगइए वेएइ अत्थेगइए नोवेएइ ॥ केवलिनो अवेदनात् ॥ नेरइएण भंते ! नाणावरणिज्जं कम्मं वेएइ ? गोयमा ! नियमा वेएइ इत्यादि ॥ अणुभागो कइविहो कस्सत्ति ॥ कस्य कर्मणः कतिविधो रसइति द्वार इदमेवं–नाणावरणिज्जस्सणं भंते ! कम्मस्स कइविहे अणुभागे पन्नत्ते ? गोयमा ! दसविहे पन्नत्ते तंजहा सोयावरणे सोयविन्नाणावरणे इत्यादि ॥ द्रव्येन्द्रियावरणो भावेन्द्रियावरणश्चेत्यर्थः अथ कर्मचिन्ताधिकारात् मोहनीय माश्रित्याह ॥ जीवेणमित्यादि ॥ मोहणिज्जेणति ॥ मिथ्यात्वमोहनीयेन ॥ उदिण्णेणंति ॥ उदितेन ॥ उवट्ठाएज्जत्ति ॥ उपतिष्ठेत् उपस्थान परलोकक्रिया स्व

गोसम्मत्तो ॥ गाहा ॥ कतिपगडीकहंबंधइ कतिहिंठाणेहिंबंधएपगडी । कइवेदेइयपगडी अणुभागोकति विहोकस्स ॥ १ ॥ जीवेणभंते ! मोहणिज्जेण कडेण कम्मेण उदिण्णेणउवट्ठाएज्जा ? हंतागोयमा ! उवट्ठाएज्जा ।

पचमो सतकमाधुहे तेववेहे—गाथा । कतिपगडीकहबंधइत्ति । केतली कर्मप्रकृतिना केतला भेद १, प्रकृति केम बांधे, ए बीजो द्वार २, कतिहिं ठाणेहिंबंधएपगडी । जीव केतले स्थानके करी कर्मप्रकृति ३, कतिवेदेइयपगडी । जीवे केतली प्रकृति वेदीये ४, अणुभागोकतिविहोकस्स ॥ १ ॥ अनुभाग कहतां रस ते केतलाप्रकारनो विपाकमनो हिवे कर्मचिंताधिकारथकी मोहनीयआश्री कहेछे । जीवेणभंतेमोहणिज्जेणकडेण । जीव हे

प्यमिति ॥ ठिइत्ति ॥ सूचना त्सूत्रमिति न्यायात स्थितिस्थानानि वाच्यानीतिशेषः ॥ एवउग्गहणत्ति ॥ अवगाहनास्थानानि, शरीरादिपदानितु प्रतीतान्येव प्रकारान्तस्य पद प्रथमैकवचनान्तद्वयं इत्येव मतानि स्थितिस्थानादीनि दशवस्तूनि इतो द्वेक्षे विचारयितव्यानीति गाथाद्वया र्थः विस्तरार्थस्तु सूत्रकारः स्वयमेव वक्ष्यतीति तत्र रत्नप्रभापृथिव्यां स्थितिस्थानानि तावत्प्ररूपयन्नाह ॥ इमीसेणमित्यादि ॥ नवरं ॥ एगमेगंसिनिरयावासंसित्ति ॥ प्रतिनरकावासमित्यर्थः ॥ ठिइठाणत्ति ॥ आयुषो विभागाः ॥ असंखेज्जत्ति ॥ सङ्ख्यातीतानि कथं प्रथमपृथिव्येवे या जघन्या स्थिति दशवर्षसहस्राणि उत्कृष्टातु सागरोपम मेतस्या श्चैकैकसमयवृध्या ऽसङ्ख्येयानि स्थितिस्थानानि भवन्ति असङ्ख्येयत्वात् सागरो

३ ॥ पुढविठिइअगाहण सरीरसंघयणमेवसठाणे । लेस्सादिठीणाणे जोगुवओगेयदसठाणा ॥ ४ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाएपुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसिनिरयावासंसि नेरइयाण केवइया ठि

ते मिनो एवमाविमान, पनुत्तरविमान पचदोउवे पूर्वादि विजय १ वैजयत २ जयत ३ अपराजित ४ विचमें सर्वार्थसिद्ध ५, एसर्वमिलो सर्वसावे ८४९७०२३ विमानवसा । पुढविठिइउगाहण सरीरसंघयणमेवसठाणे । लेस्सादिठीणाणे जोगुवओगेयदसठाणा ॥ ४ ॥ हिवे नरकनाव समजावाने दारगाथा कहेहे—पृथिव्यादिकजोवना वासने विषे स्थितिस्थान कहवा २, शरीर कहवा ३ संघयण कहवा ४ तिहां संस्थान कहवा ५ लेस्या ६ कहवी, दृष्टी ७ कहवी ७, ज्ञान ते कहवा ८, योग ९ ते कहवा ८ उपयोग २ ते कहवा १ , ए पाछ्पूरवे ए दसस्थान दार कहवा, पृथिवी आदिदेई सर्वनेविषे । इ मोसेर्णभंतेरयणप्पभापुढवीए । गौतमपूछेछे—अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे । तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु । तीसलाख नरकावासानेविषे । एगमेगंसिनिरयावासंसि । एकेका एतले प्रत्येकें २ नरकावासनेविषे । नेरइयाणकेवइयाठिइठाणा पण्णत्ता । नारकीना केतला स्थितिकहतां आउखाना स्थान कहतां विभागकह्या इतिप्रश्न । गायमा असंखेज्जाठिइठाणा पण्णत्ता तंजहा । हेगौतम ! सम्भावो असंख्याता तेमाटे असंख्याता पानपाना स्थानकविभाग कह्या तेकिम ? पहिली पृथिवीनी अपेक्षायें जघन्य दश सहस्रवर्षनी स्थितिछे ते एक समय वधारतां उत्कृष्ट एक सागरो

कार्यसङ्ग्रहाय गाथाद्वयम् ॥ पुढवीत्यादि ॥ तत्र पुढवीति सूत्रविजातिकत्वात् विभक्तिलोपः पृथिवीषु रत्नप्रभादिषु पृथिव्यादिषु जीवावासेषिति गृह

इसियविमाणावाससयसहस्सा पन्नत्ता । सोहम्मेणभंते ! कइविमाणावाससयसहस्सा पन्नत्ता ? गोयमा ! बत्तीसविमाणावाससयसहस्सा पन्नत्ता , एवं , बत्तीसठावीसा बारसअठचउरोसयसहस्सा । पन्नाचत्तालीसा छच्चसहस्साइसहस्सारे ॥ १ ॥ आणयपाणयकप्पे चत्तारिसयारणच्चुएतिण्णि । सत्तविमाणसयाइं चउसुवि एएसुकप्पेसु ॥ २ ॥ एक्कारसुत्तरहे ठिमएसत्तुत्तरयमज्झिमए । सयमेयउवरिमए पंचेवयअणुत्तरविमाणा ॥

यसससहस्सा पन्नत्ता । यावत् पञ्चप्रकारना ज्योतिषी चंद्र सूर्य ग्रह नक्षत्र तारा तेहना विमान आवाससहस्र पन्नत्ता छाखकया, में भगवा भगत तीर्थंकरे वक्तोनीतम बारदेवलोक नवग्रैवेयक पंच अनुत्तरविमान आयीने पूछेवे । साधम्मकतेकड़विमाणावाससयसहस्सा पंनत्ता । सौधर्मदेवलोके हे भगवन् ! केतलाविमानावासलाखना वास कह्या इतिप्रश्न । गोयमा बत्तीसविमाणावाससयसहस्सा पन्नत्ता । हेगोतम ! बत्तीसलाख विमान तेरेप्रतर थे प्रतरे प्रतरे भिन्नभिन्न विमान छे तेपूर्वे जेमचोए पणे कह्या इम सघळ गाथाबद्धो आणवा, । गाथा । बत्तीसठावीसा बारसअठचउरोसयसहस्सा । प न्नाचत्तालीसा छच्चसहस्सासहस्सारे ॥ १ ॥ सौधर्मे बत्तीसलाख विमान ईशाने २८ लाख विमान, सनत्कुमारे १२ लाख विमान, माहेंद्रे आठलाख वि मान, ब्रह्मेंद्रे चारलाख विमान, ए पंच देवलोके सर्व ८४ लाख थया, लांतके पचाससहस्र, शुक्रे चालीस सहस्र, सहस्रारे आठमे देवलोके विमानलाख ना । आणयपाणयकप्पे चत्तारिसयारणच्चुएतिण्णि । सत्तविमाणसयाइं चउसुविएएसुकप्पेसु ॥ २ ॥ आणत नवमोदेवलोक प्राणत दसमोदेवलोक एवे मिली ४ सय विमानछे, आरण ११ में देवलोके अच्युत १२ में देवलोके एवेऊ मिली ३ सय विमानछे, एवासरे विमान चारदेवलोके मिलीने थया ७, हेठि ले ग्रैवेयकनेविषे एतले पहिले बीजे त्रीजे ग्रैवेयकमिली । एक्कारसुत्तरं हेट्ठिमएसत्तुत्तरयमज्झिमए । सयमेगंउवरिमए पंचेवअणुत्तरविमाणा ॥ ३ ॥ एकसोइग्यारे विमानछे मध्यम ग्रैवेयके एतले चोथे पांचमे छट्ठे एतीनेमिली एकसोसात विमानछे, उपरले ग्रैवेयक त्रिके एतले सातमे आठमे नवमे एती

ष्यमिति ॥ ठिइत्ति ॥ सूचना सूत्रमिति न्यायात स्थितिस्थानानि वाच्यानीतिभाव: ॥ एवउग्गहणत्ति ॥ अवगाहनास्थानानि शरीरादिपदानितु
व्यक्तान्येव एकारान्त्य पदं प्रथमैकवचनान्तंद्रष्टव्य इत्येव मतानि स्थितिस्थानादीनि दशवस्तूनि इतो द्वेवाके विचारयितव्यानीति गाथासमा
सार्थः विस्तरार्थंस्तु सूत्रकार: स्वयमेव वक्ष्यतीति तत्र रत्नप्रभापृथिव्यां स्थितिस्थानानि तावत्प्ररूपयन्नाह ॥ इमीसेणमित्यादि ॥ व्यक्तं नवरं ॥
एगमेगंसिनिरयावासंसित्ति ॥ प्रतिनरकावासमित्यर्थः ॥ ठिइठाणत्ति ॥ आयुषो विभागाः ॥ असंखज्जत्ति ॥ संख्यातीतानि कथं प्रथमपृथिव्यपेक्ष
या जघन्या स्थिति दशवर्षसहस्राणि उत्कृष्टातु सागरोपम मेतस्यां च्यैकेकसमयवृध्या ऽसंख्येयानि स्थितिस्थानानि भवन्ति असंख्येयत्वात् सागरो

३ ॥ पुढविठिइउग्गाहण सरीरसंघयणमेवसंठाणे । लेस्सादिठीणाणे जोगुवउगेयदससठाणा ॥ ४ ॥ इमीसेण
भंते ! रयणप्पभाएपुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसिनिरयावासंसि नेरइयाणं केवइया ठि

ने विषे एकमाविमान अनुत्तरविमान मध्यछेदे पूर्वादि विजय १ वैजयंत २ जयंत ३ अपराजित ४ विचमें सर्वार्थसिद्ध ५, एसर्वमिली अवधोवे ८४९
० २३ विमानभवा। पुढविठिइउगाहण सरीरसंघयणमेवसंठाणे। लेस्सादिठीणाणे जोगुवयोगेयदससठाणे ॥ ४ ॥ हिवे दशेस्थानावर्णं अपहनेत्ताथे दारगाथा
कहेछे—पृथिव्यादिकजीवना वासनेविषे स्थितिस्थान कहवा २, शरीर कहवा ३ संघयण कहवा ४ तिवे संस्थान कहवा ५ लेश्या ६ कहवी, दृष्टी १
कहवी ७, ज्ञान ते कहवा ८, योग ३ ते कहवा ९ उपयोग २ ते कहवा १०, ए पारपूरवे ए दशस्थान द्वार कहवा, पृथिवी आदिदेइ सर्वनेविषे। इ
मीसेणंभंतेरयणप्पभाएपुढवीए। गौतमपूछेछे—अहोने भगवन् ! रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे। तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु। त्रीसलाख नरकावासानेवि
षे। एगमेगंसिनिरयावासंसि। एकेका एतले प्रत्येकें २ नरकावासनेविषे। नेरइयाणकेवइयाठिइठाणा पण्णत्ता। नारकीना केतला स्थितिअहती आयु
षाना स्थान कहता विभागरूपभवा इतिमन्त्र। गायमा असंखेज्जाठिइठाणा पण्णत्ता तंजहा। हेगौतम ! संख्यायो अतिक्रम्या उत्कृष्टा तेमाटे असंख्याता
आयुषाना स्थानकविभाग कह्या तेकिम ? पहिली पृथिवीनी अपेक्षायें जघन्य दश सहस्रवर्षनी स्थितिछे ते एक समय अधिकरतां उत्कृष्ट एक सागरो

कार्यसङ्ग्रहाय गाथाद्वय ॥ पुढवीत्यादि ॥ तत्र पुढवीति लुप्तविभक्तिकत्वा निर्देशस्य पृथिवीषु उपलक्षणत्वा चास्य पृथिव्यादिषु जीवावासेष्विति द्रष्ट

इसिपयिमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता । सोहम्मेणन्नते ! कहविमाणायाससयसहस्सा पण्णत्ता ? गोयमा ! यत्तीसविमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता , एव , यत्तीसठावीसा यारसअठचउरोसयसहस्सा । पण्णाचत्ताली सा छच्चसहस्सासहस्सारे ॥ १ ॥ आणयपाणयकप्पे चत्तारिसयारणच्चुएतिण्णि । सत्तविमाणसयाइ चउसुवि एएसुकप्पेसु ॥ २ ॥ एक्कारसुत्तरहे ठिमएसत्तुत्तरचमज्झिमए । सयमेयउवरिमए पचेवयअणुत्तरविमाणा ॥

सयसहस्सा पण्णत्ता । यावत् पत्प्रभारना व्यानियो चन्द्र सूर्य ग्रह नक्षत्र तारा तेहना विमान आवासस्थान असंख्याता जाणवा, मैं भगवा भगवन् तीर्थंकरें श्रीगौतम बारदेवलोक नवग्रैवेयक पंच अनुत्तरविमान पाधोंमें पूछे है । सोधम्मकप्पे केवइविमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता । सौधर्मदेवलोकविषे हे भगवन् ! केतलाविमानावासलाखनो जाणवा कह्या इतिप्रश्न । गोयमा बत्तीसविमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता । हे गौतम ! बत्तीसलाख विमान तेरेप्रतर छे, प्रतरें प्रतरें भिन्नविमानछे तेपूर्व देवलोक मने कह्या इम सर्व गाथाथकी जाणवा, । गाथा । बत्तीसठ्ठावीसा बारसअठचउरोसयसहस्सा । पण्णाचत्तालीसा छसहस्सासहस्सारे ॥ १ ॥ सौधर्में बत्तीसलाख विमान, ईशाने २८ लाख विमान, सनत्कुमारे १२ लाख विमान, माहेंद्रे आठलाख विमान, ब्रह्मेंद्रे चारलाख विमान ए पंच देवलोकें थई ८४ लाख थया, लांतके पचासहजार, शुक्रे चालीस सहस्र, सहस्रार आठमे देवलोके विमानलाख छ हजार । आणयपाणयकप्पे चत्तारिसयारणच्चुएतिण्णि । सत्तविमाणसयाइं चउसुवि एएसुकप्पेसु ॥ २ ॥ आनत नवमोदेवलोक प्राणत दशमोदेवलोक एबेनें मिली ४ विमानछे आरण ११ में देवलोके अच्युत १२ मेंदेवलोके एबेउ मिली ३ विमानछे एसातसे विमान चारदेवलोके मिलीने थया २, हेठिमे ग्रैवेयकनेविषे एतले पहिले बीजे त्रीजे ग्रैवेयकमिली । एक्कारसुत्तर हेट्ठिमएसत्तुत्तरंचमज्झिमए । सयमेगंउवरिमए पंचेवअणुत्तरविमाणा ॥ ३ ॥ एकसोइग्यारे विमानछे मध्यम ग्रैवेयके एतले चोथे पांचमे छठे मिली एकसोसात विमानछे, उपरले ग्रैवेयक त्रिकें एतले सातमें आठमें नवमे एको

दृश्यंति ॥ श्रीम जिममयाभ्यन्तरमण्डले सञ्चरणा रिंगतियोजनामा सहस्रेषु द्वयोः शतयो स्त्रिपष्टौच साधिकाया वर्तमान उदये दृश्यते मसासम
मध्यय, एय प्रतिमण्डल दर्शने विशेषोऽस्ति सव स्यानान्तराद्वसेय ॥ सव्वओ समंताति ॥ सर्वत सर्वासु दिशु समन्तात् विदिशु एकार्थावेती ॥ ओभासइ
त्यादि ॥ अवभासयति ईषत्प्रकाशयति यथा—स्थूलतरमेव वस्तु दृश्यते उद्योतयति भृशम्प्रकाशयति, यथा—स्थूनमेव दृश्यते तपति अपनीत
शीत करोति यथावा सूक्ष्म पिपीलिकादि दृश्यत, तथा करोति प्रभासयते अतितापयोगा द्विशेषतोपनीतशीत विधत्ते, यथावा सूक्ष्मतर
वस्तु दृश्यते तथाकरोतीति एतदेवसेया चित्याह ॥ तंभंतेइत्यादि ॥ यत्क्षेत्र मवभासयति उद्योतयति तपति प्रभासयतिच तत्क्षेत्र किं भदन्त !

चेव उवासतराउ चक्खुप्फासं हव्वमागच्छइ ? हंता गोयमा ! जावइयाओण उवासतराउ उदयंतेसूरिए
चक्खुप्फास हव्वमागच्छइ, अत्थमंतेवि जाव हव्वमागच्छइ, जावइयाणं भंते ! खेत्त उदयंते सूरिए आय
वेण सव्वओसमता ओभासेइ, उज्जोएइ तवेइ पभासेइ, अत्थमंतेवियणसूरिए तावइयचेव खेत्त आयवेण
सव्वओसमता ओभासेइ उज्जोएइ तवेइ पभासेइ ? हंता गोयमा ! जावइयाण खेत्त जाव पभासेइ तन्नंते

तम। जिम परिमाण्डो थयकाशांतरथकी ऊगता सूर्य दृष्टि आय श्रीम पावे ४७२६३ योजन २१ भाग। अत्थमंतेविजावहव्वमागच्छइ। आथमता
पणि इमज यावत् उगणसाठ चक्खुस्पर्श पावे ४७२६३ योजन २१ भाग। जावतिया यावमतेत्त। खेतंभू क्षेत्रभगवन्। चेव। उदयंतेसूरिएआयवेणसव्वओ
समताओभासेइ। ऊगता सूर्य आतपेंकरी सूर्यने तेजेकरी सम्मो दिशिनेविषे विदिशिनेविषे आतापना मर्यादा किंमपणु इडियाने। उज्जोएइ तवेइ पभा
सेइ। यथा उद्योतकरे शीतदूरकरे जिम सूक्ष्म कीटकादि होमे विशेषशीतदूरकरे जिम सूक्ष्मपणु पणि हस्थिपावे। अत्थमंतेवियणसूरिए। आथमतो पणि
सूर। तावतियचेवक्षेत्र। तेतलाज निश्चे क्षेत्रप्रतें। आतवेणंसव्वओसमताओभासेइ। सूर्यने तेजेकरी सर्वदिशिनेविषे विदिशिनेविषे चोफेरो प्रकाश करे
उज्जोवेइ तवेइ पभासेइ।। पर्वत प्रकाशे उद्योतकरे शीतदूरकरे आवयमान तपें इतिप्रश्न उत्तर। हंता गोयमा। हां गौतम। जावतियपरक्षेत्त।

पीविशाला न्यवानानिवेति वैमानिकसूत्राविवीवमध्येयानि॥ संखेज्जेसुणं भंते ! वेमाणियावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि वेमाणियावासंसि केवइया ठिइठाणा पन्नत्ता ! इत्येवमादीनि ॥ इति प्रथमशते पञ्चम उद्देशः ॥ ५ ॥ अथ षष्ठो व्याख्यायते तस्य चाय मभिसम्बन्धो मन्तरोद्देशके त्विमसूत्रेषु ॥ असंखेज्जेसुणं भंते जोइसियविमाणावासेसु ॥ तथा ॥ संखेज्जेसुणं भंते ! वेमाणियावाससय सहस्सेसु इत्येतद्पीतं तेषु च ज्योतिष्कविमानावासाः प्रत्यक्षाएवेति, तद्गतदर्शन मतीत्य तथा यावन्ते इतियमुक्त मादिगाथायां तच दर्शयितु माह ॥ जाव इयाउइत्यादि ॥ जावइयाओत्ति ॥ यत्परिमाणात् ॥ उवासंतराओत्ति ॥ अवकाशान्तरात् आकाशविशेषा दवकाशरूपान्तरालाद्वा याव त्यवकाशान्तरेस्थित इ त्यर्थः ॥ उदयंतेत्ति ॥ उदय मुद्गच्छन् ॥ चक्खुप्फासंति ॥ चक्षुषो दृष्टेः स्पर्शइव स्पर्शो नतु स्पर्शएव चक्षुषो ऽप्राप्यकारित्वादिति चक्षुः स्पर्शो स ॥

खियठिइए आहारएय भवीइजगा, वाणमंतरजोइसवेमाणिया जहा भवणवासी, नवरं नाणत्तं जाणियव्वं जंजस्स, जाव अणुत्तरा, सेवंभंते भंतेत्ति ॥ पढमसए पंचमोउद्देसो सम्मत्तो ॥ ५ ॥ जाव इयाउण्ण भंते ! उवासंतराउ उदयंते सूरिए चक्कुप्फासं हव्वमागच्छइ अत्थमंतेवियणं सूरिए तावतियाउ

पहमशतकमांपचमो ५ ए पहिला शतकना पांचमा उद्देशाना टब्बाथ थिओ ॥ ५ ॥ हिवे छठो उद्देशो कहेछे—तेहनो ए संबंध पाछिले उद्देशे पंतसूत्रेविषे ज्योतिषीना विमानकह्या । हिवे तेहनो प्रत्यक्षमति कहेछे—जावतियाओणंभंते । जिण परिमाणथकी हेभगवन् ! अवकाशां तरथकी अवकाशरूप अंतरालथकी । उवासंतराओउदयंतेसूरिएचक्कुप्फासंहव्वमागच्छइ । उगतो सूर्य दृष्टिगम्य थोयपावे सोधिम भितारे सूर्य सर्व भ्यंतरमंडले होय तिवारे ४७२६३ योजन चोसठीया २१ भाग उगता सूर्य दृष्टिपावे । अत्थमंतेवियणंसूरिए । आथमतो पिण इमज सूर्य । तावियाओ चेवउवासंतराओचक्खुप्फासंहव्वमागच्छइ । तेतलाहीज योजन ४७२६३ चोसठीया २१ भाग अवकाशांतरथकी चक्षुगम्य उतावलोजोज पावे तथा बीजे मार्गंथको विमतिमनेरा सूर्यथकी थायथी इतिमज उत्तर । हंता गोयमा । जावतियाओणंउवासंतराओउदयंतेसूरिएचक्खुप्फासंहव्वमागच्छइ । हांमो

र्युति ॥ यीप्र क्रिममयाभ्यन्तरमरकले सलचस्यारिगतियोजनाना सहस्त्रेषु हृयो गतयी खिपष्टीच साधिकायाः वतमान वदये दृश्यते मवासम पर्व्येय मयं प्रतिमवलम दत्ताने विशेपासि सब स्यानानराद्यसेय ॥ सह्णं समतत्ति ॥ सवत सर्वासु दिक्षु समन्तात् यिदिशु एकार्थावेती ॥ ठजासइ त्यारि ॥ प्रयमामपति एपरप्रकाश्यति यथा—स्थूलतरमेव वस्तु दृश्यते उद्योतयति प्रकाश्यमायपति यथा—स्थूलमेव दृश्यते, तपति अपनीत शीत करोति ययावा सूक्ष्मं पिपीलिकादि दृश्यते, तथा करोति प्रभासयति अतितापयोगा द्विशेषतोपनीतशीत विघसे, ययावा सूक्ष्मतर यस्य दृश्यते तथाकरोतीति एततदेवमेवा विस्तार ॥ तमतेइत्यादि ॥ यस्येव मवजासयति उद्योतयति तपति प्रभासयतिच तस्येव कि भदन्त !

चेव उयासतराउ चक्खुफ्फासं हव्वमागच्छइ ? हंता गोयमा ! जावइयाउण उवासतराउ उदयंतेसूरिए चक्खुप्फास हव्वमागच्छइ, अत्थमंतेवि जाव हव्वमागच्छइ, जावइयाणं भंते ! खेत्तं उदयंते सूरिए आय वेणं सव्वउसमंता उभासेइ, उज्जोएइ तवेइ पभासेइ, अत्थमंतेवियणंसूरिए तावइयचेव खेत्तं आयवेणं सव्वउसमंता उभासेइ उज्जोएइ तवेइ पभासेइ ? हंता गोयमा ! जावइयाणं खेत्तं जाव पभासेइ तंभंते

तम ! जिम परिमाणवो अवकाशांतरथकी उगता सूर्य दृष्टि स्पर्श शीघ्र पावे ४७२६३ योजन २१ भाग । अत्थमंतेविजावहव्यमागच्छइ । आथमता पणि तमज यावत् उआवमा चक्षुस्पर्श पावे ४७२६३ योजन २१ भाग । जावतिया पावमंतेखत्त । जेतम् हेभगवन् ! वेप । उदयंतेसूरिएआतपेसव्वथी समतापाभासेइ । उगता सूर्य आतपेकरी सूक्ष्मे तेजेकरी सगली दिशिमेंविषे विदिशिमेंविषे भासमा प्रकाशे, विमवस्तु दृष्टिआवे । उज्जोवेइ तवेइ पभा सेइ । पवा उद्योतकरे शीतदूरकरे जिम सूक्ष्म कोटकादि दोसे विशेषशीतदूरकरे जिम सूक्ष्मवस्तु पणि दृष्टिआवे । अत्थमतेवियणंसूरिए । आथमतो पणि सूर । तावतियचेवखत्त । तेतलोज क्षेत्रे ऐसपतें । आतपेणंसव्वओसमतापाभासेइ । सूक्ष्मे तेजेकरी सर्वदिशिमेंविषे विदिशिमेंविषे चोफेरो प्रकाश करे उज्जोवेइ तवेइ पभासेइ ।। प्रसत प्रकाशे उद्योतकरे शीतदूरकरे आश्रयमान तर्पे इतिप्रश्न उत्तर । हंता गोयमा । हा गौतम ! आवविमर्शेवेत्तं ।

स्पृष्ट मवभासयति अस्पृष्ट मवभासयति इह यावत् करणा दिद दृश्य—गोयमा ! पुठ ओभासेइ नो अपुठ तजते ! ओगाढ ओभासेइ अणोगाढं ? गोयमा ! ओगाढ ओभासेइ नो अणोगाढं एव अणंतरोगाढ ओभासइ नोपरंपरोगाढ तजते ! किं अणु ओभासेइ बायर ओभासेइ ? गोयमा ! अणुपि ओभासइ बायरंपि ओभासइ त जते ! उर्ड्ढ ओभासइ तिरियं ओभासइ अहे ओभासइ ? गोयमा ! उड्ढंपि ३ त जते ! आइ ओभासइ मज्झे ओभासइ अंते ओभासइ ? गोयमा ! आइंपि ३ त जते ! आणुपुव्वि ओभासइ अणाणुपुव्वि ओभासइ ? गोयमा ! आणुपुव्वि ओभासइ नोअणाणुपुव्वि त जते ! कइ दिसिं ओभासइ ? गोयमा ! नियमा छद्दिसिंति ॥ एतेषाञ्च पदानां व्याख्यायोद्देशकनारकाहारसूत्रव्याख्यायादृश्यति ॥ जए ओभासइ इत्यनेन सह सूत्रमध्य उक्तः सएव उज्जोवइइत्यादिना पदत्रयेण वाच्य इतिदर्शयन्नाह ॥ एवं उज्जोवेइइत्यादि ॥ स्पृष्ट यत्र अवभासयती त्युक्त मथ स्पर्शनामेव दर्शयन्नाह ॥ सव्वमित्यादि ॥ सव्वतित्ति ॥ प्राकृतत्वात् सर्वतः सर्वासु दिशु ॥ सव्वायतित्ति ॥ प्राकृतत्वादेव सर्वात्मना सर्वथा तपेना पत्ति व्याप्ति यस्य क्षेत्रस्य तत्सर्वाप्तिः अथवा ! सर्वं क्षेत्र इति शब्दो विषयभूत यत्र सर्वं ननु मण्डलमेवे त्यस्यो पग्रदक्षणाय तया सर्वथा तपेना पो व्याप्ति यस्य क्षेत्रस्य तत्सर्वाप इतियक्तः सामान्यतः सर्वेयातपेन व्याप्ति ननु प्रतिप्रदेशं सर्वथेत्यस्या यस्यो पग्रदक्षणायाँ ऽथवा सइ व्यापे

किपुठ ओभासेइ अपुठ ओभासेइ जाव छद्दिसि एव उज्जोवेइ तवेइ पभासेइ , जाव नियमा छद्दिसि सेणूण भंते ! सव्वति सव्वावति फुसमाणकालसमयंसि जावइयखेत्त फुसइ तावइयफुसमाणे पुठेत्तिवत्तव्व सिया ?

यावत् प्रकाशे पशीवसेन भाषोहे । तमंतेविपइमाभासेइ । ये येनमर्ते अवभासे उद्योतकरे तपे प्रभासे तेषेव हेभगवन् ! एवं परस्यो उद्योतकरे प्रपईमामासेइ जावसेहविसिं । विना विना परस्पो उद्योतकरे यावत् छद्दिशि ऐसो पाठ तावन्ने कहयो । एवउज्जोवेइ तवेइ पभासेइ । इस उद्योतकरे तपे प्रकाशे । जावनियमाछद्दिसिं । यावत् नियम का छद्दिशि तिम कहए । सेणूणभंतेसव्वति । ते निश्चे हेभगवन् ! सवयो समस्तोदिशिनेविषे । सव्वावति । समस्ते आतपेकरी अथवा सर्वथेन । फुसमाणकालसमयंसि । फरसता काल समयनेविषे । जावइयखेत्तफुसइ । जेतलोखेत्र क्षेत्र सूर्य । तावइयफुसमाणे

मा तपव्याख्या यत्र रमस्मार्य इतिअप्सु तथैव ॥ फुसमाणकालसमयंसिति ॥ स्पृश्यमानकाले ऽथवा ; स्पृशतः गुणस्य स्पर्शनायाः कालसमयः स्प गत्कालसमय तत्र आतपेनेति गम्यत, यावत्येव स्पृशति भूमध्ये प्रकर्तं तावत्येव स्पृश्यमान स्पृष्टमिति वक्तव्य स्यादिति प्रश्नः ॥ इतेत्याद्युत्तर म् स्पृश्यमानस्पृष्टयो येकस्य प्रथमसूत्रा एवमनाम्यमिति स्पर्शनामेवा भिलत्वाद ॥ सोय ते भत्त ! अलोयंतमित्यादि ॥ लोकान्त सर्वतोलोकाय मानं यलोकान्तस्तु तदनन्तरएवसि इत्यापि पुट्ठफुसइइत्यादि सूत्रमयमो दृषयो तत्स्थोक्त ॥ जावनियमाछद्दिसिसि ॥ एतद्भावनायैव स्पृष्ट मलोका न्तं स्पृशति स्पृष्टस्यव्य व्यवहारतो दूरस्थस्यापि दृष्टं यथा–चक्षुः स्पश इत्यत उच्यते अवगाढं प्रासन्नमित्यर्थः अवगाढस्यव्या ससिमायमपि स्या दत्त उच्यते अनन्तरायमाढ मव्यवधानम सम्बद्ध ननु परम्परायगाढं शुक्लाकटिकादव परम्परासम्बद्ध तथा तु स्पृशति अलोकान्तस्य क्वचिद्दि यथा प्रदेशमात्रत्वम सूक्ष्मत्वात् बादरमपि स्पृशति अपि द्विचयैव बहुप्रदेशात्वेन बादरत्वात् न चर्द्धं मध्ये लिमकृप स्पृशति ऊर्ध्वादिदिशु लोकान्तस्य लोकान्तस्य तयात् तथादौ मध्येऽन्तेच स्पृशति अथ मध्यलियेगृहलोकान्तानां मादिमध्यान्तकल्पनात् तस्य षड्दिसयं स्पृशति

हंता गोयमा ! सव्वति जाव पतछसिया । तन्नते ! किं पुठ फुसइ जाव नियमा छद्दिसि । लोयतेनंते ! अलोयतं फुसइ अलोयतेयि लोयतं फुसइ ? हंता गोयमा ! लोयतं अलोयत फुसइ अलोयतेवि लोयत

मुत्तिपत्तार्थंसिया । तेनमा चेव परम्मा अलोये इम कण्हा जाव इतिप्रश्न उत्तर । हता गोयमा । हां गोतम । सव्वतिजावपत्तछंसिया । सवणो सगणो दिग्विभेविवे यावत् परस्यो इमाकमयाचोय । गुंभतेकिमइपसमद । ते हेभगवन् । स्पृ परसा परसेवे ? जावनियमाछद्दि सिं । यावत् नियेम् छद्दिम परसे मापते भंतेयमोयततपमइ । लोकमा चेवको मयवो लोकमा ययमाम हे भगवन् । अलोकमा पंतमू परसे अलोकमो पतते तेवने पतरलोकसे । अमोयते दिमापंततपमइ । पमाभात पमाकमा चेवका तेपनि याकमापंतपतं परमे इतिप्रश्न उत्तर । हता गोयमा । हांगोतम । लोयंतेपमापतपसइ । लोकमा पंत पमाकमा पमपते परमे । अमोमंतविमागंतफुसइ । अलाकमा पंतपवि लोकमागनपतं परमे तभतेकिपुट्ठपसइ । ते हेभगवन् । स्पृ परसा ? पर

स्पृष्टावगाढादौ भावियये भस्पृष्टावगाढाविति तथा नुपूर्व्यां स्पृशति यानपूर्वी चेत् प्रथमे स्थाने लोकान्त स्ततो मन्तर द्वितीये स्थाने मलोकान्तस्य च मवस्थानतया स्पृशति मन्यथातु स्पर्शनैव न स्या तथ्य षट्सु दिशु स्पृशति लोकान्तस्य पार्श्वतः सवतो ऽलोकान्तस्य भावात् इह च विदिशु न स्पर्शनास्ति विदिशा लोकविष्कम्भप्रमाणत्वा द्विदिशाञ्च तत्परिहारेण भावात् एव द्वीपान्तसागरान्तादिसूत्रेषु स्पृष्टादिपदभावनाकार्या भवर द्वीपसागरान्तादिसूत्रे वद्दिशित्यस्यै वं भावना योजनसहस्रावगाहा द्वीपाय समुद्राय भवन्ति तत योपरितना मधस्तना य द्वीपसमुद्रा प्रदेशा नाभिस्यो द्वीपे दिग्द्वयस्य स्पर्शना वाच्या पूर्वादिदिशास्तु मलीतैव समन्तत स्तेषा मवस्थानात् ॥ उदयंतपोयंतत्ति ॥ नद्याद्युदकान्तः पो तान्त नौपर्यवसान मिदा प्युदकपायेक्षया षड्दिक्स्पर्शना वाच्या जलनिमज्जनेषति ॥ छिद्दंतेदूसंतत्ति ॥ छिद्रान्तोदूष्या न वस्त्रान्त स्पृशति इहापि षड्दिक्स्पर्शना भावना यथोक्तापेक्षया ऽथवा; वस्त्रस्थूपवरापोहासिकाया तन्मध्यात्पदजीवशपेण तन्मध्यरन्ध्रापेक्षया लोकान्त सूत्रवत षड्दिक्स्पर्शना भावयितव्या ॥ छायंतमायवंतत्ति ॥ इह च्छायाजदेन षड्दिग्भावनैव मातपे व्योमवर्तिपतिमचतिद्रव्यस्य या च्छाया तदन्तमातपान्तमवसपु दिशु स्पृशति तथा तस्याएव च्छायाया भूमेः सकाशा तदूर्ध्वं याव दुच्छ्रयोसि ततश्च छायान्तमातपान्तमूद्र्ममयवस्पृश

फुसइ । तन्नंते ! किं पुठं फुसइ अपुठंफुसइ ? जाव नियमा छद्दिसिं फुसइ । दीवंते नंते ! सागरंत फुसइ सागरंतेवि दीवंत फुसइ ? हंता जाव नियमा छद्दिसि फुसइ, एवं एएणं अभिलावेणं उदयंतेपोयंत , छिद्दंतेदूसंत , छायंतेआयवंत , जाव णियमा छद्दिसि फुसइ अत्थिण नंते ! जीवाणं पाणाइवाएणं किं

से । अपडुसार । अथवा अनपरम्पा फरसे । जावनियमाछहिसिफसर डीवतंभतेसागरंतफुसर । यावत् नियमथ छ न्दिशि फरसे वलीगोतम पूछे—श्री पोत डीपनो अंत हे भगवन् ! सागरना अंतमते फरसे । सागरंतेविदीवंतफुसर । सागरनो अंतपणि डीपनाअंतमते फरसे इतिप्रश्न उत्तर । हंता गोयमा । हां गोतम ! जावनियम छहिसिफुसर । यावत् नियमे छदिशि फरसे ते सहस्त्रयोजन डीप समुद्र ऊडाछे तिणिवास्ती छदिशि पणीदिशि पूर्वादि ॥

ति अथवा प्रासादवरशिखरादे यातायां तस्यां जित्त रवसरन्त्यां आरोहन्त्यायां अमत्रातपान्त मूदु मधस्य स्पृशतीति ज्ञायनीय अथवा तथास्य च्छायातपयोः पुद्गलानां मनुष्यप्रदेशावगाहित्वा दुष्प्रवसद्भाव सारसद्भावा वोध्याघोविजागसतय च्छायास्त आतपास्त मूदु मधस्य स्पृशती ति स्पशमाधिकारादय प्राणातिपातादिपापस्थानममवकर्मस्पर्शना मधिकृत्याह ॥ अत्थीत्यादि ॥ अत्थिति ॥ अस्त्ययम्पक्षः ॥ किरियाकज्जइति ॥

रिया कज्जइ ? हंता अत्थि । सा भंते ! किं पुट्ठा कज्जइ अपुट्ठा कज्जइ ? जाव निव्वाघाएणं छद्दिसिं वाघा य पडुच्च सिय तिदिसिं सिय चउद्दिसिं सिय पंचदिसिं । सा भंते ! किं कडा कज्जइ अकडा कज्जइ ? गोयमा ! कडा कज्जइ नो अकडा कज्जइ । सा भंते ! किं अत्तकडा कज्जइ परकडा कज्जइ तदुभयकडा कज्जइ ? गोयमा !

दिशि एम छदिशिनो स्पर्श कहवो । एवंएएणंअभिलावेणंजावसवेफरसे । एम इणेप्रकारेकरी पांचोनो अंत आवनासंतमतें फरसे । बिहंतेदूसंत । छेद नां पतते अपछाना अतमतें फरसे । आर्वतपातपतंनायविसमाइ हिसिपृसर । छायामंयत धूपनाअतमतें फरसे सर्व भयो प्रासाद भींतिनेविषे धूप चढतो उतरतो आववो यावत् निरो छदिशि अगनापृवे अगनाना अधिकार बकोज प्राणातिपात आदिदेइं अढार पापस्थानक बवो अपनो कम सर्वना तेहमतें अधिकारी कहेछे—अत्थिणंभंतेजीवाणंपाणाइवाएणंकिरिया कज्जइ । अस्ति अवतादे वरति वाक्यालंकारे एतत् हेभगवन् ! जीव प्राणातिपा तिकी क्रिया पापवंत जीवोने लागिया करोये, क्रमकरी क्रियाबीज इतिप्रश्न । उत्तर । हंता अत्थि । हांगौतमछे ! साभंतेकिंपुट्ठाकज्जइ । तिका हेभग वन् ! स्पृ फरसीथको होय । अपुट्ठाकज्जइ । अथवा अणफरसी होय । जावनिव्वाघाएणंछद्दि सि । यावत् तिवारे अलोक जेहानवो तिवारे छदिशिने फरसो नियमासे । वाघातपडुच्च सियतिदिसिं सियचउदिसिं सियपंचदिसिं । व्याघात आश्री अलोक जेहाछे तिवारे किवारे एक तीनदिशि शेषदिशि अलोकमाटे नहुवे, किवारेके चारदिशि किवारेके पंचदिशि एसव आहारनो परे विचारीने कहवो । साभंतेकिंकडाकज्जइ । ते हेभगवन् ! पूं प्राणातिपातिको क्रियाकीधी हुवे अथवा । अकडाकज्जइ । अणकीधी हुवे प्राणातिपातिको क्रिया इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा कडाकज्जइ नोअकडाकज्जइ । हेगौतम ! की

स्पृष्टावगाढादी भाविपये भरपूताशाबिति तथ्या नुपूर्व्या स्पृशति यानपूर्वी चेह प्रथमे स्थाने लोकान्त ततो नन्तर द्वितीये स्थाने भलीकान्तइत्ये व मवस्थानतया स्पृशति अन्यथातु स्पर्शनैव न स्या तच्च षट्सु दिक्षु स्पृशति लोकान्तस्य पाश्वतः सवतो ऽलोकान्तस्य भावात् इहच विदि क्षु न स्पर्शनास्ति दिक्षा लोकविष्कम्भप्रमाणत्वा द्विदिशाञ्च तत्परिहारेण भावात् एव द्वीपान्तसागरान्तादिसूत्रेषु स्पृष्टादिपदभावनाकाया मवर्ं द्वीपसागरान्तादिसूत्रे षड्दिक्कृत्यसौ व भावना योजनसहस्रावगाढा द्वीपाय समुद्राश्च भवन्ति तत योपरितना मधस्तना च द्वीपसमुद्रा मध्ये नास्तित्यो दृष्टो दिग्द्वयस्य स्पर्शना वाच्या पूर्वादिदिक्षत्तु प्रतीतैव समन्तत स्तेषा मवस्थानात् ॥ उदयतपोयततीति ॥ नद्याद्युदकान्त यो तास्तं नौपपद्यसाम भिन्ना प्युत्क्षू्यापेक्षया ऊर्द्ध्वदिक्स्पर्शना वाच्या जलनिमज्जनेचति ॥ छिद्दतेदूसतसि ॥ छिद्रान्तोदूष्यान्त वस्त्रान्त स्पृशति इहापि षड्दिक्स्पर्शना भावना वस्त्रोत्क्षूयापेक्षया ऽथवा कम्बलरूपवस्त्रपोट्टलिकाया तन्मध्योत्पन्नजीवजन्तवेन तन्मध्यरन्ध्रापेक्षया लोकान्त सूत्रवत् षड्दिक्स्पर्शना भावयितव्या ॥ छायतप्तायवतति ॥ इह च्छायान्तमन पडदिग्भावनैव आतपे व्योमवर्तिपक्षिमनुष्यतिर्यक्स्य या च्छाया तदन्तमातपान्त्यतसु दिक्षु स्पृशति तथा तस्याएव च्छायाया भूमे सकाशा तद्दृष्य याव दुक्षुपोस्ति ततश्च छायान्तमातपान्तसूक्ष्मधर्षरस्पृश

फुसइ । तन्ते ! किं पुठ फुसइ अपुठफुसइ ? जाव नियमा छद्दिसि फुसइ । दीवंते भंते ! सागरंत फुसइ सागरंतेवि दीवंत फुसइ ? हंता जाव नियमा छद्दिसि फुसइ, एव एएणं अभिलावेण उदयंतेपोययंतं, छिद्दंतेदूसंत , छायंतेआयवंत , जाव णियमा छद्दिसि फुसइ अत्थिण भंते ! जीवाणं पाणाइवाएणं किं

वे। अपफुसइ । अथवा अपपरस्या फरसै। जावनियमाछद्दिसिफसइ दीवंतभंतेसागरंतफुसइ। यावत् नियमथ्य छदिशि फरसै वलीगौतम पूछै—जी पंत होपना अत हेभगवन् ! सायरना अतपतैं फरसै । सागरंतेविदीवंतफुसइ। सायरनो अतपणि दीपनाअतपतैं फरसै इतिप्रश्न उत्तर । हंता गोयमा । हां गौतम । जावनियम छद्दिसिफुसइ। यावत् निश्चै छदिशि फरसै ते सहस्रयोजन दीप समुद्र उंडाछै तिणिवली ऊर्ध्वदिशि अधोदिशि पूर्वादि ॥

ति, अथवा प्रासादपरविळकादे भाडाया तस्या जित रवसरन्त्या पारोहन्त्याया आतमातपान्त मूर्द्ध मथय स्पृशतीति जावनीय अथवा तयोरय च्छायातपयोः पुद्गलाना मसङ्ख्येयप्रदेशावगाहित्वा दुष्प्रसद्भाव सत्सद्भावा सोद्धोपोयिजागसताय च्छायान्त मातपान्त मूर्द्ध मथय स्पृशती ति स्वज्ञानाधिकारादय प्राणातिपातादिपापस्थानप्रभवकर्मस्वरूपज्ञाना मभिधित्सुराह ॥ अत्थीत्यादि ॥ अत्थिति ॥ अस्त्ययम्पक्षः ॥ किरियाकज्जइति ॥

रिया कज्जइ ? हंता अत्थि । से भंते ! किं पुट्ठा कज्जइ अपुट्ठा कज्जइ ? जाव निव्वाघाएणं छद्दिसिं वाघा य पडुच्च सियतिदिसिं सियचउद्दिसिं सियपंचदिसिं । से भंते ! किं कडा कज्जइ अकडा कज्जइ ? गोयमा ! कडा कज्जइ नो अकडा कज्जइ । से भंते ! किं अत्तकडा कज्जइ परकडा कज्जइ तदुभयकडा कज्जइ ? गोयमा !

दिशि एम छदिशिनो स्पर्श कह्यो । एवंएवंपभिलावेणछदवतेपामत । एम एवंप्रकारेंकरी पांचोनो पंत गमनाभंतमतें फरसे । खिवंतेद्रूसंतं । छेद नो पतते कमवानो पतमतें फरसे । छायतेभातवर्तआवविसमाणेइसिपुसर । छायागंपत धूपनाभंतमतें फरसे छायं पथो प्रासाद भींवर्नेविपे धूप चढवो उतरतो आववो यावत् निचे छदिशि स्पर्शपुवें स्पर्शनानो अधिकार थकांज प्राणातिपात आदिदेई अढार पापस्थानक थकी उपनो कर्म स्पर्शना तेहमतें अधिकारो कहेहें—अत्थिणभंतेजीवाणंपाणाइवाएणंकिरिया कज्जइ । अस्ति कहतां छे पति वाक्यालंकारे एपद हेभगवन् ! जीव प्राणातिपा तिको क्रिया पापरूपें जेजीवें सोकिया कहीये, कर्मकरी क्रियाहोय इतिप्रश्न । उत्तर । हंता अत्थि । हांगोतमछे ! साभंते किंपुट्ठाकज्जइ । तिका हेभग वन् । स्पर्शनथकी होय । अपुट्ठाकज्जइ । अथवा अणफरसी थाय । जावणिव्वाघाएणछदिसिं । यावत् जिहां अलोक नेहानथी तिहां छदिशिने फरसी कर्मलागे । वाघायपडुच्च सियतिदिसिं सियचउदिसिं सियपंचदिसिं । व्याघात आश्री अलोक नेहाथी तिहां किहां एक तीनदिशि शेषदिशि अलोकमाटे नहुये, किहांएक चारदिशि किहांएक पांचदिशि एसव प्रकारनो परो विचारीने कह्यो । साभंतेकिंकडाकज्जइ । ते हेभगवन् ! ए प्राणातिपातिको क्रियाकीधी हुवे अथवा । अकडाकज्जइ । अणकीधी हुवे प्राणातिपातिको क्रिया इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा कडाकज्जइ नोअकडाकज्जइ । हेगोतम ! को

क्रियतइतिक्रिया कर्म्म साक्रियते भवति, पुढेत्यादे व्याख्यापूर्ववत् ॥ कळाकज्जइति ॥ कृताजव त्यक्तस्यकर्म्मणो भावात् ॥ घतकळाकज्जइति ॥ भास्मकृतमेव कस्ममवति नान्यथा ॥ भवानुपुव्विकळाकज्जइति ॥ पूर्वपश्चा द्विभागो यत्रनास्ति तदनानुपूर्वी शब्देनोच्यतइति ॥ अज्ञानेरइयातहा

घसकळाकज्जइ पोपरकळाकज्जइ णोतदुभयकळाकज्जइ । साभंते ! किं आणुपुव्विकळा कज्जइ अणाणुपुव्वि कळा कज्जइ ? गोयमा ! आणुपुव्विकळाकज्जइ नोअणाणुपुव्विकळाकज्जइ । जायकळा जायकज्जइ जायक ळिस्सइ सव्वासा आणुपुव्विकळा नोअणाणुपुव्विकळातिवत्तव्वंसिया । अत्थिणंभंते ! नेरइयाणं पाणाइवाय

घो क्रिया लागे भववोधा कमना अभावमाटे, पनि भववोधो प्राणातिपातको क्रिया नवांमे । साभंतेंकिंघतकळाकज्जइ । क्रिया हेभगवन् ! एं आपथी वोधोक्रिया लागे अथवा । परकळाकज्जइ । पारवोकोथी प्राणातिपातवोक्रिया लागे अथवा । तदुभयकळाकज्जइ । आत्मपर ते वेउ थात प्राणातिपाति को क्रिया लागे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा घतकळाकज्जइ । हेगोयम ! आपथी कोधे प्राणातिपातको क्रिया लाग पनि । नोपरकळाकज्जइ । पारवोकोथी प्राणातिपातको क्रिया नवांमे । नोतदुभयकळाकज्जइ । बेउमिलो क्रियावोधो ते एकने दुःखदायक नहोय जेहनो मन पधिको तेहने थायो । साभंतेकिं आणुपुव्वीकळाकज्जइ अणाणुपुव्वोकळाकज्जइ । क्रिया हेभगवन् ! एं आनुपुर्वीय अनुक्रमेवोधो लागे अनुक्रमवोले नहे आपमागे अथवा अनानुपूर्वीयि वोधे ते क्रियालागे वैपरित्ये आपलागे पछेक्रियालागे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा आणुपुव्वोकळाकज्जइ । हेगौतम ! आनुपर्वीयेवोधो क्रियालागे पनि नोअणाणुपुव्वीकळाकज्जइ । अनानुपूर्वीकृतक्रिया नलागे । जाकळा । क्रिया क्रिया पूर्ववोधो अतीतकाले क्रियावोधो । जायकज्जइ । क्रिया वर्तमान काले करेहे । जायकज्जिस्सइ । क्रिया आगामिकाले करशे । सव्वासाआणुपुव्विकळा । तेसगलो आनुपूर्वीयि अनुक्रमेवोधो पनि । नोअणाणुपुव्विकळा तिवत्तव्वंसिया । अनुक्रमरहित अनानुपूर्वी तेवोधो एम नकोये अतीतमपूर्वेके—भविष्यतेवेरवमार्य । ते कराप्यालनारे हेभगवन् ! नारकीने । पा णाइवायकिरियाकज्जइ । प्राणातिपातरूप जीवहिंसारूप क्रिया करता कर्म्मलागे इतिप्रश्न उत्तर । हंताअत्थि । हा गौतम छे । साभंतेंकिंपुठाकज्जइ ।

एगिंदियवज्जाजाणियव्वत्ति ॥ भारकव दसुरादयोपियाव्या एकेन्द्रियवर्जा सोत्यन्यथा तेषामेव विकल्पे– लिङ्गाधारमें छद्दिसिं वाघायं पडुच मियतिदिसिमित्यादे र्विशेषाभिलापस्य जीवपदोक्तस्य भावादेतदेवाह ॥ एगिंदिया जहाजीवातहाजाणियव्वत्ति ॥ जाव मिच्छादसणसल्ले ॥ इहया वत्सरजात् ॥ मायामायासोजयेज्जे, ममनिमृषा मायासोमसमाय मनिबकुम्भाकम्म दोसे, मनजिवकोधमानसरूप मम्रीतिमात्रम्रेय: कलहो रादि:, अभ्याख्याने असद्दोषाविष्करण पेसुन्न प्रच्छन्न असद्दोषाविष्करण परपरिवाए विप्रकीर्ण परेषांगुणदोषवचन' अरइरइ अरति

किरिया कज्जइ ? हंता ! अत्थि । साणंते ! किं पुठाकज्जइ अपुठाकज्जइ जाव नियमाछद्दिसिं कज्जइ सा भंते ! किं कडाकज्जइ अकडाकज्जइ तचेवजाव नो अणाणुपुव्विकडातिवत्तव्वंसिया । जहानेरइया तहाएगिंदियवज्जा जाणियव्वा जाव वेमाणिया । एगिंदिया जहा जीवा तहाजाणियव्वा , तहापाणाइवाए तहामुसावाए, तहाअदिन्ने, मेहुणे, परिग्गहे, कोहे, जाव मिच्छादसणसल्ले । एव एएण अठारसचउव्वीस दंडगा

तिवा हे भगवन् ! जं सूक्ष्मको लागे ? भवावलगद । भवता भवद लागे । जावविसमाकहिंसिवब्बद । यावत् निवे जूं षड्दिशि भते लागे । सामते किकराकडजद । तिवा क्रिया हे भगवन् । जूं कीधी लागे । भवद्वावब्बद । भवता भवकीधी लागे । तयेव । तिमज सव कहवो । जावनोअणाणुपुव्वि कडातितत्तव्वसिया । यावत् भनानपूर्वीये मकीधी एवम् कहम् । जहानेरइया तहा एगिंदियवज्जाभाणियव्वाजाववेमाणिया । जिम नारकीनेका तिम एकेंद्री वर्जी भमुरकुमारादिक यावत् वैमानिक पर्यंत सव कहवा एकेंद्रीनव्यों तेमाटे एकेंद्रीने त्रिदिशिपदे । निर्व्याघाएण छद्दिसिंवाघायं पडुच्चसियतिदिसि इत्यादि । एगिंदियवज्जाजीवातहाभाणियव्वा जहापाणाइवाए । एकेंद्री जिम जीवपदे तिम कहवा, जिम प्राण दश तेहनो वियोग तेहने प्राणातिपात कहीये जीवनाम हिंसा कहीये जिमप्राणातिपात । तहामुसावाए । तिम मृषावाद भाषवा । अहाअदत्तादाणे मेहुणे परिग्गहे कोहे । तिमज अदत्तादान अणदीधो वस्तुनो लेवा, इमज मैथुन स्त्रीभोग, परिग्रह मूर्च्छा, क्रोध जीवखेद । जावमिच्छादसणसल्लेएव एएणअठारसचउव्वीसदंडगाभाणियव्वा

मोहनीयोदयाविर्तोद्वेग तत्प्रसर रति विषयेषु मोहनीयोदयात् चित्ताभिरतिः अरतिरति मायामोसे तृतीयकषायद्वितीयाश्रवयोः संयोगो ऽनेमच सर्वत्रयोगाउपलक्षिता अथवा वेषान्तरभाषान्तरकरणेन यत्परवञ्चनं तन्मायामृषेति मिथ्यादर्शनं शल्यमिव विविधव्यथानिबन्धनत्वा न्मिथ्यादर्शनशल्यमिति एवं तावद् द्वीतमद्वारेण कर्म्म प्ररूपितं तत्प्रभावतः शास्वत मित्यतः शाश्वतानेव लोकादिभावान् रोहकाभिधान मुनि पुङ्गवद्वारेण प्ररूपयितु मस्तावयन्नाह ॥ तेणंकालेणमित्यादि ॥ पगइभद्दएत्ति ॥ स्वभावतएव परोपकारकरणशील ॥ पगइमउएत्ति ॥ स्वभावत एव भावमार्दवकितो ऽतएव ॥ पगइविणीएत्ति ॥ तथा ॥ पगइउवसंतेति ॥ क्रोधोदयाभावात् ॥ पगइपयणुकोहमाणमायालोभे ॥ सत्यपि कषायोदये मतनुकोपादिभावः ॥ मिउमद्दवसंपन्नेति ॥ मृदु यन्मार्दवं तत्प्रर्ष्यं महंकृतिजयं सत्सम्पन्नः प्राप्तो गुरूपदेशा द्यः सतथा ॥ अल्लीणेत्ति ॥ गुरुसमा

णाभियद्वा। सेवत्तते २ । जगवं गोयमे समण जाव विहरइ ॥ तेणकालेण तेणसमएण समणस्स जगवञ म हावीरस्स अतेवासीरोहेणामअणगारे पगइनद्दए पगइमउए पगइविणीए पगइउवसंते पगइपयणुकोहमा

हवी यावत् मर्ने नाम माया मान राग द्वेष कलह अभ्याख्यान पैशून्य परपरवाद अरतिरति मायामोस मिथ्यादर्शनशल्य ए सर्व अढार पापस्थानक पडवोसडवे कहवा। सेवभंते भंतेत्ति। तहत्ति, हे भगवन्! तुम्हेंकह्यो ते सत्यछे एम कहीने एसा कह्यो। भगवन्गोयमे समणभगवन्महावीरप्रत्ये यावत् विचरतायका एम भक्तिमा गौतमने पधिकारे कर्म प्ररूप्या। हवे ते कर्म प्रवाहथी शाश्वतोछे एतला भाटेशाश्वता लोकादिकना भाव रोहकनामा साधु तेहने प्रश्नोत्तरकरीने—तेणंकालेणं। तेणकालनेविषे। तेणसमएणं। ते समयने विषे समणभगवन्महावीरस्स। श्रमण तपस्वी भगवंत ज्ञानवंत ऐश्वर्यादिवंत श्रीमहावीरनो। अंतेवासी रोहेणामंअणगारे। शिष्य रोहनामे साधु पगइभद्दए। स्वभावे पर उपकारी। पगइमउए। स्वभावथी कोमलभाव। पगइविणीए। स्वभावे विनयवंत। पगइउवसंते। स्वभावे क्रोधरहितपणो। पग इपयणुकोहमाणमायालोभे। स्वभावे पातला क्रोध मान माया लोभछे। मिउमद्दवसंपन्ने कोमलपणे अहंकार जीत्यो। ए ते

णमायालोत्ते मिउमहयसपन्ने श्रलीणे भद्दए विणीए समणस्सभगवउमहावीरस्स श्रदूरसामते उड्ढं जाणू श्रहोसिरे ज्झाणकोठोवगए सजमेण तवसा श्रप्पाणभावेमाणे विहरइ। तएणसे रोहे श्रणगारे जायसड्ढे जाय पज्जुवासमाणे एयवयासी पुव्विभते ! लोए पच्छाश्रलोए पुव्विश्रलोए पच्छालोए ? रोहा ! लोएय श्रलोए य पुव्विपेते पच्छापेते दोवेएसासयाभावा श्रणाणुपुव्वीए सारोहा। पुव्विभते ! जीवा पच्छा श्रजीवा

य मयम गुनजपलगयौ गुनममोपरद्मा, पयवा समोने गयन्त मतारायव मरू सवा गुणायते। समणस्सभगवयामहावीरस्स। श्रमण भगवंत श्रीमहा वीरस्वामीने। श्रदूरसामते। पतिविमकोमयौ पति ढूकडोमयौ। उड्ढंजाणूपहोसिरे। जया ढींचण ऊंचौ मावो। ज्झाणकोठोवगए। ध्यानरूप कोठाने विषे धमध्यान विषे स्थिरचित्तवका। सजमेणतवसा श्रप्पाणभावेमाणेविहरइ। सतरेभेदे सयम तेणे तथा बारमेदे तपकरोने तेणेकरी तथा तप बारे भेदे तिणे सयमा सम मिलारिये तेण करी श्रात्मा जीव ते मतें भलो भावनाये भाववायका विचरे। तएणसेरोहेश्रणगारे जायसड्ढे। तिवारे तेरोहा नामे साधुजाणनी वाचा एतले श्रावाये सहित। जावपज्जुवासेमाणे। यावत् मन्ये सेवा करतावका एसवं गौतमनोपरें कहयो। एववयासी। इम वचमा न कहता हवा। पुव्विभतेलोए। पहिले हेभगवन्। लोकहे। पच्छाश्रलोए। पछे श्रलोकहे। पुव्विश्रलोए। श्रथवा पूर्वे श्रलोकहे। पच्छालोए। पछेलो कहे इतिप्रश्न उत्तर। रोहा भावप श्रलोए। हेरोहा लोक श्रपुन श्रलोक। पुव्विपेते पच्छापेते। पूर्वे पणिए पछेपणिए। दोवेएसासयाभावा। एवमाव तथा श्रमाव वेई सास्वताभावछे हवो सदेव भयो। श्रणाणुपुव्वीएसारोहा। पहिले पाछे जिहा श्रतर भयो एतले होन्दरावराछे एहमाहे पहिला पाछे बोर वचवाय भयो। पुव्विभतेजीवा। पच्छाश्रजीवा पूर्वे—पहिला हेभगवन्। जीवछे। पच्छाश्रजीवा। पछे श्रजीवछे श्रथवा। पुव्विश्रजी वा। पूर्वे श्रजीवछे। पच्छाजीवा श्रजीव भाएव श्रजीवछे। पछे जीवछे इतिप्रश्न उत्तर कहेछे—जिमहोज लोक श्रने श्रलोक पहिला पछे नथाया। तहिव जीवाश्रजीवाय। तिमहोज जीव श्रजीव एहोन् शास्वताभावछे पहोनेविषे पूर्वापरविभागश्रानो पणि करी नसजो। एवमयमिशियाय। इमश्रस्य सि

मोहनीयोदयाविर्त्तोद्वेगः तत्वसा रति विषयेषु मोहनीयोदयात् चित्ताभिरति अरतिरतिः मायामोसे वृतीयकषायद्वितीयाश्रवयो संयोगो ऽनेन सर्वसंयोगाउपलक्षिता अथवा वेषान्तरभाषान्तरकरणेन यत्परवञ्चनं तन्मायामृषेति मिथ्यादर्शन शल्यमिव विविधव्यथानिबन्धनत्वा न्मिथ्यादर्शनशल्यमिति एव ताव द्वीतमद्वारेण कर्म्म प्ररूपित तथमवाहतः शास्वत मित्यतः शाश्वतानेव लोकादिभावान् रोहकाभिधान मुनि पुंगवद्वारेण प्ररूपयितु मस्तावमाह ॥ तेणंकालेणमित्यादि ॥ पगइभद्दएत्ति ॥ स्वभावतएव परोपकारकरणशील ॥ पगइमउएत्ति ॥ स्वभावत एव भावमार्दववितो ऽतएव ॥ पगइविणीएत्ति ॥ तथा ॥ पगइउवसंतेत्ति ॥ क्रोधोदयाभावात् ॥ पगइपयणुकोहमाणमायालोहे ॥ सत्यपि कषायोदये मतनुक्रोधादिभाव ॥ मिउमद्दवसंपन्नेति ॥ गुरु पम्मादेव अत्यंत मार्दवमात्रय सत्संप्राप्तः प्राप्ता गुरूपदेशा द्य सतथा ॥ अल्लीणेत्ति ॥ गुरुसमा

णाभियद्धा । सेवंभंते २ । भगवं गोयमे समणं जाव विहरइ ॥ तेणंकालेणं तेणंसमएणं समणस्स भगवओ म हावीरस्स अंतेवासीरोहेणामअणगारे पगइभद्दए पगइमउए पगइविणीए पगइउवसंते पगइपयणुकोहमा

दर्शन शल्य ए मान माया लोभ राग द्वेष कलह अभ्याख्यान पैशून्य परपरिवाद अरतिरति मायामृषा मिथ्यादर्शनशल्य ए अढार पापस्थानक वर्त्तीसंदंडके कहवा । सेवंभंते भंतेत्ति । तहत्ति, हे भगवन् ! तुमेकह्यु ते सत्यसत्य छे ए अर्थ जाणवो एहवोकहो । भगवंगोयमे समणंभगवंमहावीरंवंदइजाववि हरइ । भगवंत गौतम श्रमण भगवंत श्रीमहावीरने वांदी यावत् विचरवालागा, इम पहिला गौतमने अधिकारेँ कर्म प्ररूपणा कीधी ते कर्म प्रवाहथी शाश्वताछे एतला माटे शाश्वता लोकादिकना भाव रोहनामा साधु तेहने प्रश्नोत्तरकरीके—तेणंकालेणं । तेणंकालेणं । तेणंसमएणं । ते समये श्रमणतपस्वी भगवंत ज्ञानवंत ऐश्वर्यादिवंत श्रीमहावीरनो । अंतेवासी रोहेणामंअणगारे । शिष्य रोहनामे साधु पगइभद्दए । स्वभावे पर उपकारी । पगइमउए । स्वभावथी कोमलस्वभाव । पगइविणीए । स्वभावे विनयवंत । पगइउवसंते । स्वभावे क्रोधउपशमनथी । पग इपयणुकोहमाणमायालोभे । स्वभावे पातला क्रोध मान माया लोभछे । [illegible]

द्वि मिहति पंयास्ते भवसिद्धिका भव्या इत्यय ॥ सत्तमेउवासंतरत्ति ॥ सप्तमपृथिव्या अधोवर्त्याकाशमिति सप्तमक्षुल्लगाथे॥ उवासेत्यादिके, तत्र॥ उवासेति ॥ महावआगासंतरत्ति ॥ वायति ॥ तनुवाता घनवाताः ॥ घणउदहित्ति ॥ घनोदधयः ॥ सत्तपुढवित्ति ॥ नरकपृथिव्य सप्तैव॥ दीवायत्ति॥ जम्बूद्वीपादयो मद्वेयाः असंख्याता इय सागरा लवणादयः ॥ वासत्ति ॥ वर्षाणि भरतादीनि सप्तैव ॥ नेरइयाइयत्ति ॥ चतुर्विंशतिदंडक ॥ अत्थियत्ति ॥

यत पच्छालोयंते ? रोहा ! लोयतेय अलोयतेय जाव अणाणुपुव्वीए सारोहा । पुव्विंभंते ! लोयते पच्छा सत्त मेउवासंतरे पुच्छा , रोहा ! लोयतेय सत्तमेय उवासंतरे पुव्विंपेते जाव अणाणुपुव्वीए सारोहा , एवं लो यतेय सत्तमेय तणुवाए एवंघणवाए घणोदहिसत्तमापुढवी, एवं लोयंते एक्केक्केणंसंजोएयव्वे, इमेहिंठाणेहिं तंजहा—उवासवायघणउदहि पुढवीदीवायसागरावासा नेरइयादीअत्थिय समयकम्माइंलेस्साओ ॥ १ ॥ दि

गोरोहा लोयंते अने सत्तमउवासंतर अपवित्तिते जाव अणाणुपुव्वी अनेसारोहा । हे रोहा ! लोकांत भणि घनं सातमो पृथिवीना १ आकाशने माहोमाहि पहिला पछि एकने पछि यावत् अनुक्रमरहित पहिला पछे एकनो कहोजमकोये परिमाण पहेंय इमनहीं इहां पूर्व पश्चात्ना अनुक्रम नहीं हेरोहा । एवं लो यंतेय । इम लोकांतापेत घने । सत्तमेयतणवाए । सातमो पृथिवीना तनुवात एहनो प्रश्न तथा उत्तर कहवा । एवघणवायघणोदहि । इम लोकांत घ ने सातमो पृथिवीना घनवात घनोदधि कहवा इम लोकनो अंत घने । सत्तमापढवी । सातमो पृथिवी कहवो । एवंलोयंते । इम लोकनापेत एकेकेणसंजोएयव्वे । एकेकस्थानक कहवा । इमेहिंठाणेहिं । तंजहा । एह स्थानकना नामछे तेकहेछे – गाथायेंकरी । उवासवायघणउदहि । आ काश अंतरा १ तनुवात बीजा घनवात घनोदधि पांचो सात । पुढवीदीवायसागरावासा । नरकनी पृथिवी सात जम्बूद्वीप आदिदेइ असंख्याता द्वीप असंख्याता समुद्र लवणसमुद्र आदिदेइ भरतक्षेत्रादिवास । नेरइयादी अत्थिय । नारकी आदि चउवीसदंडक पंचास्तिकाय अपुन । समयाकम्माइ से स्साओ । १ । कामविभाग पाठ लेश्या छ १ । दिट्ठीदंसणणाणे सणसरीरायजोगउवओगे दव्वपएसापज्जव अद्धाकिंपुव्विंलोयंते । २ । दृष्टि ३ दर्शन ४

पुव्विं अजीवा पच्छा जीवा? जहेवलोएय अलोएय तहेव जीवाय अजीवाय, एवं भवसिद्धियाय अभवसिद्धियाय सिद्धीअसिद्धी सिद्धा असिद्धा। पुच्छिजंति। अभए पच्छाकुक्कुडी पुव्विंकुक्कुडी पच्छा अभए? रोहा! सेण अभए कउ? भयव कुक्कुडीउ, साणकुक्कुडी कउ? भंते! अभयाउ एवामेव, रोहा! सेयअभए सायकुक्कुडी पुव्विंपेते पच्छापेते दुवेएसासयाभावा अणाणुपुव्वीए सारोहा। पुच्छिजंते! लोयते पच्छाअलोयते पुव्विंअलो

हि भवने ते भवसिद्धि कहता भव्य हस्ये। अभवसिद्धियाव। भव्योभाव सिद्ध भवने ते अभव्य हस्य। स्मवि अभिवि। सिद्धि मुक्ति असिद्धि संसार तेमा रे। सिद्धा अभिवा। सिद्धाविवजीव अभिवा संसारीजीव तेमारे एसव, भयोरायो पूछेछे—पुव्विभतेअभए। पूर्वें हेभगवन्! इंडू। पच्छाकुकुडो। पछे कुकडोहे। पुव्विकुकुडो। अथवा पूर्वें पहिला कूकडीहे। पच्छाअभए। पछे ईंडूछे इतिप्रश्न उत्तर। राहासेण अभएकओ। हेरोहा! ते अंडाकोणसंसारे ईंडू किहांथी थयो इसाभाजीवे पूछ्यो। भयवकुकुडीओ। तिवारे रोहो कहेछे—हेभगवन्! कूकडीथी ईंडू थयो, वलीभगवंतकहे—साअकुकुडीकओ। कूकडी किहांथी हुई? तिवारे रोहा कहे—भंतेअंडयाओ। हे भगवन्! इंडाथी कूकडीहुइ। एवामेवरोहा सेय अभए। इमज हेरोहा! ते ईंडू। साय कुकडी। तिका कूकडी। पुव्विंपेते पच्छापेते। पहिला पछिए पनेपणिए। दोपेतेअसासयाभावा। दोमूए याग्यताभाव शाश्वता पदाथ। अणाणुपुव्वीएसा रोहा। एहवा पूर्वें पछे एहवो आनुपूर्वींक रहिताछे हेरोहा। पुव्विंभतेलोयते। वलीरोहा पूछेछे—हेभगवन्! लोकना अंतछे। पच्छाअलोयते। पछे अ लोकनेअंतछे अथवा। पुव्विंअलोयते। पूर्वें अलोकनो अंतछे। पच्छालोयते। पछे लोकना अंतछे इतिप्रश्न। रोहा लोयतेय अलोयतेय। हेरोहा! लोक अलोकांत अने अलोकनो अंत एकाज् पहिला पछेनथी। जाव अणाणुपुव्विरोहा। यावत् अनानुपूर्वीछे पछे पहिला एहवा नथी मध्यलोकमे रोहा अने रोहा पूछेछे—पहिले हेभगवन्! लोकनोअंत। पच्छाअसत्तमेउवासंतरेपुच्छा। पछे सातमो पहिलीना हेठिलो आकाशांतर इत्येवमादि बीजे भगवंतकहेछे—

कपदायप्रमाया इय गौतममुखेन सोऽस्थितिमप्रापमायाह ॥ कइविहाणमित्यादि ॥ आकाशप्रतिष्ठितो वायुः तनुवातघनवातरूप तस्या घना ग्रास्तरीपरिस्थितत्वात् आकाशन्तु स्वप्रतिष्ठितमेवेति नतत्प्रतिष्ठाचिन्ताकृतेति तथा वातप्रतिष्ठित उदधिर्घनोदधि तनुघनवातोपरिस्थित स्यात् २ तथा उदधिप्रतिष्ठिता पृथिवी घनोदधीनामुपरिस्थितत्वात् ३ रत्नप्रभादीनां वायुत्वापेक्षया चेदमुक्त मन्यथे पत्प्राग्भारापृथिवी

य तेणं जोजोहेठिल्लो ततठल्लेतेण नेयव्वं, जाव ध्यतीयञ्चणागयद्धा पच्छा सव्वद्धा, जाव अणाणुपुव्वीए सा रोहा, सेवन्नतेर जाव विहरइ । भन्तेत्ति भगवं गोयमे समण जाव एवययासी, कइविहाणं भन्ते ! लोय ठिइ पयात्ता ? गोयमा ! अठविहा लोयठिई पयात्ता ? तंजहा ! आगासपइठिएवाए १, वायपइठि

पर्वे भातमा घनवातह भथवा पश्चिमासातमा भनवातधे पर्वे सातमा तनुवातवे ? भगवंतयाहेवे—एवंपितवेवमेवव । एवमपि तिमव आत्मना पश्चिमा पर्वे न वक्तमा । जावसव्वद्धा । यावत् सवघद्धा पततो वक्तवी । एवतवरितपधेमसव्वाव । इम सपरितो एवेजवाडमा मेवता । तेवजोजोहेठिमो । तेहवो जेवे हेठिमो । ततंवस्त्रेपवयेयव्वं । तेते वोक्तो परतामेवयो, इम विचारो चेवा, तावगेतव्वा । जाव भतोतघनागयद्धा । यावत् पश्चिमा भतोत भठा पव भनागतभद्धा, भथवा पश्चिमा भनागतभद्धा पर्वे भतोतभद्धा । पश्चात्सव्वद्धा । इम पश्चिमा भनागतभद्धा पर्वे सर्वाद्धा, भथवा पश्चिमा सर्वाद्धा पर्वे भनागतभद्धा जावघनानुपूर्व्योएसारोहा । यावत् एवम भनानुपूर्व्यो वेरोहा एमर्यवे पश्चिमापवे भवोलमनाये, सदा शाश्वता भावद्धे वेरोहा । सेवमतेभंतेत्तिजाव विहरइ । राहा कहवे—तदति । इभमयन् तुम्भेभ्यु ते भवसत्ये भश्चयानहो हसोकहो यावत् विहरे । भंतेत्तिभगवगायमे समयभमयमहावीर जावण्वंव यासो । भावोतादि भावपदार्थं प्रस्तावको कथा । द्विये गौतम मुखद्वारे लोकस्थितिना स्वरूपप्रश्वाये कहेवे—हे भगवन् ! एवया भागवंत गौतम, श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामी प्रतेवासी यावत् इमकहे । कइविहायभंतेलोयठिइपयत्ता । केतलेभेदे हेभगवन् लोकमोस्थिति कही? इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पइविहालोयठिई पयत्ता तंजहा । हेगोतम भाठभेद सत्रइ रायलोकनो स्थिति रहवा कथा तेकहेवे—भागासपइठ्ठिएवाए १ । भाकाशमध्यपर तनुवात

भसिकाया: पञ्च ॥ समयत्ति ॥ कालविभागाः कर्मास्पृष्टी' सेवणा पद् पुद्गलोमिथ्यादृष्ट्यादय स्थिताः दशमानिचत्वारि, ज्ञानानिपञ्च, सञ्ज्ञा
शतस' शरीराणिपञ्च योगास्त्रय उपयोगौद्वौ द्रव्याणिषट् प्रदेशा अनन्ताः पर्याया अनन्ताएव ॥ अद्धत्ति ॥ अतीताद्धा अनागताद्धा सर्वाद्धा
चेति ॥ किंपुव्विंलोयंतेत्ति ॥ अयं सूत्राभिलापनिर्देश सर्वेव पश्चिमसूत्राभिलाप दर्शयन्नाह ॥ पुव्विंपसेलोयंतेपच्छासव्वद्धेति ॥ एतानिच सूत्राणि
शून्यवादादिवादनिरासेन विविधवाह्याध्यात्मिकवस्तुसत्ताभिधानार्थानि ईश्वरादिकृतत्वनिरासेन चानादित्वाभिधानार्थानीति लोकान्तादिलो

ठोद्दसणाणा समसरीरायजोगउवओगे दव्वपएसापज्जव अद्धाकिंपुव्विंलोयंते ॥ २ ॥ पुव्विंभंते ! लोयंते प
च्छासव्वद्धा ? जहालोयंतेण सजोवया सव्वेठाणा, एते एव अलोयंतेणवि सजोएयव्वा सव्वे, पुव्विंभंते ! स
त्तमे उवासंतरे पच्छा सत्तमेतणुवाए एवं सत्तम उवासंतरसव्वेहिं सम सजोएयव्वे, जाव सव्वद्धाए पुव्विंभं
ते ! सत्तमेतणुवाए पच्छासत्तमेघणवाए, एयंपि तहेव नेयव्वं, जाव सव्वद्धा, एवं उवरिल्लं एक्केक्कं सजो

ज्ञान ६ संज्ञा ६ शरीर ६ वपन बाग ६ उपयोग २ द्रव्य ६ प्रदेश अनन्ता पर्याय अनन्ता अतीतअद्धा अनागतअद्धा सर्वाद्धा एतला स्थानक पूर्वना छ ?
पछिला लोकांत २ भयवा । पज्जिवंतंलोयते । अलोक विषय अलोकसूत्र देखाडे छे—पूर्वे हे भगवन् ! लोकांत । पच्छासव्वद्धा । सहू सवधा इत्यादि स
वं कहवो । अहाभावतेणसंजोएयव्वासव्वेठाणा । जिम लोकनावत ए भेला कोधा तमसा स्थानक सातमा अवकाशांतरादिक तिम । एतेपवअलोयंतेण
विसंजोएयव्वा । ए इमज अलोकना अन्तको पणि अलोपरेविचारीने कोहवा भेलवा अलोकनो पूछे छे—सेपुव्विंभंतेसत्तमेउवासंतरेपच्छासत्तमेतणुवाए ।
ते पहिला हे भगवन् सातमोपृथिवीनो आकाशांतर अने पछे सातमोपृथिवीनो तनवात अथवा पहिला सातमो आकाशांतर इमपूछा भगवंत कहे छे—ए
वं पहिला पछे कहो नसकोये । एवसत्तमंउवासंतर । इम सातमो आकाशांतर । सव्वेहिंसमसंजोएयव्वजावसव्वद्धाए । सगळे ठामे जोडवो जाणवो म
ध्या तांतने कहवा अलोराद्रोपूछे छे—पुव्विंभंतेसत्तमेतणुवाए । पहिला हे भगवन् सातमी पृथिवी अथवा सातमो तनुवातवे । पच्छापणमघणवाए ।

वपदायमप्तायां इय गौतममुखेन लोकस्थितिप्रज्ञापनायाह ॥ कइविहाणमित्यादि ॥ आकाशप्रतिष्ठितो वायु स्तनुवातघनवातरूप स्तस्या वका शान्तरोपरिस्थितत्वात्, आकाशन्तु स्वप्रतिष्ठितमेवेति मतरप्रतिष्ठाभिलापकतति तथा वातप्रतिष्ठित उदधिर्घनोदधि स्तनुघनवातोपरिस्थित त्वात् २, तथा उदधिप्रतिष्ठिता पृथिवी, घनोदधीना मुपरिस्थितत्वात् ३ रत्नप्रभादीनां वायुस्यापेक्षया चेदमुक्त मन्यथे पत्प्राग्भारापृथिवी

य तेणं जोजोहेठिसो ततवक्लेतेण नेयव्व, जाव अतीयच्छणागयद्धा पच्छा सव्वद्धा, जाव अणाणुपुव्वीए सा रोहा, सेवन्नते२ जाव विहरइ। नतेत्ति नगवं गोयमे समणं जाव एवंवयासी, कइविहाणं नंते! लोय ठिई पण्णत्ता? गोयमा! अठविहा लोयठिई पण्णत्ता? तंजहा! आगासपइठिएवाए १, वायपइठि

पश्चे भातमा घनवातक पश्चात् महिलासातमा घनवातव पश्चे सातमा तनुवातहे ? भगवंतकहेछे—एवंपितहेवचेतव्व। एमचि तिमज जावत पछिला पश्चे न कहवा। जावसप्तद्धा। यावत् सर्वप्रद्धा एतलो कहवा। एवलवरितपत्तेयसजोयं। इम जपरिला पवेलकाडवा मेलवो। तेसजीवोहेठिलो। तेसवो जेने हेठिलो। ततवत्वेएतवेयव्वं। तेणे जोडवो परहोमेलवो, इम विचारी लेवा, तावरोअहवी। जाव अतीयअणागतद्धा। यावत् पहिलो अतीत भद्धा पश्च अनागतभद्धा, अथवा पहिलो अनागतभद्धा पश्चे अतीतभद्धा। पश्चासव्वद्धा। इम पहिलो अनागतभद्धा पश्चे सर्वाद्धा, अथवा पहिला सर्वाद्धा पश्चे अनागतभद्धा जावयमाणुपुव्वोएसारोहा। यावत् एसव अनानुपूर्वीइ वेरोवा एमवने पहिलापवे अजोमसजोये, सदा शाश्वता भावछे हेरोहा। सेवभतेभतेत्तिजाव विहरइ। राजा कहछे—तहत्ति। अमयवन् तुमेकहु ते सवसत्यछे अनवगजीं प्रसाकहो यावत् विचरे। भतेत्तिभगवगोयमे समणंभगवमहावीरं जावएवं यासो। आकाशादि नावपदार्थ प्रस्तावको कथा। हिवे गौतम पुछवारे भावस्थितिना स्वरूपभावे कहेछे—हे भगवन्! एहवा भगवंत गौतम, श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी प्रते वांदी यावत् इमकहे। कइविहाणंभंते-लोयठिईपण्णत्ता। केतलेभेदे हेभगवन् लोकनोस्थिति कहो इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा अठविहालोयठिई पण्णत्तातंजहा। हेगौतम आठभेद जगत्ताजलोकनो स्थिति इहवा कह्या तेकहेछे—आगासपइठिएवाए १। आकाशऊपर तनुवात

मस्तिकाया· पञ्च ॥ समयति ॥ कालविजाया: कर्माष्टौ· लेश्या· षट्, दृष्टयोमिथ्यादृष्ट्यादय स्तिस्र:, दर्शनानिचत्वारि ज्ञानानिपञ्च, सञ्ज्ञा
यतस्र: शरीराणिपञ्च योगास्त्रय उपयोगौद्वौ द्रव्याणिषट् प्रदेशा अनन्ता पर्यवा अनन्ताएव ॥ अद्वत्ति॥ अतीताद्धा अनागताद्धा सर्वाद्धा
चेति ॥ किंपुव्विंलोयतेत्ति ॥ अथ सूत्राभिलापनिर्देशं सर्वत्र पश्चिमसूत्राभिलाप दर्शयन्नाह ॥ पुव्विंभंतेलोयंतेपच्छासव्वद्धेति ॥ एतानिच सूत्राणि
भूम्यम्बानादिवादनिरासेन विविधबाह्याध्यात्मिकवस्तुसत्ताभिधानार्थानि ईश्वरादिकर्तृत्वनिरासेन चानादित्वाभिधानार्थानीति लोकान्तादिलो

ठीवदंसणणाणा समसरीरायजोगउवओगे दव्वपएसापज्जव अद्धाकिंपुव्विंलोयंते ॥ २ ॥ पुव्विंभंते ! लोयंते प
च्छासव्वद्धा ? जहालोयंतेणं सजोइया सव्वठाणा, एते एवं अलोयंतेणवि संजोएयव्वा सव्वे, पुव्विंभंते ! स
त्तमे उवासंतरे पच्छा सत्तमेतणुवाए एवं सत्तमं उवासंतरसव्वेहिं समं संजोएयव्वे, जाव सव्वद्धाए पुव्विंभं
ते ! सत्तमेतणुवाए पच्छासत्तमेघणवाए, एयंपि तहेव नेयव्वं, जाव सव्वद्धा, एवं उवरिल्लं एक्केक्कं संजो

ज्ञान ५ संज्ञा ४ शरीर ५ वचन काय ३ उपयोग २ द्रव्य ६ प्रदेश अनन्ता पर्याय अनन्ता अतीतअद्धा अनागतअद्धा सर्वाद्धा एतला स्थानक पूछवा ते ?
पहिला लोकांत २ पछेथी । पुव्विंभंतेलोयंते । एहोज विशेष देखाडे छे—पूर्वे हे भगवन् ! लोकांत । पच्छासव्वद्धा । पछे सर्वकाल इत्यादि स
व कहवो । जहालोयंतेणसजोइयासव्वठाणा । जिम लोकनाअंत संघाते जोड्या सघला स्थानक सातमा अवकाशांतरादिक तिम । एतेएवअलोयंतेण
विसजोयव्वा । ए इमज अलोकना अंतसंघाते पणि अतीतादिकसघलाने जोडवा जेमज, अतीते पूछे छे—सेपव्विंभंतेसत्तमेउवासंतरेपच्छासत्तमेतणुवाए ।
ते पहिला हे भगवन् सातमीपृथिवीनो आकाशांतरने पछे सातमीपृथिवीनो तनवात अथवा पहिला सातमो आकाशांतर इमपूछ्या भगवंत कहेछे—ह
वा पहिला पछे कशो गयबोले । एवसत्तमंउवासंतर । इम सातमो आकाशांतर । सव्वेहिंसमसंजोएयव्वंजावसव्वद्धाए । सघले ठामे जोडवो जाव
चका तीजमे कहवा अतीतेयोपूछेछे—पुव्विंभंतेसत्तमेतणुवाए । पहिला हेभगवन् सातमी पृथिवी अथवा सातमो तनुवातछे । पच्छासत्तमेघणवाए ।

यो प्युतरवाक्ये दृश्यहति ३ सथा जीवाः कम्मसङ्गृहीताः ससारिजीवाना मुदयप्राप्तकम्मवशवर्त्तित्वात् येच महुशा सोतप्रतिष्ठिता यथा–पटे रूपादय इत्येव मिथाव्याधाराधयता दृश्यति ॥ सेजहानामएकेइत्ति ॥ म यथानामको यत्प्रकारनामा देवदत्तादिनामेत्यर्थः अथवा ॥ सेइति ॥ म यथेति दृष्टान्तायः नामेति सम्भावनायां ए इतिवाक्यालङ्कारे ॥ वत्थिंति ॥ वस्तिदृति ॥ आफ्रोयेइत्ति ॥ आटोपय द्वायुना पूरयेत् ॥ उप्पिसि यर्यपइत्ति ॥ उपरिमितं पिवृत्यन्न इतिवचनात् कप्रत्ययस्यच भावायत्वा इत्कर्मार्थत्वाद्वा अध्मुधिमित्यर्थः बभाति करोतीत्यर्थ अथवा ॥ अप्पिमियति ॥ उपरि तमिति वस्तिं ॥ सेयाउयाएत्ति ॥ सो अप्काय स्तस्यवायुकायस्य ॥ उप्पित्ति ॥ उपयुपरिजावस्य व्यवहारतोपिस्या दित्यत आह ॥ उपरितले सर्वोपरीत्यर्थः यथा–वायु राधारो जलस्य दृष्ट मेव माधाराधेयभावो भवति आकाशघनवातादीनामितिभावः भाषा

विहा जाय जीयाकम्मसगहिया ? गोयमा ! सेजहानामए केइपुरिसे वत्थिमाफ्रोवेइ २ त्ताउप्पिसिइयघइ २ त्ता मज्झेगंठियघइ २ त्ता उवरिल्लंगंठिमुयइ २ त्ता उवरिल्लदेसयामेइ २ त्ताउवरिल्लदेस आउयायस्सपूरेइ २ त्ता उप्पि सियघइ २ त्तामज्झिल्ल गंठिंमुयइ । सेणूण गोयमा ! सेआउयाए तस्सवाउयायस्स उप्पि उवरितले चिठइ ?

कहो यावत् जीवकर्मे सग्रह्या हे गौतम इम पूछयांथका भगवंत कहेवे—उत्तर । गोयमा सेजहानामए । हेगौतम ते यथा दृष्टांते नामइति कोमलामंत्र णे । केइपुरिसेवत्थिमाफ्रोवेइ । कोई देवदत्तनामे पुरुष दीवडीवायेकरो फूंकेकरी पूरे । वत्थिमाफ्रोवेत्ता । दीवडीवायेकरी पूरीने पछे । उप्पिसिर्यवधइ २ त्ता ऊपरलो तेहनामुख वांधे मुखे पंधवांधे वांधीने । मज्झेगंठिर्यवधइ २ त्ता । मध्य गांठि दीवडीने विचे वांधे वांधीने । उवरिल्लंगंठिमुयइ २ त्ता । पछे मुखनो ऊपरिली गांठ मूके मांठिप्रामे छाडीने । उवरिल्लदेसवामेइ २ त्ता । ऊपरिला देशनो वायरोकाढे काढीने पछे । उवरिल्लदेसआउयाएसपूरेइ २ त्ता । छ परिमाहेममोहियेहमेवि पाणीस भरे पाणीस भरीने । उप्पिसितवधइ २ त्ता । ऊपरलो मुखनो गांठिबांधे बांधीने तिवारे पछे । मज्झिल्लगंठिमुयइ । विचलीगांठि छोडे छ डे । सेणूण गोयमा । ते निश्चे हेगौतम । सेआउयाए । ते अपकाय । तस्सआउयायस्सउप्पिउवरिमतलेचिठ्ठइ । तेहने वायकायने

आकाशप्रतिष्ठितैव तथा पृथिवीप्रतिष्ठिता त्रसस्थावराः प्राणा इदमपि प्रायिकमेवा न्यथा आकाशपर्वतविमानप्रतिष्ठितामपि तेसन्तीति ४ तथा अजीवाः शरीरादिपुद्गलरूपा जीवप्रतिष्ठिता जीवेषुतेषास्थितत्वात् ५ तथा जीवाः कर्मप्रतिष्ठिताः कर्मसु अनुदयावस्थकर्मपुद्गलसमुदाय रूपेषु संसारिजीवानामाश्रितत्वात् अन्यत्वाहुः—जीवाः कर्मभिः प्रतिष्ठिता नारकादिभावेना वस्थापिता ६ तथा अजीवा जीवसङ्गृहीता मनो भाषादिपुद्गलात्मा जीवैः सङ्गृहीतत्वात् अजीवाजीवप्रतिष्ठिता तथा अजीवाजीवसङ्गृहीता इत्येतयोः कोभेद ? उच्यते पूर्वस्मिन् वाक्ये आधाराधे यभावउक्त उत्तरेतु सङ्ग्राह्यसङ्ग्राहकभाव इतिभेदः यच यस्यसङ्ग्राह्य तत्तस्या धेयम प्यर्थापत्तितः स्या द्यथा—अपूपस्य तैल मित्याधाराधेयता

एउदही २, उदहिपइठियापुढवी ३, पुढवीपइठियातसाथावरापाणा ४, अजीवाजीवपइठिया ५, जीवाकम्मपइठिया ६, अजीवाजीवसंगहिया ७, जीवाकम्मसंगहिया ८, सेकेणठेणंभंते! एवंवुच्चइ अठ

घनवात रह्याछे आकाशपातेज प्रतिष्ठितछे तेमाटे आकाशप्रतिष्ठितभो [illegible] नथीतो आकाशविषडी अपर रह्या नथी। वातपइट्ठिउदही २। तनत घनवात अपर घनोदधि प्रतिष्ठित थइतो रह्याछे २ घनोदधि अपर रत्नप्रमादि पृथिवीरहीछे। उदहिपइट्ठिपुढवी। तेमाटे उदधि प्रतिष्ठित पृथिवी कही, ए रत्नप्रभादिक सात पृथिवीआश्रीने जाण बहुलपणामाटे, अन्यथा ईषत्प्राग्भारा पृथिवी आकाश प्रतिष्ठितछे ३। पढवीपइट्ठियातसथावरापाणा ४ पृथिवी उपरिरह्या त्रसस्थावरजीव ए पणि प्रायकथनछे अन्यथा आकाशपर्वत विमानमेविषे पणिरहेछे ४। अजीवा जीवपइट्ठिया ५। शरीरादि पुद्गलरूप अजीव ते जीवमेविषे प्रतिष्ठित रह्याछे जीवाश्रितछे तेमाटे। जीवा कम्मपइट्ठिया ६। जीव संसारी कर्म पुद्गलरूपनेविषे प्रतिष्ठितरह्या, अथवा जीवकर्म प्रतिष्ठित नारकी आदिभावेरह्या ६। अजीवाजीवसंगहिया ७। मन भाषादि पुद्गल जीव ग्रह्याछे पूर्वेअथवा अजीवाजीव पइट्ठिया तिम अजी रह्याछे सप्तमा ७। जीवाकम्मसंगहिया ८। संसारीजीव कर्मसंग्रह्या उदयपाम्या कर्मनेवशे प्रवर्तेछे जेजेकर्मवशेवि तेतिकरी प्रतिष्ठित कहीये जिम घटने विषे रूपादिकछे ८ गौतम कहेछे—सेकेणठेणंमतेएवंवुच्चइ। ते स्ये कारणे हे भगवन् इमकहु। अट्ठविहालोयठिई जाव जीवाकम्मसंगहिया। आठभेदे लोकस्थिति

वो प्युतरयाप्वे दृश्यइति ७ तथा जीवाः कम्मसङ्गृहीताः ससारिजीवाना मुदयप्राप्तकम्मवशवर्त्तित्वात् येन यद्वशा सेतग्रप्रतिष्ठिता यथा-घटे रूपादय इत्येव मिहाप्याधाराधयता दृश्येति ॥ सेजहानामयकेइति ॥ स यथानामको यत्प्रकारनामा देवदत्तादिनामेत्यर्थः, अथवा ॥ सेइति ॥ स यथेति दृष्टान्तायः नामेति सम्भावनाया, ए इतिवाक्यालङ्कारे ॥ वत्थिंति ॥ वस्तिदृति ॥ आढोवेइति ॥ आटोपये द्वायुना पूरयेत् ॥ उप्पिसि यंबधइति ॥ उपरिमित पिङ्गबन्धन इतिवचनात् कम्मप्रत्ययस्य भावार्थत्वा दकर्मार्थत्वाद्वा यन्थबुधिमित्यर्थः बध्नाति करोतीत्यर्थ अथवा ॥ उप्पिमियति ॥ उपरि तमिति वस्तिं ॥ सेआउयाएति ॥ सो अप्काय सास्यवायुकायस्य ॥ उप्पिति ॥ उपयुपरिजायम व्यवहारतोपिस्या दित्यत माह ॥ उपरितले सर्वोपरीत्यथः यथा-वायु राधारो अलस्य दृष्ट, एव माधाराधेयभावो भवति आकाशघनवातादीनामितिभावः भाषा

विहा जाय जीवाकम्मसगहिया ? गोयमा ! सेजहानामए केइपुरिसे वत्थिमाडोवेइ २ त्ताउप्पिसिइयधइ २ त्ता मज्झेगठियधइ २ त्ता उयरिल्लंगठिमुयइ २ त्ता उवरिल्लदेसवामेइ २ त्ताउयरिल्लदेस आउयायस्सपूरेइ २ त्ता उप्पि सियबंधइ २ तामज्झिल्ल गठिमुयइ। सेणूण गोयमा ! सेआउयाए तस्सवाउयायस्स उप्पि उयरितले चिठइ ?

कहो यावत् जीवकर्मे सग्रह्याछे गौतम इसे पूछ्याथका भगवंत कहेछे—उत्तर। गोयमा सेजहानामए। हेगोतम ते यथा दृष्टांते नामइति कोमलामंत्र णे। वेइपुरुषेवत्थिमाडोवेइ। कोई देवदत्तनामे पुरुष दीवडोवायेकरी फूकेकरी पूरे। वत्थिमाडोवेत्ता। दीवडोवायेकरी पूरीने पछे। उप्पिसियंबधइ २ त्ता ऊपरलो तेहनासुख बांधे मुखे पवनबांधे बांधीने। मज्झेगठिंबधइ २ त्ता। मध्य माहि दीवडोने विचे बांधे बांधीने। उयरिल्लगंठिमुयइ २ त्ता। पछे मुखनो ऊपरलो गांठ मूके गांठिपोसे खाेलीने। उवरिल्लदेसवामेइ २ त्ता। ऊपरिला देशनो वायरोकाढे काढीने पछे। उवरिल्लदेसआउयाएसपूरेइ २ त्ता। ऊपरिला देशमेविषे पहलेविषे पाणीसू भरे पाणीसू भरीने। उप्पिसियबंधइ २ त्ता। ऊपरलो मुखनो गांठिबांधे बांधीने तिवारे पछे। मज्झिल्लगंठिमुयइ। विचमीगांठि खोले छोडे। सेणून गोयमा। ते निश्चे हेगोतम। सेआउयाए। ते अपकाय। तस्सआउयायस्सउप्पिउवरिमतलेचिट्ठइ। तेहने वाउकायने

आकाशप्रतिष्ठितैव तथा पृथिवीप्रतिष्ठिता त्रसस्थावराः प्राणा इदमपि प्रायिकमेवा न्यथा आकाशपर्वतविमानप्रतिष्ठितानपि ते सन्तीति ४ तथा अजीवाः शरीरादिपुद्गलरूपा जीवप्रतिष्ठिता जीवेषु तेषामाश्रितत्वात् ५ तथा जीवाः कर्मप्रतिष्ठिताः कर्मसु अनुदयावस्थकर्मपुद्गलसमुदाय रूपेषु संसारिजीवानामाश्रितत्वात् अन्येत्वाहुः—जीवाः कर्मभिः प्रतिष्ठिता नारकादिभावेना वस्थापिताः ६ तथा अजीवा जीवसङ्गृहीता मनो भाषादिपुद्गलाना जीवैः सङ्गृहीतत्वात् अजीवाजीवप्रतिष्ठिता तथा अजीवाजीवसङ्गृहीता इत्येतयोः कोभेदः ? उच्यते पूर्वस्मिन् वाक्ये आधाराधे यभाव उत्तरे तु सङ्ग्राह्यसङ्ग्राहकभाव इतिभेदः यच्च यस्य सङ्ग्राह्यं तत्तस्य आधेयम् अपर्यापतितः स्या यथा—अपूपस्य तैल मित्याधाराधेयता

एउदही २, उदहिपइट्ठियापुढवी ३, पुढवीपइट्ठियातसाथावरापाणा ४, अजीवाजीवपइट्ठिया ५, जीवाकम्मपइट्ठिया ६, अजीवाजीवसंगहिया ७, जीवाकम्मसंगहिया ८, सेकेणट्ठेणंभंते ! एवंवुच्चइ अट्ठ

अनवात रह्याछे आकाशपातेल प्रतिष्ठितछे तेमाटे आकाशप्रतिष्ठितवायो १ तिवार पछी आकाशविषयी ऊपर रह्या वातो। वातपइट्ठिएउदही २। तनव न घनवात ऊपर घनोदधि प्रतिष्ठित कह्यो रह्याछे २ घनोदधि ऊपर रत्नप्रभादि पृथिवीरह्यीछे। उदहिपइट्ठिएपुढवी। तेमाटे उदधि प्रतिष्ठित पृथिवी कही ए रत्नप्रभादिक सात पृथिवी आश्रयीने वात बहुलपणामाटे अथवा ईषत्प्राग्भारा पृथिवी आकाश प्रतिष्ठितछे ३। पुढवीपइट्ठियातसथावरापाणा ४ पृथिवी ऊपरि त्रसस्थावरजीव ए पणि प्रायकवचने कह्युंछे अन्यथा आकाशपर्वत विमाननेविषे पणि रह्याछे ४। अजीवा जीवपइट्ठिया ५। शरीरादि पुद्गलरूप अजीव ते जीवनेविषे प्रतिष्ठित रह्याछे जीवाश्रितछे तेमाटे। जीवा कम्मपइट्ठिया ६। जीव संसारी कर्म पुद्गलरूपनेविषे प्रतिष्ठितरह्या, अथवा जीवकर्म प्रतिष्ठित नारकी आदिभावेरह्या ६। अजीवाजीवसंगहिया ७। मन भाषादि पुद्गल जीव ग्रह्याछे पूर्वकह्या अजीवाजीव पइट्ठिया तिम अजी स्थापे अथवा ७। जीवाकम्मसंगहिया ८। संसारीजीव कर्मसघला उदयप्राप्त कर्मनेवशे प्रवर्त्तेछे जेजेकर्मनेवशेछे तेतिवारे प्रतिष्ठित कह्योछे जिम घटने विषे रूपादिकछे ८ गौतम कहेछे—सेकेणट्ठेणंभंतेएवंवुच्चइ। ते सेंकारणें हे भगवन् इमकह्यु। अट्ठविहाजावजीवाकम्मसंगहिया। पाठभेदे जीवकम्मति

यजुति ॥ मन्योन्य जीवाः पुद्गलाना पुद्गलाय जीवाना सम्बद्धाइत्यथः कर्थ बद्धाइत्याह ॥ अणमणपुठा ॥ पूर्वं स्पर्शनामात्रेणा न्योन्य स्पृष्टा स ता ऽन्योन्य बद्धा गाढतर मम्बद्धाइत्यर्थः ॥ अणमणमोगाढत्ति ॥ परस्परक लोलीभावगता अन्योन्य सोहमाडिवद्धा इत्यत्र रागादिरूप स्नेहः यदाह स्नेहाभ्यक्तशरीर स्यरेणुनाश्लिष्यतेयथागात्र । रागद्वेषक्लिन स्वकर्मबन्धोजवत्येवमिति ॥ १ ॥ अतएव ॥ अणमणघडत्ताएत्ति ॥ अन्योन्य घटासमुदायो

याय पोग्गलाय अण्णमण्णबद्धा अण्णमण्णपुठा अण्णमण्णमोगाढा अण्णमण्णसिणेहपडिबद्धा अण्णमण्णघडत्ता ए चिठंति ? हंताअत्थि । सेकेणठेणंभंते ! जाव चिठंति , गोयमा ! सेजहानामए हरदेसिया पुण्णे पुण्णप्प

माणनावमणमणवहा।। हे भगवान नार हे भगवन् । जीव अने कर्म शरीरादिपणइ जपना माहामाहि बांध्या जीव पहइने पुद्गल जीवन । अणमणपुठा । माहामाहि स्पर्शनामात्रकरी परस्या, तिवार पछे । अणमणमोगाढा अणमणसिणेहपडिबद्धा । माहोमाहि आगाढा बांधीमांहे मिल्या चोर मोरनी परे मांहामाहि सेहे रागादिके बांध्या जिम शरीर चोपड्या रेणु विलगे तिम । अणमणघडत्ताएचिठ्ठति । मांहामाहि समुदायभावे करी रहे इतिप्र श्न उत्तर । हंताअत्थि । हां गौतम अछ तिमहीजछे । सेकेणठेणंभंतेजावचिठ्ठति । गौतम कहे—तेहो कारणे हेभगवन् । जीव अने पुद्गलसमुदायभावे करी शरीरादि यावत् एतलावगे रहवो इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सेजहानामएहरदेसियापुण्णे । हेगौतम । ते यथादृष्टांति, भासए इतिवाक्यालंकारे, जिम कोई द्रहपांणी भर्या । पुण्णप्पमाणेवोलट्टमाणे । पूरी भर्या समार जघोमडो पाणीयो सरता अवटतम छवारुपामतो तथो सेहगो । वोसट्टमाणे । जवना वहु न पाणीयो विकसताछे । समभरघडत्ताएचिठ्ठति । विषमवढो घडोपरे जल समुदाय जिहां चिरदिवि पाणी पसरवा तेमाटे प्रमाणे होसतो रहेछे । अहे णकेइपरिमितसिहरइमि । अथ कहतां । हिवे यथावाक्यालंकारे, ते भर्या द्रहने अनंतर कोइएक पुरुष तेहनेविषे । एगमहंणावसदासवं । एक मठवी माठो नाव, पवि ते केहवोछे नाले सविकछेहे पाणी आवयाने ते सहितछे । सतछिद्दसहस्सछिदा । माठाछेद्र तिवेसहित एहवो नावेकरी तेपांणी प णमाहे प्रवेशकरे । संपूर्ण नावमा आवाया । तेणिये हेगौतम । तेनावा । ते छिपासयदारोहि । तिवे आयरुबार छिद्रेकरी । आपूरमाणी पुणा २ । जबे

रायपजावय प्राणेष सर्वपदेपु व्यञ्जितइति ॥ मस्थाहमतारमपोसरिसियेसिति ॥ असाप मविद्यमानस्ताय मगापमित्यर्थः असाधोया निरस्ताय स्तलमित्यर्थ मतएवाऽतार तरीतु मशक्य पाठान्तरेण मपारं पारवर्जित पुरुप प्रमाणमस्येति पौरुपेय तत्प्रतिषेधा दपौरुपेय तत कर्मधारयो ऽत सत मकार येरालाक्षणिक एव चाइत्यत्र चाशब्दो दृष्टान्तान्तरतासूचनाय लोकस्थित्यभिधारा देवेदमाह ॥ अत्थिणमित्यादि ॥ अन्यस्त्वाहुः—अजीवाजीवपइठियाइत्यादि पदचतुष्टयस्य भावनार्थ मिदमाह ॥ अत्थिणमित्यादि ॥ पोग्गलति ॥ कर्मशरीरादिपुद्गलाः ॥ अत्थमक्ष

हताचिठइ। सेतेणठेणजाव जीवा कम्मसगहिया, सेजहावा केइपुरिसे वत्थिमाफ्रोयेइ २ त्ता कडोएबधइ ग्र त्थाइमत्थारमपोरिसिय उदगंसिउग्गाहेज्जा। सेणूण गोयमा! सेपुरिसे तस्स श्राउयायस्स उवरिमतले चि ठइ? हता चिठइ। एववा श्रठयिहा लोयठिई पणात्ता, जाव जीवा कम्मसगहिया। श्रात्थिणत्ते! जी

ऊपर ऊपरलेतले पाणी रहे इसे श्रीमहावीरदेवे कह्यो गौतमकहे। हताचिट्ठइ। हा भगवन् रहे, तिवारे भगवतकहे—सेतेणठेण जावजीवाकम्मसगहि या। हे गौतम! जिम वायुने आधारे जलनेरहु दीठू तिम आधाराधेयभावे आकाश घनवातादिक यथिवत्ता यावत् जीवकर्मे समग्रा तासगे कह्य् एवो बीजो दृष्टांत कहेछे—सेजहावाकेइपरिसे। ते जिम कोइ पुरुष देवदत्तादि नामे। वत्थिमाफ्रोवेइ। दीवडी वायेकरीपूरे पछे ते दीवडी। कडिएब धइ। कडिमेतोबांधे पछे। अत्थाह अतार। अघायाखी अथाप तरवानकाय पाठांतरे अपार पाररहित। अपोरिसियउदगसि। पुरुषप्रमाणथी अ धिक पाणीमेविषे ते पइस। उग्गाहेज्जा। अवगाहे पाणीमांहिपेसे। सेणूणगोयमासेपुरिसे। भगवतकहे तेजिमहे गौतम! ते पुरुष। तस्सश्राउयायस्सउ वरिमतलेचिट्ठइ। तेह पाणीने ऊपर रहे पाणी मयगाहवा रहे अंचा रहे इसा भगवतेकह्यो तिवार गौतमकहे। हता चिट्ठइ। हांभगवन् तेपुरुष पा णी ऊपररहे। एवमाअठविहालोयठिइ पणत्ता। तिवारे भगवतकहे इम मा मन्द दृष्टांत तर सूत्रनाहक, इम इणेप्रकारे आठभेदे लोकस्थिति कही। जा वजीवाकम्मसगहिया। यावत् आकाश पइठिएवाते इत्यादि जीवकर्मे समग्रा एतला सगे कहवो, लोकस्थिति अधिकारश्रीज कहेछे—अत्थिणभतेजीवा

मनुति ॥ मन्योर्म्यं जीवाः पुद्गलाना पुद्गलाय जीवाना सम्बद्धाइत्यर्थः कथं बद्धाइत्याह ॥ अण्णमण्णपुठा ॥ पूर्वं स्पर्शमात्रेणा न्योन्य स्पृष्टा स ता अन्योन्य बद्धा गाढतर मन्योन्यबद्धाइत्यर्थः ॥ अण्णमण्णमोगाढत्ति ॥ परस्परेण लोलीभावगता अन्योन्य स्नेहप्रतिबद्धा इत्यत्र रागादिरूपः स्नेहः यदाह स्नेहाभ्यक्तशरीर स्यरेणुनाश्लिष्यतेयथागात्र । रागद्वेषक्लिन्न स्यकर्मबन्धोजयत्येवमिति ॥ १ ॥ अतएव ॥ अण्णमण्णघडत्ताएत्ति ॥ अन्योन्य घटासमुदायो

याय पोग्गलाय अण्णमण्णबद्धा अण्णमण्णपुठा अण्णमण्णमोगाढा अण्णमण्णसिणेहपडिबद्धा अण्णमण्णघडत्ता ए चिठंति ? हंताअत्थि । सेकेणठेणभंते ! जाव चिठंति , गोयमा ! सेजहानामए हरदेसिया पुण्णे पुण्णप्प

पोग्गलाबंधयमणमबद्धा।। ते भंताक्तामत्कार हेभगवन् । जीव भने वस शरीरादिपद्गल वयन माहोमाहि बांध्या जीव पद्गलने पुद्गल जीवन । अण्णमण्णपुठा । माहोमाहि स्पर्शमात्रकरी फरस्या, तिवार पछे । अण्णमण्णमोगाढा अण्णमण्णसिणेहपडिबद्धा । माहोमाहि घागाढा खोलीभावे मिल्या चोर मोरमी परे माहोमाहि चेट रागादिके बांध्या जिम शरीर चोपड्या रेणु विलगे तिम । अण्णमण्णघडत्ताएचिठंति । माहोमाहि समुदायभावे करी रहे इतिम श्न उत्तर । हंताअत्थि । हां गौतम सब तिमहोजवे । सेकेणट्ठेणभंतेजावचिट्ठति । गौतम कहे—तेसे कारणे हेभगवन् ! जीव भने पुद्गलसमुदायभावे करी करीरहे यावत् एतलाममे कह्यो इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सेजहानामएहरदेसियापब्बे । हेगौतम ! ते यथाद्रष्टांते, नामए इतिवाक्यालंकारे, जिम कोई दहमांको भरा । पुण्णप्पमाणेणामदृमाणे । पूरो भरा समार जणोमदो पाणीमो सरता अणटतख उत्तासपामतो तको चेकमो । वोसहमाण । जवना बड न पणीओ विक्सतोवे । समभरघडत्ताएचिठ्ठति । विषमनहो बघोपरे जल समुदाय जिको चिहुदिशि पाणी पसरो तेमाटे प्रमाणे दीसतो रहेछे । अहे णंकेइपुरिसेतंसिहरदंसि । अथ कइता । जिये वाक्यालंकारे, ते भरा द्रहने अनतर काइएक पुरुष तेहमेविषे । एगमहंणावसयासवं । एक महतो माटो नाव, पनि ते केहबोछे मासे सर्वकहेहर पाणी पावणने ते सहितछे । सतछिद्दसयाछिद्दा । माटाछेद तिणेसहित एहवो नावेकरी तेपांणी घ नगारे प्रवेशकरे । सेनूणं गायमा साणावा । तेनिये हेगौतम । तेनावा । तेछिद्राभवसरोर्रेच । तिणे पायवकार छिद्रेकरो । आपूरमाणी पुणा २ । अचे

तावचवति ॥ तावन्तंकाल ॥ काइयाएत्ति ॥ गमनादिकायचेष्टारूपया ॥ अहिगरणियाएत्ति ॥ अधिकरणेन कूटपाशरूपेण निर्वृत्ता या सा तया तया ॥ पाउसियाएत्ति ॥ प्रद्वेषो मृगेषु दुष्टभावः तेन निर्वृत्ता प्राद्वेषिकी तया ॥ तिहिंकिरियाहिंति ॥ क्रियन्तइति क्रिया चेष्टाविशेषा ॥ पारितावणियाएत्ति ॥ परितापनप्रयोजना पारितापनिकी साच बद्धे सति मृगे भवति प्राणातिपातक्रियाच घातितेइति ॥ ऊसविएत्ति ॥ उत्सर्प्य ॥ उसिक्कि

पारियावणियाए चउहिंकिरियाहिं पुठे जेन्नंचिए उद्दवणयाएवि घघणयाएवि मारणयाएवि तावचणसे पुरिसे काइयाए जाव पाणाइवायकिरियाए पचहिं किरियाहिं पुठे। सेतेणठेणं जाव पंचकिरिए। पुरिसेणं नंते! कच्छंसिया जाव वणविदुग्गंसिया तणाइं ऊसविय २ अगणिकायंसि निसिरइ तावचणं नंते! से पुरिसे कइकिरिए? गोयमा! सियतिकिरिए सियचउकिरिए सियपंचकिरिए। सेकेणठेणं गोयमा! जेन्न

वाएवि। जेभव्यात्मकर्त्तो कूटपाश करचनो पचिकर्त्ता। बंधणयाएवि। बंधनो पचि कर्त्ता। मारणयाएवि। मारणनो पचि कर्त्ता। तावचणसेपुरिसे काइयाए। तेतलोकाल ते पुरुष कायिकी क्रिया मांडिनें। जावपाणाइवायकिरियाएपचहिंकिरियाहिंपुठे। यावत् प्राणातिपातिकी क्रिया मृगवध थोतामें प्राणोनें घातथीवें एपचक्रिया फरसा, एतावता तेहनें पचक्रियालागे। सेतेणठेणं गोयमा। ते तेणें अर्थे हेगौतम! जावपंचकिरिए। सियचउ किरिएसियपंचकिरिए इमकह्यु, वलीगौतम पूछेछे—पुरिसेणंभंतेकच्छंसिया। पुरुष हेभगवन्! नदी जल थोव्या तृणवत प्रदेशनेंविषे। जावणविदु ग्गंसिया। यावत् नानाप्रकार तृणनासमूहनेंविषे तृणपत्रादि समस्त करवो। तणाइं ऊसविय २। तिणामत उंचा करी २ नें। अगणिकायंनिसिरइ। अग्निकायमतें नाखेंचावे। तावचणंभंतेसेपुरिसेकइकिरिए। तेतलाकालवर्त्ति पुरुष कतलीक्रियाकारे हेभगवन्! ते पुरुषनें केतलीक्रियालागे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सियतिकिरिए। हेगौतम! कदाचित् त्रणक्रियालागे। सियचउकिरिए। कदाचित् चार क्रियालागे। सियपंचकिरिए। क्रियारेले पांच क्रिया लागे। सेकेणठेणंभंते। तेस्यामाटे हेभगवन्! इमकह्यु। गोयमा जेभविएउस्सवणयाए। हेगौतम! जेभव्यात्मा कर्त्ता इमकरें केतलोकाल क्रमि

एमिएसिकाउ अन्नयरस्समियस्स वहाए उसुनिसिरइ, ततोण भंते ! सेपुरिसे कइकिरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए सियचउकिरिए सियपंचकिरिए, सेकेणट्ठेण गोयमा ! जेभविए निसिरणयाए तेहिं जेभविए निसि रणयाएवि विद्धंसणयाएवि नोमारणयाए चउहिं जेभविए निसिरणयाएवि विद्धंसणयाएवि मारणयाएवि तावचण सेपुरिसे जाव पंचहिंकिरियाहिं पुठे सेतेणट्ठेण गोयमा ! सियतिकिरिए सियचउकिरिए सियप चकिरिए । पुरिसेण भंते ! कच्छंसिवा जाव अन्नयरस्समियस्स वहाए आययकन्नाययं उसुं आयामेत्ता चि

अन्यरसमियवधवहाए । पनेरा कांइ एक मृगना वधभणी मृगने मारवाभणी । उसुनिसिरइ । तीरपतें काढे मूकवा भेद । ततोणभंतेसेपुरिसे । तिवारें हे भगवन् ! तेपुरुष । कइकिरिए । केतलीक्रियानो करणहार कहीये इतिप्रश्न । गोयमा सियतिकिरिए । हेगोतम ! किवारेंक तीनक्रियाना करणहार कहीये । सियचउकिरिए । किवारें च्यारिक्रियाना करणहार । सियपंचकिरिए । किवारें पांच क्रियाना करणहार, गोतम कहेहे—सेकेणट्ठेणभंते । ते स्या माटे हेभगवन् ! इमकहुं । गोयमा जेभविएनिसिरणयाएविति । हेगोतम ! जेभव्यकर्त्ता बाणकाढेवे तहने काइयादि तीनक्रियावे फरस्या कहीये । जे भविएनिसिरणयाएवि । जेभव्य कर्त्ता बाणकाढे पछिहे सुभाव वको । विद्धंसणयाएवि । पछे विध्वंस पमाडे वेधवानेकाजे । नोमारणयाएचउहिं । पछिमारे नहीं तेतावानिमत्ते तेहने काइयादि च्यारक्रियालागे । जेभविएनिसिरणयाएवि । जेभव्यकर्त्ता तीरपणि काढे । विद्धंसणयाएवि । विध्वंस पमाडेहे । मारणयाएवि । पछे मारे पणिवे । तावचणसेपुरिसे । तेतलावार ते पुरुष । जावपंचहिंकिरियाहिंपुट्ठे । यावत् काइयादि पंचक्रिया संफरस्या तेहने पचक्रिया लागे । सेतेणट्ठेण गोयमा । ते तेणे अर्थ हेगोतम ! इमकहुं । सियतिकिरिए । किवारें तीनक्रिया लागे । सियचउकिरिए । कदाचित् च्यारक्रियालागे । सियपंचकिरिए । कदाचित् पांचक्रियालागे, वलीगोतम पूछेहे— । पुरिसेणभंतेकच्छंसिवा । पुरुष हेभगवन् ! कच्छादिकनेवि षे । जावअन्नयरस्समियस्सवहाए । यावत् पनेरा कांइ एक मृगना वधभणी मृगमारवानेकाजे । आययकन्नाययउसुंआयामेत्ता । दोय कानताई ते तीर

भ्युपगतमेवाथ सुतरतया माह क्रियमाण चनु कालादिकृतमिति व्यपदिश्यते यक्रिसु प्राग्वत् तथा सन्धीयमाम मत्यन्नाया मारोप्यमाण काक्ष ममुया रोप्यमाणमत्यन्न सन्धितकृतसन्धाम जयति तथा निर्वत्यमाम मितरा वतुलीक्रियमाण प्रत्यम्याकपक्षेम निर्वर्तित धृतीकृत मयष साकार कृत भयति तथा निसृज्यमाण मिक्षिप्यमाण शुष्कनिसृष्ट भवति यदाच निसृज्यमाण मिसृष्ट तदा निसृज्यमानतया धनुर्द्देशेव कृत स्या तन काण्डनिसृष्ट जयति काण्डनिसृष्टे मृग सर्नेष मारित सत खोच्यते ॥ जेमियमारत्यादीति ॥ इहच क्रिया प्रक्रान्ता साधा नन्त

ठिज्जा ध्रुवयरेपुरिसे मगन्त ध्रागम्मसयपाणिणा ध्रासिणा सीसछिदेज्जा सेयउसूताएचेय पद्मायामणयाए त मियविधेज्जा । सेणन्नते ! पुरिसे कि मियवेरेणयपुठे पुरिसवेरेणपुठे ? गोयमा ! जेमियमारेइ सेमियवेरे णपुठे , जेपुरिसमारेइ सेपुरिसयेरेणपुठे । सेकेणठेणन्नते ! एवयुच्चइ जाव सेपुरिसवेरेण पुठे । सेणूण गो

भते पावीने भावनीने । चिइज्जा । चजोरह पतवे । मयवरेपुरिसेमम्मर्थो । चनेरा काई एक पुरुष पूठावो । चागय । चावीने । सयपाणिचाघसिचा । घापसे कापेकरी तरवारेकरो । सोसछिदेश्या । तेहना मस्तकप्रते छेदे तिवारे । सेयसूताचेय पुव्वायामणयाए । सेतोर ब्रिसमनेकमोने पूर्वे चाकर्षी क तो ते पुरुषनाहाथथो छूटा तिवारे मिये । तमियविधेन्ना सेणभंतेपुरिसे किमियवेरेणपुठे । ते समयते वीधे ते चवास्यावबारे हेभगवन् पुरुषमायानी छेद नहारा सु समनावेरी इहां वेरते वेरनाहेतु भणो वधकवोये चथवा पाप ते फरसो चथवा । पुरिसवेरेणपुठे । पुरुषने वेर पापेकरी फरसो इतिमग्न उत्त र । गोयमा जमियमारेइ । हेगोतम जिवे पुरुषे मृग मधवानेकाजे तोर साध्याहता । सेमियवेरेणपुठे । ते पुरुष मृगनेवेर पाप तिणेकरी फरसो । जेपु रिस मारेइ सेपुरिसवेरेणपुठे । जे वेवे पुरुष पुरुष मारया तेपुरुष पुरुषनेवेरेकरी फरसो तेहने पुरुष वेरवामे । सेकेणट्ठेणभते एववुच्चइ । तेस्यामाटे हेभम वन् ! इमकह्यं मृगमा मारनवारने मृगना पापलागो । जावसेपुरिसवेरेणपुठे । यावत् पुरुषना मारनवारने पुरुषना पापलागो इतिप्रश्न उत्तर । सेणूण गोयमा कन्नमाणेकडे । ते निये हेगोतम धनुषतीर करवामांथा तेवारआकडीये । सधिज्जमाणेसंधिए । धनुषनेविषे तीर सधवामांथो तेसाध्यो कहीये

रोक्ते प्रमादिवधे यावत्यो यत्र यत्र कालविज्ञामे भवन्ति तावती तत्र दर्शयन्नाह ॥ पतोऽन्वहमित्यादि ॥ षण्मासाम् यावत्प्रहारहेतुक मरण परतस्तु परिणामान्तरापादितमितिकृत्वा षण्मासा दूर्द्ध प्राणातिपातक्रिया न स्यादिति हृदय मतत्र व्यवहारनयापेक्षया प्राणातिपातक्रियाध्य

यमा ! कज्जमाणेकडे सधेज्जमाणेसधिए निव्वत्तिज्जमाणेनिव्वत्तिए निसिरिज्जमाणेनिसिठेत्ति वत्तव्वसिया ।
हंता जगव ! कज्जमाणेकडे जाव निसठेत्ति वत्तव्वसिया सेतेणठेण गोयमा ! जेमियमारेइ सेमियवेरेणपु
ठे, जेपुरिसमारेइ सेपुरिसवेरेणपुठे, अतोछण्हमासाणमरइ, काइयाए जाव पचहिं किरियाहिं पुठे,

मारायो कहोये तथा । निव्वत्तिज्जमाणेनिव्वत्तिए । अनुपमविधे वेपचव तेवावीने अनुपमारस्वाकार करवा मांड्या ते कीधाकहीये । निसिरिज्जमा णेनिसिठेत्तिवत्तव्वसिया । अनुपमनोमीसरवामांड्यो बाण ते मोकल्या कहीये एहवी वक्तव्यता कहवा जुवे, एसा भगवंत गोतमनेकह्यु तिवारे गोतम क हेछे—हंता भगवं । हांभगवन् । कज्जमाणे कड । धनुषतोर करवामांड्यो तेकीधा कहीये । जावनिसिठेसियवत्तव्वसिया । यावत् धनुषथी तोरमोकलवा मां ड्या ते मोकल्या कहीये, ते मोकलवानी क्रियाना करणहार धनुषरक्षे तेमाटे कांडना मोकलवाथी मृग तेणेहोज्ञपुरुषे मार्यो । सेतेणं गोयमा जेमिय मारेइ । तेमाटे हेगोतम ! एमकह्यु जेमृगमारे तेपुरुष । सेमियवेरेणपुठे । तेमृगने वेरकरी पापेकरी फरस्यो । जेपुरिसमारेइ । अने जेपुरुष पुरुषत तेने पुरुषे धनुर मार्या । सेपुरिसवेरेणपुठे । तेहने पुरुषनो पापवासना तेमाटे पुरुषनेवेरकरी फरस्यो । अतोछण्हमासाणंमरइकाइयाए जावपचहिं किरि याहिंपुठे । छमासमांहि आमृगमरे तो तेहने यावत् पचक्रियालागे छमासताई मृगने प्रहार हेतुक मरणछे, तिवारपछे परिणामांतरथको मरण एसो करी छमासथी उपरांत प्राणातिपातनी क्रियाते धनुर्धरपुरुषने नथी एपरमार्थ जाणवा, एपणि व्यवहारनो अपेक्षाये प्राणातिपातकोक्रिया व्यपदेश मात्र देखाडवाने कह्या, अथवा विचारिये प्रहार हतक मरणरूपे तिवारेहीज प्राणातिपातनी क्रिया लागे यावत् काइकी आदिदेई पचक्रिया स्पृ फ रस्या कहीये । बाहिरछण्हमासाणंमरइकाइयाए जावपारियावणियाए चउहिंकिरियाहिंपुठे । छ माहिर छमासके मरेतो तेपुरुषे काइकी आदि

पदयमाधापद्मनाय मुक्त, मन्यथा यदाकदा प्यधिकतप्रहारहेतुक मरण भवति तदेव प्राणातिपातक्रियति ॥ सत्तीएत्ति ॥ शक्त्या प्रहरणविशेषे ण ॥ समभिघसेज्जत्ति ॥ हन्यात् ॥ सयपाणिणत्ति ॥ स्वकहस्तेन ॥ सेत्ति ॥ तस्य ॥ काइयाएत्ति ॥ कायिकया शरीरस्पन्दरूपया प्राधिकरणिकया प्र त्तिशक्त्यापाररूपया प्राद्वेषिकया मनोदुःप्रणिधानेन पारितापनिकया परितापनरूपया प्राणातिपातक्रियया मारणरूपया प्रासन्नेतिहत्यादि, ॥

याहिं ठवक्ममासाण मरइ, काइयाए जाव पारियावणियाए चउहिंकिरियाहिं पुठे। पुरिसेण भंते! पुरिस सत्तीए समभिधसेज्जा सयपाणिणाया से असिणा सीसछिंदेज्जा। तएणंभंते! सेपुरिसे कइकिरिए? गोयमा! जावचणं सेपुरिसे तपुरिस सत्तीए समभिधसेइ, सयपाणिणावा सेअसिणा सीसछिंदइ। तावचणं से पुरिसे काइयाए जाव पाणाइयाए पचहिंकिरियाहिं पुठे। आसणवहएणय अणवकखवत्तीएण पुरिस

ई यावत् पारितापनकी क्रिया तांई च्यारक्रियाओ करबे करवेसोभाग कमाखपर्छे मरेतो तेमृषवाचकी मृषावादी तेमाट प्राणातिपातकी क्रिया लागेनही बलीगौतमपूछेछे—पुरिसेणभंतेपुरिस सत्तीएसमभिधसेज्जा। पुरुष हेभगवन्। पुरुषप्रते शक्ति भालौ तिणे हणे अथवा शक्ति प्रहरणविशेषकरी ह णे। सयपाणिणावा। अथवा पोताने हाथइ। सेअसिणासीसछिंदेज्जा। तेपुरुष तरवारेकरी माथो छेदे। तएणंभंतेपुरिसेकइकिरिए। तिवारे हेभगवन् केतली क्रियाकरे हेभगवन्। तेपुरुषने केतली क्रियालागे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा जावचणसेपुरिसे। हेगौतम! जेतलोकाल तेपुरुष। तपुरिसं सत्तीए समभिघसेइ। तेपुरुषप्रते शक्तिप्रहरण विशेषकरी हणे। सयपाणिणा। अथवा पोताने हाथेकरी। सेअसिणासीसछिंदइ। तेपुरुष तरवारसघाते। तावचणंसेपुरिसे। ते तलाकाल ते पुरुष। काइयाए। कायिकीक्रिया। अहिगरणियाए। अधिकरणकीक्रिया। जावपाणाइवायकिरियाए। यावत् प्राणातिपातकी क्रि या। पचहिंकिरियाहिंपुठे। पचक्रिया संघाते फरस्याकहीये तेहने पचक्रियालागे। आसण्णवहएणय अणवकंखवत्तीएणंपुरिसवेरेणपुठे। आसन्न हुकडो मधकने बेरबधक एतले तत्कालवध्य करीने तथा जे पुरुषनो वधकीधो ते तेहनो भावी जे पापटालिवानेविषे निरपेक्षवृत्ति आपणा पराया प्राणनी

मां इर्मनाकमनानाबेना मनुष्यमानां यत एवा विज्ञातानां विशिष्टबोधाविपर्यीकृतामां एतदेव मुत्तदस्याह ॥ चद्वोकडावति ॥ चव्याकृतानां विशे पतो गुरुनिरनाख्यातानां ॥ चद्वोच्छिन्नावति ॥ विपचाद्व्यवच्छेदितानां ॥ चमिच्छूढावति ॥ महतोग्रन्थात् सुखावबोधाय संक्षेपनिमित्त समुपहृ परगुरुभिः स्मृद्धतानां चतएवा स्वामिनमुपधारितानां मनवधारितानां ॥ एयमठेत्ति ॥ एवमक्षारोर्थो ऽथवा ऽयमर्थो ॥ मोसद्दहेत्ति ॥ नश्रद्दि त ॥ मोपत्तिएत्ति ॥ मो नैव ॥ पत्तियति ॥ प्रीति रुच्यते तद्योगा त्पत्तिएत्ति ॥ प्रीतः प्रीतिविपर्यीकृतो ऽथवा न प्रतीतो न प्रत्ययितोथा वे तुत्तिः ॥ नोरोएइत्ति ॥ न चिकीर्षितः ॥ एयमयसजहेयमुसवयहत्ति ॥ यथ यथा यतद्वस्तु यूय वदथ एवमेव तद्वरित्वतिजावः ॥ चाउज्जामाठत्ति ॥

णोसद्दहिए णोपत्तिइए णोरोइए, इयाणिज्जते ! एएसिणपयाण जाणणयाए सवणयाए बोहियाए अभिगमेण दिठाण रसुयाण सुयाण विन्नायाण वोगढाण वोच्छिन्नाण णिजूढाण उवधारियाण एयमठ सद्दहामि पत्ति यामि रोएमि एवमेय सेजहेय तुम्भे वयह। तएण तथेरा जगवतो कालासवेसियपुत्त अणगार एववयासी, सद्दहाहि अज्जो, पत्तियाहि अज्जो, रोएहि अज्जो, सेजहेय अम्हेवयामो। तएणसेकालासवेसियपुत्ते

इत्यादि वेदुयेकरा पूर्वे सामान् पाते मयबो शब्दानथो। मचयाव मसुयाव मविज्ञासाव मव्यासकाव। चिच्चोत समोपे सुखानयो इमन भावमन मनारेकरो पत्तसामाठेच विशिष्ट बावरवितने विशेषयो गुरे कथानयो। मव्याच्छिन्नाय मविजूढाय। माठान्यबयो सुखाय बोधभयो गुरे कथानयो। म वधारियाव। एतला भणोय थवे पूर्वे एयम मनवारोलयो। एयमठ्ठोसद्दहिए णोपत्तिइए। इवे प्रकारे मय अथवा एयव सद्दहामयो प्रीति विषय न कोषा। पारोइए इट्टाविभते एएसिणपदाव जाणयाए। रुवानयो ॥ जिवे वेभयपन् एव पदनायव जाणवा चानेकरो। सववयाए बोहियाए अभि ममेव दिठाव रसमाव सुयाव विन्नायाव वाडमाव वाच्छिन्नाय। सुत्ता यवर्वे करो वाचिपास्यो सम्यक्पर्वे विस्तारवाव तथा भमयो सद्दा सुत्ता थर्प इमन भावन नयमा विधेवे जाणवा विमयवो गुरेकथा विषयावि सदेव केवा। विजूढाव उववारियाव एयमठ्ठसद्दहामि पत्तियामि रोएमि। मोटा

चतुर्महाव्रतान् पार्श्वनाथजिनस्य हि चत्वारि महाव्रतानि ना परिग्रहीता स्त्रीभुज्यत इति मैथुनस्य परिग्रहे समावादिति ॥ सप्रतिक्रमणेति ॥ पा
र्श्वनाथधर्मोऽपि अप्रतिक्रमण कारणएव प्रतिक्रमणकरणा दन्यथा स्वकरणा महावीरजिनस्य तु स प्रतिक्रमणः कारण विना अवश्य प्रतिक्रमणम

अणगारे थेरेभगवंतो वंदइ नमंसइ वं० त्ता णमंसइत्ता एवंवयासी, इच्छामिणं भंते! तुम्हे अंतिए चाउज्जामाउ धम्माउ पंचमहव्वइयं सपडिक्कमणं धम्मं उवसंपज्जित्ता णंविहरित्तए अहासुहं देवाणुप्पिया मापडिबंधं करेह, तएणंसे कालासवेसियपुत्ते अणगारे थेरेभगवंते वंदइ नमंसइ वं० त्ता नमंसइत्ता चाउज्जामाउधम्माउ पंचमहव्वइयं सपडिक्कमणं धम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, तएणंसे कालासवेसियपुत्ते अणगारे बहूणिवासाणि सा

पडवो सघाव बाधवा एमय भवधारा एमव सदहंइ प्रीति विषय करूं राचेहे। एवमेते सेवडेव तुमेवदव तएणतेथेराभयवंतो। भवविन एवात तुम कहाहो तेसव तिमजहे इतिभाव तिवारे ते स्थविर भगवंत। कालासवेसियपुत्रअणगार। कालासवेसित पुत्र साधुमते। एवंवयासो सद्दहाविमल्लो पतिमा। वेमना रोचवियमना। इम कहतां छतां। सद्दहाविएं यथावत कामो वेमाय प्रतिविषय करिवेमाय रुचिकरि वेमाय। सेजहेयमसेवदामो। एषम धर्म कहइ तिम। तएणसेकालासवेसियपुत्तेअणगारे। तिवारे तेकालासवेसितपुत्र अणगारसाधु। थेरे भगवतेवंदइ णमसइ २ त्ता। स्थविर भगव तप्रते वांदे नमस्कारकरे वांदीने नमस्कार करीने। एवंवयासो। इम कहतां हवा। इच्छामिणभंते तुम्हअंतिए चाउज्जामाओ धम्माओ पंचमहव्वइयं सप डिक्कमणधम्मउवसंपज्जिताणं विहरित्तए। वांछू हेभगवन्। तुम्हारे समीपे चारि महाव्रत अथवाचारे पार्श्वनाथ स्वामीने चार महाव्रतहे, मैथुननो प रिग्रहनेविषे अंतर्भावहे तेहथो पंचमहाव्रतरूप श्रीपार्श्वनाथ स्वामीना साधुनेकारण अपना पडिक्कमणो कह्यो अने श्रीमहावीरस्वामीना साधुनेकारण विना पणि अवश्ये पडिक्कमणा करणा ते आदरीने विहारकरूं। अहासुहंदेवाणुप्पिया। जिम सुख उपजे तिमकरो हेदेवानुप्रिय। मापडिबंधतएणसेका लासवेसियपुत्तेअणगारे। प्रतिबंध व्याघात मकरस्यो तिवारे तेकालासवेसितपुत्र साधु। थेरेभगवंते वंदइ णमंसइ २ त्ता। स्थविर भयवंतप्रते वांदे नम

रत्नादिति ॥ देवाणुप्पियत्ति ॥ प्रियासख ॥ मासियाएत्ति ॥ मासिक्यां सुरुवे सिपस्य ॥ मुंडभावेत्ति ॥ मुंडभावो दीक्षितत्वं॥ फलगसेज्जत्ति ॥ प्रतलायतविस्तृतकाष्ठरूपा ॥ कठसेज्जत्ति ॥ असंस्कृतकाष्ठमय शय्यायाः ब्रह्मचारी वसति ॥ लद्धावलद्धोत्ति ॥ लब्धस्य लाभो ऽपलब्धिया सा ता ।परिपूर्णलाभोवा स्वल्पालब्धिः ॥ उच्चावयत्ति ॥ उच्चावचा अनुकूलप्रतिकूलाः असमंजसावा ॥ गामकंटयत्ति ॥ ग्रामस्येन्द्रियसमूहस्य कंटका इव कंटका बाधकाः अथवो ग्रामकंटका कृपतस्याह ॥ बावीसंपरीसहोवसग्गत्ति ॥ परीषहाः क्षुधादय सत्वो पसर्गा उपसर्गा दुर्मेधस

मासपरियाग पाउणइ पाउणइत्ता जस्सठाए कीरइ नग्गभावे मुंडभावे अण्हाणय अदंतधुवणय अच्छत्तय अणोवाहणय भूमिसेज्जा फलहसेज्जा कठसेज्जा केसलोए बंभचेरवासो परघरप्पवेसो लद्धावलद्धी उच्चावया गामकंटया बावीसपरीसहोवसग्गा अहिया सिज्झइ, तमठ्ठ आराहेइ आराहेइत्ता चरमेहिं उस्सासनीसासेहिं सिद्धे बुद्धे मुक्के परिनिव्वुए सव्वदुक्खप्पहीणे॥ भंतेत्ति भगवं गोयमे समणंभगवंमहावीरं वंदइ नमंसइ वं०त्ता णमंसइत्ता एववयासी, खंधएणं भंते ! सेठिस्सयतणुयस्स किवणस्सय खत्तियस्सय समाधय अपच्चक्खाण

स्कारकरे वांदीने नमस्कार करीने। चाउज्जामाभाषणा पंचमहाव्रत। चार महाव्रतरूप धर्मो पंचमहाव्रतरूप धर्म। सप्रतिक्रमणधर्म। पडिक्कमणासहित धर्म। अवसपव्वित्ताचविकरद। पाहरीने विचरे। तएणंसेखंधएअणगारे। त्यारे तेखंधकअणगार साधु। मासिकभिक्षुप्रति। पडिवज्जइ। यावत्परिवर्तनपाणवइ २ त्ता। साधुनो दीक्षानो पर्याय पाले पालीने। अहारएकीरइ। जेहने अर्थे करे। नग्नभावे। अस्नानादिक पर्यौ मुंडभावपणाथाय। दीक्षापणो शरीर अथवा नामनौ। अच्छत्रक उपानहरहित भूमिसेज्या। एक भराक्षनो उपासक रहित अने अखवापो फिरे भूमि ऊपरि। फलकसेज्या। काष्ठसेज्या ब्रह्मचर्यवासा। फलक पाटीये सूदवा काष्ठसेज्जासे सूवा केशनो लोचकरिवा ब्रह्मचर्य वसवा पालवो। परघरपवेसी उद्दावद्धी उच्चाव गामकठया। भाहारने अर्थे परघर प्रवेशकीधे लाभे अथवा अलाभे अथवा परिपूर्ण अलाभे अनुकूल प्रतिकूल अथवा अणमनस इंद्रीय

मा स्परीषहापसगा अथवा ; द्वाविंशतिः परीषहा स्तथा उपसर्गा दिव्यादय आतास्य येक्षिकपुत्र प्रत्याख्यानक्रियया सिद्धयति सद्विपययनुसा प्रत्याख्यानक्रिया निरूपणमूर्त ॥ मतइत्यादि ॥ तथ ॥ मतेति ॥ हेभदन्तइति एव मामभ्येतिक्षेप अथवा भदन्त इतिकस्या गुरु रितिकस्वेत्यर्थः ॥ षष्ठिस्सति ॥ मीदमताप्यासितधोवबपट्टविभूषितशिरोयेष्ठमोपतपोरथममायकस्य ॥ तपुपस्वति ॥ दरिद्रस्य ॥ किपणस्वति ॥ रङ्कस्य ॥ क्षत्रियस्य

किरियाकज्जइ ? हता गोयमा ! सेठियस्स जाव अपच्चक्खाणकिरिया कज्जइ, सेकेणट्ठेणं भंते ? गोयमा ! अयिरइ पडुच्च, सेतेणट्ठेण ? गोयमा ! एव वुच्चइ, सेठिस्सय तणु जाव कज्जइ । आहाकम्मे ण भुजमाणे समणे निग्गथे कि बधइ किपकरेइ किचिणाइ किउपचिणाइ ? गोयमा ! अहाकम्मे णभुजमाणे आउ यवज्जाउ सत्तकम्मपगडीउ सिढिलबधणबद्धाउ धणियबधणबद्धाउ पकरेइ, जाव अणुपरियट्टइ । केसेण

ममूलमेभटा येदे बाधक किसा तेवके—बावोसपरीसहाबसग्ग।पडियासित्थार। बावोसपरोसह सुधादिक तेशोन धम सामको परोसहापसग्ग अथवा बाबीस परोसह तथा उपसग देवादिकना कोधा ते आपणा अका पमेंमहे। तमइपाराहेर २ ता। ते पामाने पमें भाराधे भाराधोने। चरि मेहिंकसाव बोसासेहि सिद्धे बुद्धे मुक्के परिनिव्वुए। हेवके बसास मोसासेकरोने सिद्धपदमे तलना भावर्दने कसको रक्षितयईने मोतधोभावहने । सम्मइबउप्पहोवे भंतेत्तिभमवमावसे। सब दुःखमो रहितबया भाव पतताइस्थव हेभगवन् इसा भामणव पथमा भदत इसो मदुमते बभासकारो व वनको भयवत गोतम। समणभगवमहावीरं। भमथ भगवत बोमहावीरसामो प्रतें। वदइ नमसइ २ ता एवंवयाधो। वांदे नमस्कारकरे वांदीने न नमस्कार करोने इम कहता हुया। सथूलभतेसेठियस्सयतणुयस्य किमणस्य खत्तियस्य। ते निश्चे हेभगवन्। भोदेशोमोमूर्तिमना पाटा बेहने म पाके तिथेठ तेहने तथा दरिद्रोने कि रकम राजाने। समाचेव अपचखाणकिरियाकज्जइ। सरोखी निश्चे अपचखाणकिया मा अभाव अथवा अप चाख्यानमी अपमा असमथ ते रूपक्रियाकरे। हता गोयमा सष्ठियस्य। हांगोतम। येठिने। जाव अपचक्खाणकिरियाकज्जइ। यावत् अप्रत्याख्यान कि

रयासिति ॥ देवाणुप्पियत्ति ॥ मियामंघव ॥ मापक्खियपति ॥ माख्याघास कुरुवे तिमस्य ॥ मुरुनायस्ति ॥ मुंरुनायो दीक्खितस्य ॥ कलगसख्यति ॥
प्रससापतविकम्मयस्काष्टरूपा ॥ कठसख्यति ॥ यससकतकाष्ठसायन कष्टमय्याया अमनोवा वसति ॥ सद्भावसद्योति ॥ सब्धम्ब सामी ऽपसब्धिया
साजो ऽपरिपूक्खाभोवा सब्धापसब्धिः ॥ उपावयसि ॥ उपावया यमुकूलमतिकूला अससंघलाया ॥ गामकटपति ॥ गामस्येन्द्रियसमूहस्य कट
का इव कटका यास्का: ग्रामो ग्रामकटका अएतत्याद ॥ बावीसपरीसहोवसग्गति ॥ परीषहा क्षुधाद्य स्तएवो पसर्गा उपसर्गा दुर्मव्यय

मयपरियाग पाउणइ पाउणइत्ता जस्सठाए कीरइ नग्गभावे मुण्डभावे अन्हाणय अदंतधुवणय अच्छत्तय
अणोवाहणय भूमिसेज्जा फलहसेज्जा कठसेज्जा केसलोए बंभचेरवासो परघरप्पवेसो लद्धावलद्धी उच्चावया
गामकटया बावीसपरीसहोवसग्गा अहियासिज्जइ, तमठ आराहेइ आराहेइत्ता चरमेहि उस्सासनीसा
सेहि सिद्धे बुद्धे मुक्के परिनिव्वुए सव्वदुक्खप्पहीणे॥ भंतेत्ति भगवं गोयमे समणभगवमहावीर वंदइ नमसइ
वं०त्ता णमसइत्ता एववयासी, सेणूण भंते! सोठिस्सयतणुयस्स किवणस्सय खाभियस्सय समाचेव अपच्चक्खाण

कारके वोदेन नमस्कार करोने। चाउज्जामगधम्मायपा पचमहव्वइय। चार महाव्रतरूप धर्मथी पचमहाव्रतरूप धर्म। सपडिक्कमणधम्म। पडिक्कम
णासहित धम। अचलपत्तितावविहरइ। भागदीने विचरे। तएणसेकालासवेसियपुत्ते अणगारे। तिवारे तेकालासवेसितपुत्र साधु। बहूणिवासाणि।
घणा वरस। सामण्णपरियागपाउणइ २ त्ता। साधुनो दीक्षानो पर्याय पाले पालीने। जस्सठाएकीरइ। जेहने अर्थे करे। नग्नभावे। वस्त्ररहित पणो
मुण्डभावअणहाणय। दांतणनो अरोर अणाधवाणपो। अच्छत्तय अणोवाहणय भूमिसेज्जा। जन्म पर्यन्त उपानह रहित पये धरतीना विषे भूमि स
इया। फलगसेज्जा। कठसेज्जा केसलोअबंभचेरवासा। फलग पाटीये सुइवो काष्टसेज्जाये सूइवो लोचनो ब्रह्मचर्यनो प्रवर्त्तवो वसवो पालवो। परघरपव
सा घरानतो जवाय र।गामकटया। भाजारने अर्थे परघर प्रवेशकीधे लाभे अथवा नलाभे अथवा परिपूर्ण नलाभे अनुकूल प्रतिकूल अथवा अपमान इत्यादि

माणे आउयवज्जाओ सत्तकम्मपगडीओ जाव अणुपरियट्टइ । फासुएसणिज्जं भुंजमाणे किं बंधइ ? ४ जाव उवचिणाइ ? गोयमा ! फासुएसणिज्जं भुंजमाणे आउयवज्जाओ सत्तकम्मपयडीओ धणियबंधणबद्धाओ सिढिल बंधणबद्धाओ पकरेइ , जहा संवुडेणं , णवरं आउयं च णं कम्मं सिय बंधइ सिय नो बंधइ सेसं तहेव जाव वी इवयइ । से केणट्ठेणं जाव वीइवयइ ? गोयमा ! फासुएसणिज्जं भुंजमाणे समणे निग्गंथे आयाए धम्मं नाइक्क

म धर्म अथवा श्रुतधर्म अतिक्रमे एतावता धर्मलोपके । आयाएधम्मअवक्कममाणे । आत्मासेंधर्म अतिक्रमतो उल्लंघतो थको । पुढविकाइयं अवकंखइ जाव तसकायं नावकंखइ । पृथिवीकायना जीवनी अनुकंपानाय दयापरिणाम रहितनाय, यावत् अपकाय तेउकाय वाउकाय वनस्पतीकाय त्रसकाय बेंद्रि आदिकपणि जिनासे तदने दयानावे । जेसिंपियणंजीवाणं सरीराइं आहारेइ । जेहना पणि अपुन ब आधाकर्मकारी, जीवना शरीरना आहारप्रते आ हारें आहारकरें इत्यर्थ । तेविजीवेनावकंखइ , ते जीवनो पणि अनुकंपानाय । सेतेणट्ठेणं गोयमा एवंवुच्चइ । ते तेणें अर्थे हेगौतम ! इमकह्यु । आहाय कम्मंभुंजमाणेआउयवज्जाओ आउसत्तकम्मपगडीओ । आधाकर्मी आहार जीमतायका साधु आउखा वर्जीने यावत् सात कर्मनी प्रकृति सिढिलबंधन बांधी तेगाढ बंधने बांधे । जावअणुपरियट्टइ । यावत् संसारमांहे परिभ्रमणकरे । फासुएसणिज्जंभुंजमाणे अथमाकिंबंधइ । फासूएसणीय हेभगवन् ! आ हार जीमतायका साधु स्युं बांधे । आदिशब्दथीविचार । यावत् ए प्रश्नोत्तरनो म बधारे इतिप्रश्न, उत्तर । गोयमा फासूएसणिज्जंभुंजमाणेआउयवज्जाओ । हेगौतम ! फासूएसणीय जीमतायका साधु आउखावर्जीने । सत्तकम्मपगडीओधणियबंधणबद्धाओपकरेइ । सिढिलबंधणबद्धात्कर्मनी प्रकृति गाढे बंधनें बांधी हुंतीते सिढिलबंध बांधे । जहासंवुडेणं जिम ते संवर अणगारनभणी । णवरं आउयं च णं कम्मं सियबंधइ सियणोबंधइ सेसंतहेव जाववि ईवयइ । एतला विशेष आउखाकर्म अपुन वं इहां आधाकर्मकारे विचारेथी बांधे विचारे कोणबांधे जीवाजकम नबांधे तो सूत्रानुसारी जीव हुवे, ग्रंथथा कदा सुहतनोपरें कहवा यावत् संसार तर आयकाय इत्यर्थ । सेकेणट्ठेणंभंतेजावीईवयइ । ते स्यें अर्थे हेभगवन् ! इमकह्यो यावत् व्यतिक्रमे संसार

ति ॥ रागः ॥ अपच्चक्खाणकिरियत्ति ॥ प्रत्याख्यानक्रियाया अभावो ऽप्रत्याख्यानक्रियोवा कर्मबन्ध ॥ अविरइत्ति ॥ इच्छाया अनिवृत्तिः साहि स र्वेषा समैवेति, अप्रत्याख्यानक्रियाप्रस्तावा दिदमाह ॥ आहाकम्ममित्यादि ॥ आधाय साधुप्रणिधानेन यत्सचेतन मचेतन क्रियते अचेतनया पच्य ते, चीयतेवा गृहादिक, व्यूयतेवा वस्त्रादिक तदाधाकर्म ॥ किंपगइत्ति ॥ प्रकृतिबन्धमाश्रित्य स्पृष्टावस्थापेक्षयावा ॥ किंपकरेइत्ति ॥ स्थितिब

ठेण जाव आहाकम्मेण भुजमाणे जाव अणुपरियट्टइ ? गोयमा ! आहाकम्म णभुजमाणे आयाए धम्म अइक्कमइ आयाए धम्म अइक्कममाणे पुढविकाय णावकखइ, जाव तसकाय णावकखइ, जेसिपियण जीवाण सरीराइं आहारमाहारेइ तेथिजीवे नावकखइ सेतेणठेण गोयमा ! एव वुच्चइ आहाकम्म णभुज

या वर गोतम कहे—हे भगवन्ते। त स घर्वे हे भगवन्! इस कहे इतिप्रश्न, उत्तर। गोयमा अविरइ पडुच। हे गोतम! इच्छानी निवृत्ति सर्वने ते अविरति भावो। सेतेणट्ठेण गोयमा एव वुच्चइ। ते तेवें भर्वे हे गोतम! इमकहु। से किलखाय तह खाय जाव आहाकर्मभुजमाणे। ये टिने द रिद्धीने यावत् अप्रत्याख्यान क्रियाकरे अप्रत्याख्यानक्रिया प्रस्तावथी एकहे छे—सचित्त केहोने अचित्तकरीने देइ ते वोमताय थो। सम बेपिस्मार्यो बध र। साधु बाह्याभ्यतर गंबरहित प्रकृतिबध आयश्रीने सूंबांधे। किंपकरेइ। स्थितिबध थी अपेक्षाये सूं करे। किंचियाइ किंउवचियाइ। अनुभागबधनी अपेक्षाये तथा निधत्त सूर वेमहोवत् प्रदेशबधनो अपेक्षायें इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा आहाकम्मेणभुजमाणे। हे गोतम! आधा कर्मी आहार जोमतोथको आउखमाया। आउखा वर्मवर्जीने। सत कर्म पगडीयाशिथिलबधणबडाओ। सात कर्मनी प्रकृति शिथिल बधने गोढाहुया। अथिसबधणबडा ओपकरे। ढग बन्ध बांधे इहबा कमने सूख तामें बांधे जिम रेशमनी गांठ बांधीये। आवय परियट्टइ। यावत् ससारने विषे अमतीवार भमे। सेकेणट्टेण भा अधाहाकर्मेव भुंजमाणे आवय परियट्टइ। ते से घर्वे हे भगवन् इम कहु यावत् आधाकर्मी आहार जोमतोथको साधु यावत् चतुर्गति ससारने विषे अमतीवारभमे इतिप्रश्न, उत्तर। गोयमा आहाकम्मेणभुजमाणे आयाए धम्मे अइक्कमइ। हे गोतम! आधाकर्मी आहार जोमतोथको साधु आत्मायें करी चारि

माणे श्राउयवज्जाओ सत्तकम्मपगडीओ जाव श्रणुपरियट्टइ । फासुएसणिज्जन्नंते ! भुंजमाणेकिंबधइ ? ४ जाव उवचिणाइ ? गोयमा ! फासुएसणिज्ज भुंजमाण श्राउयवज्जाओ सत्तकम्मपयडीओ धणियबंधणबद्धाओ सिढिल बंधणबद्धाओ पकरेइ , अहा सेससुत्तेण , णवर श्राउयंचणं कम्मं सियबंधइ सियनोबंधइ सेसं तहेव जाव वी इवयइ । सेकेणट्ठेण जाव वीइवयइ ? गोयमा ! फासुएसणिज्ज भुंजमाणे समणेनिग्गंथे श्रायाए धम्मं नाइक्क

न धर्म श्रवना सूत्रधर्म अतिक्रमे एतावता अणखोपले। भायायधम्मश्रवक्रममाणे। आत्मासिधर्म अतिक्रमतो उद्धतो थका। पुढविकाइयश्रावकसर जाव तसकायश्रावकसर। पृथिवीकायना जीवनी अनुकंपा नावे दयापरिणाम रहितथाय, यावत् अप्काय तेउकाय वाउकाय वनस्पतीकाय त्रसकाय बेंद्रि यादिकपणि जिनासे तहने दयानावे। जेसिंपियजीवाणं सरीराइ आहारेइ। जेहना पणि अपुन अ आधाकर्मी, जीवना शरीरना आहारप्रतें आ हारें आहारकरे इत्यर्थ। तेविजीवेनावकंखइ। त जीवनो पणि अनुकंपानावे। सेतेणट्ठेणं गोयमा एववुचइ। ते तेणें अर्थें हेगोतम ! इमकह्य। आहाक म्मंभुंजमाणेआउयवज्जाओ आयसत्तकम्मपगडीओ। आधाकर्मी आहार जीमतोथको साधु आउखा वर्जीने यावत् सात कर्मनी प्रकृति सिढिलबंध बांधी तेगाढ बंधबे बांधे। जावअणुपरियट्टइ। यावत् संसारमाहे परिभ्रमणकरे। फासुएसणिज्जभंते भुंजमाणेकिंबधइ। फासुएसणीय हेभगवन् ! आ हार जीमतोथको साधु स्युं बांधे। चार्ज्ञिकप्रश्नविचार। यावत् स्युं प्रदेशबंधनो स्युं बधारें इतिप्रश्न, उत्तर। गोयमा फासुएसणिज्जभुंजमाणेआउयवज्जाओ। हेगोतम ! फासुएसणीय जीमतोथको साधु आउखावर्जीने । सत्तकम्मपगडीओधणियबंधणबद्धाओपकरेइ । सिढिलबंधनसातकर्मनी प्रकृति गाढ बंधवें बांधी हुवेते सिढिलबंध बांधे। जहासेससुत्तेण जिम ते संवड अणगारनकह्यु। णवर आउयं चणं कम्मं सियबंधइ सियनोबंधइ सेसंतहेव जावंवि ईवयइ। एतला विशेष आयुकर्म अपुन अ इसा आयुकर्मनाकारे किवारेक बांधे किवारेक नवि बांधे आयाकर्म नबांधे तो मुक्तिपुरुसारी जीव हुवे, अथवा कता सहननीपरे अनन्तो यावत् ससार तर मामवाय इत्यर्थ। सेकेणट्ठे णंभंते जाववीईवयइ। ते स्यें अर्थें हेभगवन् ! इमकह्यो यावत् व्यतिक्रमे संसार

न्धापेक्षया यद्दायस्थापेक्षयावा ॥ किंचित्कारहति ॥ मनुभागबन्धापेक्षया मिथ्यात्वस्यापेक्षयावा ॥ किंचिदविकारहति ॥ प्रदेशबन्धापेक्षया मिथ्यात्वना पचयायति ॥ आयारति ॥ आत्मना धर्मचारित्रधर्म श्रुतधर्मंवा ॥ पुढविकायमावकसइति ॥ मा पेक्षते मा मुक्तम्पत इत्यर्थः आधाकर्म्मं विपच्य मासुकैपणीयमिति, प्रासुकैपणीयसूत्र अनन्तरसूत्रे संसारव्यतिक्रमनमुक्त तत्र कर्म्मणो ऽस्थिरतया प्रलोटने सति भवती त्यस्थिरसूत्र तत्र ॥ च थिरत्ति ॥ अस्थायु द्रव्य लोहादि प्रलोटति परिवर्त्तते, अध्यात्मचिन्तायां अस्थिरं कर्म्म तस्य जीवप्रदेशेभ्यः प्रतिसमयचलनेना स्थिरत्वात् प्रलोट

मइ, आयाए धम्म अणइक्कममाणे पुढविकाय अवकखइ, जाव तसकाय अवकखइ, जेसिपियणजी वाण सरीराइ आहारेइ तेविजीवे अवकखइ सेतेणठेणजाववीइंवयइ। सेणूण भंते! अथिरे पलोहइ नो थिरेपलोहइ अथिरेभज्जइ नोथिरेभज्जइ सासए बालए बालियत्त असासय सासए पंडिए पंडियत्त असा सय? हंता गोयमा! अथिरेपलोहइ जाव पंडियत्त असासय सेव भंते भंतेत्ति जाव विहरइ॥ पढम

तरे। आत्मना आसूत्रवचिन्ममुक्तभावे। हेभातम! आसूत्रवचोत आहारकरता जीमतावन्ना साधु। समयेत्यिवर्थे। अनव नियम। आधाएधम्मनाइक्कम इ। आधायेकरी धर्मचारित्र श्रुतधर्म अवकेनही। आयाएधम्मधम्मचारकमसायेपढविकायधवकखइ। आत्मार्थे श्रुतचारित्ररूपधर्म अनुलघन करतांयको, पृथिवीकायनो जयापाले जीवनीरछाकरे। आवतसकायधवकखइ। जावत् त्रसकायनो द्वीन्द्रियादिक जीवनो रछाकरे। जसिपियणजीवाणसरीराइआ हारइति। ते तेवें धर्मे हेभातम! इमजय जावत् संसार पारपामें मोक्षपाम इत्यम। सेणूणभंतेअथिरेपलोहइ नोथिरेपलोहइ अथिरेभज्जइ। पाठे स मार सघनक्या ते कसने अस्थिर पलेआय तेकहेछे—ते निश्चे हेभगवन्! अस्थिरद्रव्य लोहादि प्रवर्त्ते पलटे अथवा धावाय तथा अध्यात्म चितानेविषे अस्थिर कमजीव प्रदेशथी समये २ चलें पाचरनो शिलादि पलेनही अध्यात्मचितानेविषे कमरहित जीवना उपयोग पलेनही अथिरे अथिरभावनय

ति १ पश्चादपानिभरकादिपरिणामैः परिणमते स्थिर शिलादिमप्रलोटति अध्यात्मचिन्तायांतु स्थिरोजीवः कर्म्मक्षयेपि तस्य अवस्थितत्वा आसी
प्रलोटति, उपयोगलक्षणत्वाद्या अपरिवर्त्तते तथा अस्थिर मङ्गुरस्वभाव पृथ्व्यादि भज्यते विद्धंसयति अध्यात्मचिन्तायां अस्थिर कर्म्म तद्भज्यते अपैति
तथा स्थिर ममगुर मय शालाकादि न भज्यते अध्यात्मचिन्तायां स्थिरोजीवः सच न भज्यते शाश्वतत्वादिति जीवप्रस्तावा दिदमाह ॥ शाश्वतात्वात
ति ॥ बालका व्यवहारतः शिशु निश्चयतः संयतो जीव सच शाश्वतो द्रव्यत्वात् ॥ बालियत्वमिति॥ तद्धे कमस्यपस्य स्थायिकत्वा द्बालत्व व्यवहारतः
शिशुत्व निश्चयत स्त्वसंयतत्व तदा शाश्वत पर्यायत्वादिति एव पण्डितसूत्रमपि नवर पण्डितो व्यवहारेण शाश्वतो जीवः निश्चयतस्तु संयत ॥
इति प्रथमशतकस्य ॥ ९ ॥ अनन्तरोद्देशके ऽस्थिर कर्म्मेत्युक्त कर्मादिपुन कुतीर्थिका विप्रतिपद्यते, अत स्तद्विमतिपत्तिनिरासमति

सए नवमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ९ ॥ अन्नउत्थियाण भंते ! एव माइक्खंति जाव परूवंति,
एव खलु चलमाणे अचलिए जाव निज्जरिज्जमाणे अनिज्जिन्ने, दोपरमाणुपोग्गला एगयओ न साहणंति,
कम्हा दोपरमाणुपोग्गलाण णत्थि सिणेहकाए तम्हा दोपरमाणुपोग्गला एगयओ न साहणंति, तिन्निपर

भाव द्रव्यादिलभावे, अध्यात्मचिन्तायां अविरतभावे, असंयत स्वभाव शाश्वत प्रत्याख्यानादि तेनभावे, अध्यात्मचिन्तायां जीवस्वभावेनही शाश्वत
भवति । शाश्वताशाश्वत व्यवहारेण शाश्वत पण्डितभावेन । व्यवहारतो बालक शाश्वता यथा निश्चयतो शाश्वता जीव द्रव्यतो बालकभाव
प्रत्यासत्ता निश्चयतो असंयतभाव प्रत्यासत्तो व्यवहारतो पण्डितभावेन जाव शाश्वता निश्चयतो संयतोजीव शाश्वता द्रव्यतो पण्डितभाव प्रत्यासत्तो नि
श्चयतो असंयतभाव प्रत्यासत्ता इतिप्रश्न उत्तर । कता गौयमा अस्थिरपलोहादाव पलियत्त पलासत्त । इतिगौतम । अस्थिर पलटे यावत् पण्डितपद प्रत्यास
न दम्मकथो । सेवभंते २ त्ति जावविहरइ । तदपि इमंगवन् । तुन्हेणा तेसर्व सत्यमे प्रवचनमतो शाश्वत् सर्वदो विहरे इत्येतयथा । प्रथमशतक
नवमोद्देशकावचूर्णी । प्रथमशतकस्य नवमो उद्देसो ट्यार्थो लिख्यते ॥ ९ ॥ अन्नउत्थियया भंते एवमाइक्खंति । नवमे उद्देशे भ

|X|

मादिपमविवक्षया भूतादिशाद्दपमवशाप्यता तस्य कालभेदेन व्याख्येया। यदा सूक्ष्मासादिधर्मैं युगप दसौ वियक्षते सदा प्राणो भूतो जीव स त्त्वो विज्ञा वेदयितादति एत समति भाष्य स्या दथवा निगमनं वाक्यमेवेद मतो न युगपत्यक्ष्याख्याख्यार्येति ॥ जम्हाजीवेहत्यादि ॥ यस्मा ज्जी व यास्मा सो जीवति प्राणान् धारयति तथा जीवस्त्र मुपयोगमसत्त्व आयुष्क कर्म उपजीवति अनुभवति तस्मा ज्जीवइति वक्तव्य स्यादिति ॥ जम्हासत्तेसुहासुहेहिंकम्मेहिंइति ॥ यस्मा शास्त्र शक्तोवा समर्थः सुन्दरा २ सुचेष्टासु अथवा सक्त सम्बद्धः शुभाशुभैः कर्मभि रिति अनन्तरो

या, जम्हा जीवे जीयइ जीवत्त आउयच कम्म उवजीयइ तम्हाजीवेतिवत्तव्वसिया, जम्हासत्ते सुहासुहे हि कम्मेहि तम्हा सत्तेयिवत्तव्वसिया, जम्हा तित्तकटुकसायअंबिलमहुरेरसेजाणइ तम्हा विसूत्तिवत्तव्व सिया, वेदेइय सुहदुक्ख तम्हा वेदातिवत्तव्वसिया, सेतेणठेण जाव पाणेतिवत्तव्वसिया, जाव वेदाति वत्तव्वसिया। मडाइण भंते! नियठे निरुद्धभवे निरुद्धभवपवचे जाव निठियठकरणिज्जे, णोपुण रवि इ च्छत्त हव्व मागच्छइ? हंता गोयमा! मडाईण नियठ जाव नोपुणरायिइत्थत्त हव्व आगच्छइ सेण भंते

तपाछ्वमवाउजवोवेद। तथा जीवस्त्र उपयोग लक्षण श्रयुन आयुष्क उपजीवति अनुभवे। तम्हाजीवेतिवत्तव्वसिया। तेमाटे जीव एहव् तेहने कहो वे। तम्हासत्तेसुहासुहेहिंकम्मेहि। जे माटे शक्त सामर्थ्य अथवा समर्थ सदर मनंदर चेष्टामेविषे शुभाशुभकर्म सर्वधे। तम्हासत्तेतिवत्तव्वसिया। ते माटे सत्त एहवं तेहने कहीये। जम्हातित्तकडुकसायअविलमहुररसे जाणइ। जेमाटे तिक्त कडुवो कसायलो अविल मधुर ए पांचरस जाणें। तम्हा विसूविवत्तव्वसिया। तेमाटे विज्ञ एहव् तेहने कहीये। जम्हावेदेइसुहदुक्ख। जेकारणथी वेदे अनुभवे सुख प्रते तथादुःखप्रते। तम्हावेदातिवत्तव्वसिया। तेमाटे वेद एहव् तेहने कहीये। सेतेणठेणजावपाणेतिवत्तव्वसिया। ते तेणे अर्थे यावत् प्राण एहव् तेहने कहीये। जावबेदातिवत्तव्वसिया। यावत् वेद एहवं तेहने कहीये पूर्वोक्तो जेथण तेहना विपरीतपणो कहेहे—मडाईणभंतेनियंठेनिरुद्धभवेनिरुद्धभवपवचे। मासुकभोजी हेभगवन्! निर्ग्रंथसा

स्यै यावस्य विपर्ययमाह ॥ मकाइत्यादि ॥ पारमएत्ति ॥ पारगतः संसारसागरस्य प्राविनि भूतवदुपचारादिति ॥ परंपरगएत्ति ॥ परंपरया मिथ्यादृष्ट्यादिगुणस्थानकामा मनुष्यादिसुगतीनावा पारंपर्येण गतां नवाम्भोधिपारं प्राप्त परम्परागत। इहा मन्तरसंयतस्य संसारवृद्धिगामी उ

किं वत्तव्वंसिया ? गोयमा ! सिद्धेत्तिवत्तव्वंसिया , बुद्धेत्तिवत्तव्वंसिया , मुत्तेत्ति वत्तव्वंसिया , पारगएत्ति वत्तव्वंसिया , परंपरगएत्ति वत्तव्वंसिया , सिद्धे बुद्धे मुत्ते परिनिव्वुडे अंतकडे सव्वदुक्खप्पहीणे त्तिवत्तव्वंसि या सेवं भंते भंतेत्ति , भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ नमंसइत्ता संजमेण तवसा अप्पाणं

४ ०थाके पामिता जय ८ थाके भवना विस्तार छेदे। यावनिर्वाणकरविषे। यावत् निष्ठितार्थ करणो प्रयोजननो करणो पूरणोथी। यापुनरविर भ्रतप्रमसामस्वर। मडी पछी मनुष्यादि भवमतें अंतावस्था पावे पामे इतिप्रश्न उत्तर। हता गोयमा। हांगौतम। महाईयपिर्वठि। यतादि प्रासुक भावो निग्रंथसाधु। यावत्पुनरविरत्यप्रत्ययमामस्वर सेवभंतेत्तिवत्तव्वंसिया। यावत् भवोपयो मनुष्यादि भवमते अंतावस्था पावे पामे, तिहां ते निर्ग्रंथजीव मंं माथ्याअंकारे, हेभगवन्! प्रश्नवाय इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सिद्धेत्तिवत्तव्वंसिया। हेगौतम सिद्ध एवम् तेहने कहीये। बुद्धेत्तिवत्तव्वंसि या। बुद्ध एवम् तेहने कहीये। मुत्तेत्तिवत्तव्वंसिया। मुक्त एवम् तेहने कहीये। पारगएत्तिवत्तव्वंसिया। संसार सागरनेपारे पहुता एवम् तेहने कही ये। परंपरगएत्तिवत्तव्वंसिया। मिथ्यात्वादि गुणस्थानकने तथा मनुष्यादि गतिने परंपरायें गया एवम् तेहने कहीये। सिद्धे १ बुद्धे २ मुत्ते ३। सिद्ध बुद्ध मुक्त। परिनिव्वुडअंतकडे। परि निर्हत थया ॥ संसारना अंतकोथा। सव्वदुक्खप्पहीणेत्तिवत्तव्वंसिया सेवंभंते २ त्ति। सगला दुःख प्रयोजनयाहे च हने एवम् तेहने कहीये गौतम बोल्या तहत्ति हभगवन् तुमे कहुं तेमज छे प्रश्नवाजनो। भगवं गोयमे। भगवंत गौतम। समणं भगवं महावीरं। श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी प्रते। वंदइ नमंसइ २ त्ता। वांदे नमस्कारकरे वांदीने नमस्कार करीने। संजमेणतवसाअप्पाणंभावेमाणे विहरइ। तथा या बता कमशरीवें केवेकरी ते संयम करीने भूवना ममवेइिये केवेकरी ते तपकरीने ते संयम उपसमाते। तएणंसमणेभगवंमहावीरे। भामाने भावता

मादिधमविवक्षया भूतादिशब्दप्रवृत्त्याख्यता तस्य वाक्यभेदेन व्याख्येया यदा सूक्ष्मासादिधर्मैं युगपदसौ विवक्षते तदा प्राणो भूतो जीव स त्वा विज्ञो वेदयितारिति एत तमति वार्थ्यं स्या दयवा भिन्नमेव वाक्यमेव मतो न युगपत्यख्याख्याकार्येति ॥ जम्हाजीवेइत्यादि ॥ यस्मा ज्जी व यास्मा सौ जीवति प्राणान् धारयति तथा जीवत्व मुपयोगलक्षण मायुष्कं कर्म उपजीवति अनुभवति तस्मा ज्जीवइति वक्तव्य स्यादिति ॥ जम्हासत्तसुभासुभेहिंकम्मेहिंति ॥ सत्त्व आसक्तः शक्तो वा। समर्थः सुन्दरा २ सुचेष्टासु अथवा सत्तः सम्बद्धः शुभाशुभैः कर्मभि रिति अमन्तरो

या , जम्हा जीवे जीयइ जीवत्त आउयंच कम्म उवजीवइ तम्हाजीवेतिवत्तव्वसिया , जम्हासत्ते सुहासुहे हिं कम्मेहि तम्हा सत्तेतिवत्तव्वंसिया , जम्हा तित्तकटुकसायअंविलमहुरेरसेजाणइ तम्हा विमूतिवत्तव्व सिया , वेदेइय सुहदुक्खं तम्हा वेदातिवत्तव्वसिया , सेतेणठेण जाव पाणेतिवत्तव्वसिया , जाव वेदाति वत्तव्वसिया । मडाईण भंते ! नियंठे निरुद्धभवे निरुद्धभवपवंचे जाव निठियठकरणिज्जे , णोपुण रवि इच्छत्त हव्व मागच्छइ ? हंता गोयमा ! मडाईण नियंठ जाव नोपुणरविइत्यत्त हव्व आगच्छइ सेण भंते

तथा उपयरतरसोवेद। तथा जीवत्व उपयोग लक्षण अपुन आयुष्कम उपजीवति अनुभवे। तम्हाजीवेतिवत्तव्वसिया। तेमाटे जीव एहव् तेहने कहो ये। जम्हासत्तेसुभासुभेहिंकम्मेहिं। जे माटे सत्त्व आसक्त अथवा समर्थ सुंदर असुंदर चेष्टामांहि शुभाशुभकर्म सबंधके। तम्हासत्तेतिवत्तव्वसिया। ते माटे सत्व एहव् तेहने कहीये। जम्हातित्तकटुकसायअंविलमहुररसे जाणइ। जेमाटे तिक्त कडुवो कसायलो अंबिल मधुर ए पांचरस जाणे। तम्हा विमूतिवत्तव्वसिया। तेमाटे विज्ञ एहव् तेहने कहीये। जम्हावेदेइयसुहदुक्खं। जेकारणथी वेदे अनुभवे सुख प्रते तथा दुःखप्रते। तम्हावेदातिवत्तव्वसिया। तेमाटे वेद एहव् तेहने कहीये। सेतेणट्ठेणं जावपाणेतिवत्तव्वसिया। ते तेणे अर्थे यावत् प्राण एहव् तेहने कहीये। जाववेदातिवत्तव्वसिया। यावत् वेद एहव् तेहने कहीये पूर्वकह्या जेअथ तेहना विपरीतपणी कहीये—मडाईणभंतेनियंठेनिरुद्धभवेनिरुद्धभवपवंचे। प्रासुकभोजी हेभगवन्। निर्ग्रंथसा

परिव्राजकस्य ॥ रिउव्वेयजजुव्वेयसामवेयअहव्वणवेयत्ति ॥ इह षष्ठीबहुवचनलोपदर्शनात् ऋग्वेदयजुर्वेदसामवेदाथर्ववेदानामितिदृश्यं इतिहासः पुराणं पंचमो येषां ते तथा तेषां ॥ चउण्हंवेयाणंति ॥ निघंटुछट्ठाणंति ॥ निर्घण्टो नामकोशः ॥ संगोवंगाणंति ॥ अंगानि शिक्षादीनि षट्, उपांगानि तदुक्तप्रपंचपराः प्रबन्धाः ॥ सरहस्साणंति ॥ ऐदंपर्ययुक्तानां ॥ सारएत्ति ॥ सारको अध्यापनद्वारेण प्रवर्तकः स्मारको वान्यस्य विस्मृतस्य सूत्रादेः स्मारणात् ॥ वारएत्ति ॥ वारको अशुद्धपाठनिषेधात् ॥ धारएत्ति ॥ धारि त्ति पाठे तत्र धारको ऽधीतानां तेषां धारणात् ॥ पारएत्ति ॥ पारगामी षडंगविदित्ति षडंगानि शिक्षादीनि अनन्तरोक्तानि सांगोपांगानामिति यदुक्तं तद्वेदपरिकरज्ञापनार्थं अथवा षडंगविदित्यत्र तद्विचारकत्वं गृहीतं विदविचारकत्वस्यैवादिति न पुनरुक्ततामिति ॥ सट्ठितंतविसारएत्ति ॥ कापिलीयशास्त्रपण्डितः तथा ॥ सं

खंदए नामं कच्चायणसगोत्ते परिव्वायगे परिवसइ, रिउव्वेय जजुव्वेय सामवेय अहव्वणवेय इतिहासपचमाणं निघंटुछट्ठाणं चउण्हंवेयाणं संगोवंगाणं सरहस्साणं सारए वारए धारए पारए सडंगवी सट्ठितंतविसारए संखाणे सिक्खाकप्पे वागरणे छंदे निरुत्ते जोइसामयणे अन्नेसु य बहूसु बंभण्णएसु परिव्वायएसु

तेहिं । तहमाविश्रयवैशालो । तहआलो एहवेनामे परिव्राजक तापसना धिष्य । खंदएनामकच्चायणसगोत्ते । खंदक एहवे नामे कात्यायनगोत्रे छेहनो परिव्रायमेपरिवसइ । परिव्राजक वसैछै । रिउवेय । ऋगवेदना । जजुव्वेय । यजुर्वेदना । सामवेय । सामवेदना । अहव्वणवेय । अथर्वण वेदना । इतिहासपंचमाणं । इतिहासनामै पुराणछै पांचमा जेहने ते । निघंटछट्ठाणं । नाम संग्रह छट्ठो जेहने । चउण्हंवेयाणं । च्यारि वेदना । संगोवंगाणं सरहस्साणं । शिक्षादि षट् तथा तदर्मविधे संग्रह सहित तेहनो सुति । सारए वारए धारए पारए । तेहने वार २ संभरे अशुद्धपाठ निषेधकरिवे शीघे धरे पारगामी । सडंगवी सट्ठितंतविसारए । षडंगना जाण कापिलीय शास्त्रना जाण । संखाणे सिक्खाकप्पे वागरणे छंदे निरुत्ते । गणितशास्त्रना जाण षटरसरूप शास्त्रना जाण शब्दना जाण पदरचना शास्त्रना जाण शब्दनी उत्पत्तिना शास्त्रना जाण । जोतिसामयणे ज्योतिषसास्त्र अन्नेसुयबहूसु बंभण्णएसु परि

स्ते सिद्धस्य भत्यघुमात् तेषां मन्येषां चार्यामां युत्पादनाय स्कन्दकचरित विवक्षुरिदमाह ॥ तेणं कालेणं मित्यादि उप्पन्ननाणदंसणधरे ॥ इत्र यावत् करणात् ॥ अरहा जिणे केवली सव्वन्नू सव्वदरिसी आगासगएणं चक्केणं मित्यादि ॥ समवसरणमंवाच्यमिति ॥ गद्दभालस्सत्ति ॥ गद्दभालाभिधान

न्नावे माणे विहरइ , तएणं समणे ज्ञगवं महावीरे रायगिहाओ नयराओ गुणसिलाओ चेइयाओ पडिनिक्खम इ पडिनिक्खमइत्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ, तेणकालेणं तेणसमएणं कयंगलाणाम नयरीहोत्था , व ण्णओ, तीसेणं कयंगलाए नयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए छत्तपलासए णाम चेइएहोत्था , वण्णओ तएणं समणे ज्ञगवंमहावीरे उप्पन्नणाणदंसणधरे जाव समोसरणं परिसा निग्गया , तीसेणं कयंगलाए नयरीए अदूरसामंते सावत्थीणाम नयरी होत्था , वण्णओ, तत्थणं सावत्थीए णयरीए गद्दज्ञालिस्स अंतेवासी

बधा ओवरे विचरे श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी। रायगिहाथाककराथा गुणसिलाथाचैत्यथा। राजगृहनामा नगरथी गुणशीलकनामे यत्न का चैत्यथको। पडिनिक्खमइ २ ना षहिमाजणवयविहारंविहरइ। नीसरे नीसरीने बाहिर देशमांहनेविषे विहारकरे। तेणकालेण तेणसमएण। ति णकालनेविषे तेसमयनेविषे। कयंगलानामनयरीहोत्था वण्णओ। कयंगलानामे नगरीहती वर्णन उवाईथी परेकहवा। तीसेणंकयंगलाएनयरीए। तेह क याणासवारे कयंगला नगरीने विषे। बहियाउत्तरपुरच्छिमेदिसीभाए। बाहिर उत्तर पूर्वनाविचि विभागे एतले ईशानकूणे। छत्तपलासएचेइएहोत्था वण्णओ। छत्रपलास इसेनामे चयना चैत्य हता तेहना वर्णक उवाईथी जाणवा। तएणंसमणे भगवंमहावीरे। तिवारे श्रमणभगवंत श्रीमहावीरस्वामी। उप्पन्नणाणदंसणधरे। उपना जनान्नान प्रने केवलदर्शन तेहना धरणहार। जावसमोसरणं। यावत् समोसरण तांइ कहवो। परिसानिग्गया। परि षदा वांदवा नीकली। तीसेणंकयंगलाएनयरीए अदूरसामंते। तेह व कोणसवारे कयंगला नगरीथी घणू वेगलनही घणू निकटपणनही। सावत्थी णामणयरीहोत्थावण्णओ। तिहा सावत्थीनामे नयरी हती ते नगरीना वर्णक उवाईथोपरे कहवा। तत्थणंसावत्थीएणयरीए। तिहा

मागइति ॥ मगधजमपदजातस्यात् मागध तस्या मवर्द हेमागध। ॥ वच्छइति ॥ संसारवर्धनात् ॥ हायइति ॥ संसारपरिहाम्येति, एतावतावेत्या दि ॥ एतावस्मसमात तावहास्यादि, उच्यमाम पृच्छमाम एव मनेन प्रकारेव एतस्मि आख्याते, पुनरम्य रमस्यामीतिहृदय ॥ सकिएइत्यादि ॥ किमिद मिहोत्तर मिवयति धम्मातराकुः एव मिहोत्तर साधु इदम न साधु मतः कथ मबोत्तर सम्ये इत्युत्तरलाभाकाङ्क्षायाम् काङ्क्षितो स्मि कु सरे इते किमस्य प्रतीति इत्यास्यते मवे; स्येव विचिकित्सितो भेद समापन्नो मते धेष्ठ किङ्कर्तव्यताव्याकुलत्वलक्षण मामस कलुष मापन्नो नाह मिह किञ्चि जानामी त्येवं स्वविषयं कालुष्य समापन्नइति ॥ नोसचाएति ॥ न शक्नोति ॥ पमोक्खमक्खाइउंति ॥ प्रमुच्यते पर्यनुयोमबन्धना दने

सब्बंतेजीवे ख्रणतेजीवे सख्रतासिद्धी ख्रणतासिद्धी सख्रतेसिद्धे ख्रणतेसिद्धे केणवामरणेण मरमाणे जीवे वड्ढइया हायइया एतावताव ख्राइक्खाहि वुच्चमाणो एव तएण से खदए कच्चायणसगोत्ते पिंगलएण निय ठेण वेसालीसावएण इण मक्खेव पुच्छिए समाणे संकिए कंखिए वितिगिच्छिए भेदसमावन्ने कलुससमावन्ने णोसचाएइ, पिंगलयस्स नियंठस्स वेसालियसावयस्स किंचिविपमोक्ख मक्खाइउंतुसिणीए संचिट्ठइ, तएण

तहे भवमा जोम पंतरहितवहे। सपतासिद्धी मपंतासिद्धी समतसिद्धे मणतासिद्धे। सिद्धि सिद्धा मंतसहितवहे भवमा सिद्धसिद्धा मतरहितवहे सिद्धमा जोम पंतसहितवहे भवमा सिद्धमाजोम मतरहितवहे। केवेमामरणेस। किसे मरणेकरी। मरमाणेजीवे। मरतो थका जोम। वड्ढवा। संसारवधी हानि पामे। हायतिमा। संसारनी हानि पामे। एतावताव माइक्खाहि वुच्चमाणो। एतला प्रश्न पूछ्यो ते पहिला कहो पछे बीजो प्रश्न पूछसूं पुछमान। त एपतेएइए कपायनसगोत्ते। तिवारे तेखदक कात्यायन गोत्रीय। पिंगलएणनियठेण। पिंगलनामे साधु। वेसालियसावएण। योमहावीरना वचन सु णिवाने रसिक। इणमक्खेवंपुच्छिएसमाणे। इस आक्षेपे पूछ्या थका। संकिए कंखिए वितिगिच्छिए। एहनो उत्तर कोइ इसोयथा कयनो एहनो उत्तर किम पामिये एहमा उत्तर सोधे इयने प्रतीत उपजसे। भेदसमावन्ने कलुससमावन्ने। मतिभेदपाम्या मतिविभंगपाम्या ए इसो स्योजी कहो जयाय्? इम

गार्ग्येति ॥ गवितस्कन्धपुपरिनिष्ठित इति योग, पदद्वयेऽप्येकत्वमेव व्याख्येय ॥ शिक्षाकल्पेति ॥ शिक्षा अक्षरस्वरूपनिरूपकं शास्त्रं कल्पश्च तथा विधसमाचारनिरूपकं शास्त्रमेव ततः समाहारद्वन्द्वात् शिक्षाकल्पे ॥ व्याकरणेति ॥ शब्दशास्त्रे ॥ छन्दसि ॥ पद्यलक्षणशास्त्रे ॥ निरुक्तेति ॥ शब्दव्युत्प त्तिकारकशास्त्रे ॥ ज्योतिषामयनमिति ॥ ज्योतिःशास्त्रे ॥ अन्येष्वपि ॥ ब्राह्मणसम्बन्धिषु । परिव्राजकसुपरिनिष्ठित ॥ परिव्राजकसत्केषु ॥ नयेषु नीतिषु द र्शनेष्वित्यर्थः ॥ नियण्ठत्ति ॥ निर्ग्रन्थः श्रमण इत्यर्थः ॥ वैशालिकश्रावकइति ॥ विशाला महावीरजननी तस्या अपत्यमिति, वैशालिको भगवांस्त स्य वचनं शृणोति तद्रसिकत्वा दिति वैशालिक. श्रावक' तद्वचनामृतपानरत इत्यर्थ ॥ इणमक्खेवत्ति ॥ एतं वक्ष्यमाणं प्रश्नं ॥ पुच्छेति ॥ पृष्टवान् ॥

नएसु सुपरिनिट्ठिए यावि होत्था, तत्थ णं सावत्थीए नयरीए पिंगलए नामं नियंठे वेसालियसावए परिव सइ, तएणं से पिंगलए नामं नियंठे वेसालिसावए अण्णया कयाइ जेणेव खंदए कच्चायणसगोत्ते तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता खंदय कच्चायणसगोत्त इणमक्खेवं पुच्छे, मागहा ! किं सअंतेलोए अणंतेलोए

शास्त्र नयमां। ब्राह्मण शास्त्रमां तेम बीजां घणां पण ब्राह्मणसंबंधी तथा परिव्राजक संबंधी नीतिओमां। सुपरिनिष्ठित हता। तेज श्रावस्तीमां महावीरनां वचन सांभळवामां रसिक एवो एक निर्ग्रंथ ने श्रावक हतो, तेनुं नाम पिंगल हतुं। पिंगल नामे निर्ग्रन्थ साधु। श्रमण भगवान् महावीरनो श्रावक हतो। तेणे महावीर तेमनां वचन सांभळवामां रसिक। तएणं से पिंगलए नामं नियंठे। तिवारे ते पिंगलनामे निर्ग्रंथ साधु। वेसालियसावए। श्रीमहावीरना वचन सुणवामां रसिक। अण्णयाकयाइ कोइ एक समये। एकदा प्रस्तावे जिहारे स्कंदक परिव्राजक। कच्चायणसगोत्ते। तेणेव उवागच्छइ २ त्ता। कात्यायनगोत्रीय तिहां आवे ति हां आवीने। खंदयकच्चायणसगोत्त। स्कंदक कात्यायनगोत्रीय प्रति इणमक्खेवपुच्छा। ए आक्षेपे प्रश्न पूछे। मागहा। मगधदेशनो जनमो ते मागध। किं सअंतेलोए अणंतेलोए। सं लोक अंत सहित एटलावाळाकनो छांडे अथवा अनंत लोकने छांडनो अंतनथी लोक अंत रहि

वृते २ मूर्व पुष्क इत्यव गीता व्यावृतनाजी प्रतिदिनमोबीत्यर्थे ॥ छेरासंति ॥ प्रधान ॥ सिंगारत्ति ॥ शृङ्गारो ऽलङ्कारादिकृता शोभा तद्योगा शृंगार शृङ्गारमिव शृङ्गार मतिशयशोभावदित्यर्थः कल्याण शेप शिव समुपद्रव मनुपद्रवहेतुर्वा धन्य धन्यमसव्य तथया साधु सहा ईति मङ्गल्य मङ्गले हितायप्रापके साधु मङ्गल्यं अलङ्कृत मुकुटादिभि विभूषित वस्त्रादिभि सन्निपेधा दृगलङ्कृतविभूषित ॥ लक्षणव्यञ्जनगुणोपवेयत्ति ॥ लक्षण मानोन्मानादि तत्र मानं जलद्रोणमानता जलभृतकुण्डिकायामपि मासन्न पुरुष प्रवश्यते तत्प्रवेशोच य ज्जल ततो निस्सरति त यदि द्री णमानं भवति तदा सो मानोपेत उच्यते, उन्मान स्वर्द्धभारमानता मानव्यपुरुषोपि तुलारोपितो यद्यर्द्धभारमानो भवति तदो न्मानोपेतो वायुष्य त, प्रमाणं पुन स्याङ्गुलेना हातराङ्गुलवातोच्छुपता यदाह—जलदोणमद्धभार समुहाइसमूसिओउजोनवहे । माणोमाणपमाण तिविहखलुलक्खण एयं ॥ १ ॥ व्यञ्जन मषतिलकादिक, अथवा सहज लक्षणं, पश्चाद्भवं व्यञ्जनमिति, गुणा सौभाग्यादयो लक्षणव्यञ्जनाना या ये गुणा तै रुप पेत य त तथा उपपपद इत्येतस्य स्थाने निरुक्तिवशा दुपपेत भवतीति ॥ सिरीएत्ति ॥ लक्ष्म्या शोभयावा ॥ इष्टतुष्टचित्तमाषदिएत्ति ॥ इष्टतु

सिंगार कल्लाण सिव धन्न मंगल्ल सस्सिरीय ललकणवजणगुणोववेय सिरीए अतीव अतीव उव सोभेमाणे चिट्ठइ, तएण सेसदए कच्चायणसगोत्ते समणस्सभगवओमहावीरस्स वियहजोइस्स सरीरय उरा

वरचित भव्य हितमापि । भवनविभवविभूषित लक्षणव्यञ्जनगुणोपवेत । चामरवरचितगाभे मयूरचितगाभे मधमान उत्मानसहित समविस प्रसुष गुणशाभाभ्यादिम तिषेसहित । सिरीएपरिम २ उपशोभेमाण २ चिट्ठइ । शोभायेवरी धधू २ मधत उपशोभायमानको रहेहे । तएणसेषवए मधाव सगोत्ते । तिवारे तेषवर कात्यायनगोत्रनोषणो । समणस्सभगवओ महावीरस्स । श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीना । वियहजोईयस्सरीरयस्सोरालय निम्भाजीना सरीरमतें प्रणाममतें । जावपरच २ उपशोभेमाण २ पासइ २ त्ता । यावत् भजत २ धधू २ शोभायमान २ देखे देखीने । हट्ठतुट्ठचित्त माणदिए पोहमाणे । हपदाम्पा संतोषपाम्यो चित्तजेहना आनंदितथयो मनजेहना प्रीतिथयीछे जेहना मनमेविषे । परमसोमणसिए । परम उत्कृष्ट

एसष्ठठे तनताव रहस्सकडे हब्बु मरकाए, जहोण च्छह जाणामि खंदया ! तएणसे खंदए कच्चायणसगोत्ते नगय गोयम एवव्रयासी, गच्छामोण गोयमा ! तवधम्मायरिय धम्मोवदेसय समण नगय महावीर वंदामो नमसामो जाव पज्जुवासामो, च्छहासुह देवाणुप्पिया ! मापडिबंध, तएण नगव गोयमे खदएण कच्चायणसगोत्तेण सद्धि जेणेव समणे नगव महावीरे तेणेव पहारेच्छगमणाए, तेणकालेण तेणसमएण समणे नगव महावीरे वियहन्नोजी यावि होत्या, तएण समणस्स नगवठ महावीरस्स वियहन्नोइस्स सरीरय उराल

षए। घतीव वत्तमान मनागत एनिचिकासना विज्ञायक जाव। सव्वपू सम्मदरिसी। सवभावभावाव सवभावना देखनहार। जेचमएएसमट्ठे। जिवे मुझने एचव। तवतावरहस्सकडेमस्काए। तुम्हारे तावम् पहिला मनमेविषेहोत कोधा एहवो धर्म कह्यो। जघोचयवखायामिखदवा। जेमाटे ह जाणू। हेखदक। तएणसेखदए। तिवारे तेखदक। कचायणसगोत्ते। कात्यायनमागोत्र। भगवमीयम। भगवत गौतम। एवंवयासो गच्छामोव गोयमा। एहवू कहताहवा चालवे पर्ने हेगौतम। तवधम्मायरिय। तुम्हारा धर्माचार्य प्रते। धम्मोवएसय। धर्मना उपदेशक प्रते। समणंभगवंमहावीरं वंदामो णमंसामो श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीप्रते वांदीये नमस्कार करीये। जाव पज्जुवासामो। यावत् सेवाकरीये इसे वचन खदक कात्यायना। अहासुहंदेवाणुप्पिया। गौतम कहया जिम सुख उपजे तिमकरो हेदेवानुप्रिय तुम्हे। मापडिबंधं। पणि विलंबमाकरशो। तएणसेभगवंगोयमे खंदएणंकच्चायणसगोत्तेणं सद्धि। तिवारे तेभगवंत गौतम खंदक कात्यायन गोत्रगोत्रयो ते सघातेकरो। जेणेवसमणेभगवंमहावीरे। जिहां श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी छे। तेणेवपहारेत्थगमणाए तेणंकालेणं तेणंसमएणं। तिहां सघलाकोधो जायवानेकाजे तेकालनेविषे तेसमयनेविषे। समणेभगवंमहावीरे। श्रमणभगवंत श्रीमहावीरस्वामी। वियट्टभोईयाविहोत्था। नित्यभोजी प्रतिदिन भोजीहे। तएणसमणस्सभगवओमहावीरस्स। तिवारे श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीना। वियट्टभोइयस्ससरीरयंउरालं सिंगारं कल्लाणं सिव धन्न मंगल। नित्यभोजीना शरीर केहवाछे तेकहेछे—प्रधान अविमय शोभावत श्रेयकारी उपद्र

पते २ सूप पुष्क इत्यत्र मीसा व्यायतमोवी प्रतिदिनपोनीत्यर्थ ॥ हंसासति ॥ प्रधानं ॥ सिंगारेति ॥ मङ्गारो अलङ्कारादिकृता शोभा तत्प्रधाना
म्गृंगारं मङ्गारमिव शृङ्गार मतिशयशोभावदित्यर्थः कल्याण श्रेयः शिव मनुपद्रव मनुपद्रवहेतुवा ; धन्य धनलभनसम्यू तरथवा ; साधु तद्दा र्थेति
मङ्गल्य मङ्गले हितायप्रापके साधु मङ्गल्यं अलङ्कृत मुकुटादिभि विभूषित वस्त्रादिभि सविशेषा इमसङ्कृतविभूषित ॥ लक्खणवंजणगुणोववेयंति ॥
लक्षण मानोन्मानादि तत्र मानं जलद्रोणमानता जलजलकुण्डिकायामपि मातव्य पुरुषः प्रवेश्यते तत्प्रवेशेन च जल ततो निस्सरति स यदि द्रो
णमान भवति तदा स मानोपेत उच्यते, उन्मान स्वर्द्धभारमानता मातव्यपुरुषोहि तुलारोपितो यद्यर्द्धभारमानो भवति तदो न्मानोपेतो वाच्य
स प्रमाणं पुनः स्वाङ्गुलेन अष्टोत्तराङ्गुलशतोच्छ्रयता यदाह—जलदोणमद्धभार समुहाइसमूसिओउजोनवउ । माणुम्माणपमाणं तिविहं खलु लक्खणए
यं ॥ १ ॥ व्यञ्जनं मषतिलकादिक, अथवा ; सहज लक्षणं पश्चाद्भवं व्यञ्जनमिति गुणा सौभाग्योदयो लक्षणव्यञ्जनानां वा ये गुणा स्तै रुप
पेत य त तथा उपपपइ इत्येतस्य स्थाने मिलक्किवसा दुपपेत भवतीति ॥ सिरीएति ॥ लक्ष्म्या शोभया वा ॥ इदतुडचित्तमाणंदिएति ॥ हट्ठतु

सिगार कल्लाण सिव धन्न मगल्ल ल्लणलकियविभूसिय लक्खणवजणगुणोववेय सिरीए अतीव अतीव उव
सोभेमाणे चिठइ, तएण सेसदए कन्नायणसगोत्ते समणस्सभगवओमहावीरस्स वियदृभोइस्स सरीरय उरा

वरहित भव हितमाभि । षषसकिमविभूषित लक्षणव्यंजनगुणोपेत । षाभरणरहितथाभे भक्तरहितथाभे षषषमान जन्मानसहित मसतिष मसुष
गुणशोभाम्यादिक निर्विसहित । सिरीएपर्दन २ उपशोभेमाणे २ चिहइ । शोभायेकरो षघू २ भलत उपर्याभाषसामथ्या रहेछे । तएणसेसंदए कथाय
नसमाप्ते । तिवारे तेखरक कात्यायनमोषमोषणो । समणभगवया महावीरस्य । श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीना । वियद्दभोईयस्स सरीरयमोराष्य
निषभाजोना मदोरसते प्रधानमते । षायपईय २ उपसाभेसाय २ पासइ २ ता । षानद् पलत २ षघू २ शोभायमान २ देखे देखीने । हट्ठतुट्ठचित्त
माणंदिए पीरमाणे । हर्षवान्ता सतोषवान्या चित्तमेहता षानंदितथयो मनषेहनी प्रीतिवन्तो थेहगा मनमेंविषे । परमसोमणस्सिए । परम उत्कृष्ट

एसण्ठे तवताव रहस्सकडे हव्व मक्खाए, जहोण ण्हं जाणामि खदया ! तएणसे खंदए कच्चायणसगोत्ते ज्ञगव गोयम एववयासी, गच्छामोण गोयमा ! तवधम्मायरिय धम्मोवदसय समण ज्ञगव महावीर वदा मो नमसामो जाव पज्जुवासामो, ण्हासुह देवाणुप्पिया ! मापडिबंध, तएण ज्ञगव गोयमे खदएण कच्चाय णसगोत्तेण सद्धि जेणेव समणे ज्ञगव महावीरे तेणेव पहारेच्छगमणाए, तेणकालेण तेणसमएण समणे ज्ञ गव महावीरे वियहज्जोजी यावि होत्था, तएण समणस्स ज्ञगवद्द महावीरस्स वियहज्जोइस्स सरीरय उराल

षय। षतीव वत्तमान षनागत एपिविकालना विमायक ज्ञाव। सव्वष्णू सव्वदरिसी। सवभावभावाव सवभावना देखनहार। सेयमएएसमंट्टे। विवे मु भने एपव। तवतावरहस्सकडेमक्खाए। तुम्हारे तावत् पविका मननेविषेहोव बोधा एहवी षर्थ कह्यो। षथोषमदवाषामिखदया। वैसाठे ह्र षाप्रह्। देषदव। तएवखेषदए। तिवारे तेषदव। वषायवसगोत्ते। काश्यायमगाषीय। भमषंगोयम। भगवत गौतम। एववयासी गच्छामोव गोयमा। एहवूं कहताहवा षारये षम हेगौतम। तवधम्मायरिय। तुम्हारा धर्माचाय प्रते। धम्मावएसव। धमना उपदेशक प्रते। समषंभगवमहावीर वदामो नमसामो षमव भगवंत षोमहावीरस्वामीप्रते षांदीये नमस्कार करीये। जाव पज्जुवासामो। यावत् सेवाकरीये एसे वषम खदक षह्यामखा। षहासुहदेवाणु प्पिया। गौतम षाल्या जिम सुष उपजे तिमकरा हेदेवानुप्रिय तुम्हने। मापडिबंधं। पषि विलबमाकरयो। तएणंसेभगवंगोयमे खंदएषकच्चायषसगोत्ते सद्धि। तिवारे तेभगवंत गोतम खंदक कात्यायन मायगोत्रषी ते सघातेकरी। षवेसमषेभगवमहावीरे। जिहा श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामीछै। तेवेषपहारेच्छगमषाए तेषंकालेष तेषसमएषं। तिहा षषअषोधो षारवानेकाले तेहासमेविषे तेसमयमेविषे। समणेभगवंमहावीरे। श्रमषभगवंत श्री महावीरस्वामी। वियहमाईयाविहोत्या। निव्यमाषो प्रतिदिन भोषीवे। तएषसमषस्सभगवषामहावीरस्स। तिवारे श्रमष भगवंत श्रीमहावीरस्वामी ना। वियहभाइयषसरीरयउराल सिणारं पधानं सिव भष मयल। निव्यभोजीनो शरीर केहवोछे तेकहेवे—प्रधान षविमय श्रीभावव षेममारी षपद्र

घत्ते २ मूर्व मुख इत्यव शीला ध्यायतनोभी प्रतिबिम्बोभीत्यर्थ ॥ ठराचवि ॥ प्रधान ॥ सिणारवि ॥ शृङ्गारो ऽलङ्कारादिकृता शोभा तद्योमा शृंगार मङ्गारमिव यङ्गार मतिशयशोभावदित्यर्थः, कल्याण श्रेयः शिव मनुपद्रव मनुपद्रवहेतुत्वात् धन्य धर्मधनलब्ध तथवा साधु तद्दा इति मङ्गल्य मङ्गले हितायमापन्ने साधु मङ्गल्य अलङ्कृत मुकुटादिभि विभूषित वस्त्रादिभि सन्निधेभ्या द्वमलङ्कृतविभूषित ॥ लक्खणवंजणगुणोववेयत्ति ॥ तत्र मानोन्मानादि तत्र मान जलद्रोणमानता जलभृतकुण्डिकायांहि मातव्यः पुरुषः प्रवश्यते ततुप्रवेशेन च जल ततो निस्सरति त यदि द्रो णमान मयति तदा सो मानोपेत उच्यते, उन्मान स्वर्धभारमानता मातव्यपुरुषोहि तुलारोपितो यद्यर्द्धभारमानोभवति तदो न्मानोपेतो साखुच्य त, प्रमाण पुनः स्वाङ्गुलेना ष्टाशताङ्गुलशतोच्छ्रयता यदाह—जलदोणमद्धभार समुहाइसमूसिउवोनवठ । माणोमाणपमाण तिविहंखलुलक्खणेयप र्य ॥ १ ॥ व्यञ्जन मषतिलकादिक मथवा सहज लक्षण पश्चाद्भव व्यञ्जनमिति गुणाः सौभाग्योदयो लक्षणव्यञ्जनानां वा ये गुणा स्तै रुप पत च त तथा उपपयं इत्येतस्य स्थाने निरुक्तिवशा दुपपत भवतीति ॥ सिरीएति ॥ लक्ष्म्या शोभयावा ॥ इतुठचितमातिरिति ॥ अतीव

सिंगार कल्लाण सिव धन्न मंगल्ल अलंकियविभूसिय लक्खणवंजणगुणोववेय सिरीए अतीव अतीव उव सोभेमाणे चिट्ठइ, तएणं सेसवए कच्चायणसगोत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स वियट्टछोइस्स सरीरय उरा

करंडित अथ हिलमासि । अलंकियविभूसिय लक्खणवंजणगुणोववेय । आभरणरहितशाभे वस्त्ररहितशाभे जयवसाम उन्मानसहित अवतिव प्रशस्त गुणमाभाग्यादिक लिचेसहित । सिरीएअतीव २ उवसोभेमाण २ चिट्ठइ । शोभायेकरी अपू २ अत्यत उपशोभायमानथको रहेछे । तएणंसेखंदए कच्चाय णसगोत्ते । तिवारे तेखंदक कात्यायनगोत्रगोत्री । समणस्सभगवओ महावीरस्स । श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामीना । वियट्टभोईयस्ससरीरयंओरालंच निरन्तभोजीना शरीरप्रते प्रधानप्रते । जावअईव २ उवसोभेमाण २ पासइ २ त्ता । यावत् अत्यत २ अपू २ शोभायमान २ देखे देखीने । हट्ठतुट्ठचित्त माणदिए पोइमाणे । हर्षपाम्या संतोषपाम्यो चित्तनेविषे आनंदितथयो अमनेविषे प्रीतिथयोछे चेहना मननेविषे । परमसोमणस्सिए । परम उत्कृष्ट

एसष्ठे तयताव रहस्सकडे हव्व मक्खाए, जर्हेणं ष्वह जाणामि खदया ! तएणसे खदए कच्चायणसगोत्ते नगय गोयम एवंवयासी, गच्छामोण गोयमा ! तवधम्मायरिय धम्मोवदेसय समण नगय महावीर वदामो नमसामो जाव पज्जुवासामो, अहासुह देवाणुप्पिया ! मापडिबंध, तएण नगव गोयमे खदएण कच्चायणसगोत्तेण सद्धि जेणेव समणे नगव महावीरे तेणेव पहारेच्छगमणाए, तेणकालेण तेणसमएण समणे नगव महावीरे वियहन्नोजी यावितोत्था, तएण समणस्स नगवद्ध महावीरस्स वियहन्नोइस्स सरीरय उराल

घप । घतीव वत्तमान घवागत एथिविकावना विघायक जाव । सव्वषू सव्वदरिसो । सवभावमाचाव सवभावना देवमहार । येवसएएसघड्डे । जिवे मुभने एवय । तवतावरहस्सकडेमक्खाए । तुमारे तावत् षडिसा मनमेविघेशेव कोधा एडवो षवं वखो । वघोवघडवावामिवखदया । वेमाटे ह वाचूंह । वेवरव । तएणखेन्दए । तिवारे तेवदव । कवायवसगोत्ते । काव्वायनगोत्रीय । भगवंसोयम । भयवत गौतम। एववयासो गच्छामोव गोयमा । एहवं करताइवा वाइवे घव वेगौतम ! तवधम्मायरिय । तुम्हारा घर्मोचाय मते । धम्मावएसव । घमना उपदेयव मतें । समर्वमवमहावीर वंदामो वमसामो घमव भमवंत वोमहावीरखामोमते वांदोवे नमस्कार करोवे । जाव पज्जुवासामो । यावत् सेवाकरीये इसे वचन खदव कहावया । घहासुहदेवाणुप्पिया । गौतम वास्या जिम सुख ऊपजे तिमकरो देदेनानुप्रिय तुमने । मापडिबंधं । पचि विसवमावकरवो । तएणसेभगवंगोयमे खदएणकच्चायणसगोत्ते वंहवि । तिवारे तेभयवंत गोतम खंदक कात्यायन गायनाधवी ते सघातेकरो । जवेवसमणेभगवमहावीरे । जिहां समण भगवंत श्रीमहावीरखामोछे । तेणेवपहारेच्छगमणाए तेणवाविव तेणसमएणं । तिहां सवममोघो आहवाभिवाखे तेवासनेविघे तेसमयनविये । समणेभगवमहावीरे । समणभगवंत श्री महावीरखामी । वियहभाईयाविहात्था । नित्यमाखो प्रतिदिन भोवोवे । तएणसमणस्सभगवओमहावीरस्स । तिवारे समण भगवंत श्रोमहावीरखामीना । वियहभारवसमसरीरयवराल तिवारे कहावं तिव घव मगव । नित्यभोजोगो सरीर केहवोछे तेकहेछे—प्रधान सविमय सोभावव केवडारो वपव

पते २ मूव हुक इत्येव मीता ध्यावहनामी प्रतिदिनमीमीत्यर्थ ॥ छंरासति ॥ प्रधान ॥ सिंगारत्ति ॥ शृङ्गारो ऽलङ्कारादिकृता शोभा तद्योग शृंगार शृङ्गारमिव शृङ्गार मतिशयशोभावदित्यर्थः कस्याश्च येयः शिव ममुपद्रव मनुपद्रवहेतुर्वा ; धन्य धनधमलब्ध समया ; साधु सद्वा इंसि मङ्गल्य मङ्गले हितायप्रापके साधु मङ्गल्यं मसङ्कृत मुकुटादिभि विभूषित वस्त्रादिभि सन्निवेशा दुमसङ्कृतविभूषित ॥ लक्षणव्यञ्जनगुणोपवेयति ॥ सदव मानोन्मानादि तत्र मानं जलद्रोणमानता जलपूतकुण्डिकायामि मातव्यः पुरुषः प्रवेश्यते तत्प्रवेशेन य जल ततो निस्सरति त यदि द्रो समाम मयति तदा सौ मानोपेत उच्यते, उन्मान स्वर्धभारमानता मातव्यपुरुषोऽपि तुलारोपितो यद्यर्धभारमानोऽनवति तदो न्मानोपेतो साधुष्य त प्रमाणं पुनः स्वाङ्गुलेना ष्टोत्तरागुलशतोच्छ्रयता यदाह—जलदोणमद्धभार समुहाइसमूसिओउजोमवई । माणोमाणपमाण तिविह खलुलक्खणं पं ॥ १ ॥ व्यञ्जन मपतिलकादिक, मथवा ; सहज लक्षण पचाद्भव व्यञ्जनमिति, गुणा सौभाग्योदयो लक्षणव्यञ्जनाना या ; ये गुणा स्तै रूप पत य त तथा लक्षणपद इत्येतस्य स्थाने निरुक्तिवशा लुपपत जवतीति ॥ सिरीएत्ति ॥ सम्यग शोभयावा, ॥ हठतुठचित्तमाणंदियत्ति ॥ हट्टतु

सिंगार कल्लाण सिवं धन्न मंगल्ल सस्सिरिय अलंकियविभूसिय लक्खणवंजणगुणोववेयं सिरीए अतीव अतीव उव सोभेमाणे चिट्ठइ, तएणं सेसदेए कल्लायणसगोत्ते समणस्सभगवओमहावीरस्स वियट्टभोइस्स सरीरयं उरा

हरहित भय हितमाहि । चयचकितविभूसिय लक्षणवंजणगुणोपपेत । पाभरपरहितयाभे मयरहितयाभे मयवमान उग्मानसहित मवविस प्रमुष गुणमाभामारिश तिषिसहित । सिरीएणोत्त २ उपमोभिमाप २ सिहर । मोमायेकरी घपू २ मक्षत धपयाभायसानयको रहैबे । तएणसेखंडए कपाय वसगात्ते । तिवारि तेखदक कात्यायनगोत्रगोत्री । समणभगवंता महावीरघ । श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीना । वियट्टभोईयस्ससरीरयंभोरालय निम्माभाद्योमा सरीरमतें प्रधानमतें । जामपर्यंत २ उपसोभिमाप २ पासइ २ ता । यावत् पक्षत २ पर्यु २ मोभायमान २ देखे देखीने । हट्टतुट्ठचित्त माणंदिए पीइमाणे । हपदाम्या संतोषपाम्या चित्तनेहमा पामद्वितयो मनवेहमा प्रीतिपयोछे जेहमा मननेविषे । परमसोमणंसिए । परम सरसए

य मत्यर्थंतुष्टं हृष्टं या। विस्मित तुष्टंच लोयव चित्त मनो यत्र स तत् हृष्टतुष्टचित्त यथाभवति, एवं मानदित देव सुसमीस्पताद्विावे सम
त्ति सुपनतः ततय ॥ नदिएत्ति ॥ नदित सौ रेव सम्रहतरसा सुपनत ॥ पीइमणेत्ति ॥ प्रीतिः प्रीणम माप्यायन मनसि यस्य स तथा ॥ परम
सामकसिएत्ति ॥ परमं सौमनस्यं सुमनस्कता सञ्जात यस्य स परमसौमनस्यित तड्डा। स्यासोति परमसौमनस्यिकः ॥ हरिसवसविसप्पमाणहि
यएत्ति ॥ हर्षवशेन विसर्प्पं द्विस्तारं व्रज हृदय यस्य स तथा एकार्थिकानि चैतानि प्रमोदप्रकर्षप्रतिपादनार्थानीति ॥ दव्वठंचणगेसोएसमेत्ति ॥

। जाव छतीव छतीव उवसोभेमाण पासइ पासइत्ता हठतुठचित्तमाणदिए पीइमणे परमसोमणसिए
,रसयसविसप्पमाणहियए जेणेव समणे नगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता समण नगव
हावीर तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिण करेइ जाव पज्जुवासइ खंदयाइ, समणे नगव महावीरे खदय क
ञायणसगोत्त एववयासी, से नूण तुम खंदया सावत्थीए णयरीए पिगलएण नियठेणं वेसालिसावएण

समभत्वया थाम्या। हरिसवसविसप्पमाणहियए। यथैवस्कंधको विस्तारपास्माहे प्रदश चेतनो एवमा खदक। जर्वेवसमणेभगवमहावीरे। जित्त
श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामी छे। तेणेवउवागच्छइ २ त्ता। तिहां आवे तिहां आवीने। समणभगवंमहावीर। श्रमण भगवंत श्रीमहावीर स्वामीप्र
ते। तिक्खुत्ताआयाहिणपयाहिणकरेइ। त्रीणवार श्रीमण पासाथी मांडी प्रदक्षिणा करे। जावपज्जुवासइ खंदयाई। यावत् वांदी नमस्कारकरी से
वाकरे सेवकत इसे भामवे। समणेभगवमहावीरे। श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामी। खंदयकच्चायणसगोत्त। खंदकप्रते कात्यायनगोत्रगोत्रयो प्रते।
एववयासी सेनूणखंदया। इम कहताहवा ते निश्चे हेखदक। सावत्थीएणयरीए पिगलएणनियठेणं। श्रावस्ती नगरीने पिंगलनामे निर्ग्रंथसाधु। वेसा
लियसावएण। श्रीमहावीरना वचन सुणिवाने रसिक तिणे। इणमक्खेवपुच्छिए। इसे आक्षेपे पूछ्यो। मागहापिंगलएणेणए। हेमागध। मगधदेशना ज
पना एं सोक अंतसहितछे यवा अणतेलोए। अंत रहितलोकछे। एवंतचेव। इम तिसहीज तिरे। जावकेणवेणंबड्ढइ। यावत् जिवा मांकरो

इणमक्खेय , मागहा ! किसम्रतेलोए ऋणतेलोए एव तचेव जाव जेणेव ममम्रतिए तेणेव हव्वमागए , से णूण खदया ! ऋठे समठे , हताऋत्थि जेयिय ते खदया ! ऋयमेयारूवे ऋज्झत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था, किसम्रतेलोए ऋणतेलोए तस्सयियण ऋयमठे, एवखलु मए खदया ! चउव्विहे लोए पणत्ते तजहा—दव्वउ खेत्तउ कालउ भावउ । दव्वउण एगेलोए सऋते १ खेत्तउण लोए ऋसखेज्जाउ जोयणकोडाकोडीउ ऋायामविक्खभेण , ऋसखेज्जाउ जोयणकोडाकोडीउ परिक्खेवेण पणत्ता, ऋत्थि पुण से ऋंत , कालउण लोए नकयाइनऋासि नकदाइनभवइ नकदाइनभविस्सइ भविसुय भवतिय भविस्स

समीपहे । तेणेवहव्यमागए । तिहां आवीने आव्या । सेणूणखदया । तेनिश्चे हेखदक ! अट्ठसमट्ठे । एअर्थ समर्थ तुमने वद्दनकरे । हताअत्थि । हांसाची सत्यहे । जेमिसणतेखदया । जिकाएणि अपुन ते तुमने हेखदक ! अयमेयारूवे । एएताइसरूप । अज्झत्थिए । आत्मविषय । चितिए पत्थिए । चितित अभीष्ट मानमारूप । मणोगएसंकप्पेसमुप्पज्जित्था । मन सबधी मनमेंयिये गया संकल्प विचारउपनो । किसअतेलोए । अं लोकअतसहितहे । अणते माए तस्सवियणयमट्टे । सो अतरहितहे तेहमाएणि अपुन थें वक्खाणकारे, एमथहे । एवंखलुमएखदया । इम निश्चे में हेखदक । चउव्विहेलोएपण तेतजहा । चार भेद लोक कह्या तेकहेहे—द्रव्यथा खेत्तथा कालथा भावथो । द्रव्यथो १ क्षेत्रथी २ कालथो ३ भावथो । दव्वओणएगेलोए सअंते । द्रव्यथो पंचास्तिकायमय एक द्रव्यतणथी लोक अंतसहितहे । खेत्तओणलोएअसंखेज्जाओजोयणकोडाकोडीओ । क्षेत्रथी लोक मेरुपर्यंतथको असंख्याती योजन नी कोडाकोडि चार दिस लिगिदिसै आश्रयी इम अधोदिसै ऊर्ध्वदिसै तेपणअसंख्याती असंख्याती योजननी कोडाकोडि । आयामविक्खभेणं असंखेज्जाओजोयणकोडाकोडीओपरिक्खेवेण पणत्ता अतिघणसरूपता । आयामदीर्घपणे विष्कभविस्तारपणे असख्याती योजननी कोडाकोडिकरीने कह्या लोक वे पणो तथा लोकमान्यत एतले अतसहितहे । कालओणलोएणकयाइणआसि । कालथी लोक नथीकदेइ भझता एवाणता अतीतकाले कदेइ मझता इम न

पञ्चास्तिकायमयैकद्रव्यस्या लोकस्यायामो सौ ॥ आयामविक्खम्भेणति ॥ आयामो दैर्घ्यं, विष्कम्भो विस्तारः ॥ परिक्खेवेणंति ॥ परिधिना ॥ ध्रुवि सुइत्ति ॥ अभवत् इत्यादिभिर्य पदैः पूर्वोक्तपदानामेव तात्पर्य मुक्तं ॥ धुवेत्ति ॥ ध्रुवोऽचलत्वात् सचा नियतरूपोपि स्या दतआह ॥ णियएत्ति ॥ नियत एकस्वरूपत्वात् नियतरूपः कादाचित्कोपिस्या दतआह ॥ सासएत्ति ॥ शाश्वतः प्रतिक्षणसद्भावात् स च नियतकालापेक्षयापिस्या दित्य त आह ॥ अक्खएत्ति ॥ अक्षयो ह्यविनाशित्वात् अयच बहुतरप्रदेशापेक्षयापिस्या दित्यत आह ॥ अव्वएत्ति ॥ अव्यय आत्मप्रदेशानां मध्यमत्वात् अ यच द्रव्यतयापिस्या दित्याह ॥ अवट्ठिएत्ति ॥ अवस्थितः पर्यायाणामनन्ततया अवस्थितत्वात् किमुक्तं भवति नित्यइति ॥ वण्णपज्जवत्ति ॥ वर्णविशेषा एकगुणकालत्वादयः एवमन्येपि गुरुलघुपर्यवा बादराणां वादरस्कन्धानां अगुरुलघुपर्यवा अमूर्ता सूक्ष्मस्कन्धानां अमूर्त्तानाञ्च ॥ नाणपज्जवत्ति ॥ ज्ञा

इय, धुवे णियए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए णिच्चे णत्थिपुण से अंते ३ । जावतेण लोए अणंतावण्ण पज्जवा, गधरसफास । अणंता संठाणपज्जवा, अणंता गुरुयलहुयपज्जवा, अणंता अगुरुयलहुयपज्ज वा, नत्थिपुण से अंते १ सेत्त खंदया । दव्वठ लोगे सअंते, खेत्तठ लोए सअंते, कालठ लोए अणंते,

हा । अनवाउनभवद । तथा गयो कहेद वत्तमानकाले गर्छ एतावताहे तथा । नकवारनमविस्मद । गवोकर्द अनागतकाले गयो हुवें एतावता । भुविसुवभवतिम भविश्यतिम भुवेविश्वरसाक्षए । अतीतकालेहूता वर्तमानकालेछे अनागतकाले हुसे अवयवपणाथी एक सरूपथी नियत शास्वतो । अ क्षर अव्वर अवट्ठिर निवे । विनाशगयो केटला प्रदेशापेक्षायें विक्षतु गयो । अवस्थित एतलेभिछ्छे । नत्थिपुणसेअते । गयो वधो तदगो अत एतले अनतछे । भावथावलोए । भावथो लाक । अणतावणपज्जवा । अनता वरणा पर्याय एकगुणकालादिकृते । गधरसफास । गधरसफासना पर्यवथा । अणतासठाणपज्जवा । अनता सस्थानना पर्याय । अणतागुरुलघुयपज्जवा । अनता वादर खधने गुरुलघुपर्याय । अणतागुरुलघुयपज्जवा । अनतासूक्ष्म खधने तथा अमूर्त्ती अगुरुलघु पर्याय । नत्थिपुणसेअतेसेतखंदया । गयो वधो तेहना थको एतले भावथी पणि अनतछे ते एवरक । दव्वओलोएसअते

मपर्याया ज्ञानविषया युक्तिकृताथा विभागपरिच्छेदा अनन्तागुरुलघुपर्याया औदारिकादिशरीरा न्याश्रित्य इतरेषु कामयादिद्रव्याणि जीवस्वरूप माश्रित्येति ॥ सेयियत्तएदयापुच्छति ॥ अनेन समर्थ सिद्धिमसमसूत्र मुपसंहरन्ना आसरसूत्राथय सूचित सावद्ययमप्येस ॥ सवियतेखदयाइसेयाऊ

जायह लोए अणते, जेयिय ते खदया! जाव सअतेजीवे अणतेजीवे तस्सावियण अयमठे, एवखलु जाव दव्वठण एगेजीवे सअते, खेत्तठण जीवे असखेज्जपएसिए असखेज्जपएसोगाढे, अत्यिपुणसे अते, का लठण जीवे नकदाइनआसि णिच्चे नत्यिपुण से अते, भावठण जीवे अणतानाणपज्जवा, अणता दस णपज्जया, अणताचरित्तपज्जवा, अणता गुरुयलज्जयपज्जवा, अणता अगुरुयलज्जयपज्जवा। नत्यिपुण

सेत्तयाजोवसअते। द्रव्यतो याव अंतसहितछे, क्षेत्रतो लोकमपि अंतसहितछे। कालथीजीवअनंते। कालथी जीव अंतरहितछे। भावयाजीवअनंते। भावथी पणि याव अंतरहितछे। सेयियअनेतखदया। जेपणि अपुन वलो च वाच्याःसकारे, तेयहक। याववअंतेयोजे अनंतेजीवे। यावत् अंत सहितछे याव अंत रहितछे जीव। तस्यविकयमयमठे। तेहनो पणि अपुन अंताभ्यासंकारे, एमज जाणवो।एवखलुयावदव्वओजे। इम निश्चे यावत् द्रव्यथी च वा च्यासकारे। एगेजीवेसअते। एकजीव द्रव्य अंतसहितछे। खेत्तओणजीवेअसखेज्जपएसिए असखेज्जपएसोगाढे। क्षेत्रथी च वाच्यासकारे, जीव असं ख्यात प्रदेशात्मकछे असंख्यातप्रदेश अवगाढछे। अत्थिपुणसेअते। छे वली तेहना अंत, अंतसहितछे।कालओणजीवे नकयाइनासि। कालथी वं वाच्यासका रे जीव कदा कहे ए न हुता एतावता अतीतकालेहुतो वर्त्तमानकालेछे अनागतकालेहुस्ये। निच्चेनत्यिपुणसेअते भावओणजीवे। निश्चछे नही वली तेह ना अंत एतले अनंतछे। भावथी च वाच्यासकारे, जीव। अणतानाणपज्जवा अणतादसणपज्जवा। अनंता ज्ञानना पर्याय अनंता दर्शनना पर्या य। अणताचरित्तपज्जवा। अनंता चारित्रना पर्याय। अणतागुरुयलहुयपज्जवा। अनंता गुरुलघु पर्याय ते औदारिकशरीर आश्रयीने। अणता अगु रुयलहुयपज्जवा नत्थिपुणसेअते। अनंताकार्मणद्रव्य अथवा जीवस्वरूप आश्रयीने। नही वली तेहनोअंत एतावता तेहना अंतछे। सेत्तदव्वओजीवेसअते।

पञ्चास्तिकायमयैकद्रव्यस्या लोकस्याऽऽत्तो यो ॥ आयामविक्खम्भेणंति ॥ आयामो दैर्घ्यं, विष्कम्भो विस्तारः ॥ परिक्खेवेणंति ॥ परिधिना ॥ भूवि सुयत्ति ॥ अभवत् इत्यादिभिः पदैः पूर्वोक्तपदानामेव तात्पर्य मुक्तं ॥ धुवेत्ति ॥ ध्रुवोऽचलत्वात्, तथा नियतरूपोपि स्यात् इत्याह ॥ णियएत्ति ॥ नियत एकस्वरूपत्वात् नियतरूपः कादाचित्कोपिस्यात् इत्याह ॥ सासएत्ति ॥ शाश्वतः प्रतिक्षणसद्भावात् अथ नियतकालापेक्षयापिस्यात् इत्य त आह ॥ अक्खएत्ति ॥ अक्षयो ह्यविनाशित्वात् अयंच बहुतरप्रदेशापेक्षयापिस्यात् इत्यत आह ॥ अव्वएत्ति ॥ अव्यय स्तत्प्रदेशानां अव्ययत्वात्, अ यं द्रव्यतयापिस्यात् इत्याह ॥ अवट्ठिएत्ति ॥ अवस्थितः पर्यायाणामनन्ततया अवस्थितत्वात्, किमुक्तं भवति नित्य इति ॥ वण्णपज्जवत्ति ॥ वर्णविशेषा एकगुणकालत्वादयः एवमन्येपि, गुरुलहुपर्यवा तद्विशेषा बादरस्कन्धानां अगुरुलहुपर्यवा अमूर्त्तानां सूक्ष्मस्कन्धानां अमूर्त्तानांच ॥ भावपज्जवत्ति ॥ घा

इय, धुवे णियए सासए श्रक्खए श्रव्वए श्रवट्ठिए णिच्चे णत्थिपुण से श्रंते ३। जावन्तेण लोए श्रणतावन्ना पज्जवा, गधरसफास। श्रणता सठाणपज्जया, श्रणता गुरुयलहुयपज्जया, श्रणता श्रगुरुयलहुयपज्जवा, नत्थिपुण से श्रंते ४ सेत्त खदया। दव्वश्रो लोगे सश्रंते, खेत्तश्रो लोए सश्रंते, कालश्रो लोए श्रणते,

वा। अभवात्समभवत्। तथा भवी भवेत वर्त्तमानकाले भवे एतावता तथा। भवत्यात्समभविष्यत्। भवीस्सइ अनागतकाले भवी इत्यें एतावता। भुविसुवभवतिय भविस्सतिय इवेविययलाअए। अतीतकालेहुता वर्त्तमानकालेहे अनागतकाले हुस्से अचलपर्यायो एक अक्षयो नियत शाश्वतो। अ क्षए अव्वए अवट्ठिए निच्चे। जिनायतनो केहना प्रदेशापेक्षाये विणसतु नथी। अवस्थित एतलेनिश्चले। नत्थिपुणसेअंते। नथी वली तेहनो अत पतले अनतहे। भावश्रावलोए। भावथी लोक। अणतावण्णपज्जवा। अनता अनन्ता वर्णाव एकगुणकालादिते। गधरसफास। गधरसफासना पर्यवसवा। अणतासठाणपज्जवा। अनता अनन्ता पर्याय। अणतागुरुयलहुयपज्जवा। अनता बादर बधने गुरुलघुपर्याय। अणताअगुरुलहुयपज्जवा। अनतासूक्ष्म अधने तथा अमूर्त्ती अगुरुलघु पर्याय। नत्थिपुणसेअंतेसेत्तखदया। नथी वली तेहना अत पतले भावथी पणि अनतहे ते पचहक। द्रव्यथालोकअंते

मपर्याया ग्रामविसपा पुद्गिलतायां विभागपरिच्छेदा अनन्तागुरुलघुपर्याया औदारिकादिशरीरा न्याश्रित्य इतरेतु कामणादिपुद्गलाधि जीवस्वरूप मेवाश्रित्यति ॥ सेविपतश्वदयापुच्छति ॥ अनेन समर्थ सिद्धिमसूत्र सुपसंबध्वा ग्रोत्तरसूत्रसय सूचित सावद्ध्यमप्येव ॥ अविपतेसद्यादमेपार

जायतो लोए ऋणते, जेयिय ते खदया! जाव सऋतेजीवे ऋणतेजीवे तस्साविवण ऋयमठे, एवखलु जाव दव्वहण एगेजीवे सऋते, खेत्तहण जीवे ऋसखेज्जपएसिए ऋसखेज्जपएसोगाढे, ऋत्थिपुणसे ऋते, काल्हण जीवे नकदाइनऋासि णिच्चे नात्थिपुण से ऋते, भावहण जीवे ऋणतानाणपज्जवा, ऋणता दस णपज्जया, ऋणताचारित्तपज्जवा, ऋणता गुरुयलहुयपज्जवा, ऋणता ऋगुरुयलहुयपज्जवा। नात्थिपुण

सेत्तभावोजीवसअते। द्रव्यतो याव अंतसहितवे, सेवतो जीवपवि अतसहितवे। कालपोजीवएअपते। कालतो जीव अंतरहितवे। भावभोजीवअपते। भावतो पवि याव अतरहितवे। सेविअतेसवया। सेपवि अपुन मतो च यावधावंकारे, देसकह। यावसपतेजीवे अपतेजीवे। यावत् अत सहितवे जीव अंत रहितवे जीव। तस्सविवपयमठे। तेहनो पवि अपुन अंधावधावकारे, एवम यावता। एवपलुयावदव्यजीव। इस लिये यावत् द्रव्यतो च या घावकारे, ।एगेजीवेसअते। एकजीव द्रव्य अतसहितवे। सेत्तभावजीवेअसखेज्जपएसिए असखेज्जपएसोगाढे। सेवतो च यावधावकारे, जीव अस ख्यात प्रदेशात्मकवे असख्यातप्रदेश अवगाढवे। अत्थिपुणसेअते।वे पछो तेहनो अत, अंतसहितवे।कालओजीवे नकदाइनासि। कालतो च यावधावका रे जीव मतो कहेई नहुता एतावता अतीतकालेहुतो वर्त्तमानकालेवे अनागतकालेहुसे। णिच्चेनत्थिपुणसेअते भावयावजीवे। नित्यवे मतो पछो तेह ना अत एतले अनतवे। भावतो च यावधावकारे, जीव। अणताणाणपज्जवा अणंतादसणपज्जवा। अनता ज्ञानना पर्याय अनता दर्शनना पर्या य। अणताचरित्तपज्जवा। अनता चारित्रना पर्याय। अणतागुरुयलहुयपज्जवा। अनता गुरुलघु पर्याय ते औदारिकशरीर आश्रीने। अणता अगु रुयलहुयपज्जवा नत्थिपुणसेअते। अणताकार्मणद्रव्य अथवा जीवस्वरूप आश्रीने। मतो पछो तेहनोअंत एतावता तेहनो अतवे। सेत्तदव्वओजीवेसअते।

वे चाय किं सताषिद्वी प्रवंताषिद्धी तरसवियर्व पयमठेएयउमुमएउदया पउद्विहाषिद्धी पयत्ता तंजहा दव्वठे खेतठे कालठे भावठेत्ति, दव्वठेच ए
पासिद्धित्ति ॥ इह सिद्वि यद्यपि परमार्थतः सकलकर्मक्षयरूपा सिद्धाधाराकाशादेश्ररूपावा ; तथापि सिद्धाधाराकाशदेशप्रत्यासन्नत्ये न पत्प्राग्भा
रा पृथिवी सिद्दि रुक्ता ॥ किंचिविसेसाहिएपरिक्खेवेणंसि ॥ किञ्चिन्न्यूनमध्यूसद्युताधिके द्वे योजनशते एकोनपञ्चाशदुत्तरे प्रयतइति ॥ यसपभरचे

से ख्वते सेष्ठ। दव्वठ जीवे सख्वते, खेत्तठजीवे सख्वते, कालठ जीवे ख्वणते, भावठ जीवे ख्वणते, जेयियण
ते खदया पुच्छा। ख्वतासिद्धी ख्वणतासिद्धि, तस्सावियएण ख्वयमठे, मए चउव्विहासिद्धी पयात्ता तजहा
दव्वठ ४ दव्वठण एगासिद्धी सख्वता खेत्तठण सिद्धी पणयालीसजोयणसयसहस्साइ ख्वायामविक्खंभेण, ए
गाजोयणकोडीबायालीससयसहस्साइ तीसचसहस्साइ दोणियअउणापन्ने जोयणसए किंचियिसेसाहिए प
रिक्खेवेण पयात्ता, ख्वत्थिपुणसेख्वते, कालठण सिद्धी नकदाइ नख्वासि, भावठय जहा लोयस्स तहा

तर द्रव्यतो याव सतवत्तिताहे। खेत्रपाश्रयंते। खेत्रतो पवि सतसवित्तताहे। कालभावांवेषयते। कालयो पविवीय पंतरवित्तताहे। भावपोषयते। भाव
यो पविवीय सतरवित्ताहे। वेविसर्वतेस्दयापुच्छा। जेयवि सपन वं याक्तायंकारे, हेयदत्त पूर्वा। सर्पताखिठो। संतसचित सिद्धमिलाहे प
वा पर्वतासिरी तद्यविवर्ण। पंतरहित सिद्धमिलाहे तिहमा पवि सपुन। पयमोक्षरया। एपर्यंते वेयदव। सपएर्यसमुपलभ्यताधिहोपक्षता
तजहा में इस विवे पारमेहे सिद्धिसिला कवी तेवीचे—इसपोयएगाधिवोसपंता। द्रव्यतो एक सिद्धिसिला तेहनो पतवे तेमाटे पंतसचि
तहे। खेत्रपा पंचिडोपचडाडीसलायचडसरकार पायामविक्खंभेर्ण। खेत्रतो सिद्धिसिला पेतालीसलाख साजन प्रमाण पायाम चोडी विक्खंभपणता
पारसपवेडे। एवा कापचकाडी। एक सायननी काडी। पायालीससयसहस्सार। बयालीसलाख। तीससयसहस्सार। तीससहस्स। दोणियपउणापन्ने
जोयणसए। दायसे उगुणपचास जोजन। किंचिविसेसाहियपरिक्खेवेण पयात्ता। कांइएक धिकेराधिक एतली भारेपञ्चयेता धायभाय विसेसाधिक परि

ज्ञाणियव्वा । तत्यदव्वउ सिद्धी सअंता , खेत्तउसिद्धी सअंता , कालउ सिद्धी अणंता , जावउ सिद्धी अणंता , जेवियते खंदया ! जाव किं अणंते सिद्धे तचेव जाव दव्वउण एगेसिद्धे सअंते, खेत्तउण सिद्धे असंखेज्जपएसिए असंखेज्जपएसोगाढे अत्यिपुणअंते, कालउण सिद्धे सादीएअपज्जवसिए, नत्यिपुण सेअंते, भावउण सिद्धे, अणंता णाणपज्जवा अणंता दंसणपज्जवा , अणंता अगुरुयलहुयपज्जवा , नत्यिपुणसेअंते सेत्त । दव्वउसिद्धे सअंते, खेत्तउसिद्धे सअंते, कालउ सिद्धेअणंते, भावउ सिद्धेअणंते, जेवियते खंदया ! इमेयारूवे अज्झत्यिए चिंतिए जाव समुप्पज्जित्या । केणवा मरणेण मरमाणे जीवे वड्ढइवा हायइवा तस्स वियण अयमट्ठे एवखलु खंदया ! मए दुविहे मरणे पण्णत्ते तजहा—बालमरणेय पण्डियमरणेय , सेकित

भिद्दे । पत्थिपुणसेअंते । यथा तसिद्दिनाषक एतये भतसहितहे भावयो च वाक्कासंकारे सिद्दिभिद्दा । मकयाविमाति १ । नयो कहेइ मडुर एतावता दूरहे दूधे । भावभायमशावायलतहाभाविमम्मा । भावयो यपन जिम वोकमेकया तिम सिद्दभिद्यावयतो । तत्यदव्वथोसिद्दोसयंता । तिवा द्रव्यथी सिदिमिद्दा यत सहितह । खेत्तयोसिद्दिसयंता । खेमयो सिद्दिमिद्दा यतसहितहे । कालमासिद्दिघनता । कालयो सिद्दिमिद्दा यंतरहितहे । भावयो सिद्दोयघता । भावयो सिद्दमिद्दा यंवरहितहे । जेवियच तेवदया । जिवेयचि यपुन वेयदक । इमेएयारूवे । एहवा रूपेकरो सयुक्छे । यअल्थिएचिंतिए । याम्मवियम चिताव्य । जायसमुप्पज्जिया । यावत् सवम उपनो । केणवामरणेणमरमाणेजीवेवड्ढवाहायइवा । किसे मरणे मरतोयको जीव वधे संसारमा वधमाहो जीवमा वधता समारगोहानिपको जीवमोहानि । तस्सवियणयमट्ठे । तेहने पनि यपुन च वाक्कासंकारे, अथकयो । एवंखलु परवा । हम निपे देवदत्त । मएदुविहेमरणेपणत्ते तजहा । मैं येमकार मरणकह्यो तेकहेछे—बालमरणेय । बालमरण १ यपुन । पण्डियमरणेय । पण्डितमरण २ यपुन । सेकितंबालमरणे १ दुवालसविहेपणत्ते तजहा । ते पूं बालमरण ते बालमरण बारे प्रकारनो कह्यो तेकहेछे—वलयमरणे । मृ

त्ति ॥ यसतो मुहुर्त्तापरिमितत्वेन वसवसायमासस्य सयमाद्वा अथमतो मरण वसमरणं तथा वद्धे मेन्द्रियवशेन खातस्य पीडितस्य दीपकलिकाकृ पातिसयतुप: घासजस्येव प स्मरणं तद्भवान्तमरण तथा मत्त मृत्यस्य प्रमतो ऽनुभूततोमरादे मोवत: सातिचारस्य यन्मरण तदन्त घास्यमरस त था सत्ती प्रवाय मनुष्यादे: यतो मनुष्यादावेव महायुषी यन्मरणं ततद्भव मरण मिदंच मरतिरश्चामेवेति ॥ सत्योवाळणेत्ति ॥ सत्येन क्षुरिकादिना मवपाटन विदारण हृदस्य यस्मि न्मरणे तच्छस्त्रावपाटन ॥ विहायसति ॥ विहायस्याकाशे भव वृक्षशाखाद्युद्बन्धनेन यत तिरुपवसा वैहायसम् ॥ गद्धपट्ठेत्ति ॥ गृध्रै: पक्षिविशेषै रुपलक्षितो मांसलुब्धै: शृगालादिभि: स्पृष्टस्य विदारितस्य करिकरभरासभादिशरीरान्तर्गतस्येन य न्मरण तत् गृध्र स्पृष्टवा गृद्धपृष्ठवा। गृध्रैर्वा भक्षितपृष्ठस्य य तत् गृध्रपृष्ठ ॥ दुवालसविहेणंवालमरणेणति ॥ उपलक्षणत्वा दस्या न्येनापि बालमरणान्त पाति

वालमरणे, वालमरणे दुवालसविहे पण्णत्ते तंजहा—वलयमरणे वसट्टमरणे अंतोसल्लमरणे तब्भवमरणे गिरिपडणे तरुपडणे जलप्पवेसे जलणप्पवेसे विसभक्खणे सत्थोवाडणे वेहाणसे गिद्धपिट्ठे, इच्चेएणं खंदया ! दुवालसविहेणं वालमरणेणं मरमाणेजीवे अणंतेहिं नेरइयभवग्गहणेहिं अप्पाणं संजोएइ, तिरियमणुदेव

वे विलविलाटकरता मरे, भयवा वमंतो मरताथमरे १। वसट्टमरणे २। इन्द्रियनेवसि पडो मरे २। अतोसल्लमरणे ३। मध्यसल्योमरे इन्द्री वोमरादिक मायवो सातिचार ३। तब्भवमरणे ४। मनुष्य मरी मनुष्य होय तिर्यंचमरी तिर्यंच थाय ४। गिरिपडणे ५। पर्वतो पडो मरे ५। तरुपडणे ६। वृक्षथी प डोमरे ६। जलप्पवेसे ७। पाणीमांहि प्रवेशकरी मरे ७। जलणप्पवेसे ८। अग्निमांहि प्रवेशकरी मरे ८। विसभक्खणे ९। विष भक्षणकरी मरे ९। सत्थो वाडणे १० । शस्त्र करी पेटचीरी हृदय विदारे शिखमरणेमरे १० । वेहाणसे ११। वृक्ष शाखादिकनो पासो खाय मरेते वेहाणस मरे ११। गिद्धपिट्ठे १२। हतकमांहिपडोमरे १२। इत्येएणदुवालसविहेणं बालमरणेणमरमाणेजीवे। इत्यादि बारे भेदे बालमरणे मरणपामतो जीवादिपणि बालमरणवाले तिर्यंच रो मरतायको जीव। अनंतेहिंनेरइयभवग्गहणेहिं। अनंतकरी नारकी भवग्रहणेकरी। अप्पाणंसंजोएइ। आपणा आत्मा जीवमतें जोडे मेळे। तिरि

मा मरणेन म्रियमाणइति ॥ वड्ढइवड्ढइति ॥ संसारपङ्केन भृशं वर्द्धतेजीव, इदंमि द्विर्वचनं भृशार्थइति ॥ पाओवगमणेति ॥ पादपस्येवो पगमन मस्पंदतयावस्थान, पादपोपगमनं इदंच चतुर्विधाहारपरिहारनिष्पन्नमय भवतीति ॥ नीहारिमेयत्ति ॥ निर्हारेण निर्वृत्तं यत्त न्निर्हारिम प्रतिश्रय या म्रियत तस्ये तत् तस्यकलेवरस्य निर्हारणात् यमिर्हारिमंतु योऽव्या म्रियतइति यथा भ्यणे स्याने इङ्गितमरण मभिधीयते, तद्भक्तप्रत्याख्या

अणाइयघण अणयदग्ग दीहद्ध चाउरतससारकतार अणुपरियट्टइ, सेत बालमरणेण मरमाणे वड्ढइ वड्ढइ सेत्तंबालमरणे। सेकित पंडियमरणे, पंडियमरणेदुविहे पण्णत्ते तंजहा—(ग्रंथसंख्या १०००) पाओवगमणेय भत्तपच्चक्खाणेय, सेकिंत पाओवगमणे पाओवगमणेदुविहे पण्णत्ते तंजहा—नीहारिमेय अनीहारिमेय नियमा अपडिक्कमे सेत्तं पाओवगमणे, सेकित भत्तपच्चक्खाणे, भत्तपच्चक्खाणेदुविहे पण्णत्ते तंजहा—नीहारिमेय

ममयबद्देवपवारयवव भववयम्न दोहमद्ध। तिथच मनुष्य देवगतिसंघाते चाउरतावे आदिमहो चपुम चारी अंतमहो दोघवोया भवा भाम। चाउरत संसारकतारपवपरिवहद। चतुर्गतिससारकप कांतार अटवीमाहि परिभ्रमणकरे। सेतबालमरणेणमरमाणेवड्ढइव २। तेए बालमरणेकरी मरतोथको भोर ससारम बधकरो जीवथे। सेतबालमरणे। तेए बालमरणकह्या। सेकि तं पंडिअमरणे २ दुविहे पण्णत्ते तंजहा [पं १००] ते सू पंडित मरण ते पंडित मरण वेभेदे कह्या तेकहेछे—पाओवगमणेय १। पादप कहोये वृक्ष तेहनीपरि अनशणे रहवा। भत्तपच्चक्खाणेय २। चौवा आत पथ आव रूप पंडितमरण १। सेकितपाओवगमणे २ दुविहे पण्णत्ते तंजहा। ते पं पादपोपगमन पंडितमरण पादपोपगमनपंडितमरण सेवेप्रकारनो कह्या तंजहेछे—नीहारिमेय। नगरमांहिमरे तेहना कलेवरना नीहारणाथाय तेनीहार मरणकहीये १। अनीहारिमेय। पर्वतादिके मरे तेहनो नी हारना नथाय २। नियमा अपडिकमे। निश्चयथी पडिकमणा नकरे हाथ पग हलावेनहो। सेतपाओवगमेण। ते पादपोपगमन मरण कह्यो। से कितभत्तपच्चक्खाणे दुविहे पण्णत्ते तंजहा। २। ते कौ भक्तप्रत्याख्यान मरण तेभक्तप्रत्याख्यान मरण २। वेप्रकारे कह्या तेकहेछे—नीहारिमेय अनी

त्ति ॥ वसतो बुभुक्षापरिगतत्वेन वलवलायमानस्य संयमाद्वा भ्रश्यतो मरणं वलन्मरणं तथा वशे नेन्द्रियवशेन ऋतस्य पीडितस्य दीपकलिकाद् पातितचक्षुषः शलभस्येव च मरणं वशार्त्तमरणं, तथा अन्तः शल्यस्य द्रव्यतो ऽनुद्धृततोमरादे र्भावतः सातिचारस्य यन्मरणं तदन्तःशल्यमरणं त था तस्मै भवाय मनुष्यादेः सतो मनुष्यादावेव बद्धायुषो यन्मरणं तत्तद्भव मरण मिदञ्च नरतिरश्चामेवेति ॥ सत्थोवाडणेत्ति ॥ शस्त्रेण क्षुरिकादिना अवपाटनं विदारणं देहस्य यस्मि न्मरणे तच्छस्त्रावपाटनं ॥ विहायसत्ति ॥ विहायस्याकाशे भवं वृक्षशाखाद्युद्बन्धनेन यत् तद्विहायसं वैहानसम् ॥ गृद्धपट्ठेत्ति ॥ गृध्रैः पक्षिविशेषैः उपलक्षणत्वात् मांसलुब्धैः शृगालादिभिः स्पृष्टस्य विदारितस्य करिकरभरासभादिशरीरान्तर्गतस्येन च मरणं तद् गृध्र स्पृष्टं गृध्रस्पृष्टं वा गृध्रैर्वा भक्षितपृष्ठस्य च तत् गृध्रपृष्ठं ॥ दुवालसविहेणंबालमरणेणंति ॥ उपलक्षणत्वा दस्य अन्येनापि बालमरणेन पारि

बालमरणे, बालमरणे दुवालसविहे पणत्ते तंजहा—वलयमरणे वसट्टमरणे अंतोसल्लमरणे तब्भवमरणे गि रिपडणे तरुपडणे जलप्पवेसे जलणप्पवेसे विसभक्खणे सत्थोवाडणे वेहाणसे गिद्धपिट्ठे, इच्चेएणं खंदया ! दुवालसविहेणं बालमरणेणं मरमाणेजीवे अणंतेहिं नेरइयभवग्गहणेहिं अप्पाणं संजोएइ, तिरियमणुदेव

वे विलविलाटकरतो मरे, अथवा संयमथी भ्रष्टथयो मरे १। वसट्टमरणे २। इन्द्रियनेवशि पड्यो मरे २। अंतोसल्लमरणे ३। अंतःशल्योमरे द्रव्यथी तोमरादिक भावथी सातिचार ३। तब्भवमरणे ४। मनुष्य मरी मनुष्य थाय तिर्यंचमरी तिर्यंचथाय ४। गिरिपडणे ५। पर्वतथी पड्यो मरे ५। तरुपडणे ६। वृक्षथी प डीमरे ६। जलप्पवेसे ७। पाणीमांहि प्रवेशकरी मरे ७। जलणप्पवेसे ८। अग्निमांहि प्रवेशकरी मरे ८। विसभक्खणे ९। विष भक्षणकरी मरे ९। सत्थो वाडणे १०। शस्त्र छुरी प्रमुखथी देहीने विदारे तिणमरणेमरे १०। वेहाणसे ११। वृक्ष शाखादिकथी पासोखाय मरे ते वेहाणस मरे ११। गिद्धपिट्ठे १२। गृध्रमांहिपडीमरे १२। इच्चेएणंदुवालसविहेणं बालमरणेणंमरमाणेजीवे। इत्यादि बारे भेदे बालमरणे उपलक्षणथी बीजाईपणि बालमरणे तिर्यंच री मरतायको जीव। अणंतेहिंनेरइयभवग्गहणेहिं। अनंता नारकी भवग्रहणेकरी। अप्पाणंसंजोएइ। आपणा आत्मा जीवपणे जोडे छे। तिरि

मा मरणेन म्रियमाणइति ॥ वन्दवसट्टइति ॥ ससारवर्द्धमेव मूर्ध्ना वद्दतेजीव, इदहि द्विवेचनं मृशार्थंइति ॥ पाओवगमणेति ॥ पादपस्येवो पगमम मरणदतमायस्थानं पादपोपममन इदंच चतुर्विधाहारपरिहारनिष्पन्नमेव भवतीति ॥ नीहारिमेयत्ति ॥ निर्हारेण निर्वृत्त यत्त निहारिम प्रतिश्रये यो म्रियते तस्यै तत् तस्कलेवरस्य निर्हारणात् अनिर्हारिमतु योऽटव्यां म्रियतइति यथा स्यात्रेह स्थाने इङ्गितमरण मभिधीयते, तद्रूक्तमत्याख्या

अणाइयंचणं अणवदग्गं दीहद्धं चाउरंतसंसारकंतारं अणुपरियट्टइ, सेत्तं बालमरणेणं मरमाणे वड्डइ वड्डइ सेत्तं बालमरणे। सेकिंतं पंडियमरणे, पंडियमरणेदुविहे पण्णत्ते तंजहा—(ग्रंथसंख्या १०००) पाओवगमणेय भत्तपच्चक्खाणेय, सेकिंतं पाओवगमणे पाओवगमणेदुविहे पण्णत्ते तंजहा—नीहारिमेय अनीहारिमेय नियमा अपडिक्कमे सेत्तं पाओवगमणे, सेकिंतं भत्तपच्चक्खाणे, भत्तपच्चक्खाणेदुविहे पण्णत्ते तंजहा—नीहारिमेय

अनन्तदेवपर्यवसानं अवकाम दीर्घमद। तिर्यच मनुष्य देवगतिरूपाते आत्माचारे आदिनहीं अपुन आते अंतनहीं दीर्घकाल यहा मार्ग। चाउरंत संसारकंतारअनुपरियट्टइ। चतुर्गतिसंसाररूप कांतार अटवीमांहे परिभ्रमणकरे। सेतबालमरणेणमरमाणेवड्डइव २। तेए बालमरणेंकरी मरतांथका जीव संसार मधवेकरते जीवघे। सेतबालमरणे। तेए बालमरणकह्या। सेकिं त पंडितमरणे २ दुविहे पन्नत्ते तंजहा [म १] ते स्यूं पंडित मरण ते पंडित मरण बेभेदे कह्या तेकहेहे—पाओवगमणेय १। पादप वृक्षनीपरे हाथ तेहनीपरे अनमणे रहना। भत्तपच्चक्खाणेव २। चौवी भात पच क्खाण रूप पंडितमरण २। सेकिंतंपाओवगमणे २ दुविहे पन्नत्ते तंजहा। ते स्यूं पादपोपगमन पंडितमरण पादपोपगमनपंडितमरण तेबेप्रकारनो कह्या तेकहेहे—नीहारिमेव। नगरमांहिमरे तेहना कलेवरना नीहारपणोहाय तेनीहार मरणकहीये १। अनीहारिमेय। पर्वतादिके मरे तेहनो नी हारणा नथाय २। नियमाअपडिक्कमे। निश्चयथी पडिक्कमणा नकरे हाथ पग हलावेनहीं। सेतपाओवगमेण। ते पादपोपगमन मरण कह्यो। से किंतभत्तपच्चक्खाणे दुविहे पन्नत्ते तंजहा।२। ते स्यूं भक्तप्रत्याख्यान मरण तेभक्तप्रत्याख्यान मरण २ बेप्रकारे कह्यो तेकहेहे—नीहारिमेय अनी

मस्येव विशेषदति मेद मेदेन दर्शितमिति ॥ सम्पकशाजाविमवृति ॥ सार्थेय–अपवीवायप्रती मुवती अह्यसकिलिस्सति । अहदुस्सावमत करि तिकदयपठिमद्दा ॥ १ ॥ महनिपदिपचित्ता वहजीवादुक्ससागरसुविति । अहवेरमगुसगया कससमुम्मविशाकितीत्यादि ॥ २ ॥ दृष्च ॥ महनिय

ध्युनीहारिमेय , नियमा सपडिकम्मे सेत्तं भत्तपच्चक्खाणे । इच्चेतेण खंदया ! दुविहेण पडियमरणेण मरमा णेजीये अणतेहि नेरइयभवग्गहणेहि अप्पाण विसंजोएइ जाय वीयीवयइ , सेत मरमाणे हायइ , सेत्त पडियमरणे । इच्चेएण खंदया ! दुविहेण मरणेण मरमाणे जीवे वड्ढइया हायइवा , एत्थणसे खंदए कच्चाय णसगोत्ते सबुद्धे समणभगवमहावीर वदइ नमसइ , नमसइत्ता एव वयासी , इच्छामिण भंते ! तुज्झष्

हारिमेव । यथायकमारे रवे तेषमा यरोरमा मौचारपाताय यटवीमारे रवे तेषमा यरोरमा मौचारपानताय । पिवमाम्रपडिकमे । नियम ए पडि कमना करे हाव पग हिवाव । सेत्तभत्तपषक्खाप । भत्तप्रत्याख्यान मरणकीवे । इवेतेषखदया । इत्यादिक करो च वाक्यासकारे, हेखदक । दुविधे ष्वडिपमरणेषमरमाणेजीवे । दुविधप्रकारने पडितमरणे माराधनादिकरणेकरी मरतायकोजीव । अनतेविपेरइयभवप्रहरोहिमप्पा चविसजोएइ । पनतरे करो नारकोना भवपहरणेकरी पापना पात्मान विसंजोवे पलमोकरे एतावता पतर्पतिश्चमवरूप ससारथो पापणोजीव पलगाकरे । जावदोइवयइ । यावत् ससार पतकरे जोवकमवयकरी सायताय । सेत्तमरमाणेहायइ २ । तेए पडितमरणे मरणीयका ससारणोहानि करवायो जोवप्ए हानिपामे । सतपडियमरणे २ इवेतेषखदया । तेए पडितमरणकयो । एतसे तेषखदक । दुविधेषमरणेषमरमाणेजीवे वड्ढइवाहायइवा । बेप्रकारने मरणेकरी मर तायकोजीव ससारमा वधवाथी जीवमधे वधे ससारनीहानिथी जीवनीहानिथाय । एत्थणसेखदए । इहा एहवे कथा च वाक्यालकारे, तेखदक । क ात्यायनगोत्रे सबुद्धे । कात्यायनगोत्र समझ्या । बूझ्या तत्वनीजाणजाणो । समण भगवमहावीर वदइ नमसइ २ । तिवारे श्रमण भगवत ऐश्वर्यादिकयुक्त श्रीमहावीरस्वामीने वांदे नमस्कारकरे वादीने नमस्कारकरीने । एववयासी । इम कहे । इच्छामिणमतेतुब्भपतिएकेवलिपन्नत्तधम्मनिसामेत्तए । वाछु

हियाचिसमि ॥ घासं नियत्तित चित्त ये सो तथा घासोंह्रा घनिवहित चित्त ये सो घासे नियर्तितचित्ताः ॥ सद्दहामिति ॥ निग्रन्थ प्रवचन म सोति प्रतिपद्य ॥ पत्तियामिति ॥ प्रीति प्रत्यय वा सत्य मिद मित्यव रूप तम करोमी त्यर्थ ॥ रोएमित्ति ॥ चिकीर्षामीत्यर्थः ॥ मब्भुठेमिति ॥

तिए केयलिपन्नत्तं धम्मं निसामित्तए , अहासुहं देवाणुप्पिया मापडिबंध , तएणसमणेभगवमहावीरे खंद यस्सकच्चायणसगोत्तस्स तीसेयमहइमहालियाए परिसाए धम्मं परिकहेइ , धम्मकहा भाणियव्वा , तएणसे खंदए कच्चायणसगोत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हठतुठजाव हयाहियए उ ठाएउठेइ उठेइत्ता समणभगवमहावीरं तिखुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ करेइत्ता एवंवयासी, सद्दहामि

छ म बाक्यालंकारे हेभगवन् ! तुम्हारे समीपे केवलोये प्रणीतकह्या, जेधर्म ते सांभलवाभणी, स्कंदक इसेकह्या थका भगवंतकहेहे—यहासुहदेवाणुप्पिया मापडिबंध। जिमसुखहुवे हेदेवानुप्रिय तिमकरो पणि विलंबमा करसो। तएणसमणेभगवमहावीरे। तिवारे श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी। खंदयस्स। खंदकने। कच्चायनसगोत्तस्स। कात्यायनगोत्रीयने। तीसेयमहइ महालियाए परिसाए धम्मपरिकहेइ। तिसी मोटी वात्तीसंकटोमें मोटी परिषदामेविषे धर्मप्रते कहे। धम्मकहाभाणियव्वा। ससार अनित्य अने धर्मनित्य इत्यादि धर्मकथा कहवी। तएणसेखंदएकच्चायणसगोत्ते। तिवारे ते खंदक कात्यायन गोत्रनाधणी। समणस्सभगवओमहावीरस्स। श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीने। अंतिएधम्मसोच्चानिसम्म। समीपे धर्मसांभली थका हृदयधारीने। हठतुठजावहियए उठेइ २ त्ता। हर्ष संतोषपाम्या यावत् हयवो हीयो विकस्यो उठेउठीने। समणंभगवमहावीरं तिक्खुत्तोआयाहिणपया हिणकरेइकरेइत्ता। श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी प्रते तीनवार जीमणा पासाथी प्रदक्षिणाकरे करीने। एववयासी। इमकहे। सद्दहामिणंभंतेनिग्गं थपावयण। सदहूं हेभगवन् ! जे केवलज्ञानीभाख्या दयारूपनिग्रंथना प्रवचनमार्ग। पत्तियामिणंभंतेनिग्गंथपावयण। प्रीतिमत अथवा प्रत्ययप्रतें ए स घले हेभगवन् ! निग्रंथना प्रवचनमार्ग। रोएमिणंभंतेनिग्गंथपावयण। रोचूं हेभगवन् ! निर्ग्रंथना प्रवचन रुचिकरे इत्यर्थ। अब्भुठेमिणंभंतेनिग्गंथपावय

मस्येव विशेषदर्सि मह जेवेन दर्मितमिति ॥ पमकदाजाविपवृत्ति ॥ सार्थं—अटवीयायप्रती मुषसो अप्पसकिलिस्ससि । अएदुमउायमत फरि सिकेरंपयछियहा ॥ १ ॥ महनियहिपविता अहजोयायुक्सायामरसुविति । अएयेरग्गमुयमया फसमसमुणयिहाकिसीत्यादि ॥ २ ॥ इएव ॥ महनिय

ध्यनीहारिमेय , नियमा सपक्रिकमे सेत्त जत्तपच्चक्खाणे । इच्चेतेण खदया ! दुविहेण पक्रियमरणेण मरमाणेजीवे अणतेहि नेरइयजवग्गहणेहि अप्पाण विसजोएइ जाव वीयीवयइ , सेत मरमाणे हायइ , सेत्त पक्रियमरणे । इच्चेएण खदया ! दुयिहेण मरणेण मरमाणे जीवे वड्डइवा हायइवा , एत्यणसे खदए कच्चाय णसगोत्ते सबुद्धे समणजगवमहावीर वदइ नमसइ , नमसइत्ता एव वयासी , इच्छामिण जत्ते ! तुज्जम

वारिसेव । वपावसमाते रवै तेहना शरीरमा नौवारपाहाय पटवीमाहे रवै तिहमा शरीरना नौवारपानवाय । वियमासपडिहसे । नियय ए पवि समया करे ताम पव हिमाव । सेत्तमत्तपच्चखाणे । भत्तप्रत्याख्यान मरणकहीवे । इच्चेतेणखदया । इत्यादिक करी च वाक्यालकारे हेखदक ! दुविहे वपडिमरणेणमरमाणेजीवे । इविधप्रकारने पडितमरणे माराधमादिकरपोकरी मरतायकोजीव । अणतेहिनेरइयभवग्गहणेहिअप्पाणविसजोएइ । अनतरे करी नारकीना भवग्रहिकरी आपना आत्मा विसजोडे अलगाकरे एतावता चतुर्गतिभ्रमणरूप संसारथी आपणोजीव अलगोकरे । जाववीइवयइ । यावत् ससार अतकरे जीवकर्मक्षयकरी मोक्षजाय । सेत्तमरमाणेहायइ २ । तेए पडितमरणे मरतोथको संसारनोहानि करवापी जीवघणु हानिपामे । सेत्तंपडियमरणे २ इच्चेतेणखदया । तेए पडितमरणकह्या । एतले हेखदक ! दुविहेणमरणेणमरमाणेजीवे वड्डइवाहायइवा । बेप्रकारने मरणेकरी मर तोथकोजीव ससारना वधवाथी जीवधणे घणे ससारनोहानिथी जीवओछोथाय । एत्थणसेखदए । इहां एहवे कह्या च वाक्यालकारे, तेखदक । क च्चायणसगोत्तेसबुद्धे । काच्चायनगोत्रीय समक्ष्या बुज्या तत्त्वनोजाणथयो । समणभगवमहावीरं वदइ नमंसइ २ । तिवारे श्रमण भगवंत श्रीमहावीरदिवस मोमहावीरस्वामीने वांदे नमस्कारकरे वांदीने नमस्कारकरीने । एववयासी । इम कहे । इच्छामिणंभतेतुब्भमतिएकेवलिपन्नत्तधम्मनिसामित्तए । वाछ

हियचित्तति ॥ भास निवसित चित्तं ये से तथा आर्त्तोहा अनिवसित चित्त ये से आर्त्त निवसितचित्ता: ॥ सद्दहामिति ॥ निग्रन्थ प्रवचन म सोति प्रतिपद्य ॥ पत्तियामिति ॥ प्रीति प्रत्यय वा सत्य मिद मित्यव रूप तत्र करोमी त्यर्थ ॥ रोएमिति ॥ चिकीर्षामीत्यर्थः ॥ अब्भुठेमिति ॥

तिए केवलिपन्नत्त धम्म निसामित्तए , अहासुह देवाणुप्पिया मापडिबंध , तएणसमणेभगवमहावीरे खद यस्सकच्चायणसगोत्तस्स तीसेयमहइमहालियाए परिसाए धम्म परिकहेइ , धम्मकहा भाणियव्वा , तएणसे खदए कच्चायणसगोत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्म सोच्चा निसम्म हठतुठजाव हयहियए उ ठाएउठेइ उठेइत्ता समणभगवमहावीर तिखुत्तो आयाहिणपयाहिण करेइ करेइत्ता एववयासी, सद्दहामि

[illegible] नमस्कार हेभगवन् । तुम्हारे समीपे केवलीये प्रणीतकह्यो जेधर्म ते सांभळवाभणी, [illegible] भगवतकहे—यथासुखदेवानुप्रिय मा प्रतिबंध । जिमसुख हुवे देवानुप्रिय तिमकरो पणि विलंब मा करजो । तएणसमणेभगवमहावीरे । तिवारे श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी । खदयस्स । खंदकने । कच्चायणसगोत्तस्स । कात्यायनगोत्रीयने । तीसेयमहइ महालियाए परिसाए धम्मपरिकहेइ । तिसी मोटी वार्त्ताकरीने मोटी परिषदानेविषे धर्मप्रते कहे । धम्मकहाभाणियव्वा । संसार अनित्य मने धर्मनित्य इत्यादि धर्मकथा जाणवो । तएणसेखदएकच्चायणसगोत्ते । तिवारे ते खदक कात्यायन गोत्रीयथो । समणस्सभगवओमहावीरस्स । श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामीने । अतिएधम्मसोच्चानिसम्म । समीपे धर्मसांभळी मनमा हृदयधारीने । हठतुठजावहियए उठेइ २ त्ता । हृष्ट संतोषपाम्यो यावत् हर्षो हीयो विकस्यो उठेउठीने । समणभगवमहावीर तिखुत्तोआयाहिणपयाहिण करेइकरेइत्ता । श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी प्रते त्रीणवार जोमणा पासाथी प्रदक्षिणाकरे करीने । एववयासी । इमकहे । सद्दहामिणभंतेनिग्गंथपावयण । सद्दहु हेभगवन् ! जे केवलज्ञानीभाख्या द्रयाद्यनिग्रंथना प्रवचनमार्ग । पत्तियामिणभंतेनिग्गंथपावयण । प्रीतिप्रत अथवा प्रत्ययप्रते ए स त्यछे हेभगवन् ! निग्रंथना प्रवचनमार्ग । रोएमिणभंतेनिग्गंथपावयण । वांछू हेभगवन् ! निर्ग्रंथना प्रवचन रुचेछे इत्यर्थ । अब्भुठेमिणभंतेनिग्गंथपावयण

एतदङ्गीकरीमीत्यथ यथ मद्भुगाग्रुबोध दखपति, एव मेत बैर्यन्य प्रयथम सामान्यत , यथ यथै सद्भूप वदपे तियोम ॥ तहमेयति ॥ तथै
वैतद्विपेयतः ॥ यवितहमेयंति ॥ सत्य मेतदिस्यथ ॥ यसदङ्गमेयसि ॥ सन्देहवर्जित मेतत् ॥ इच्छियमेयति ॥ इष्टमेतत् ॥ पळिच्छियमेयसि ॥ प्र
तीप्सित मासमिटं ॥ इच्छियपळिच्छियति ॥ युगपदिच्छा प्रतीप्सासिपयस्वात् ॥ सिद्धुति ॥ इतिकत्वेति यथवा एव मय भते । इत्यादीनि प

पन्नसे ! निग्गथंपावयण , रोएमिणन्नंते ! निग्गथपावयण , पत्तियामिणन्नते ! निग्गथ पावयण , अब्भुठे
मिण न्नते ! निग्गंथ पावयण , एवमेयन्नते ! तहमेयन्नते ! अवितहमेयन्नते ! असंदिद्धमेयन्नते ! इच्छिय
मेयन्नते ! पळिच्छियमेयन्नते ! इच्छियपळिच्छियमेयन्नते ! सेजहेय तुज्झे वदहासिकद्दु , समणन्नगव महावी
र वदइ णमसइ , वदित्ता णमसइत्ता उत्तरपुरच्छिमदिसीभाय अवक्कमइ अवक्कमइत्ता तिदळंच कुळियच

च । उपमवत मवाहे हेभमवन् ! निर्मंथ मवचमतें एपमोचार कर इच्छ । एवमेवमते । इमच एड हेभगवन् ! जिम तुम्हेकधु । तहमेयभते । तिमहो
य हेभमवन् । अवितहमेवभते । सत्यएह हेभमवन् । इच्छ । असंदिग्धमेवभते । संदेहरहित हेभमवन् । एह । इच्छियमेवमंते । इष्ट एह हेभमवन् एह इ
च्छित । पडिच्छियमेवभते । मांमवाने इह प्रतीच्छित हेभमवन् ! । इच्छियपडिच्छियमेयंभते । समकाले इच्छा अने प्रतीच्छा विषयवो हेभमवम् ! सेजहे
यतुम्भेवदहसिकद्दु । तेथवा तुम्हेवदो तिमज इमकरीने । समणम भगमहावीरवंदइनमंसइ २ता । श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामी प्रते वांदे नमस्का
रकरे वांदीने नमस्कारकरीने । उत्तरपुरच्छिमदिसीभागंअवक्कमइ २ त्ता । उत्तर पूर्व दिशिविभागे एतले ईशान कुणेजाय जाईने । तिदंडच कुंडियंच ।
चोनदंडकमंडळ । भायणाचरत्ताउच । यावत् गेरु रत्ता वस्त्रते । एगतेएडेइतिएडेइत्ता । एकांति मूंके मूकीने । जेणेवसमणेभगवंमहावीरे । जिहां श्रमण भ
मवत श्रीमहावीरस्वामी । तेणेवउवागच्छइ २ त्ता । तिहांआवे तिहांआवीने । समणभगवमहावीर । श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीप्रतें । तिक्खुत्तो
आयाहिणपयाहिणकरेइ २ त्ता । त्रणवार श्रीभगवा पासाथी प्रदक्षिणाकरे करीने । जावणमंसित्ता । यावत्प्रभुनें वांदे नमस्कारकरे वांदीने नमस्कार

हानि यथायोग मकाया स्यत्यादरमदयमायो चानि ॥ पातितेवति ॥ पजिविधिमा ववसितः ॥ सोएत्ति ॥ जीवलोक ॥ पलित्तेवसि ॥ मकर्पेव यसितः एवविध यासौ कालजदेनापि सा दत्त वध्यते आदीसमवीसहसि ॥ जराएमरणेणयत्ति ॥ इह यक्षिमेति वाक्यशेषो द्रष्टव्यः ॥ झियायमा पसित्ति ॥ ध्मायमाने ध्मायतिवा। दह्यमान इत्यर्थः ॥ अप्पसारेत्ति ॥ अल्पंच तस्सार चेत्यल्पसार ॥ आयाएत्ति ॥ आत्मना एकान्त विजन यन्त भूमार्ग ॥ पच्छापुरायत्ति ॥ विवक्षितकालस्य पश्चा त्पूर्वेच सवदेवत्यर्थः ॥ येथ्वेति ॥ स्वैर्यधर्मेयोगात् स्थैर्यो विशासिको विश्वासप्रयोजनत्वात्

जायघाउरश्राउय एगतेएळेइ एळेइत्ता जेणेव समणेजगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता समण जगव महावीर तिखुत्तो श्रादाहिणपयाहिण करेइ करेइत्ता जाय नमसइत्ता एववयासी , श्रालित्तेणजते ! लोए , जराए मरणेणय , सेजहानामए केइ गाहावई श्रागारसि झियायमाणसि जेसे तत्थ जळेजवइ श्र प्पजारे मासगुरुए तगहाय श्रायाए एगतमत श्रवक्कमइ , एसमेनित्थारिएसमाणे पच्छापुराए हियाए सुहा

करोमे। एवंवयासो। इमकहे। पालित्तयमतेलाए। समयपण देभमग ज्वलितमथा लाव एवले योजकाल। पलित्तेयमतेलाए। मकर्प ज्वालोव लो व देभगवन्। पालित्तपलित्तेभमतेलाए। पाद्येन मदोप पवचा पालिभ मधित देभगवन्! लाव। जराएमरणेणय। जे करो जरा तथा मरणेनरोगे। सेजहानामएकेइगाहावइ। ते यथा इहांतनाम इति कोमलामंत्रणे, कोपनक गृहपतिसेठ गरमोधणो। अगारसिझियायमाणसि। गर पलिथरो सामावला गर अथता यथा इत्त। जनेतत्यभंजवइ। जिस ते तिस्रो भांडा पगरणड़ये। अप्पसारे। यादा तदोपसार प्रधान। मासगुरुएतयवाय। मास थता एकमो गरमोवसु ले मते पडोने। आताए एगतमतयवक्कमर। आत्माये पोते एकांत मनुष्यरहित भूभागमेनिये जाके। एसमनित्थारियसमार्थे। एमे सुभने बमुकाडोबें ले। पच्छापुराए हियाए सुहाए। पछे पहिला हितनेकाजे सुखनेकाजे। खमाए विमोयसाए आसमामियत्ताए भविस्सर। समानेकाजे निमोयस इरिद्रना मास पहुमामिपरी दुसें। एवामेवदेवाणुप्पिया। इसे इष्टांते देवेवाणुमिय। मध्यविषयाए। सुभने पचि भामापोते।

सम्मत तत्कृतकार्याणां सम्मतत्वात् अनुमतो अनुज्ञो अनुज्ञ्यो वा स्यान्य सकाशात् अनुरितिवा मतोऽनुमतः, अनुमतो नु विप्रियकरणस्य प
यादपि मतो ऽनुमत ॥ भण्डकरंडगसमाणेत्ति ॥ आभरणकरण्डक सामरणभाजन तत्समान आदेयत्वादिति माणसीय मित्यादो माशब्दो निषेधार्थ
ममिति वाक्यालङ्कारार्थ, एतत् स्पृशत्विति यथायोग योजनीयं अथवा माणंम मास्मान मितिव्याख्येय ॥ वालत्ति ॥ व्याला श्वापदभुजगाः ॥
माणवाइयपित्तियसंनियसंनिवाइयमित्ति ॥ इह प्रथमाबहुवचनलोपो द्रष्टव्यः ॥ रोगायंकत्ति ॥ रोगा कालसहा व्याधय आतंका सद्य एव सद्य उप
घातिनः ॥ परीसहोवसग्गत्ति ॥ अस्य मा वा सित्यनेन सम्बन्धः स्पृशतु स्पृशन्तु भवत्वित्यर्थः तिकट्टु इत्यभिसन्धाय च पालित इतिशेष ' स किमि

ए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ, एवामेव देवाणुप्पिया मज्झवि आया एगे भंडे इट्ठे
कंते पिए मणुन्ने मणामे थेज्जे विस्सासिए सम्मए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे माणसीय माणउण्हं
माणखुहा माणपिवासा माणचोरा माणवाला माणदंसा माणमसया माणवाइयपित्तियसंनियसंनिवाइय
विविहारोगायंकापरीसहोवसग्गाफुसंतुत्तिकट्टु, एसनित्थारिएसमाणे परलोयस्स हियाए सुहाए खमाए नो

एगेभंडे इट्ठे कंते पिए मणुन्ने मणामेथिज्जेविस्सासिएसम्मएबहुमएअणुमए। एकमात्र इष्ट कान्त प्रीत मनोज्ञ मनोगमता धैर्यस्थैर्ययो धैर्यस्थो विश्वस्तो
विश्वासो पात्रप्रहत मानना सम्मतपक्षातो बहुमत अनुमत । भंडकरंडगसमाणे । भंडकरंडक आभरण भाजन ते समान आदेयपणाथी । माणसीय मा
णउण्ह माणखुहा । समस्ते मामन्द निषेधार्थे च वाक्यालंकारे फुसन्तु ए सबधमत शीतमत उष्णमत क्षुधामत । माणपिवासा माणचोरा । माणवा
ला माणदसा माणमसया । पिपासा तृषा फरसामो चोरफरसोमो व्याल श्वापद भुजगम फरसोमो दंसा फरसोमो मसा फरसामो । माणवाइय पि
त्तिय सिंभिय संनिवाइय । वातिक फरसामो पैत्तिक श्लेष्म संनिपातिक । विविहारोगायंकापरीसहोवसग्गाफुसन्तुत्तिकट्टु । विविधरोग कालव्याधि
आतंकपणि तेशीघ्र घातपत्नो आतंके परीसह धर्मे उपसर्ग एहने माण इत्यादिक सर्वमांहे कर्मो इमकरीने पाला इतिशेष । एसनित्थारिएसमाणे।

त्वात् ॥ एसमेइत्यादि ॥ तंइच्छामिति ॥ ॥ ततो तिष्ठामि ॥ सयमेवत्ति ॥ स्वयमेव प्रव्राजितमित्यर्थ , प्रव्राजितं रजोहरणादिवेषदानेन आत्मान मितिगम्यते प्रायका स्वमत्यय लोच प्रव्राजनमित्यर्थ मुण्डितं शिरोलुञ्चनेन ॥ सेहावियत्ति ॥ सेधितं प्रत्युपेक्षणादिक्रियाकलापग्राहणत शिक्षितं सूत्रार्थग्राहणत तथा आचार श्रुतज्ञानादिविषय मनुष्ठान काला ध्ययनादि गोचरो भिक्षाटनं, एतयोः समाहारद्वन्द्व, तत तदाख्या त मिच्छामीति गीम तथा विनयः प्रतीतो वैनयिक तत्फल, कर्मक्षयादिचरणं व्रतादिकरणं पिण्डविशुद्ध्यादि, यात्रा संयमयात्रा, मात्रा तदर्थमेव आहारमात्रा ततो विनयादीनां द्वन्द्व ततश्च विनयादीनां वृत्ति वर्तनं यत्र सौ विनयवैनयिकचरणकरणयात्रामात्रावृत्तिको, अत स च

सेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ त इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! सयमेव पव्वाविय सयमेव मुंडाविय सयमेव सेहाविय सयमेव सिक्खाविय सयमेव आयारगोयर विणयवेणयिय चरणकरणजायामायावत्तिय धम्म माइक्खियं , तएणं समणेभगवमहावीरे खंदय कच्चायणसगोत्तं सयमेव पव्वावेइ जाव धम्ममाइक्खइ , एवं

एव सुभमे निस्तारणाय्या एमादरा चारा पत्तेव पत्तेवेसु मिलाच्या भवा । परलायस्थियाए खमाए निस्सेसाए अणुगामियत्ताए भविस्सइ । परलोक ने हितमनाय अमानेनाय मुक्तिरु अनुगामिकपने भूय। तत इच्छामियसेवाणुप्पियासयमेवपव्वाविय। तें कारण थांक कुं स्वामीआरे, हदेवानुप्रिय! पा ते भगवतकरजाहरणादि वेषदानेकरते दीक्षाभाव। सयमेवमुंडाविय। भगवते पाते शिरालुचनजारा। सयमेवसेहाविय। पातेज आचारक्रियाकलापग्रह णो। सयमेवसिक्खाविय। पातेज शिक्षापरी सूत्रार्थग्रहणी सयमेवआयारगोयरविणय वेणइय चरण करण जायामायावत्तियधम्ममाइक्खिय। पातेज आचार श्रुतज्ञानादिविषय अनुष्ठान कालाध्ययनादि गोचरी भिक्षाचिरत, विनय करवा वेहना फल कर्मक्षयहेतु चरणव्रतादिक करण पिण्डविशुद्ध्यादिक संयमयात्रा आहारनीमर्यादा रतिहा निर्वाहतें तेधमनें तमेयशो दसाइ थांकु। तएणसमणेभगवमहावीरे। तिवारे श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी। खंदयकच्चायणसगोत्तं। स्कंदकप्रतें कात्यायनगोत्रीयप्रतें। सयमेवपव्वावेइ। पातेदीक्षादे। जावधम्ममाइक्खइ। यावत् सर्व जिनधम स्वरूप कहे। एवदेवा

समारयात मजिहिस मिम्मामी तियोगः ॥ एवदवाणुप्पियागतम्प्रति ॥ युगमात्रभूम्यसम्पृहितेत्यर्थः ॥ एवंचिठियम्प्रति ॥ निष्क्रमप्रयेशादि यस्मिते स्थाने संयमात्मप्रवचनबाधापरिहारयो तत्स्थाने न स्थातव्य ॥ एव ॥ निसीइयम्प्रति ॥ निपत्तव्य मुपवेष्टव्य सदंशकभूमिप्रमार्जनादिन्या यनत्यर्थः ॥ एवतयट्टियम्प्रति ॥ शयितव्य सामायिकोच्चारणादिपूर्वक ॥ एवभुंजियम्प्रति ॥ धूमाङ्गारादिदोषवर्जनतः ॥ एवभासियम्प्रति ॥ मधुरादि यिशपया

देवाणुप्पिया ! चिठ्ठियव्व गतव्व । एव निसीइयव्व , एव तुयट्टियव्व , एव भुंजियव्व , एव भासियव्व , एव उठाय उठाय पाणेहि भूएहि जीवेहि सत्तेहि सजमेणसजमियव्व , अस्सिचण अठे णोकिंचिपमाइयव्व , तएण सेखदए कच्चायणसगोत्ते समणस्सभगवओ महावीरस्स इम एयारूव धम्मिय उवएस सम्म सपडिवज्ज इ तमाणाए तह गच्छइ , तह चिठ्ठइ , तह निसीयइ , तह तुयट्टइ , तहा भुंजइ , तह भासइ , तह उठा

णुप्पियागतव्व । इम देवेनाणुप्रिय चलवु । जाहवा युग प्रमाण भूमिजोता । एवंचिठ्ठियव्व । इम निसम प्रवेश वर्जितस्थानके भूमि पडिलेहने ऊभारहिवा । एव निसीइयव्वएवतुयट्टियव्व । इम भूमि पडिलेहीने बेसिवा, इम सामायिकादि उच्चारण पूर्वक सूइया । एवभंजियव्व एवभासियव्व । इम सागारादि दोष वर्जित जीमवा, सावर्जित बोलिवा । एवंउट्ठायउट्ठाय । इम उठीने २ प्रमाद निद्राने तजीनेकरी जागीने २ । पाणेहिं भूएहिं जीवेहिं सत्तेहिं । प्राणीकरीने भूतेकरीने जीवेकरीने सत्वेकरीने । सजमेणसजमियव्व । ते प्राणादिकनेविषे तेहनो रक्षाकरे तिणेकरीने यतनकरवो । अस्सिचणमट्ठे णोकिंचिपमाइयव्व । एहनेविषे वपुन ए प्राणारक्षाकारे अर्थनेविषे नही कांई पणि प्रमादकरवा एतले समयमात्र प्रमादकरवोनही । तएणखंदएकच्चायणसगोत्ते । तिवारे खंद क कात्यायनगोत्र । समणस्सभगवओमहावीरस्स । श्रमणभगवंत श्रीमहावीरस्वामीना । इमएयारूव । एपूर्वकह्यो तेरूप । धम्मियउवएससम्मसपडि वज्जइ । धर्मवंत उपदेशप्रते भलीपरे पडिवजे अंगीकारकरे । तमाणाएतहगच्छइ । धर्मतरेह जेहवी ते आज्ञा आदेशेकरीने तिम इर्यासमिते जाय तहचिठ्ठइ तहनिसीयइ तहतुयट्टइ तहभुंजइ तहभासइ । तिमज ऊभारहे तिमज निषद्याये बेसे तिमज सूवे तिमज दोषरहित आहारकरवा तिम

पयमतयेति यव सत्यायो त्याय प्रमादमिहाप्ययोगेन विशुध्य २ प्राणादिषु विषय यः संयमो रक्षा तेन संयतव्यं यतितव्य ॥ तमायाएत्ति ॥ तदनन्तर माप्या पादेसन ॥ इरियासमियत्ति ॥ ईर्याया गमने समित सम्यक् प्रवृत्तः ईर्यासमितः सम्यक्प्रवृत्तस्वरूपवि समितत्व ॥ भायाय एषणासमियत्ति ॥ प्रादामन ग्रहणेन सह भण्डमात्राया उपकरणपरिच्छदस्य या निक्षेपणा न्यास तस्यां समितो य स तथा ॥ उ च्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपारिट्ठावणियासमियत्ति ॥ मणसमियत्ति ॥ सत्कृतमनःप्रवृत्तिकः ॥ मणगुत्तेति ॥ मनोनिरो धारत्यादि ॥ इदय ॥ वयसमि ॥ कायसमि ॥ करठमुखसम्प्रा विहाय नासिकाश्लेष्मा ॥ गुत्तिदियत्ति ॥ गुत्तबम्भयारीत्ति ॥ गुप्त ब्रह्म गुप्तियुक्त ब्रह्म चरति यः स त धयान् ॥ गुप्तत्ति ॥ मनोमुखत्यादीना नियमन एतदव विशेषेणाह ॥

एइ उठाएइ तहपाणेहिं भूएहिं जीवेहिं सत्तेहिं संजमेण संजमेइ, अस्सिंचणं अट्ठे णोपमायइ। तएणसेखं दए कच्चायणसगोत्ते अणगारे जाए इरियासमिए भासासमिए एसणासमिए आयाणभंडमत्तनिक्खेवणास मिए उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपारिट्ठावणियासमिए मणसमिए वयसमिए कायसमिए मणगुत्ते वयगुत्ते

भाषा समिते थाके। तदनन्तर १। पाणेहिं भूएहिं जीवेहिं सत्तेहिं। तिमज विद्या प्रमादरहित जठीने २ प्राणे करीने भूतेकरीने जीवेकरीने सत्वेकरी ने। संजमेइसंजमइ। संयमेकरी यत्न करे तेहनी रक्षाकरे। अस्सिंचणमट्ठे णोपमायइ। एहने, अपुन ब मास्यासकारे थमेविषे प्रमाद नकरे। तएणसे पछी। तिवारे तेखंदक। कच्चायणसगोत्ते। कात्यायनगोत्रीयमतें। अणगारेजाते। अणगारपणो साधुथयो। इरियासमिए। ईर्या मार्गनेविषे भल प्रकारे प्रवर्ते ते ईर्यासमित। भासासमिए। भाषा बोलवु तेविषारी थाके। एसणासमिए। अथवा ४२ दोषरहित आहार ग्रहे। आयाणभंडमत्तनिक्खे वणासमिए। ग्रहवेकरी भांडमात्र उपकरण परिच्छेदने मेलवे करी उपयोगसहित। उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाणपारिट्ठावणियासमिए। वडोनीति ल घुनीत कफना मुखनाश्लेष्म नाकनामल ते परठवता यत्नाकरे उपयोगसहित प्रवर्त्ते। मणसमिए वयसमिए कायसमिए। समनोमयत उपयोगसहित, व चन नि पाप प्रवर्ते, कायेकरी निःपापप्रवर्त्ते। मणगुत्ते वयगुत्ते कायगुत्ते। मनगापावे निरोधकरे, वचनभानिरोधकरे, कायानानिरोधकरे। गुप्ते गुप्ति

या ॥ चाइत्ति ॥ सद्भूत्यागवान् ॥ लज्जुत्ति ॥ संयमवान् रज्जुरिव वा रज्जु रवक्रव्यवहारः ॥ धन्नेति ॥ धन्यो धर्मधनलब्धेत्यर्थं ॥ खंतिक्खमेत्ति ॥ क्षान्त्या क्षमत न त्वसमर्थतया यो सौ क्षान्तिक्षम जितेन्द्रिय इन्द्रियविकाराभावात् यच्च प्राग् गुप्तेन्द्रियत्वमुक्तं तदिन्द्रियविकारगोपनमात्रेणा पि स्यादिति विशेषः ॥ सोहिएत्ति ॥ शोभितः शोभावान् शोधितोवा निराकृतातिचारत्वात् सौहृद मैत्री सर्वप्राणिषु तद्योगा त्सौहृदोवा ॥ अणियाणेत्ति ॥ प्रार्थनारहितः ॥ अप्पुस्सुएत्ति ॥ अल्पौत्सुक्यस्त्वराहितः ॥ अबहिल्लेसेत्ति ॥ अविद्यमाना बहि संयमा द्बहिस्ता लेश्या मनो वृत्ति यस्य सा संयमनिरतः ॥ सुसामण्णरएत्ति ॥ शोभने श्रमणत्वे रतः अतिशयेनवा, श्रामण्यरत ॥ दंतत्ति ॥ दान्त क्रोधादिदमनात्, दान्तो वा रागद्वेषयो रन्तायनवर्त्तत्वात् ॥ इणमेवत्ति ॥ इदमेव प्रत्यक्षं ॥ पुरओकाउंति ॥ अग्रे विधाय मार्गानभिज्ञो मार्गज्ञमिव पुरस्कृत्य वा ॥ यथा

कायगुत्ते गुत्तेगुत्तिंदिए गुत्तबंभचारी ञाई लज्जू धन्ने खंतिक्खमे जिइंदिए सोहिए अणियाणे अप्पुस्सुए अब हिल्लेसे सुसमणरए दंते इणमेवनिग्गंथ पावयण पुरओ काउ विहरइ, तएणसमणेभगवमहावीरे कयंगलाओ णयराओ छत्तपलासयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमइत्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ, तएण

दिए गुप्तब्रह्मचारी वाड सहु । मन वाडिरी बीपरे, इन्द्रियगोपवे गुप्त, ब्रह्मचारी ब्रह्मचर्य मत पादरे सहम्याणकरे, संयमसम्यासहित । धर्मेष्वतिधर्मे जि तेंद्रिय साधिये भविमाचे धन्यसुए । धर्मसमयहित क्षमावेकरी क्षमे पणि असमर्थपणेकरी इन्द्रोविकाररहित जितेंद्रिय अतीचार सोध्या अथवा सौह द मैत्रीभाव सर्वप्राणीमेविये नियाम प्राप्नारहित । अल्पुत्सुकपणारहित । अबहिल्लेसे सुसामणरए । संयमते तेलेश्या बाहिरिप्रवर्त्तननहीं मनोवृत्ति जेहने भला श्रमणपणे तेहनविषे रत्त छे । इणोदमेवनिग्गथपावयणपुरओकाउविहरइ । दांत क्रोधादिकनादमवाथी एप्रत्यक्ष निर्ग्रंथ प्रवचन आगेकरीने मा र्गना अजाण मार्गना जाण मनुष्य तेहनेआगे करीने विचरे तिम चेतन पणि विचरे, । तएणसमणेभगवंमहावीरे । तिवारे श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वा मी । कयंगलाणयरीओ । कयंगलानामे नगरीथी । छत्तपलासयाओचेइयाओ । छत्रपलासनामा चैत्यथकी । पडिनिक्खमइ २ त्ता । नीकले नीकलीने ।

मीरत्पयिहर त्यासरति ॥ एकारस अगाइ अहिज्जइति, इह कथि दाय' न त्यमेन स्कन्दकचरिता त्मागेव एकादशाङ्गनिष्पत्ति रवसीयते, पञ्च माङ्गातनूतच स्कन्दकचरित मिद मुपसभ्यते इति कथं न विरोध ? उच्यते श्रीमन्महावीरतीर्थे किल नव वाचना सभव सर्ववाचनासु स्कन्दकच रिता रूपकाले ये स्कन्दकचरिताभिधेया यर्था सो परितानारकारेष प्रज्ञाप्यन्त, स्कन्दकचरितोत्पत्तीच सुधर्मस्वामिना जम्बूनामान स्वशिष्य म ङ्गीकृत्या चिरन्तयावनाया मस्या स्कन्दकचरितमेवा चित्य तदर्थमरूपवाकृतेति न विरोधः ॥ अथवा, सातिशयत्वात् गणधराणां अनागतकालभावि चरितमिबन्धन मदुष्टमिति, वाविच्छिन्नसखानापेक्षया अतीतकालनिर्देशोपि न दुष्यति ॥ मासियंति ॥ मासपरिमाणा ॥ भिक्खुपडिमंति ॥ मिभूषित म

सेखदए श्रणगारे समणस्स भगवञ भहावीरस्स तहारूयाण थेराण श्रंतिए सामाइयमाइयाइ एक्कारसश्रंगाइ श्रहिज्जइ श्रहिज्जइत्ता जेणेव समणेभगवमहावीरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता समण भगव महावीर वदइ नमसइ नमसइत्ता एव वयासी, इच्छामिण भते ! तुज्झेहिं श्रभ्भणुण्णाए समाणे मासियभिक्खुपडिम

वहिवाचवनविहारविहरद । वाहिरि देशमेविषे विहारकरी विचरे, विहारकरे रहाव । तणकालसमयमारे । तिवारे तदंदक अणगारसाधु । समणस भगवन्तमहावीरस्स । श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामीना । तथारूपवन्त थेराव अतिए । तथा अनुक्रियाना करणहार तथा रूपने स्थविरसाधु तेहने समीपे पासे । सामाइयमाइयाइ एक्कारसश्रमाइ अहिज्जइ २ त्ता । सामायिक आदिदेई इग्यारमग अने आचारांगादिक इग्यार अंग तेहप्रते भ णे भणीने । जेणेवसमणेभगवमहावीरे । जिहां श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी । तेणेवउवागच्छइ २ त्ता । तिहां आवे तिहां आवीने । समणभगवमहा वीर वदइ नमसइ २ त्ता । श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी प्रते वांदि नमस्कारकरे वांदीने नमस्कार करीने । एववयासी । इमकहे । इच्छामिणभंते । वांछुं छ आश्चर्यकारि, हेभगवन् । तुम्भेहिंअब्भणुण्णाएसमाणे । तुम्हे आज्ञादीधी थका थका तम्हारी आज्ञा पामया । मासियभिक्खुपडिम मासनी भि क्षु साधुनी प्रतिमा चित्त अभिग्रहविशेष ते एकमास लगेंज गच्छथी नीकली एकमासनी महाप्रतिमा आदरे, एक दत्तीअन्न अने एकदत्तपाणी ग्रे

मिग्रहविशेषं एतत्स्वरूपच–मध्याविविक्तभिता पडिवन्नइमासियंमहापडिम । दसेगजोयस्सा पावस्सविएमआमासमित्यादि ॥ १ ॥ म न्ययमे कारणाद्धारी पठित प्रतिमाय विशिष्टश्रुतवानय करोति यदाह–गच्छेपियबिमाढे आयुक्तावसजवेषसपुक्ता । नवमस्ससतइयवत्थू होइजहन्नोसु याहिममो ॥ १ ॥ इतिकथं म विरोध? उच्यते पुरुषान्तरविषयो यंमुतनियम सत्यतु सर्वविदुपदेशेन प्रवृत्तस्वा न्नदोपइति ॥ यहासुत्तंति ॥ सा मान्यसूत्रानतिक्रमेण ॥ यहाकप्पंति ॥ प्रतिमाकल्पानतिक्रमेण तत्कल्पवस्त्वनतिक्रमेणवा ॥ यहामग्गंति ॥ ज्ञानादिमोक्षमार्गानतिक्रमेण क्षायोप शमिकभावानतिक्रमेणवा ॥ यहातच्चंति ॥ यथातत्वं तत्वानतिक्रमेण मासिकीतिशुमतिमेति, यथार्थानतिसत्कुन्नेनेत्यर्थं ॥ यहासम्मंति ॥ यथासा

उवसपज्जित्ताण विहरित्तए , श्रहासुहं देवाणुप्पिया ! मापडिबंध । तएण खदए श्रणगारे समणेण जगव या महावीरेण श्रभणुन्नाए समाणे हठतुठजाव नमंसित्ता मासिय जिक्खुपडिम उवसपज्जित्ताण विहरइ , तइण से खदए श्रणगारे मासिय जिक्खुपडिम श्रहासुत्त श्रहाकप्प श्रहामग्ग श्रहातच्च श्रहासम सम्म का

हम यावत् एकमासवये हम विस्तार मूलान्तरथी जाणवा, इहां कारणक पूछक पूछता हवार संस भाख्याछे, यने प्रतिमाता विशिष्ट श्रुतवत धार रे तेमाटे इहां विराध होसेछे ? तेहना उत्तर एतुत नियम पुरुषान्तर विशेषछे, तेथदके सर्वज्ञने उपदेशेकरी प्रतिमावन्तो, तिषे दोषनथी, वीतराग तेहनो यथारूप जाणे, तेएकमासिक साधुनो प्रतिमा धारदीने विचरू हवो खंदक पूछावको भगवंतकहेछे—यहासुहदेवाणुप्पिया मापडिबंधं । जिम सुखहु वे देवानुप्रिय पणि विलब मकरसो । तएणसेखदएयणगारे । तिवारे तेखदकसाधु श्रमणे भगवन्तमहावीरेण । श्रमण भगवत श्रीमहावीरदेवे । यभण ण्णाएसमाणे । याज्ञादीधाथको । हठतुठजावनमंसित्तामासियंभिक्खुपडिमंउवसपज्जित्ताणंविहरइ । हर्षपाम्यो यावत् नमस्कारकरीने मास प्रमाण साधुनो प्रतिमा यभिग्रहविशेष तेधारदीने विचरे प्रतिमावंत तपकरे इत्यर्थ । तएणसेखदएयणगारे । तिवारे तेखदक साधु । मासियंभिक्खुपडिमं । मास प्रमा ण साधुनो प्रतिमा यभिग्रहविशेष । यहासुत्तं यहाकप्पं यहामग्गं यहातच्चं यहासम्मं । जिम सूत्रमांहि कह्यो तिम यतिक्रमनथी प्रतिमा याचार ण

सम्यगुपयोगेन प्रतिजागर

र्य समजायामतिक्रमेण ॥ कायेनेति ॥ न मनोरथमात्रेण ॥ फासेइत्ति ॥ उचितकाले विधिना ग्रहणात् ॥ पालेइत्ति ॥ पूर्वेपि तदवधौ स्तो

यात् ॥ सोहेइत्ति ॥ शोभयति पारणकदिने गुर्वादिदत्तशेषभोजनकरणात् शोधयसिवा तिचारवर्जनात् ॥ तीरइत्ति ॥ मितिपेव स्ती

ककालावस्थानात् ॥ पूरइत्ति ॥ तत्कृत्यपरिमाणपूरणात् ॥ किट्टइत्ति ॥ कीर्तयति । पारणकदिने इदं चेदं चैतस्या कृत्यं तच्च समाकृत मित्येव

समात् ॥ अणुपालइत्ति ॥ तत्समाप्तौ तदनुमोदनात् ॥ विमुक्त जयतीत्याह आज्ञया आराधयतीति एवमेताः सप्तसप्तमाख्याता सप्ताष्टमी प्रथमा

एण फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ पूरेइ किट्टेइ अणुपालेइ आणाए आराहेइ, सम्मं काएण फासित्ता जाव आराहेत्ता, जेणेव समणेभगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं जाव नमंसित्ता एवं वयासी, इच्छामिणं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे दोमासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया ! मापडिबंध । तचेव एवं दोमासियं तिमासियं चाउम्मासियं पंचछसत्त, पढमसत्तरा

तिक्रमणे मासादिमासमाप्ति तिसंततिकरी तथा यथायम भावनो समभावकरी प्रतिक्रमेनकरी । सम्यक्‌ एण फासेइ पालेइ शोभइ तीरेइ पू

रेइ किट्टेइ अणुपालेइ । असेरमारे वासावेकरी करसे विधिपूर्वक बारंबार उपयोगसें, पारणादिने गुरुनी समाचारी सोभे, तथा अतीचार टालता

हें तपकाले पूरेकरे किर्तना करवाना पचवे, तेहना प्रमाणपूराकरे पारणाने दिने गच्छमेंकई कारापच्चक्खाण पूराकर्या अनुमोदनापूर्वक पाले । आज्ञा

एआराहए सम्यकायेनफासिता आराहेत्ता । आज्ञाआराधे अमोपरे वासावेकरी फरसीने यावत् आराधीने । जेणेसमणेभगवंमहावीरे । जिहां

श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी । तेणेवउवागच्छइ २ त्ता । तिहां आवे आवीने । समणंभगवंमहावीरं । श्रमण भगवंत श्रीमहावीरप्रते । वंदइनमंसइ

त्ता । वांदे नमस्कारकरे यावत् वांदी नमस्कारकरी । एवंवयासी । इमकहे । इच्छामिणभंते तुब्भेहिंअब्भणुण्णाएसमाणे । वांछु पूज्यआपआदेशे, दोमास

यं । तुमारी आज्ञाआपवाथका । दोमासियंभिक्खुपडिमंउवसंपज्जित्ताणंविहरित्तए । द्विमासनी साधुनी प्रतिमा आदरीने विचरु एनामे द्विमासिककरी

सत्तराग्निदिवा सत्ताहोरात्रमाना एव नवमी दसमीचेति एता स्तिस्रोपि चतुर्थभक्तेना पानकेनाति उत्तानकादिस्थानकृतस्तु विशेष ॥ राइंदियति रात्रिंदिवा एकादशी अहोरात्रपरिमाणा इयच षष्ठभक्तेन ॥ एगराइयति ॥ एकरात्रिकी इयचाष्टमेन भवतीति ॥ गुणरयणसंवच्छरति ॥ गुणाना निर्जराविशेषाणां रचनं करण संवत्सरेण सत्रिभागवर्षेण यस्मिंस्तपसि तद्गुणरचनसंवत्सरं गुणा एव वा रत्नानि यत्र स तथा गुणरत्न संवत्सरो

इंदिय , दोच्च सत्तराइंदिय , तच्च सत्तराइंदिय , अहाराइंदिय , एगराइंदिय। तएणसे खंदए अणगारे एग राइ भिक्खुपडिम अहासुत्त जाव आराहेत्ता जेणेव समणेभगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता समणंभगवं महावीर जाव नमंसित्ता एवंवयासी , इच्छामिण भंते ! तुब्भेहि अब्भणुण्णाए समाणे गुणरयण संवच्छर तवोकम्म उवसंपज्जित्ताण विहरित्तए , अहासुहं देवाणुप्पिया ! मापडिबंध। तएण से खंदए अण

स परतपजाम माव एकमासके इतिप्रज्ञ। यथासुखदेवानुप्रिया। जिम सुख तिम देवानुप्रिय। मायविलंबतपेव। पछि विलम्ब मकरस्था पछेतिमस तेवारे। एवतिमासिय चाउम्मासिय पंचमासिय। इम त्रिमासिक नामतप एकमासनाज ३। चउमासिकनाम चौथो प्रतिमा ४। पंचमासिकनाम पचमी ५। छम्मासिय सत्तमासिय। छमासिकछट्ठी ६। सप्तमासिकनाम सातमो ७। पढमसत्तराइंदियं। चउथ चउविहार ४ दत १ पारणाये आठमो ८। दोच्चसत्त राइंदिय। नवमो इमज सात अहोरात्रिमो प्रतिमा नावमी ९। तच्चसत्तराइंदिय। दशमी सात अहोरात्रिमो प्रतिमा १ । अहोराइंदिय। छट्ठतप च हारात्रिकारुसम अग्यारमी ११। एगराइंदिय। अट्ठमतप एकरात्रि काउसग्ग बारमी प्रतिमा १२। तएणसेखंदअणगारे। तिवारेतेखंदकसाधु।ए करात्रिभिक्खुपडिम। एकरात्रि काउसग्गनी साधुनीप्रतिमा। अहासुत्त। जिमसूत्रमाहिकही तिमें प्रकारे। जाव आराहेत्ता। यावत् आराधिआराधीने। जेणेवसमणेभगवमहावीरे। जिहां श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी। तेणेवउवागच्छइ २ त्ता। तिहां आवे तिहांआवीने। समणंभगवंमहावीर। श्रम ण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीप्रते। जावनमंसित्ता। यावत् नमस्कारकरे करीने। एवंवयासी। इमकहे। इच्छामिणंभंतेतुब्भेहिं अब्भणुण्णाएसमाणे गुणर

यत्र तत् गुणरत्नसंवत्सरं तप इदम् त्रयोदशमासाः सप्तदशाधिकानि त्रिशतानि दिनानि पारणककालइति, एवंचाय—पण्णरसवीस चउवीसा चउवीसा पण्णवीसाय । चउवीसएक्कवीसा चउवीसा सत्तवीसाय ॥१॥ तीसातेत्तीसाविय चउवीसछव्वीसअट्ठवीसाय । तीसाबत्तीसाविय सोल समासेसु तवदिवसा ॥ २ ॥ पण्णरसदसट्ठ छप्पंच चउरपंचसुयतिण्णितिण्णित्ति । पंचसुदोदोयतहा सोलसमासेसुपारणगा ॥ ३ ॥ इदं च यत्र मासे चउत्थ मादितपसो यावन्ति दिनानि न पूर्यन्ते तावन्त्यग्रतनमासात् पूरणीयानि अधिकानि चाग्रेतनमासे क्षेप्याणि ॥ चउत्थचउत्थेणंति ॥ चतुर्थ भक्तं यावत् स्त्यज्यते यत्र तत् चतुर्थं, मिय ह्युपवासस्य संज्ञा एवं षष्ठादिकं उपवासद्वयादेरिति ॥ अणिक्खित्तेणंति ॥ अविश्रान्तेन ॥ दियाति ॥ दिवा दिवसतस्त्ययः ॥ ठाणुक्कुडुएत्ति ॥ स्थानं आसनं उक्कुडुकं आचारे पुतालग्नरूपं यस्यासौ स्थानोत्कुटुकः ॥ वीरासणेणंति ॥ सिंहासनोपवि

गारे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे जाव नमंसित्ता गुणरयणसंवच्छरं तवोकम्मं उवसंपज्जि त्ताणं विहरइ, तंजहा—पढमंमासं चउत्थंचउत्थेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं दियाठाणुक्कुडुए सूराभिमुहे आ

गुणरत्नसंवत्सरतपकर्मअंगीकारकरीनेविचरे । हवे त तपनो विधि कहे छे । एकसोसात्रीश दिवस लगी उपवास करीने आयंबिल करे, एटले एक मासना ३० दिवसमां अड्डा... तेरमासने सतरे दिन तपना थाय ने ७३ दिन पारणाना एम मास १६ ते गुणरत्न संवच्छर तपकर्म किया पाहरीने विचरे, एटले तपक र्‍ इतियम भगवत कहे छे—महापुरुषें आज्ञा आपी छे । जिम सुख थाय तिम करो देवानुप्रिय ! पण प्रतिबंध विलंब मकरशो । तपवसेवदय । पच्चारे । तिवारे ते खंधक साधु । समणेणंभगवयामहावीरेणं । श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी । अब्भणुण्णाएसमाणे । आज्ञादीधाथका थके । जावत् संमित्ता । जावत् नमस्कारकरीने । गुणरयणसंवच्छरतवोकम्मंउवसंपज्जित्ताणंविहरित्तए । गुणरत्नसंवच्छरनाम तपकर्म, तपक्रिया, अंगीकारकरीने वि चरे एटले गुणरत्न संवच्छरतप आदरे इत्यर्थ । तंपढममासं चउत्थचउत्थेणं अणिक्खित्तेणंतवोकम्मेणं । ते कहे छे—पहिलेमासे चउत्थ ते एक उपवासने स या, एम आठम तप ते बेउपवास, एम आगे पण जाणवा, बीजामांरहित एतराएगित तपकर्मकियाकरे । दियाठाणुक्कुडुए । दिवसनेविषे आसन कम

यायणनूमीए ष्यायावेमाणे रत्तिं वीरासणेण श्यवाउडेणय दोच्चमास छठ्ठछठेण श्यनिरिक्त्तेण दिया ठाणुकु
डुए सूराभिमुहे ष्यायावणभूमीए ष्यायावेमाणे रत्तिं वीरासणेण श्यवाउडेणय एवं तच्चमास श्यठमश्यठमेण
चउत्थंमास दसमदसमेण पचममास बारसमबारसमेण छठमास चोदसम चोदसमेण सत्तममास सोलसम सो
लसमेण श्यठममास श्यठारसम २ नवममास वीसइम २ दसममास बावीसइमबावीसइमेण एक्कारसममास
चउवीसइम २ बारसम मास छव्वीसइम छव्वीसइमेण तेरसममास श्यठावीसइम २ चोदसममासतीसइम २

हू वैसे मुसकडमागोपरे। सुराभिमुखे। सूर्य सामर्मू पमिसुष । पावावनभूमाएघावावेमाष रत्तिवीरासपेष भवाउडेषय। पातापनामी भमीवे विवां रेतपरबसे ते भूमिकानेविषे पातापनासतावका रात्रिनेविषे वीरासन ते सिहासने मनुष्यबेसीने पग बेठ धरतीराखे नोचाख सिहासन परखो काढे ते मनुष्य तिमहोव बेठोरहे त वोरासनरहे भवरहित उघाडो नग्न रहाय। दोषमासछठ्ठछठेण पविक्खित्तर्ष। वोजा मासनेविषे छठ्ठछठ्ठ एतले बेउप वासे पारणाकरे बोसामारहित भतरारहित रहाय। दिवाठाणुकडुए। दिननेविषे उकडूआसन बेसे । सूराभिमुखे। सूय सामनो मुखराखे। घाया वणभूमीएघायावेमाणे। घातापनानी भूमिकानेविषे घातापना करवावको। रत्तिवीरासणेण। रात्रीने वीरासने बेसे पूर्वकह्या तेरीतें। भवाउडेणय। परिधान वस्त्रविना नग्नभावे। एवंतच्चमास घठमघठमेणसम। एमहीजक्रियाये त्रीजेमासे तीनउपवासे पारणोकरे एतले निरन्तर घठमकरे। चउत्थमा सदसमदसमेण। चोथेमासे दशमदशम एतले चारे उपवासे पारणोकरे। पचममासबारसमबारसमेण। पांचमें महीने बारसबारसमें पारणोकरे एत ले पांच उपवास निरन्तरेकरे। छठमासचउदसमेचउदसमेण। छठेमहीने छणछए उपवासे निरन्तर पारणो करे। सत्तममासंसोलसमसोलसमेण। सात मेंमहीने सात उपवासे पारणाकरे। घठममास घठारसमघठारसमेण। घाठमेमहीने घाठघाठ उपवासे पारणोकरे एतले। नवममासवीसइमवीसइ मेण। नवममहीने वोछतिम करतां नवनव उपवासे पारणाकरे। दसममासबावीसतिमबावीसतिमेण। दशमे महीने करतां दशदश उपवासे पार

पन्नरसममास यत्तीसइमर सोलसममासचउत्थम चउत्तीसइमेण ञ्चनिरिकत्तेण तवोकम्मेण दिया ठाणुक्कुडए सूराभिमुहे ञ्चायावणभूमीए ञ्चायावेमाणे रत्तिं वीरासणेण ञ्चवाउडेण, तएणसे खदएञ्चणगारे गुणरयणसंवच्छर तवोकम्मं ञ्चहासुत्तं ञ्चहाकप्पं जाव ञ्चाराहित्ता जेणेव समणेभगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता समणंभगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं

पारणो करे। एकादसममास चउवीसतिमंचउवीसतिमेव। इग्यारमेमासे इग्यार इग्यार उपवासे पारणोकरे। बारसममासंछवीसतिमंछवीसतिमेव। बारमे महीने बारेबारे उपवासे पारणोकरे। तेरसममासघट्ठावीसतिमघट्ठावीसतिमेव। तेरमेमहीने तेरेतेरे उपवासे पारणोकरे। चउदसममासतीसतिमतीसतिमेव। चउदमेमहीने चउदचउद उपवासे पारणोकरे। पन्नरसममासबत्तीसतिमबत्तीसतिमेव। पनरमे महीने पनर पनर उपवासे पारणोकरे। सोलसममासचउत्तीसतिम चउत्तीसतिमेव। सोलमेमहीने सोल सोल उपवासे पारणोकरे। ञ्चनिक्खित्तेव। वीचमे ञ्चतरारहित क्रियामटाको। तप कर्मेव। तपकर्म क्रियाविकरो। दिवाठाणकुडुर। दिवसमेविषे उत्कटुकासनबैठे। सूराभिमुहे। सूर्य सामने मुखे रहिवो। ञ्चातापनभूमीए। ञ्चातापना करतावकां। रत्तिंवीरासणेण। रात्रिनेविषे वीरासन पूर्वकनो तेरांते। ञ्चवाउडेव। पहिरण वस्त्र रहित मननभावे। तएणसेखदएञ्चणगारे। तिवारे तेखदक साधु। गुणरयणसंवच्छरतवोकम्मञ्चहासुत्त। गुणरत्न संवच्छरनामे तपकर्मक्रिया जिमसूत्रमाहेले सूत्रनी मर्यादायें। ञ्चहाकप्प। यथा सामाचारीये ञ्चाचारसहित। जावञ्चाराहित्ता। यावत् ञ्चाराधीने। जेणेवसमणेभगवंमहावीरे। जिहां श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीछे। तेणेवउवागच्छइ २ त्ता। तिहांञ्चावे तिहांञ्चावीने। समणंभगवंमहावीरं। श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी प्रतें। वंदइ नमंसइ २ त्ता। वांदे नमस्कारकरे वांदीने नमस्कारकरीने। बहूहिंचउत्थछट्ठम। घणे चउत्थ एकउपवास छट्ठ दोय उपवास ञ्चट्ठम तीन उपवास। दसमदुवालसेहिं। दसम चार उपवास दुवालस पांच उपवास। मासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं। मास तीसदिन ञ्चर्द्धमास पनरदिन तिणेकरी विचित्र नाना प्रकारना जे। तवोकम्मेहिं। तपकर्मे

एस भून्यस्पादस्या पनीतसिंहासमस्येव यदवस्थानं तद्वीरासन, तेम ॥ पवासडेवपत्ति ॥ प्रावरणाभावेमच ॥ उरालेबमित्यादि ॥ उरालेन पा शसारहितत्वया प्रधानेम प्रधान वास्पमपि स्यादित्याह ॥ विपुलेम ॥ विस्तीर्णेन बहुदिनत्वात् विपुलम गुरुभि रननुज्ञातमपि स्या दप्रयत्नस्त मा स्यादतमाह ॥ पयत्तबंति ॥ प्रदत्तेन अनुज्ञातेन गुरुभिः प्रयत्नेनवा प्रयत्नवता प्रमादरहितेनत्यर्थं, एवंविधमपि सामान्यतः प्रतिपन्न स्यादि त्याह प्रगृहीतेन बहुमानप्रकर्षा दाश्रितेन तथा कल्याणेन नीरोगताकारणेन शिवेन शिवहेतुना धन्येन धनावहसाधुना मङ्गल्येन दुरितोपशम साधुना सश्रीकेन सम्यक्पालना त्सशोभन उदग्रेण उन्नतपर्यवसानेन उत्तरोत्तर वृद्धिमतेत्यर्थ उदात्तेन उन्नतभाववता ॥ उत्तमेणंति ॥ ऊर्द्ध त मसो ऽज्ञाना द्य त्त तया तत्र भावप्रवृत्ते त्यर्थः उत्तमपुरुषासेवितत्वा द्वा तमेन उदारेण औदार्यवता निःस्पृहत्वातिरेकात् महानुभावेन म हाप्रभावेण ॥ सुक्केत्ति ॥ शुष्को नीरसशरीरत्वात् ॥ लुक्खेत्ति ॥ बुभुक्षावशेन रूक्षीभूतत्वात्, अस्थीनि चर्मावनद्धानि यस्य सो स्थिचर्मावनद्ध , कि

विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, तएणंसे खंदए अणगारे तेणं उरालेणं विउलेणं पयत्ते णं पग्गहिएणं कल्लाणेणं सिवेणं धन्नेणं मंगल्लेणं सस्सिरीएणं उदग्गेणं उदत्तेणं उत्तमेणं उदारेणं महाणुभागेणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए यावि होत्था, जी

किया निवकरी । यथार्थभावेभावविरह । चामापत्ते आश्रमान तेषाम आगता विचरेदे । तएणंसेखंदएअणगारे । तिणारे सेखंदक साधु । तेणउराले ण विउलेण पयत्तेण पग्गहिएणं कल्लाणेण सिवेण धन्नेण । तिणे भावसाकरी रहित विधानेकरी विस्तीर्ण घणादिनमाटे गुरुसमीपेमया अनुज्ञागुरुनी महामानसा ग्रह्या गौरवमने कारणेकरी शिवहेतुनेकरी धनधनेकरा । मङ्गलेण सस्सिरिएणं उदग्गेणं । कुशिव उपशमेकरी भलो परे आचारथी सभोभ नेकरी दिनदिनमते चयमोपदि । उदत्तेण उत्तमेण उदारेण महाणुभागेण । करते परिणामेकरी आनन्दुमिकरी उत्तम पदपेसेव्या वांछारहित निस्पृह पांचो महातमया प्रभावन । तवोकम्मेण सुक्केलुक्खेनिम्मंसे । एहवें तपकर्म क्रियाकेंकरी शरीरमूका निरसपणाथी भूखनेपडे मांसरहितपणा । अट्ठिचम्माव

यस्सति ॥ ध्वनितमतेकजीवित मयेति धमेयना तव खल्वा ओवया सबा तया जुष्टः सेवितो क्षूपितोथा अर्पितो यः स तथा तस्य ॥ प्रत्याख्यप
कियाइक्कियस्सति ॥ प्रत्याख्यातजलपानस्य ॥ कालंति ॥ मरणं ॥ तिकट्टु ॥ इति कृत्वा हृदविपर्यास्य ॥ एवसंपेहेति ॥ एवं मुक्तसमवस्य सम्प्रेक्षत

याहारिकयस्स पाहग्गयस्स काल अणवकंखमाणस्स विहरित्तए त्तिकट्टु एवसंपेहेइ एवसंपेहेइत्ता कल्लपाउप्पभा
याए रयणीए जाव जलंते जेणेवसमणेभगवमहावीरे जाव पज्जुवासइ खंदयादि, समणेभगवमहावीरे खंदय
अणगारं एवं वयासी, सेणूणं तव खंदया पुव्वरत्तावरत्त जाव जागरमाणस्स इमे यारूवे अज्झत्थिए जाव समु
प्पज्जित्था, एवखलु अहं इमेण एयारूवेण उरालेण विउलेण तंचेव जाव कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्त
एत्तिकट्टु, एव संपेहेइ २ त्ता, कल्लंपाउप्पभायाए जाव जलंते जेणेव मम अंतिए तेणेव हव्वमागए, सेणूणं

चेते सले व ना कहिय तनप तेजनोसवा तिव सेव्या तेजले। भक्तपानपरित्यागरूपस्य। भात पाणा पचक्खीमे। पादपोपगमने। का
लमनवकांक्षमाणस्य विहरित्तएतिकट्टु एवसंपेहेइ २ त्ता। कालमरणं पचवीकृतामका विचक इत्येवरीन इम समस्तपर्यं भासावे पाओवोन। कल्लंपाउप्प
भायाएरयणीए। प्राभाति प्रभातसमय प्रकटत्वे सति। यावज्जलतिसावत् प्रातःसमाम सूर्य उपतेजवे। जेणेवसमणेभगवमहावीरे। जित्र यमव भगवत श्री
महावीरस्वामी तिष्ठ भाव। जावपज्जुवासेइ। यावत् सेवाकरे तेतजे। खंदयादि। हेस्कंदक। इत्यामिनाम पूवपरे समणे भगवमहावीरे। यमण भगवंत श्रीम
हावीरस्वामी। खंदयंअणगार। स्कंद अणगारप्रत। एवंवयासी। इमबोले। सेणूणंतवखंदया। ते निश्चे तमजे हेस्कंदक। पुव्वरत्तावरत्त। मध्यरात्रिने। जाव
जागरमाणस्स। यावत् धर्मचिंताए जागतानजाने। इमेयारूवे अज्झत्थिए। ए एनादृश इमरूप। आत्मविषय। जावसमुप्पज्जित्था। यावत् उत्पन्नो अपमा।
एव खलु अह इमेणएयारूवेणउरालेण विउलेण। इम निश्चे हु पणि एहवे रूपकरो सदरे प्रधानेकरी विस्तीर्णकरी। तंचेवजावकालमणवकंखमाणस्स विहरि
त्तएत्तिकट्टु। तिमज निश्चे यावत् कालमरणमतें अणवांछता थकाने विचरु इसाकरोमे। एवसंपेहेइ २ त्ता। इम समस्तपर्यं भासापोने। कल्लंपाउप्प

टिकिटिका निर्मांसास्थिसम्बन्धी उपवेशनादिक्रियासमुत्थः शब्दविशेष सा भूतः प्राप्तो यः स किटिकिटिकाभूत , कशो दुर्बल , धमनीसन्ततो मा क्षीणतया मांसक्षय हृदयमानमात्रोकत्वात् ॥ जीवंजीवेणत्ति ॥ अनुस्वारस्य गमिकत्या जीवजीवेन जीवबलेन गच्छति न शरीरबलेनेत्यर्थः ज्ञा समाणिकेत्यादौ कालत्रयनिर्देशः ॥ गिलाइत्ति ॥ ग्लायति ग्लानो भवतीति ॥ सेजहानामएत्ति ॥ सेति अथार्थ ॥ यथेति दृष्टान्तार्थ नामेति स म्भावनायां यद्दतिवाक्यालङ्कारे ॥ कट्ठसगडियत्ति ॥ काष्ठभृता शकटिका काष्ठशकटिका ॥ पत्तसगडियत्ति । पलाशादिपत्रभृता गन्त्री ॥ पत्ततिलभ डगसगडियत्ति ॥ पत्रयुक्ततिलाना भाण्डकानाच मृन्मयभाजनानां भृता गन्त्री इत्यर्थ ॥ तिलभंडगसगडियत्ति ॥ क्वचित्पाठः प्रतीतश्चायं ॥ एरण्डकट्ठ

ए जीवेण गच्छइ, जीवंजीवेण चिट्ठइ, भासंभासित्ता विगिलाइ, भासंभासमाणेगिलाइ, भासंभासिस्सामी तिगिलाइ, सेजहानामए कट्ठसगडियाइवा पत्तसगडियाइवा पत्ततिलभंडगसगडियाइवा एरंडकट्ठसगडि याइवा इंगालसगडियाइवा उण्हेदिण्णासुक्कासमाणीससद्दंगच्छइ, ससद्दंचिट्ठइ, एवामेव खदएखणगारे सस

ने । हाड चामडीये करी बांध्या एतलेवात चामडोरहो । किटिकिटिकाभूए । मांस रहितपणे तेमाटे बेठतां उठतां किटकिटि शब्दकरे । किसे । दुब ळवडो । धमणिसंतए । मांसने अभावेकरी नाडिओथको । जातेयाविहात्था । एहवा थइरह्याहु तोरह्याछे । जीवंजीवेणगच्छइ जीवंजीवेणचिट्ठइ । जीव ने तेजोधने करीकरी मार्ग चाल पणि शरीर बलेकरीनहो जीवने बलेकरी उभोरहे । भासंभासित्ताविगिलाति । तोसवाय निर्देशछे भतीतकाले माया बोला ग्लानथाय । भासमासमाणेगिलाति । भाषाबोलताथको वर्तमानकालें ग्लानथाय । भासंभासिस्सामीतिगिलाति । भाषा भागामिकाले बोलसं ता पणि ग्लानथाय । सेजहानामए । ते यथा दृष्टांते नाम एहवे सभावनाये, ए दतिवाक्यालंकारे । कट्ठसगडियाइवा पत्तसगडियाइवा । काष्ठभरी गाड डिका माटसो पलासादिपत्रभरी गाडलो । पत्ततिलभंडसगडियाइवा । पान सहित तिलाना भांडा भाजन माटीना भरी गाडलो । एरंडकट्ठसगडियाइ वा । एरंडकाष्ठभरी गाडलो । इंगालसगडियाइवा । अंगाराभरी गाडलो । उण्हेदिण्णा सुक्कासमाणी । तडके विशेषथ काठ पत्रादिक सोकाने थंभ

तथा मसारत्वेन तत्कटिकायाः शुष्कायाः सत्या अतिशयेन गम समक्रियत्ति ॥ एरवलकाष्ठमयी एरवलकाष्ठभृता शकटिका, एरवलकाष्ठग्रहणम तेषां मसारत्वेन तत्कटिकायाः शुष्कायाः सत्या अतिशयेन गम मार्गो सशब्दत्व स्यादिति अङ्गारशकटिका अङ्गारभृता गन्त्री ॥ उष्णेदिशासुकायसभावीति ॥ विशेषणद्वय काष्ठादोना माद्रोयासेव सम्भवतीति, य धामस्य मायोग्यमिति हुताशनस्य भस्मराशिप्रतिच्छन्नः ॥ तयेवतेएणंति ॥ तपोलक्षणेन तेजसा, अयमभिप्रायो यथा भस्मच्छन्नोग्नि र्बहिर्वृत्त्या तपोरहितो अन्तवृत्त्यातु ज्वलति, एव स्कन्दको अपचितमांसशोणितत्वा द्बहिर्निस्तेजा अन्तस्तु शुभध्यानतपसा ज्वलतीति उक्तमेवार्थमाह ॥ त पतपत्यादि ॥ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसित्ति ॥ पूर्वरात्रश्च रात्रेः पूर्वोभागो अपररात्रश्च अपकृष्टा रात्रिः पश्चिम तद्भागइत्यर्थ स्तल्लक्षणो यः कालस मयः कालात्मकः समयः स तथा तत्र अथवा पूर्वरात्रापररात्रकालसमय इत्यत्र रेफलोपात् पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसित्तिस्यात् धर्मजागरिका

हूयासणेविवभासरासिपडिच्छन्ने तवेणं तेएणं तवतेयसिरीए अतीव उवसोभेमाणे २ चिट्ठइ, तेणंकालेणं तेणंसमएणं रायगिहेनयरे समोसरणं जाव परिसा पडिगया, तएणं तस्स खंदयस्स अणगारस्स अण्णयाकयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरि हुयासणेविवभासरासिपडिच्छन्ने तवेणं तेएणं तवतेयसिरीए अतीव उवसोभेमाणे २ चिट्ठइ, तेणंकालेणं तेणंसमएणं रायगिहेनयरे समोसरणं जाव परिसा पडिगया, तएणं तस्स खंदयस्स अणगारस्स अण्णयाकयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरि

वे ते नीसार् भराबुती मारलो पवे तापकोदीधी मूकोयको । ससद्दगच्छइ । शब्दसहित एतवे बोलतो चाले । ससद्दचिट्ठइ । शब्दसहित ऊभोरहे । एवा मेदर्शइएपचयारे ससद्दगच्छइ ससद्दचिट्ठइ । तेगाकसोने हवति इमज खन्दक पवि निश्चे पचयार साधु मोक्षरहितपको चालता शब्दसहित चाले एतवे चालतां थाइ मांसमांहि नाबेई शब्दभमारवि है । उवचितेतवेण । उपचितपुष्टपयाले सोकरीने तपेकरीने । अवचितेमंससोणिएण तवेण । शेषमाठे पचवाळेभयमाहे सोकरीने मांसधावीकरीने तपेकरीने । हुयासणेविवभासरासिपडिच्छिन्ने तवेण तेएण । यवि जिम अग्नि समूहको कांको सप सपत तेजकरी ए भावार्थ जिम रयाये छांको भस्मवाहिर तेजरहितपणे मतहर्ते दीपे इम खन्दक पवि एशरीरलेविये मांससोणितघयोाले तेमाटे य दोर बाहिर तेजरहितवे पविमाहिं शुभध्यान तपेकरी दीपेछे शोभता तेलेज सर्व वर्णवे—तपतेयसिरीएअतीवउवसोभेमाणेचिट्ठइ । तपतेज शोभ

यावत् कुर्वेत इत्यर्थः ॥ तं अत्थितामेति ॥ तदेवमपि अस्ति ताव मम उत्थानादि न सर्वथा क्षीणमितिभावः ॥ तजावताम्मेअत्थिति ॥ त तस्मात् यावत् तावदिति आयामाते मे ममास्ति ॥ आवत्ति ॥ यावत् ॥ सुहत्थिति ॥ सुजायी जम्मानुमति सुहस्तीवा पुरुषवरगन्धहस्ती एतस्य भगवस्त

य जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए जाव समुप्पज्जेत्था । एवखलु अहं इमेण एयारूवेण उराले ण जाव किसे घमणिसतए जाव जीव जीवेण गच्छामि, जीव जीवेण चिठामि, जाव गिलामि, जाव ए वामेव अहंपि ससद्दगच्छामि, ससद्दचिठामि, त अत्थि तामे उठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्क मे त जाव तामे अत्थिउठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे जाव यमेधम्मायरिए धम्मोवदेसए सम

तावता रते । तेषण्णस्य तयसमएण । तस्मिन्नेवविषे तसमयमेविषे । समण भगवमहावीरे । श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामी । जंबेणरायगिहेणयरेस मासरिए । चिरो रायगृहमामा नगरके तेणमेविषे समोसरा भाव्या । आमपरिसा पडिगया । यावत् पर्षदा भांजवा भावोषतो तेषात्वोगर । सण्वंतस्स । तिमारे तेहमे । चरवमघमघारस्स । खंदकनामा साधुने । भववाममवार । एकदा प्रस्तावे विचारेवे । पुब्बरत्तावरत्तकालसमयंसि । मध्यरात्रिकालस मधे मध्यारमेविषे एतले पाषोरात्रिमेविषे । धम्मजागरियं जागरमाणस्स । धम्मजागरिका धमचिता जागतायकाने एतले धमचिता करतायकाने । इमे यारूवे । ए एतवा एताहमरूप । अज्झत्थिए । आत्मविषय अध्यवसाय । चिंतिए । चितारूप मायनारूप । जावसमुप्पज्जित्था । यावत् ऊपनो । एवखलुअहं । इम निश्चे । इमयएयारूवेण । एवे हसेपूपेकरी । उरालेण जावकिसे । भावसारचित्त तेणेकरी यावत् दुबलथयो । धमणिसंतएजाए । मांसरहितपणे करी व्याप्त नाडिमात्रमिरहितमात्रो मोमयो । जीवजीवेणगच्छामि । जीव जीवमे बले करी चालुं । जीवंजीवेणचिठामि । जीवजीवने बले इ उभारहुं । जावगिलामि । यावत् ग्लामथया । जावएवामेव अहंपिससद्दगच्छामि । यावत् काष्ट भरत शकटो मन्दकरे इमज पचि मन्दस्वितमाणें चालुं । ससद्दचिठामि । मन्दरहित उभारहुं । तंअत्थि । तावलिसे ए हवे । तामेउठाणे । तावत् सुभने उठाण । कम्मेबलेवीरिए पुरिसक्कारपरक्कमेतंजावतामे । जम अब जीव

त्रिको ऽनस्तमितिविधि महाक्लो भवती त्यभिप्रायेण भगवन्निर्वाणे श्रीकेशु:सजाम भानुव मह मित्यभिप्रायेणवा चिन्तित मनेनेति ॥ कल्लमित्यादि ॥ कल्लंति ॥ प्र:, प्रादु: प्राकाश्य तत प्रकाशप्रभातायां रजन्यां फुल्लोत्पलकमलकोमलोन्मीलिते फुल्लं विकसित तच्च तदुत्पलंच फुल्लोत्पलं तच्च कम लंच हरिणविशेष: फुल्लोत्पलकमलौ तयो: कोमल मकठोर मुन्मीलित दलानां नयनयो योन्मीलन यस्मिं स तथा तस्मिन्, अथानि रजनीविभा तानन्तरं पाण्डुर प्रभाते रक्ताशोकप्रकाशेन किंशुकस्य शुकमुखस्य गुञ्जार्द्धस्य रागेण सदृशो यः स तथा तस्मिन् तथा कमलाकरा ह्रदास्ते षु षण्डानि नलिनीषण्डानि तेषां बोधको यः स कमलाकरषण्डबोधक स्तस्मि न्नुत्थिते अभ्युद्गते कस्मि न्नित्याह ॥ सूर ॥ पुन किम्भूतइत्याह ॥ स

णं समणभगवमहावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, ताय तामे सेय कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पलकमलकोमलु मिलियम्मि अहपण्डुरे पभाए रत्तासोगप्पकासे किंसुयसुयमुहगुञ्जद्धरागसरिसे कमलागरसण्डबोहए उट्ठियम्मि

पुण्यपाल्हार पराक्रम एवडे भाक्रमे उद्यानादि सर्वेना बोधवक्ता मदे तेमाटे आसगे सुभक्ते। पविष्छापे। ते उद्यान। अपो पते योरिए पुरिसला रपरवमे। कम एव योग पुण्यपाल्हार पराक्रम। आपवमे घण्पायरिए भगवण्णए समवे‍भमवमहावीरे। यावत् मधुन मोडरा धर्माचार्य धर्मोपदेशक धमावतक चमन भयवन बोमहावीरस्वामी। चिपेमुहत्वीविचरइ तावतासेवेर्द। वोत्पाये रागदेष जिर्त, सुमावीले अथप्रतें, पमया सुहस्तीनोपरे वि षरे तेतमाकालवगे सुभने बवमगलोय। काल्यप्रभापरप्रणोए। भायामि प्रभात रात्रिनेविषे। फल्पपलकमलकोमलउम्मिलियमि। विकसित उत्पलफूल कमल हरिणनामेन कोमल भकठार कमलना दल हरिणना नव मिलाला ते उन्मीलितथया। पछपण्डुरेपभाए। मद पाण्डुर प्रभातथया। रत्तासोगप्प भासे। रात्ता पचान इघमा पुष्पतिसौ प्रभा तिर्णेषरे। किंसुयसुयमुहगुंजद्धरागसरिसे। केसूडानाफूल भवया सुयानामुख भवया चिरमोनापर्वं तेहना रागसरीखाने। कमलागरसंडबोहए उट्टियम्मिसूरे। कमलनाआगर सरोवर तेहनेविषे नलिनीखण्ड तेहने विकाशकदार तेहनेविषे ऊगतेथके सूर्ये। स हस्सरस्मिम्मिदिणयरे तेयसाजलते। सहस्र किरणसहित दिनकरसूर्य तेजेकरी जाज्वल्यमान एवाथता प्रभातसमये। समणभगवमहावीर। श्रमण भगवंत

स्सररिसमीत्यादि ॥ कडाहहिति ॥ दह पर्यैकदेशा स्यदसमुदायो वृषय सत कडपोत्रादिमि रितिस्यात् तत्र कृता योगा प्रत्युपेक्षणादिव्या पारा यथा सन्ति त कृतयोगिनः चाविसश्च रिम्रपथर्मोको हतधर्मोत्र इत्यादि यत्नान्तहति ॥ विउलति ॥ विपुलाभिधान ॥ मेघघणसन्निगासति॥ घनमेघसहस सान्द्रजलदसमान कालक मित्यर्थः ॥ देवसन्निवायति ॥ देवाना सन्निपात समागमो रमणीयत्या यत्र स तथा ॥ तपुढविसिलापट्टय ति ॥ पृथिवीशिलारूपः पट्टक आसनविशेषः पृथिवीशिलापट्टकः काष्ठशिलापि शिला स्या दत सद्व्यवच्छेदाय पृथिवीपट्टय ॥ सलेहणाझूसणाझूसि

सूरे सहस्सरस्सिमिदिणयरे तयसाजलत समणभगव महावीर वदित्ता नमसित्ता जाव पज्जुवासेत्ता समणेण भगवया महावीरेण श्रब्भणुणाए समाणे सयमेव पचमहव्वयाणि श्रारोहेत्ता समणायसमणीउय खामेत्ता त हारूवेहि येरेहि कडाइहिं सद्धि विपुल पव्वय सणिय सणिय दुरूहित्ता मेहघणसन्निगास देवसन्निवाय पुढ विसिलापट्टय पडिलेहेत्ता दब्भसथारय सथरित्ता दब्भसथारोवगयस्स सलेहणाझूसणाझूसियस्स भत्तपाणपडि

श्रमणभगवन्महावीरस्वामिनं । वन्दित्वा स्तुत्वा । नमस्यित्वा नमस्कारं करोति । यावत् पर्युपास्य सेवा करोति । श्रमणेन भगवता महावीरेण । अनुज्ञातः सन् । स्वयमेव पञ्चमहाव्रतानि आरोप्य । पञ्चमहाव्रत सर्वं प्राणातिपा त विरमणादिक आरोप्य । श्रमणांश्च श्रमणीश्च क्षामयित्वा । श्रमण गौतमादिक तेहनेइ श्रमणीश्च चन्दनबाला प्रमुख तेहनेइ खमावीने । त थारूप स्थविरेहि । तथारूप सर्वोत्कृष्ट तिणेकरी अविरेकरी । कडाइहिं सार्धं । कृतयोगिभिः प्रत्युपेक्षणादिव्यापार ते कृतयोगी तिणेकरी सहित । विपुल पर्वतविषे २ धुरूहित्वा । विपुलनामे पर्वत तिहां शनैः २ चढीने । मेहघणसन्निगास । जिसो श्याम अंब तिसी शिला निवडघनधर समान श्याम । पृथवीशिलापट्टक । पृथवी शिलारूप आसनविशेष । देवसन्निपात । देवसमागम रमणीकपणाथी । पडिलेहित्वा । पडिलेही पूंजीने । दर्भसथारि सथ रित्वा । डाभ तृणविशेषना सथारा तेहने पाथरीने । दर्भसंस्तारकमध्य । डाभने सथारे चपगत रहीने । सलेहणाझूसणाझूसियस्स । पूर्वनामकोने ए

पयासाधयति सद्भूतार्थमुपविजानस ॥ उच्चारपासवणभूमिपडिलेहेइसि ॥ पादपोपगमना दारा दुवारादे सास कतव्यत्वा दुवारादिभूमिप्रत्यु

खंदया अठसमठे हंता अत्थि, अहासुहं देवाणुप्पिया मापडिबंध, तएणंसे खंदए अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुन्नाए समाणे हठतुठजावहयहियए उठाए उठेइ उठेइत्ता, समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, जाव नमंसित्ता सयमेव पंचमहव्वयाइं आरुहेइ आरुहेइत्ता समणायसमणीओय खामेइ खामेइत्ता तहारूवेहिं थेरेहिं कडाईहिं सद्धिं विपुलं पव्वयं सणियं सणियं दुरूहेइ दुरूहेइत्ता मेहघणसन्निगासं देवसन्निवायं पुढविसिलापट्टयं पडिलेहेइ पडिलेहेइत्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ पडिले

भावार्थ आवश्यक। भागी समभातसमव प्रगटथय यावत् आव्यस्वमाज खम्प। जेथिसमसधतिए। जिहां मावरा समोपहे। तेथिकहव्यमामए। तिहां उताव थी पाम्या। सर्वूपसरवा पहेमले। तेमिये हेवरम। पचर्य समपहे मुक्के। हतापति। हां आमोहे, तिवारे भगवतकहे—यथासुखदेवाणुप्पिया। जिम सुख तिम देवानुप्रिय पवि। मापडिबंध। विलंब मकरसो। तएणसेखंदएअणगारे। तिवारे ते खंदक साध। समणेणभगवयामहावीरेण। श्रम ण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी। अब्भणुन्नाए समाणे। आज्ञादीधांथका। हठतुठजावहियए। हरखवा संतोषपाम्या यावत् हरखवंतथको। उठाए उठेइ २ त्ता। उठे उठीने। समणभगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणकरेइ। श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीप्रते त्रीणवार श्रीमहावीरस्वामी प्रदक्षिणा करे। जावनमंसित्ता। यावत् नमस्कारकरीने। सयमेवपंचमहव्वयाइं। पोतेज पंचमहाव्रतप्रते। आरूहेइ २ त्ता। आरोपे आरोपीने। समणाय समणीओय। साधुसाध्वीप्रतें खामेइ २ त्ता। खमावीने। तहारूवेहिंथेरेहिं। तथा सर्वोत्कृष्ट स्थविरसाधु। कडाईहिंसद्धिं। वेयावच्चकारी ते साथे। विपुलपव्वयंसणियं २ दुरूहेइ २ त्ता। विपुल पर्वत ऊपर हलवे २ चडे चडीने। मेहघणसन्निगासं। सघनमेघ सरीखो श्याम। देवसन्निवायं। देवतागमन रमणीक पर्वतो। पुढविसिलापट्टयंपडिलेहेइ २ त्ता। पृथिवी शिला श्याम पडिलेहे पडिलेहीने। उच्चारपासवणभूमिपडिले

पेवष म मिरषक ॥ सपलियकमिसयेत्ति ॥ पव्वासमोपविए ॥ सिरसावत्तसि ॥ शिरसा सप्राप्त मस्एए मथका शिरषि आवर्त्त मावृत्ति रावत्त

हेइसा , दम्मसयारय सयरङ्ग सयरङ्ग्सा, पुरत्याज्ञिमुहे सपलियकनिसन्ने करयलपरिग्गहिय दसनह सिरसा वत्त मत्यए अजलिकट्टु एवययासी', नमोत्युण अरहताण जगवताण जाव सपत्ताणं , नमोत्युण समणस्स जगवह महावीरस्स जाव सपाविउकामस्स वदामिण जगवत तत्यगत इहगत पासउमेसेजयव तत्यगए इह गय तिक्लिकट्टु वदइ णमसइ वदित्ता णमसित्ता एववयासी , पुव्विपि मएसमणस्स जगवह महावीरस्स अ तिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीयाए जाव मिच्छादसणसल्ले पच्चक्खाए जावज्जीवाए , इयाणापियण

के २ ता दभसथारसथरर २ ता। बसोनोति मथुनोति भूमिप्रते पडिलेहे पाडलहोमे दाभवपविमथना सथारा पाथर पाथरोने। पुरत्याभिमुखेसपलि यकनिसन्ने। पूर्वदिशि सामुहा पर्यंकासने बेसे पापडपालथो वाळीने बेसे। करयलपरिग्गहियं। करतल बेहाय वाळीने। दसनहसिरसावत्तमत्थएअजलि कट्टु। दशनख पांचलीना मस्तकनेविषे आवर्त्त परिभ्रमणकरो एतले बेहाथजोडो। एववयासो नमोत्थुण। इम कहता हुवा नमस्काररूपो। अरहंताण। तीन सुवननेविषे पूजवायोग्यनेकाजे। जावसपत्ताण नमोत्थुण। यावत् सिद्धगतिनाम स्थानकाजे नमस्काररूपो। समणस्सभगवओमहावीरस्स। श्र मण भगवत श्रीमहावीरस्वामीने। जावसपाविउकामस्स। यावत् सिद्धगतिनामध्येस्थान पामवाना कामीने। वंदामिण भगवत। नमस्कारकरउ भग वत श्रीमहावीरस्वामी प्रते। तत्थगयं भगवत। तिहारह्या। इहगयपासउमेसेभगवतत्थगएइहगयंतिकट्टु। ह इहांरह्यानो विपुलगिरिपर्वतनेविषे देखो समके तेभगवत श्रीमहावीरस्वामी तिहा रह्याथका इहा विपुलगिरिरह्या मो प्रत्यक्षमावमिमुखमते इमकरीने। वंदइ नमंसइ २ त्ता। वांदे नम स्कार करे वांदीने नमस्कारकरीने। एववयासी। इम कहता हुवा। पुव्विपिमए। पहिला पणिमें। समणस्सभगवओ महावीरस्स। श्रमण भगवत श्री महावीरस्वामीने। अतिए सव्वेपाणाइवाए पच्चक्खाते। समीपे सर्व प्राणातिपात त्रिविधत्रिविधकरी पच्चख्या। जावज्जीवाए। जा जीवूंतालगे एमहोट

समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जावज्जीवाए जाव मिच्छादंसणसल्लं पच्चक्खामि जावज्जीवाए, सव्वं असणपाणखाइमसाइमं चउव्विहंपि आहारं पच्चक्खामि जावज्जीवाए, जंपिय इमं सरीरं इट्ठं कंतं पियं जाव फुसंतु त्तिकट्टु एयंपिणं चरिमेहिं ऊसासनीसासेहिं वोसिरामि त्तिकट्टु, संलेहणाझूसणाझूसिए भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगए कालं अणवकंखमाणे विहरइ, तएणं से खंदए अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता बहु

मे आवता पवत । यावमिच्छादंसणसल्लं प्रत्याख्याए यावज्जीवाए । यावत् मिथ्यादर्शनशल्यमुख अष्टादश पापस्थानक पचक्खा यावज्जीवं तावन्ते । इया विधिवत । इदंपणि । समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए । श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीने समीपे । सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि । सर्व प्राणातिपात त्रिविध त्रिविधकरी पचखुं । यावज्जीवाए जाव मिच्छादंसणसल्लं पच्चक्खामि । जां जीवुं तावन्ते यावत् मिथ्यादर्शन शल्यप्रमुख अठारपापस्थानक पचखुं । यावज्जीवाए । जां जीवुं तावन्ते । सव्वं असणपाणखाइमसाइमं । सर्व अशन पान खादिम स्वादिम । चउव्विहंपि आहारं पच्चक्खामि । चारे विधि आहार पचखुं । यावज्जीवाए जंपिय इमं सरीरं । जां जीवुं तावन्ते जेपणि शरीर । इट्ठं कंतं पियं जाव फुसंतु त्तिकट्टु । इष्ट कांत प्रिय यावत् रोग आतंक परिसह उपसर्ग स्पर्शो इमकरी । एयंपि चरिमेहिं । एहवुंपणि शरीर ते छेल्ला । ऊसासनीसासेहिं वोसिरामि त्तिकट्टु । श्वासोश्वासेकरी वोसिराऊं इति इमकरीने । संलेहणाझूसणाझूसिए । शरीर कृशकारीये तेसंलेषणा तप तेहनी सेवाकरीने वली भत्तपाणपडियाइक्खिए । भात पाणी तेहने पचखीने एहवे वोसिरावती । पाओवगए कालं अणवकंखमाणे विहरइ । पादपोपगम अनशनकरी कालमरणपणे अणवांछतायका विचरे । तएणं से खंदए अणगारे । तिवारे तेखंदकसाधु । समणस्स भगवओ महावीरस्स । श्रमण भगवंत श्रीमहावीरदेवना । तहारूवाणं थेराणं अंतिए । तथाविध तेहवा स्थविर सथविरने समीप । सामाइयमाइयाइं । सामायक आदिदेइ । एक्कारसअंगाइं अहिज्जित्ता । इग्यारअंग भणी सूधा सूत्रार्थ भलो भणीने । बहुपडि

पेढव म सिरयक ॥ सपलियंकनिसवेत्ति ॥ पद्मासनोपविष्ट ॥ सिरसावत्तति ॥ शिरसा अप्राप्त मस्पृष्ट यथा शिरसि आवर्त्तं आवृत्ति रावस

इइत्ता , दम्नसयारय सयरइ सयरइत्ता, पुरत्याभिमुहे सपलियंकनिसन्ने करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसा यत्त मत्यए अंजलिकट्टु एवंवयासी , नमोत्थुणं अरहंताणं भगवंताणं जाव सपत्ताणं , नमोत्थुणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव संपाविउकामस्स वंदामिणं भगवंतं तत्थगतं इहगते पासउमेसेभयवं तत्थगए इह गयं तिकट्टु वंदइ णमसइ वंदित्ता णमंसित्ता एवंवयासी , पुव्विंपि मएसमणस्स भगवओ महावीरस्स अं तिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए जाव मिच्छादंसणसल्ले पच्चक्खाए जावज्जीवाए , इयाणिपियणं

वेद २ त्ता दर्भसंस्तारकं स्तरति २ त्ता । चढोमोति अधुमोति भूमिपर्ते परिवेवै पाथरोने दाभसंस्तारकना सथारा पाथर पाथरोने । पुरत्याभिमुहेसपलि यंकनिसन्ने । पूर्वन्मि सामुहा पर्यंकासने बेसे पापठयाखो थाओने बेसे । करयलपरिग्गहियं । करतल बेहाथ जोडोने । दसमहंसिरसावत्तमत्थएअंजलिं कट्टु । दशनख पांचवोला सम्पूर्णछेविषे पावत परिभ्रमणकरो पतसे बेहाथजोडो । एवंवयासो एमाबोल्यं । हम कहता हवा नमस्कारहुयो । अरहंताणं । तोन भुवनमेंविषे पूजनायामनेयोग्य । जावसंपत्ताणं समानुं । यावत् सिद्धगतिस्थान समायामनेयोग्य नमस्कारहुयो । समणस्सभगवओमहावीरस्स । श्र मण भगवत श्रोमहावीरस्वामीने । जावसंपाविउकामस्स । यावत् सिद्धगतिनामध्येयस्थान पामवामा कामीने । वंदामिणं भगवंतं । नमस्कारकरंछं भग वत श्रोमहावीरस्वामो प्रते । तत्थगयं भगवंतं । तिहांरह्याछे । इहगएपासउमेसेभयवंतत्थगएइहगयंतिकट्टु । ते इहारह्यावंदा विपुलगिरिपर्वतऊपरविषे रह्यो हुवमने तेभगवंत श्रीमहावीरस्वामी तिहां रह्याथका देखो विपुलगिरिपरथा मा अवस्थाने प्रतिक्षणप्रते देखतरोने । वंदइ णमंसइ २ त्ता । वांदे नम स्कार करे वांदीने नमस्कारकरीने । एवंवयासी । इम कहता हवा । पुव्विंपिमए । पहिला पविने । समणस्सभगवओ महावीरस्स । श्रमण भगवत श्रो महावीरस्वामीने । अंतिए सव्वेपाणाइवाए पच्चक्खाते । समीपे सर्वं प्राणातिपात त्रिविधत्रिविधकरो पचख्या । जावज्जीवाए । जा जीवितामने एमरोव

समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जावज्जीवाए जाव मिच्छादंसणसल्लं पच्च
क्खामि जावज्जीवाए, सव्वं असणपाणखाइमसाइमं चउव्विहंपि आहारं पच्चक्खामि जावज्जीवाए, जंपिय
इमं सरीरं इट्ठं कंतं पियं जाव फुसंतुत्तिकट्टु एयंपिणं चरिमेहिं ऊसासनीसासेहिं वोसिरामित्तिकट्टु, संले
हणाझूसणाझूसिए भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगए कालं अणवकंखमाणे विहरइ, तएणं से खंदए अणगारे
समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता बहु

मे यावता [illegible] । जावमिच्छादंसण[illegible] जावज्जीवाए । यावत् मिथ्यादर्शन[illegible] अठार पापस्थानक [illegible] जावजीव तावले । इमा
विपियव । [illegible] । समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए । श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीने समीपे । सव्व पाणाइवायं पच्चक्खामि । सर्व प्राणातिपा
त त्रिविध त्रिविधकरी [illegible] । जावज्जीवाए जाव मिच्छादंसणसल्लं पच्चक्खामि । जा जीवूं तावले यावत् मिथ्यादर्शन शल्यप्रमुख अठारपापस्थानक प
[illegible] । जावज्जीवाए । जा जीवूं तावले । असणपाणखाइमसाइमं । सर्व अशन पान खादिम स्वादिम । चउव्विहंपिआहारं पच्चक्खामि । च्यारेइ विधि
[illegible] । जावज्जीवाए [illegible]सरीरं । जा जीवूं तावलगे [illegible] शरीर । इट्ठंकंतंपियंजावफुसंतुत्तिकट्टु । इष्ट कांत प्रिय यावत् रोग [illegible]
[illegible] इत्यादिके [illegible] । चरिमेहिं । [illegible] शरीर ने [illegible], [illegible] । ऊसासनीसासेहिंवोसिरामित्तिकट्टु । [illegible]
[illegible] इति [illegible] । संलेहणाझूसणाझूसिए । शरीर [illegible] भत्तपाणपडियाइक्खिए । भात पाणी
[illegible] । पाओवगए [illegible] विहरइ । पादपोपगम [illegible] कालमरणप्रते [illegible] विचरे । तएणं
[illegible] अणगारे । तिवारे [illegible] । समणस्स भगवओ महावीरस्स । श्रमण भगवंत श्रीमहावीरदेवना । तहारूवाणं थेराणं अंतिए । तथाविध [illegible]
[illegible] समीपे । सामाइयमाइयाइं । सामायिक आदिदेइ । एक्कारसअंगाइं अहिज्जित्ता । इग्यारअंग [illegible] भणीने । बहुपडि

म परित्यक्त यस्या सौ' ग्रहम्यसोपा भिरसायर्त स ॥ सज्जितताइति ॥ प्रतिदिर्म भोजनद्वयस्य त्यागा विधता दिने परिच्चत्तानि त्यक्तानि भवन्ति ॥ यवससाएति ॥ प्राकृतस्या एतशनेन ॥ छेदतान्ति ॥ विच्छा परित्यज्य ॥ यालोइयपडिक्कंतत्ति ॥ यालोचित गुरूवा मिवेदित य दतिचा रजात स रप्रतिक्रान्त मकरवविपर्यीकृत येना सा वालोचितप्रतिक्रान्तो ऽथवा ॥ वालोइयपडिक्कंतत्ति ॥ वालोचित याशा वालोचनादाना स्प्र तिक्रान्तय मिथ्यादुष्कतदाना दालोचितप्रतिक्रान्तः ॥ परिनिव्वाणवत्तियत्ति ॥ परिनिर्वाण मरण तत्र यच्छरीरस्य परिष्ठापन तदपि परिनिर्वाणमेव

परिपुणाइं दुवालसवासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं ज्झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते आणुपुव्वीए कालगए, तएणं तेथेरा भगवंतो खंदयं अण गारं कालगयं जाणित्ता परिनिव्वाणवत्तियं काउसग्गं करेइ, पत्तचीवराणि गिण्हंति, विपुलाओ पव्वयाओ सणि यंसणियं पच्चोरुहंति पच्चोरुहइत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता समणं भगवं

पूर्णानि द्वादशवर्षाणि। यद् मतिपूर्ण पूर्ण द्वादशवर्षसमये। श्रामण्यपरियागपाउणित्ता। चारित्र पर्याय एतले दीक्षा पालीने। मासियाएसंलेहणाए। एक मासनी संलेखनाये करीने। अत्ताणंझूसित्ता। आत्माने सेवीने थापरीने। सट्ठिंभत्ताइं अणसणाइं छेदित्ता। त्रिशद्दिने भोजने द्वावना त्यागथकी चोसे दिने साठभात अनशने तजीने छेदीने गुरुदिके चतुरता अतीचारकह्या। आलोइयपडिक्कंतसमाहिपत्ते। ते गुरुने समक्षालोचने आलोइने तेहनो मिथ्या दुष्कृत देइने समाधि पाम्या मानसीपोषे रहितथया। आणुपुव्वियकालगए। अनुक्रमे आत्मपहुतो एतावता मरणपाम्यो। तएणंतेथेरा भगवंता। तिवारे ते स्थविर भगवंत। खंदयंअणगारंकालगयं जाणित्ता। खंदकसाधुमरते मरणपाम्या जाणीने। परिनिव्वाणवत्तियकाउसग्गं करेंति। मरणतेहने तिवारे वेग रारना परत्वाते पनि परनिर्वाणदरोन तेहेतुके वेहमेते काउसग्गकरे एतले यतनाशरीर वासरावीने। पत्तचीवराणिगिण्हंति। पात्रपडलो अन्न वपम एन पौ। विपुलाओपव्वयाओसणियं २ पच्चोरुहंति। विपुलनामा पर्वतथकी धवले २ उतरे उतरीने। जेणेवसमणेभगवंमहावीरे। जिहां श्रमण भग

महावीर वदइ नमसइ वंदित्ता नमंसित्ता एववयासी , एवखलु देवाणुप्पियाण अंतेवासी खदए णामअणगारे पगइभद्दए पगइउवसते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे मिउमद्दवसपन्ने अल्लीणे भद्दए विणीए सेणदेवाणुप्पिएहिं अब्भणुण्णाए समाणे सयमेयपचमहव्वयाणि आराहेत्ता समणाय समणीओय खामेत्ता अम्हेहिं सद्धिं विपुल पव्वय तचेव निरवसेस जाव आणुपुव्वीए कालगए , इमेयसे आयारभडए त्तिकट्टु, भगवगोयमे समणभगव महावीर वदइ णमसइ वंदित्ता णमंसित्ता एववयासी, एवखलु देवाणुप्पियाण अंतेवासी खद

वत त्यागकरकेआये। तेथेरभगवन्त २ ता। तिहां आवे तिहां आवीने । समणभगवमहावीर वदइ णमसइ २ ता। श्रमण भगवत श्रीमहावीर स्वामीप्रते वांदे नमस्कारकरे वदनाकरीने नमस्कारकरीने। एववयासी। इम कहताहुवा। एवखलुदेवाणुप्पियाण अंतेवासी । इम निश्चे हेदेवाणुप्रिय ! हेभगवन् । तुम्हाराशिष्य । खदएणामअणगारेपगइभद्दे। खदकनामे साधु प्रकतिकरी भद्रक दुष्टचितारहित । पगइउवसते। प्रकतें उपशांत कषायरहित । पगइपयणुकोहमाणमायालोभे। स्वभाव पातलापाड्या क्रोध मान माया लोभजिणें । मिउमद्दवसपन्ने अहंकारी। अत्यंत मार्दव कोमलपणे करी सपूर्ण, गुण रहे तेहने अल्लीणे अर्थ वाचक । भद्दए विणीए। एवसा गुण सहित भद्रक विनयवत तद्द । सेणदेवाणुप्पिएहिं। तेथ आपनी आज्ञाथकी, देवाणुप्रिय। अब्भणुण्णाएसमाणे । आज्ञादीधाथका। सयमेवपचमहव्वयाइ आरोवेत्ता। पोतेज सर्व प्राणातिपातादि पंचमहाव्रत मनें आरोपीने । समणाय। साधुमाहे गोतमादि मनें। समणी साध्वी प्रमुखने खमावीने। अम्हेहिंसद्धिंविपुलपव्वय। अम्ह साथे विपुलगिरिनामा पर्वतें इत्यादि सर्व। तचेवनिरवसेस। तिमज निरविशेषें कहवा। आणुपुव्वीएकालगए। यावत् अनुक्रमे कालमरण पामता। इमेयसेआयारभडएत्तेति। एह तेहना आचार भांडउपकरण देवाकेहेभगवन् । भगवंगोयमे। भगवंत गौतम समणभगवमहावीर श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीप्रते। वदइ णमसइ २ ता। वांदे नमस्कारकरे वांदीने नमस्कार करीने। एववयासी। इम कहताहुवा। एवखलुदेवाणुप्पियाण अंतेवासी। इमनिश्चे हेदेवाणुप्रिय ! तुम्हारा शिष्य। खदएणामअण

म परिम्रमव मस्या सौ ससम्यत्तोपा चिरस्मावत स ॥ सछिन्नताइति ॥ प्रतिदिम भोजमद्वयस्य त्यागा चिघता दिने पष्टिजक्तानि त्यक्तानि भवन्ति ॥ मबसवाएति ॥ माकतत्वा वृनमानेन ॥ छेदत्ति ॥ छित्वा परित्यज्य ॥ मालोइयपडिक्कतत्ति ॥ मालाचित गुरूणा मिवेदित य दतिचा रजात त स्मतिक्रान्त मवर्त्तविपर्यीकृत येमा सा मालोचितप्रतिक्रान्तो ऽथवा ॥ मालोइयपडिक्कतत्ति ॥ मालोचित यासा वालाचनादाना रम तिक्रान्तय मिथ्यादुष्कतदाना दालोचितप्रतिक्रान्त ॥ परिनिव्वाणवत्तियंति ॥ परिनिर्वाण मरण तत्र यच्छरीरस्य परिष्ठापन तदपि परिनिर्वाणमेव

पडिपुन्नाइ दुवालसवासाइ सामन्नपरियाग पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए अत्ताण ज्झूसित्ता सट्ठिभत्ताइ अणसणाए छेदित्ता आलोइयपडिक्कते समाहिपत्ते आणुपुव्वीए कालगए, तएणतेथेराभगवतो खदयअण गार कालगयं जाणित्ता परिनिव्वाणवत्तिय काउसग्ग करेइ, पत्तचीवराणिगिण्हति, विपुलाउ पव्वयाउ सणि यसणिय पच्चोरुहति पच्चोरुहइत्ता जेणेवसमणेभगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता समणभगव

पबार दुवालसवासार। यद् मतिपूर्ण पूरा बारेबरसमने। सामन्नपरियागपालावता। चारित्र पर्याय एतले दीक्षा पालीने। मासियाएसलेहणाए। एक मासनी सलेखनाये करीने। अत्तानझूसित्ता। आत्माने सेवीने आदरीने। सट्ठिभत्ताइ अणसणाइ छेदित्ता। दिवसमर्ते भोजने दोयना त्यागथको सीत्ते दिने साठभात अनशने तजीने छेदीने दुर्भादिके वेपुतमा पतीचारकमा। आलोइयपडिक्कतसमाहिपत्ते। ते गुरुने समचावीने मालोइने तेहनो मिथ्या दुष्कृतदेइने समाधिपाम्या मानसोपोक। रहितथया। आणुपुव्विएकालगए। अनुक्रमे कालपहुतो एतावता मरणपाम्या। तएणतेथेराभगवंतो। तिवारे ते स्थविर भगवंत। खदयअणगारकालगयजाणित्ता। खदकसाधुमर्ते मरणपाम्या जाणीने। परिनिव्वाणवत्तियकाउसग्गकरेंति। मरणतेणते तिहां जेम रोरमा परठवाते पछि परनिर्वाणहोय तेहेतुके जेहजेते काउसग्गकरे एतले मृतकशरीर वोसरावीने। पत्तचीवराणिगिण्हति। पात्रपडघो वस्त्र उपग रण यहे। विपुलाओपव्वयाओसणियं २ पच्चोरुहति। विपुलनामा पर्वतथको हवे २ उतरे उतरीन। जेणेवसमणेभगवमहावीर। जिहां श्रमण भग

महावीर वंदइ नमसइ वंदित्ता नमसित्ता एववयासी, एवखलु देवाणुप्पियाण अंतेवासी खंदएणामअण गारे पगइभद्दए पगइउवसंते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे मिउमद्दवसंपन्ने अल्लीणे भद्दए विणीए सेणंदे वाणुप्पिएहि अब्भणुण्णाएसमाणे सयमेवपंचमहव्वयाणि आरोहेत्ता समणाय समणीओय खामेत्ता अम्हेहि सद्धि विपुल पव्वयं तचेव निरवसेस जाव आणुपुव्वीए कालगए, इमेयसे आयारभंडए भंतेत्ति, भयवंगोयमे स मणंभगवं महावीर वंदइ णमसइ वंदित्ता णमसित्ता एववयासी, एवखलु देवाणुप्पियाण अंतेवासी खंद

वत आमभा आत्मानाहे । तेवेबतायन्याति २ ता । जिहां भावे तिहां आवीन । समणंभगवमहावीर वदइ नमसइ २ ता । श्रमण भगवंत श्रीमहावीर स्वामीपतें वांदे नमस्कारकरे वंदनाकरीने नमस्कारकरीने । एववयासी । इम कहताहवा । एवखलुदेवाणुप्पियाण अंतेवासी । इम निश्चे हेदेवानुप्रिय ! हेभगवन् । तुम्हाराशिष्य । खंदएणामअणगारेपगइभद्दे । खंदकनामे साधु प्रकृतेकरी भद्रक दुष्टचितारहित । पगइउवसंते । प्रकृतें उपशांत कषायरहि त । पगइपयणुकोहमाणमायालोभे । स्वभाव पातलाक्रोध मान माया लोभजिणें । मिउमद्दवसंपन्न पणाहि । मृदु मार्दव गर्वकरी संपूर्ण, कम एलै उद्दाथा नहो । भद्दवनिणीए । एवला भद्रक भद्रक जिनवचन तर । सेणंदेवाणुप्पिएहि । तेम भाषणकरणहारे देवानुप्रिय । अब्भणुण्णाएसमाणे । आज्ञादी धाच्या । सयमेवपंचमहव्वयाइ आरोवेत्ता । पोतेज पांच प्राणातिपातादि पंचमहाव्रत प्रतें आरोपीने । समणाय । साधुसाधे गौतमादि प्रतें । समणी आयखामेत्ता । साधवी चंदनबालाप्रमुखने खमावीने । अम्हेहिसद्धिविपुलंपव्वय । अम्ह साथे विपुलगिरिनामा पर्वते इत्यादि सव । तचेवनिरवसेस । तिमज निर्विशेषे कहवा । आणुपुव्वीएकालगए । यावत् अनुक्रमे कालमरण पहता । इमेयसेआयारभंडएभंतेत्ति । एह तेहना आचार भांडउपकरण देखाडे हेभगवन । भगवंगोयमे । भगवंत गौतम समणंभगवंमहावीर श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीप्रतें । वंदइ नमसइ २ ता । वांदे नमस्कारकरे वांदीने नमस्कार करीने । एववयासी । इम कहताहवा । एवखलुदेवाणुप्पियाण अंतेवासी । इमनिश्चे हेदेवानुप्रिय ! तुम्हारा शिष्य । खंदएणामअण

मं परिच्चमव यस्या यो' घम्मसोपा श्विरसावत सं ॥ सठ्ठिभत्ताइति ॥ प्रतिदिनं भोजनद्वयस्य त्यागा षिशता दिने षष्टिभक्तानि त्यक्तानि भवन्ति ॥ अणसणाएत्ति ॥ माकृतत्वा दनशनेन ॥ छेदेत्ति ॥ छित्वा परित्यज्य ॥ आलोइयपडिक्कंतेत्ति ॥ आलोचित गुरूणां निवेदित य दतिचा रजात स्प्रतिक्रान्त मकरणविषयीकृत येना सा वालोचितप्रतिक्रान्तो, ऽथवा, ॥ आलोइयपडिक्कंतत्ति ॥ आलोचित घाता यालाचमादाभा स्प्र तिक्रान्तय मिथ्यादुष्कृतदाना दालोचितप्रतिक्रान्तः ॥ परिनिव्वाणवत्तियंत्ति ॥ परिनिर्वाण मरण तत्र यच्छरीरस्य परिष्ठापन तदपि परिनिर्वाणमेव

पडिपुण्णाइ दुवालसवासाइ सामण्णपरियाग पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए अत्ताण ज्झूसित्ता सट्ठिभत्ताइ अणसणाए छेदित्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते आणुपुव्वीए कालगए, तएणतेथेराभगवतो खदयअण गार कालगयं जाणित्ता परिनिव्वाणवत्तिय काउसग्ग करेइ, पत्तचीवराणिगिण्हति, विपुलाउ पव्वयाउ सणि यसणिय पच्चोरुहति पच्चोरुहइत्ता जेणेवसमणेभगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता समणभगव

पुणाई दुवालसवासाई। सम् प्रतिपूर्ण पूरा वारेवरसने। सामण्णपरियागपाउणित्ता। चारित्र पर्याय एतले दीक्षा पालीने। मासियाएसंलेहणाए। एक मासनी संलेखणाये करीने। अत्ताणज्झूसित्ता। आत्माने सेवीने आदरीने। सट्ठिभत्ताइ अणसणाइ छेदित्ता। दिनमां भोजन दायना त्यागथकी चोसे ठिने साठभात अनशने तजीने छेदीने गुर्वादिके बेहुतमा पतीचारकथा। आलोइयपडिक्कंतसमाहिपत्ते। ते गुरुने समक्षबोले आलोईने तेहनो मिथ्या दुष्कृतदेइने समाधिपाम्या मानसोपोध रहितथया। आणुपुव्विकालगए। अनुक्रमे आयपूरी एतावता मरणपाम्या। तएणतेथेराभगवंता। तिवारे ते स्थविर भगवंत। खदयंअणगारकालगयजाणित्ता। खदकसाधुमरी मरणपाम्या जाणीने। परिनिव्वाणवत्तियकाउसग्गकरेति। मरणनिमित्ते तिहां जेम रोतणा परठवाते यथि परनिर्वाणकोल तेहेतुके जेहनेते काउसग्गकरे एतले मृतकशरीर वोसरावीने। पत्तचीवराणिगिण्हति। पात्रप्रमुख वस्त्र ग्रह रण करे। विपुलाओपव्वयाओसणियं २ पच्चोरुहति। विपुलनामा पर्वतथको हलवे २ उतरे उतरीने। जेणेवसमणेभगवंमहावीरे। जिहां श्रमण भ।

महावीर वदइ नमसइ वंदित्ता नमंसित्ता एववयासी , एवखलु देवाणुप्पियाण अतेवासी खदएणामअण गारे पगइभद्दए पगइउवसंते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे मिउमद्दवसपन्ने अल्लीणे भद्दए विणीए सेणदे वाणुप्पिएहिं अब्भणुण्णाएसमाणे सयमेवपंचमहव्वयाणि आरोहेत्ता समणाय समणीओय खामेत्ता अम्हेहिं सद्धि विपुल पव्वय तचेव निरवसेस जाव आणुपुव्वीए कालगए , इमेयसे आयारभंडए भंतेत्ति, भयवगोयमे स मणभगव महावीर वदइ णमसइ वंदित्ता णमंसित्ता एववयासी, एवखलु देवाणुप्पियाण अतेवासी खद

वद नामस्कारस्वामीने । तेवेदववामस्थति २ त्ता । विहां आवे तिहां आवीने । समणभगवमहावीर वदइ नमसइ २ त्ता । श्रमण भगवंत श्रीमहावीर स्वामीप्रते वांदे नमस्कारकरे वंदनाकरीने नमस्कारकरीने । एववयासी । इम कहताहवा । एवखलुदेवाणुप्पियाण अंतेवासी । इम निश्चे हेदेवानुप्रिय ! हेभगवन् ! तुम्हाराशिष्य । खदएणामअणगारेणगभद्दे । खदकनामे साधु प्रकतेभद्रीक भद्रक दुष्टचितारहित । पगइउवसंते । प्रकृते उपशांत कषायरहित । पगइपयणुकोहमाणमायालोभे । स्वभाव पातलापाडया क्रोध मान माया लोभजिणे । मिउमद्दवसपन्ने पासाधि । मृदु मार्दव मनोहरी सपूर्ण, काम रहे पराधीन नथी । अल्लीणे । एवला गाढा भद्दग जिनवचन तह । सेणदेवाणुप्पिएहिं । ते माझा नमस्कारे, देवानुप्रिय । अब्भणुण्णाएसमाणे । आज्ञादी धावा । सयमेवपंचमहव्वयाइ आरोवेत्ता । पालैके सर्व प्राणातिपातादि पंचमहाव्रत प्रते आरोपीने । समणाय । साधुवाने गौतमादि प्रते । समणी आयखामेता । साधवी चदनबालाप्रमुखने खमावीने । अम्हेहिंसद्धिविपुलंपव्वय । अम्ह साथे विपुलगिरिनामा पर्वते इत्यादि सर्व । तचेवनिरवसेस । तिमज निर्विशेषे कहवा । आणुपुव्वीएकालगए । यावत् अनुक्रमे कालधर्म पाम्या । इमेयसेआयारभंडएभंतेत्ति । एह तेहना आचार भांडउपकरण देखाडे हेभगवन । भयवगोयमे । भगवंत गौतम समणभगवमहावीर श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीप्रते । वदइ णमसइ २ त्ता । वांदे नमस्कारकरे वांदीने नमस्कार करीने । एववयासी । इम कहताहवा । एवखलुदेवाणुप्पियाण अंतेवासी । इमनिश्चे हेदेवानुप्रिय ! तुम्हारा शिष्य । खदएणामअण

तदेव मत्यघो [illegible] येस्त च परिनिर्वाणमत्ययो त सं ॥ कहिंगएत्ति ॥ कस्यां गतौ ॥ कहिंउववन्नेत्ति ॥ [illegible] देवलोकादाविति ॥ एगइयाणंति ॥ एकेषा

एणाम ऋणगारे कालमासे कालकिञ्चा कहिंगए कहिंउववन्ने ? गोयमादि, समणेज्ञगव महावीरे ज्ञगवगो यम एववयासी, एवखलु गोयमा ! मम अतेवासी खदएणाम ऋणगारे पगइज्ञद्दए जाव सेण मए अम्भणु खाए समाणे सयमेव पचमहव्वयाइ आरुहेत्ता तचेव सब्ब अवसेसय नेयव्व जाव आलोइयपडिक्कते समा हिपत्ते कालमासे कालकिञ्चा अचुएकप्पे देवत्ताए उववन्ने, तत्यण अत्येगइयाण देवाण बावीससागरोवमा इ ठिइ पसत्ता, तत्यण खदयस्सवि देवस्स बावीससागरोवमाइ ठिई पसत्ता, सेणन्नते ! खदए देवत्ताउ

भाए। खदकनाम साधु। कालमासकालकिया। कालने अवसरे कालकरीने मरणपामीने। कहिंगएकहिंउववन्ने। किसिगतिनेविषे किसादेवलोका दिकनेविषे उपना इतिप्रश्न। गोयमादि। गौतमादिकने महावीर। समणेभगवमहावीरे। श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी। भगवगोयम। भगवंत गौत मप्रते। एववयासी। इम कहताहवा। एवंखलुगोयमाममअतेवासी। इम निश्चे हेगौतम। माहरा शिष्य। खदएणामअणगारे। खदक इसेनामे साधु। पगइभद्दए जावसेणमए। यावत् तेहने मैं आज्ञादीधाथका। सयमेवपचमहव्वयाइ आरोपिता। आपणपेज पांचमहाव्रतमते यावोने आरोपीने। तचेव सर्व अवशेषविशेषितव्य। तिमज निश्चे सब विशेषरहित कहवा। जावआलोइयपडिक्कते समाहिपत्ते। यावत् आलोइ पडिक्कमीने निराबाधपद समाधि पामी। कालमासेकालकिया। कालने अवसरे कालकरीने। अचुएकप्पेदेवत्ताएउववन्ने। बारमा अच्युतनामा देवलोकनेविषे देवपणे उपनो। तत्थण अत्थेगइयाणदेवाण। ते बारमा देवलोकनेविषे केतलाएक देवना पणि समुत्पन्नो। बावीससागरोवमाइठिईपन्नत्ता बावीस सागरोपमनी स्थिति परूपी। तत्थण खदयस्सविदेवस्स। तिहां खदक पणि देवनी। बावीससागरोवमाइठिईपन्नत्ता। बावीस सागरोपमनी स्थितिछै परूपी। सेणंभंते! खदएदेवताओदेवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएण। ते हे पूज्य स्वामी, हे भगवन्। खदक देवताथी देवलोकथी आयुक्षय

मतु ध्रुवपा ॥ धाउक्खएणंति ॥ आयुकर्मदलिकनिर्जरणेन ॥ भवक्खएणंति ॥ देवभवनिबन्धनभूतकर्मणां गत्यादीनां निर्जरणेन ॥ ठिइक्खएणंति ॥ आयुष्ककर्मण स्थिते र्वेदनेन ॥ अणंतरंति ॥ देवभवसम्बन्धिनं ॥ चयंति ॥ शरीरं चइत्ततित्ति ॥ त्यक्त्वा अथवा चयनं ॥ च्यवन ॥ चइत्तत्ति ॥ च्युत्वा कृत्वा अनंतरं ॥ नमिव्यती त्येव ममनरमहस्स सम्बन्धः काय ॥ इति द्वितीयशतप्रथम उद्देश समाप्त ॥ १ ॥ अथ द्वितीय आरभ्यते अस्यायं मभिसम्बन्धः ॥ देवमारवेयंमरमाऽदेवीवेमारइति ॥ मानुष्यं मरणंच मारणान्तिकसमुद्घातेन समवहतस्या व्ययाय भवतीति समुद्घातस्वरूप मिहो च्यत इत्येवं सम्बन्धस्या स्येद सूत्रं ॥ कइणंभंतेसमुग्घायाइत्यादि ॥ तत्र हनहिंसागत्योरितिवचनात् हननानि घाताः स मेकीभावे उ त्प्राबल्ये तत प एकीभावेन प्राबल्येन घाताः समुद्घाताः अथ कन सहै कीभाव? उच्यते यदा आत्मा वेदनादिसमुद्घातगतो भवति तदा वेदनाद्यनुभवज्ञानप

देवलायात्र आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण अणंतर चयंचइत्ता कहिंगमिहिति कहिंउववज्जिहिति गोय
मा ! महाविदेहे सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिनिव्वाहिति सव्वदुक्खाणमंत करिहिति खंदउसम्मत्तो ॥
बिइयसयस्स पढमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ कइणंभंते ! समुग्घाया पण्णत्ता ? गोयमा !

मायुष निर्जरतेंकरी देवभवसम्बंधी कर्मप्रकृतिकने निर्जरतेंकरी आयुष्यकर्मनोस्थितिने वेदवेकरी । अणंतरचयचइत्ता । अंतर रहित मनुष्यनें चरी र तेमते तजोने । कहिंगमिहिति । किहांजासे । कहिंउववज्जिहिति । किहां उपजस्से एसे प्रश्नकीधे । गोयमा महाविदेहेसिज्झिहिति बुज्झिहि ति मुच्चिहिति परिनिव्वाहिति । हेगोतम ! महाविदेहक्षेत्रनेविषे सोभाग्य तत्सम आयुष्यक्षय समयो सुकायें मोतसे भाव इसें । सव्वदुक्खाणमंतकरि हिति । शरीरमानस दुःखना अंतकरसे ए पंचविशेषणना अर्थ पूर्वलिख्याछे तेहथी विस्तारे जाणवा । खंदउसम्मत्तो । एखंदकना अधिकार संपूर्णथयो । बितिअसयस्सपढमो उद्देसोसम्मत्तो । एबीजाशतकना पहिला उद्देशा पूरोथया ॥ १ ॥ पाछिले बिसेमरणे मरतांथकां स्कंदकने दसो मरणना अधिकार कह्या, ते मरण मारणांतिक समुद्घाते करीथाय तेमाटे मरणसमुद्घात कहीयेछे । कइणंभंतेसमुग्घाया पण्णत्ता । केतला हेभगवन् ! स

रितएव भवतीति वेदनाद्यनुभवद्वारेण सर्वेजीवाः कथ प्रावल्येन घाता कथ? मुच्यत यस्मा द्वेदनादिसमुद्घातपरिणतो बहून् वेदनीयादिक
ममप्रदेशान् कालांतरानुभवयोग्या मुदीरणाकरणेन कृष्य उदये प्रक्षिप्या मुभूय निर्जरयति आत्मप्रदेशैः सह श्लिष्टान् शातयतीत्यर्थ अत प्राव
ल्येन घाताइति ॥ सत्तसमुग्घायत्ति ॥ सप्तसमुद्घाताः एतच प्रज्ञापनाया मिव द्रष्टव्याः अतएवाह ॥ छउमत्थियइत्यादि ॥ छाउमत्थियसमुग्घाय
वज्जति वरवजत । छाउमत्थियासमुग्घायावज्जाइत्यादि सूत्रसूचित ॥ समुग्घायपयंति ॥ प्रज्ञापनायाः षट्त्रिंशत्तमपद ममुद्घाताभि मिद तेनख
तदेव—कइ णं भंते ! समुग्घाया पन्नत्ता? गोयमा ! सत्तसमुग्घाया पन्नत्ता तजहा—वेयणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए इत्यादि इहसग्रहगाथा—वेय
ण १ कसाय २ मरणे ३ वेउव्विय ४ तेयए ५ आहारे ६ । केवलिएचेवजवे जीवमणुस्साणसत्तेव ७ ॥ १ ॥ जीवपद मनुष्यपदेच सप्ताप्या नारका

सत्त समुग्घाया पन्नत्ता, तंजहा—वेयणासमुग्घाए एवं समुग्घायपयं छउमत्थियसमुग्घायवज्जं नाणियव्वं जा
व वेमाणियाणं, कसायसमुग्घाया अप्पाबहुयं, अणगारस्सणं भंते ! भावियप्पणो केवलीसमुग्घाय जाव सा

मुद्घात करोति भवित्वमर्थात् न समुद्घात करोति तन्निषेधार्थमाहोति वचनात् उत्तर । गोयमा सत्तसमुग्घाया पन्नत्ता तंजहा वेयणासमुग्घाए एवस
मुग्घायपयं छउमत्थियसमुग्घायवज्जं भाणियव्वमित्यनेनाभिधाय । वेगोयम । सात समुद्घात कह्या तिहांकहे—वेदनासमुद्घात इम पन्नवणानोपदे देखवा
एतला मांटेज कहेछे—छउमत्थिय समुग्घाय वज्जति । कइणंभंते समुग्घाया पन्नत्ता इत्यादि, सूत्रवर्जित, समुग्घायपयंति पन्नवणानो छत्तीसमोपद स
मुद्घात इहां भावना कहवा त तेयजो देखाडेछे—कइणं भंते समुग्घाया पन्नत्ता सत्त समुग्घाया पन्नत्ता तंजहा वेयणसमुग्घाए इत्यादि । वेयण १ कसा
य २ मरणे ३ वेउव्विय ४ तेयण ५ आहारे ६ । केवलिय ७ चेवभवे जीवमणुस्साणसत्तेव ॥ १ ॥ तिहां वेदना समुद्घाते करी वेदनीय कर्मघातकरे १ कषाय
समुद्घातेकरी कषाय पडलना घातकरे २ मारणांतिक समुद्घाते करी आयुःकर्मपुद्गलना घातकरे ३ वैक्रियसमुद्घातेकरी जीवप्रदेशमते शरीरथकी
बाहिरकाढी शरीरविष्कंभ बाहल्यमात्र ३ पछे आयामथी संख्येययोजन दंडप्रत रचो यथा सूक्ष्म वैक्रियशरीरनामपुद्गल पूर्वेग्रह्या तेमने घातकरे, तथा

यात करोति, कषायसमुद्घातेन कषायपुद्गलानां घातं करोति, मारणान्ति

दिषु यथायाममित्यर्थ तत्र वेदनासमुद्घातेन समुद्धत आत्मा वेदनीयकर्मपुद्गलानां घात करोति, कषायसमुद्घातेन कषायपुद्गलानां मारणान्ति

कसमुद्घातेन आयुःकर्मपुद्गलानां वैकुर्विकसमुद्घातेन समुद्धतो जीवप्रदेशान् शरीराद्बहिर्निष्काश्य शरीरविष्कम्भबाहल्यमात्रं आयामतश्च संख्येययोजना

नि दण्डं निसृजति निसृज्य च यथास्थूलान् वैक्रियशरीरनामकर्मपुद्गलान् प्राग्बद्धान् घातयति यथा सूक्ष्मान् आदत्ते यथोक्त-वैक्रियसमुद्घाप

च समोहए२त्ता सकृत्स्नं बोपवार ईक्ष जिघिरइ आहारयरे पोग्गले परिसाडेइ अहासुहुमपोग्गले आइयत्ति, एवं तैजसाहारकसमुद्घातावपि

व्याख्येयौ, केवलिसमुद्घातेन तु समुद्धतः केवली वेदनीयादिकर्मपुद्गलान् घातयतीति एतेषु च सर्वेष्वपि समुद्घातेषु शरीराज्जीवप्रदेशाभिनिर्मोक्षित

सर्वेष्वेते अन्तर्मुहूर्तमाना नवरं केवलिको ऽष्टसामयिकः एते चैकेन्द्रियविकलेन्द्रियाणां आदित्त्रयो, वायुनारकाणां चत्वारो, देवानां पञ्चेन्द्रिय

तिरश्चां च पंच, मनुष्याणां तु सप्त॥ इतिद्वितीयशते द्वितीय उद्देशः समाप्त ॥ २ ॥ अथ तृतीय आरभ्यते अस्य चाय मभिसम्बन्ध

द्वितीयोद्देशके समुद्घाताः प्ररूपिता तत्र च मारणान्तिकसमुद्घात तेनच समवहताः केचित् पृथिवीषु उत्पद्यन्त इती इ पृथिव्यः प्रतिपाद्यन्तइत्येव

सयमणागयरु चिट्ठति, समुग्घायपय णेयव्व॥ बिइयसए बीओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ २ ॥ कइ

सूक्ष्मपणे प्रतेवरे ४ एम तैजस आहारक समुद्घात पणि जाणवा। केवलिसमुद्घातेकरी केवली वेदनीयादि कर्मपुद्गलनो घातकरे ५ ए सर्वसमुद्घात

नोविषे शरीरथकी जीवप्रदेशना निसरवे, सर्वनोमान अंतर्मुहूर्तनाके, एतला विशेषके केवली समुद्घात आठसमय प्रमाणके, ए समुद्घात एकेंद्रिय विक

लेंद्रियने पहिलातीनहुवे, वायुकाय नारकीने पहिला चारहुवे, देवता अने पंचेंद्रीतिर्यंचने पंचहुवे, मनुष्य सर्वोने अने जीवपदे सात समुद्घात हुवे एम

यावत् वैमानिकलांइ कहवा कषायसमुद्घात अनंतगुणासणे कहवो। अणगारस्यभंतेभावियप्पणोकेवलिसमुग्घाय। अणगारसाधु हेभगवन्। भावितात्मा

आने केवलि समुद्घात। जावसासयमणागयद्धंचिट्ठति। यावत् शाश्वता अनागतकाल रही। समुग्घायपयंनेयव्व। समुद्घात पद पन्नवणाना छत्तीसमो

जाणवो। बितियसयस्यबितियो। ए बीजा शतकना बीजा उद्देशा अर्थथी विस्तरे ॥ २ ॥ पाछिले उद्देशे समुद्घात कह्या तेहने

रिकतएव भवतीति वेदनासमुद्घातः पञ्चीनावः, यस्य मावल्येन घाताः कथं? मुख्यत यथा हृदनाविमगुद्घातपरिगता भ५ (पद्मीवादिक समुद्घातम् कालान्तरानुभवयोग्या पुद्गला कर्मणो कष्ट उदय प्रतिघ्या पुरुष निर्जरयति आत्मप्रदेशैः सह श्लिष्टान् शातयतीत्यर्थः' यतः प्राव स्यन घातादिति ४ सत्तसमुग्घायपदंति ॥ सप्त समुद्घाताः, एतच प्रज्ञापनाया सिव द्रष्टव्यं, अतएवाह ॥ जावमाणियाणमित्यादि ॥ छाउमत्थियसमुग्घाय वज्जति वक्तव्यं । छाउमत्थियसमुग्घायवज्जमित्यादि सूत्रनिर्देशं ॥ समुग्घायपयंति ॥ प्रज्ञापनाया षट्त्रिंशत्तमपदं समुद्घाताख्यं सिद्ध यातव्य, तदेव-एवं भंते! समुग्घाया पण्णत्ता? गोयमा! सत्तसमुग्घाया पण्णत्ता, तंजहा–वेयणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए इत्यादि' एवमपदनामा यथ वे १ कसाय २ मरणे ३ वेउव्विय ४ तेयए ५ आहार ६ । केवलिएचेव ७ जीवमणुस्सानसत्त ७ ॥ १ ॥ जीवपदे मनुष्यपदे च सप्त समुद्घाता

सत्त समुग्घाया पण्णत्ता, तंजहा—वेयणासमुग्घाए एवं समुग्घायपयं छउमत्थियसमुग्घायवज्जं भाणियव्वं जाव वेमाणियाणं, कसायसमुग्घाया अप्पाबहुयं, अणगारस्स णं भंते ! भावियप्पणो केवलीसमुग्घाय जाव सा

मूलार्थ वरोधे पतिपयमनपाय से समुद्घात करीये अनुदिया मध्यादिति वचनात् घात । भावसा सत्तसमुग्घाया पण्णत्ता तंजहा वेयणसमुग्घाय एवम् मुग्घायपय छउमत्थियसमुग्घायवज्जं भाणियव्वं जाव वेमाणियाणं । वेमीतस) भाव समुद्घात कहा लेकरीने—वेदनासमुद्घात एम पन्नवणामांपदे वेयणा एतला माटेज कहे छे –छद्मस्थिक समुद्घात वर्जीने । कसायमंत्र समुग्घाया पण्णत्ता इत्यादि, सूत्रवर्णन, समुग्घायपयंति पन्नवणाना छत्रीसमापद स मुद्घात एवी भावना करवा न करवा वेदावीने—कदवं भंते समुग्घाया पण्णत्ता सत्त समुग्घाया पण्णत्ता तंजहा वेयणसमुग्घाए इत्यादि । वेयण १ कसा य २ मरणे ३ वेउव्विय ४ तेयए ५ आहारे ६ । केवलिय ७ चेवभवे जीवमणुस्साणसत्तेव ॥ १ ॥ तिहां वेदना समुद्घात करी वेदनाथ कर्मपातनकरे १ कषाय समुद्घातेकरी कषाय पुद्गल पातनकरे २ मारणांतिक समुद्घाते करी प्राण आयुकर्मना पातनकरे ३ वैक्रियसमुद्घाते करी आतमप्रदेशपते शरीरथकी बाहिरकाढी शरीरविष्कंभ बाहल्यमात्र ४ पछी पाताना प्रदेशें संख्यायोजन दण्डपते करी, यथा सूत्र वैक्रियशरीरनामकर्म पूर्वबद्धा तपत पातनकरे तथा

रिपुत्र यथायोममित्यथ तत्र वेदनासमुद्घातेन समुहत आत्मा वेदनीयकर्मपुद्गलानां घातं करोति, कषायसमुद्घातेन कषायपुद्गलानां मारणान्ति कसमुद्घातेन आयुःकर्मपुद्गलानां वैकुर्विकसमुद्घातेन समुहतो जीवप्रदेशान् शरीराद्दहिर्निष्काश्य शरीरविष्कम्भबाहल्यमात्र मायामतश्च सङ्ख्येययोजना मि दण्डं निसृजति निसृज्य च यथास्थूलान् वैक्रियशरीरनामकर्मपुद्गलान् प्राग्बद्धान् शातयति यथा सूक्ष्मां श्चादत्ते यथोक्त-वैक्रियसमुद्घात व समोहणइ२त्ता सयस्त्रारं कोयवारं दंडं निसिरइ आहारावायरे पोग्गले परिसाडइ अहासुहुमेपोग्गले आइयति, एवं तैजसाहारकसमुद्घातावपि व्याख्येयौ केवलिसमुद्घातगतु समुहतः केवली वेदनीयादिकर्मपुद्गलान् शातयतीति' एतेषु च सर्वेष्वपि समुद्घातेषु शरीराज्जीवप्रदेशनिर्गमोऽस्ति सर्वैषते चतुर्मुहूर्तमाना नवरं केवलिको ऽष्टसामयिकः एते चैकेन्द्रियविकलेन्द्रियाणां मादित्र कषा, वायुनारकाणां चत्वारो देवानां पञ्चेन्द्रिय तिरश्चां च पञ्च, मनुष्याणां तु सप्त ॥ इतिद्वितीयशते द्वितीय उद्देशः समाप्तः ॥ २ ॥ अथ तृतीय आरभ्यते अस्य चाय मभिसम्बन्ध द्वितीयोद्देशके समुद्घाताः प्ररूपिता स्तेषु च मारणान्तिकसमुद्घात सम्प समवहताः केचि त्पृथिवीषू त्पद्यन्त इती च पृथिव्य प्रतिपाद्यन्तइत्येव

सयमणागयस्स चिट्ठति, समुग्घायपयं णेयव्वं ॥ बिईयसए बीउ उद्देसो सम्मत्तो ॥ २ ॥ कइ

सूत्रपूरव पतेबरे ४ इम तैजस आहारक समुद्घात पण बखाणवा। केवलिसमुद्घातेंकरी केवली वेदनीयादि कर्मपुद्गलने घातकरे ५ ए सघसमुद्घात नोविषे शरीरथको जीवप्रदेशानो निकलवो, सघलोमान अंतर्मुहूर्तनोछै, एतला विशेष जे केवली समुद्घात आठसमय प्रमाणछै, ए समुद्घात एकेंद्रिय विक लेंद्रिने पहिलातीनहुवे, वायुकाय नारकीने पहिला चारहुवे, देवता अने पचेंद्रीतिर्यंचने पचहुवे मनुष्य मध्योमे अने जीवपदे सात समुद्घात हुवे इम यावत् वैमानिकतांइ कहवा कषायसमुद्घात घणाबहुलपणे कहवा। पचमारणांतिकसमुद्घात अंतिमांतिकसमुद्घात। पंचमारणाअं हे भगवन्! भाविता आने केवलि समुद्घात। आवसाय समयानमर्यादिकृति। यावत् शाश्वता पचासतकाल रहै। समुग्घायपदत्रेयम। समुद्घात पद पन्नवणाना छत्तीसमो सबकहवा। बितियसयस्स बितिया। ए बीजा शतकना बीजा बाद्यो उद्देशो सिद्धा ॥ २ ॥ पाछिले उद्देशे समुद्घात कह्या तेहने

सम्बन्धस्या स्पष्ट मारिसूत्र ॥ कइ णं भंते ! पुढवीओ इत्यादि ॥ इहच जीवाजिगमनारकद्वितीयोद्देशके अयसयहगाथा–पुढवीओगाहित्ता निरयासठाय मेवबाहल्ल । विक्खंभपरिक्खेवो वण्णोगंधोयफासोय ॥ १ ॥ सूत्रपुस्तकेषु पूर्वाद्धमव लिखित शेषाणां विवक्षितार्थानां यावच्छब्देन सूचितत्वादि ति तत्र ॥ पुढविति ॥ पृथिव्यो वाच्या स्तायेवं–कइ णं भंते ! पुढवीओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! सत्त सत्तहा–रयणप्पभेत्यादि । ओगाहित्तानिरयत्ति ॥ पृथिवी मवगाह्य कियद्दूरे नरका इतिवाच्य तत्र स्या रत्नप्रभाया अशीतिसहस्रोत्तरयोजनलक्षबाहल्याया मुपर्यक योजनसहस्रमवगाह्याधश्चैक म वर्जयित्वा त्रिंशन्नरकलक्षाणि भवन्ति एव शर्कराप्रभादिषु यथायोग वाच्य ॥ सठाणमेवत्ति ॥ नरकसस्थान वाच्य तत्र ये आवलिकाप्रविष्टा स्ते वृत्ता त्र्यस्रा चतुरस्राश्च इतरस्तु नानासस्थानाः ॥ बाहल्लंति ॥ नरकाणा बाहल्य वाच्य, तच्च त्रीणियोजनसहस्राणि कथं अधः एक मध्ये शुषिर

पन्नत्ते ! पुढवीओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! जीवाभिगमे नेरइयाण जो बितिओ उद्देसो सो णेयव्वो, पुढवीओगा हित्ता निरयासठाणमेवबाहल्लं । विक्खंभपरिक्खेवो वण्णोगंधोयफासोय ॥ १ ॥ किं सव्वपाणा उववन्नपुव्वा ?

विषे नैरयिकजीव मारणांतिक समुद्घात करीने पृथिवीओनेविषे उपजे तेहभणी पृथिवीना अधिकार कहेछे–कइणंभंते पुढवीओ पन्नत्ताओ जीवाभिग मे नेरइयाण बीजितिओउद्देसोकेहवो । केतली हे भगवन् ! पृथिवी कही इतिप्रश्न, जीवाभिगमने नारक बीजाउद्देशानेविषे अथ सग्रहगाथा कि बिही एक पुस्तकनेविषे गाथाना पूर्वार्द्धज लिख्युंछे शेष अर्थ यावत् शब्दे कहवो, तत्र पृथिवी कहवो, तेहस केतली हे भगवन् ! पृथिवीओ कही, गोतो म सात पृथिवीओ कही, तेकेही रत्नप्रभा इत्यादि । ओगाहित्ता निरयासठाणमेवबाहल्लविक्खंभपरिक्खेवो इति । पृथिवी अवगाही केतलीदूर नरकावासाछे तिहां रत्नप्रभापृथिवीनेविषे एकलाख अयोंसहस्र योजननो पिण्डछे, तेमाहे उपरि एक सहस्र योजन अवगाही ने नीचे एकसहस्र योजन मूकीने तेविचमा त्रीसलाख नरकावासाछे इम शर्करप्रभादिक पृथिवीनेविषे यथायोग्य कहवा, । सठाणमेवत्ति । नरकना सठाणकहवा तिहां जे आवलिका प्रविष्टनरकावासाछे तेवृत्त त्र्यंस चउरंसछे, अने बीजा नानाप्रकार सठाणेछे । बाहल्लंति । नरकना बाहल्य ते कहवा त्रिणिसहस्रयोजनकहे तेकिम नीचे एकसहस्रयोजनघन

मेरु मुपरि च सद्भावएव मिति ॥ विक्खम्भपरिक्खेवोत्ति ॥ एतौ वाच्यौ' तत्र असङ्ख्यातविस्तृतानां असङ्ख्यातयोजन आयामो विष्कम्भः परिक्षेपश्च इतरेषां
स्वस्यपति, तथा यथाद्या वाच्या 'सोवा स्वत्त मनिहा' इत्यादि वक्तव्य याव इय मुद्देशकान्तो वक्तव्य ॥ किमयापाणइत्यादि ॥ अस्यैव प्र
योयः, अस्यां रत्नप्रभायां पृथिव्यां नरकावासेषु किं सर्वे प्राणादय उत्पन्नपूर्वाः प्रश्नोत्तर ॥ असइति ॥ असकृत् अनेकशः' इत्यत्र वेलाद्वयापायापिस्या इतो
स्वल्पायुस्त्वप्रतिपादनायाह ॥ अदुवत्ति ॥ अथवा ॥ अणंतखुत्तोत्ति ॥ अनन्तकृत्वो अनन्तवारान् ॥ इतिद्वितीयशतेतृतीय उद्देशः समाप्तः ॥ ३ ॥
तृतीयोद्देशके नारका उक्ता, ते च पञ्चेन्द्रिया इतीन्द्रियस्वरूपाय चतुर्थोद्देशक, तस्य चादिसूत्र ॥ कइणमित्यादि ॥ पढमिल्लोइंदियउद्देसोणेयव्वोत्ति ॥
प्रज्ञापनाया मिन्द्रियपदाभिधानस्य पञ्चदशपदस्य प्रथमउद्देशको ऽत्र नवमो ऽध्येतव्य, तत्र च द्वारगाथा–संठाणंबाहल्लं पोहत्तंकहपएसओगाढे '

इतागोयमा ! असति अदुवा अणतखुत्तो पुढवीउद्देसो ॥ बितियसए तइओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ ३ ॥
कइणंभंते ! इंदिया पण्णत्ता ? गोयमा ! पंच इंदिया पण्णत्ता, तंजहा–पढमिल्लो इंदियउद्देसो णेयव्वो, संठा

मध्ये एकलाख योजन सहित छे ऊपर एकलाख योजन ना कहाया छे, तथा विक्खम्भपरिक्खेवो विष्कम्भ अने परिधि कहवा, तिहां संख्यात योजनविस्तार छे
तथा संख्यात योजन आयामे अने विष्कम्भे तथा परिधिये अने बीजा असंख्यात योजनना छे ते आयामे १ विष्कम्भे २ अने परिधि असंख्यात योजनना जाणवा
तथा । यथासंभव प्रमाण । किमयापाणइत्यादि इत्यादिक अदुवा अणंतखुत्तो पुढवीउद्देसो । अर्थाधिक कहवा ते अत्यंत अनिष्ट इत्यादि अथो
यावत् ऊपरोक्तना अंतसुधी इत्यादि एहना रत्नप्रभा नामक रत्नप्रभा पृथिवीना त्रीसलाख नरकावासा ने विषे अ समस्त प्राणी अथवा पूर्वे इति
प्रश्न उत्तर हां एकवार नहीं अनेकवार अथवा अनन्तीवार उपना पृथिवीना उद्देशानी पेरे । बितियसयस्सतइओउद्देसो । एबीजा शतकनो त्रीजो
उद्देशो समाप्तोविषया ॥ ३ ॥ त्रीजे उद्देशे नारकीकह्या ते नारकी पंचेन्द्रीछे तेथी इन्द्रीना अधिकार कहेछे–कइणंभंतेइंदिया पण
त्ता गोयमा पंचइंदिया पण्णत्ता तंजहा पढमिल्लोइंदियउद्देसो अणेयव्वो । केतला प्रकारे, हेभगवन् ! इन्द्रियकह्या इतिप्रश्न हेगोतम ! पांचइन्द्री क

सम्पात्पुप्फपत्ति दविसयमसारयाकारे ॥ १ ॥ इदच सूत्रपुस्तकेषु हारकपमेव लिखितं, स्रोपासु तद्या याथच्छन्देन सूचिता तत्र संस्थान श्रोत्रे न्द्रियाणां वाच्यं तद्येदं–श्रोत्रेन्द्रियं कदम्बपुष्पसंस्थितं चक्षुरिन्द्रियं मसूरकचन्द्रसंस्थितं मसूरक मासमविशेष धद्र: घ्राणं पयसा मसूरकचन्द्रो धा न्यविशेषदलं घ्राणेन्द्रियं अतिमुक्तकचन्द्रसंस्थितं अतिमुक्तकचन्द्रक पुष्पविशेषदल रसनेन्द्रियं क्षुरप्रसंस्थितं स्पर्शनेन्द्रियं नानाकार ॥ बाहल्लंति॥ इंद्रियाणां बाहल्यं वाच्यं तद्येदं–सर्वाण्यप्यङ्गुलासंख्येयभागबाहल्यानि ॥ पोहत्तंति ॥ पृथुत्वं तद्येदं–श्रोत्रचक्षुर्घ्राणानां अङ्गुलासंख्येयभागा जिह्वेन्द्रिय स्य अङ्गुलपृथक्त्वं स्पर्शनेन्द्रियस्य च शरीरमानं ॥ कइपएसत्ति ॥ अनन्तप्रदेशनिष्पन्नानि पञ्चापि ॥ ओगाढत्ति ॥ असंख्येयप्रदेशावगाढानि ॥ अप्पा बहुत्ति ॥ सर्वस्तोक चक्षुरवगाहते ततः श्रोत्रघ्राणेन्द्रियेक्रमेण संख्यातगुणे ततो रसनेन्द्रियमसंख्येयगुणं तत स्पर्शनं संख्येयगुणमित्यादि ॥ पुट्ठपविट्ठ

या तेवीसे—पचवणना पनरमा इन्द्रियपदना पहिला उद्देशा इहां कहवा। संठाण बाहल्ल पाहत्त। तिहां द्वारगाथा संठाणबाहल्ल पाहत्तकइपएसग्रा गाढे अप्पाबहुपुट्ठपविट्ठ विसयामणगारआहारे ॥ १ ॥ इहां सूत्रमांहे तोनद्वारलिख्या लिखेला। आदपनासाद न्द्रिय उद्देसो। रसनेन्द्री यावत् शब्दकरी जाणवा तिहां संठाण आवाहिजना कहवा, ते इम श्रोत्रेंद्री कदम्बकूसमे संठाने चक्षु इन्द्री मसूरक चद्रनेआकारे मसूर ते मासविशेष ना मसूरियो इतिजाणवा घद्र कहवा चन्द्रमा अथवा मसूरकचन्द्रमा एक नाम तेधान्यविशेष तेहनो पडं तथा घ्राणेंद्रिय अतिमुक्तचन्द्र ते फूल विशेषनो दल तेहने आकारे क्षुरप्रनेआकारे स्पर्शेन्द्रिय अनेक संठाने बाहल्लंति। इन्द्रियनावाहल्य कहवा, ते सव मी अंगुलनो असंख्यातमाभाग बाहल्यछे। पोहत्तंति एहत्व कहवा ते इम श्रावत्र ग्राण नो अंगुलना असंख्यातमाभाग पृथक, जिह्वेंद्रिय अंगुल पृथक, स्पर्शेन्द्रिय शरीरप्रमाणे। कइपएसत्ति। पंचेई अनंतप्रदेशी नीपनाछे। ओगाढत्ति। असंख्येयप्रदेशावगाढछे सव। अप्पाबहुत्ति। सर्वथाड़ चक्षुरवगाहनाथो तिवारपछी श्रोत्र घ्राण रसन अनुक्रमे संख्यातगुणा स्पर्श न्द्रिय असंख्यातगुणी अवगाहनाथो। पुट्ठपविट्ठत्ति। श्रोत्रादिक चक्षुरहित चार्ये अन धर्नेन्द्रिय स्पर्शनेपढे। विसयत्ति। सवनो जघन्यथी अंगुलना असंख्यात

ति ॥ मामादीनि वस्तूरादितानि स्पृष्टमयं प्रविष्टव सन्ति ॥ विसयति ॥ सर्वया अघन्यतो कुससया सङ्ख्यभागो विषय' सस्कयतस्तु मोग्रस्य द्वादश
योजनानि चतुप सातिरेक सव श्रेयाणां मवयोजनामीति ॥ अणगारेत्ति ॥ अनगारस्य समुद्घातसगतस्य ये निर्जरापुद्गला सा स छद्मस्थो मनुष्यः
पश्यतीति ॥ आहारेत्ति ॥ निर्जरापुद्गला नारकादयो न जानन्ति नपश्यन्ति, आहारयन्तिच स्वेवमादि अनुयाप्य अथ किमन्ताय सुहेसक इत्या
ए, याव दसाको Sलाकमूर्धात सवत—अलोगस पते। किणाफुडे कइहिंवा। कायहि फुडे? गोयमा। मोधम्मत्यिकायेण फुडे जाव नो आगास
त्यिकायेण फुडे आगासत्यिकायस्स देसेण फुडे आगासत्यिकायस्स पएस॰ए फुडे णोपुढविकायेण फुडे जाव आमद्धासमएण फुडे एगे अजीवदव्वदेसे
अगुरुलहुए अणतहिं अगुरुलहुगुणेहिं संजुत्ते सव्वागासे अणतभागूणेत्ति ॥ भालोको धर्मास्तिकायादिना पृथिव्यादिकायैः समयेनच स्पृष्टो व्यास
स्ततो तथा सप्ततात्‌ आकाशास्तिकायदेशादिभिय स्पृष्ट सपां तथा सत्यात्‌, एक आकाशवजीवद्रव्यदेश आकाशद्रव्यदेशत्वा तस्य ॥ इतिद्वितीयशते
चतुर्थ उद्दश समाप्त ॥ ४ ॥ अनन्तरमिन्द्रिया अनुक्ता तद्वाच परिचारकास्यादिति तन्निरूपणाय पञ्चमोद्देशकस्य इदमादि

प याहस्स पोहस्स जाय अलोगो इंदियउद्देसो ॥ बिइंयसए चउत्यो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ४ ॥
अन्नउत्थिया णं भंते ! एवं माइक्खंति भासेंति पण्णवेंति परूवेंति, एवं खलु नियंठे कालगए समाणे देवब्भूएणं अप्पा

सामाग विषय उत्कृष्टो मावना १२ योजन च सातिरेकयोजन अथवा ८ योजन। अणगारेत्ति। अणगार समुद्घातगतका जोनिर्जरापुद्गल तक
अम्य मनुष्यदेखे। आहारेत्ति। निर्जरापुद्गलको नारकादि नदेखे नजाने आहारे इत्यादिक अनुक्रमा। किये केतला लगे एउद्देसा कह्या ते कहेछे—
अलोगभागा। यावत्‌ अमासू अमापत स इस। असायोवअसे किणाफुडे कइहिंवाकाएहिंफुडे आदि आधमत्थिकाएणफुडे इत्यादिक अवो। बितिय सयस्स चउ
त्यउद्देसो। जीवा मसका माथा उद्देशो संपूर्ण तिख्या ॥ ४ ॥ पाछिले उद्देशे इन्द्रियकह्या, तेहने विषे परिचारणा कहेछे—अन्य
तीर्थाभत एवमा,कहति भासति पण्णवेति परूवेति। अन्यतीर्थी ते नाखाणकारे, सेभगवन्‌। इसकी सामान्यपणो भाषे महापे प्ररूपे। एवंखलुनियंठे। इस

मूत्र ॥ समनउत्यिएइत्यादि ॥ देवभूएणति ॥ देवभूतेन आत्मना करणभूतेन नोपरिचारयतीतियोगः ॥ सेवति ॥ असौ निग्रन्थदेव स्तत्र देवलोके मा नेव ॥ अवति ॥ अन्यान् आत्मव्यतिरिक्ताम् देवान् सुराम् तथा नो अन्यया देवानां सम्बन्धिनी देवीः ॥ अभिमुंजियत्ति ॥ अभियुज्य वशीकृत्य आ श्लिष्य वा परिचारयति परिभुंक्त ॥ णोअप्पणिच्चियाओत्ति ॥ आत्मीया ॥ अप्पणामेवअप्पाण विउव्वियत्ति ॥ स्त्रीपुरुषरूपतया विकृत्य इत्यर्थस्तिष्ठते ॥ एगेवियणमित्यादि ॥ परउत्थियवत्तव्वयाणेयव्वत्ति ॥ एव चेव आलवा ॥ ज समय इत्यियेय वेएइ तसमय पुरिसवेयवेएइ जसमय पुरिसवेय वेए इ तसमय इत्यियेयवेएइ इत्यिवेयस्स वेयणयाए पुरिसवेयं वेएइ पुरिसवेयस्स वेयणयाए इत्यिवेयवेएइ एवखलु एगे विएगसमएइत्यादि ॥ मिथ्यात्व

पेण सेयतस्स नो अण्णदेवे नोअण्णोसि देवाण देवीउ अभिजुंजिय अभिजुंजिय परियारेइ, णो अप्पणिच्चि याउ देवीउ अभिजुंजिय अभिजुंजिय परियारेइ, अप्पणामेव अप्पाणं विउव्विय २ परियारेइ, एगेविय णंजीवे एगेणसमएण दोवेदे वेदेइ, तंजहा—इत्यिवेयंच पुरिसवेयंच, एवं अण्णउत्थियवत्तव्वया णेयव्वा जा व इत्यिवेयंच पुरिसवेयंच सेकहमेयंभंते! एवं? गोयमा! जण्णंते अण्णउत्थिया एवमाइक्खंति जाव इत्यीवे

मिथ्यात्व मावत् । नात्मत्र भ्रमणसमाचे । आन्य पइंते । देवभूएण । देवतास्य । अमाणेव सणस्तस्सणा अण्णदेवे अण्णेसिंदेवाणं देवीओ अभिमुंजिय २ प रियारेइ । आत्मार करणभूतकर्तापरिचारणा । मन्ये इतिवाम ते निर्यदस्याय इत्यत देवमाकतेविवे । मणो अन्यदेवमते तया बोध्या देवस्वयो देवीमंते वश्यकरो ने परस्या भावितीति भामवे । आत्मपणिच्चियाउदेवीओ अभिमुंजिय २ परियारेइ । मणो आत्मसवधो देवीपरिवश्यकरी परस्या आत्मीयो परिचारणा करे मावरे आत्मनोय आत्मायें भी पुरुष रूपमते विकुर्वीनि २ परिचारणाभोगकरे इम इतावता । एगेवियणजीवे । एकपणि व नपुम नं आत्मासकारे, भी व । एमेगसमएणदोवेदेवेदेइ तजहा । एके समये दोयेज वेदे तेकहीहे । इत्यीवेदय । भोवेद वकों भने । परिसवेदंच । पुरुष वेद । एवपरउत्थियवत्तव्वयाणे यमा । इम परतीर्थी इसकहे ते कहो तव्यता आवतो । जावइत्थीवेदय । यावत् स्त्रीवेद नपुंस पुरुषवेद । सेकहमेवंभतिपश्न । मे आ अन्यतीर्थी इसकहे—

चेया मर्व स्त्रीरूपकरयपि तस्य देवस्य पुरुषत्वा त्पुरुषवेदस्यैं वैकत्र समये उदयो न स्त्रीवेदस्य वेदपरिवृत्याभावा स्त्रीवेदस्यैव न पुरुषवेदस्यो दय परस्परायिरुद्धत्वादिति ॥ दवसारसुहि ॥ देवजमपु मध्ये ॥ उववत्तारा प्रभस्तिसि ॥ प्राग्जनीस्या उपपत्ता भवतीति दृश्य ॥ महिड्डिए ॥ इत्यत्र या वत् करणा दिदृश्य—महज्जुइए महाबले महाजसे महासोक्खे महाणुभागे हारविराइयवत्थे कडयतुडियथंभियभुए ॥ तुटिका बाहुरक्षिका ॥ अ गयकुंडलमट्ठगंडतलकण्णपीढधारी ॥ अङ्गदानि बाह्वाभरणविशेषान् कुण्डलानि कर्णाभरणविशेषान् मृष्टगण्डानि घोल्लिखितकपोलानि कर्णपीठानि कर्णा भरणविशेषान् धारयती त्येवशीला य स तथा ॥ विचित्तहत्थाभरणे विचित्तमालामउलिमउडे ॥ विचित्रमालाच कुसुमस्रक् मौली मस्तके मुकुटंच य

यत्थ पुरिसवेयच जेतेएवमाहंसु मिच्छातेएवमाहंसु, अहंपुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि, एवं खलुनियंठे कालगएसमाणे अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवति महिड्डिएसु जाव महाणुभागेसु

तेथिमकहे एव हेभगवन् ! इम तेकहो । गोयमा जंतेयवउच्छिशा एवमाइक्खति । हेगौतम ! जेमाटे अन्यतीर्थी इमकहे । स्त्रीवेदच परिसवेदच वते एवमाहंस मिच्छतेएवमाहंस । यावत् जोवेट भने परुपवेद पवेस वद इणप्रकारे एकजीव एकसमय वेदेचे ते हेगौतम । इमकहेछे—त अन्यतीर्थी मिथ्या भूठू कहेछे—तेविम स्त्रीरूपकरेहे तापनि ते देवने पुरुषपणामाट पुरुष वेदमाज एकसमयनेविषे उदयछे पणि स्त्रीवेदमो उदयभथी भवथा वेदपालटे ता स्त्रीवेदमोज उदयछे पणि पुरुषवेदमा उदयनथी मोभामाहि विरुद्धभावथी । अहंपुण गोयमा एवमाइक्खामि । हु बलो हेगौतम । इमज कहूं छू सा मान्यपणेकहो । भाषेमि पमवेमि परूवेमि । विशेषथी हेतुकरी भेदकहवाथी । एवपक्षनिर्यठेकालगएसमाण । इम निश्चे निग्रंथ बाह्य अभ्यंतर प्रत्थर हित कालगत एतले मरणपाम्याथका । अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताएउववत्ताराभवति । अन्यतर कोइएक देवलोकनेविषे देवतापणे उपजे भवतरे । म हिड्डिए । मोटोछे ऋद्धि परिवार जेहने । जावमहाणुभागेसु । यावत्शब्दे मोटा अन्यवस्त शक्तिवंतनेविषे उत्पन्न थइथा । दूरगइसु दूरठिईसु सेयत त्यदेवभवइ महिड्डिए । वेगनीमतिने थकात् उपरदेवलोकनेविषे थकोस्थितिछे आयुकममी जिहां ते निश्चय बाह्याभ्यंतरे, तिहां देवपणेहुवे महापरि

स सतया इत्यादि यावत् रिद्धीए जुइए पभाए छायाए अच्चीए तेएणं लेसाए दसदिसाओ उज्जोएमाणेत्ति ॥ तत्र ऋद्धि परिवारादिका द्युति रि ष्टार्थसंयोगः प्रभा यानादिदीप्तिः छाया शोभा अर्चिः शरीरस्थरत्नादितेजोज्वाला तेजः शरीररश्मिः लेश्या देहवर्ण एकार्थाश्चैते उद्द्योतयत् प्रका शकरणात् ॥ पभासेमाणेत्ति ॥ प्रभासयन् शोभयन् इह यावत्करणा दिदं दृश्यं ॥ पासाईए ॥ द्रष्टृणां चित्तप्रसादजनकः ॥ दरसणिज्जे ॥ यत्पश्यच्चक्षु र्न श्राम्यति ॥ अभिरूवे ॥ मनोज्ञरूपः ॥ पडिरूवेत्ति ॥ द्रष्टारं द्रष्टारं प्रतिरूपं यस्य स तथेति एके नैकदा एकमेव वेदं वेदयत इह कारणमाह ॥

दूरगतीसु चिरठितीसु सेणंतत्थ देवेभवइ माहिड्डिए जाव दसदिसाउ उज्जोवेमाणे पभासेमाणे जाव पडिरूवे सेणंतत्थअन्नेदेवे अन्नेसिं देवाण देवीउ अभिजुंजिय अभिजुंजिय परियारेइ, अप्पणिच्चियाउदेवीउ अभि जुंजिय अभिजुंजिय परियारेइ, नोअप्पणामेवअप्पाण वेउव्विय परियारेइ ! एगेवियण जीवे एगेण समए ण एगवेद वेदेइ, तजहा—इत्थिवेदवा पुरिसवेदवा, जसमय इत्थिवेद वेएइ णोतसमय पुरिसवेद वेदेइ,

[illegible] । [illegible] पभासेमाणे । यावत् शब्दे तासम [illegible] दशदिशिनेविषे देहनोकांतिकरी तथा आभरणना कांतिकरी उ द्योत करतायका तेजकरतायका । जावपडिरूवे सेणंतत्थअन्नेदेवे । यावत् प्रतिरूप [illegible] एतलासगे कहवा, ते निर्जर ए [illegible]कारे, तिहां लोकादेव ! अन्नेसिदेवाणदेवीउअभिजुंजिय २ परियारेइ । अनेरा देवनी देवी तेहने आलिंगोने तथा वशिकरीने परिचारणाकरे भोगवे । अप्पणिच्चिया उदेवीउअभिजुंजिय २ परियारेइ । आपणीपोते देवीआव ते आलिंगोने तथा वशिकरीने परिचारणा भोगकरे । [illegible]विउव्विय २ प रियारेइ । पणिनहो आपणपेपेज आमाने आरूपे विकुर्वी भोगवे, एतावतारूपता [illegible] विकुर्वी भोग नकरे इसक तेमाटे । एगेवियणजीवेएगेण समएण एगवेदवेदेइ इत्थिवेदवा । एकजीव अपि निश्चे अपुन[illegible]कारे, जीव एक सूक्ष्मकालवर्त्ती समयनेविषे एक वेदवेदे अनुभवे भोगवे तेकहेछे— स्त्रीवेद अथवा । पुरिसवेदवा । पुरुष वेद अथवा । जसमयइत्थीवेदवेदेइ । जेसमयनेविषे स्त्रीवेदवेदे भोगवे । णोतसमयंपुरिसवेदवेदेइ । ते समयनेविषे पु

स्त्रीइत्थिवयमित्यादि ॥ परिवारणाया किस गजः स्यादिति गमप्रकरण तत्र ॥ उदगगमक्षेत्र कश्चिद्गमक्षेत्रकसि दृश्यते तम उदकगमः कालान्त रण असमर्थपकरणु पुद्गलपरिणाम तस्य भावस्याम जघन्यतः समयः समयानन्तरमेव प्रध्यवनात् उत्कर्षतस्तु पत्रमासाम् पत्रमासाना मुपरि वर्ष

जसमय पुरिसवेद वेदेइ णोतसमय इत्थिवेय वेएइ , इत्थिवेयस्स उदएण नोपुरिसवेद वेदेइ, पुरिसवेयस्स उदएण नोइत्थिवेय वेएइ , एयखलु एगेजीवे एगेण समएण एगवेद वेदेइ, तजहा—इत्थिवेदवा पुरिसवेद वा , इत्थी इत्थिवेएण उदिण्णेण पुरिस पत्थेइ , पुरिसो पुरिसवेदेण उदिण्णेण इत्थि पत्थेइ, दोवेते अण्ण मण्ण पत्थेइ , तजहा—इत्थीवा पुरिस पुरिसोवा इत्थि , उदगगब्भेण भते ! उदगगब्भेति कालत्त केवच्चिर

एक वेदमतें वेदतो भावेनहो। जसमयपुरिसवेदवेदे। तेसमयनेविषे स्त्रीवेद वेदे भावे। जातसमय स्त्रीवेदवेदे। तहो तेसमयनेविषे स्त्रीवेदमतें वेदे भावे। स्त्रीवेदनाउदयथ। स्त्रीवेदन करयेअरोम। जापरिसवेदवेदे। तहो पुरुषवेदमतें वेदे भावे, मांहामांहि विराधपणो। पुरिसवेदनाउदयथ जास्त्रीवेदवेदे। पुरुषवेदने उदयेकरीने तहो स्त्रीवेदमतें वेदे भावे। एवखलु एगेजीवे एगेणसमएण। इम निश्चे एकजीव एकसमये। एगवेदं वेदेइ। ए कवेदमतें वेदे भावे। इत्थिवेदवा पुरिसवेदवा। त कहेछे—स्त्रीवेदमतें अथवा पुरुषवेदमतें एक समये एकजीव वेदवेदे इहां कारण कहेछे—इत्थीए स्त्रीवेदेन उदिण्णेणं पुरिसंपत्थेइ। स्त्रीवेदने उदयकर्मा पुरुषवेदमते मागें वांछे। पुरिसोपुरिसवेदेण उदिण्णेणइत्थिपत्थेइ। तथा पुरुषछे ते पुरुष वेदने उदयथका स्त्रीवेदमतें मागें। दोवितेअण्णमण्णपत्थेति तजहा। एबेउ मांहामांहि मागें वांछे तेकहेछे—इत्थीवापुरिसं पुरिसोवाइत्थिं। स्त्रीपुरुष मतें पुरुषस्त्रीमतें मागें, परिवारणाबोधानमा गमकुवे, तेमाटे गमप्रकरण कहेछे—उदगगब्भेणभंतेउदगगब्भेतिकालओकेवच्चिरहोइ। किहां एक सूत्रे उदग भेण इसोपाठ दीसेछे, तिहां उदगभकहता कालान्तरे जल बरसवाभेहेतु पुद्गलपरिणाम ते उदगभकालथको केतलाकाल चिरहै इतिप्रश्न उत्तर मासमात्रपक्षेपदसमयलाबोप उत्तमासा। गोतम। उदगभ जघन्यथको एक समयने अन्तरेज वरसे उत्कृष्टथकोछ मासने आपछे वरसे एवग

कात् मर्यंच मार्गशीर्षपौषादिपु वैशाखान्तेपु सन्ध्यारागमेघोत्पादादिलिङ्गो भवति यदाह—पौषेसमार्गशीर्षं सन्ध्यारागोम्बुदा सपरिवेषाः । नात्यर्थंमार्गशिरे शीतपौषेतिहिमपात ॥ १ ॥ इत्यादि ॥ कायभवत्थेणंभंतेइत्यादि ॥ काये जनन्युदरमध्यव्यवस्थितनिजदेहएव यो भवा जन्म स काय भव स्तत्र तिष्ठति यः स कायभवस्थः स कायभवस्थइति एतेन पर्यायेणत्ययः ॥ चउवीससंवच्छराइति ॥ स्त्रीकाये द्वादशवर्षाणि स्थित्वा पुन मृ

होइ? गोयमा! जहन्नेण एक्कसमयं उक्कोसं छम्मासा। तिरिक्खजोणियगब्भेणंभंते! तिरिक्खजोणियगब्भेत्ति कालओ केवच्चिरं होइ? गोयमा! जहन्नमंतोमुहुत्तं उक्कोसं अट्ठसंवच्छराइं। मणुस्सीगब्भेणंभंते! मणुस्सीगब्भेत्तिकालओ केवच्चिरं होइ? गोयमा! जहन्नं अंतोमुहुत्तं उक्कोसं बारससंवच्छराइं। कायभवत्थेणंभंते! कायभवत्थेत्ति कालओ केवच्चिरं होइ? गोयमा! जहण्णमंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं चउवीससंवच्छराइं। मणुस्सप

फिर मागशिरमेविषेपुरे, ते वैशाख पर्यंतमेंविषे सन्ध्याराग मेघउपजावादिक चिन्ह हुवे। जिम पर्येष्ठी गरभा पधिकार कहेछे—तिरिक्खजोणियगब्भेणंभं ते। तिर्यंचयोनिक गर्भोभ हेभगवन्! तिरिक्खजोणियगब्भे। तिर्यंचयोनिक। गर्भेतिकालथी केवचिरहोइ। गर्भपणे कालथकी केतलाकाल गर्भमाहे चिरहोइ इतिप्रश्न उत्तर गोयमा जहन्नेणंअंतोमुहुत्तं। हेगौतम! जघन्यथकी अंतमुहूर्त्तरहे उत्कृष्टथी आठ वरसवसे तिर्यंचना गर्भमावयवा। मणुस्सीगब्भेणंभंतेमणुस्सीगब्भेत्तिकालथीकेवचिरहोइ। मनुष्यनी स्त्रीनागर्भ हेभगवन्! मनुष्य स्त्रीनेविषे गर्भपणे का लथीकेतलाकाल चिरहोइ इतिप्रश्न उत्तर, गोयमा जहन्नेणंअंतोमुहुत्तं। हेगौतम! जघन्यथकी अंतर्मुहूर्त्तलगेरहे उत्कृष्ट प्रमाण। उक्कोसेणंदुबालसस वच्छराइं। उत्कृष्टथकी बार वरसलगे मनुष्यनीमा गर्भमांहे रहे जोव। कायभवत्थेणंभंते कायभवत्थेतिकालथी केवचिरहोइ। कायमेंविषे एतले माता नां उदरमांहिरह्या पोतानीशरीर तेहनेविषेज जिवाभव जन्म ते कायभव कहीये तेहनेविषे जेरहे तेकायभवस्थ कहीये एटलोज पर्याय हवाय हेभगवन्! कायथी केतलाकालरहे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा जहन्नेणंअंतोमुहुत्तंउक्कोसेणंचउवीससंवच्छराइं। हेगौतम! जघन्यथी अंतमुहूर्त्तरहे उत्कृष्ट

स्या तस्मि भेत्रा स्त्रशरीरे उत्पद्यते द्वादशवर्षस्थितिकतया इत्येवं चतुर्विंशतिवर्षाणि भवति, केचिदाहुः द्वादशवर्षाणि स्थित्वा पुन स्तत्रैव स्व बीजेन तच्छरीर उत्पद्यते द्वादशवर्षस्थितिरिति ॥ एतद्वीजेमते । इत्यादि ॥ मनुष्याणां तिरश्चां च बीज द्वादशमुहूर्त्तान् यावद्योनिभूत भवति त तय गवादीनां शतपृथक्त्वस्यापि बीजं गवादियोनिप्रविष्टं बीजमध्ये तत्र बीजसमुदाये एको जीव उत्पद्यते सच तेषां बीजस्वामिनां सर्वेषां पुत्रो भ वती त्यत उक्तं ॥ उक्कोसेणसयपुहत्तस्सेत्यादि ॥ सयसहस्सपुहत्तंति ॥ मत्स्यादीनां मैथुनयोगेऽपि शतसहस्रपृथक्त्वं गर्भे उत्पद्यते निष्पद्यते चेत्यर्थः

चिंदियतिरिक्खजोणियबीएण भंते ! जोणियब्भूए केवइयं कालं संचिट्ठइ ? गोयमा ! जहन्नेणअंतोमुहुत्तं उ क्कोसेणं बारसमुहुत्ता। एगजीवेण भंते ! एगभवग्गहणेणं केवइयाणं पुत्तत्ताए हव्वमागच्छइ ? गोयमा ! जह न्नेणं इक्कस्सवा दोण्हस्सवा तिण्हस्सवा उक्कोस सयपुहत्तस्स जीवाणंपुत्तत्ताए हव्वमागच्छइ एगजीवस्सणंभंते एगभवग्गहणेणं केवइया जीवा पुत्तत्ताए हव्वमागच्छंति ? गोयमा ! जहन्नेणं इक्कोवा दोवा तिन्निवा उक्को

वो स्त्रीनाउदरमाहे बारे वरस रहे पछे मरीने वली तिणिजजि शरीरनेविषे उपजे एम बारे वरस रहे एव २४ वरस थया एकजीव बारे वरस रही मू ओ तेहनशरीरे पछे बीजीवार तेहज शरीरमाहे आवी उपजे बारे वरस रहे एव २४ वरस एकोभवे । मनुष्यपचेंद्रियतिरिक्खजोणिय । मनुष्य पचेंद्रिय तथा तिर्यंचयोनिक पचेंद्रिय तेहने । बीएणंभंतेजोणियभूए केवइकालसंचिट्ठइ । बीज वस्तु वीर्य ते हे भगवन् । योनिभूत योनिनेविषे रह्याथ का केतलाकालसुधी रहे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जहन्नंअंतमुहुत्तंउक्कोसेणंबारसमुहुत्ता । हेगौतम ! जघन्य अंतमुहुर्त्त बीजो तोन रहे उत्कृष्टथी बारे महूर्त्त लगे रहे पछे वीर्य अजीव थाय बीजभूत तेहज पछे केताएकथकामाहे जीव विध्वंस जाय छ त । एगजीवेणंभंते एगभवग्गहणेणं केवइयाणंपुत्तत्ताएहव्वमा गच्छइ । एकजीव भगवानसारे, एक भवने ग्रहवे करी केतलाना पचपदे केतावल्ली आवे एतले केतलापिताना पुत्रपणे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जह न्नेणंइक्कस्सवा दोण्हस्सवा तिण्हस्सवा उक्कोसेणंसयपुहत्तस्सजीवाणंपुत्तत्ताएहव्वमागच्छइ । हेगौतम ! जघन्ये एकना अथवा दोयना अथवा तीनना उ

स एकभवगस्य सयपृथक्त्व पुत्राणां भवतीति मनुष्ययोनौ पुनरुत्पन्नः अपि बहवो मनिष्पद्यन्ते इति इत्थीपुरिसस्सयत्स्येतस्य मेहुणवत्तिए नाम सजोए समुप्पज्जइ इत्यनेन सम्बन्धः कस्या मता युत्पद्यते इत्याह ॥ कम्मकडाए जोणीए ॥ नामकर्मनिर्वर्तिताया योनौ यथया कर्म मदना दीपकोद्यापार सत्कृत यस्या सा कर्मकृता अत सास्यां मैथुनस्य वृत्तिः प्रवृत्ति यस्मि असौ मैथुनवृत्तिका मथुनया प्रत्यया एतु यस्मि असौ

सेण सयसहस्सपुहत्त जीवाण पुत्तत्ताए हव्वमागच्छति । सेकेणट्ठेण भंते । एवं वुच्चइ जाव हव्वमागच्छइ ? गोयमा ! इत्थीएय पुरिसस्सय कम्मकडाए जोणीए मेहुणवत्तिएनाम सजोए समुप्पज्जइ , ते दुहओ सिणेह चि

स्वहता मत एकसंयोगे तेमनुष्या तथा तिर्यचना बीज बारमहूर्त यानिभूतपत्र, तिवार मातामयने गतपत्र मवमय नापवि धाश्रयानि प्रविष्ट जीवशोवकरीवे तिहां तेवोजना मनुष्ययोनिविषे एकजीव उपजे ते जीव बीजस्वामी मयमासो पुत्रपणे तेमाटे कह्यो उत्कृष्टथी नवसयनो पुत्रपणे उता पत्ता जपज इति । एकजीवस्य [illegible] हव्वमागच्छति । एकजीवने ज [illegible] हे भगवन् ! एक भवने पत्रवेहरो के तलाबोप पत्रपणे [illegible] एकपिताना केतनाय हवे, इतिप्रश्न उत्तर । गायमा [illegible] सयसहस्सपुहत्तजोवा [illegible] । हे गौतम ! [illegible] एक अथवा दोय अथवा तीन उत्कृष्टथको लाख पृथक्त्व एतले नवलाखताव पत्रपणे उताबलाबावे उपजे ते मत्स्यादिकने एकने समामे पवि माछलीनी योनिनेविषे [illegible] उपजे पत्रे जीपजे पवि तेमाटे एकनेभवग्रहणे नवलाखपुत्रपणे भवे, मनुष्य योनिमे पत्रा उपजे पवि [illegible] इतिभाव हे गौतम पृच्छे—[illegible] हव्वमागच्छति । तेकिसेपणे किसे प्रयोजने इमकह्यु यावत् [illegible] उताबला [illegible] उपजे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा इत्थीएपुरिसस्सय [illegible] मेहुणवत्तिएनाम [illegible] तेदुह [illegible] । हे गौतम ! स्त्रीपुरुषने [illegible] नाम कर्मनिर्वर्तित योनिनेविषे [illegible] तेकोथा [illegible] तिहां कर्म [illegible] ते [illegible] मैथुनवृत्ति [illegible] मैथुनवृत्तिकजोगे अथवा मैथुन [illegible] तेमैथुन [illegible]

स्तायिक कप्रत्यये मैथुनप्रत्ययिक ॥ भामति ॥ मामभामवतो रजदोपघारा वेसयामेत्यथः सयोगः सम्पर्क लहति स्त्रीपुरुषौ ॥ दुग्धेति ॥ ठमय ता रात रत प्राविततलव सचिनुत्तः सवथयसहति ॥ मधुवयसिएमामसजोएति ॥ प्रागुक्त मथ मैथुनस्य वासयमहतुताप्ररूपयसूत्र ॥ रूपमानि पंयति ॥ रूतकर्पासविकार स्तकृता मासिका शुषिरवमादिरूपा रूतमालिका ता एवमूरमासिकामपि मयर पूरं वनस्पतिविशेषापयर्यविशय ॥

णति, तत्थण जहन्नेण एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेण सयसहस्स पुहत्त जीवाण पुत्तत्ताए हव्वमागच्छति सेतेणठेण जाव हव्वमागच्छइ । मेहुणेणभंते! सेवमाणस्स केरिसिए असंजमे कज्जइ ? गोयमा! से जहानामए केइपुरिसे रूयनालियवा बूरनालियवा तत्तेण कणएण समभिधंसेज्जा, एरिसएण गोयमा ! मेहुण सेवमा

माभे सधाम सपक्ष छपके तिर्यापवय वैवस्को सेह युक्त कमिरवयव सेहमतें चिये एकबारे हत्सय। तत्यनक्षज्जवएकावादामातिचिका उक्कासेणसय सहस्सपुहत्तजीवाणपत्तणाच्छस्सायच्छति । तिवो सयवययामेविये च वाम्भासकारे, अधव्यवको एक अथवा दोय अथवा तीन जोवपर्ये गभमाहे कप ये वत्कृष्टो गत सहस्र पृथक्कमध्ये ते नवमाय जोव ए वाम्भासकारे पुत्रपणे कतावक्षा उपजे पावे हत्सय। सेतेणट्ठेणजावहव्वमागच्छति। ते तेष पर्ये हेगातम! यावत् नवमासजीव गभमांये पन पवे उवायवापावे उपज। हिये मैथुनना पधिकारथको मैथुननोव असंयमपणा प्ररूपेहे। मेहुणे भंतेसेवमाणस्सकेरिसेअसंजमेकज्जइ। मैथुन प वाम्भासकार, हभगवन्! सेवतायकाकोय केहवो असंयमकरे इतिप्रश्न, उत्तर। गायमा सेजहानामएके इपरिसरूयनालियाबूरनालिया। हेगातम! ते यथा इष्टांत नाम इति वाक्यालंकारे कोईएवय अपासमाविकार ते रूत कहोये ते भरी वासनी भूय सी अथवा वनस्पती विशेषना अवयव ते बूर कहोये तेण भरीवांसनी भूंगली मी। तत्तवकणएण समभिधसेज्जा। तप्त आज्वल्यमान पग्निकरी तपा च्या लोहमा पोसा सलाका ते भूंगलीमाहे वपे तिवारे तेरुत तथा बूर सव भिष्मसपामे विनाशपामे हत्सय। एरिसएण गायमा मेहुणसेवमाणस्सअसंजमे कज्जइ। एहवा प वाम्भासकारे हेगातम। मैथुनसेवतायको वामिमाहेरह्याछे, जेजीव ते मतें अथवापुरुषलिंग सेवीकरी विनाश पमाडे हवे एहवा प्रस

समभिपसेव्वति ॥ इत्तादिसमवि(र्भ)सना रिह वा यं याव्वद्योयो बृयप एव मेथुन सेवमाणो योनिगतसत्वा न्मएमेणो विप्यसपे देतेप किल प्र
यान्तरे पञ्चेन्द्रिया भूयन्तइति ॥ एरिसएत्तमित्यादिप ॥ नियमर्नामति, पूर्वं तिर्यग्मनुष्यात्पत्ति विचारिता ऽथ देवोत्पत्तिविचारणाया प्र

णस्स ग्रसओ कक्षइ, सेव भंते भंतेत्ति जाव विहरइ । तएण समणे भगव महावीरे रायगिहाञ नयराञ गुणसिलाञ चेइयाञ पडिनिस्कमइ पडिनिस्कमइत्ता यहिया जणवयविहार विहरइ, तेणकालेण तेणसमए ण तुंगियानाम नयरी होत्था, वन्नओ, तीसेण तुंगियाए नयरीए यहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए पुप्फवइ एनाम चेइए होत्था, वन्नओ, तत्थणतुंगियाएनयरीए यहवेसमणोयासया परिवसंति, अहा दित्ता विच्छिन्न

वसनरे । सेवभंत २ त्ति यावविहरइ । तहत्ति हेभगवन् । तुम्हे कह्या ते सत्यछे यम्पयामकरी इमकही यावत् नमस्कार करी सयमेतपेकरी पात्माने भावता
थका विचरे । तएणसमणे भगवंमहावीरे रायगिहा थीनगराथी गुणसिलाथी चैत्यथी । पहिला तिर्यंचमनुष्य उत्पत्ति विचारणा कीधी । हिवे देव उत्पत्तिमा
विचारणानो प्रस्ताव कहेवे—विचारे श्रमण भगवंतश्रीमहावीरस्वामी रायगृहनामा नगरथको गुणसिलानाम चैत्यथको । पडिनिक्खमइ २त्ता । नीकले
नीकलीने । वहियाजणवयविहारविहरइ । बाहिर जनपददेशने विषे विहारकरतो विचरे । तेणंकालेण तेणंसमएण । ते अवसर्पिणी चोथा आराहप काल
नेविषे ते समयनेविषे । तुंगियानाम नयरीहोत्थावन्नओ । तुंगीया इसेनामे नगरीहुवे, तेहनो वर्णन उवाई उपांगथी जाणवो । तीसेणतुंगियाएणयरीए ।
तेहज नगरीनेविषे तुंगियानाम नयरीनेविषे । वहियाउत्तरपुरच्छिमेदिसीभाए । बाहिर उत्तरपूर्वदिशिमा विभागनेविषे एतले ईशानकूणनेविषे । पुप्फव
इएनाम चेइएहोत्था वन्नओ । पुष्पवती इसेनाम चैत्य यक्षायतन हुवो वर्ण उववाइ उपांगमांहिकह्यो तिमकहवो । तत्थणतुंगियाएणयरीए । तिहां ए वा
ण तणारे, तुंगीयानामे नगरीनेविषे । वहवेसमणोवासयापरिवसंति घणा दिसा । घणा श्रमणसाधु तेहना उपासक सेवक एतले श्रावक वसेछे ऋद्धे
(?)वंत धन धान्यकरी परिपूर्ण प्रसिद्ध तेवा वच्छन । वि(च्छिन्न)विपुलभवणसयणासणजाणवाहणाइण्णा । विस्तारपणुमि यणुभावा घर्मकारि मुराधि

सावनाये दमाइ ॥ तएणंसमणेइत्यादि ॥ अड्ढत्ति ॥ आढ्या धनधान्यादिभि परिपूर्णा ॥ दित्तत्ति ॥ दीप्ताः प्रसिद्धाः दृप्ताया दर्पिता ॥ विच्छिण्णविपुलभवणसयणासणजाणवाहणाइण्णा ॥ विस्तीर्णानि विस्तारवन्ति विपुलानि प्रचुराणि भवनानि गृहाणि शयनासनयानवाहनैः राकीर्णानि ये षां ते तथा अथवा विस्तीर्णानि विपुलानि भवनानियेषां शयनासनयानवाहनानिच कीर्णानि गुणवन्ति यथा स तथा तत्र यानं गन्त्र्यादि वा हनं त्वश्वादि ॥ बहुधणबहुजायरूवरयया ॥ बहु प्रभूत धनं गणिमादिकं तथा बहुेव जातरूपं सुवर्णं रजतं च रूप्यं येषांते तथा ॥ आओगपओग संपउत्ता ॥ आयोगो द्विगुणादिवृध्या अर्थदानं प्रयोगश्च कलान्तर तौ संप्रयुक्तौ व्यापारितौ यै स्ते तथा ॥ विच्छड्डियविउलभत्तपाणा ॥ विच्छर्दित विविध मुक्तित बहुलोकभोजनत उच्छिष्टावशेषसम्भवात् विच्छर्दितंवा विविधविच्छित्तिस द्विपुलं भक्तं पानकं च येषां ते तथा ॥ बहुदासीदासगोमहिसगवेलगप्पभूया ॥ बहवो दासीदासा येषां गोमहिषगवेलकाश्च प्रभूता येषां ते तथा गवेलकाउरभ्राः ॥ बहुजणस्सअपरिभूया ॥ बहो

विपुलभवणसयणासणजाणवाहणाइण्णा धणधणयजायरूवरयया आओगपओगसंपउत्ता विच्छड्डियविउलभत्तपाणावहुदासीदासगोमाहिसगवेलगप्पभूया बहुजणस्सअपरिभूया अभिगयजीवाजीवा उवलद्धपुण्णपावा आसवसंवरनिज्जराकिरियाहिगरणबंधमोक्खकुसला असहेज्जदेवासुरनागसुवण्णजक्खरक्खसकिंनरकिंपुरिसग

यावत् प्रकट मातो प्रमुख घणादिक तेणेकरी व्याप्त छे। वदृपणा। घणा धन धान्यादिक। बहुजायरूवरयया। घणो जातरूप सुवर्ण रजत रूपा बहाने। आओग पओगसंपउत्ता। द्विगुणा त्रिगुणा वधारवा भणी देवा धनादिक तिम प्रवर्त्तणाये विस्तरवा पोषवतेम् दसकरी धर्मदेवी ते आको मकणाये व्यापारादिक तेणेकरी समयुक्तसहित। विच्छड्डियविउलभत्तपाणा। घणोसाथ भोजपणो घणो पणादिक भूठवातियो पड्या छे जेहनाघर। बहुदासीदास गोमहिसगवेलगप्पभूया। घणा दासीदासछे जहने गाय भैंस बकरा माछरप्रमुख प्रभूत घणाछे जेहाने। बहुजणस्सअपरिभूया। घणाछो काने पणि मति धनवतमाटे कुणही स्यूं पराभवा नजाय। अभिगयजीवाजीवा। जांणाछे जीव अजीवना स्वरूप जणे। उवलद्धपुण्णपावा। पामस्या

सौकस्या परिग्रवमीयाः प्रासवन्यादौ क्रियाः कायिक्यादिका पधिकरय गणीपग्रकादि ॥ कुसनति ॥ पाममादीना हेयोपादेयतास्वरूपयेदिन ॥ पसरेण्यत्यादि ॥ पविद्यमान साहाय्यं परसाहायिक मत्यन्तसमयत्वा यथा ते पसाहाय्या सेष रा दवादयपसि कमधारय पथया व्यस्त मे पद तेम पसाहाय्या पापद्यपि दवादिसाहायकामपथा स्वयकृत कमस्वयमय भोक्तव्य मित्यदानमनाकृसयहत्यथः पथया पाखण्डिभि प्रारब्धा सम्यक्त्वाविचसनमति न परसाहायक मपेक्षत स्वयमव तत्प्रतिघातसमर्थत्वा ज्जिनशासमात्यन्तभावितत्वाचेति ' तत्र दया वैमानिका ॥ पसुर त्ति ॥ पसुरकुमारा ॥ नागत्ति ॥ नागकुमारा ॥ उभये प्यमी भवनपतिविशेषाः ॥ सुवस्रत्ति ॥ सहस्राः ज्योतिष्का यक्षराक्षसकिन्नरकिंपुरुषाव्यन्तर विशेषा ॥ पक्सत्ति ॥ गरुडध्वजाः सुपर्णकुमारा भवनपतिविशेषा पन्धवा महोरगाय व्यन्तरविशेषा ॥ पनतिक्रमणिज्जत्ति ॥ पनतिक्रमणीया

रुलगधव्वमहोरगादीएहि देवगणेहि निग्गथाउ पायवणाउ अणतिक्कमणिज्जा, निग्गथे पावयणे निस्संकिया निक्कंखिया निव्वितिगिच्छा लद्धठा गहियठा पुच्छियठा अभिगयठा विणिच्छियठा अठिमिजपेम्माणुराय

देवे पुन कमप्रतिरूप पापपदम प्रतिरूप तनमाकम । पाथवमवरविमदकिरियाहिमरणबधमाकाङ्क्षवा । पायनकम पावकानाम्नामक सवर ते कमदार रावना कमशोधरताव्य कायिकादिक्रिया गाढोयथाद्दिक मथप्रकृति वधादि पारभद माथ सवधा मयरूप यतस्मानिवेध पतिपाद्यते। पसहेमदना सर माय सवध यक्ष राक्षस किनर किपरिस गरुड गंधव्व महोरगादि पवि देवगनेहि विचलाया पावयणाया प पतिक्रमणिज्जा । पाषंडाकासे पवि किमहो देवताने सनेनदो पापमाकोधाम पापकमागवोधे पहमो मनोहमिच्छे केहनो पथया पाखंडी ए मारम्भा समकितवनी चलावना तिवारे कोपाना सवाय नथाये, एतला पोतेज तेहने अनायदेवाने समय पतायता जिनशासन पम्यत परिणम्यो छे केहने देववैमानिक पसरकुमार नामकुमार एवेय भवनपतीविशेष । सुवस्रत्ति । मवर्ण ते ज्योतिषी यक्ष राक्षस किंपर किपचप ए व्यंतरनिकाय ना देवभावमा मरद किगडे केहने पुरता सुवर्णकुमारविशेष गधव महारग पवव्यतर विशेषकामना पमादिक) वेहनं गवेसमूहे साधुना मनवभ थि

प्रमिताप
प्रधानीयाः ॥ लट्ठति ॥ अथप्रश्नात् ॥ गहियट्ठति ॥ अर्थावधारणात् ॥ पुच्छियट्ठति ॥ संशयिकार्थप्रश्नकरणात् ॥ अभिगयट्ठति ॥ प्रमिताथ
प्रधानीयाः ॥ लट्ठति ॥ अथप्रश्नात् ॥ गहियट्ठति ॥ अर्थावधारणात् ॥ पुच्छियट्ठति ॥ अवगतार्थ ॥ अट्ठिमिजपेमाणुरागरत्ता ॥ अस्थीनिव कीकसानि मिञ्जाच तन्मध्यवर्ती
स्यालिंगमनात् ॥ विणिच्छियट्ठति ॥ ऐदंपर्यार्थस्योपलम्भात् ॥ अतएव ॥ अट्ठिमिजपेमाणुरागरत्ता ॥ अस्थीनिव कीकसानि मिञ्जाच तन्मध्यवर्ती
धातु रस्थिमिञ्जा ता प्रेमानुरागेण सार्वज्ञप्रवचनप्रीतिरूपकुसुम्भादिरागेण रक्ताइव रक्ता येषां ते तथा अथवा अस्थिमिञ्जासु जिनशासनगत
प्रेमानुरागेण रक्ता ये ते तथा केनो ल्लेखेनत्याह ॥ अयमाउसोइत्यादि ॥ अयमिति प्राकृतत्वा दिद ॥ आउसंति ॥ आयुष्मन्निति पुत्रादे रामन्त्र
ण ॥ सेसेति ॥ शेषं निग्रन्थप्रवचनव्यतिरिक्तं धनधान्यपुत्रकलत्रमित्रकुप्रवचनादिकमिति ॥ ऊसियफलिहेति ॥ उच्छ्रितं मुक्तं स्फटिकमिव स्फटिकं
चित्तं यत्तो त उच्छ्रितस्फटिका मौनीन्द्रप्रवचनावाप्त्या परितुष्टमानसा इत्यर्थ इतिवृद्धव्याख्या, अन्यत्वाहुः, उच्छ्रितो अर्गलास्थाना दपनीयो ऊर्ध्वतो

रत्ता अयमाउसो निग्गंथे पावयणे अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे ऊसियफलिहा अवंगुयदुवारा चियत्तंतेउर

ढीलयको पतिकमाको मसकीय पहवे ते यावत निर्ग्रन्थना प्रवचनना पदार्थ सेवता थका यावत् वर्तेछे। विसयोपाश्रय । निर्ग्रन्थना प्रवचननेविषे ए
तावता सामान्यविषे आवादितथईछे जिणे सयोके। विशेषियां विशेषियां विचित्रतिगिच्छा रहित पडियां पुच्छितां। एहवो अर्थ तिर्णेकरी रहित निस्स
जित १ पन्नवणलोवाइ सेवाया तिर्णेकरी रहित २ हानादिक फलमाथे तिर्णेकरी रहित ते निर्विचिकित्सा कहीजे ३ सूत्रमांहि अर्थ भय जेणे
ग्रहणकया वया है यवगेने सगयकी पूछी बोधा है यायवे। अविगता विविच्छा। प्रमाणे यथ जाणोले चिरपरिचय बोधा थयाछे निश्चयको हो
धा विश्वकरोल पवता पवाय। अट्ठिमिजपेमाणुरागरत्ता। हाडमिजा ते हाडमध्यवर्ती धातु ते सर्वज्ञ वचन प्रीतिरूप कुसुम्भादिरागेकरी रंगानोपरे
रंग्याछे जेहना अथवा अस्थिमिजानेविषे जिनशासनगत प्रेमानुरागरत्ताछे जिके। अयमाउसो विसयोपाश्रयछेपछे। ए प्रसंग पुत्रादिकना आमन्त्रण
माधुना प्रवचनमाग त प्रधानमछे एशोज मोक्षसाधनहेतु परमार्थ सेयताथका। अयपरमट्ठेसेसेअणट्ठे। धनपरे निर्ग्रन्थप्रवचनथी बीजा धनधान्य पन
कलत्रादिक कुप्रवचनादिक ते अनर्थ मानतामनना ग्रहणकरे। ऊसियफलिहा। भला स्फटिक जिम निर्मलचित्त तथा दानदेवानेअर्थ आगलदोषो

तिरश्चीन कपाटपश्चाद्भागः द्वयमीव इत्यथ परिघो भग्ना येषां स उच्छ्रितपरिघः अथवा उच्छ्रितः पश्चाद्द्वारा द्वयमस परिघा यश ते उच्छ्रितपरिघा औदार्यातिशय्या दातिशयदानदायित्वम भिक्षुकाणा गृहप्रवेशाय मनगसितयद्वाराइत्यर्थ ॥ अवगुयदुवारेत्ति ॥ अमावृतद्वारा कपाटादिभि रस्थगितगृहद्वाराइत्यथ सद्दर्शनसाजम न कुतोपि पाखण्डिका द्विभ्यति शोभममाणपरिग्रहया ह्याटगिरस तिष्ठ ला तिभाय इतिवृद्धव्याख्या अन्यत्वाहुः भिक्षुकप्रवेशार्थं औदार्या दस्थगितगृहद्वाराइत्यर्थ ॥ चियत्तंतेउरपरघरप्पवेसावियत्तोत्ति ॥ नाकामा प्रीतिकरएथा ऽत्त पुरया परेमा प्रवेशो येषां ते तथा अतिधार्मिकतया सर्वत्रा नाशङ्कनीया स इत्यथः अन्यस्त्वाहुः ॥ चियत्तोत्ति ॥ नाप्रीतिकरः ऽत्त पुरगृहया प्रवेश शिष्टजनप्रवेशन यथा त तथा अनीर्ष्यालुतामतिपादनपर चैत्य विशेषणमिति अथवा ॥ चियत्तात्ति ॥ त्यक्तः अन्त पुरगृहया परकीययो यथा कथमि प्रवेशो यै स तथा ॥ बहूहिं इत्यादि ॥ शीलव्रता न्यणुव्रतानि गुणा गणव्रतानि विरमणानि औचित्येन रागादिनिवृत्तय प्रत्याख्यानानि पौरुष्यादीनि पौषध स्पर्वदिनानुष्ठान तस्योपवासो यस्याम पौषधोपवास अनया द्वन्द्वो ऽत तै युक्ता इतिगम्य पौषधापवास सम्यक् पौषधस्य यदा यथाविधम न कुर्वतो विहरन्ति तद्धूपवास ॥ चाउद्दसत्यादि ॥ उद्दो दिष्टा अमावास्या ॥ पडिपुण्णपोसहंति ॥ आहा

परघरप्पवेसा बहूहिं सीलव्वयगुणवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासेहिं चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेमाणा समणे निग्गंथे फासुएसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं वत्थपडिग्गहकंबलपा

मनो । अवगुयदुवारा । उघाडा ते द्वार बारणा जिनाद । चियत्ततेउरपरघरप्पवेसा । धोविकारिया पेठ पुरनेविषे तथा परघरनेविषे प्रवेश छेह जा एतावता विश्वासने मने तेहना अविश्वासनथी । बहुहिंसीलव्वयगुणवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासेहिं । घणा पांचअणुव्रत त्रणगुणव्रत वेरमण उचित तपे नानाप्रकारे रागादिक थको निवर्त पच्चक्खाण पोरसीप्रमुख पौषध पर्वदिनानुष्ठान तेहनेविषे उपवासरूपते तिणे सहितछे एतावता गुण सहित पौषधकरता विचरेछे ते पौषधविधि कहेछे—चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णपोसहं सम्मं अणुपालेमाणा । चउदस आठम दर्श अमावस्ये

रादिमदा पतुयिपमवि सवतः ॥ वत्यपडिग्गहकंबलपायपुञ्छणेकति ॥ इह पतद्ग्रहः पात्र पादप्रोञ्छन रजोहरण पीठ आसन फलग मवष्टम्भ मफमरु घ्प्यावसति दृढस्ससारकोया ससारको सपुतर एथा समाहारद्वन्द्वो त साम ॥ महापडिग्गहिएहिं इति ॥ यथा प्रतिपन्नै न पुन र्वा सवाति: ॥ परति ॥ मुतद्वा: ॥ रूवसपन्नति ॥ इह रूप सुविहितमपष्पशरीरसुदरतावा। तेन सम्पन्ना युक्ता रूपसम्पन्ना ॥ लज्जालाघवसंपन्नति ॥

यपुञ्छणेण पीढफलगसेज्जासंथारएणं ओसहभेसज्जेणं पडिलाभेमाणा अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पा ण भावेमाणा विहरंति। तेणंकालेणं तेणंसमएणं पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो जाइसंपन्ना कुलसंपन्ना बलस

अमावास्या तथा पूनिम ए पर्वदिननेविषे पूरा पाहार १ शरीर सत्कार २ ब्रह्मचर्य ३ अव्यापार ४ ए चार सवनी परिहारकरता पोषध अनुपालताथकाहे ।समर्थ। श्रमण तपस्वी । विमलकासूप्रमविक्षेषे अशनपानखादिमस्वादिमेन वस्त्रपतिग्रहकंबलपादपुञ्छनेन पीढफलगसेज्जासंथारएण ओसहभेसज्जेण पडि लाभेमाणा। निर्ग्रंथ बाह्याभ्यतर ग्रन्थरहितने अचेलाधुने कल्प सकामीस दूषणरहित पहाम साधा आतू प्रमुख सुधा प्रमावतामेमलतेजासीपाणी म ध ईरदसादि ते १ भेद द्यथा उपयमावे २ साकडो प्रमुख खाद्य ३ सूठ हरडे पोपल आयबस प्रमुख ४ एचार आहारेकरी तथा वस्त्र पडयोपाथा का बला रजोहरण पाया पासन बठोयल केलालापाटीया वसति प्रथवा माटा सथारा तासहायकारा तिणकरी तथा पोषध भेषज चूर्णादिक तिणेकरी प्रतिलाभता विहरावता थका प्रवर्ततै। यथापरिग्रहितपत्ति तवोकम्मेहिं अप्पाणंभावेमाणाविहरति। जेहवा आदरया तेहवा पाले एहवा वैतपकर्म क्रिया तेणेकरी आत्मने भावतो थका गुणग्राम धर्म दम तोमतम अनुमोदता थका विचरेजेश्रावक। तेणकालेण तेणसमएण। तेकालनेविषे ते समय नेविषे। पार्श्वापत्यिका। पार्श्वनाथ स्वामीना अपत्यसतानिया प्रशिष्यादिक। थेराभगवंतो जातिसंपन्ना कुलसंपन्ना बलसंपन्ना रूपसंपन्ना विनयसंपन्ना। शुभवंत प्रामप्रियत मातृपक्ष तिणेकरी शोभता थका अथवा सहित पितापक्ष तिणकरो शोभन थका उत्कृष्ट संघयण तिणेकरी युक्त शरीर सुदरपणो तेणे शोभन थका सुखवतम नम्र सेवाकरवी तिणेकरी शोभन थका। ज्ञानसंपन्ना दर्शनसंपन्ना चारित्रसंपन्ना लज्जासंपन्ना लाघवसंपन्ना। लज्जादिक

सम्भा प्रसिद्धा समणोवा लाघव दृव्यतो अल्पोपधित्व भावतो गौरवत्याग ॥ ओयसीति ॥ ओजस्विनो मानसावष्टम्भयुक्ता ॥ तेयसीति ॥ तेज स्विन शरीरप्रभायुक्ताः ॥ वयंसीति ॥ वचस्विनो विशिष्टप्रभावोपेता वचस्विनोवा विशिष्टवचनयुक्ता ॥ जससीति ॥ ख्यातिमन्तो नुस्वार श्चैतपु प्राकृतत्वात ॥ जीवियासामरणभयविप्पमुक्कत्ति ॥ जीविताशया मरणभयेन च विप्रमुक्ता ये ते तथा इह यावत्करणा दिदं दृश्य — तवप्पहाणा गुण प्पहाणा गुणाय संयमगुणा तपः संयमग्रहणेन तप संयमयो प्रधानमोक्षाङ्गताभिधानार्थं तथा करणप्पहाणा चरणप्पहाणा तत्र करणं पिण्डविशुध्यादि चरणं व्रतश्रमणधर्मादि निग्गहप्पहाणा निग्रहो अन्यायकारिणां दण्डः निच्छयप्पहाणा निश्चयो वस्तुनिर्णयोऽभ्युपगम स्वास्थ नियमोवा मद्दवप्पहाणा अज्जवप्पहाणा ननु जितक्रोधादित्वा न्मार्दवादिप्रधानत्वं भवगम्यत एव ततः किं मार्दवत्यादिना ? उच्यते तत्रो दयविफ लताक्ता मार्दवादिप्रधानत्वेतु दयाभावएवेति लाघवप्पहाणा लाघव क्रियासु दक्षत्व खंतिप्पहाणा मुत्तिप्पहाणा एवं विज्जा मंत वेय बंभ नय नियम सच्चसोयप्पहाणा चारुप्पन्ना सत्प्रज्ञाः सोही सुइत्ति शुचित्वं शोधय सुहृदाना मित्राणि जीवानामिति गम्य पडिपाणा अप्पुस्सुया अवहि

पसा रूवसपन्ना विणयसपन्ना णाणसपन्ना दंसणसपन्ना चरित्तसपन्ना लज्जालाघवसंपन्ना ओयंसी तेयंसी वच्चंसी जससी जियकोहा जियमाणा जियमाया जियलोभा जियनिद्दा जियइंदिया जियपरीसहा जीवियासा

भाग तिर्थंकरो भगवान् उग्र सभा तिर्थंकरो भगवान् सामायिकादि चारित्र तिर्थंकरो भगवन् भला लज्जासहित लाज अथवा संयम तेनेकरी युक्त इन्द्रियो वश उपधिपणा भावथी भारसंयम तेणेयुक्त । ओयसी तेयंसी वयसी जससी । चित्त अवष्टम्भसहित शरीरप्रभा सहित विशिष्ट वचनयशसहि त अथवा विशिष्ट प्रभावसहित कान्तिभावे असयत । जियकोहा जियमाणा जियमाया जियलोभा जियनिद्दा । तत्याहे स्वापनाथोने अनुभवित गा यथा भाव यथकार, तेवे वलिकोधो माया परस्परा जिपे लोभा अप्रलोधादि लाभ कारणजिने जीतो अप्रलोभोवे निद्रापवन जिपे । जितिंदि या जियपरीसहा । लोभादि अग्यादिक पाचस्यो जाँ लोभाद शरीर परीसहजीते । जीवियासमरणभयविप्पमुक्का । जीवितपनानोला मरणना भ

सा सुसामनरया पश्चिद्पसिलवामरवति पश्चिद्रा स्थविरसानि मिदूपमानिधा प्रमव्याकरणामि यथा स तथा ॥ कुत्तियायबजूपत्ति ॥ कुत्रिक स्वगमत्यपातालसवच भूमित्रय, तत्सम्भव वस्त्वपि कुत्रिक तत्सम्पादक आपणो हट्ट कुत्रिकापण तद्भूता समीहितार्थसम्पादनलब्धियुक्तत्वेन सकलगुणापतत्वेनवा ; तदुपमा ॥ सद्धिति ॥ साद्र सहेत्यर्थः सम्परिवृताः सम्यक्परिवारिताः परिकरभावेन परिकरिताइत्यर्थः पञ्चमि

मरगन्नयसोफर्यिप्पमुक्का यह्नस्सुया यहुपरियारा पर्चाहिंमणगारसएहिं सद्धिं सपरियुडा म्हाणुपुव्वि चर माणा गामाणुगाममदूइज्जमाणा सुहंसुहेण यिहरमाणा जेणेव तुंगियानयरी जेणेव पुप्फवइएचेइए तेणेव उ घागच्छति उवागच्छइत्ता म्हापडिरूवं उग्गहं हगिण्हित्ता संजमेण तवसा अप्पाणंभावेमाणा विहरति , तएणं तुंगियाए नयरीए सिघाडगतिगचउक्कचच्चरचउम्मुहमहापहपहेसु जाव एगदिसाभिमुहा णिज्जायंति,

य ए वेअरकार रहित एतले सवप्रकारे समाधिगर्व मुक्त । आमर्पमित्यावदभूषा। यावत् ध्रम मत्र पाताल मांहि लेश्यु ते त्रिणे हाटे ताभे ते कत्रिका पर्व कहाये सरोषा माधु समुन मदृकक । बहुसया बहुपरियारा । घणां सूतला भारण घणा परिवारछ लेडाने । पचहिंमणगारसएहिंसपरिव डा । पांचमें साध तेणेसहित परिवराणका अने परिवारमहित । महाणुपुब्बिचरमाणा । यथा पूर्वे पन्नकमे चालताथका विचरताथका । गामाणु गामदूइज्जमाणा । एकगामथी बीजगामे जाताथका । सुहंसुहेणविहरमाणा । सुखे सुखेकरी विचरताथका सञ्चाये धमतिथ विहारे परवसेनथी जेणेवतुंगियानयरो । जिहां तुंगियानामे नगरी । जेणेवपुप्फवतोएचेइए । जिहां पुष्पवतीनामे चैत्य यक्षायतनछे । तेणेवउवागच्छतिउवागच्छइत्ता । तिहां आवे आवीने । महापडिरूवंउग्गहउगिण्हिताए । यथा प्रतिरूप यथा योग्य अनियत स्थानें । संजमेणतवसाअप्पाणंभावेमाणा विचरति । भावताथक वारोमा ते सयम सूक्ष्मा तप तेयेसे तपतेसयमेतपेकरी आत्माने भावताथका विचरेछे । तएणंतुंगियाएणयरोए । तिवारे तुंगियानाम नगरीनेविषे । सिघाडगतियचउक्कचच्चरमहापहेसु । सिंघाडा फलने आकारे आगमतोम नखोमिले ते आगम त्रिण गत्ती मिले ते आगम चार गतो मिले ते आगम राजमार्ग

ममकमतैरेव ॥ सिंघाडगपति ॥ भृङ्गाटकफलाकार स्थान त्रिक रथ्यात्रयमीलनस्थान चतुष्कं रथ्याचतुष्कमीलनस्थान चत्वर बहुतररथ्यामीलनस्थान महापथो राजमार्गः पन्थारथ्यामात्रं यावत्करणात् बहुजनसद्देश्याइत्यादिपूर्वव्याख्यात ममवृषयं ॥ पज्जुवासंतित्ति ॥ अभ्युपगच्छन्ति ॥ सपाठइति ॥

तएण तेसमणोघासया इमीसेकहाए लद्धठासमाणा हठतुठा जाव सद्दावति , सद्दावित्ता एववयासी , एव खलु देवाणुप्पिया पासावच्चेज्जा थेराभगवतो जातिसपन्ना जाव अहापडिरूव उग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाणभावेमाणा विहरति , तमहाफल खलुदेवाणुप्पिया तहारूवाण थेराण भगवताण नामगोय स्सवियसवणयाए किमगपुण अभिगमणवदणनमसणपडिपुच्छणपज्जुवासणयाए जाव गहणयाए तगच्छामो

एव मवोचत । यावएमदिसाभिमुखाविख्यासति । यावत् मध्यको बहुजनसदेश्या इत्यादि पूर्ववत् एकदिशि साहम सुपर्के लेश्नो इम यथालाक आयेले तवततेसमणोवासया । तिवारे ते श्रमणोपासक साधसेवक यावक इत्यथ । इमोसेकहाए । एहवी कथा वार्ता सबर । लद्धठासमाणा हठतुठाजावसद्दा वेति । साधुमानाते लाभलवे इम सकोय पाम्या सतुष्टथया यावत् मांहोमांहि तेडावे तेडावीने । एववयासी । इम कहताहुया । एवखलुदेवाणुप्पिया । इम निश्चे देवताने पिण वल्लभ । पासावच्चिज्जा । पार्श्वनाथना चपलशिष्यादिक । थेराभगवता । स्थविर भगवत । जातिसपन्ना । जातिकरी सयुक्त । यावअहापडिरूवउग्गहउग्गिण्हित्ताव । यावत् यथाप्रतिरूप अभिग्रह ग्रहीने । सजमेणतवसाअप्पाण भावेमाणाविहरति तवसा । सयमेकरी तपेकरी आ त्मा भावतायका विचरेछे तेमाटे । महाफलखलुदेवाणुप्पिया । महाफल उत्कृष्टफल मोटाफल निश्चे देवनेपण वल्लभ । तहारूवाणथेराणभगवताण । जे हवा पूर्वकह्या तेहवा स्थविर भगवत भागवत । णामगोयस्सवियसवणयाए । तेहना नामगोत्रने पिण सांभलवे एतले नामगोत्रसांभल्या पिण महाफलछे । किमगपुणअभिगमणवदणनमसणपडिपुच्छणपज्जुवासणयाए । अङ्ग सबन्धी आम इति कामलामन्त्रणे वली साहमाजई पांच अभिगम सांचवे वादवे नमस्का र करवे मनोगत सदेह वार्ता पूछवे सेवा पैयावत्तिने करवे । आवगहणयाए । यावत् ग्रहीशिक्षा गुणवा [illegible] तवे । तगच्छामोदेवाणुप्पिया । ति

स्यन्दोपानि ॥ कयबलिकम्म त्ति ॥ स्नानानन्तरं कृतं बलिकर्म यैः स्वगृहदेवतानां ते तथा ॥ कयकोउयमंगलपायच्छित्त त्ति ॥ कृतानि कौतुकमङ्गलान्येव प्रायश्चित्तानि दुःस्वप्नादिविघातार्थं अवश्यकरणीयत्वाद् यैस्ते तथा अन्ये त्वाहुः ॥ पायच्छित्त त्ति ॥ पादेन पादे वा छुप्ता चक्षुर्दोषपरिहारार्थं पादच्छुप्ताः कृतकौतुकमङ्गलाश्च ते पादच्छुप्ताश्चेति विग्रहः तत्र कौतुकानि मषीतिलकादीनि मङ्गलानि तु सिद्धार्थकदध्यक्षतदूर्वाङ्कुरादीनि सुद्धप्पावेसाइं ति ॥ शुद्धात्मानो वैष्याणि वेषोचितानि अथवा शुद्धानि च तानि प्रावेश्यानि च राजादिसभाप्रवेशोचितानि शुद्धप्रावेश्यानि ॥ व त्थाइं पवराइं परिहिय त्ति ॥ क्वचित् दृश्यते क्वचित् ॥ वत्थाइं पवरपरिहिय त्ति ॥ तत्र प्रथमपाठो व्यक्तः द्वितीयस्तु प्रवरं यथा भवत्येवं परि

णं देवाणुप्पिया थेरे भगवंते वंदामो णमंसामो जाव पज्जुवासामो , एयणं इहभवे परभवे जाव आणुगामियत्ताए भविस्सइ तिकट्टु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणंति, पडिसुणित्ता जेणेव सयाइं गेहाइं ते णेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउयमंगलपायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं

भवो आदरवे न माफलकारे, इत्यर्थ । थेरेभगवंते वंदामो णमंसामो । ए श्रुत तपे करीने प्रधान सम्यक् गमगमवेळरी वांदो पंचांगनमण युक्त नमस्कार करीये । पज्जुवासामो । यावत् सेवाकरीये तेहमाहे, परिचित प्रतीत धर्मादि विचार अंगीकार करे । एयणो इहभवे परभवे । एह भाव ते इहलोकने विषे परलोकने विषे । आणुगामियत्ताए भविस्सइत्तिकट्टु । अनुगामीपणाने यावत् हुसे इसो करीने । अण्णमण्णस्संतिए । एक एकने पासे । एयमट्ठं पडिसुणेंति । एहवा अर्थप्रते अंगीकार करे । जेणेव सयाइं सयाइं गिहाइं । जिहां आप आपणा घर छे । तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता । तिहां आवे तिहां आवीने । ण्हाया । स्नानकीधा । कयबलिकम्मा । आपणा घरमा देवता ने कीधा बलिकर्म जेह । कयकोउयमंगलपायच्छित्ता । कौतुक ते [illegible] मंगल ते [illegible] प्रायश्चित्त तिलक चांदला [illegible] करीछे—अथवा पाभरणादि एम ठामे कुहारे पहिरया जिम दृष्टि नलागे । सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिया । राजसभाप्रवेश उचित मंगलीक आचारना प्रधान पहिरया । अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा । भारथो

श्रिताः प्रवरपरिश्रिताः ॥ पायविहारचारेणति ॥ पादविहारेण न यानविहारेण च यारो गमन स तथा तेन ॥ अभिगमेणति ॥ प्रतिपत्त्या अभि जिमच्छन्ति समीप गच्छन्ति ॥ सचित्ताणति ॥ पुष्पताम्बूलादीना ॥ विउसरणयाएति ॥ व्यवसर्जनया त्यागेन ॥ अचित्ताणति ॥ वस्त्रमुद्रिकादीना अविउसरणयाएत्ति ॥ अत्यागेन ॥ एगसाडिएणति ॥ अनेकोत्तरीयशाटकाना निषेधाय मुक्त ॥ उत्तरासंगकरणेणति ॥ उत्तरासङ्ग उत्तरीयस्य देहे न्यासविशेष चक्षु स्पर्शे दृष्टिपात ॥ एगत्तिकरणेणति ॥ अनेकत्वस्य मेकत्वमनस्कस्य एकत्वकरण एकालम्बनत्वकरण एकत्वीकरण तेन ॥ तिवि

वत्थाइं पवरपरिहिया अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा सएहिं सएहिं गेहेहिंतो पडिनिक्खमंति पडिनिक्खमइत्ता एगयओ मेलायंति, पायविहारचारेणं तुंगियाए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति, निग्गच्छइत्ता जेणेव पुप्फवईएनाम चेइए होत्था तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छइत्ता थेरेभगवंते पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छंति, तंजहा—सचित्ताणं दव्वाणं विउसरणयाए, अचित्ताणं दव्वाणं अविउसरणयाए, एगसाडिएणं उ

अथ भाषा मुखमा पखमा व आभरण तेणेकरी शोभायमान शिवाय शरीरजेमना । सएहिं २ गेहेहिंतोपडिनिक्खमंति २ त्ता । आपणा आपणा घर थकी नीकळे आपणावरथकी नीकळीने । एगयओमिलायंति । एकत्र एकठा सघळे मिळे । पायविहारचारेणं । पगविहार चालवेकरी पगे च पि वाहन विना । तंगियाएनयरीएमज्झंमज्झेणंनिग्गच्छंति २ त्ता । तुंगियानाम नगरीयकी मध्ये मध्यभागेकरीने पगमार्गे नीसरे नीसरीने । जेणेवपु प्फवतीचेइए । जिहां पुष्पवतीनाम चैत्य । तेणेवउवागच्छंति २ त्ता । तिहांआवे तिहां आवीने । थेरेभगवंतेपंचविहेणं अभिगमेणंअभिगच्छंति । त जहा, पंच श्रुत तप इत्यादि स्थविर भगवंत महापुरुष प्रते पंचप्रकारने अभिगमेकरी तेपासे आवे ते अभिगम कहेछे—सचित्ताणंदव्वाणंविउसरणयाए । पुष्प तांबूलादिक सचित्तद्रव्य तेहनो त्यजवा छांडवा तिणेकरी १ । अचित्ताणंदव्वाणंअविउसरणयाए । वस्त्र मुद्रिकादिक जे अचित्तद्रव्य तेहनो छांडवानथी तिणेकरी २ । एगसाडियउत्तरासंगकरणेणं । एकखंडित एकपटाखंडना उत्तरीयनो दिवोनेविधे न्यासविशेष ते करवो ३ । चक्खुफासेणं

त्तरासगकरणेण , चक्खुप्फासेअंजलिपग्गहेण , मणसा एगत्तीकरणेण । जेणेव थेराभगवंतो तेणेव उवागच्छ
ति उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिण करेति जाव तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासति , तएण
तेथेराभगवंतो तेसि समणोवासयाण तीसेयमहइमहालियाए परिसाए चाउज्जाम धम्म परिकहेति जहा के
सिसामिस्स जाव समणोवासइत्ताए आणाए आराहए भवइ , जाव धम्मो कहिउ । तएणतेसमणोवासया
थेराण भगवंताण अंतिए धम्म सोच्चा निसम्महट्ठतुट्ठ जाव हियया तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिण करेंति ,

---

विषयवेष । हथिपणे तिवारे हाथजोडी मस्तके चढावे ४ । मनसाएगत्तीकरणेण । मनमाहि अवधारी मनने एकाग्र करी ठामेरहवा ५ इमकरी । जेणे थेराभगवंता । जिहां स्थविरभगवंत छे । तेणेवउवागच्छति २ त्ता । तिहां आवे तिहां आवीने । तिक्खुत्तोआयाहिणकरेंति २ त्ता । तीनवार श्रीमणा पासायो प्रामन्मन वारित्यहिने भमे तोम प्रदक्षिणा करे करोने । जावतिविहाएपज्जुवासणाएपज्जुवासेंति । यावत् त्रिविध मन वचन कायानो थे वनावे मनो करावे अनुमोदे एतीन भमे सेवाये उपासनाकरे । तएणथेराभगवंतो तेसिसमणोवासयाणतीसेयमहतिमहालियाए । तिवारे ते स्थविर भग वंत ऐश्वर्यवंत ते तेहने समणोपासकोने श्रावकोने ते सर्वोत्कृष्ट मोटी सभा धर्मनी तिहांकरी । चाउज्जामधम्मपरिकहेति । चार महाव्रतरूपधर्म पार्श्वनाथना संतानियाहि तेमनो कहे । जहाकेसिसामिस्स । जिम केशीकुमार श्रमणे कह्यो तिमकहे । जावसमणोवासयत्ता । यावत् श्रमणोपासक श्राव कपणे पाले । आणाएआराहएभवइ जावधम्मोकहिउ । आज्ञाये आराधक हुवे इसा यावत् धर्मकथा कहे श्रमणोपासकने धर्मोपदेशदीधो । तएणतेसम णोवासया । तिवारे ते श्रमणोपासक श्रावक ते । थेराणभगवंताण अंतिए । स्थविरने भगवंतने समीपे । धम्मसोच्चा । त्रिविधधर्म सांभलीकरी । निस म्महट्ठतुट्ठजावहियया । अतिघणे सम्यक प्रकारे ह्यदयाविषे अर्हंतधर्मनेविषे विश्वासकरी हर्ष घणा सांभलवाने आनन्दे हर्ष्यो ते यावत् ह्रदयनेविषे साधु उपदेश सांभलवाथी आपणपा धर्ममाहे सावधान । तिक्खुत्तोआयाहिणपयाहिणकरेंति २ त्ता । तीनवार श्रीमणोपासको प्रदक्षिणाकरे करीने ।

माय ॥ पुव्वतवेणंति ॥ पूर्वतप सरागावस्थाभावितपसा वीतरागावस्थापेक्षया सरागावस्थायाः पूर्वकालभावित्वात्, एवंसंयमोपि, अयथाख्या तचारित्रमित्यर्थः तत्र सरागकृतेन संयमेन तपसाच देवत्वावाप्तिः रागांशस्य कर्मबन्धहेतुत्वात् ॥ कम्मियाएत्ति ॥ कर्म विद्यते यस्या सो कर्मी तद्भाव सत्ता तया कर्मितया अक्षयत्वात् कर्मणा विकार कार्म्मिका तया अक्षीणेन कर्मशेषेण देवत्वावाप्ति रित्यर्थं ॥ संगियाएत्ति ॥ संङ्गो

तेसमणोवासए एववयासी, पुव्वसंजमेणअज्जो देवा देवलोएसु उववज्जंति, तत्यणं आणंदरक्खिएनामथेरे तेस मणोवासए एववयासी कम्मियाए अज्जो! देवा देवलोएसु उववज्जंति, तत्यणं कासवेनामथेरे तेसमणोवासए एववयासी संगियाए अज्जो! देवा देवलोएसु उववज्जंति। पुव्वतवेणं पुव्वसंजमेणं कम्मियाए संगियाए अ

तेसमणोवासए एववयासी। ते श्रमणोपासक श्रावकाप्रते इम कहता हवा। पुव्वतवेणंअज्जोदेवादेवलोएसुउववज्जंति। पूर्व तपेंकरी महाभागों! साधु देवताभवेविषे देवपणें ऊपजे पूर्वतप सरागभावे तपकरे, पूर्वशब्द स्यो भयो? किंकारवे वीतरागावस्थापेक्षाये सरागपणो तप पहिलो। तत्यणंमेहलेनाम थेरे। तिहां साधुना समुदायमांहे मेहलनामे स्थविर गुणवंत। ते समणोवासएएववयासी। ते श्रमणोपासक श्रावकोप्रतें इम कहताहवा। पुव्वसंज मेणंअज्जोदेवादेवलोएसुउववज्जंति। पूर्व संयमेंकरी महाभागों! साधुदेवताभवेंविषे देवपणें ऊपजे एतले सरागकृत संयमेंकरी तथा तपेंकरी देवपणुं पा मे, रागांशने कर्म बंधनाहेतुपणो एतले यथा ख्यातनहीं सामायिकादि यथाख्यातचारित्रथी पूर्वेंहे। तत्यणंआणंदरक्खिएनामथेरे। ते साधुना समुदाय माहे आनंदरक्षितनाम स्थविर। तेसमणोवासए एववयासी। ते श्रमणोपासक श्रावकोप्रते इम कहताहवा। कम्मियाएअज्जोदेवादेवलोएसुउववज्जंति। कर्मपणे करमेंविकारे महाभागों। साधु देवताभवेंविषे देवपणें ऊपजे एतले समस्तकर्मक्षय थोड़ाकथी कोईएककर्म शेषरह्याहे तिणेंकरी देवपणे। तत्थ णंकासवेनामथेरे। तिहां साधुना समुदायमांहि काश्यपनामे स्थविर। ते समणोवासएएववयासी। ते श्रमणोपासक श्रावकाप्रते इम कहताहवा। सं गियाएअज्जोदेवादेवलोएसुउववज्जंति। संगेंकरी महाभागों। साधु देवताभवेंविषे देवपणे ऊपजे मनुष्यादिकनेसंगे वरतता सरागपणा भयो इत्यादिविषे

हाएपज्जुवासकाएत्ति ॥ इह पयुपासनाविधिर्व्यं भमोवाक्कायनेदाहिति ॥ महइमहालियाएत्ति ॥ प्यासमत्ययस्य स्वाभिकत्वात् महतिमहत्याः ॥ मवरइयफलेत्ति ॥ न चासवो अनाश्रव इतिपाठोपि दृश्यते भनाश्रवो नयकर्मानुपादाम फलमस्ये स्यनाश्रवफल सयमः ॥ वोदाणफलेत्ति ॥ दा पूलवने भपवा ; दैपूशोधन इतिवचनात्, व्यवदाम पूर्वकृतकर्मवनगहनस्य सवम प्राक्कृतकर्मकचवरशोधमया फल यस्य तद्व्यवदानफल तपइ ति ॥ किंपत्तियंति ॥ क. प्रत्ययः कारण यत्र तत्कि प्रत्यय निष्कारणमेव देवा देवलोकेषु त्पद्यन्ते ? सप सयमयो सरागावस्थया तदकारणत्वा दित्यभि

[करेंइसा एयवयासी , सजमेण भंते ! किंफले , तवेणभंते ! किंफले ? तएण थेरा भगवतो तेसमणोवासया एववयासी , सजमेणअज्जो ! अणएहयफले, तवेण वोदाणफले । तएण तेसमणोवासया थेरेभगवते एववयासी , जइणंभते ! सजमेअणएहफले , तवेवोदाणफले , किंपत्तियंनते ! देवादेवलोएसु उववज्जति ? तत्यण कालियपुत्तेणाम अणगारेथेरे तेसमणोवासए एववयासी, पुव्वतवेण अज्जो देवा देवलोएसु उववज्जति, तत्यण मेहिलेनामथेरे

एव वयासी । इम कहवाक्यत्वा । सजमेणभतेकिंफले । सयमना हेभगवन् । पूज्य प्रसनजुक । तवेणभतेकिंफले । वने तपसो हेभगवन् । का फलजुवे इतिप्र म । तएण तेथेराभगवतो तेसमणोवासए । तिवारे तेस्थविर भगवत ज्ञानवत ते श्रमणोपासक श्रावकप्रतें । एववयासी । इमकहे । सजमेणअणहयफल सयमना सयमकरी आवता कर्म पाम्या पनाश्रवफल एतावता नवा आवता कर्म वारीये । तवेवोदाणफले । तपना पूर्वकृतकर्मनो छेदवा एतावता मूलथी कर्म करे । तएणतेसमणोवासया । तिवारे ते श्रमणोपासकश्रावक प्रश्ना एहवा उत्तर सांभळी । थेरेभगवतेएववयासी । स्थविर ते भगवतप्रतें इम कहताहु या । जइणंभतेसजमेअणहयफले । जो य आश्रवकारे, हेभगवन् । सयमना पनाश्रव कहतां संवरफल भेदें आवताकर्म वारीये । तवेवोदाणफले । तपना पूर्व संचितकर्म छेदवा । किंपत्तियंभतेदेवादेवलोएसुउववज्जति । किसेकारण ये चवें हेभगवन् । देवता देवलोकनेविषे ऊपजे तपसयमे एत लीलें तेहना फलारयवी इत्यभिप्राय । तत्यणकालियपुत्तेणामअणगारे । तिहां ते साधुना समुदायमाहे अणगारसंसारे, कालियपुत्र इसेनामे साधु ।

यस्यास्ति स सङ्गी यद्राव सता तया संगितया इत्यादिषु सत्सङ्गोहि संयमादियुक्तोपि कर्म्म बध्नाति तत सङ्गितया देवस्यायासिरिति आह्च-
पुव्वतवसंजमोहो तिरागिणोपच्छिमाखरायस्स । रागोसमोवुत्तो, सगावम्मवोतेव ॥ १ ॥ सवेकमित्यादि ॥ सत्योयमथः कस्मा दित्याह ॥ नोचेव

ज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जति , सच्चेण एसमट्ठे नोचेवण आयभाववत्तव्वयाए । तएण तेसमणोवासया थेरेहिं भगवतेहिं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरिया समाणा हट्ठतुट्ठा थेरेभगवते वदंति णमसंति , वंदइत्ता णमसइत्ता पसिणाइं पुच्छंति, अट्ठाइं उवादियंति, उट्ठाएउट्ठेंति, थेरेभगवते तिक्खुत्तो जाव वदंति — णमसंति, वंदइत्ता णमसित्ता थेराणंभगवताणं अंतियाओ पुप्फवईयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमंति , पडिनिक्ख

समकरता संयमादियुक्तता कर्मबंधे देवत्वो देवपणे । पुव्वतवेण पुव्वसंजमेण कथमाए । इम सरागतपेकरी सराग संयमेयारित्रेकरी कर्मक्षयकरी । स सिवाए । मनुष्य इत्यादि सवेकरी । पवाएवारेदवाणबुउपज्जति । महाभार्यो । देवपदें देवसाकमेविषे उपजे । सवेयएसमट्ठे । सांचू प वाक्यालंकारे, एह मन समझे एह मत यथार्थ कह्याहे । नाचेवआयभाववत्तव्वयाए । महा मिथे प वाक्यालंकारे आत्मभाव वक्तव्यतायेकरी कह्या, एतले आपणो मनमाये मनमाव बुद्धि मनेनवो कह्या एहमव परमार्थ्यथी कह्याहे एमव । तएणतेसमणोवासया । तिवारे ते श्रमणोपासक श्रावक । थेरेहिंभगवते हि । स्थविरे भगवते । इमाइंएयारूवाइं । एह एवाद्रूमरूप । वागरणाइं वागरियासमाणा । प्रश्नागम कह्यायका । हट्ठतुट्ठा । हर्षपाम्या । थेरेभगव तो । स्थविर भगवतप्रते । वदंति नमंसति वंदणा करि । वाटे नमस्कारकरे बांदोने । णमंसित्ता । नमस्कारकरीने । पसिणाइं पुच्छंति २ त्ता । प्रश्नप्रते पूछे प्रश्नप्रते पूछीने । अट्ठाइं उवादियंति २ त्ता । पूर्वोक्त अर्थार्थ धारे धारीने । उट्ठाएउट्ठेंति २ त्ता थेरेभगवते तिक्खुत्तोवंदति णमंसति २ त्ता । उठी उभाथाय उभाथाय ने स्थविर भगवत तेहाप्रतें तीनवार वांदे नमस्कारकरे वांदीने नमस्कारकरीने । थेराणंभगवताणं । स्थविरने भगवतने । अंतियाओ समीपथको । पुप्फई वतीनामोचेइयाओ । पुष्पवती नाम चैत्यथको । पडिनिक्खमति २ त्ता । नीसरे नीसरीने । जामेवदिसिपाउब्भूयाया । जेदिशिथी आव्याहता । तामेवदि

वमित्यादि ॥ नैषा स्वज्ञायवक्तव्यतया ऽसमर्थ, आत्मज्ञावएव स्वाभिप्रायएव न वस्तुतत्वं वक्तव्यो वाच्यो ऽभिमाना श्रेयः ते आत्मज्ञाववक्तव्या

मइसा जामयदिस पाउब्भूया तामेवदिस पडिगया । तएण तेथेरा जगवतो छ्यावचाकयाइ तुंगियाउ नयरी ज पुप्फवइयाउ चेइयाउ पडिनिग्गच्छति, पडिनिग्गच्छइत्ता बहिया जणवयविहार विहरति, तेणका लेण तेणसमएण रायगिहेनाम नयरे जाय परिसापडिगया, तेणकालेण तेणसमएण समणस्सजगवउ महा वीरस्स जेठेअंतेवासी इदभूइणाम अणगारे जाय संखित्तविउलतेउलेस्से छठछठेण अनिक्खित्तेण तवोकम्मे ण सजमेण तवसा अप्पाण जावेमाणे विहरइ, तएण सेजगवगोयमे छठक्खमणपारणयसि पढमाए पोरि

सिपडियया । त दिवसने मार्गे पाडायवा । तएवं तेथेरा । तिवारे ते स्थविरसाधु । पवयाकवाइ । एकदा प्रस्तावे । तुंगियाथा नयरीथी । तुंगिया नाम नगरी थकी । पुप्फवतियाथा चेइयाथा । पुप्फवती नाम चैत्यथकी । पडिनिक्खमति २ त्ता । नीसरे नीसरीने । बहियाजणवयविहारं विहरति । बाहिर जनपद देशमेंविषे विहारकरी विचरे एतावता बीजे स्थानकेजाय । तेणंकालेण तेणंसमएण । ते कालनेविषे ते समयनेविषे । रायगिहेनामनयरेहोत्था । राजगृहनामे नगर हूवा, तिहां श्रीवर्द्धमान स्वामी समोसर्या । जावपरिसापडियया । यावत् पर्षदापाछी धर्मकथा परिषदा पाछीगइ इत्यादि सर्वकहवा । तेण कालेण । ते कालनेविषे । तेणसमएण । ते समयनेविषे । समणस्सभगवओमहावीरस्स । श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीनो । जेठे अंतेवासी । वडाशिष्य थया । इदभूतीनामेंअणगारे । इद्रभूती इसेनामे साधु इत्यादि । आयसंखित्तविउलतेउलेसे । यावत् संक्षेपीछे विपुल मोटीवर तेजोलेश्या जेणे । छठछठेण । छठछठ तपे पारणाकरेछे । अनिक्खित्तेणतवोकम्मेण । अंतरारहित निरन्तर इसव, तपकर्मेकरी । संजमेण तवसाअप्पाण भा वेमाणेविहरइ । सयम सतरेभेद तप बारेभेदे ते समये तपेकरी आत्माप्रत भावताथका विचरेछे । तएण सेभगवंगोयमे । तिवारे तेभगवंत गौतम । छठक्खमणपारणगसि । छठभत्तना पारणामेविषे । पढमाएपोरिसीए । दिवसनी पहिली पोरिसीनेविषे । सज्झायंकरेइ । सज्झायकरे । बीयाएपोरिसो

सोयां माय मासमाधवत्स्यता मक्षमामिसा तया नयप मक्षमानितयैव ग्रुमो पितु परमायएवा य मेवामिप इतिज्ञायना ॥ अतुरियमिति ॥ कायिक स्वरारहित ॥ अचक्ततिं ॥ मामसंचायसरहित ॥ असंभंतेति ॥ असम्भ्रान्तनाम ॥ घरसमुदाणस्स ॥ गृहेषु समुदाम भैक्ष गृहसमुदाम तस्मै गृहसमुदा

सीए सज्झाय करेइ, बीयाए पोरिसीए ज्झाण झियाए, तइयाए पोरिसीए अतुरियमचवलमसंभंते मुहपोत्तिय पडिलेहेइ, पडिलेहेइत्ता भायणाइ वत्थाइ पडिलेहेइ, पडिलेहेइत्ता भायणाइ पमज्जइ, पमज्जइत्ता भायणाइ उग्गाहेइ, उग्गाहेइत्ता जेणेव समणेभगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता समण भगव महावीर वदइ णमसइ, वदइत्ता णमसइत्ता एववयासी इच्छामिणभंते! तुब्भेहि अब्भणुन्नाए समाणे छट्ठक्खमणपारणयसि रायगिहे नयरे उच्चनीयमज्झिमाइ कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्तए?

ए। बीजो पारिसीयें। ध्यानध्यावे। ध्यानध्यावे ध्यानविचारे। तईयापपोरिसीए। त्रीजी पोरिसी कहे तिवारे। अतुरियमचवलमसंभंतेमुहपोत्तिय पडिलेहेइ २ त्ता। मानसिक उतावलपणो मनें चपलपणो असम्भ्रान्तपणा मुख पतले अथवा पूर्वक समये १ मुख वस्त्रिकाप्रते पडिलेहे पडिलेहीने। भायणाइं वत्थाइं पडिलेहेइ २ त्ता। भाजन तोनपात्रा वस्त्र पडिलेहे पडिलेहीने। भायणाइ पमज्जइ २ त्ता। भाजन पात्रा प्रमार्जे पूंजे प्रमार्जीने। भायणाइ उग्गाहेइ २ त्ता। भाजनपात्रा ग्रहे ग्रहीने। जेणेवसमणे भगवंमहावीरे। जिहां श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी। तेणेवउवागच्छइ २ त्ता। तिहां आवे तिहां आवीने। समणं भगवं महावीर। श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीप्रतें। वंदइ नमंसइ २ त्ता। वांदे नमस्कार करे वांदीने नमस्कार करीने। एववयासी। इम बोलताहवा। इच्छामिणंभंतेतुब्भेहिंअब्भणुण्णाएसमाणे। वांछुं छूं। हे भगवन्! तुम्हें आज्ञादीधाथका छतेहुं जाउं आज्ञा पायता। छट्ठक्खमणपारणगंसि। छट्ठभक्तना पारणानेविषे। रायगिहेनयरे। राजगृहनामे नगरनेविषे। उच्चनीयमज्झिमाइं कुलाइं। उंच नीच मध्य कुल मध्ये। घरसमुदाणस्सभिक्खायरियाए। घरनेविषे समुदाय ते भिक्षा लेवानेअर्थे एतले भिक्षाचरीनेअर्थे भिक्षालेवानेअर्थे अडित्तए इमे पूछ्या भगवंत

माय ॥ त्रिकरणायारिमति ॥ निद्रासमाधारेव ॥ जुगतरपलोयणाणरि ॥ युगं यूप आरममात्र भमार स्वदेहदेसस्य दृष्टिपातदेसस्य ध्यवधान

अहासुहंदेवाणुप्पिया मापडिबंध । तएणं भगवंगोयमे समणेण भगवया महावीरेण अब्भणुन्नाएसमाणे सम णस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ गुणसिलाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमइत्ता अतुरियमच वलमसंभंते जुगमंतरपलोयणाए दिठीए पुरओरिय सोहेमाणे सोहेमाणे जेणेव रायगिहेनयरे तेणेव उवाग च्छइ उवागच्छइत्ता रायगिहेनयरे उच्चनीयमज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियं अडइ, तए णं सेभगवंगोयमे रायगिहेनयरे जाव अडमाणे बहुजणसद्दं निसामेइ, 'एवंखलु देवाणुप्पिया तुंगियाए न यरीए बहिया पुप्फवइयाए चेइयाए पासावच्चिज्जा थेराभगवंतो समणोवासएहिं इमाइं एयारूवाइं वागर

अर्थ—यथासुखदेवानुप्रियामापडिबंध । जिम सुखउपजे तिमकरो हेदेवानुप्रिय । कांइमा प्रतिबंध मकरस्यो व्याघात मकरस्यो । तएणंभगवंगोयमे । तिवारे भगवंत गौतम । समणेणंभगवयामहावीरेणं । श्रमणभगवंत श्रीमहावीरस्वामी । अब्भणुन्नाएसमाणे । आज्ञादीधांथका । समणस्सभगवओमहा वीरस्स । श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीना । अंतियाओ गुणसिलाओ चेइयाओ । समीपथकी गुणसिलानाम चैत्यथकी । पडिनिक्खमइ २ त्ता । नीक ले नीकलीने । अतुरियमचवलमसंभंते । कायाथकी उतावलाईरहित मनथकी चपलताइरहित असंभ्रांत भ्रम रहित । जुगंतरपलोयणाएदिठीएपुरओरियसोहे माणे । युग साढात्रणहाथ प्रमाण शरीर देह प्रमाण दृष्टिपात देशने अवधारी देखे एहवो इर्यासमिति सोधता थकां । जेणेव रायगिहेनयरे । जिहां राजगृहनामा नगरछे । तेणेवउवागच्छइ २ त्ता । तिहां आवे तिहां आवीने । रायगिहेनयरे । राजगृहनामा नगरनेविषे । उच्चनीयमज्झिमाइंकुलाइं । ऊंच नीच मध्यम कुलनेविषे । घरसमुदाणस्सभिक्खायरियंअडइ । घरनेविषे समुदाय भिक्षाचर्याने अर्थे फिरे । तएणं सेभगवंगोयमे । तिवारे ते भगवंत गौतम । रायगिहेनयरे । राजगृह नगरनेविषे । जावअडमाणे । यावत् फिरताथका । बहुजणसद्दंनिसामेइ । घणा

सेपा भाव आत्मभावपरक्यता अहमानिता तथा नवप भवमानितयैव शुभो पितु परमाप्रण्या य मयविध इतिज्ञायमा ॥ असुरियाति ॥ कायिक त्वरारहित ॥ अचपलति ॥ मानसचापलरहित ॥ असंभ्रांतेति ॥ असम्भ्रान्तमाम ॥ घरसमुदाणस्स ॥ गहपु समुदान भैक्ष गृहसमुदाम तस्मै गृहसमुदा

सीए सज्झाय करेइ , बीयाए पोरिसीए झाण झियाए , तइयाए पोरिसीए अतुरियमचवलमसंभंते मुहपो त्तिय पडिलेहेइ, पडिलेहेइत्ता भायणाइ वत्थाइ पडिलेहेइ, पडिलेहेइत्ता भायणाइ पमज्जइ, पमज्जइत्ता भायणाइ उग्गाहेइ , उग्गाहेइत्ता जेणेव समणेभगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ , उवागच्छइत्ता समण भगव महावीर वदइ णमसइ, वदइत्ता णमसइत्ता एववयासी इच्छामिणंभंते! तुब्भेहि अब्भणुण्णाए समाणे छठक्खमणपारणयंसि रायगिहे नयरे उच्चनीयमज्झिमाइ कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्तए ?

ए। बीजी पोरिसीयें। ध्यानध्याय। ध्यानध्यावे धर्मविचारे। तईयाएपोरिसीए। त्रीजी पोरिसी मा तिवारे। अतुरियमचवलमसंभंते मुहपोत्तियं पडिलेहेइ २ त्ता। उतावलाईरहित मने चपलताई असम्भ्रांतपणे थका एतले अणुक्रमे पूर्वक करवे २ मुख वस्त्रिकाप्रते पडिलेहे पडिलेहीने। भायणाइ वत्थाइ पडिलेहेइ २ त्ता। भाजन तोनपात्र वस्त्र पडिलेहे पडिलेहीने। भायणाइ पमज्जइ २ त्ता। भाजन पात्र प्रमार्जे पूंजे प्रमार्जीने। भायणाइ उग्गाहेइ २ त्ता। भाजनपात्र ग्रहे ग्रहीने। जेणेवसमणे भगवंमहावीरे। जिहां श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी। तेणेवउवागच्छइ उवागच्छइत्ता। तिहां आवे तिहां आवीने। समणं भगवं महावीरं। श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीप्रते। वंदइ णमंसइ २ त्ता। वांदे नमस्कार करे वांदीने नमस्का र करीने। एववयासी। इम कहताहवा। इच्छामिणंभंते तुब्भेहिअब्भणुण्णाएसमाणे। वांछुं छूं। हेभगवन्! तुम्हे आज्ञादीधाथका एतले तुम्हारी आज्ञा थयता। छट्ठक्खमणपारणयंसि। छठभक्तना पारणानेविषे। रायगिहेनयरे। राजगृहनामे नगरनेविषे। उच्चनीयमज्झिमाइ कुलाइ। ऊंच नीच मध्य म कुल। घरसमुदाणस्सभिक्खायरियाए। घरनेविषे समुदाय ते भिक्षा तेहनेअर्थे एतले आहारनेअर्थे भिक्षाचारीनेअर्थे अटन करवा इसे पूछ्यो अमवत

गिण्हइत्ता रायगिहाओ नयराओ पडिनिक्खमइ अतुरिय जाव सोहेमाणे जेणेव गुणसिलए चेइए जेणेव समणे भगवंमहावीरे तेणेवउवागच्छइ २ समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते गमणागमणाए पडिक्कमइ एसणमणेसणं आलोएइ, भत्तपाणं पडिदंसेइ २ समणं भगवं महावीरं जाव एववयासी, एवखलु भंते! अहंतुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे रायगिहे नगरे उच्चनीयमज्झिमाणि कुलाणि घरसमुदाणस्स भिक्खायरिया ए अडमाणे बहुजणसद्दं निसामेइ एवखलु देवाणुप्पिया तुंगियाए नगरीए बाहिया पुप्फवईए चेइए पासा

जेहने। जावसमुयत्ताणको। यावत् जयणा मातुव नगरमां जेहने। अहापज्जत्तसमुदाणमेवइ २ ता। यथा पर्याप्त एतले भिक्षा आहार संपूर्ण ते प्र
तें ग्रहे ग्रहीने। रायगिहाओनयराओपडिनिक्खमइ २ ता अतुरियमजावसोहेमाणे। राजग्रहमासा नगरथकी नीकले नीकलीने उतावलो चपलपणानहो
मनथी उतावलानहो यावत् ईर्यासमिति सोधतोथको। जेणेवगुणसिलएचेइए। जिहां गुणसिलनाम चैत्य छै। जेणेवसमणेभगवंमहावीरे। जिहां श्रम
ण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीछै। तेणेवउवागच्छइ २ ता। तिहां आवे तिहां आवीने। समणस्सभगवओमहावीरस्स। श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी
ने। अदूरसामंते। घणू वेगलानहो घणू ढूकडानहो। गमणागमणाएपडिक्कमइ २ ता। गमनागमन जावो आविवो आलोवै निरत करने जेजोव वि
राधनाथइवे, ते संभारी पडिकमे पडिकमीने। एसणमणेसणमालोएइ। जे कांई दोष सहजा थयो तोदूषण आलोइ। भत्तपाणंपडिदंसेइ। आ
त पाणी निर्दोष विहरी ते देखाडे देखाडीने। समणंभगवंमहावीरं। श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीप्रतें वांदी। जावएववयासी। यावत् इम कह
ताहवा। एवंखलुभंतेअहंतुब्भेहिं। इम निश्चे हे भगवन्! हूं तुम्हे। अब्भणुण्णाएसमाणे। आज्ञादीधाथका। रायगिहेनयरे। राजग्रहमाहा नगरनेविषे।
उच्चनीयमज्झिमाइंकुलाइं। उंच नीच मध्यमकुलनेविषे। घरसमुदाणस्सभिक्खायरियाए अडमाणे। घरसमुदाय भिक्षा आहारनेविषे फिरताथका।
बहुजणसद्दंनिसामेइ। घणा मनुष्यनिमुखथी शब्द सांभल्या। एवंखलुदेवाणुप्पिया। इम निश्चे हे देवानुप्रिय देवप्रभ ? तुंगियाएनयरीएबहिया। तुंगिया

मसोकपति पासा पुगात्तरमसोकना तया पृष्या ॥रियंति॥ वर्योगमन ॥ सेकहमेयमक्षेएवति ॥ भय कथमेतत् स्थविरवचन मन्ये इति वितर्कार्या

णाइ पुच्छिया , सजमेणभंते ! किफले तवे किफले ? तएण तेथेरा जगवतो समणोवासए एव वयासी सज्ज
मेणअज्जो ! अणण्हयफले , तवे वोदाणफले , तचेव जाव पुब्बतवेण पुब्बसजमेण कम्मियाए सगियाए अ
ज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जति , सच्चेण एसमठे णोचेवण आयजाववत्तव्वयाए । सेकह मेय मन्ने एव ?
तएण जगवगोयमे इमीसेकहाए लद्धठे समाणे जायसड्ढे जाव समुप्पन्नकोउहल्ले अहापज्जत्त समुदाण गिण्हइ

महापना मवतो वचन पाभवे। एवमहहमाचप्पिया। इम मिवे वेदेवानुमिव। सुमिवाएपवरीए। तगियानाम नगरीमे। वहियापुप्फवतीएचेइए। बाहिर पुप्पतोमासा चेत्रमेविये। पासावचिज्जावेरामनवतो। पार्श्वनाथना संतानिया प्रमिपादिक स्थविर भगवतमतें। समणोवासएहि। यमणो पासवे यावद। इमाइ एयारूवाइ वागरणाइ पुच्छिया। एहवा एतादृशरूप भावे करवे ते प्रश्नामाचय पूछ्या ते कहेहे—सजमेणभंते किफले। सयमनो हेभगवत! स्यू फल। तवेकिंफले। तपना स्यू फल? तएणथेरामनवंतो। तिवारे ते थविर भगवत। ते समणोवासए। यमणोपासक प्रत्ये यावद् कामते। एवमवासी। इम वहता हवा। सजमेणभज्जो। सयमनो मजोफार्यो! भणहयफले तवेवोदाणफले। भनाश्रवफल नवा पापताकर्म वारीवे त पना मूनमाकमक्षोवे वी फल। तवेनजावपुब्बतवेणपुब्बसजमेणकम्मियाए। इम तिसरीष कहवो, यावत् सराम तपेकरी सरागचारित्रेकरी कर्मीय शेष रह्या तेणेकरी। सगियाए भक्षा। सगुण द्रव्याने सगेकरी भजापार्यो। देवादेवलाएसुउववज्जति। देवपणे देवलोकनेविये उपजे। सच्चेणएसमठे। सच ए पण सत्य हे पणि। नोचेवआयभावनत्तव्वयाए। भयो मिये व ववाभावपारे आपणो भवपनावे वतभावनुरि पर्मेनमो वत्ता एपव परमार्थमो वत्ता हे—सेकहमेयमवेएव। हिवे किम ए स्थविरनां वचनमानीवे एहवो वितर्कपना दर्षोकारे वधुजन वर्षा महाचना वचन सांभल्या। तएणसेभगवगोय मे। तिवारे ते भगवत गोतम। इमीसेकहाएलद्धठे समाणे भाणसत्ठे। एहवो कथावार्ता तेहना भरयाभीवता पतवे एमात सांभलीमे उपनी भद्धा पामी।

गिएहइत्ता रायगिहाउ नयराउ पडिनिक्खमइ अतुरिय जाव सोहेमाणे जेणेव गुणसिलए चेइए जेणेव सम
णे भगवमहावीरे तेणेवउवागच्छइ २ समणस्स भगवउ महावीरस्स अदूरसामंते गमणागमणाए पडिक्क
मइ एसणमणेसण आलोएइ, भत्तपाण पडिदंसेइ २ समण भगव महावीर जाव एवंवयासी, एवंखलु भंते!
अहंतुम्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे रायगिहे नगरे उच्चनीयमज्झिमाणि कुलाणि घरसमुदाणस्स भिक्खायरिया
ए अडमाणे बहुजणसद्द निसामेइ एवंखलु देवाणुप्पिया तुंगियाए नगरीए बाहिया पुप्फवईए चेइए पासा

वेइने। आवसमुप्पन्नकोउहले। यावत् उपना कोतुक भवरच वेइने। यहापज्जत्तसमुदाणयेषद २ त्ता। यथा पर्याप्त पतले भिक्षा आहार सपूर्ण ते प्र
तें थई परीने। रायभिक्खाघरा घापडिनिक्खमइ २ त्ता भतुरियजावसोहेमाणे। रायगृहनामा नगरथकी नीकलें नीकलीने आवती उतावलाइथी
समणी उतावलाहरी यावत् ईर्यासमिति साधतायका। जेणेवगुणसिलएचेइए। जिहां गुणशिलानाम चैत्यहे। जेणेवसमणेभगवंमहावीरे। जिहां श्रम
ण भगवत श्रीमहावीरस्वामीछे। तेणेवउवागच्छइ २ त्ता। तिहां आवे तिहां आवीने। समणस्सभगवओमहावीरस्स। श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी
ने। अदूरसामंते। घणुं वेगलानहो घणु ढकडानही। गमणागमणाएपडिक्कमइ २ त्ता। गमनागमन आवा आविवो आलोवे तिवार पछेने चेषीप वि
राधनाईहवे, ते संभारो पडिक्कमे पडिक्कमीने। एसणमणेसणआलोएइ। जे कांई दाष भवना प्रमुख थयो तीद्द्पण आलोइ। भत्तपाणपडिदंसेइ। आ
ण पाणी निर्दोष विहरो ते देखाडे देखाडीने। समणभगवमहावीर। श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीप्रते वांदी। जावएवंवयासी। यावत् एम बोल
तायका। एवंखलुभंतेअहतुम्भेहिं। एम निश्चे हेभगवन्। हु तुम। अब्भणुन्नाएसमाणे। आज्ञादीधायका। रायगिहेनयरे। राजगृहनामा नगरनेविषे।
उच्चनीयमज्झिमाणिकुलाणि। ऊंच नीच मध्यमकुलनेविषे। घरसमुदाणस्सभिक्खायरियाए अडमाणे। घरसमुदाय भिक्षा आहारनेविषे फिरतायका।
बहुजणसद्दनिसामेइ। घणा मनुष्यनिमुखथी शब्द सांभल्या। एवंखलुदेवाणुप्पिया। एम निश्चे हेदेवानुप्रिय देवबल्लभ ? तुंगियाएनयरीएबहिया। तुंगिया

प्रसोक्खति पासा पुव्वान्तरमतोक्ता तया पृच्छा ॥ रियंति॥ ईर्यासमर्थ ॥ सेकहमेयमप्रेएवति ॥ अथ कथमेतत् स्थविरवचन मन्ये इति वितर्कार्थो

णाइ पुच्छिया, सजमेणन्नंते! किंफले तवे किंफले ? तएणं तेथेरा ज्ञगवंतो समणोवासए एवं वयासी सज्ज मेणष्मज्जो! प्रणगहयफले, तवे वोदाणफले, तचेव जाव पुव्वतवेण पुव्वसजमेण कम्मियाए संगियाए अज्जो! देवा देवलोएसु उववज्जंति, सच्चेणं एसमठे णोचेवणं आयन्नाववत्तव्वयाए। सेकह मेयं मन्ने एवं ? तएण ज्ञगवंगोयमे इमीसेकहाए लठ्ठे समाणे जायसह्वे जाव समुप्पन्नकोउहल्ले अहापज्जत्त समुदाणं गिरह्इ

मनुष्या मधवो यथा सोभवे। एवबहुदकाएपिया। इस लिये देवेवानुप्रिय! तुंगियाएणयरीए। तुंगियानाम नगरीने। वहियापुप्फवतीएचेइए। बाहिर पुप्फवतीनामा चैत्यनेविषे। पासावच्चिज्जाथेराभयवंता। पार्श्वनाथना सतानिया प्रतिपादित स्थविर भगवंतप्रते। समणोवासएहिं। श्रमणो पासके श्रावके। इमाइ एयारुवाइ वागरणाइ पुच्छिया। एहवा एतादृशरूप प्रश्नो पूछ्या ते प्रश्नमाथ पूछ्या ते कहेछे—सजमेणभंते किंफले। संयमनो हेभगवंत! सु फल। तवेकिंफले। तपना सुं फल? तएणथेराभगवंतो। तिवारे ते स्थविर भगवंत। ते समणोवासए। श्रमणोपासक श्रावक प्रते। एववयासी। इम कहता हवा। संजमेणमज्जो। संयमनो महोभार्यो! अणण्हयफले तवेवोदाणफले। अनाश्रवफल तथा भावताकर्म पाठीये ते पना मूलथाकमहेरीवे ते फल। तवेवणावपुव्वतवेणपुव्वसजमेणकम्मियाए। इम तिमहीज कहवो, यावत् सराग तपेकरी सरागचारित्रेकरी कर्मांश शेष रह्या तेणेकरी। संगियाए। अनुषंग पुण्याने संगेकरी महोभार्यो! देवादेवलोएसुउववज्जंति। देवपणे देवलोकनेविषे उपजे। सच्चेणएसमठे। सच्च ए पण समझे पणि। णोचेवणआयभाववत्तव्वयाए। अहो नियं आत्माना भाववे पाषनो कथनाये आत्मभावस्तुति पक्षेनवो कह्या एपणे परमार्थको कह्या है—सेकहमेयमप्रेएव। किंवे किम ए स्थविरना वचनमानोये एहवा वितर्कपणा इत्येप्रकारे बहुजन कहे मनुष्यनो वचन सांभली। तएणसेभगवंगोय मे। तिवारे ते भगवंत गौतम। इमीसेकहाएलद्धठ्ठे समाणेजावसठ्ठे। एहवो कथावार्ता लेवना ग्रहणाथीवतो एहवो पदार्थ सांभलीने उपनी श्रद्धा भावना

उपयोगमयतो ज्ञानिमइत्यर्थः जानमीतिभावः ॥ पलिउञ्चियत्ति ॥ परिसमन्तात् योगिकाः परिज्ञानिमइत्यर्थः, परिजानमीतिभाव , अनन्तर म

उज्झियाण भंते ! तेथेराभगवतो तसि समणोवासयाण इमाइ एयारूवाइ वागरणाइ वागरेत्तए । उदाहु ,
" अणाउज्झिया पलिउज्झियाण भंते ! थेराभगवतो तेसिसमणोवासयाण इमाइ एयारूवाइ वागरणाइ वा
गरेत्तए । उदाहु , अपलिउज्झिया पुव्वतवेण अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जति, पुव्वसजमेण कम्मियाए
सगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जति, सच्चेणं एसमठे णोचेवण आयभाववत्तव्वयाए पन्नूण गोय
मा ! तेथेराभगवतो तेसिसमणोवासयाण इमाइ एयारूवाइ वागरणाइ वागरेत्तए णोअप्पन्नू तहचेव नेय

भते। एतया उपयोगवन्त ज्ञानवन्तो भवेहि देभगवन् ! ते थेराभगवतो। ते स्थविर भगवत। तसिसमणोवासयाण। ते श्रमणोपासकना। इमाइ एयारू
वाइ। एतया एताद्दशरूप। वागरणाइ वागरेत्तए। प्रश्न प्रते कथनवेवाने। उदाहु अणाउज्झिया। अथवा उपयोगवंतनथी ज्ञानेनथी। पलिउज्झियाण
भंतेथेराभगवंता। ज्ञानवन्तो छता जिम छता सम्यग्भावनाथें एतलो वाचें समस्तपर्यवाथें हभगवन् ! ते स्थविर भगवत। तेसिसमणोवासया
ण। ते श्रमणोपासकना। इमाइ एयारूवाइ वागरणाइ वागरेत्तए। एतला एताद्दशरूप प्रश्न प्रते कथनदेशाने। उदाहु अपलिउज्झिया। अथवा विशिषेष
ज्ञानवंतनथी। पुव्वतवेण अज्जो देवा देवलोएसुउववज्जति। पूर्वले एतले सरागतपे करीआर्यो ! देव देवलोकनविषे ऊपजे। पुव्वसजमेण। पूर्व सयमे सरा
ग संयमे। कम्मियाए सगियाए। शेष कर्मायेकरी मनुष्य द्रव्यादिसंगेकरी। अज्जोदेवादेवलोएसुउववज्जति। अहोआर्यो ! देव देवलोकनेविषे ऊपजे
सच्चेणएसमट्ठे। साचू ए अर्थ। णोचेवणआयभाववत्तव्वयाएपन्नूण गोयमा। अहो जिम ए वाक्यातरकारे, आत्मभाव वक्तव्यताये अहंबुद्धिभावे एणपर्ये कह्या
छ इतिप्रश्न समर्थछे हेगौतम ! तेथेराभगवंता। ते स्थविर भगवत। तेसिसमणोवासयाण। ते श्रमणोपासकना। इमाइ एयारूवाइ वागरणाइ। एतला
एताद्दशरूप प्रश्न प्रते। वागरित्तए। कथन देवाने। णोअप्पन्नू तहचेवनेयव्व। अहो अप्रमाण इत्यादि, तिमहीज जाणवो। अवसेसियजावपभूसमियं

निपातः एव ममुना प्रकारेणेति, बहुवचनम ॥ पनूवति ॥ प्रभवः समर्थो से ॥ समियावसि ॥ सम्यगिति प्रशसार्थो निपात स्तेन सम्यक्ते व्या
कतु म्यहते भविपर्यासा स्तत्पर्य समभ्युतीतिवा सम्यग्यः समितावा, सम्यक् प्रवृत्तय मभिसावा, स्यासवत ॥ चाउज्जियमति ॥ चायोगिकाः

पन्निज्जा थेरा जगवतो समणोयासएहिं इमाइ एयारूयाइ वागरणाइ पुच्छिया, सजमेण जते ! किंफले, तवे किं फले? तवेय जाव सच्चेण एसमहे णोचेवण श्रायजावबत्तव्याए तपजूण जते ! तेथेराजगवतो तेसिं समणोवासयाण इमाइ एयारूयाइ वागरणाइ वागरेत्तए । उदाहु, श्रप्पजूसमियाण जते ! तेथेराजगवतो तेसिं समणोवासयाण इमाइ एयारूयाइ वागरणाइ वागरेत्तए । उदाहु, श्रसमिया श्राउज्जियाण जते ! तेथेराजगवतो तेसिं समणोवासयाण इमाइं एयारूयाइ वागरणाइ वागरित्तए । उदाहु, श्रणाउज्जियापलि

ममरीने वाहिर । पुम्मवतोसवेहए । पव्यवोनामा चेवमविवे । पासावसिमा । पाममाममा सतामिया । वेराभमवता । स्थविर भगवत । समणोवास
एहि । ममणोपासके । इमाह एयारूवाह । मवन भवसहित मामोवा ववमतव । पसिवारपुच्छिया । प्रश्न वेय मेव उपादेय यद्य पूर्व । संजमेसमतेवि
फले । सममनो हेभमवन् केफल । एं फलं ? तवेकिंफले । तपसा फलं ? तवेवावसवेवएसमठे । तिमवोत्र सममवो, यावत् एषव सत्वहे सम
मठे पवि । योचेवआयभावसत्वताए । महो निवे व माममावारे, मात्मतुष्टि करीने मवो वावा एमव । तपमूणतेथेराभगवतो । मे भवो प्रभू स
मथ हेभगवन् । ते स्थविर भगवंत । तेसिसमणोवासवाण । ते श्रमणोपासक श्रमणरोत्र चावकमा । इमाइ एयारूवाइ । ए सिद्धान्तोक्त प्रश्नो भावित
रूप । वागरणाइ वागरेत्तए । प्रश्न उत्तरायदेवाने एतावता स्थविर स सार्वकोना प्रश्न टाळियाने समर्थ छे । उदाहुअप्पम् । अथवा ते समथमगी
मथ करवाने । समियाथभतेथेराभगवतो । भलीभांत अभ्यासवत हेभगवन् । स्थविर भगवन । ते सिंसमणोवासयाण । तेश्रमणोपासकना । इमाइंए
यारूवाइ वागरणाइ वागरेत्तए । एतावा एताद्यरूप प्रश्न ते प्रते उत्तरदेवाने । उदाहुअसमिया । अथवा समाप्त अभ्यासे श्रमणमगी । भाउज्जियाण

उपयोगयमो धामिमइत्यय आमसीतिमाव ॥ परिउक्खियति ॥ परिसमत्तात् योगिका परिज्ञानिमइत्यर्थः परिज्ञामसीतिमावः, अनन्तर म

उज्जियाण भंते ! तेथेराभगवतो तसि समणोवासयाण इमाइ एयारूवाइ वागरणाइ वागरेत्तए । उदाउ, अणाउज्जिया पलिउज्जियाण भंते ! थेराभगवंतो तेसिसमणोवासयाण इमाइ एयारूवाइ वागरणाइ वागरेत्तए । उदाउ, अपलिउज्जिया पुव्वतवेण अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जति, पुव्वसजमेण कम्मियाए संगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जति, सच्चेणं एसमट्ठे णोचेवण आयभाववत्तव्वयाए पभूण गोयमा ! तेथेराभगवतो तेसिसमणोवासयाण इमाइ एयारूवाइ वागरणाइ वागरेत्तए णोच्चेवण अप्पभू तहचेव नेय

भते । एवंवा उपयोगवत सामर्थ्ययुक्ते आवेवे इभयवन् । ते थेराभगवतो । ते स्थविर भगवत । तसिसमणोवासयाण । ते श्रमणोपासकाना । इमाइ एयारू वाइ । एवंवा एतादृशरूप । वागरणाइ वागरेत्तए । प्रश्न भते व्याकरणाने । उदाउ अणाउज्जिया । अथवा उपयोगवंतमही आयेनही । पलिउज्जियाण भतेथेराभगवंता । आभवन्ताको छूकवा सिम छूकवा समस्तभावनांवे एहवो जाणे समस्तपरोवावे इभगवम् । ते स्थविर भगवंत । तेसिसमणोवासया ण । ते श्रमणोपासकना । इमाइ एयारूवाइ वागरणाइ वागरेत्तए । एहवां एतादृशरूप प्रश्न भते व्याकरणाने । उदाहु अपलिउज्जिया । अथवा किंचियेप आजवतनही । पुव्वतवेणअज्जोदेवादेवलोएसुउववज्जति । पूर्वतपे एतले सरागतपे अहोआर्यो । देव देवलोकमवि उपजे । पुव्वसजमेण । पूर्व संयमे सरा ग संयमे । कम्मियाए संगियाए । येम कर्मायोगकरी मनुष्य इत्यादिसंगेकरी । अज्जोदेवादेवलोएसुउववज्जति । अहोआर्यो ! देव देवलोकमेविषे उपजे सच्चेएसमट्ठे । सांचू ए अर्थ । णोचेवणंआयभाववत्तव्वयाएपभूणं गोयमा । नही मिथ्ये ए वाक्यालंकारे, आत्मभाव वक्तव्यताये अहंबुद्धिभावे एम व्याख्या कहतिप्रश्न समर्थछे हेगोतम ! तेथेराभगवंता । ते स्थविर भगवंत । तसिसमणोवासयाण । ते श्रमणोपासकना । इमाइ एयारूवाइ वागरणाइ । एहवा एतादृशरूप प्रश्न भते । वागरित्तए । व्याकरण देवाने । णोअप्पभू तहचेवनेयव्व । नही असमर्थ इत्यादि, तिमहीज जाणवो । भवसेसियसावयप्पभूमिय

निपात। एव ममुना प्रकारेणेति, बहुवचनं ॥ पजूवति ॥ प्रभवः समर्थाः स्थ ॥ समियावति ॥ सम्यगिति प्रशस्तार्थो निपातस्तेन सम्यक्त्वे व्या कर्तु म्यसते भविपर्यासा सहत्यर्थ समभ्यमीतिवा। सम्यक् समितावा सम्यक् प्रवृत्तयः भमितावा, भ्यासथत ॥ भाउज्जियपत्ति ॥ भायोगिकाः

वम्भिज्जा थेरा न्नगवतो समणोवासएहिं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं पुच्छिया, सजमेण न्नते ! किंफले, तवे किं फले? तचेव जाव सच्चेण एसमठे णोचेवण छायन्नावयत्तव्वयाए तपन्नूण न्नते ! तेथेरान्नगवतो तेसिं समणोवासयाण इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए। उदाउ, छुप्पनूसमियाण न्नते! तेथेरान्नगवतो तेसिं समणोवासयाण इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए। उदाउ, छुसमिया छाउज्जियाण न्नते! तेथेरान्नगवतो तेसिं समणोवासयाण इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरित्तए। उदाउ, छुणाउज्जियापलि

समर्थेमे साविर। पुच्छतोएवेरए। यच्छतोनामा भेजमजिये। पाशावमिला। पाममायना सतासिवा। थेराभगवता। स्थविर भगवत। समणावास एवि। समणोपासके। इमाइं एयारूवाइं। महत भयसवित भामोगा यथामतथ। पसिणाइपुच्छिया। मत्र हेव सेव तपासेव यत पूर्व। संजमेणमतेकिं फले। सयमनी भेभगवन् फेपूक्त। स कफले? तवेकिफले। तपना कफले? तचेवजावसच्चेणएसमट्ठे। तिसयोल सर्वकमी, यावत् एषम सत्याहे सम यहे भवि। णोचेवणभावमावसव्वयाए। भत्ती निये न याभावकारे, भामतुहि करोमे भमो भवा एषम। तपभूणंतेथेराभगवतो। ते भवो प्रभू स मवहे भेमगवन्। ते स्थविर भगवंत। तेसिसमणोवासयाण। ते श्रमणोपासका भवन्तरात यावच्छा। इमाइं एयारूवाइं। ए सिद्धान्तोक्त भावो भाषित रूप। वागरणाइं वागरेत्तए। मत्र भगावरेवाभे एतावता स्थविर स यावदाना सदेव टाविवाने समयाके हमये। उदाउभप्पभू। भथवा वे समभवतो भय वयवाने। समियाणंतेथेराभगवतो। भवोभोल भभ्यासगत भेभगवन्। स्थविर भागर्वम। ते विसमणोवासयाण। तेवमणोपासकना। इमाइंए याइंवाइंवागरणाइंवागरेत्तए। यवथा एतादृशरूप प्रश्न ते मते भगावदेवाने। उदाउसमिया। भथवा समार्थ भवमाने समर्थनयो। भाउज्जियाण

सामर्थ्योत्समुद्रये ॥ अथवा ; श्रमणः साधु माहनः श्रावक ॥ सवणफलेति ॥ सिद्धान्तश्रवणफला ॥ णाणफलेति ॥ श्रुतज्ञानफल श्रवणाद्धिश्रुतज्ञान, फलं भवति हि श्रुतज्ञान मवाप्यते ॥ विण्णाणफलेति ॥ विशिष्टज्ञानफल श्रुतज्ञाना द्धि हेयोपादेयविवेककारिविज्ञान मुत्पद्यत एव ॥ पच्चक्खाणफलेति ॥ विनिवृत्तिफल विशिष्टज्ञानोहि पाप प्रत्याख्याति ॥ संजमफलेति ॥ कृतप्रत्याख्यानस्यहि संयमो भवत्येव ॥ अणण्हयफलेति ॥ अनाश्रवफलः संयमवान् किल नव कर्म नो पादत्ते ॥ तवफलेति ॥ अनाश्रयोहि लघुकर्मत्वा तपस्यतीति ॥ वोदाणफलेति ॥ व्यवदानं कर्मनिर्जरया तपसा

एसमठे णोचेवण छायज्जायपसमुयाए। तहारूवेण ज्ञते ! समणवा पज्जुवासमाणस्स किफला पज्जुवासणा ? गोयमा ! सवणफला , सेण ज्ञते ! सवणे किफले ? णाणफले। सेणज्ञते ! नाणे किफले ? विण्णाणफले । सेण ज्ञते ! विण्णाणेकिफले ? पच्चक्खाणफले , सेणज्ञते ! पच्चक्खाणे किफले ? संजमफले। सेणज्ञते ! संजमे किफले ? अणण्हयफले, एव अणण्हए तवफले , तवे वोदाणफले , वोदाणे अकिरियाफले , सेणज्ञते !

पर्युपासनावन्ता । प्र० फलदर्शकाको, पतले साधुसेवा कीधा सं फल कह्यो । श्रीमत्सावणफला । हे गौतम ! सिद्धांत सांभलवानाहुइ । सेवभंतेसवणे किफले णाणफले। ते च सांभलकारी, हेभगवन् ! सिद्धांत सांभल्यानो सं फल कह्या ? सांभल्यानो श्रुतज्ञानपामवानो फल । सेवभंतेणाणेकिंफले। ते च आभासकरे, हेभगवन् ! ज्ञान पाम्यानो सं फलकह्या। विण्णाणफले। ज्ञानथी हेय सेय उपादेय विवेककारी विज्ञानफलहुइ। सेवभंतेविण्णाणेकिफले। ते वं आभासकारे, हेभगवन् ! विज्ञानथी सं फल पामिये। पच्चक्खाणफले। विशिष्टज्ञानपाम्या पापनो पच्चक्खाणकरे ते फलहुइ। सेवभंतेपच्चक्खाणेकिफले संजमफले। ते वं आभासकारे, हेभगवन् ! पच्चक्खाणना सं फल कह्या ? पच्चक्खाणथी संयम पामिये तेफलहुवे। सेवभंतेसंजमेकिफले। ते वंआभासकारे, हेभगवन् ! संयमना सं फलकह्या ? अणण्हयफले। संयमवंत नवाकर्म उपार्जतो ते अनाश्रवफल। एवअणण्हयतवफले। एम अनाश्रवनो त पफल लघुकर्मवंतो तपस्यावहुइ। तवेवोदाणफले। तपेकरी पुरातनकर्म निर्जरेकेसे इस्यं। वोदाणेअकिरियाफले। पुरातन निर्जराथी क्रियारहित

भवपर्युपासनासंविधानक सुख मेव सा यत्फला तद्दर्शनार्थमाह ॥ तहारूवमित्यादि ॥ तथारूपं मुचितस्वभावं कञ्चनपुरुषं श्रमणंवा, तपोयुक्त मुपलक्षणत्वा दस्यो त्तरगुणवन्तमित्यर्थः ॥ माहनंवा स्वयं हननिवृत्तत्वा त्परंप्रति माहनेति वादिनं मुपलक्षणत्वा देव मूलगुणयुक्त मितिजाव

इ, अवसेसिय जाव पज्जुवासिय आउज्जियपलिउज्जिय जाव सच्चेणं एसमट्ठे णोचेवणं आयभाववत्तव्वयाए। अहंपिणं गोयमा! एवमाइक्खामि भासेमि पन्नवेमि परूवेमि, पुव्वतवेणं देवा देवलोएसु उववज्जंति, पुव्वसंजमेणं देवा देवलोएसु उववज्जंति, कम्मियाए देवा देवलोएसु उववज्जंति, संगियाए देवा देवलोएसु उववज्जंति, पुव्वतवेणं पुव्वसंजमेणं कम्मियाए संगियाए अज्जो! देवा देवलोएसु उववज्जंति। सच्चेणं

जाणता सत यावत् समत अभ्यासवंत। आउज्जिय पलिउज्जिय। उपयोगवंत समस्तपणे उपयोगवंत। जावसच्चेणंएसमट्ठे। यावत् सांचू एअर्थ। णोचेवणमाय भाववत्तव्वयाए। नही निश्चे ए आत्माअहंकारे, आत्मभाव वक्तव्यतायें अहंबुद्धिभावे एमकह्या। अहंपिणं गोयमा। हूं पणि हेगोतम! एवमाइक्खामि। एम कहूं। भासामि पन्नवेमि परूवेमि। भाखूं विशेषेकरी कहूं प्ररूपूं। पुव्वतवेणदेवादेवलोएसुउववज्जंति। पूर्वतपें एतले सरागसंयमे देवता देवलोकनेविषे ऊपजे। पुव्वसंजमेण देवादेवलोएसुउववज्जंति। पूर्वसंयमे सरागसंयमे देवलोकनेविषे देवपणें ऊपजे। कम्मियाएदेवादेवलोएसुउववज्जंति। शेष कर्मेकरी देवलोकनेविषे देवपणें ऊपजे। संगियाएदेवादेवलोएसुउववज्जंति। मनुष्य द्रव्यादिकनेसंगे देवलोकनेविषे देवपणें ऊपजे। पुव्वतवेणंपुव्वसंजमेण। पूर्वतपे पूर्वसंयमे। कम्मियाए संगियाए। कर्मांश रह्याथी तेणेकरी द्रव्यसंगादि संगेकरी। अज्जोदेवादेवलोएसुउववज्जंति। अहोआर्यो! एतलेभावे देवता देवलोकनेविषे ऊपजे। सच्चेणंएसमट्ठे। सांचूए अर्थ। णोचेवणंआयभाववत्तव्वयाएतहारूवंसमणंवामाहणंवा पज्जुवासमाणस्स। नहो निश्चे एपण आत्मअहंभावे कह्या परमार्थथी कह्याछे अनन्तरे साधुसेवा करवीकही। तिहां ते सेवानोफल देखाडवानेकाजे कहेछे—तथारूप योग्य स्वभाववंत यथाख्यातकारे, देखवाने। श्रमण तपयुक्त माटे श्रमणथी निवृत्तपणा अनेरानें नही हणोमत एहवूं कहेतो। एवंतानि पेता करतानि। निपका

याणस्तीसमुपये ॥ समणा ! श्रमणः साधु मोहनः श्रावकः ॥ सवणफलति ॥ सिद्धान्तश्रवणफला ॥ णाणफलेति ॥ श्रुतज्ञानफल श्रवणाद्धिश्रुतज्ञान-
फल श्रवणा हि श्रुतज्ञान मवाप्यते ॥ विन्नाणफलति ॥ विशिष्टज्ञानफलं श्रुतज्ञाना द्धि हेयोपादेयविवेककारिविज्ञान मुत्पद्यत एव ॥ पच्चक्खाणफ
लति ॥ विनिवृत्तिफलं विशिष्टज्ञानोहि पाप प्रत्याख्याति ॥ संयमफलेति ॥ कृतप्रत्याख्यानस्यहि संयमो भवत्येव ॥ अणण्हयफलति ॥ अनाश्रवफ
सः संयमवान् किल नव कर्म नो धारते ॥ तवफलेति ॥ अनाश्रयोहि लघुकर्मत्वा तपस्यतीति ॥ वोदाणफलेति ॥ व्यवदान कर्मनिर्जरण तपसा

एसमट्ठे पोच्छेवण श्रायन्नावयत्तश्रुयाए। तहारूवेण भंते ! समणवा पज्जुवासमाणस्स किंफला पज्जुवासणा ?
गोयमा ! सवणफला , सेण भंते ! सवणे किंफले ? णाणफले । सेणंभंते ! णाणे किंफले ? विन्नाणफले ।
सेण भंते ! विन्नाणेकिंफले ? पच्चक्खाणफले , सेणंभंते ! पच्चक्खाणे किंफले ? संजमफले । सेणंभंते ! संजमे
किंफले ? अणण्हयफले, एवं अणण्हए तवफले , तवे वोदाणफले , वोदाणे अकिरियाफले , सेणंभंते !

पज्जुवासणापफला । अ॰ अवहरविवाओ, एतले साधुसेवा कोया अ॰फल कह्यो । सोवणासवणफला । हे गौतम ! सिद्धांत सांभलवानोहुइ । सेवभंतेसवणे
किफले णाणफले । ते च वाच्याउकारे हेभगवन् ! सिद्धांत सांभल्यानो अ॰फल कह्यो ? सांभल्यानो श्रुतज्ञानपामवानो फल । सेणभंतेणाणेकिंफले । ते च
वाच्याउकारे, हेभगवन् ! ज्ञान पाम्यानो अ॰फलकह्यो । विन्नाणफले । ज्ञानथो हेय येय उपादेय विवेककारी विज्ञानफलहुइ । सेणभंतेविन्नाणेकिंफले ।
ते च वाच्याउकारे, हेभगवन् ! विज्ञानथो अ॰फल पामिये । पच्चक्खाणफले । विशिष्टज्ञानपाम्या पापनो पच्चक्खाणकरे ते फलहुइ । सेणभंतेपच्चक्खाणेकिं
फले संजमफले । ते च वाच्याउकारे, हेभगवन् ! पच्चक्खाणना अ॰फल कह्या ? पच्चक्खाणथीजा संयम पामिये तेफलहुवे । सेणभंतेसंजमेकिंफले । ते च वा
च्याउकारे, हेभगवन् ! संयमना अ॰फलकह्यो ? अणण्हयफले । संयमवंत नवाकर्म उपार्जेनही ते अनाश्रवफल । एवमणण्हयतवफले । इम अनाश्रवथो त
पकरे लघुकर्मथो तपस्यावतहुइ । तवेवोदाणफले । तपकरी पुरातनकर्म निर्जरेछेदे इसव । वोदाणेअकिरियाफले । पुरातन निर्जराथो क्रियारहित

मवपपुपासमासविचामव सुत्त मय सा मत्वला तद्धर्मार्थमाव ॥ तहारूवमित्यादि ॥ तथारूप मुचितस्वभाव कम्ममपुरुप श्रमणवा, तपोयुक्त सुपसवरवत्वा दर्सी तदनुवक्तमित्यर्थं ॥ माहनवा स्वय हननमिवृत्तत्वा त्परस्मैति माहनेति वादिन मुपलवत्वा देश मूलगुणयुक्त मितिजाव

हु, थ्ययसेसिय जाव पजुसमिय थ्याउज्जियपलिउज्जिय जाव सच्चेण एसमठे णोसेवण थ्यायनाववत्तव्याए। थ्यहंपिण गोयमा ! एयमाइक्खामि जासेमि पन्नवेमि परूवेमि, पुव्वतवेण देया देयलोएसु उयवज्जति, पुव्वसंजमेण देवा देवलोएसु उययज्जति, कम्मियाए देवा देयलोएसु उववज्जति, संगियाए देया देयलो एसु उयवज्जति, पुव्वतवेण पुव्वसंजमेण कम्मियाए संगियाए थ्यजो ! देवा देयलोएसु उववज्जति। सच्चेण

वावता सव यावत् समव मम्मासवत। पाउज्जिय पलिउज्जिय। उपयोगवंत समस्थपर्व उपयोग्यत। थावसचेवएसमट्ठ। यावत् सांच् एपम। योचेववभाव मावववस्वार। महो मिये व वाव्वालवारे, पामभाव वक्ष्यतावें पत्तुविभावे एपववत्ता। भहपिय गोयमा। इ पचि वेमोतम! एयमाइक्खामि। एम वइह्। भासामि पववेमि परूवेमि। भापूर्व् विमेयेवरी वहव् मरूपूं। पुव्वतवेणदेवादेववाएसुउववज्जति। पूवतपें पतवे सरागसवमे देव ता देववावनेविवे उपवे। पवसजमेण देवादेववोपसुउववज्जति। पूर्वसंयमे सरागसयमे देवलावनेविये देवपवें उपवे। कम्मियाएदेवादेवलोएसुउवव ज्जति। येन वमायेवरो देवलावनेविवे देवपवें उपवें। संगियाएदेवादेववाएसुउववज्जति। मनुष्य १ श्रा दिवमेसगे देवलोवनेविये देवपवें उपवे। पुव्वत वेणंपव्वसजमेण। पूवतपे पर्वसयमे। कम्मियाए संगियाए। कर्मीय एजावे तेणेवरी इत्यमतुपादि संमेवरी। पव्वोदेवादेवलोएसुउववज्जति। पचोपावी! एतलेवोवे देवता देववावनविये उपवे। सच्चेएसमट्ठ। सांचूवे एपम। वावेवपावमावयवस्वाएतवारूवेचर्मतिसमपेमावर्चा पज्जुवासमावव। म वी मिये एपव पामवक्मावो वर्ण परमार्थवी वजोवे पनवारे साबुसेवा करवोवरी। विवे ते चेवालोपव देवात्वामिवावे कहेवे—तहारूप यो म्य समावयंत ववाल्मावकारे, वेसमयम्। समव तपयुक्त पाते ववपावो मिवववता पमेराजे वरे वयोमत वेवमतें पिवतामि पेवा वरतामि। विपवा

वाग्मन्दीसमुद्रये ॥ अथवा ; श्रमणः साधु माहनः श्रावक ॥ सवणफलत्ति ॥ सिद्धान्तश्रवणफला ॥ णाणफलेति ॥ श्रुतज्ञानफलं श्रवणाद्धिश्रुतज्ञान, फलं श्रवणा द्वि श्रुतज्ञान मवाप्यते ॥ विन्नाणफलत्ति ॥ विशिष्टज्ञानफल श्रुतज्ञाना द्वि हेयोपादेयविवेककारिविज्ञान मुत्पद्यत एव ॥ पच्चक्खाणफलत्ति ॥ विनिवृत्तिफल विशिष्टज्ञानोहि पाप प्रत्याख्याति ॥ संजमफलेति ॥ कृतप्रत्याख्यानस्यहि संयमो भवत्येव ॥ अणण्हयफलत्ति ॥ अनाश्रवफलः संयमवान् किल नवं कर्म नो पादत्ते ॥ तवफलेति ॥ अनाश्रवोहि लघुकर्मत्वा तपस्यतीति ॥ वोदाणफलेति ॥ व्यवदानं कर्मनिर्जरण तपसा

एसमठे णोचेवण श्यायन्नाययत्तभ्याए। तहारूवेण भंते ! समणवा पज्जुवासमाणस्स किंफला पज्जुवासणा ? गोयमा ! सवणफला, सेण भंते ! सवणे किंफले ? णाणफले। सेणभंते ! नाणे किंफले ? विन्नाणफले। सेण भंते ! विन्नाणेकिंफले ? पच्चक्खाणफले, सेणभंते ! पच्चक्खाणे किंफले ? संजमफले। सेणभंते ! संजमे किंफले ? अणण्हयफले, एवं अणण्हए तवफले, तवे वोदाणफले, वोदाणे अकिरियाफले, सेणभंते !

पर्युपासनायफला। अं भगवद्देवानो, एतसे साधुसेवा कोथा अं फल कह्यो। श्रोवणसवणफला। हे गौतम ! सिद्धांत सांभलवानाहुइ। सेभंतेसवणे किंफले णाणफले। ते ष व्याख्यासकारे, हेभगवन् ! सिद्धांत सांभलवानो अं फल कह्या ? सांभलवानो श्रुतज्ञानपामवानो फल। सेभंतेणाणेकिंफले। ते ष व्याख्यासकारे हेभगवन् ! ज्ञान पाम्यानो अं फलकह्या। विन्नाणफले। ज्ञानथी हेय गेय उपादेय विवेककारी विज्ञानफलहुइ। सेभंतेविन्नाणेकिंफले। ते षं व्याख्यासकारे, हेभगवन् ! विज्ञानथी अं फल पामिये। पच्चक्खाणफले। विशिष्टज्ञानपाम्या पापनो पच्चक्खाणकरे ते फलहुइ। सेभंतेपच्चक्खाणेकिंफले संजमफले। ते षं व्याख्यासकारे, हेभगवन् ! पच्चक्खाणना अं फल कह्या ? पच्चक्खाणथोधा संयम पामिये तेफलहुये। सेभंतेसंजमेकिंफले। ते षंवा व्याख्यकारे, हेभगवन् ! संयमना अं फलकह्या ? अणण्हयफले। संयमवंत नवाकर्म उपार्जेनहो ते अनाश्रवफल। एवंअणण्हयतवफले। एम अनाश्रवनो त पफल लघुकर्मथको तपस्यावंतहुइ। तवेवोदाणफले। तपेकरी पुरातनकर्म निर्जरेकेदे हलय। वोदाणेअकिरियाफले। पुरातन निर्जराथी क्रियारहित

रि पुरातन कर्म निर्जरयति ॥ अकिरियाफलेति ॥ योगनिरोधफला कर्मनिर्जरातोपि योगनिरोधं कुरुते ॥ सिद्धिपज्जवसाणफलेति ॥ सिद्धिल क्षण पर्यवसानफलं सकलफलपर्यन्तवर्तिफलं यस्या सा तथा ॥ गाहत्ति ॥ सङ्ग्रहगाथा एतदर्थ चैत द्विपमाक्षरपाद वेत्यादि च्छन्दःशास्त्रप्रसिद्ध मिति तथा रूपस्यैव श्रमणादेः पर्युपासना यथोक्तफला भवति न तथारूपस्या सम्यग्भाषितया दिस्य सम्यग्भाषिताभेव केषाञ्चि दृश्यमत्राह ॥ अयतव्थिएत्यादि ॥ पव्वयस्सञ्चहेत्ति ॥ अधस्तात् तस्योपरि पर्वतइत्यर्थः ॥ हरएत्ति ॥ हृदः ॥ अञ्जत्ति ॥ अपाजिधाम क्षपितु हरएत्ति' मङ्गुहयते'

अकिरिया किंफला ? सिद्धिपज्जवसाणफला पन्नत्ता गोयमा ॥ गाहा ॥ सवणेणाणेयविन्नाणे पच्चक्खाणेय संजमे । अणण्हएतवेचेव वोदाणेअकिरियासिद्धी ॥ १ ॥ अणउत्थियाण भंते ! एवमाइक्खंति भासंति पण्णवंति परूवंति एवंखलु रायगिहस्स नयरस्स बहिया वेभारस्स पव्वयस्स अहे एत्थणं महं एगेहरए अग्घे पण्णत्ते, अणेगाइंजोयणाइं आयामविक्खंभेणं नाणादुमखंडमंडिउद्देसे सस्सिरीए जाव पडिरूवे , तत्थणं बहवे उदारा बलाहया संसेयंति समुच्छिंयंति वासंति तव्वतिरित्तेवियणं सयासमिउ उसिणे आउकाए

दूर शानक चे । सेवभतेमकिरियाकिमला । ते बेभमवम् । मावनिरूपणो कं एतदुरू ? सिद्धिपज्जवसाणफलापवत्ता । सिद्धगमन समस्तफलमाहि देह सा तदहा मत एतदे समस्तकर्मक्षयरूप मोक्षफलपासे । गोयमा गाहा । हेगौतम ! एषोक्त अधमो सवइयाखा करेइ—सवणेनाणयविन्नाणे पच्चक्खा णेसंजमे अणण्हयतवेचेव वोदाणेअकिरियासिद्धी ॥ १ ॥ सेवाओ सवणफल १ सवणओ णाणफल २ णाणयो विन्नाणविसेसफल ३ विन्नाणओ विरतिरूप फल ४ पच्चक्खाणओ संजमफल ५ संजमओ अणासवफल ६ अणासवओ तपफल ७ तपओ वोदाणफल ८ वोदाणओ अकिरियासिद्धिफल । १ तथा रूप साधुनीसेवाओ यथोक्तफलहुवे, परंत अतथारूप जो सेवाओ मतो विपरीतभावनाओ तेमाटे विपरीतभावो बोईपण देखाडेछे—अणउत्थियाणभंते एव माइक्खंति भासंति पण्णवेंति परूवेंति । अन्यतीर्थी वं सामान्यवादे, वेसगमम् । इसमवे सामान्यपवादो कवे विशेषपवादो कवे हेतुकरो कवे भेद

अपेहत्यस्य स्थाने अप्येति दृश्यते । तत्र आप्यः आर्या प्रभवः प्रवृत्तयेति ॥ संरासति ॥ वसीक्षाः ॥ असाइयति ॥ मेधाः ॥ संखेयतिति ॥ संखि ग्यति ॥ उत्पादाभिमुखोभवन्ति ॥ संमुच्छतिति ॥ सम्मूर्छन्त्युत्पद्यन्ते ॥ तद्धदित्तेयति ॥ प्रपूरणा इतिरिक्तय उत्कलितइत्यर्थः ॥ आउयाएति ॥ अप्कायः ॥ अभिनिस्सवइत्ति ॥ अभिनिस्रवति क्षरति ॥ मिच्छतेएवमाइक्खतिति ॥ मिथ्यात्व चैतदाख्यानस्य विभङ्गज्ञानपूर्वकत्वा त्प्रायः सम

अभिनिस्सवइ, सेकह मेयन्नते ! एव ? गोयमा ! जणते अन्नउत्थिया एव माइक्खति जाव जेते एवमा इक्खति मिच्छते एवमाइक्खति, अहपुण गोयमा ! एवमाइक्खामि भा० प० परू० एवखलु रायगिहस्स

अवसेकरी कहे । एवखलुरायगिहस्सनयरस्सवहिया । इम निश्चे राजगृहनामा नगरने बाहिर । वेभारस्सपव्वयस्सअदूरसामंते । वेभारनामा पर्वत हेठे । एत्थणं महातवोवतीरप्पभवेणामंपासवणे । इहां न आग्याउकारे, मोटी एक द्रहछे, जेहना उत्पत्तिनो स्थानक मोटुं तिहांथकी पाणी झरेछे ते द्रह । पंचधणुसयाइंआयामविक्खंभेण । पांचसे धनुष लांबपणे पिहुलपणेछे । णाणादुमखंडमंडियउद्देसे । अनेक प्रकारनी वृक्ष समस्त मंडित शोभित उदेश प्रदेश एहवो शो भा सहितछे । सस्सिरिए । सोभावमानछे । आपडिरूवे । यावत् प्रतिरूप जोइवा जोग्यछे एहवो कह्यो । तत्थणंबहवेउराला । तिहां घणा विस्तीर्ण । बला हया । मेघ बादला । संसेयति समुच्छति वासंति । उपजवने समस्तपणेछे अपकेछे वरसेछे । तव्वतिरित्तेयणं सयासमियं २ उसिणेआउकाएअभिनि स्सवइ । ते द्रहने भरीने अधिका पाणीथकी, ते पाणीइंज थये भरे सदैव उपयोगतत उष्णजोनिया अप्काय एहवे द्रहना भरवाथी अधिको जलथी निकसी एहवा अपकाय श्रवेछे झरेछे । सेकहमेयमंतेएवं । ते किम एहवुं हे भगवन् । इम इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा अन्नउत्थिया एवमाइक्खति । हे गौतम ! जेमाटे ते अन्यतीर्थी अज्ञानथी अतिरिक्तमानताथका इम कहेछे—जावजेतेएवमाइक्खति मिच्छंतेएवमाइक्खति । यावत् जिके इम कहेछे मि थ्या भूठा एहवमने विभंग ज्ञान पूर्वक कहावी मावे सघळ ग्रवमविरुद्ध कहावो ते भूठो कहेछे अन्यतीर्थीनोमत निरास करवानेअर्थे प्रश्नने उत्तर करवेकरी गौतमप्रते श्रीमहावीरस्वामी इम कहेछे—अहपुण गोयमा एवमाइक्खामि । हु वळी हेगोतम । इम कहुं । भासेमि पन्नवेमि परूवेमि

प्रवचनविरुद्धत्वा व्यावहारिकमत्यचेव प्रायो व्यथोपसमाया यवनसर्व ॥ अदूरसामन्तेति ॥ नातिदूरे नात्यतिसमीपइत्यर्थः ॥ एत्यबति ॥ अत्राप्स्वेमो पवहमाने ॥ महातवोवतीरप्पभवेनामंपासवणेति ॥ आतपइव आतप छाता महायाशा आतपयेति महातपो महातपस्य उपतीरं तीरसमीपे प्र

णयरस्स यहिया वेभारपव्वयस्स अदूरसामंते एत्थणं महातवोवतीरप्पभवे नाम पासवणे पण्णत्ते, पंचधणु सयाइं आयामविक्खंभेणं नाणादुमसंडमंडिउद्देसे सस्सिरीए पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे, तत्थणं बहवे उसिणजोणिया जीवाय पोग्गलाय उदगत्ताए वक्कमंति विउक्कमंति चयंति उववज्जंति, तव्वतिरित्तेवियणं सयासमियं उसिणेउसिणे आउआए अभिनिस्सवइ, एसणं गोयमा ! महातवोवतीरप्पभवे पा

नाप्रह इस महापन कह इस प्रहूए । एवंअहरायगिहणयरस्सवहिया । इस निये राजगृहनामा नगरनेबाहिर । वेभारसपव्वयस्स । वेभार नामा पर्वतने । अदूरसामते एत्थणमहातवोवतीरप्पभवेनामपासवणेपन्नत्त । अतिदूरनहो अतिढूकडो नहि एहो व व्याख्याकारे, महातप अत्यंत उ पत्नाना वेवविशेषने तेहना तीरने समीपे उपजाने ते महातपावतीरप्पभवनामे प्रस्रवण झरणोहे ते झरणो । पंचधणुहसयाई आयामविक्खंभेण। पांचसे धनुष आयाम लांबपणे विहुलपणेहे । नाणादुमसंडमंडियउद्देसे । अनेकप्रकारनावृक्ष वनखंडशोभित प्रदेशछे । सस्सिरीए पासाईये दरसणिज्जे। शोभावंतछे प्रसन्नचित्तनाव हेतुमाठे । अभिरूवे पडिरूवे तत्थणंबहवे । अतिमनोहर प्रतिरूपछे हेयती हांसि ग पामोये तिहां व व्याख्याकारे, इ। उसिणजोणिया जीवायपोग्गलायउदगत्ताएवक्कमंति । उष्णयोनिया जीव अपुन पुरुष उदकपणे पांचोरूपे उपजेछे । विउक्कमंति चयंति उववज्जंति । च पे विनसेछे चवेछे पुढि पामेछे । तव्वतिरित्तेवियणंसयासमियं । ते अतीने जे पाणी अधिकोणय ते पाणी सदाकाल समित । उसिणेउसिणेआउआएअभिनि स्सवति एसणं गोयमा । आतापनाथे अपकाय झरेछे । एह व्याख्याकारे, हेगौतम । अथा पवनो निमम कहेछे—महातवोवतीरप्पभवेपासवणेएसणं गोयमा । ए पूर्वोक्त कथित आपणा महातपोपतीरप्पभव प्रस्रवण झरो छे तथा एहोज अनन्तरोक्त उचित आचिय इत्यादि, हेगौतम । महात

नव तत्पाद्दा यस्या सी महातपोपतीरप्रजव. प्रभवति परतीति प्रभवः प्रस्यन्दमहत्यपः ॥ भक्कमति ॥ तत्पचाम्ते ॥ चिठक्कमंति ॥ विमद्दपम्ति एस
द्व मत्यपमाइ प्यवग्त तत्यप्रन्तचेति उक्तमेवार्य निगमयन्नाह ॥ एसचमित्यादि ॥ एषो मन्तरोक्तरूप एपद्मा अन्ययूथिकपरिकल्पिता प्यसम्बो
महातपोपतीरप्रजव प्रभवच उच्यते तथा एप मीय मनन्तरोक्त ॥ उसिवजाचिएहत्यादि ॥ स महातपोपतीरप्रभवस्य प्रभवचस्या र्यो ऽजिघाना
प्यपः प्रपतः ॥ इति द्वितीय शते पञ्चम उद्दृषः समाप्त ॥ ५ ॥ पञ्चमोद्देशकस्यान्ते अन्ययूथिकामिथ्याभाषिण उक्ताः अप
षष्ठ भाषास्वरूप मुच्यते तन सूत्रं ॥ सनूर्वजतमवामीति ॥ ओवारिणीभासत्ति ॥ सेवाब्दो ऽथशब्दार्थं सच वाक्योपन्यासे, नून मुपमानोवधारणे
कुर्मसंहेतुपु इहा वधारण, भदन्तइति गुर्वामन्त्रण मन्ये मवधुष्यइसि एय मवचार्यते मवगम्यते मनये त्येव भारती मवचोभवीजेनूतत्यपः,
ज्ञाप्यतइति ज्ञापा तप्राग्यतया परिवामितनिसृष्टनिसज्यमानप्रव्यसहतिरितिहृदयं, एष पदार्थो, ऽप पुन वांक्यार्थः, अथ भदन्तएव मह मन्ये
ऽवइयमवधारणोजापेति, एव ममुनासूत्रक्रमेणमायापद प्रज्ञापनाया मेकादश मविनन्य निहस्यमे, इहच ज्ञापाद्रव्यतत्प्रकाशजापैः तत्पादिनिष

सवणे, एसण गोयमा! महातवोवतीरप्पभवस्स पासवणस्स अट्ठे पन्नत्ते, सेवन्तेभंते! त्ति, भगवं गो
यमे समणंभगवं महावीरं वदइ नमसइ ॥ बिईयसए पंचमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ५ ॥ सेणूणं

मायतीरप्पभवप्पासवणस्सअट्ठेपन्नत्ते। महातपोपतीरप्रभव प्रस्रवण झरणाना अर्थकह्या। सेवभंते २ त्ति। तवत्ति हेभगवन्। तुम्ह कहो ते सत्यछे। भ
गवमायवे। भगवत गौतम। समण भगव महावीर वंदइ नमसइ। श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामी प्रते वांदे नमस्कारकरे। बितियसयस्सपंचमो।
ए बीजा शतकना पांचमाउद्देसा पूराथया ॥ ५ ॥ पाछिले उद्देसे मिथ्याभाषीकह्या, तेमाटे भाषास्वरूप कहेछे—सेणूणंभंते मन्नामी
तिभासारिणी भासा भासापद भाणियव्वं बितियसयपन्नत्ते। ते निश्चे हेभगवन्। हमहमान् पूछीए भाषाअवधारणी भाषाप्रभृत इत्यथ, अवश्ये अवधारणी
भाषा भाषीये ते भाषाकहीये इत्येवकारे सूत्रानुक्रमे पन्नवणाना इग्यारमा भाषापदकह्या, इहांभाषा द्रव्य क्षेत्र काल भाव इत्यादि भेदकरी अनेरे

मवचनविरुद्धत्वा व्यावहारिकमस्येव प्रायो ग्पयोपलम्भाद्वा वमन्तव्यं ॥ घदूरसामन्तेति ॥ नातिदूरे नात्यासन्नसमीपस्त्यय ॥ एत्यकति ॥ प्रज्ञापकेनो पदर्श्यमाने ॥ महातवोवतीरप्पभवेनामंपासवणेति ॥ आतपस्य आतप उष्णता मद्याद्यासा आतपधेति महातपो महातपस्य उपतीर तीरसमीपे प्र

पयरस्स घहिया थेभारपव्वयस्स घदूरसामते एत्थण महातवोयतीरप्पभवे नाम पासवणे पण्णत्ते, पचधणु सयाइ आयामविक्खभेण नाणादुमखडमडिउद्देसे सस्सिरीए पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे, त त्थण बहवे उसिणजोणिया जीवाय पोग्गलाय उदगत्ताए वक्कमति विउक्कमति चयति उवचयति, तव्वति रित्तेवियण सयासमिय उसिणेउसिणे आउआए अभिनिस्सवइ, एसण गोयमा ! महातवोयतीरप्पभवे पा

मानूर् इस प्रभापन कर्तूर् इस प्रपूर्त । एवकहरायगिहस्सनगरस्सवहिया । इस गिये रायगृहनामा नगरनेवाहिर । वैभारस्सपव्वयस्स । वेभार नामा पर्वतने । घदूरसामते एत्थणमहातवोवतीरप्पभवेनामपासवणेपण्णत्त । घतिदूरनहो घतिढूकडा पणिनहो इहां घ वाक्यालङ्कारे, महातप घकात उ षकानय वेषविशेषकै तेहना तीरने समीपे उपनाले ते महातपातीरप्रभवनामे भयव भरणोहे ते भरणो । पचधणुहसयाइ घायामविक्खंभेण । मांचसे धनुष आयाम चौवमवे पिहुलपणेहे । नाणादुमखंडमंडिउद्देसे । घनेकप्रकारनाद्रुम समखण्डयाभित प्रदेशहे । सस्सिरीय पासाईये दरसणिज्जे । मामावतहे प्रत्यवदिसवाव देखवायोग्य । घभिरूवे पडिरूवे तमपेयवहे । घतिमनोहर प्रतिरूपहे देखता वलि न धामीवे तिहां च वाक्यालङ्का,२ । उसिणजोणिया जीवासपोग्गलाउदगत्ताएवक्कमंति । उष्णयोनिया जीव घपुन पुनस उदकपणे पोपोरूपे उपवेहे । विउक्कमति चयंति उवचयति । च पे विनसेहे चवेहे पुष्टि पामेहे । तव्वतिरित्तेवियणसयासमियं । ते घरोने वे पाणी पणिकोवाय ते पाणी सदासदेव समित । उसिणेउसिणएअभिनि स्सवंति एसणं गोयमा । पाणापणाले पपृताय भरेहे । पत्र घवाक्यालंकारे, हेगौतम । घाचा घनमो निमस कहोहे—महातवोवतीरप्पभवेपासवणेएसणं गोयमा । ए घननूतिव कमित घापयत महातपोपतीरप्पभव प्रयवच कहो छे तथा पवोक घनन्तरोक्त कथित जाणिय इत्यादि हेगोतम । महात

नव तत्पादा यस्या सो महातपोपतीरप्रभव प्रभवति चरतीति प्रभवः प्रस्यन्दमहत्यथः ॥ वाक्यमति ॥ तत्पन्नम्ते ॥ विज्ञकर्मति ॥ विनश्यन्ति एव दव प्रत्ययमाह प्रवण्त तत्पन्नमत्येति तत्कमेवार्थं निगमयन्नाह ॥ एसणमित्यादि ॥ एयो मन्तरोक्तरूप एषया अन्ययूथिकपरिकल्पिता प्यसम्बो महातपोपतीरप्रभवः प्रभवव उच्यते तथा एव योय मनन्तरोक्त ॥ छसिकमाविएत्यादि ॥ स महातपोपतीरप्रभवस्य प्रभववस्या यो उज्झिपामा न्वयः प्रथमः ॥ इति द्वितीय शते पञ्चम उद्देशः समाप्तः ॥ ५ ॥ पञ्चमोद्देशकस्यान्ते अन्ययूथिकामिथ्यावादिन उक्ताः अथ षष्ठ भाषास्वरूप मुच्यते तत्र सूत्रं ॥ सनूर्णमसमन्नामीति ॥ ठंहारिणीत्यादि ॥ सेशब्दो उपशब्दार्थे सच वाक्योपन्यासे, नून मुपमानोवधारणे क्रमर्यहेतुषु इत्य वधारण जवन्नइति गुर्वामन्त्रणे मन्ये अवधुष्यइसि एव अवधार्यते अवमन्यते अतये त्यव धारणी अववोधवीजभूतत्यर्थ ज्ञाप्यतइति ज्ञाया तद्योग्यतया परिणामितनिसृष्टनिसृज्यमानद्रव्यसहतिरिसिहृदयं, एष पदार्थो उप पुन वाक्यार्थः अथ जदन्तएव मह मन्ये उवयमववधारणोजायेति, एव ममुनासूत्रमेवमापाषर, प्रज्ञापनाया मेकादश जणितव्य मिहस्थाने, इयम ज्ञापाद्रव्यतोप्रकालजावें सत्यादिमिव

सवणं, एसण गोयमा! महातवोवतीरप्पभवस्स पासवणस्स छट्ठे पसत्ते, सेवन्नतेजंते! त्ति, जगवं गो यमे समणजगव महावीरं वंदइ नमंसइ ॥ विईयसए पंचमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ५ ॥ सेणूण

पासतोरप्पभवस्सपासवणस्स पढ़ेपण्णत्ते। महातपापतीरप्रभव प्रयनप झरणानो अभक्षा। सेवभते २ त्ति। तवत्ति हेभगवन्। तुम वाघु ते सत्यछे। भ गवगोयमे। भगवत गोतम। समण भयय महावीर वदइ नमसइ। श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामी प्रते वांदे नमस्कारकरे। विविधसंशयक्षयपधमो। ए बीजा शतकना पांचमाउद्देशा पूरायया ॥ ५ ॥ पांचमे उद्देशे मिथ्याभाषीकह्या, तेमाटे भाषास्वरूप कहेछे—सेणूणभते मन्नामो तिधारिणी भासा भासापद भाविअव जितियसयपराहो। ते निश्चे हेभगवन्। इमहमानू छुंमोखेय भाषापदवाध बोलमूत रत्यय, अवधें अवधारणी भाषा भाषीये ते भाषाकहीये इत्येप्रकारे सूत्रातुसमे पन्नवणाना इग्यारमा भाषापदनकहचा, इहांभाषा द्रव्य क्षेत्र काल भाव इत्यादिक भेदेकरी पमेरे

नेरै रत्नेय बहुनि पर्याये विचार्यंते ॥ इति द्वितीयशतेपञ्चम उद्देश समाप्तः ॥ ६ ॥ जायाभिशाद्दे दयस्य जयतीति देया देशकः समारभ्यते तस्येद सूत्र ॥ कद्दमित्यादि ॥ कद्दत्ति ॥ कति दया जात्यपेक्षये तिगम्य कतिविधा देयाइति हृदय ॥ जहाठाणपमृत्ति ॥ यथा यत्प्रकारा यादृशी प्रज्ञापनाया द्वितीयेस्थानपदाख्ये पदे देवाना वक्तव्यता सेति तथा प्रकारा जणितव्यासि नयर ॥ भवणापञ्चत्तासि ॥ क चिदृश्यते तस्याथ पाठ न सम्य मवगम्यते देववक्तव्यतायैव ॥ इमीसे रयणप्पमाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरि एग जोय

नते ! मणामीति ठहारणीजासा , जासापद जाणियह्व ॥ विइयसए छठोउद्देसो सम्मत्तो ॥ ६ ॥
कइविहाणन्नते ! देवा पणत्ता ? गोयमा ! चउव्विहा देवा पणत्ता तंजहा—ज्ञवणवइवाणमंतर जोइसवेमा
णिया । कहिणन्नते ! ज्ञवणवासीण देवाण ठाणा पणत्ता ? गोयमा ! इमीसेरयणप्पजाए पुढवीए जहाठा
णपदे देवाण वत्तव्वया सा जाणियव्वा , नवर ज्ञवणा पणत्ता , उववाएण लोयस्स असंखेज्जइज्ञागे , ए

घणें पर्यायेकरी विचारिये ॥ इति ए बीजा शतकना छट्ठो उद्देशो पूरोथयो ॥ ६ ॥ भाषा विशुद्धथी देवतायुवे तेमाटे सातमो उद्दे मा देवना वर्णवे—कइविहेदेवापणत्ता । केतला हेभगवन् । जाति अपेक्षाये देवताकह्या अर्थात् केतलेभेदे देवकह्या इतिप्रश्न । गोयमा चउव्विहादेवा पणत्ता तंजहा भवणवइ वाणमंतर जोइस वेमाणिया । हेगोतम । चारभेदे देवकह्या ते कहेछे—भवनपती १ वाणव्यंतर २ ज्योतिषी ३ वेमानिक ४ । क हिणंभंते भवणवासीण देवाण ठाणा पणत्ता गोयमा । किहां हेभगवन् । भवनपती देवना स्थानक कह्या इतिप्रश्न हेगोतम । इमीसेरयणप्पभाए पुढवीए जहाठाणपदेदेवाणंवत्तव्वयासाभाणियव्वा नवरंभवणा पणत्ता उववाएणंलोयस्स असंखेज्जइभागे एवंसव्वंभाणियव्वं । एहीज रत्नप्रभानाम पृथिवीनेविषे इत्यादि, जहा ठाणपदेति यथा जेहवो पन्नवणाना बीजास्थान पदनेविषे देवनी वक्तव्यताछे सेति तेहवो कहवो नवर भवणा पणत्ता ए पाठछे ते इमापद मधीतरे न जाणिये ते वक्तव्यता इमछे भारतप्रभा पृथिवीनेविषे एकलाख एंशीसहस्र योजन ऊपर एकसहस्र छंडे एकसहस्रयोजन मध्यमे

लक्षस्य द्वासप्ततिलक्षाधिकस्य कोटिसप्तकस्य सप्तलक्षाधिककोटिसप्तकस्य भवनवासीभवनानां तत्सहस्रं यावत्ता मध्ये योजनसहस्रे अत्रान्तरे भवनवासीनां देवानां सप्तभवनकोटीः द्वासप्ततिश्च
शतसहस्राणि भवन्तीति भवनानि इत्यादि तद्गतमेवा विशेषविशेषण विशेषेण दर्शयति ॥ उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागेति ॥ उपपातो जन्म
भवनपतिस्वस्थानमाश्रित्याभिमुख्यं तेन उपपात माश्रित्येत्यर्थः लोकस्य असंख्येयतमे भागे वर्तन्ते भवनवासिनइति ॥ एवं सर्व माशित्यइति ॥ एवं मु
कल्यायता स्वदपि प्रविभक्तव्य तथेद—समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे मारणान्तिकादिसमुद्घातवर्तिनो भवनपतयो लोकस्य असंख्येयतभागे व
र्त्तन्ते तथा ॥ सठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइ भागे, स्वस्थानस्यो भवनमात्रासातिरेककोटीसप्तकस्यापि लोकासंख्येयभागवर्त्तित्वादिति एवं असु
रकुमाराणां, एवं तेषामेव दाक्षिणात्यानामौदीच्यानां एवमागकुमारादिभवनपतीनां पर्यावृत्तितया व्यन्तराणां ज्योतिष्काणां वैमानिकानाम् स्था
नानि वाच्यानि किमन्तं यावदित्याह यावत्सिद्धगण्डिकासिद्धस्थानप्रतिपादनपरं प्रकरणं तावदेव ॥ कहिणं भंते ! सिद्धाणं ठाणा पन्नत्ता इत्या
दि इहच इयस्यामाधिकारे पसिद्धगण्डिकाभिधानं तत् स्थानाधिकारवशा दित्यवसेय तथेद अपरमपि जीवाभिगमप्रसिद्धं वाच्य तद्यथा—क

वं सव्व भाणियव्वं , जाव सिद्धगंडिया सम्मत्ता । कप्पाणपइठाण बाहल्लुच्चत्तमेवसंठाणं ॥ जीवाभिगमे जा

मध्ये एकलाख अठ्योतेर सहस्र योजन पिंडने इहां भवनपती देवताना सातक्रोड बहुत्तरलाख भवनवासा, वली विशेष कहेछे—भवनवासीना भवन
पती उपजवा आश्रयी लोकने असंख्यातमेभागे उपजाइ इम उत्पत्तिविचारी सर्वलोक पणि कहवो, ते इम समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, मारणां
तिकसमुद्घात वर्त्ती भवनपतीलोकने असंख्यातमेभागे वर्त्तेछे तथा सठाणेणंलोयस्स असंखेज्जइभागे, स्वस्थान सातक्रोड बहुत्तरलाख भवन कह्या ते लो
कने असंख्यातमेभागे वर्त्तेछे इम असुरकुमारना इम तेहनाईज दक्षिणना उत्तरना इम नागकुमारादिक भवनपतीना तथा व्यन्तरना तथा ज्योतिषी
ना तथा वैमानिकना स्थानक कहवा । जावसिद्धिगंडियासम्मत्ता कप्पाणपइठाणं । यावत् सिद्धिगंडियापणि, सिद्धिस्थान प्रतिपादक अधिकारपर्यंत कहवो,
ते इम किहां भंते । सिद्धाणंठाणा इत्यादि, इहां देवस्थानाधिकारथकी सिद्धिगंडिकानाम ते स्थानक जाणवा जीवाभिगम उपांगनी ए गाथा

भेदे रत्नेव वृत्ति पर्याये विभाव्यते ॥ इति द्वितीयप्रतिपत्तौ षष्ठोद्देशः समाप्तः ॥ ६ ॥ जायाविशुद्धं देवस्य जवसोति द्वयो देवाः समारभ्यते तस्यैव सूत्र ॥ कहमित्यादि ॥ कहवति ॥ कति दया आत्मपेक्षये तिणम्य, कतिविधा देवाइति सूत्रं ॥ जहाठाणपयमित्ति ॥ यथा यत्प्रकारा यावृद्धी प्रज्ञापनाया द्वितीयेस्थानपदाख्ये पदे देवाना वक्तव्यता सेति तथा प्रकारा जणितव्यासि नवर ॥ भवणापसत्तासि ॥ कि विवृध्यते, तस्य यत न सम्य गवगम्यते द्ययक्तव्यतात्रैव ॥ इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एग जोय

जंते ! भणामीति ठहारणीजासा , जासापद जाणियव्व ॥ वितियसए छठोउद्देसो सम्मत्तो ॥ ६ ॥
कइविहाणजंते ! देवा पण्णत्ता ? गोयमा ! चउव्विहा देवा पण्णत्ता तंजहा—जवणवइवाणमंतर जोइसवेमा णिया । कहिणंजंते ! जवणवासीण देवाण ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! इमीसेरयणप्पजाए पुढवीए जहाठा णपदे देवाण वत्तव्वया सा जाणियव्वा , नवर जवणा पण्णत्ता , उववाएण लोयस्स असंखेज्जइजागे , ए

वं पर्यायिकरी विचारिवे । इति ए बीजा शतकना छठा उद्देशो पूरोथयो ॥ ६ ॥ आगा बिवहथी देवताछुये तेमाटे सातमो उद्देशो कहे छे—केटला भगवन् देवता कह्या । केतला हे भगवन् । जाति अपेक्षाये देवताकह्या कथाय् केतलेभेद देवताकह्या इतिप्रश्न । गोयमा चउव्विहादेवा पण्णत्ता तंजहा भवणवइ वाणमंतर जोइस वेमाणिया । हेगोतम । चारभेदे देवता ते कहेछे—भवनपती १ वाणव्यंतर २ ज्योतिषी ३ वैमानिक ४ । क हिणंभंतेभवणवासीण देवाण ठाणा पण्णत्ता गोयमा । किहां हे भगवन् । भवनपती देवना स्थानक कह्या इतिप्रश्न हेगोतम । इमीसेरयणप्पभाएपुढवीए जहाठाणपदेदेवाणवत्तव्वयासाभाणियव्वा नवरभवणा पण्णत्ता उववाएणलोयस्स असंखेज्जइभागे एवसव्वंभाणियव्वं । एहीज रत्नप्रभानाम पृथ्वीनेविषे इत्यादि जहा ठाणपदेति यथा जेहवी पन्नवणाना बीजास्थान पदनेविषे देवनी वक्तव्यताछे, तेत्ति तेहवी कहवी नवर भवणा पण्णत्ता ए पाठछे ते इत्यादिक सघलोतरे भणवियें ते वक्तव्यता इमके घारप्रभा पृथ्वीनेविषे एकलाख अयोसहस्र योजन ऊपर धरमाहिये हेठे एकसहस्रयोजन वर्जीने

रा ते नाबार्सठियत्ति एतावस्य मप मतिविस्तार ॥ बीवाजिगमइत्यादि ॥ सव विमानानां प्रमाणकममार्गधादिप्रतिपादनार्थः ॥ इतिद्वितीय शतेसप्तमः ॥ ७ ॥ भय देवस्थानाधिकारात् चमरस्थानाभिधानदेवस्थानादिप्रतिपादनाया इमोद्देशक तस्य चेदं सूत्र ॥ कहिण मित्यादि ॥ चमुरिंदस्सत्ति ॥ असुरेन्द्रस्य स चेश्वरतामात्रेणापि स्यादित्यात् असुरराजस्य असुरवर्गसूरनिकायस्येत्यर्थः ॥ उप्पायपव्वएत्ति ॥ तिर्य

य वेमाणिउद्देसो भाणियव्वो ॥ विईयसए सत्तमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ७ ॥ कहिणन्नंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो सभासुहम्मा पन्नत्ता ? गोयमा ! जंबूद्दीवेद्दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं तिरियमसंखेज्जे दीवसमुद्दे वीईवइत्ता अरुणवरदीवस्स बाहिरिल्लाओ वेइयंताओ अरुणोदयं समुद्दं बायालीसं जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता एत्थणं चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो तिगिच्छिकूडेनामं उप्पाय

विय सब विमाननां प्रमाण अवगाहना मर्यादिप्रतिपादक वैमानिक उद्देशो कहवो । बितियशतकनो सातमो । एतोला शतकनो सातमो उद्देशो टब्बार्थो लिख्यो ॥ ७ ॥ पाछिले उद्देशे देवस्थानाधिकार कह्यो, इहां चमरचंचाभिधान देवस्थानाधिकार कहिये—कहिणंभंते चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररायसभासुधर्मापन्नत्ता । किहां न म्हारा स्वामी, हे भगवन् । चमरेंद्र असुरेंद्रनो असुरकुमार राजा अधिपति असुरनिकाय के तेहनो सभासुधर्मा कहां ? इति प्रश्न उत्तर । गोयमा जंबूद्दीवेदीवेमंदरस्सपव्वयस्सदाहिणेणं । हेगोतम । जंबूदीपनामा दीपनेविषे मेरुनामा पर्वतने दक्षिणपासे । तिरियमसंखेज्जदीवसमुद्देवीतीवइत्ता अरुणवरदीवस्स । तीछा असंख्याता दीप तथा समुद्रमतें अतिक्रमीने अरुणवरदीपनो । बाहिरला वेइयताथी । बाहिरली वेदिकाथी । अरुणोदयसमुद्द । अरुणोदकनामा समुद्रनेविषे । बायालीसजोयणसहस्साइं उगाहित्ताए । बायालीस सहस्र योजन अवगाहीने पेसीने । एत्थणं चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो । इहां म्हारा स्वामी, चमरेंद्रना असुरेंद्रना असुरकुमार राजानो । तेगिच्छिकूड नामा उप्पायपव्वयपन्नत्ते । तिगिच्छिकूटनामे तियग्लोके आववाने जिहां आवीने वैक्रियशरीरकरी जावे ते कहे छे । सत्तरसएक्कवीसजोयणसएउड्ढं

प्यावपइठाव, कल्पविमानाना आधारो वाच्यइत्यर्थः सबैव सोहम्मीसाणेसुण भते कप्पेसु विमाणपुढवी कि पइठिया पन्नता । गोयमा । घ णोदहिपइठिया पन्नता इत्यादि आइच-पत्तसइियपइठाणा सुरभवणाहोंतिदोसुकप्पेसु । तिसुवाउपइठाणा तदुभयसुपइठियासिसुय ॥ १ ॥ तय परउवरिमया आगासंतरपइठियासव्वेत्ति ॥ तथा ॥ बाहल्लेति ॥ विमानपृथिव्याः पिण्डोवाच्यः सर्वैव-सोहम्मीसाणेसुण भते । कप्पसु विमाणपु ढवी केवइय बाहल्लेण पन्नता ? गोयमा ! सत्ता वीस जोयणसयाइं इत्यादि ॥ आइच-सत्तावीससयाइं आइमकप्पेसुपुढविबाहल्लं । एक्केक्कहाणिसेसे सुदुगेयदुगेयचउक्केय ॥ १ ॥ ग्रैवेयकेषु द्वाविंशति योजनानां शतानि, अनुत्तरेषु त्वेकविंशतिरिति ॥ उच्चत्तमेवत्ति ॥ कल्पविमानोच्चत्वं वाच्यं तथैव- सोहम्मीसाणसुणं भते । कप्पेसु विमाणा केवइय उच्चत्तेण पन्नता ? गोयमा । पंचजोयणसयाइं इत्यादि आइच-पंचसउच्चत्तं आइमकप्पेसुहोंतिउ विमाणा । एक्केक्कवुड्ढिसेसे सुदुगेयदुगेयचउक्केय ॥ १ ॥ ग्रैवेयकेषु दशयोजनशतानि अनुत्तरेषु एकादशेति ॥ संठाणंति ॥ विमानसंस्थानं वाच्यं तथैव-सोहम्मीसाणसुण भते । कप्पेसु विमाणा किंसंठिया पन्नता ? गोयमा ! ज आवलिया पविठा ते वट्टा तसा चउरंसा य आवलिया बाहि

सवार्थबोधे, कल्पविमाननो आधारकह्यो ते इम सौधर्म ईशाननेविषे हेभगवन् ! कल्पनेविषे विमान पृथिवी केंआधारछे हेगौतम ! घनोदधि प्रति ठितकही इत्यादि । बाहुल्यमेवठाव । विमान पृथिवीना पिंड कहवो, ते इम हेभगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोकनेविषे विमानपृथिवी केतले बाह ल्यपणे कही हेगौतम ! सत्तावीससय योजन इत्यादि उच्चत्व कहवा, सौधर्म ईशान देवलोकनेविषे विमान केतला उच्चपणेकह्या, गौतम पंचसय योजन इत्यादि तथा संठाणंति विमाननां संठाण कहवा ते इम सौधर्म ईशानना विमान कें आकारेछे गौतम जे आवलिका प्रविष्टछे ते वंस चउरस वाट छाचे जे आवलिका बाहिर ते नाना प्रकार संठाणेछे । जिके कह्या सर्वेना विप देखाडेछे—जीवाभिगमसूत्रमाहेसाधिकारभाख्याविषय्या । जाव विमा

मेव उवरिं दाहिणायणसहस्साइं दोण्णियबत्तीए जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं पुस्तकान्तरे त्वेतत्सकल मस्त्येवेति ॥ वरवइरविग्गहि एति ॥ वरवज्रस्येव विग्रह आकृति यस्य स स्वार्थिकप्रत्यये सति वरवज्रविग्रहिको मध्यभाग इत्यर्थः एतदेवाह ॥ महामउंदेत्यादि ॥ मुकुंदो वा द्यविशेषः ॥ अच्छेति ॥ अच्छ आकाशस्फटिकवत् यावत्करणात् इदं दृश्यं, सण्हे श्लक्ष्णः श्लक्ष्णपुद्गलनिर्वृत्तत्वात्, लण्हे, मसृणः घटे घृष्ट इव घृष्टः खरशाणया प्रतिमेव मट्ठे मृष्ट इव मृष्टः सुकुमारशाणया प्रतिमव प्रमार्जनिकयेवबा शोधितो, अतएव नीरए नीरजा रजोरहित, नि म्मल कठिनमलरहितः निप्पंके आर्द्रमलरहितः निक्कंकडच्छाए, निरावरणदीप्तिः सप्पभे समप्रभावः समिरिइए, समरीचः, सउज्जोए, प्रत्यासन्नवस्तूद्योतक पासाईए ॥ पउमवरवेइयाए बहुमज्झदेसभाए बहुहीति ॥ वेदिकावर्णको यथा—सा पउमवरवइया अद्धं जोयणं उड्ढं उच्चत्तेणं

इस्स तिण्णियइगुयाले जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेण, उवरिं दोण्णियजोयणसहस्साइं दोण्णियबत्तीसीए जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेण, जाव मूले वित्थिण्णे मज्झे संखित्ते उप्पिं विसाले, मज्झे वरवइरविग्गहे, महामउंदसंठाणसंठिए, सव्वरयणामए, अच्छे जाव पडिरूवे, सेणं एगाए पउमवरवेइयाए वण

न परिधि जाणवा विचाले एकसहस्र तीनसे इकतालीस १३४१ जोजन। किंचिविसेसूणपरिक्खेवेण। कांइक विशेषो नपरिधि जांणवा। उवरिंदाणि सहस्र... ऊपरि दाय सहस्रजोजन। दाणियबत्तीसएजोयणसए। दायसे बतीसो २३२ जोजन। किंचिविसेसाहियपरिक्खेवेण। कांइक विशेषा नपरिधि जांणवा। जावमूलेविच्छिण्णे मज्झेसंखित्ते। यावत् मूलनेविषे विस्तारवंत मध्यभागे सांकडा। उप्पिंविसालेमज्झेवरवइरविग्गहे। वली ऊ... विस्तीर्ण विचाले प्रधान वज्रनीपरे आकारछे जेहनो एतलेविषे सांकडोछे एहोस देखाडेछे। महामुउंदसंठाणसंठिए। मोटाछे मुकुंद वाद्यविशेष तेहने संस्थाने रह्याछे। सव्वरयणामए अच्छेजावपडिरूवे। सर्वरत्नमयछे अच्छ निर्मल आकाश स्फटिकनीपरे यावत् शब्दथी सण्हे लण्हे घट्टे मट्टे इत्यादि, प्रतिरूप तांई कहवा। सेणंएगाएपउमवरवेइयाएवणसंडेणयसव्वओसमंतासंपरिक्खित्ते पउमवरवेइयाएवण्णओवणसंडवण्णओ। ते तिगिच्छिकूटपर्वत एक पद्मवरवेदिका

ल्लोकगमनाय यथा गत्वो स्पृशति स उत्पातपर्वत इति ॥ गोथूभस्सेत्यादि ॥ तत्र गोस्तुभो लवणसमुद्रमध्ये पूर्वस्यां दिशि नागराजावासपर्वत स्त स्याद्विमध्यान्तेषु विष्कम्भप्रमाणमिद—मूलसाविष्कम्भोसे दसबावीसाइजोयणसयाइ १ । सत्तसएतेवीसे २ चत्तारिसयचउवीसे ३ ॥ १ ॥ इत्येव विशे पमाण ॥ नवरमित्यादि ॥ तत यद मापम मूलेदसबावीस जोयणसयविक्खंभ । मज्झेचत्तारिचउ वीसेउवरिंसत्ततेवीसे ॥ १ ॥ मूले तिन्नि जोयण सहस्साइं दोन्निय बत्तीसुत्तर जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेण मज्झे एग जोयणसहस्स तिन्निय इगुयाले जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खे

पन्नए पन्नत्ते , सत्तरसएक्कवीसे जोयणसए उड्ढ उच्चत्तेण चत्तारितीसे जोयणसए कोसच उव्वेहेण गोथूभ स्स आवासपव्वयस्स पमाणेण णेयव्वं , नवर उवरिल्ल पमाण मज्झे नायव्वं , मूले दसबावीसे जोयण सए विक्खंभे, मज्झे चत्तारिचउवीसे जोयणसए विक्खंभेण , उवरिसत्ततेवीसे जोयणसए विक्खंभेण , मूले तिन्निजोयणसहस्साइं , दोन्नियबत्तीसुत्तरे जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेण , मज्झे एग जोयणस

यतेव । सतरेसे इकवीसयोजन १७२१ ऊचा छेपर्वत छे । चत्तारितीसेजोयणसएकोसचउव्वेहेण गोथूभआवासपव्वयस्सपमाणेणेयव्वं । चारिसे तीस योजन ४१ पने एककोस धरतीमाहे छे । लवणसमुद्रमेविषे पूर्वदिशि नागराजना आवासपर्वत तेहना प्रमाणसरीखो जाणवो तेहनो प्रमाण चादि एकसहस्र बावीसयोजन मध्ये सातसे तेवीस योजन उपर चारसे चउवीस योजन ते इहां पणि जाणवो । नवरउवरिल्लपमाणमज्झे भाणियव्व । एतलो विशेष गोथूभपर्वतनेविषे जे मान उपरकह्या छे ते मान नगिरिकूट पर्वतनेविषे मध्यभागे जाणवा एतला विशेष छे—मूलेदसबावीसेजोयणसएविक्खंभेण । मूले एकसहस्र बावीस योजन विस्तारछे १ २२ । मज्झेचत्तारिचउवीसेजोयणसएविक्खंभेण । मध्यभागे चारसे चउवीस योजन विस्तारछे ४२४ । उवरि सत्ततेवीसेजोयणसएविक्खंभेण । उपरि सातसे तेवीस ७२३ योजन विस्तारछे । हिवे परिधि कहेछे—मूलेतिन्निजोयणसहस्साइं । मूले तीनसहस्र योज न । दोन्नियबत्तीसुत्तरेजोयणसए । दोयसेबत्तीस योजन । किंचिविसेसूणेपरिक्खेवेण मज्झेएगंजोयणसहस्स तिन्नियइगयालेजोयणसए । कांइक विशेषो

पसठति ॥ प्रासादप्रसको माष्यः सवेव–पासुमायमूसियपहसिए, पन्युद्गत मसोद्गतया यथा प्रम स्येव मुच्छितो ऽथवा मकारस्या गमिकत्या
त्, पन्युद्गत प्रासाउच्छित येत्यभ्युद्गताच्छिता पत्ययमूसहस्यमः प्रयमैकसमसोप यात्र वृत्ययः तथा प्रभासितइव प्रमायत्तसपरिगततया प्रहसि
तः प्रतया वासितः शुक्लः सम्मतोवा प्रजासितइति ॥ मणिकणमरयणभत्तिचित्ते ॥ मणिकनकरत्नानां भक्तिभिः विच्छित्तिभिः य चित्रो विचित्रो यः
स तथा इत्यादि ॥ उल्लोयमूसियमठति ॥ उल्लोचवचकः प्रासादस्यो परिमाणवर्णकः सचेव–तस्सवं पासायवडिंसगस्स इमयारूये उल्लोए पन्नत्ते प

स्कन्नण, पासायवन्नऊ, उल्लोयभूमियन्नऊ, सूठजोयणाणि मणिपेठिया, चमरस्स सीहासण सपरिवार न्ना
णियव्व, तस्सण तिगिच्छिकूडस्स दाहिणेण छक्कोडिसएप णवसचकोडीऊ पणतीसचसयसहस्साइ पन्नासच
सहस्साइ जोयणाइ अरुणोदए समुद्दे तिरिय वीतिवइत्ता अहे रयणप्पभाएपुढवीए चत्तालीस जोयणसह

[illegible] । प्रठारसे माखम ११ [illegible] । पचवीसजोयसय विचमेव पासायवसयो । पचसो पचवीस माचन १२५ मिचुसपर्वोके प्रासा
दगा वधक कहयो, ते इम पथमवमूसियपहसिय । पतिगो जपो इसव, इत्यादि । उहाय भूमिवणयो बहसमरमणिज्जविपेठका चमरस्सीहासणं स
परिवारं भाणियव्व । प्रासादगा जपरिभागना वधक ते इम—तस्सणपासायवडिंसयस्स इमेएयारूवे उल्लोएपन्नत्ते पउमलयभत्तिचित्ते जावसव्वतवणिज्जम
ए पासादीयपडिरूवे इत्यादि, उल्लोयवर्णक तथा भूमिवधक तेहम—तस्सणपासायवडिंसयस्स बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पन्नत्ते पालिंगपुक्खरेइवा इत्यादि,
आठ योजननी मणिपीठिकाके, चमरसनो परिवारना सिंहासन सहित कहवा, ते इम—तस्सणसिंहासणस्स पवरुत्तरेणं उत्तर पुरच्छिमेणएत्थण चम
रस्स चउसहोए सामाणियसाहस्सीएण चउसट्ठीभद्दासणसाहस्सीओ पन्नत्ताश्रो इत्यादि । तस्सणतिगिच्छिकूडस्सदाहिणेण । तेहने, थं दाक्षिणैकारे, ति ।
गिच्छिकूट उत्पातपर्वतने दक्षिणदिशि । छक्कोडिसएपचपचकोडोयो । छसय कोडो पचावनकोडो । पणतीसपचसयसहस्साइं । पैंतीसलाख । पचासहज
ार जापवार । पचास सहस एतला योजन । अरुणोदयेसमुद्रे । अरुणोदयनामा समुद्रनेविषे । तिरियवीतिवइत्ता । तिरछा अतिक्रमता आतावली

पंचधणुसयाइं विक्खंभेणं सव्वरयणामईतिगिंछिकूडउवरितलपरिक्खेवसमा परिक्खेवेणं तीसेणं पउमवरवेइयाए इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते वण्णओ व्यासो वर्षविस्तरः पहरामयानेमाइत्यादि ॥ भेमत्ति ॥ तत्रामा मूलपादा प्रवर वज्रमयाः ... देसूणाइं दो जोयणाइं चक्क वालविक्खंभेणं पउमवरवेइयापरिक्खेवसमे परिक्खेवेणं किण्हे किण्होभासे इत्यादि ॥ बहुसमरमणिज्जत्ति ॥ अत्यन्तसमा रमणीयश्चेत्यर्थः ॥ यस्स सेति ॥ स यथा नाम कस्यचित् आलिंगपुक्खरेइ वा आलिंगपुष्कर मुरजमुखं तद्वत्समः इत्यर्थः मुइंगपुक्खरेइ वा सरतलेइ वा करतलेइ वा आयंसमंडलेइ वा चंदमंडलेइ वेत्यादि ॥ पासायवडिंसएत्ति ॥ प्रासादो ... प्रधानत्वात् ... ॥ पासाय

खंडेणं सव्वउसमता संपरिक्खित्ते, पउमवरवेइयाए वणसंडस्स वण्णओ, तस्स णं तिगिंछिकूडस्स उप्पाय पव्वयस्स उप्पिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, वण्णओ, तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एगे पासायवडिंसए पण्णत्ते, अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, पणवीसं जोयणसयाइं वि

... तिहां पद्मवरवेदिका ... ते वेदिका तिगिच्छिकूट पर्वतना ऊपरला तलो तेहने प रिधिनोपरे कोटो रहोछे, ते पद्मवरवेदिका ... सेणं पउमवरवेइयाए इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते। वर्णकव्यास। वर्णक विस्तार। पहरामया नेमा इत्यादि नेमा ... मूलपाया ... वेदिका ... विक्खंभे, पद्मवरवेदिका ... इत्यादि। तस्सणं तिगिंछिकूड उप्पायपव्वयस्स उप्पिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते वण्णओ। तेहने तिगिच्छिकूट पर्वतने ऊपर बहु ... रमणीक भूमितल ... तेहनो वर्णक ... आलिंग पुक्खरेइ वा मुरजवाद्य विशेष तेहना मुख ... इत्यादि वर्णक कहवो। तस्सणं बहुसमरमणि ज्जभूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए। तेहने ... बहुसम रमणीक भूमिभागने विषे बहु मध्यदेशभागने विषे एतले विचाले इहां। एत्थणं महं एगे पा सायवडिंसए पण्णत्ते। इहां ... मोटो एक प्रासाद ... प्रधानपणाथी मुकुटसरीखो प्रासाद छे। ...

नवसो भूमादिप्रमाणं सौधर्म्मवैमानिकविमानप्राकारप्रासादसभादिवस्तुजातप्रमाणसत्रा द भेतव्य' तथाहि—सौधर्म्मवैमानिकामा विमानप्राकारो पाजमाना शीविस्तता मुखत्वेन एतस्यास्तु सार्द्धशतं तथा सौधर्म्मवैमानिकाना मूलप्रासाद: पञ्चयोजमानां शतानि तदन्ये चत्वार सत्परिवार भूता: सार्द्ध द्वे शते प्रत्येकच तेषां चतुर्णां मध्यमे परिवारभूता चत्वार: सपादं शतं एव सन्ये तत्परिवारभूता: सार्द्धा द्विषष्टि रव मन्ये सपादै कत्रिंशत् दशतु मूलप्रासाद: सार्द्ध द्वे योजनशते एव महर्द्धिकीमा सद्परे यावदन्तिमा: पञ्चदशयोजमानि पञ्चच योजनस्या एताः, एतदेव चा चनान्तरे तत्र-चत्वारि परिपाटीउ पासायवडिंसनाणं पण्णत्तीवाठंति' एतेषाञ्च प्रासादाना चतसृष्वपि परिपाटिषु मीलि शता त्र्येकचत्वारिंशत्

पन्नास जोयणसहस्साइं पचयसप्ताणउय जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणं , सव्वप्पमाण वेमाणियस्स

चव्वार उड्डत्तेणं। ते चारना मध्यीसे माजन जंचा ब चपवेंछे। एक्कयवोसजोयणसए १०१ विक्ख भेणं। एकसो पचीसर योजन विस्तारपणे १०५। उवारिलेवणासहस्साजयणसहस्सार आयामविक्खंभेणं। वरना पीठ संबंधीया १६ • सहस्र योजन लांबपणें पिहुलपणेंछे। पचासजोयणसहस्सार पचयसत्ताणउएजोयणसए। पंचास सहस्त्रजोजन पांचसे सत्ताणवे जोजन। किंचिविसेसूणेपरिक्खेवेणं। कांइक विशेषे ऊणो परिधे जांणवो। सव्वप्पमा णं। एपन वे ते राजधानीनेविषे प्राकारमढ प्रासादघर सभादिकनुंछे, ते सर्वनो उचादिक प्रमाण ते सौधर्म वैमानिक प्राकार प्रासादादिकनो चे प्रमाणकह्याछे तेटलो पहमायना ते देखाडेछे—सौधर्म वैमानिक चार विमाननो प्राकार त्रीणसे १०० जोजन ऊ चपणेंछे तेसाठे पहुलो १५ , तथा सौ धर्म वैमानिकने मूलप्रासाद ५ • जोजननो तेटलो चौडा • तेहनो परिभूत २५ जोजन, ते पारिमा प्रत्येक चोडा चार २ विमान तेहना परिवारभूत २५ जोजन रुम चीडा ते परिवारभूत साडीबासठयोजन रुम चौडा सपादएकत्रीस योजन रुम विमान परिपाटी सौधर्म देवलोकनेविषेछे, हवें मूल प्रा साद २५० योजन तेहनो चव २ कोस करतां जेहना पगरेयाजन असें एकयोजनना आठभागमांहेथी एकना पांचभाग प्रमाणछे, एहीज वाचनान्तरे चत्ता रि परिवाडीउपासायवडिंसगाण पहण्णोपाउणत्ति। एड प्रासादनी चार परिपाटीनेविषे त्रीणसय एकताळीस प्रासादछे, १ २५० यो० । ४ १२५ यो०

चमसपन्नतिविते जाव समुत्तरविक्कमए अथवा बायपडिरूवे, भूमिवर्णक एवमेव–सरसव पासायवडिंसयस्स बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते संगहा चा सिणपुक्खरेइवेत्यादि॥ सपरिवारत्ति॥ चमरस्सभिपरवारसिंहासनोपेतं तवैव–सस्सव सीहासणस्स अवरुत्तरेण उत्तरेण उत्तरपुरच्छिमेण एत्थण चमरस्स चउसट्ठीए सामाणिय साहस्सीणं चउसट्ठी भद्दासणसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, एवं पुरच्छिमेण पंचण्ह अग्गमहिस्सीणं सपरिवाराणं पञ्चभद्दासणाइं सपरिवाराइं दाहिणपुरच्छिमेणं अब्भिंतरियाए परिसाए चउव्वीसाए देवसाहस्सीणं चउव्वीसं भद्दासणसाहस्सीओ, एवं दाहिणेणं मज्झिमाए प छावीसं भद्दासणसाहस्सीओ दाहिणपच्चच्छिमेणं बाहिरियाए बत्तीसं पच्चच्छिमेणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं सत्तभद्दासणाइं चउद्दिसिं आयरक्खदेवाणं चत्तारि भद्दासणसहस्सचउसट्ठीओत्ति ॥ तेत्तीसं भोमत्ति॥ वाचनान्तरे दृश्यते, तत्र भौमानि विशिष्टस्थानानि, नगराकाराणीत्यन्ये ॥ उवरिपत्तसयत्ति ॥ तस्स पीठबन्धरूपं ॥ सव्वप्पमाणं वेमाणियपमाणस्स अद्धं नेयव्वंत्ति ॥ चमरस्य चतुर्षां राजधान्या प्राकारप्रासादसभादि वस्तु तस्य

स्साइं उम्माहित्ता, तत्थणं चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो चमरचंचानामं रायहाणी पण्णत्ता, एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं जंबूदीवप्पमाणा उवरियतलेणं सोलसजोयणसहस्साइं आयामविक्खंभेणं,

भरेरवप्पमाणपुठवीए। वैठे रत्नप्रभा पृथिवीमें। चालीसहजारयोजनसहस्साउल्लंघिता। चालीस हजारयोजन जावमाहीमें। एत्थणंचमरस्सअसुरिंदस्सअसुररण्णोचमरचंचानामरायहाणी पण्णत्ता। इहां जं राजाधिराजे, चमरेन्द्रनी असुरेन्द्रनी असुरराजानी चमरचंचानाम राजधानी कही। एगंजोयणसयसहस्सआयामविक्खंभेणं। एकलाख योजन लांबपणें तथा पिहुलपणें। जंबूदीवप्पमाणा। जंबूद्वीप जेवडे प्रमाणेछे। दिवड्ढंजोयणसयसहस्ससतेण। एकलाखपचास हजार १॥ लाख जोयण लांबपणेछे। मूलेपन्नासजोयणाइंविक्खंभेण। मूलने विषे पचास योजन पिहुला। उवरिंपद्धतेरसजोयणाइं विक्खडीसमा। उपरि साढीबारे योजन चालीसा जाणवा। अद्धकोसंउच्चत्तेणं आसचविहा भेवं। अर्धगाउ ऊंचपणें एककोस पिहुलपणे। देमूलंमहत्वा पर्यंतसुधीवचे। देशे ऊणा अर्धयोजन ऊंचा ऊंचपणेछे। एगमेगाएबाहाएपंचपंचदारसया। एकेकी बाहा पांचसेंपांचसे बारणाछे। अद्धकोसंउच्चत्तेणं

तस्सो भूमाविभमार्थ सौधर्मवैमानिकविमानप्राकारप्रासादसमाविस्तृतप्रमाणस्य द ज्ञेतव्यं तथाहि-सौधर्मवैमानिकाना विमानप्राकारी याजमानां शीविप्रता मुखत्वेन एतस्यासु सार्धयत तथा सौधर्मवैमानिकाना मूलप्रासादः पञ्चयोजनानां शतानि तदग्ने चत्वार तत्परिवार भूताः सार्धे द्वे शते प्रत्येकम तेषां चतुर्णां मध्यमे परिवारभूता चत्वारः सपादं शतं एव मन्ये तत्परिवारभूताः सार्धा द्विपष्ठि एव मन्ये सपादे कमिशत् एतत्तु मूलप्रासादः सार्धे द्वे योजनशते एव महोदयीना सहपरे मायदन्तिभाः पञ्चदशयोजनानि पञ्चव योजनस्या हाक्षा एतदेव वा चनान्तरे उक्तं-चत्वारि परियालीठ पासायवडिंसगाव चउदारीपव्वति। एतेषांच प्रासादानां चतसृष्वपि परिपाटिषु शीर्षि शता स्येकचत्वारिंशद

पन्नास जोयणसहस्साइ पचयसत्ताणउय जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेण , सव्वप्पमाण वेमाणियस्स

चसवार उटटश्वतेव। ते मारवा पठारीसे साजन लवा ज पयोंछे। एकपचवीसजोयणसए १०१ विस्त भेर्व। एकसा पचोत्तर योजन विस्तारपर्णे १०१। उत्तरिमेणसाहसाएचसहस्सार आयामविक्खंभेण। घरता पीठ बधतरीषी ११ • सहस्र साजन दीघपणें विस्तृतपणेंछे। पन्नासजोयणसहस्सार पचयसत्ताणउइजोयणसए। पचास सहस्रयोजन पांचसे सत्ताणवे साजन। किंचिविसेसूणेपरिक्खेवेणं। कांइक विशेषे ऊणो परिधे जाणवो। सव्वप्पमा र्ण। एषव जे ते राजधानीनेविषे प्राकारमत प्रासादभर समाहिकस्तुछे, ते सवनो सवांविध प्रमाण ते सौधर्म वैमानिक प्राकार प्रासादाविकनो जे प्रमाणकहाछे तेहनो पहमाणना ते देखाडेछे-सौधर्म वैमानिक चार विमाननो प्राकार तीमसे १० साजन ऊ पपर्णेछे तेमाटे एकनो ११ , तथा सौ धर्म वैमानिकने मूलप्रासाद ५ साजनमा तेहनी चौथा ४ तेहनो परिभूत २५० साजन, ते चारिना प्रत्येक चौथा चार २ विसान तेहना परिवारभूत ११ साजन एम चौथा ते परिवारभूत साठोमासठयाजन एम चौथा सवारमचोस साजन इस विसाम परिपाटी सौधर्म देवलोकनेविषेछे, इहां मूल प्रा सार २५० साजन तेहनो पद २ हीन करतां तेहना पगरेसाजन पने एकयोजनना पाठभायकोचेएकना पांचभाय प्रमाणछे, एहोज वाचनान्तरे चत्ता रि परियालीपापासायवडिंसगाव चउदारीपावत्ति। एव प्रासादनो चार परिपाटीमेविषे तीनसम इकतालीस प्रासादछे, १ २५० यो०। ४ १२५ यो

पिकानि भवन्ति, एतेभ्य प्रासादेभ्य उत्तरपूर्वस्या दिशि सभा सुधर्मा सिद्धायतन मुपपातसभा, हृदो ऽभिषेकसभा, अलङ्कारसभा व्यवसायसभा चेति एतानिच सुधर्मसभादीनि सौधर्मवैमानिकसभादिभ्यः प्रमाणतो ऽर्द्धप्रमाणानि तत ऊर्ध्वम् दृष्टया पद्भिसाद्योजनानि पञ्चाशद् दायामो विष्कम्भश्च पञ्चविंशतिरिति एतेषाञ्च विजयदेवसम्बन्धिनामिव, अध्यगसजसपश्चिविशा अनुगमसुकपवहरवेदपाइत्यादि यथको वाच्य सभा दा राका सभ्यिवर्वे षडङ्गमसमाख्या वजावसता इत्यादि रलङ्कारस्य सभादीना वाच्य सर्वत्र जीवाभिगमास्तु यिभपदेयसम्बन्धिचमरस्य वाच्य याव दुपपातसभायां समुत्पन्न यामिनयोत्पन्नस्य किं मम पूर्वं पश्चात् कर्तुं मेय इत्यादिरूप अभिषेक आभिषेकसभाया महर्घ्यो सामानिकादिदे वकृतः, विभूषणाच अलालङ्कारकृता अलङ्कारसभाया व्यवसायश्च व्यवसायसभाया पुस्तकवाचनतो ऽर्चनिकाच सिद्धायतने सिद्धप्रतिमादीना सुध मसभायमनच सामानिकादिपरिवारोपेतस्य चमरस्य परिवारस्य सामानिकादि रुद्धिमत्वच, एव महिद्धिरित्यादिवचनं वाच्य मस्यति एतच वा

---

१९ ६२॥ वा । ६४ ११। वा । २९९ १५। ५ आग सर्व १४१ यथा एह प्रासादथी इशान कूणि सुधर्मा सभा सिद्धायतन उपपातसभा ऊद्रभिषेकसभा अलङ्कारसभा व्यवसायसभाछे, एसुधर्मासभा प्रमुख सौधर्म वैमानिकसभाथिकी प्रमाण अर्द्धप्रमाण एतलो आयामे तिवारे एहने अ उपदेश १९ यो जन ५ योजन आयामे २५ योजन विष्कम्भे एहने विजयदेवसम्बन्धीनीपरे अनेक अभसयसविविशा इत्यादि, यवच वाचनो एवीवाभिगमेकयो, विज यदेवसबधे जिम इहा चमरने सबधे कहवू यावत् उववाभोसकप्पा इत्यादि । उववाभासकप्पा । देवता उपपात सभा उपजे जवच पहिलो करयो कर ब पछेकरवो इत्यादि । अभिसेय विभूसणायो ववसाओ अयणिआसुधम्माय चमरपरिवारइद्धिअस आवविवरड़ । अभिषेक कोवा देवते ठकुराइ इत्यादि एम अलकार परिरया अलङ्कारसभा व्यवसायसभा पउत्रवाच्या सिद्धायतन प्रतिमाधिकनो पूजाकोधी सुधर्मासभा जिहा परिवारमिवे सामानि

चनामर पर्यंत प्रायी ऽवलोक्यत एव॥ इति द्वितीयस्याष्टमउद्देशः ॥ ८ ॥ चमरचम्पासत्य चेव मष्टमोद्देशके उक्त मथ च
माधिकारादय नवमे समयक्षेत्र मुच्यतइत्येवं सम्बन्धस्या स्येद सूत्रं ॥ किमित्यादि ॥ तत्र समयः काल स्तेनो पलक्षित क्षेत्रं समयक्षेत्र कालोहि दिनमासा
दिरूपः सूर्यगतिसमभिव्यंग्यो मनुष्यक्षेत्रएव न परतः परतोहि मादित्याः सञ्चारिणइति ॥ एवं जीवाजिगमवक्तव्यतामयवृति ॥ एषा चैव—एगं ला
यसहस्सदरस आयामविक्खंभेण मित्यादि ॥ जोइसविहूणंति ॥ तत्र जम्बूद्वीपादिमनुष्यक्षेत्रवक्तव्यतायां जीवाजिममोक्तायांज्योतिष्कवक्तव्यता प्यस्ति
तत लद्विहीन यथा भव त्येवं जीवाजियमवक्तव्यता मेतव्येति वाचनान्तरेतु जोइसचकविहूणंइत्यादि ग्धुदृश्यते, तत्र—जम्बूद्वीपेच भते! कइ चं
दापभासिसुवा ३ कतिसूरियातविसुवा ३ कइनक्खत्ताजोइंजोइंसुवेत्यादिकानि प्रत्येक ज्योतिष्कसूत्राणि, तथा—एकेकठेवं भंत। एव सुत्त जम्बूद्वीपे
द्वीपे गोयमा जम्बूद्वीपे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेण लवणस्स दाहिणेण जाव तत्थ २ बहवे असुरकुमारा असुरवत्ता जाव उवसोभमाणा चिट्ठति

पमाणस्स वुद् नेयव्व ॥ इइ विइयसए अट्ठमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ८ ॥ किमिदं भंते! समयखेत्तेत्ति पवुच्चइ ? गोयमा ! अड्ढाइज्जा दीवा दोयसमुद्दा एसणं एवइए समयखेत्तेत्ति पवुच्चइ, तत्थ

आदि परिवारसहित चमर परिवार सामानिक सहित ए सर्व छए इत्यादि कहवा, यावत् विचरे। बितियसयपढमसो। एमोका शतकनो आठमो
उद्देसा पूरोथयो ॥ ८ ॥ ते चेतना अधिकारथी नवमे उद्देशे समयखेत्र कहिये—किमिदमंतेसमयक्खेत्तेत्तिपवुच्चइ। यूं हेभगवन्!
समयखेत्र इसाकहीये इतिप्रश्न, उत्तर। गोयमा अढ्ढाइज्जादीवादोयसमुद्दा एसणंएवइएसमयखेत्तेत्तिपवुच्चइ। हे गोतम! अढाईद्वीप बेसमुद्र एतले
समयखेत्र कहीये, समय कहतां काल तिण उपलक्षितखेत्र ते समयखेत्र ते दिन मासादिरूप सूर्य गतिकरो जाणिये ते मनुष्यखेत्रमांहिज छे ते माहि
रहा तेपरे चादित्यादिक सचारनथी थिरमाटे। तत्थणयंजम्बूद्वीपे २। तिहां वर्ष मध्यभागमांहि, एह जम्बूद्वीपनामाद्वीप। सव्वदीवसमुद्दाणसव्वभंतरे
एवंजीवाभिगमवत्तव्वयानेयव्वा जाव अभिंतरपुक्खरद्धंजोइसविहूणं। सर्व द्वीप समुद्रने मध्य अभ्यंतर सर्वथी इम जीवाभिगमसूत्रनी वक्तव्यता जाणवी ते

सतमहत्वं मोयमा ! यय पुवर वधूद्वीपेदीव हत्यादीमि प्रत्येक मपसूत्राविप सन्ति सप्त पैसद्विशीमं यथा मव त्येय धीवाजिगमवक्तव्यतया नेय मस्या द्दमकस्य सूत्र ॥ वावरमागारति ॥ सयरणाया साय–परएतसमययायर विक्खूपविपायसाएगायगवी आगरनिड्डिनरउघरा गमिम्गमेसुक्तिव ययव ॥ १ ॥ मस्या यार्थ सपा नेम सम्मयेमा यातो जम्बूद्वीपादीमा मानुपोत्तराम्तामा मयानां ससकस्मात इदमुक्त–आर्थेयव मानुसुत्तरपव्वम तावयं चस्सिसोएत्ति पवुयइ ॥ मनुष्यलोक सम्पातसत्पर्य सपा ॥ परएतत्ति ॥ यावचय परएता चक्कवट्टी जाव आयिपाठ मणुया पगवज्जया विलीया स यवय परिससोएत्ति पवुयइ समयत्ति यावयव समयाइया आयसियाइया यावलोएत्ति पवुयइ एव यावयव यायर यिज्जुयार यायरे थविमसइ यावयव वहवे उराला बलाहया सचेयति यमथिसि यावयव यायरे तउयाए यावयव यामराइया मिट्टीइया नवइया उयरागत्ति पदो धरायाइया सुरायरायाइया सावयव यस्सिसोएत्ति पवुयइ उपरागोपरय ॥ निभ्गमे युक्तिवयपयति ॥ याव जिनमादीना यपन प्रज्ञापन तायन् मनु ससोकइति प्रकृत तम–यावयव चदिमसूरियाय याव ताराख्याय यहयमव जिणसय युक्तिमिवुल्टी यापविक्कर तावयव यस्सिसोएसि पवुयइ यतिगमन निवासरायव निर्गमन दक्षिणायनं वृद्धि दिनस्य यद्दम निवृद्धि तस्येव हानिः ॥ इति द्वितीयशते नवमउद्देशः ॥ ९ ॥

ण धुय जयूद्दीवेद्दीवे सवूदीवसमुद्दाण सव्वस्तिरे एव जीवाजिगमपत्तव्वया नेयव्वा, जाव स्वक्तिर पुक्क रद्ध जोइसविहूण ॥ इह यिइयसए नवमो उद्देसो समत्तो ॥ ९ ॥ कइण भंते ! अस्थि

तम—एवं जाय सवसवस्स भायाम विक्खंभ इत्या द यावत् तारार कवचा, जाम्भी यम्पस्तर प्रकराइ जोईस जंबूदीप यादिवेइ मनुष्यपेत वक्तव्यता जोवा निगमे कहो ते इमविपे क्य तियानो यवि वक्तव्यताकहोवे तेमाटे ते इहां क्यातिय वक्तव्यता कहवी जोवो जोवाभिगमोक्त वक्तव्यता धच कहवो । विति यस्यनयमया । इ बीजा शतकमां नवमो उद्देशोपूराथयो ॥ ९ ॥ नवमे उद्देशे क्षेत्रकह्या ते अस्तिकाय क्षेत्ररूपछेतेमाटे अस्तिकाय निरूप ण इसमासदेसा कहेछे —कइत्यसते अस्तिकाया यक्ता भावमा पञ्चस्तिकाया यक्ता तबवा । जेशवी चेमनवदु । अस्तिकायबजो इतिमच सतर चे गेनम । यव

समभारं वेमयुक्तं तथास्तिकायदेशरूप मित्यस्तिकायाभिधानपरस्य दृयमोदृयकस्या विवृर्णं ॥ कदद्वमित्यादि ॥ अस्तिशब्देन प्रदेशा उच्यन्ते मत सेषां कायाः राशयः ऽस्तिकायाः अथवा । अस्तीत्ययं निपातः कालत्रयाभिधायी ततो अस्तीति सन्ति आसन् भविष्यन्ति च ये कायाः प्रदेशराशय स्ते ऽस्ति कायाद्दति धर्मास्तिकायादीनां चोपन्यास ऽयमेव क्रम सयाहि—धर्मास्तिकायादिपदस्य माङ्गलिकत्वात् धर्मास्तिकाय आदा वुक्त स्तदनन्तरं च तद्वि

कामा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचत्थिकाया पण्णत्ता, तंजहा—धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए जीवत्थिकाए पोग्गलत्थिकाए । धम्मत्थिकाएणं कतिवण्णे कतिगंधे कतिरसे कतिफासे ? गोयमा ! अवण्णे अगंधे अरसे अफासे अरूवी अजीवे सासए अवट्ठिए लोगदव्वे से समासओ पंचविहे पण्णत्ते तंजहा—

रागि ते अस्तिकाय पतवा अस्तिपवय कालवर वाविक तिवारे पछिदे हवा हुवे अकावप्रदेश पस्तिकाय बधा पस्तिमध्ये प्रदेशनरोवे तेहनाकाय कहोये रागि ते अस्तिकाय तेहवहे—धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए जीवत्थिकाए पोग्गलत्थिकाए, धम्मत्थिकाएप्रभंतिकारनसेपवत्ते । धर्मास्तिकायने हेभगवन् । केतलावर्णहे । धर्मास्तिकाय धारेमति परिणतजीव पुद्गलने गमन स्वभावछे तेभणी धम अस्तिकायविषे प्रदेश कायशब्दये समूह, धर्मास्तिकाय जीवपुद्गलने गमन करतानेसहाय छायादेभिम मत्स्यनेजल १। तेहथी विपरीत ते अधर्मास्तिकाय स्थिरस्वभाव २। अवकाशरूप ते आकाशास्तिकाय ३ उपयोगधारे तेजीव चेतन्यलक्षण ४। पुरणगलन स्वभावछे जेहनो ते पुद्गलास्तिकाय५। अथ समसे पूठिजोपरे कहवा, इहां धर्मास्तिकायादिकना एहोज अनुक्रम कहवा जेभणी धर्मास्तिकाय मंगलीकछे ते भणी पहिलं कह्या १ तेहथी विपरीत ते अधर्मास्तिकाय२ तिवारपछी ते बेहना आधार भणी आकाशास्तिकाय २ तिवार पछी अनन्त मूर्त साधकको जीवास्तिकाय ४ तिवारपछी तेहना उपष्टंभपणायो पुद्गलास्तिकाय ५ कह्या ए अनुक्रम धर्मास्तिकायनेविषे ग नामामकारे हेभगवन् । केतलावर्ण । कतिगंधे कतिरसे कतिफासे गोयमा अवण्णे अगंधे अरसे अफासे अरूवे अजीवे सासए अवट्ठिएलोगदव्वे । केतला गंध केतला रस केतला फरस इतिप्रश्न उत्तर हेगोतम । धर्मास्तिकायनेविषे वर्ण५ छे ते मांहिला एकहीनथी, गंध २ मांहिथी, रस ५ मांहि, फरस ८ मांही, जेमाटे

सतमठेव मोयमा । एव सुबह मबूद्दीवेदीव इत्यादीनि प्रत्येक मर्वसूत्राणि सन्ति तत्र एतद्विदीमं यथा भव स्येध श्रीजाजिगमवक्तव्यतया मेय मस्या इयकस्य सूत्र ॥ जावरमागाइत्ति ॥ सयकगाथा याव–भरहतसमययापर विश्रूणवियावसाइगायणवी सागरनिचिमइउधरा गनिग्गमेसुच्छिव ययव ॥ १ ॥ घस्या दार्थ सवा मेन सम्बोधेना यातो यम्बूद्दीपादीना मानुषोत्तरान्तामा मर्यामा यवकस्मात् इरमुरू–आयबव माणुसुत्तरपब्बय ताववं घरिसलोएत्ति पवुचर ॥ मनुष्यलोक इत्यसहत्यर्थ स्तथा ॥ भरहतत्ति ॥ जावबव घरहता चक्कवट्टी जाव सायिमाइ मणुया पगइभद्दया विवीया तावब घस्सिलोएत्ति पवुचर समयत्ति जावंचव समयाइया आवलियाइया आयलोएत्ति पवुचर यव जावबव यायर यिज्जुयार यायरे यवियसह जावबव बहवे उराला बलाहया सवेयति यणवित्ति जावबव यायरे तसयार जावबव सागराइया निहीइसा नहइसा उयरागत्ति, यदो वरामाइसा सूरावरामाइसा तावबवं घस्सिलोएत्ति पवुचर उपरागोपदब ॥ निग्गमे सुच्छिययवत्ति ॥ यावं सियमादीना यमन प्रशायन तावन् मनु ष्यलोकइति प्रकृत तव–जावबव चदिमसूरियाव जाव ताराख्वाव अरगमव निगमवं वुच्छिनिबुड्डी यायविज्जर तावबव घस्सिलाएत्ति पवुचइ प्रतिपमन मिवासरायव निर्गमन हर्त्तिवायम वृद्धि दिनस्य बहुन मियहि स्यस्येव हानिः ॥ इति द्वितीयशते नवमउद्देशः ॥ ९ ॥

प च्यय जयूद्दीवेद्दीवे सद्दीवसमुद्दाण वद्दाम्नितरे एव जीवाभिगमवत्तव्वया नेयव्वा , जाव अम्नितर पुक्ख रद्द जोइसविहूण ॥ इइ यिइयसए नवमो उद्देसो समत्तो ॥ ९ ॥ कइण जंते ! अस्थि

इन—एवंवायवसयसहस्स थायामविक्खंभ इत्या र, यावत् तासम कहवा मानवी मध्यस्तर पुष्कराद्ध सोदय जबूदीप यादिदेइ मनुष्यक्षेत्र वक्तव्यता बोवा मिगमेवशो तेहमविधे ब्य तिवामो यवि समयतावळोवे तेमाटे ते इहां ज्यातिप वक्तव्यता मळवी बोबी जावाभिगमाम वक्तव्यता सब कहवी । विति यरसयमभया । द बीजा यतकना नवमों उद्देशोपूरोथयो ॥ ९ ॥ नवमे उद्देशे क्षेत्रकह्या ते यस्तिकाय इयरूपछे तेमाटे यस्तिकाय निरूप प नमसावरिया करिवे –कइयमते यस्तिकाया यमत्ता गौतमा पचस्तिकाया यनता तथथा । केवधी धर्मास्तिकाय । यस्तिकायकशी इतिमध्य सत्तर बेगोतम । पच

गधे कइरसे कइफासे ? गोयमा ! अवन्ने जाव अरूवी जीवे सासए अवठिए लोगदव्वे सेसमासठ पच विहे पण्णत्ते तंजहा—दव्वठ जाव गुणठ, दव्वठण जीवत्थिकाए अणताई जीवदव्वाइं, खेत्तठ लोगप्पमा णमेत्ते, कालठ नकयाइनआसि जाव निच्चे, भावठ पुण अवन्ने अगंधे अरसफासे, गुणठ उवठगगुणे, पोग्गलत्थिकाएण भंते ! कइवण्णे कइगंधरसफासे ? गोयमा पंचवन्ने पंचरसे दुगंधे अठफासे रूवी अजीवे सासए अवठिए लोगदव्वे, से समासठ पंचविहे पण्णत्ते तंजहा—दव्वठ खेत्तठ कालठ भावठ गुणठ, दव्वठ

रूपवे। यावत् गुणतो भावतो भावाद्रिक पवक्तमवेठवे। जीवस्तिकाएणभंतेकइवणे। जीवास्तिकाय च कश्मालकारे, हेभगवन् । केतलावर्ण। कइगं धे कइरसे कइफासे। केतला वर्ण केतलारस केतला फरस इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा अवर्णेजावअरूपी। हेगौतम ! वर्णरहित यावत् अरूपी अमूर्त। जी वेसासए अवट्ठिए लोगदव्वे सेठमासथा पंचविहे पण्णत्ते तंजहा। चेतन्यरूप सदा शाश्वत थिर नियत अवस्थित लोकद्रव्य ते जीवास्तिकाय ५संक्षेपथी पांच भेदे ते कहेछे—द्रव्यथा यावगुणथा द्रव्यथा जीवास्तिकाए। द्रव्यथी यावत् गुणथी द्रव्यथी जीवास्तिकाय। अनंताइ जीवद्रव्यार क्षेत्रथीलोकप्रमाण मते। अनन्ता जीवद्रव्य क्षेत्रथी जीव लोकप्रमाणमात्रछे। कालथानकयाइनआसि। कालथी कदेई जीवद्रव्य नथी इमनथी। भावथी भावथीपुण अवन्ने। यावत् निश्चय भावथी वर्णादिकथी रहित। अगंधे अरसे अफासे गुणभावउवओगगुणे। गंधरहित रसरहित फरसरहित भावथी उपयोग चेतन्य साकार अनाकार तद्रूपजीव। पोग्गलत्थिकाएणभंतेकइवण्णे। पुद्गलास्तिकाय च काश्मालकारे, हेभगवन् ! केतलावर्ण। कइगंधरसफास। केतला गंध रस फरसकह्या इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा पंचवर्णे। हेगौतम पांचवर्णछे। पंचरसे दुगंधे अठफासे रूवी अजीवे सासए। पांच रसछे बेगंधछे आठ फरसछे रूपीछे चेतन्यरहित शाश्वताछे। अवठिए लोगदव्वे सेसमाससपांचविहे पण्णत्ते तंजहा द्रव्यथा। अवस्थितछे लोकद्रव्यछे ते पुद्गलास्तिकाय संक्षेपथी पांचभेदछे ते कहेछे—द्रव्यथी। क्षेत्रथी कालथी भावथी गुणथी द्रव्यथीपोग्गलत्थिकाए। क्षेत्रथी कालथी भावथी गुणथी, द्रव्यथी पुद्गलास्तिकाय

पचत्वा द्धर्मास्तिकाय सतय तदाधारत्वा दाकाशास्तिकाय, सतो अनन्तत्वाऽमूर्तत्वसाधर्म्यो ज्जीवास्तिकाय, सत तदुपष्टम्भकत्वात् पुद्गलास्तिका

दव्वउ खेत्तउ कालउ भावउ गुणउ, दव्वउण धम्मत्थिकाए एगेदव्वे, खेत्तउ लोगप्पमाणमेत्ते, कालउ नक याइनआसि नकयाइनत्थि जाव निच्चे, भावउ अवन्ने अगंधे अरसे अफासे, गुणउ गमणगुणे। अह म्मत्थिकाएवि एवचेव, नवर, गुणउ ठाणगुणे। आगासत्थिकाएवि एवचेव, नवर खेत्तउण आगासत्थि काए लोयालोयप्पमाणमेत्ते अणतेचेव जाव गुणउ अवगाहगुणे। जीवत्थिकाएण भते! कइवन्ने कइ

धर्मादि नहो तमाटे पदूपोवे चेतन्यगुणरहित द्रव्यनो सासताहे प्रदेशनो समस्तितहे, तावश्रि पंचास्तिकायात्मक तेहना पंचभूत द्रव्यछे। सेसमासपोर्वच विचे पचते तेमना। त धर्मास्तिकाय संक्षेपनो पांचेमेदे कह्यो ते कहीछे—द्रव्यथा खेतथी कालथी भावथी गुणथी। द्रव्यथो १ खेत्रथी २ कालथी ३ भावथी ४ गुणथी ५। द्रव्यथावधर्मास्तिकाय एमेदवे। द्रव्यथी धर्मास्तिकाय एकद्रव्य। खेतथोलाकप्रमाणमेते। खेत्रथी धर्मास्तिकाय चउद राजलोक रमाणछे कालथी धर्मास्तिकाय। कालथा नकदा[illegible]नथिनकयाइनत्थि। अतीतकाले कदापि नहुतो इमनहो वर्त्तमानकालेनछे आगामिकालेनहुस्ये इमनहो। कालथिरे भावथा अवर्ने अगंधे अरसे अफासे गुणयोगमनगुणे। यावत् निश्चछे, भावथो धर्मास्तिकाय पर्यायथी वर्णरहित गंधरहितछे रस रहितछे स्पर्शरहितछे गुणथी कालथी जीव पुद्गलने गति परिणतने गतिउपष्टंभ हेतु जिम माछलोने जल तिम। अधर्मास्तिकाएविएवचेव। अधर्मास्तिका य पणि जिवे इमज पंचप्रकारे धर्मास्तिकायनी परे कहवा। नवर गुणथाठाणगुणे। एतलाविशेष गुणथो कार्यथो जोवपुद्गलने स्थितिपरिणतने स्थिति उपष्टंभ हेतु जिम सरणने जल तिम। आगासत्थिकाएविएवचेव। आकाशास्तिकाय पणि पांचेभेदे इमज कहवा। नवरखेत्तथोलोयालोयप्पमाणमेत्ते। लोकालोक प्रमाणमात्र छे। एतलाविशेष खेत्रथी आकाशास्तिकाय लोक तथा अलोक प्रमाण कहवो। अनंतेचेव। अनन्तछे नित्यछे। अवगाहगुणे

गधे कइरसे कइफासे ? गोयमा ! अवन्ने जाव अरूवी जीवे सासए अवट्ठिए लोगदव्वे सेसमासओ पंच विहे पण्णत्ते तजहा—दव्वओ जाव गुणओ, दव्वओणं जीवत्थिकाए अणताइं जीवदव्वाइं, खेत्तओ लोगप्पमाणमेत्ते, कालओ नकयाइनआसि जाव निच्चे, भावओ पुण अवन्ने अगधे अरसफासे, गुणओ उवओगगुणे, पोग्गलत्थिकाएण भंते ! कइवण्णे कइगंधरसफासे ? गोयमा पंचवन्ने पंचरसे दुगंधे अट्ठफासे रूवी अजीवे सासए अवट्ठिए लोगदव्वे, से समासओ पंचविहे पण्णत्ते तजहा—दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ गुणओ, दव्वओ

रूपे । यावत् गुणतो कालतो आदिकाल पर्यन्तामहेतुके । जीवास्तिकाएणभंतेकइवण्ण । जीवास्तिकाय च वाच्याक्षकारे, हेभगवन् ! केतलावर्ण । कइर्ग धे कइरसे कइफासे । केतला गंध केतलारस केतला फरस इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा अवर्णेजावअरूपी । हेगौतम ! वर्णरहित यावत् अरूपी अमूर्त । जी वे सासए अवट्ठिए लोगदव्वे सेसमासओ पंचविहे पण्णत्ते तजहा । चेतन्यरूप सदा शाश्वत स्थिर नित्य अवस्थित लोकद्रव्य ते जीवास्तिकाय संक्षेपथी पांच भेदे ते कहेछे—दव्वओ जावगुणओ दव्वओणंजीवत्थिकाए । द्रव्यथी यावत् गुणथी द्रव्यथी जीवास्तिकाय । अणताइं जीवदव्वाइं खेत्तओलोगप्पमाण मेत्त । अनन्ता जीवद्रव्य क्षेत्रथी जीव लोकप्रमाणमात्रछे । कालओ न कयाइनआसि । कालथी कदेइ जीवद्रव्य नथी इमनथी । जावनिच्चे भावओ पुण अवन्ने । यावत् नित्य भावथी अपोद्‌गलिको वर्णरहित । अगंधे अरसे अफासे गुणओ उवओगगुणे । गंधरहित रसरहित फरसरहित कालथी उपयोग चेतन्य साकार अनाकार तद्रूपयोग । पोग्गलत्थिकाएणभंतेकइवण्णे । पुद्गलास्तिकाय च वाच्यावचारे, हेभगवन् ! केतलावर्ण । कइगंधरसफासे । केतला गंध रस फरसछ्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पंचवण्णे । हेगौतम पांचवर्ण । पंचरसे दुगंधे अट्ठफासे रूवी अजीवे सासए । पांच रसछे दोयगंधछे आठ फरसछे रूपीछे चेतन्यरहित शाश्वताछे । अवट्ठिए लोगदव्वे सेसमासओपंचविहे पण्णत्ते तजहा दव्वओ । अवस्थितछे लोकद्रव्यछे ते पुद्गलास्तिकाय संक्षेपथी पांचभेदछे ते कहेछे—द्रव्यथी । खेत्तओ कालओ भावओ गुणओ दव्वओणंपोग्गलत्थिकाए । क्षेत्रथी कालथी भावथी गुणथी, द्रव्यथी पुद्गलास्तिकाय

पञ्चत्वा द्रव्यास्तिकाय सतय तदाधारत्वा दाकाशास्तिकाय, ततो ऽनन्तत्वाऽमूर्तत्वसाधर्म्यो ज्जीवास्तिकाय, तत तदुपष्टम्भकत्वात् पुद्गलास्तिका

दव्वओ खेत्तओ कालओ जावओ गुणओ, दव्वओणं धम्मत्थिकाए एगेदव्वे, खेत्तओ लोगप्पमाणमेत्ते, कालओ नक याइनत्र्यासि नकयाइनत्थि जाव निच्चे, जावओ अवन्ने अगंधे अरसे अफासे, गुणओ गमणगुणे। अह म्मत्थिकाएवि एवचेव, नवर, गुणओ ठाणगुणे। आगासत्थिकाएवि एवचेव, नवर खेत्तओणं आगासत्थि काए लोयालोयप्पमाणमेत्ते अणतेचेव जाव गुणओ अवगाहगुणे। जीवत्थिकाएण जते ! कइवन्ने कइ

वर्णादि मद्दो तमाटे घरूपोवे चेतन्यगुणरहित द्रव्यतो सास्वता छे, प्रदेशतो सर्वाप्रित्वे साकशे पंचास्तिकायात्मक तेहनो पंचभूत द्रव्यछे। तेहनाहथापद तिह पचते तंमशा। त धर्मास्तिकाय सवेपचो पांचेभेदे कह्यो ते कहेछे—द्रव्यथा क्षेत्रथो कालथा भावथो गुणथो। द्रव्यथो १ क्षेत्रथो २ कालथो ३ भावथो ४ गुणथो ५। द्रव्यभावथयास्तिकाय पमेद्रव्ये। द्रव्यथी धर्मास्तिकाय एकद्रव्य। क्षेत्रथोलोगप्पमाणमेत्ते। क्षेत्रथो धर्मास्तिकाय चउद राजलोक प्रमाणछे कालथो धर्मास्तिकाय। कालथा नकयाइनत्थिकयाइनत्थि। अतोतकाले कदापि नथतो इमनथी वर्तमानकालेनछे आगामिकालेनथुके इमनथो। कालविषे भावथा अवर्ण अगंधे अरसे अफासे गुणथोगमनगुणे। यावत् निमथे भावथो धर्मास्तिकाय पर्यायथो वर्णरहित अवर्णरहितछे रस रहितछे अगंधरहितछे गुणथो कालथो जीव पुद्गलने गति परिणतने पालिठपथ्य हेतु जिम माछलोने जल तिम। अधर्मास्तिकाएविएवचेव। अधर्मास्तिका य पणि जिवे इमज पचप्रकारे धर्मास्तिकायनी परे कहवा। नवर गुणथाठाणगुणे। एतलोविशेष गुणथो कालथो जीवपुद्गलने स्थितिपरिणतने स्थितिउ पष्टम्भ हेतु जिम मारगने छाह तिम। आगासत्थिकाएविएवचेव। आकाशास्तिकाय पणि पांचेभेदे इमज कहवा। नवरक्षेत्रथोआगासत्थिकाएलोया लोयप्पमाणमेत्ते। एतलोविशेष क्षेत्रथो आकाशास्तिकाय लोक तथा अलोक प्रमाण प्रमाण जाव कहवो। अणतेचेव। अनन्तछे निश्चे। अवगाहगुणोपगमा

गंधे कइरसे कइफासे ? गोयमा ! अवन्ने जाव अरूवी जीवे सासए अवट्ठिए लोगदव्वे सेसमासओ पंचविहे पन्नत्ते तंजहा—दव्वओ जाव गुणओ, दव्वओणं जीवत्थिकाए अणंताइं जीवदव्वाइं, खेत्तओ लोगप्पमाणमेत्ते, कालओ न कयाइ न आसि जाव निच्चे, भावओ पुण अवन्ने अगंधे अरसे अफासे, गुणओ उवओगगुणे, पोग्गलत्थिकाएणं भंते! कइवन्ने कइगंधरसफासे ? गोयमा पंचवन्ने पंचरसे दुगंधे अट्ठफासे रूवी अजीवे सासए अवट्ठिए लोगदव्वे, से समासओ पंचविहे पन्नत्ते तंजहा—दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ गुणओ, दव्वओ

अगुणे। यावत् गुणतः कायतो लोकादिकं पचकागहेतुके। जीवास्तिकायप्रभृतिकस्य। जीवास्तिकाय भ भगवन्नकारे, हे भगवन् ! कतिवर्णः। कतिगं धे कतिरसे कतिफासे। केतला वर्ण केतलाग्स केतला फरस इतिप्रश्न उत्तर। गौतमा अवर्णोऽरसोऽरूपी। हे गौतम। वर्णरहित यावत् अरूपी अमूर्त। जी वे शाश्वत अवस्थित लोकद्रव्ये संक्षेपथी पंचविधे प्रज्ञप्ते तद्यथा। चेतनस्वरूप सदा काल स्थिर नियत अवस्थित लोकद्रव्य ते जीवास्तिकाय संक्षेपथी पांच भेदे त कहेवे—द्रव्यथा क्षेत्रथा कालथा भावथा गुणथा एवं जीवास्तिकाए। द्रव्यथी यावत् गुणथी द्रव्यथी जीवास्तिकाय। अनंताइ जीवद्रव्याइ क्षेत्रथी लोकप्रमाण मात्र। कालथी जीवद्रव्य क्षेत्रथी लोक साकाशमात्र। कालथी न कदापि नासि। भावथी वर्णरहित जीवद्रव्य नथी इमज थी। भावथी भावथोपुन वर्णे। यावत् नित्य भावथी अवर्णवान्थी वर्णरहित। अगंधे अरसे अफासे गुणथी उपयोगगुणे। गंधरहित रसरहित फरसरहित भावथी उपयोग चेतन्य साकार अनाकार तद्रूपयोग। पोग्गलास्तिकायप्रभृतिकस्य। पुद्गलास्तिकाय भ भगवन्नकारे, हे भगवन् ! केतलावर्ण। कइगंधरसफासे। केतला वर्ण एम फरसकथा इतिप्रश्न उत्तर। गौतमा पंचवर्णे। हे गौतम पांचवर्णे। पंचरसे दुगंधे अट्ठफासे रूवी अजीवे शाश्वत। पांच रसदे दोयगंधदे आठ फरसदे रूपीक चेतन्यरहित शाश्वत। अवस्थित लोकद्रव्ये संक्षेपथी पंचविधे प्रज्ञप्ते तद्यथा द्रव्यथा। अवस्थितदे लोकद्रव्ये ते पुद्गलास्तिकाय संक्षेपथी पांचभेदे ते कहेवे—द्रव्यथी। क्षेत्रथा कालथा भावथा गुणथा एवंपुद्गलास्तिकाय। क्षेत्रथी कालथी भावथी गुणथी, द्रव्यथी पुद्गलास्तिकाय

पढमा दुपमोसिकाय सतय तदाधारत्वा दाकाशास्तिकाय. सतो ऽनन्तत्वाऽमूर्तत्वसाधर्म्यो जीवास्तिकाय. ततः तदुपष्टम्भकत्वात् पुद्गलास्तिका

दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ गुणओ, दव्वओणं धम्मत्थिकाए एगेदव्वे, खेत्तओ लोगप्पमाणमेत्ते, कालओ नक याइनआसि नकयाइनत्थि जाव निच्चे, भावओ अवन्ने अगंधे अरसे अफासे, गुणओ गमणगुणे। अहम्मत्थिकाएवि एवचेव, नवर, गुणओ ठाणगुणे। आगासत्थिकाएवि एवचेव, नवर खेत्तओण आगासत्थिकाए लोयालोयप्पमाणमेत्ते अणंतेचेव जाव गुणओ अवगाहगुणे। जीवत्थिकाएण भंते! कइवन्ने कइ

धर्मादि कहो तमाटे अरूपीछे, चेतनागुणरहित द्रव्यछे आसतेछे, मध्यनो धर्मास्तिछे, कालछे पंचास्तिकायात्मक तेहनो पर्यभूत द्रव्यछे। तेसमासधापय विह पचते तमहा। त धर्मास्तिकाय सक्षेपथी पांचभेदे कह्यो ते कहेछे—द्रव्यथा क्षेत्रथी कालथी भावथी गुणथी। द्रव्यथो १ क्षेत्रथी २ कालथी ३ भावथो ४ गुणथो ५। द्रव्यथकी धर्मास्तिकाए एगेदव्वे। द्रव्यथी धर्मास्तिकाय एकद्रव्य। खेत्तओ लोगप्पमाणमेत्ते। क्षेत्रथी धर्मास्तिकाय चउद राजलोक प्रमाणछे कालथी धर्मास्तिकाय। कालथी नकयाइनआसि नकयाइनत्थि। अतीतकाले कदापि नहुता इमनथी वर्तमानकालेनहे अनागतकालेनहुसे इमनथी। भावविषे भावथी अवन्ने अगंधे अरसे अफासे गुणओगमणगुणे। भावथी निश्चे भावथी धर्मास्तिकाय वर्णथी वर्णरहित गंधरहितछे रस रहितछे स्पर्शरहितछे गुणथी कालथी जीव पुद्गलने गति परिणतने गतिउपष्टंभ हेतु जिम माछलाने जल तिम। अहम्मत्थिकाएविएवचेव। अधर्मास्तिका य पांच भेदे इमज पचप्रकारे धर्मास्तिकायनी परे कहवा। नवर गुणओठाणगुणे। एतलाविशेष गुणथी कार्यथी जीवपुद्गलने स्थितिपरिणतने स्थितिउ पष्टंभ हेतु जिम मुसाफरने वृक्ष तिम। आगासत्थिकाएविएवचेव। आकाशास्तिकाय पणि पांचभेदे इमज कहवा। नवरखेत्तओणआगासत्थिकाएलोया लोयप्पमाणमेत्ते। एतलाविशेष क्षेत्रथी आकाशास्तिकाय लोक तथा अलोक प्रमाण कहवो। अणंतेचेव। अनंतछे जियेसं। भावगुणथीपवमा

गधे कइरसे कइफासे ? गोयमा ! अवन्ने जाव अरूवी जीवे सासए अवट्ठिए लोगदव्वे सेसमासओ पंच विहे पन्नत्ते तंजहा—दव्वओ जाव गुणओ, दव्वओणं जीवत्थिकाए अणंताइं जीवदव्वाइं, खेत्तओ लोगप्पमाणमेत्ते, कालओ नकयाइनआसि जाव निच्चे, भावओ पुण अवन्ने अगंधे अरसफासे, गुणओ उवओगगुणे, पोग्गलत्थिकाएणं भंते! कइवन्ने कइगंधरसफासे ? गोयमा पंचवन्ने पंचरसे दुगंधे अट्ठफासे रूवी अजीवे सासए अवट्ठिए लोगदव्वे, से समासओ पंचविहे पन्नत्ते तंजहा—दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ गुणओ, दव्वओ

अरूपी। यावत् गुणथी भावथी आकारादिक अवधारणहेतुछे। जीवअस्तिकायभंतेकइवन्न। जीवास्तिकाय प वाणआकारे, हेभगवन् ! केतलावर्णं। कइगं धे कइरसे कइफासे। केतला गंध केतलारस केतला फरस इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा अवर्णअगंधअरूपी। हेगौतम। वर्णरहित यावत् अरूपी अमूर्त। जीवेसासए अवट्ठिए लोयदव्वे सेसमासओ पंचविहे पन्नत्ते तंजहा। चेतन्यरूप सदा कालीन थिर नियत अवस्थित लोकद्रव्य ते जीवास्तिकाय संक्षेपथी पांच भेदे ते कहेछे—दव्वओ जावगुणओ दव्वओणजीवत्थिकाए। द्रव्यथी यावत् गुणथी द्रव्यथी जीवास्तिकाय। अनंताइं जीवदव्वाइं खेत्तओलोगप्पमाणमत्त। अनंता जीवद्रव्य क्षेत्रथी जीव लोकप्रमाणमात्रछे। कालओनकयाइनआसि। कालथी कदेइ जीवद्रव्य नथी एमनथी। भावओपुण अवन्ने। यावत् नित्यछे भावथी वलीवर्णादिको वर्णरहित। अगंधे अरसे अफासे गुणओउवओगगुणे। वर्णरहित रसरहित फरसरहित गुणथी उपयोग चेतन्य साकार अनाकार तद्रूपजीव। पोग्गलत्थिकाएणंभंतेकइवन्ने। पुद्गलास्तिकाय प वाणआकारे, हेभगवन् ! केतलावर्ण। कइगंधरसफासे। केतला गंध रस फरसना इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा पंचवन्ने। हेगौतम पांचवर्णछे। पंचरसे दुगंधे अट्ठफासे रूवी अजीवे सासए। पांच रसछे दोयगंधछे आठ फरसछे पूर्वोक्त चेतन्यरहित शास्वताछे। अवट्ठिए लोयदव्वे सेसमासओपंचविहे पन्नत्ते तंजहा दव्वओ। अवस्थितछे लोकद्रव्यछे ते पुद्गलास्तिकाय संक्षेपथी पांचभेदछे ते कहेछे—द्रव्यथी। खेत्तओ कालओ भावओ गुणओ दव्वओपोग्गलत्थिकाए। क्षेत्रथी कालथी भावथी गुणथी, द्रव्यथी पुद्गलास्तिकाय

यइति ॥ धम्मेइत्यादि ॥ यतएवा वर्णादि रतएवा रूपी अमूर्तः नतु निःस्वभावो मत्र पर्युदासवृत्तित्वात् भावतो द्रव्यतो ऽस्तित्व प्रदेशतः ॥ लोगदव्वत्ति ॥ लोकस्य पञ्चास्तिकायात्मकस्यां शभूत द्रव्य लोकद्रव्य जावतइति पर्यायत ॥ गुणओत्ति ॥ कार्यतः ॥ गमणगुणेत्ति ॥ जीवपुद्गलाना गतिपरिणतानां मत्युपष्टम्भहेतु मत्स्यानां जलमिवेति ॥ ठाणगुणेत्ति ॥ जीवपुद्गलाना स्थितिपरिणताना स्थित्युपष्टम्भहेतु मत्स्याना स्थलमिवासि ॥ अवगाहणागुणेत्ति ॥ जीवादीना मवकाशहेतु बदराणा कुण्डमिव ॥ उवओगगुणेत्ति ॥ उपयोगश्चैतन्य साकारानाकारभेद ॥ गहणगुणत्ति ॥ ग्रहण परस्परेण

ण पोग्गलत्थिकाए छ्णताइ दव्वाइ , खेत्तउ लोयप्पमाणमेत्ते , कालउ नकयाइनच्छासि जाव निच्चे , भावउ वण्णमते गंधरसफासमते , गुणउ गहणगुणे , एगेजते ! धम्मत्थिकायपदेसे धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्व सिया ? गोयमा ! णोइणठेसमठे , एव दोन्निवि तिन्निवि चत्तारि पच छ सत्त अठ नव दस सखेज्जा असंखेज्जा भंते ! धम्मत्थिकाय प्पदेसा धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्व सिया ? गोयमा ! णोइणठे समठे , एगपदेसूणेविषण धम्मत्थिकाएत्ति यत्तव्व सिया ? णोइ० सेकेणठेण भंते ! एव वुच्चइ , एगे धम्मत्थिकाय पदेसे

सम्बन्ध इत्यर्थ: ॥ लोकमात्रप्रमाणमेते । प्रदेश द्रव्य अनताई क्षेत्रतो लोकप्रमाण मात्र यत्से तत्तत् तथा प्रमाणहे । कालतःअनादिनित्यमासि । भावतो वर्णेरूपो इत्यादी तीर्थकरोक्ते । भावपिवे भावपर्ययमते । भावत् निर्मल भावतो वर्णसहितत्वे । गधमते रसमते फासमते गधघोणइन्द्रियगुणे । गंधदोष सहितमे रस मोक्षसहितमे परस आठसहितमे भावतो परस्पर सबंध करना जाने पीदारिकादि प्रकारे धर्मास्तिकायना अविभागरोक पदेसे—एग भतेधम्मत्थिकायपदेसे धम्मत्थिकायेत्तिवत्तव्वसिया । एक हेभगवन् ! धर्मास्तिकाय प्रदेश तेप्रते धर्मास्तिकाय प्रदेश कहवाय इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णाइणठे समठे । हेगौतम ! एअर्थ समर्थनहो युक्तनहो । एमदोयतितिधिवत्तारिपचम नयहसवसयसखेज्जाअसंखेज्जाभंतेधम्मत्थिकायप्पएसा । एम बेप्रदेश ने त्रीजप्रदेशमें चारप्रदेशमें पांचप्रदेशमें छप्रदेशमें सातप्रदेशमें आठप्रदेशमें नवप्रदेशमें दशप्रदेशमें संख्यातप्रदेशमें असंख्यातप्रदेशमें हेभगवन् ! धर्मास्ति

सम्यग्धर्मं जीवेन वा। औदारिकादिभिः प्रकारैरिति ॥ खण्डचक्केत्यादि ॥ यथा खण्डचक्रं चक्रं न भवति किंतु खंडचक्र मित्येव तस्य व्यपदिश्यमानत्वा दपितु सकलमेव चक्रं चक्रं भवति एवं धर्मास्तिकायः प्रदेशमात्रो न्यूनो न धर्मास्तिकायइति वक्तव्यः स्यादेतच निश्चयनयदर्शनं, व्यवहारनयमतस्तु

नोधम्मत्थिकायेत्ति वत्तव्वं सिया, जाव एगपदेसूणेवियणं धम्मत्थिकाए नोधम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्वंसिया। सेणूण गोयमा! खंडेचक्के सगलेचक्के? भगवं! नोखंडेचक्के सगलेचक्के। एवं छत्ते धम्मे दंडे दूसे आउहे

जावमहुय। धम्मत्थिकाएतिवत्तव्वंसिया। धर्मास्तिकाय इम् कहवाय इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा नोइणट्ठेसमट्ठे। हेगोतम। एअर्थ समर्थनहो युक्तनथी। एगपदेसूणेवियणंभंतेधम्मत्थिकाए धम्मत्थिकाएत्तिवत्तव्वंसिया। एक प्रदेश ऊणो थको पिण अपर सर्व प्रदेशे करी, हेभगवन्! धर्मास्तिकाय धर्मास्तिकाय इम कहवाय इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा णोइणट्ठेसमट्ठे। हेगोतम। ए अर्थ समर्थनथी युक्तनथी, तिवारे गोतम कहेछे—सेकेणट्ठेणंभंतेएवंवुच्चइ। ते स्यो भवो भगवन्! इमकहुं। यतो धम्मत्थिकायपदेसेणोधम्मत्थिकाएत्तिवत्तव्वंसिया। एक धर्मास्तिकायना प्रदेश तेहने धर्मास्तिकाय एहवुं कहवायनथी इत्यादि। जावएगपदेसूणेवियणंधम्मत्थिकाए। यावत् एक प्रदेश ऊणो पणि, अपुन सर्वप्रदेशकरी, धर्मास्तिकाय तेहने। नोधम्मत्थिकाएत्तिवत्तव्वंसिया धर्मास्तिकाय एहवुं न कहिये इतिप्रश्न। सेणूण गोयमा खंडेचक्के सगलेचक्के। ते निश्चे हेगोतम। चक्रनाखंडने चक्र कहीये, अथवा समस्त चक्रने चक्र कहीये एहवो प्रश्न तहने कहवा इमा भगवंतेपूछ्या तिवारे गोतम बोल्या। भगवन्नोखंडेचक्के सगलेचक्के एवं छत्ते धम्मे दंडे दूसे आउहे मोयए। हेभगवन्! नही चक्रनाखंडने चक्र कहीये समस्त चक्र कहीये, इम छत्रना खंडने छत्रनकहीये समस्त छत्र कहीये, इम चर्मना खंडने चर्म नकहीये दंडनाखंडने दंड नकहीये वस्त्रना खंडने वस्त्रनकहीये आयुधखंडने आयुध नकहीये, मोदकना खंडने मोदक नकहीये, एतावता मयपसमे धर्म इम दंड वस्त्र आयुध मोदक सदनकहीये समस्ते हेगोतम। जिम चक्रना खंडखंड कहीये पणि तेहने चक्र नकहवाये सगलाहोय चक्र तेहने चक्रकहीये। तेणे भ गवेणं गोतम। इम काय एक धर्मास्तिकाय प्रदेश तेहने धर्मास्तिकाय नकहीये इत्यादि। जावएगपदेसूणेविणधम्मत्थिकाएनोधम्मत्थिकाएत्तिवत्तव्वंसिया।

पडति ॥ षवखेइत्यादि ॥ यतएव वर्णादि रहितएव अरूपी अमूर्त ॥ ननु निःस्वभावो नभ पर्युदासवृत्तित्वात् आयता द्रव्यतो ऽवस्थितः प्रदेशत ॥ लोगद्वति ॥ लोकस्य पञ्चास्तिकायात्मकस्य अभूत द्रव्य लोकद्रव्य मात्रमइति पर्यायतः ॥ गुणओत्ति ॥ कार्यतः ॥ गमणगुणेत्ति ॥ जीवपुद्गलानां गतिपरिणतानां उपष्टम्भहेतु मत्स्यानां जलमिवेति ॥ ठाणगुणेत्ति ॥ जीवपुद्गलानां स्थितिपरिणतानां स्थित्युपष्टम्भहेतु मत्स्यानां स्थलमिवेति ॥ अवगाहणगुणेति ॥ जीवादीना मवकाशहेतु बदराणां कुण्डमिव ॥ उवओगगुणेति ॥ उपयोगचेतन्य साकारानाकारभेदं ॥ गहणगुणेत्ति ॥ ग्रहण परस्परेण

ण पोग्गलत्थिकाए अणताइ दव्वाइ, खेत्तउ लोयप्पमाणमेत्ते, कालउ नकयाइनआसि जाय निच्चे, भावउ वन्नमते गंधरसफासमते, गुणउ गहणगुणे, एगेभंते ! धम्मत्थिकायपदेसे धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्व सिया ? गोयमा ! णोइणट्ठेसमट्ठे, एव दोन्निवि तिन्निवि चत्तारि पच छ सत्त अट्ठ नव दस संखेज्जा असंखेज्जा भंते ! धम्मत्थिकाय प्पदेसा धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्व सिया ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे, एगपदेसूणेवियण धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्व सिया ? णोइ० सेकेणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ, एगे धम्मत्थिकाय पदेसे

भवतार स्मार ततभामाअप्पमाणमते। पुद्गल द्रव्य अनंता छे क्षेत्रथी लोकप्रमाण मात्र एतले चवद राज प्रमाण छे। कालप्रमानकायरलभावि। कालथी कदेनथी हमनथी तोनेकाले छे। वारवितो भावभावसमते। यावत् निश्चे भावथी वनसहित छे। गधमते रसमंते फासमते गधयोगहणगुणे। गधदोय सहित छे रस पांचसहित छे फरस आठसहित छे भावथी परस्पर सबध करवो सांधे पोतारिकादि प्रकारे धर्मास्तिकायना अधिकारयोग करीछे—एग भतेधम्मत्थिकायपदेसे धम्मत्थिकायेतिवत्तव्वंसिया। एक हेभगवन्! धर्मास्तिकाय प्रदेश तेहमते धर्मास्तिकाय एहवु कहवाय इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा णोइणट्ठे समट्ठे। हेगौतम! एहवु समर्थ नथी युक्त नथी। एवदोण्णिवितिण्णिवचत्तारिपचछ सत्तअट्ठनवदससखेज्जा असखेज्जाभतेधम्मत्थिकायप्पएसा। एम बेप्रदेशमे ने तीनप्रदेशमे चारप्रदेशमे पांचप्रदेशमे छप्रदेशमे सातप्रदेशमे आठप्रदेशमे नवप्रदेशमे दशप्रदेशमे सख्यातप्रदेशमे असख्यातप्रदेशमे हेभगवन्! धर्मास्ति

सम्बन्धमं जीवेन वा; औदारिकादिभिः प्रकारैरिति ॥ खण्डचक्रेत्यादि ॥ यथा सकलचक्र चक्र न भवति खंडचक्र मित्येव तस्य व्यपदिश्यमानत्वा
इपितु सकलमेव चक्र चक्रं भवति एव धर्मास्तिकाय प्रदेशमात्र धूमो न धर्मास्तिकायइति वक्तव्यः स्यां देशत निश्चयनयदर्शनं व्यवहारनयमतन्तु

नोधम्मत्थिकायेत्ति वत्तव्वं सिया , जाव एगपदेसूणेवियण धम्मत्थिकाए नोधम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्वसिया ।
सेणूण गोयमा ! खण्डेचक्के सगलेचक्के ? भगवं ! नोखंडेचक्के सगलेचक्के । एव छत्ते धम्मे दण्डे दूसे आउहे

आयमद्य । धम्मत्थिकाएत्तिवत्तव्वसिया । धर्मास्तिकाय इत्यु कहनाव इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णाटणा समट्ठे । हेगोतम ! एषम समर्थमहो युक्तमहो ।
एगपदेसूणेविसयंमतेधम्मत्थिकाए धम्मत्थिकाएत्तिवत्तव्वसिया । एक प्रदेशे ऊना पिण वपन न धर्मास्तिकाय हेभगवन् ! धर्मास्तिकाय धर्मास्तिकाय
इसा कहवाय इतिप्रश्न उत्तर । गायमा णाटणट्ठसमट्ठे । हेगोतम ! ए समसमत्थो युक्तनहो, विचारे गोतम कहिये—हेवेणट्ठ भमतेएवंवुच्चइ । तमें प्रभो
अने भगवन् ! इमकहे । एमे धम्मत्थिकायपदेसेणोधम्मत्थिकाएत्तिवत्तव्वसिया । एक धर्मास्तिकायमा प्रदेश तेहने धर्मास्तिकाय एतले कहवायनहो इ
त्यादि । जावएगपदेसूणेविसयंधम्मत्थिकाए । यावत् एक प्रदेशे ऊना पणि, वपुन धर्मास्तिकाय, धर्मास्तिकाय तेहमे । णोधम्मत्थिकाएत्तिवत्तव्वसिया
धर्मास्तिकाय एतले नकहिये इतिप्रश्न । सेणूण गोयमा खंडेचक्के सगलेचक्के । ते निश्चे हेगोतम ! चक्रनाखण्डने चक्र कहीये, अथवा समस्त चक्रने चक्र
कहीये, एइअवसरे तइना कटका इमा भगवतेपूछ्या तिवारे गोतम बोल्या । भगवणाखण्डेचक्के सगलेचक्के एव छत्ते धम्मे दण्डे दूसे आउहे मोयए । हेभगवन् !
नही चक्रनाखण्डने चक्र कहीये सकलने चक्र कहीये, इम छत्रना खण्डने छत्रनकहीये छत्रने छत्र कहीये, इम चर्मना खण्डने चर्म नकहीये दण्डनाखण्डने द
ण्डनकहीये वस्त्रना खण्डने वस्त्रनकहीये आयुधनाखण्डने आयुध नकहीये, मोदकना खण्डने मोदक नकहीये, एतावता सघलाने पर्से इम इम चक
आयुध मोदक सर्वनकहीये तेमाटे हेगोतम ! जिम चक्रना खण्डखण्ड कहीये पणि तेहने चक्र नकहयाये समस्ताहोय चक्र तेहने चक्रकहीये । तेमें म
में इमातम ! एम बाप एक धर्मास्तिकाय प्रदेश तेहने धर्मास्तिकाय नकहीये इत्यादि । जावएगपदेसूणेविसयधम्मत्थिकाएणोधम्मत्थिकाएत्तिवत्तव्वसिया ।

यहति ॥ भवकेदस्यादि ॥ यतएवा बर्वोति रतएवा रूपी यमूर्तः नतु निःस्वभावो नञ पर्युदासवृत्तित्वात् भावतो द्रव्यतो ऽवस्थित प्रदेशात ॥ लोगद वृति ॥ लोकस्य पञ्चास्तिकायात्मकस्या अभूत द्रव्य लोकद्रव्य जावतइति पर्यायतः ॥ गुणओत्ति ॥ कायतः ॥ गमणगुणेत्ति ॥ जीवपुद्गलाना गतिपरि णतानां मस्पुपष्टम्भहेतु मत्स्याना जलमिवेति ॥ ठाणगुणेत्ति ॥ जीवपुद्गलाना स्थितिपरिणताना स्थित्युपष्टम्भहेतु मत्स्याना स्थलमिवेति ॥ अवगा हणागुणेति ॥ जीवादीना मवकाशहेतु बदराणा कुण्डमिव ॥ उवओगगुणेत्ति ॥ उपयोगश्चैतन्य साकारानाकारभेद ॥ गहणगुणेत्ति ॥ ग्रहण परस्परेण

ण पोग्गलत्थिकाए अणताइ दव्वाइ , खेतओ लोयप्पमाणमेत्ते , कालओ नकयाइनआसि जाव निच्चे , भावओ वण्णमते गधरसफासमते, गुणओ गहणगुणे, एगेजते । धम्मत्थिकायपदेसे धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्व सि या ? गोयमा ! णोइणठेसमठे, एव दोन्निवि तिन्निवि चत्तारि पच छ सत्त अठ नव दस सखेज्जा अ सखेज्जा भंते ! धम्मत्थिकाय प्पदेसा धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्व सिया ? गोयमा ! णोइणठे समठे , एगपदे सूणेवियण धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्व सिया ? णोइ० सेकेणठेण भंते ! एव वुच्चइ , एगे धम्मत्थिकाय पदेसे

भववार इत्यादि [illegible] । यह द्रव्य [illegible] जावत्माव नाम एतले अनन्त राज प्रमाण छे । कालमानकायन्नमासि । कालथी वर्तमानथी इमतो लोकवावे । [illegible] । यावत् नित्यछे भावथी वर्णसहितछे । गंधमते रसमंते फासमते गहणगुणे । गधदोय सहितछे रस पांचसहितछे फरस आठसहितछे कायथी परस्पर समय करथी जोवे [illegible] प्रकारे धर्मास्तिकायना पदिकारत्नोय कहेछे—एम भतेधर्मास्तिकायपदेसे धर्मास्तिकायेतिवक्तव्यसिया । एक हेभगवन् । धर्मास्तिकाय प्रदेश तेहमतें धर्मास्तिकाय एहवुं कहवाय इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णाहणठेसमठे । हेगोतम । एअर्थ समर्थनथी युक्तनथी । एवदोन्निवितिन्निचत्तारिपचस नचइनवदससखेज्जाअसखेज्जाभतेधम्मत्थिकायप्पएसा । इम बेप्रदेश ने तीनप्रदेशने चारप्रदेशने पांचप्रदेशने छप्रदेशने सातप्रदेशने आठप्रदेशने नवप्रदेशने दशप्रदेशने सख्यातप्रदेशने असख्यातप्रदेशने हेभगवन् । धर्मास्ति

ग्रादीमा पुनः प्रदेशा ग्रनन्ता वाच्या ग्रनन्तप्रदेशकत्वा यथायाममपीति उपयोगगुणो जीवास्तिकायः प्राग्दर्शितो ऽयतद्यभूतो जीव उत्थानादि गुणइति दर्शयन्नाह ॥ जीवेणमित्यादि ॥ इहच सउठाणेत्यादीनि विशेषणानि मुक्तजीवव्युदासार्थानि ॥ आयभावेणत्ति ॥ आत्मभावेन उत्थानशयनगमनभोजनादिरूपेण स्वपरिणामविशेषेण ॥ जीवभावंति ॥ जीवत्व चैतन्य मुपदर्शयति प्रकाशयति इतिवक्तव्यस्यात् विशिष्टस्यो त्थानादि

काएवि एवचेव, नवर, तिसुइपि पएसा अणंता भाणियव्वा । सेस तचेव । जीवेणं भंते ! सउठाणे सकम्मे सबले सवीरिए सपुरिसक्कारपरक्कमे आयभावेणं जीवभावं उवदंसेईति वत्तव्वंसिया ? हंता गोयमा ! जीवेणं सउठाणे जाव उवदंसेईति वत्तव्वंसिया । सेकेणट्ठेणंजाव वत्तव्वंसिया ? गोयमा ! जीवेणं अणंताणं

जो प्रदेश आकाशनता तेहने धर्मास्तिकाय अवगाहे । एवमधर्मास्तिकायपिण । इम धर्मास्तिकायनी परे अधर्मास्तिकाय पणि कहवो । आकाशास्तिकाय । आकाशास्तिकाय पणि । जीवास्तिकाय । पुद्गलास्तिकाय । पावलास्तिकायविएवचेव । पुद्गलास्तिकाय पणि ए तीनेइं इमहीज कहवा । नवरतिहु पि पदेशाअनताभाणिवला सेसंतचेव । एतला विशेष धर्मास्तिकाय १ अधर्मास्तिकाय २ एबेहुना प्रत्येके असंख्यातप्रदेश कह्या अने ए तीनना अनंतप्रदेश कहवा, बाकी सर्व तिमज कहवा । जीवेणंभंते सउठाणेसकम्मे । आगे गुण जीवास्तिकाय पूर्वकह्यु । हिवे तेहयभूत जीवने उत्थानादि गुण ते देखाड़े—जीवेणंभगवन् ! सउठाण ऊठवाना ते सहित शयनादि क्रियासहित ते सकम । सबले सवीरिए सपुरिसक्कारपरक्कमे । शरीरनो समर्थता इसहित जीवना उत्साह तेसहित पुरुषना अभिमान ते सहित कामपूरो जीवो । आयभावेणजीवभावंउवदंसेतीतिवत्तव्वसिया । आत्मभाव उत्थान गमन शयनादिरूप आत्मपरिणाम विशेष तिणेंकरी जीवभाव जीवपणा एतावता चैतन्यपणो देखाडे प्रकाशे इतिएहवो कहवाय इतिप्रश्न उत्तर । हंता गोयमा । हां गौतम । जीवेणसउठाणेजावउवदंसेतीतिवत्तव्वसिया । जीव उत्थान शयनादि आत्मपरिणामविशेष तेणे यावत् जीवभाव चैतन्यपणो दे खाड़े—एहवा कहवा हुवे । सेकेणट्ठेण जावउवदंसेसिया । ते स्ये अर्थ यावत् चैतन्यपणो देखाड़े इम कहवा इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जीवेण अनंता

एकदसे मोममपि वस्तु वस्त्वेव यथा खण्डोपि घटो घटएव' विकलोपि शावैव जयतिष-एकदेशविकलमनन्यवदिसि ॥ सेकिणाएति ॥ अथ कि पुनरित्यर्थः ॥ सवेत्ति ॥ समस्ता स्तेव देशापक्षयापि भवन्ति प्रकारकात्स्न्येपि सवक्षाएप्रयुते रित्यतआह ॥ कसिणत्ति ॥ कृत्स्ना ननु तदेकदेशापि यथा सवस्त्वथ स्तेव स्वस्वभावरहिता अपि भवन्तीत्यतआह प्रतिपूर्णा आत्मस्वरूपेणा विकला स्तेव प्रदेशान्तरापेक्षया स्वस्वभावन्यूनाअपि त आप्यन्तरत्याह ॥ निरवसेसत्ति ॥ प्रदेशान्तरतोपि स्वस्वभावेना न्यूना तथा ॥ एगग्गहणगहियत्ति ॥ एकग्रहणे नैकशब्देन धर्मास्तिकायइत्येव लक्षणेन गृहीता ये ते तथा एकशब्दाभिधेया इत्यर्थ एकार्थो वैतेशब्दा ॥ धर्मास्तिकायनानार्थमिति ॥ धर्माधर्मयो रसङ्ख्या प्रदेशा उक्ता आका

मोयए । सेतेणठेण गोयमा ! एववुच्चइ एगेधम्मत्थिकायपदेसे णोधम्मत्थिकाएत्तिवत्तव्वसिया जाय एगपदे सूणेवियण धम्मत्थिकाए नोधम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्वसिया । सेकिंखाइएणन्नत ! धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्वसिया ? गोयमा ! असंखज्जा धम्मत्थिकायपएसा तेसव्वे कसिणा पडिपुण्णा निरवसेसा एक्कग्गहणगहिया एसण गोयमा ! धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्वसिया । एवंअहम्मत्थिकाएवि आगासत्थिकाय जीवत्थिकाय पोग्गलत्थि

यावत् एक प्रदेशे ऊणा धर्मास्तिकाय नकहीये, एमिजे समभिनेमते यथा पणि व्यवहार नयनेमते एक देशेकरी न्यून पणि वस्तु ते वस्तुजीव कहीये सि मर्यादा पणि घडा घडाजीव कहीये, यथा कातरा पणि कूतरो कूतराजीव कहीये इम पोताधुक्य इत्यादि भावना । सेकिणाइएणभंतेधम्मत्थिका एत्तिवत्तव्वसिया । ते भणी ह्याति प्रसिको पर्वे हेभयवन् । धर्मास्तिकाय इमो कहवाय इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा असंखेज्जाधम्मत्थिकायपदेसातेसव्वे कसिणापडिपुण्णाणिरवसेसा । गौतम असंख्याता धर्मास्तिकायना प्रदेश ते सर्व समथ प्रतिपूर्ण आत्मस्वरूपे करी विकलपणो ते पणि प्रदेशान्तरथको पणि स्वस्वभावेकरी न्यून नथी एतले एक प्रदेशना पणि अंतरनथी । एगग्गहणगहिया । एक शब्दे धर्मास्ति एहवे शब्देकरी जे एकत्र मध्य एकाठे । एसण गोयमा धम्मत्थिकाएत्तिवत्तव्वसिया । एहने हेगौतम । धर्मास्तिकाय कहीये इहाँ एभावार्थ धर्मास्तिकायना असंख्याता प्रदेशमय तेमाजि जो एक

ममर जीवविमासूत्र मुक्त मथ तदाधारत्वेना काशविभासूत्राणि ॥ कतिविहेण जते। इत्यादीनि ॥ तत्र लोकालोकाकाशयो लक्षण मिद–धर्मो दीनांवृत्ति द्रव्याणांभवतियत्रतत्क्षेत्र। तैर्द्रव्यैःसहलोक तद्विपरीतमलोकाख्य मिति ॥ १ ॥ लोगागासेणमित्यादि पद्मभा तत्र लोकाकाशे ऽ धिकरणे जीवाति सम्पूर्णानि जीवद्रव्याणि ॥ जीवदेसाति ॥ जीवस्यैव बुद्धिपरिकल्पिता द्यादयो विभागाः ॥ जीवप्पएसाति ॥ तस्यैव बुद्धिकृता एव प्रकृष्टादेशाः प्रदेशा निर्विभागा भागा इत्यर्थः ॥ अजीवत्ति ॥ धर्मास्तिकायादयः ननु लोकाकाशे जीवा अजीवा चेत्युक्ते तद्देशप्रदेशा समोक्ता प

गोयमा ! जीवे सउठाणे जाव वयमसिया । कइविहेणन्नते ! आगासे पन्नत्ते ? गोयमा ! दुविहे आगासे प० त०—लोयागासेय अलोयागासेय, अलोयागासेणन्नते ! किंजीवा, जीवदेसा, जीवपएसा, अजीवा, अजीवदेसा, अजीवपएसा ? गोयमा ! जीवावि जीवदेसावि जीवपदेसावि अजीवावि अजीवदेसावि

[illegible] । इह तेरावमा धाधार [illegible] कहेहे—कइविहपभते आगासे पन्नत्ते [illegible] । केतले प्रकारे हे भगवन् ! [illegible] इतिमय [illegible] । बिहुभेदे आकाश कह्यो ते कहेहे—लोकाकाश १ अलोकाकाश २ तिहां लोकाकाशमें एतला धर्मास्तिकायादि द्रव्य [illegible] ते लोकाकाश तेहथी विपरीत ते अलोकाकाश कहीये । [illegible] किंजीवा जीवदेसा जीवपदेसा । लोकाकाशनेविषे हे भगवन् ! [illegible] जीव इत्यादि [illegible] तिहां लोकाकाश [illegible] 'जीवति, सपूर्ण जीवद्रव्य जीवदेश [illegible] देश ते प्रदेशनिर्विभाग [illegible] । अजीवा अजीवदेसा अजीवपदेसा । अजीव धर्मास्तिकायादिक ४ [illegible] विभाग ५ अजीवनिर्विभाग ६ । गोयमा जीवावि । [illegible] ! जीव पविहे १ । जीवदेसावि । जीव देसपविहे २ । जीवपदेसावि । जीवना प्रदेश पविहे ३ । अजीवावि । अजीवपविहे ४ । अजीवपदेसावि अजीवनादेश पविहे ५ । अजीवपदेसावि । अजीवना प्रदेश पविहे ६ । जेजीवातेनियमाएगिंदिया । जे जीवहे तिये एकेंद्रीजीव । बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया अणिंदिया जेजीवदेसा । जे इंद्रीजीव ते इंद्रीजीव चउरिंद्रीजीव पचेंद्रीजीव सिद्धजीव जे जीवना देश । तेनियमा एगिंदिय

थिष्टचेतना पृथक्त्वादिति ॥ अणंताणमाभिणिबोहियेत्यादि ॥ अणंताः प्रमाणतः अविभागाः परिच्छेदा, येषां अनंता आभिनियोधिकज्ञानस्य सो ऽनंतास्ता आभिनियोधिकज्ञानपर्यवास्तेषां सम्बन्धिनं अनंताभिनियोधिकज्ञानपर्यवात्मकमित्यर्थं, उपयोग चेतनाविशेष गच्छतीतियोगः उत्थानादा वात्मजावेवतमान इतिहृदयस्यं अथ अनुत्थानाद्यात्मभावे वर्तमानो जीव आभिनिबोधिकज्ञानाद्युपयोगं गच्छति तरिद्ध मेतावतैव जीवभाव मु पदर्शयतीति वक्तव्य स्या दित्याशङ्काह ॥ अवमुगेत्यादि ॥ यत उपयोगलक्षण जीवत्वात् उत्थानाद्यात्मभावतो पदर्शयतीति वक्तव्य स्या दयेति, अ

घोहियनाणपज्जवाणं एवं सुयनाणपज्जवाणं ओहिनाणपज्जवाणं मणपज्जवनाणपज्जवाणं केवलनाणपज्जवाणं मइअन्नाणपज्जवाणं सुयअन्नाणपज्जवाणं विभंगनाणपज्जवाणं चक्खुदंसणपज्जवाणं अचक्खुदंसणपज्जवाणं ओहिदंसणपज्जवाणं केवलदंसणपज्जवाणं उवओगं गच्छइ, उवओगलक्खणेणं जीवे से एएणट्ठेणं एवं वुच्चइ,

वं आभिनिबोधिकज्ञानपज्जवाणं। हेगोतम। जीव अनंता मतिज्ञान पर्यायात्मक उपयोग चेतना विशेष प्रते जाइ, इतियोग, उत्थानादिक आत्मभाव विषे वर्त्ते जइना जीवो भाव नहीय ते पर्याय कहेवे। एवंसुयनाण पज्जवाणं। इम अनंता श्रुतज्ञानना पर्याय। ओहिनाणपज्जवाणं। अनंता अव धि ज्ञानना पर्याय। मणपज्जवनाणपज्जवाणं। अनंता मनपर्यव ज्ञानना पर्याय। केवलनाणपज्जवाणं। अनंता केवलज्ञानना पर्याय। मइअन्नाणपज्ज वाणं। अनंता मति अज्ञानना पर्याय। सुयअन्नाणपज्जवाणं। अनंता श्रुत अज्ञानना पर्याय। विभंगनाणपज्जवाणं। अनंता विभंगज्ञानना पर्याय। चक्खुदंसणपज्जवाणं। अनंता चक्षुदर्शनना पर्याय। अचक्खुदंसणपज्जवाणं। अनंता अचक्षुदर्शनना पर्याय। ओहिदंसणपज्जवाणं। अनंता अवधिदर्शन ना पर्याय। केवलदंसणपज्जवाणं उवओगंगच्छइ। अनंता केवलदर्शनना पर्याय उपयोग चेतनाभाव प्रते जाय, उत्थानादिक आत्मभावने विषे वर्त्तमा न। उवओगलक्खणेणं जीवे। उपयोग लक्षणजीव चेतनामाटे उपयोगलक्षण जीवमते उत्थानादिक आत्मभावेकरी देखाडे एतले कहवाय। सेतेणट्ठे णं गोयमा एववुच्चइ। ते तेणे अर्थे हेगोतम। इमकह्यु। गाथमाजीवे सउट्ठाय जाव अत्थित्थिया। हेगोतम। जीव उत्थान यावत् आत्मपाय अनंतरेका

मन्तर जीवविमासूत्र मुक्त मथ तदाधारत्वेना काशविमासूत्रादि ॥ कतिविहेण भंते ! इत्यादीनि ॥ तत्र लोकालोकाकाशयो र्लक्षण मिद्—धर्मा दीनाद्वृत्ति द्रव्याणां भवति यत्र तत्क्षेत्रं । तैर्द्रव्यैः सह लोक स्तद्विपरीत मलोकाख्य मिति ॥ १ ॥ लोगागासेणमित्यादि प्रश्नः तत्र लोकाकाशे 5 विवक्षिते जीवति सम्पूर्णानि जीवद्रव्याणि ॥ जीवदेसत्ति ॥ जीवस्यैव बुद्धिपरिकल्पिता आदयो विभागाः ॥ जीवप्पएसत्ति ॥ तस्यैव बुद्धिकृता एव प्रकृष्टादयाः प्रदेशा निर्विभागा भागा इत्यर्थः ॥ अजीवत्ति ॥ धर्मास्तिकायादयः ननु लोकाकाशे जीवा अजीवा चेत्युक्ते तद्देशप्रदेशा स्तयोरेव

गोयमा ! जीवे सउठाणे जाव अमलंसिया । कइविहेणंभंते ! आगासे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे आगासे प० तं०—लोयागासेय अलोयागासेय, अलोयागासेणंभंते ! किंजीवा, जीवदेसा, जीवपएसा, अजीवा, अजीवदेसा, अजीवपएसा ? गोयमा ! जीवावि जीवदेसावि जीवपदेसावि अजीवावि अजीवदेसावि

वर्त्तिवासूत्रना । हिव तेहावना आधार आकाशविमासूत्र कहेछे—कतिविहेणभंते आकाशे पण्णत्ते लोयागासेय अलोयागासेय । केतले प्रकारे हेभगवन् ! आकाशकह्या इतिप्रश्न, हेगौतम ! बिहुभेदे आकाश कह्यो ते कहेछे—लोकाकाश १ अलोकाकाश २ तिहां लोकाकाशमा एतलेज धर्मास्तिकायादि द्रव्य जिहांछे ते लोकाकाश, तेहथी विपरीत ते अलोकाकाश कहीये । लोयागासेणभंते किंजीवाजीवदेसाजीवपदेसा । लोकाकाशनेविषे हेभगवन् ! स् जीव इत्यादि प्रश्न तिहां लोकाकाश अधिकरणनेविषे 'जीवत्ति, सपूर्ण जीवद्रव्य जीवदेश जीवनोबुद्धि कल्पित प्रकृष्ट देश ते प्रदेशनिर्विभाग इत्य र्थ । अजीवा अजीवदेसा अजीवपदेसा । अजीव धर्मास्तिकायादिक ४ अजीवदेशदशादिक विभाग ५ अजीवनिर्विभाग ६ । गोयमा जीवावि । हेगौत म ! जीव पणिछे १ । जीवदेसावि । जीव देशपणिछे २ । जीवपदेशावि । जीवना प्रदेश पणिछे ३ । अजीवावि । अजीवपणिछे ४ । अजीवदेसावि अजीवनादेश पणिछे ५ । अजीवपदेसावि । अजीवना प्रदेश पणिछे ६ । जेजीवातेनियमाएर्गिदिया । जे जीवछे तिये एकेंद्रीजीव । बेइंदिया तेइंदि या चउरिंदिया पचिंदिया अणिंदिया जेजीवदेसा । जे बेंद्रीजीव ते इंद्रीजीव चउरिंद्रीजीव पचेंद्रीजीव सिद्धजीव जे जीवना देश । तेनियमा एर्गेदिय

णिउवेतना पूर्वस्यादिति ॥ पवताभमाजिणिबोहियेत्यादि ॥ पयवाः प्रमाकता पविजागा पलिच्छदा, सोवा भमता माजिनिबोधिकज्ञानस्या सो ऽनन्ताना माजिनिबोधिकज्ञानपर्यवाणा समन्विन भवन्ताभिनिबोधिकज्ञानपर्यवात्मकमित्यर्थ, उपयोग चेतनाविशेष गच्छतीतियोग उत्थानादा वास्मत्वावेवत्तमान इतिहृदयस्य अथ यद्युत्थानाद्यात्मभावे वर्तमानो जीव आभिनिबोधिकज्ञानाद्युपयोगं गच्छति तर्हि मेतावतैव जीवभाव मु पदर्शयतीति वक्तव्य स्या दित्याशङ्काह ॥ उवओगेत्यादि ॥ यत उपयोगलक्षण जीवभाव मुत्थानाद्यात्मभावनो पदर्शयतीति वक्तव्य स्या दवाति य

योहियनाणपज्जवाण एव सुयनाणपज्जवाण ओहिनाणपज्जवाण मणपज्जवनाणपज्जवाण केवलनाणपज्जवाण मइअन्नाणपज्जवाण सुयअन्नाणपज्जवाण विभंगनाणपज्जवाण चक्खुदंसणपज्जवाण अचक्खुदंसणपज्जवाण ओहिदंसणपज्जवाण केवलदंसणपज्जवाण उवओगगच्छइ , उवओगलक्खणेण जीवे सेएणठेण एव वुच्चइ ,

वं आभिनिबोधिकज्ञानपर्यवार्थ । हेगौतम ! जीव अनंता मतिज्ञान पर्यायात्मक उपयोग चेतना विशेष प्रतें जाइ, इतियाम, उत्थानादिक आत्मभाव नेविषे वर्ते चेतना बोधा भाव प्रकाश ते पर्याय कहीये । एवंसुयनाण पज्जवाण । इम अनन्ता श्रुतज्ञानना पर्याय । ओहिनाणपज्जवाण । अनन्ता अव धि ज्ञानना पर्याय । मणपज्जवनाणपज्जवाण । अनन्ता मनपर्यव ज्ञानना पर्याय । केवलनाणपज्जवाणं । अनन्ता केवलज्ञानना पर्याय । मइअन्नाणपज्ज वाण । अनन्ता मति अज्ञानना पर्याय । सुयअन्नाणपज्जवाण । अनन्ता श्रुत अज्ञानना पर्याय । विभंगनाणपज्जवाण । अनन्ता विभंगज्ञानना पर्याय । चक्खुदंसणपज्जवाण । अनन्ता चक्षुदर्शनना पर्याय । अचक्खुदंसणपज्जवाण । अनन्ता अचक्षुदर्शनना पर्याय । ओहिदंसणपज्जवाण । अनन्ता अवधिदर्शन ना पर्याय । केवलदंसणपज्जवाण उवओगगच्छइ । अनंता केवलदर्शनना पर्याय उपयोग चेतनाभाव प्रतें जाय उत्थानादि आत्मभावने विषे वर्तमा न । उवओगलक्खणेण जीवे । उपयोग लक्षणजीव एतलामाटे उपयोगलक्षण जीवप्रतें उत्थानादिक आत्मभावेकरी देखाडे एतद् कहवाय । सेतेणट्ठे णं गोयमा एववुच्चइ । ते तेणे अर्थे हेगौतम । इम कह्यु । गोयमाआदि सवाय जीवभावत्वमिया । हेगौतम ! जीव उत्थान यावत् पराक्रम अनन्तरेणी

मन्तर जीवचिन्तासूत्र मुक्त मथ तदाधारत्वेना काशचिन्तासूत्राणि ॥ कतिविहेय मन्ते । इत्यादीनि ॥ तत्र लोकालोकाकाशयो संयत्र मिद-धर्मो दीनांवृत्ति द्रव्याणांमतिमतत्वेन । तद्रूपो सत्वलोक तद्विपरीतस्त्वलोकाख्य मिति ॥ १ ॥ लोगागासेणमित्यादि यत्प्रश्ना लत्र लोकाकाशे ऽ धिकरणे जीवति सम्पूर्णानि जीवद्रव्याणि ॥ जीवदेसाति ॥ जीवस्येव बुद्धिपरिकल्पिता घादयो विभागा ॥ जीवप्पएसाति ॥ तस्येव बुद्धिकृता एव प्रकृष्टादशा: प्रदेशा निर्विभागा भागा इत्यर्थ ॥ अजीवाति ॥ धर्मास्तिकायादय: ननु लोकाकाशे जीवा अजीवा चेत्युक्ते तद्देशप्रदेशा समोका ए

गोयमा ! जीवे सउठाणे आय वसछासिया । कइविहेणन्नते ! आगासे पन्नत्ते ? गोयमा ! दुविहे आगासे प० तं०—लोयागासेय अलोयागासेय, अलोयागासेणन्नते ! किंजीवा, जीवदेसा, जीवपएसा, अजीवा, अजीवदेसा, अजीवपएसा ? गोयमा ! जीवावि जीवदेसावि जीवपदेसावि अजीवावि अजीवदेसावि

चिन्तासूत्रकया । हिव तेवावना आधार आकाशचिन्तासूत्र कहेछे—कइविहणभंते आगासेपन्नत्ते लोयागासेय अलोयागासेय । केतले प्रकारे हेभगवन् ! आकाशकह्या इतिप्रश्न, हेगौतम ! बिहुभेदे आकाश कह्यो ते कहेछे—लोकाकाश १ अलोकाकाश २ तिहां लोकाकाशनो एतलेज धर्मास्तिकायादि द्रव्य जिहांछे ते लोकाकाश, तेहथी विपरीत ते अलोकाकाश कहीये । लोयागासणभंते किंजीवाजीवदेसाजीवपदेसा । लोकाकाशनेविष हेभगवन् ! स्यू जीव इत्यादि प्रश्न तिहां लोकाकाश अधिकरणनेविषे 'जीवत्ति, सपूर्ण जीवद्रव्य जीवस्य जावतोबुद्धि कर प्रकट देय ते प्रदेशनिर्विभाग इत्य र्थ । अजीवा अजीवदेसा अजीवपदेसा । अजीव धर्मास्तिकायादिक ४ अजीवदेसादिक विभाग ५ अजीवनिर्विभाग ६ । गोयमा जीवावि । हेगौत म ! जीव पणिछे १ । जीवदेसावि । जीव देसपणिछे २ । जीवपदेसावि । जीवना प्रदेश पणिछे ३ । अजीवावि । अजीवपणिछे ४ । अजीवदेसावि अजीवनादेश पणिछे ५ । अजीवपदेसावि । अजीवना प्रदेश पणिछे ६ । जेजीवातेनियमाएगिंदिया । जे जीवछे तिये एकेंद्रीजीव । बेइंदिया तेइंदि या चउरिंदिया पंचिंदिया अणिंदिया जेजीवदेसा । बेइंद्रीजीव तेइंद्रीजीव चउरिंद्रीजीव पचेंद्रीजीव सिद्धजीव ते जीवना देश । तेनियमा एगिंदिय

थिद्दचेतना पुद्गलत्वादिति ॥ सवतावसाजिवियोहियेत्यादि ॥ पयवाः प्रज्ञाकृता अविभागाः परिच्छेदा, तेषां भव्या आभिनिबोधिकज्ञानस्य तो ऽनन्ता आभिनिबोधिकज्ञानपर्यवास्तान् समन्वित अनन्ताभिनिबोधिकज्ञानपर्यायात्मकमित्यथ, उपयोग चेतनाविशेष गच्छतीतियाग उत्थानादा वात्मजावेवत्तमान इतिहृदयं अथ पच्चुत्पन्नापारसजाते वर्तमानो जीव आभिनिबोधिकज्ञानानुपयोगं गच्छति तदित्थं मेतावतैव जीवभाव मु पदर्शयतीति वक्तव्य स्या दित्याशङ्कयाह ॥ उवओगेत्यादि ॥ यत उपयोगलक्षणं जीवभाव मुत्थानाद्यात्मभावम्नो पदर्शयतीति वक्तव्य स्या दयति अ

ओहियनाणपज्जवाण एवं सुयनाणपज्जवाणं ओहिनाणपज्जवाणं मणपज्जवनाणपज्जवाणं केवलनाणपज्जवाणं मइअन्नाणपज्जवाणं सुयअन्नाणपज्जवाणं विभंगनाणपज्जवाणं चक्खुदंसणपज्जवाणं अचक्खुदंसणपज्जवाणं ओहिदंसणपज्जवाणं केवलदंसणपज्जवाणं उवओगंगच्छइ , उवओगलक्खणेणं जीवे सेएणठेणं एवं वुच्चइ ,

थे आभिनिबोधिकज्ञानपज्जवाणं। हे गोतम। जीव अनंता मतिज्ञान पर्यायात्मक जे उपयोग चेतना विशेष प्रतें जाइ, इतियाम, उत्थानादिक आत्मभाव नेविषे वर्तें वेहना जीवा भाव कहीय ते पर्याय कहीये। एवंसयनाण पज्जवाण। इम अनंता श्रुतज्ञानना पर्याय। ओहिनाणपज्जवाण। अनंता अव धि ज्ञानना पर्याय। मणपज्जवनाणपज्जवाणं। अनंता मनपर्यव ज्ञानना पर्याय। केवलनाणपज्जवाणं। अनंता केवलज्ञानना पर्याय। मइअन्नाणपज्ज वाण। अनंता मति अज्ञानना पर्याय। सुयअन्नाणपज्जवाण। अनंता श्रुत अज्ञानना पर्याय। विभंगनाणपज्जवाण। अनंता विभंगज्ञानना पर्याय। चक्खुदंसणपज्जवाण। अनंता चक्षुदर्शनना पर्याय। अचक्खुदंसणपज्जवाण। अनंता अचक्षुदर्शनना पर्याय। ओहिदंसणपज्जवाण। अनंता अवधिदर्शन ना पर्याय। केवलदंसणपज्जवाण उवओगंगच्छइ। अनंता केवलदर्शनना पर्याय उपयोग चेतनाभाव प्रतें जाय उत्थानादि आत्मभावने विषे वर्तमा न। उवओगलक्खणेणं जीवे। उपयोग लक्षणजीव चेतनामाट उपयोगलक्षण जीवप्रतें उत्थानादिक आत्मभावेकरी देखाडे एहथ् कहवाय। सेतेणट्ठे णं गोयमा एवंवुच्चइ। ते तयें अर्थें गोतम। इम कहु। आयमाणि उट्ठाणे जाव तमसिया। हे गोतम। जीव उत्थान यावत् कहपाय अनंतरेको

पि अजीवप्पएसावि, इत्येत दयत स्या दयूना स्कंधानाम्बा जीवद्रव्येण प्रहणात् ॥ जेमरूवीतेपंचविहेत्यादि ॥ अन्यत्राप्यरूपिणो दशविधा उक्ता तद्यथा—आकाशास्तिकाय तद्देश तत्प्रदेश येस्येव धर्माधर्मास्तिकायौ समयश्चेति दश इहतु धर्मद्रया काशस्या पारत्येन विवक्षितत्वा तदाये याः सप्त वक्तव्या भवन्ति नव तेन विवक्षिता अरूपमात्रकारणा धतुर्विवक्षिता सामान्य पञ्चेति रूपमित्यादि ॥ धम्मत्थिकायस्यादि ॥ इह जी वाना पुद्गलानाच बहुत्वा देकस्यापि जीवस्य पुद्गलस्यवा स्यान सङ्कोचादितथाविधपरिणामवशा द्रव्यो जीवा पुद्गलाश्च तथा तद्देशा तत्प्र देशाश्च सम्भवन्ती तिकत्वा जीवाश्च जीवदेशाश्च जीवप्रदेशाश्च तथा रूपिद्रव्यापेक्षया अजीवाश्च जीवदेशाश्च जीवप्रदेशाश्चेति सङ्गत मवत्वा व्याप्तये ऽदवतो वस्तुत्रयस्य सद्भावात् धर्मास्तिकायादीतु द्वितयमेव युक्त यतो यदा सम्पूर्णं वस्तु विवक्ष्यते तदा धर्मास्तिकायादी त्युच्यते तदवावि वक्षायान्तु तत्प्रदेशाइति तथा नवस्थितरूपत्वात् तद्देशकल्पना त्वयुक्ता तेषा मनवस्थितरूपत्वादिति यद्यपि च अवस्थितरूपस्य जीवादिदेशा ना मप्यस्ति तथापि तेषा मकारा मये प्रदेश सम्भव मरूपकाकारस्य मितरतु तथास्ति धर्मास्तिकायादे रेकत्वा दसङ्कोचादि धर्मकत्वाद्येति, अत

धी तेपचविहा पन्नत्ता, तजहा—धम्मत्थिकाए नोधम्मत्थिकायस्सदेसे धम्मत्थिकायस्सपदेसा । अधम्मत्थि

कायस्सपदेसा । इहां जीवना पुद्गलना बहुल थको एकजीवने तथा पुद्गलने स्वामवे संकोचादि तथाविध परिणामवशथकी अजीवाजीव तथा पुद्गल तेहना देश तेहनाप्रदेश सभवे इमकरीने जीव १ जीवदेश २ जीवप्रदेश ३ तथा रूपीद्रव्यनो अपचावें अजीव १ अजीवदेश २ अजीव प्रदेश ३ हुवे, ते व्याभ वी एक भाजनने भेदवत वस्तु तीनना सद्भावथी तिम धर्मास्तिकायादिकमेंवियें वलीज भेद हुता जेमाटे विचारे सपूर्णवस्तु विवक्षियें तो धर्मास्तिकाय एहवु कहीयें अने तेहना अंशनी विवक्षाकीजेंतो तेहना प्रदेश इम कहीयें, तेहने अवस्थितरूप थकाथी तेहनीवाजि कल्पिनहीं पवि तेहना देशनो कल्प ना अयुक्त ते देशने वाजि इस्थिपणाथी यद्यपि अनवस्थितरूपपणा जीवादि देशने पविछे तथापि एहवा भाजये भेदेंकरी सभवि प्ररूपणाम् कारण तेहथी अथो थकीइष्ट धर्मास्तिकायादिकने एकपणाथी असकोचादिपणाथी एतलामाटेज धर्मास्तिकायादि देशनिषेधनानेकाजे कहेछे—नोधम्मत्थिकायस्सए

य भवन्ति जीवाद्यव्यतिरिक्तत्वा देशादीनां तता जीवाजीवपदवे कि देशादिपदवेमेति? नैय निरवयवाजीवादयइति मतव्यवच्छेदापस्या दस्येति प्रश्नोत्तरं ॥ गोयमा! जीवाजीत्यादि ॥ अनेन चाद्यप्रश्नयस्य निर्वचन मुक्त अथा त्यस्य प्रश्नयस्य निर्वचनमाह ॥ जेअजीवेत्यादि॥रूवीयत्ति॥ मूर्ताः पुद्गला इत्यथः ॥ अरूवीयत्ति ॥ अमूर्ता धर्मास्तिकायादय इत्यर्थः ॥ खंधत्ति ॥ परमाणुप्रचयात्मकाः स्कंधा स्कंधदेशा तावयो विभागाः स्कंधप्रदेशा तस्यैव निरंशा अंशाः परमाणुपुद्गलाः स्कंधभाव मनापन्ना परमाणवइति तता लोकाकाशो रूपिद्रव्यापेक्षया, अजीवावि अजीवदेसा

अजीअपदेसावि । जेजीवा तेनियमा एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया अणिंदिया, जेजीयदेसा तेनियमा एगिंदियदेसा जाव अणिंदियपदेसा । जेअजीवा ते दुविहा पण्णत्ता, तजहा—रूवी य अरूवीय, जेरूवी ते चउव्विहा पण्णत्ता, तजहा—खंधा खंधदेसा खंधपदेसा परमाणुपोग्गला । जेअरू

देसा। ते निश्चे एकेंद्रियोवना देश इत्यादि। यावत् अनिंद्रियदेसा। यावत् सिद्धनादेशछे। अजीवपदेसातनियमाएगिंदियपदेसा। ते यावत् प्रदेशछे ते निश्चे एकेंद्रीना प्रदेश। यावत् अनिंद्रियपदेसा। यावत् अनिंद्रीना प्रदेश सिद्धना प्रदेशछे। जे अजीवा ते दुविहा पण्णत्ता तजहा रूवीय अरूवीय। जे अजीवछे तेहना बेभेद कह्या तेकहेछे—रूपी अजीव अरूपी अजीव अमूर्त्त धर्मास्तिकायादि द्रव्य। जेरूवी तेचउव्विहा पण्णत्ता तजहा। जेरूपी अजीव ते पुद्गल तेहना चारभेद कह्या तेकहेछे—खंधा खंधदेसा खंधपदेसा परमाणुपोग्गला। परमाणु प्रचयरूप १ द्व्यादिक विभाग २ तेहमांनिविभाग अंश १ अणमाव प्रते अपाम्या ते परमाणु कहीये ॥ एतले आकाशाग्रनविषे एवो प्रश्न थायजे अजीवावि अजीवदेसावि अजीवपदेसावि एपाठ कह्यो पण मे अथवा समने जीवअजीवनोकरी ग्रह्या। जेअरूवी तेसत्तविहा पण्णत्ता तंजहा धर्मास्तिकाए। जे अरूपी ते सात प्रकारना कह्या ते कहेछे—जीवे आगले अरूपी एमप्रकारना कह्या तेविस धर्मास्तिकाय १ तदेश २ तत्प्रदेश ३ एम अधर्मास्तिकाय ३ आकाशास्तिकाय ३ ते एवो तीनभेद सहित आकाश ने आधारपणें कह्या तेहना भाबेद सात भेद करवा पनि वे एवो नवमा अध्यमाय आरयवको ते कहेछे धर्मेति। ...

दुयगुणेहिंति ॥ अनन्तैःस्वपर्यायपरपर्यायरूपै र्गुणै रगुरुलघुस्वभावै रित्यर्थ ॥ सव्वागासे अणंतभागूणत्ति ॥ लोकाकाशस्य लोकाकाशापेक्षया अन
न्तभागरूपत्वादिति यथा समस्तलोकान् धर्मास्तिकायादी प्रमाणती निरूपयन्नाह ॥ धम्मत्थिकायादि ॥ केमहालयत्ति ॥ सुप्रमाणप्रत्ययत्वा किंई
महत् किं महत्त्व यस्य सी किंमहत्त्वः ॥ लोएत्ति ॥ लोको लोकप्रमितत्वात् लोकव्यपदेशा इ तच्यते ॥ पचत्थिकायमज्झलोयमित्यादि ॥ लोके
मात्री यतत इत्या प्रमित मप्युक्त श्लिष्यचितत्वा दतायस्येति लोकमात्रो लोकपरिमाणः सच किञ्चिन्न्यूनोपि व्यवहारतः स्या दित्यत आह ॥ लो
यप्पमाणत्तिलोकप्रमाणो लोकप्रदेशप्रमाणस्ता तत्प्रदेशाना यथा स्वोऽप्याणुरूपेण स्थित इत्येतदेवाह ॥ लोयफुडेत्ति ॥ लोकेन लोकाकाशेन सकलस्य
प्रदेशै स्पृष्टो लोकस्पृष्ट स्तथा लोकमेवच सकलस्वप्रदेशैः स्पृष्ट्वा तिष्ठतीति, पुद्गलास्तिकायो लोक स्पृष्ट्वा तिष्ठती त्यनन्तर सूत्र मिति स्पष्टनाधिक्य

अगरुयलहुयगुणेहिं सजुत्ते सव्वागासे अणंतभागूणे । धम्मत्थिकाएणं भंते ! केमहालए पण्णत्ते ? गोयमा ! लोए लोयमेत्ते लोयप्पमाणे लोयफुडे लोयचेवफुसित्ता णंचिट्ठइ , एवं अहम्मत्थिकाए लोयाकासे , जीव

लोका इत्यादि, तथा एक अजीव द्रव्यना देशछे तेमिज अलोकाकाशने छेमणा लोकालोकरूप आकाशद्रव्यमाश्रय रहीछे। अगुरुय लहुय अणते
अगुरुय लहुय गुणेहि सजुत्ते सव्वागासे अणंतभागूण धम्मत्थिकाएणंभंते केमहालए पण्णत्ते। गुरु लघुपणानो अभावथी अगुरुलघुछे अनंत स्वपर्यायरूप
अगुरुलघु अनंतगुणो सहितछे लोकाकाश अलोकाकाशनो अपेक्षाये अनंतभाग ऊणछे, तेमें जतो अलोकाकाशछे तेमथी सर्वाकाशने अनंतमेभागे ऊं
णो। हिवे धर्मास्तिकायादिक प्रमाणथी कहेछे—धर्मास्तिकाय हेभगवन्। केतलो एकमोटा कह्यो इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा लोए लोयमेत्ते लोयप्पमा
णे। हेगौतम। लोकपचास्तिकायमय तेतलोछे लोकमात्रछे लोकप्रदेश प्रमाणछे। लोयफुडलोयचेव फुसित्ताणंचिट्ठइ। धर्मास्तिकायनाप्रदेश लोकाकाशे व
री सकल स्वप्रदेश स्पर्श्योछे तथा लोकप्रते समस्त स्वप्रदेशे स्पर्शी रह्योछे। एवंअहम्मत्थिकाए। इम अधर्मास्तिकाय पणि कहवो। लोयागासे जीवत्थिकाए
पोग्गलत्थिकाए पचविएक्काभिलावा । इमलोकाकाशपणि जीवास्तिकाय पुद्गलास्तिकाय एपांचेना एकसरीखा आलापा कहवा, पुद्गलास्तिकाय लोक

एव धर्मास्तिकायादिदेशनिषेधायाह ॥ नोधम्मत्थिकायस्सदेसे ॥ तथा ॥ नोअधम्मत्थिकायस्सदेसेत्ति ॥ चूर्णिकारो व्याह अरूपिणो द्रव्या समुदय सद्दं भवति मीसेसापएसेहि वा मीसेसाजणेज्जा नो देसेण तस्स अणवट्ठियपमाणत्तणओ तेण नदसेण निद्देसो आपुव्वदेससद्दा एएसु कओ सो सवि सयगयववहारत्वं परदव्वफुसणादिव्यववहारत्थमिति ॥ तत्र स्वविषये धर्मास्तिकायादिविषय यो देशस्य व्यवहारो–यथा धर्मास्तिकायः स्वप्रदेशो र्दे लोकाकाश व्याप्नोतीत्यादि सदृश तथा परद्रव्येण ऊर्ध्वलोकाकाशादिना यः स्वस्य स्पर्शनादिमतो व्यवहारो यथा ऊर्ध्वलोकाकाशेन धर्मास्तिका यस्य देश स्पृश्यते इत्यादि सदर्थमिति ॥ अद्धासमएत्ति ॥ अद्धाकाल तल्लक्षणः समयः अद्धासमयः सचैकएव वर्तमानसमयलक्षणः अतीताना गतयो रसत्वादिति स्त लोकाकाशवर्तमनुष्यक्षेत्र विषयन यथा लोकाकाशमतिमसय माह ॥ पुच्छातहचेवत्ति ॥ यथा लोकाकाशमते तथाहि– अलोकाकाशेन भंते ! किं जीवा जीवदेसा जीवप्पएसा अजीवा अजीवदेसा अजीवप्पएसत्ति ॥ निर्वचन त्वेषा पदानमपि निषेध तथा ॥ एगेअजीव देसत्ति ॥ अलोकाकाशस्य देशत्व लोकालोकरूपाकाशद्रव्यस्य भागरूपत्वात् ॥ अगुरुयलहुयत्ति ॥ गुरुलघुत्वाभावयत्वात् ॥ अणतेहि अगुरुयल

काए नोअधम्मत्थिकायस्सदेसे अधम्मत्थिकायस्सपदेसा । अद्धासमए । अलोयाकासेण भंते ! किंजीवा ? पुच्छा तहचेव, गोयमा ! नोजीवा जाव नोअजीवप्पदेसा । एगेअजीवदव्वदेसे अगुरुयलहुए अणंतेहि

से नो धर्मास्तिकायप्रदेसेत्ति । ते देश शब्द धर्मास्तिकायादिकने कह्या ते स्वविषयगतव्यवहारनेअर्थे तथा परद्रव्य स्पर्शनादिगतव्यवहारनेअर्थे ति हां स्वविषये देशव्यवहार ते कहे छे—जिम धर्मास्तिकाय असंख्येयप्रदेशी छइ लोकाकाशप्रते व्यापे, तथा परद्रव्य स्पर्शनादिगतव्यवहार कहे छे—जिम ऊर्ध्वलोकाकाशेकरी धर्मास्तिकायनो देशस्पर्शीये तेहने भणी देशकह्यो । अद्धासमए अलोकाकाशेभंतेकिंजीवापुच्छा तहचेव । काल ते समय समय मात्र ते एकहीज वर्तमान समयरूपे अतीत अनागतनेविषे असत्यपणो लोकाकाशप्रतमनुष्यक्षेत्र मध्यवर्ती कह्यो । हिवे अलोकाकाश प्रते पूछे छे—अलोकाकाशने विषे देशमध्य । ए जीव इत्यादि प्रश्न तिमजपूछा । गोयमा नोजीवा जाव नो अजीवप्रदेसा एगेअजीवदव्वदेसे । हे गौतम ! अपनो निषेध कह्यो ना

ड्युगुणेहिति ॥ अनन्तै स्वपर्यायपरपर्यायरूपै र्गुणै रगुरुलघुस्वभावै रित्यर्थ ॥ सव्वागासे अणंतभागूणेति ॥ लोकाकाशस्या लोकाकाशापेक्षया अन न्तभागरूपत्वादिति यथा मध्ये लोकाद् धर्मास्तिकायादी प्रमाणतो निरूपयन्नाह ॥ धम्मत्थिइत्यादि ॥ केमहालएत्ति ॥ सुमहान्महत्त्वमस्या किंदृ शस्य कि महत्त्व यस्या सौ किंमहत्त्व ॥ लोएत्ति ॥ लोको लोकप्रमितत्वात् लोकव्यपदेशा श्रा उच्यते च ॥ पञ्चास्तिकायमयत्वलोकमित्यादि ॥ लोके वासौ धर्मस्त इत्या प्रमित मप्युक्त क्रियावितत्वा रात्रायस्येति लोकमात्रो लोकपरिमाणः सच किञ्चिन्न्यूनोपि व्यवहारतः स्या दित्यत आह ॥ लो यव्वमाणत्तिलोकप्रमाणो लोकप्रदेशप्रमाणस्य तत्प्रदेशाना यथा प्योन्याणुवत्तेन स्थित इत्येतदेवाह ॥ लोयफुडेत्ति ॥ लोकेन लोकाकाशान् सकलस्व प्रदेशैः स्पृष्टो लोकस्पृष्ट तथा लोकमेव सकलस्वप्रदेशै स्पृष्टा तिष्ठतीति, पुद्गलास्तिकायो लोक स्पृष्टा तिष्ठती त्यनन्तर सूत्र मिति स्वलक्षणाधिका

अगरुयलहुयगुणेहिं संजुत्ते सव्वागासे अणंतभागूणे । धम्मत्थिकाएण भंते ! केमहालए पण्णत्ते ? गोयमा ! लोए लोयमेत्ते लोयप्पमाणे लोयफुडे लोयचेवफुसित्ता णं चिट्ठइ , एवं अहम्मत्थिकाए लोयाकासे , जीव

लोका इत्यादि, तथा एव अजीव द्रव्याणा देशाः तेषाम अलोकाकाशस्ये देशमपा स्वातालोकरूप धाराप्रदेशनामाग रूपीते । अगुरुय लहुय अणते अगुरुय लहुय गुणेहि संजुत्ते सव्वागासे अणतभागूणे धम्मत्थिकाएणभंते केमहालए पण्णत्ते । गुरु लघुपर्यायो अभावको अगुरुलघुके अनंत स्वपर्यायरूप अगुरुलघु स्वभावैःकरी सहितहै लोकाकाश अलोकाकाशथकी अपेक्षायें अनंतभाग ऊणहै, तेथें अर्थो अलोकाकाशके देशथी सर्वाकाशने अनंतमेभागे ऊ णा । हिवे धर्मास्तिकायादिक प्रमाणथी कहैं—धर्मास्तिकाय हेभगवन् । केतलो एवमोटा कह्यो इतिप्रश्न उत्तर । गौतमा लोक लोयमेत्ते लोकप्रमा णे । देशीतम । लोकपरमास्तिकायमध्य तेतलाहै लोकमात्रहै लोकप्रदेश प्रमाणछै । लोकफरसीयचेव फुसित्ताणचिट्टइ । धर्मास्तिकायमाप्रदेश लोकाकाशे स रो सकल स्वप्रदेश स्पर्शे तथा लोकप्रतें समस्त स्वप्रदेशे फर्शी रह्योछै । एवमधम्मत्थिकाए । इम अधर्मास्तिकाय पणि कहवो । लोयागासे लोयत्थिकाए पासत्थिकाए एवविएयाभिलापा । इमलोकाकाशपणि लोकास्तिकाय पुद्गलास्तिकाय एपांचेहिमा एकसरीखा आलावा कहवा, पुद्गलास्तिकाय लोक

एव धर्मास्तिकायादिदेशमित्येतावाह ॥ नोधम्मत्थिकायस्सदेसे ॥ तथा ॥ नोअधम्मत्थिकायस्सदेसेत्ति ॥ चूर्णिकारो व्याह अरूविणो दव्वा समुदय सद्दव भवति जीवेसापएसहि वा जीवेसाजवेक्का नो दवेव तस्स पवयठियपमाणत्तपछे तेव नवसेव निद्देसो आपुनदेससद्दा एएसु कछ सो सवि सपगयववहारत्थ परदव्वपुसवादिमयववहारस्सभवति ॥ तत्र स्वविषये धर्मास्तिकायादिविषय यो देशस्य व्यवहारो—यथा धर्मास्तिकायः स्वसंख्येनो द लोकाकाशं व्याप्नोती त्यादि सदय तथा परद्रव्येण ऊर्ध्वलोकाकाशादिना यः स्वस्य स्पर्शभावितो व्यवहारो यथा ऊर्ध्वलोकाकाशेन धर्मास्तिका यस्य देशः स्पृश्यते इत्यादि सदर्पमिति ॥ अद्धासमएत्ति ॥ अद्धाकाल सलक्षणः समयः अद्धासमयः सचैकस्य वर्तमानसमयलक्षणः अतीतानाग तयो रसत्त्वादिति तत्र लोकाकाशमतमावयदूस निवचन यथा लोकाकाशेप्रतिप्रश्नय व्याह ॥ पुच्छातहचेवत्ति ॥ यथा लोकाकाशमस्ते तथाऽलो- कलोकाकाशेव भंत ! किं जीवा जीवदेसा जीवप्पएसा अजीवा अजीवदेसा अजीवप्पएसत्ति ॥ निर्वचन त्वेषा पञ्चानामपि निषेध स्तथा ॥ एगेअजीव दवदसत्ति ॥ अलोकाकाशस्य देशत्वं लोकालोकरूपाकाशद्रव्यस्य भागरूपत्वात् ॥ अगुरुलहुएत्ति ॥ गुरुलघुत्वाव्यपदेशत्वात् ॥ अनन्तहि अगुरुलघु

काए नोश्रधम्मत्थिकायस्सदेसे श्रधम्मत्थिकायस्सपदेसा । श्रद्धासमए । श्रलोयाकासेणं भंते ! किंजीवा ? पुच्छा तहचेव, गोयमा ! नोजीवा जाव नोश्रजीवप्पदेसा । एगेश्रजीवदव्वदेसे श्रगुरुयलहुए श्रणंतेहिं

से नो धर्मास्तिकायप्रदेशेति । ते देश मध्य धर्मास्तिकायास्तिकने वध्मा ते स्वविषयमतव्यवहारनेपर्यै तथा परद्रव्य अधर्मास्तिगतव्यवहारनेपर्यै ति हा स्वविषयेवे देशव्यवहार ते कहेछे—जिम धर्मास्तिकाय अद्वेरमेकरी कछ लोकाकाशप्रतै व्यापे, तथा परद्रव्य अधर्मास्तिगतव्यवहार कहेछे—जिम ऊर्ध्वलोकाकाशेकरी धर्मास्तिकायनो देशपर्यासि तेहने पर्व देशवर्यो । अद्धासमए अलोयागासेणंभंतेकिंजीवापुच्छा तहचेव । काल ते एकज समय वर्त ते एकहीज वर्तमान समयरूपे अतीत अनागतनेविषे असत्वपणो लोकाकाशमतप्रश्नो उत्तर कह्यो । हिवे अलोकाकाश प्रते पूछेछे—अलोकाकाशने विषे देशप्रश्न ! पूर्वोक्त इत्यादि प्रश्न तिमजपूछा । गोयमा नोजीवा जाव नो अजीवप्पएसा एगेअजीवदव्वदेसे । हे गौतम ! अरूपी निषेध कह्यो ना

कुयगुरुहिंति ॥ अनन्तागुरुलघुपर्यायपर्यायकत्वे गुणे रगुरुलघुकगुणायै रित्यर्थ ॥ सव्वागासे अणन्तभागूणत्ति ॥ लोकाकाशस्या लोकाकाशापेक्षया अन न्तभागरूपत्वादिति अथा अन्तरोक्तानाम् धर्मास्तिकायादी अप्रमाणतो निरूपयन्नाह ॥ धम्मत्थिहस्यादि ॥ केमहालएत्ति ॥ बृहत्भावप्रत्ययस्या किंमह त्त्व कि महत्त्व यस्या सौ किमहत्त्वः ॥ लोएत्ति ॥ लोको लोकप्रमितत्वात् लोकव्यपदेशा द्वा ३ उच्यते च ॥ पञ्चास्तिकायमयमलोकमित्यादि ॥ लोके मात्रो यतत इत्या प्रमित मप्युक्त मित्यविततत्वा द्वायामस्येति लोकमात्रो लोकपरिमाणः सच किञ्चिन्न्यूनोपि व्यवहारतः स्या दित्यत आह ॥ लो यप्पमाणत्तिलोकप्रमाणो लोकप्रदेशप्रमाणत्वा तत्प्रदेशानां यथा स्वोस्थानुक्रमेन स्थित इत्येतदेवाह ॥ लोयफुडेत्ति ॥ लोकेन लोकाकाशन सकलस्व प्रदेशै स्पृष्टो लोकस्पृष्ट स्तथा लोकमेवच सकलस्वप्रदेशैः स्पृष्टातिष्ठतीति पुद्गलास्तिकायो लोक स्पृष्टा तिष्ठती त्यनन्तर सूत्र मिति स्वमनाधिका

लोगागासे अणन्तभागूणे। धम्मत्थिकाएणं भंते! केमहालए पण्णत्ते? गोयमा! लोए लोयमेत्ते लोयप्पमाणे लोयफुडे लोयचेवफुसित्ता णंचिट्ठइ, एवं अहम्मत्थिकाए लोयाकासे, जीव

लोका इत्यादि, तथा एक अजीव द्रव्यमा देशथी तेविम अलोकाकाशने देशथकी लोकालोकरूप आकाशद्रव्यनाभाग कह्योछै। अगुरुय लघुव अनंते अगुरुय लघुय गुणथि सहित सव्वागासे अणन्तभागूण अत्थिकाएणंभंते केमहालए पण्णत्ते। हुव बहुपणाथी अभावथी अगुरुलघुछै अनंत अपर्यायरूप अगुरुलघु पर्यायवंतो सहितछै लोकाकाश अलोकाकाशनी अपेक्षायें अनंतभाग ऊणछै, तेवें थको अलोकाकाशछै तेभणी सर्वाकाशने अनंतमभागे ऊं णा। हिवे धर्मास्तिकायादिक प्रमाणथी कहेछै—धर्मास्तिकाय केमहालए। केतलो एकमोटो कह्यो इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा लोय लोयमेत्ते लोयप्पमा णे। हेगौतम। धर्मास्तिकायमय तेतलाछै लोकमात्रछै लोकप्रदेश प्रमाणछै। लोयफडलोयचेव फुसित्ताणंचिट्ठइ। धर्मास्तिकायनाप्रदेश लोकाकाशे अ ने अलग अप्रदेश स्पर्शछै तथा लोकमध्ये समस्त अप्रदेशे स्पर्शी रह्योछै। एवंअधम्मत्थिकाए। इम अधर्मास्तिकाय पणि कहवो। लोयागासे जीवत्थिकाए पोग्गलत्थिकाए पंचवि एकाभिलापा। इमलोकाकाशपणि जीवास्तिकाय पुद्गलास्तिकाय एपांचेइना एकसरीखा आलावा कहवा, पुद्गलास्तिकाय लोक

एव धम्मास्तिकायादिदेशनिषेधापाद ॥ नोधम्मत्थिकायस्सदेसे ॥ तथा ॥ नोधम्मत्थिकायस्सदेसेत्ति ॥ चूर्णिकारो व्याह अहवियो दया समुदय सद्दं भवति नीसेसापएसेहि वा नीसेसाप्पवेसा नो दसेव तस्स भवसत्थियमाधसच्छ तेव मदसेव निद्देसो नोपुव्वदेससद्दो एयस्स कण्ठ सो सवि समगयववहारत्वं परसपुरुसादिगयववहारत्वमेवेति ॥ तत्र स्वविषये धर्मास्तिकायादिविषय यो देशस्य व्यवहारो—यथा धर्मास्तिकाय स्वदेशनो ह लोकाकाश व्याप्नोती त्यादि सदर्थ तथा परद्रव्येण अनुलोकाकाशादिना यः स्वस्य स्पर्शनादिगतो व्यवहारो यथा अनुलोकाकाशेन धर्मास्तिका यस्य देशः स्पृश्यते इत्यादि सदर्थमिति ॥ अद्धासमएत्ति ॥ अद्धाकाल स्वरूपः समयः अद्धो अद्धासमय सर्वैकरव वर्तमानसमयलक्षण, अतीतानाम तयो रसत्वादिति स्त लोकाकाशमतमप्रदेश नियम यथा लोकाकाशमतिप्रश्न स्याद ॥ पुच्छातहचेवत्ति ॥ यथा लोकाकाशप्रश्ने तथाहि— अलोकाकाशस्य मत। कि जीवा जीवदेसा जीवप्पएसा अजीवा अजीवदेसा अजीवप्पएसत्ति ॥ निर्वचन त्वेषां षण्णामपि निषध तथा ॥ एगेअजीव दव्वदेसत्ति ॥ अलोकाकाशस्य हसत्व लोकालोकरूपाकाशद्रव्यस्य भागरूपत्वात् ॥ अगुरुयलहुयत्ति ॥ गुरुलघुत्वाव्यपदेश्यत्वात् ॥ अवसाहि अगुरुयल

काए नोअधम्मत्थिकायस्सदेसे अधम्मत्थिकायस्सपदेसा। अद्धासमए। अलोयाकासेण भंते! किंजीवा? पुच्छा तहचेव, गोयमा! नोजीवा जाव नोअजीवप्पदेसा। एगेअजीवदव्वदेसे अगुरुयलहुए अणंतेहि

से नो अधम्मत्थिकायप्रदेसेत्ति। ते देय अत्र धर्मास्तिकायादिकने कह्या, ते स्वविषयगतव्यवहारनेअर्थे तथा परद्रव्य आगमादिगतव्यवहारनेअर्थे ति हा स्वविषयेवे देशव्यवहार ते कहेछे—जिम धर्मास्तिकाय असंख्यदेशी सर्व लोकाकाशप्रते व्यापे, तथा परद्रव्य आगमादिगतव्यवहार कहेछे—जिम अलोकाकाशेकरी धर्मास्तिकायनो देशफर्शे तेहने अर्थे देशकह्या। अद्धासमए अलोयागासेणंभंतेकिंजीवापुच्छा तहचेव। जाव ते काल समय एव ते एकहीज वर्तमान समयरूपे अतीत अनागतनेविषे अवस्थपणो लोकाकाशगतमप्रमो उत्तर कह्यो। हिवे अलोकाकाश प्रतें पूछेछे—अलोकाकाशने विषे हेभगवन्! स्यूंजीव इत्यादि प्रश्न तिमजपूछा। गोयमा नोजीवा जाव नो अजीवपदेसा एगेअजीवदव्वदेसे। हे गोतम! तएणी निषेध करवो ना

सखेज्जइभागं फुसइ, असंखेज्जइभागं फुसइ । णोसंखेज्जेभागे फुसइ, णोअसंखेज्जेभागे फुसइ, नोसव्वं फुसइ । इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणोदही धम्मत्थिकायस्स किं संखेज्जइभागं फुसइ ? गोयमा ! जहा रयणप्पभाए तहा घणोदहिघणवायतणुवायावि । इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए उवासंतरे धम्मत्थिकायस्स किं संखेज्जइभागं फुसइ, असंखेज्जइभागं फुसइ पुच्छा ? गोयमा ! संखेज्जइभागं फुसइ णोअसंखेज्जइभागं फुसइ नोसंखेज्जे नोअसंखेज्जे नोसव्वं फुसइ । उवासंतराइं सव्वाइं जहा रयणप्पभाए पुढवीए वत्तव्वया भणिया एवं जाव अहे सत्तमाए जंबूद्दीवाइयादीया लवणसमुद्दाइया समुद्दा एवं

असंखेज्जइभागफुसइ । असंख्यातमो भागफरसे एतलाज असंख्येयत्व आकाश छिद्र माटे । नोसंखे नोअसंखे नोसव्वफुसइ । संख्यातमाभागनेविषे स्पर्शे नही असंख्यातमाभागनेविषे स्पर्शेनही सर्व स्पर्शेनही ववोपूर्ववत्—इमोसेणभंतेरयणप्पभाएपुढवीएघणोदही । एह हे भगवन् ! रत्नप्रभा पृथिवीनो घनोदधि । धम्मत्थिकायस्स किंसंखेज्जभागेफुसइ । धर्मास्तिकायने स्यूं संख्यातमाभाग फरसे पृच्छा । जहारयणप्पभातहाघणोदहि घणवाय तणुवायावि । जिम रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे कह्यो तिम घनोदधि १ घनवात २ तनुवात ३ एतीन कहवा, एतले प्रत्येके असंख्यातमेभागे फरसे । इमोसेणंभंतेरयणप्पभाएपुढवीएउवासंतरे । एह हेभगवन् ! रत्नप्रभा पृथिवीना आकाशांतर ते । धम्मत्थिकायस्स किंसंखेज्जइभाग फुसइ । धर्मास्तिकायनो स्यूं संख्यातमोभाग फरसे इत्यादि । असंखेज्जइभागफुसइपच्छा । असंख्यातमो भाग फरसे इत्यादि पृच्छा । गोयमा संखेज्जइभाग फुसइ । हे गौतम । संख्यातमें भागे फरसे ए असंख्यात योजनने तेमाटे । णोअसंखेज्जइभागफुसइ । असंख्यातमो भाग फरसेनही । णोसंखेज्जे णोअसंखेज्जे णोसव्वफुसइ । संख्यातमोभागनेविषे फरसेनही असंख्यातमाभागनेविषे फरसेनही सर्व फरसेनही । उवासंतराइसव्वाइ । आकाशांतर सर्व । जहारयणप्पभाए पुढवीए वत्तव्वया भाणियव्वा एवंजावअहे सत्तमाए । जिम रत्नप्रभा पृथिवीना आकाशांतर कह्या, तिम सातेंए नरक पृथिवीना कहवा, एतले संख्यातमोभाग फरसे इत्यादि, इम यावत् नीचे सा

रा धर्मोलोकादीनां धर्मास्तिकायादिस्पर्शना दर्शयन्निदमाह ॥ अहेलोएणमित्यादि ॥ सातिरेगमद्धति ॥ लोकव्यापकत्वात् धर्मास्तिकायस्य सातिरेकसप्तरज्जुप्रमाणत्वाच्चाधोलोकस्य ॥ असंखेज्जइभागंति ॥ असंख्यातयोजनप्रमाणस्य धर्मास्तिकायस्याष्टादशयोजनशतप्रमाण स्तिर्यग्लोको संख्यातजागवर्तीति तस्य स तदसंख्येयभागं स्पृशतीति ॥ देसोणमद्धति ॥ देशोनसप्तरज्जुप्रमाणत्वाद् ऊर्ध्वलोकस्येति ॥ इमाण भंते ! इत्यादि ॥ इह प्रतिप

त्थिकाए पोग्गलत्थिकाए क्राजिलाया । अहोलोएण नंते ! धम्मत्थिकायस्स केवइय फुसइ, गोयमा ! सातिरेग अद्द फुसइ । तिरियलोएण नंते ! पुच्छा ? गोयमा ! असंखेज्जइजागफुसइ । उद्दलोएण नंते ! पुच्छा ? गोयमा ! देसूण अद्द फुसइ । इमाण नंते ! रयणप्पजाण पुढवी धम्मत्थिकायस्स किसंखेज्जइ नाग फुसइ, असंखेज्जइनाग फुसइ, संखेज्जेनाग फुसइ, असंखेज्जेनाग फुसइ, सव्वफुसइ ? गोयमा ! णो

मतें धर्मभेदने एतलो अनंतरे कह्युं तेमना विचारवो अधोलोकादिकने धर्मास्तिकायादिगत स्पर्शना देखाडेछे—अधोलोकएणभंते धम्मत्थिकायस्स केवइयं फुसति । अधोलोक हे भगवन् ! धर्मास्तिकायने केतलु स्पर्शे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सातिरेगअद्धफुसइ । हे गोतम ! धर्मास्तिकाय लोकव्यापकछे अने अधोलोक साधिक सातराज प्रमाणछे तेमनो साधिक अर्धभाग स्पर्शे । तिरियलोएणभंते पुच्छा । तिर्यग्लोक हे भगवन् ! केतलो फरसे इम पूछ्युं । गोयमा असंखेज्जभागफुसइ । हे गोतम ! धर्मास्तिकाय असंख्याता योजन प्रमाणछे अने तीर्छोलोक १८ सो योजनछे तिवारे असंख्यातमे भागे फरसे । उड्ढलोएण भंतेपुच्छा । ऊर्ध्वलोक हे भगवन् ! केतला फरसे इम पूछ्यो । गोयमा देसूणअद्धफुसइ । हे गोतम ! देशेउणा सातराजप्रमाण ऊर्ध्वलोकछे तेमाटे देशउण अर्ध फरसे । इमाणभंते रयणप्पभापुढवीधम्मत्थिकायस्स किंसंखेज्जइभागफुसइ । एह ज आगलाकारे, रत्नप्रभानामा पृथिवी धर्मास्तिकायना शुं संख्यातमा भाग फरसे । असंखेज्जइभागफुसइ संखेज्जेभागेफुसइ । अथवा असंख्यातमाभाग फरसे अथवा संख्यातमाभागभेविषे फरसे अथवा । असंखेज्जेभागेफुसइ । असंख्यातमा भागनेविषे फरसे अथवा । सव्वफुसइ । सर्व फरसे इतिप्रश्न उत्तर गोयमा णोअसंखेज्जइभागंफुसइ । हे गोतम ! नथी संख्यातमाभाग फरसे ।

सखेज्जइभाग फुसइ , असखेज्जइभाग फुसइ । णोसखेज्जेभाग फुसइ , णोअसखेज्जेभाग फुसइ , नोसव्व फुसइ । इमीसेण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणोदही धम्मास्थिकायस्स कि सखेज्जइभाग फुसइ ? गो यमा ! जहा रयणप्पभाए तहा घणोदहिघणवायतणुवायावि । इमीसेण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए उवा सतरे धम्मास्थिकायस्स कि सखेज्जइभाग फुसइ, असखेज्जइभाग फुसइ पुच्छा ? गोयमा ! सखेज्जइभाग फुसइ णोअसखेज्जइभाग फुसइ नोसखेज्जे नोअसखेज्जे नोसव्व फुसइ । उवासतराइ सव्वाइ जहा रयण प्पभाए पुढवीए वत्तव्वया भणिया एवं जाव अहे सत्तमाए जबूद्दीवाइयादीवा लवणसमुद्दाइया समुद्दा एव

असखेज्जइभागफुसइ । असख्यातमा भागफरसे एतलाथ धर्मास्तिकाय मोटा छिद माटे । णोसखे णोअसखे णोसव्वफुसइ । सख्यातमाभागनेविषे फर्से नही असख्यातमाभागनेविषे फर्सेनही सव फर्सेनही नथीपूछवे—इमीसेणभतेरयणप्पभाएपुढवीएघणोदही । ए हे भगवन् ! रत्नप्रभा पृथिवीनो घनोद धि । धर्मास्तिकायस्स किसंखेज्जभागफुसइ । धर्मास्तिकायने स्यू सख्यातमाभाग फरसे पृच्छा । जहारयणप्पभातहाघणोदहि घणवाय तणुवायावि । जिम रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे कह्यो तिम घनोदधि १ घनवात २ तनुवात ३ एतीन कहवा, एतले प्रत्येके असख्यातमेभागे फरसे । इमीसेणभतेरयणप्पभाएपु ढवीएउवासतरे । ए हे भगवन् ! रत्नप्रभा पृथिवीना आकाशांतर ते । धर्मास्तिकायस्स किंसखेज्जइभाग फुसइ । धर्मास्तिकायना स्यू सख्यातमोभाग फर से किंवा । असंखेज्जइभागफुसइपृच्छा । असंख्यातमो भाग फरसे इत्यादि पूछ्यू । गोयमा सखेज्जइभाग फुसइ । हे गोतम । सख्यातमे भागे फरसे ए असं ख्यात योजनछे तेमाटे । णोअसखेज्जइभागफुसइ । असख्यातमो भाग फरसेनही । णोसखेज्जे णोअसखेज्जे णोसव्वफुसइ । सख्यातमोभागनेविषे फरसेनही असख्यातमाभागनेविषे फरसेनही सर्व फरसेनही । उवासतराइसव्वाइ । आकाशांतर सर्व । जहारयणप्पभाए पुढवीए वत्तव्वया भाणियव्वा एवजावअहे सत्तमाए । जिम रत्नप्रभा पृथिवीना आकाशांतर कह्या, तिम सातेई नरक पृथिवीना कहवा, एतले सख्यातमोभाग फरसे इत्यादि, इम यावत् नीचे सा

रा इयोसोकादीनां धर्मास्तिकायादिगतां स्पर्शनां दर्शयितुमाह ॥ अधेलोएणमित्यादि ॥ सातिरेगमद्धत्ति ॥ लोकव्यापकत्वा दुधर्मास्तिकायस्य सा तिरेकसप्तरज्जुप्रमाणत्वा दधोलोकस्य ॥ असंखेज्जइभागत्ति ॥ असंख्यातयोजनप्रमाणस्य धर्मास्तिकायस्या ष्टादशयोजनशतप्रमाण स्तिर्यग्लोको भागा स्तनावर्तीति तस्य सा असंख्येयभागं स्पृशतीति ॥ देसोणमद्धंति ॥ देशोनसप्तरज्जुप्रमाणत्वा दूर्द्धलोकस्येति ॥ इमाण भंते । इत्यादि ॥ इह प्रतिप

स्थिकाए पोग्गलत्थिकाए ख्वाजिलाया । अहोलोएण भंते ! धम्मत्थिकायस्स केवइय फुसइ , गोयमा ! सातिरेग अद्ध फुसइ । तिरियलोएण भंते ! पुच्छा ? गोयमा ! असंखेज्जइभागफुसइ । उड्ढलोएण भंते ! पुच्छा ? गोयमा ! देसूण अद्ध फुसइ । इमाण भंते ! रयणप्पभाण पुढवी धम्मत्थिकायस्स किंसंखेज्जइ भाग फुसइ , असंखेज्जइभाग फुसइ , संखेज्जेभाग फुसइ , असंखेज्जेभाग फुसइ , सव्वंफुसइ ? गोयमा ! णो

भंते धर्मास्तिकाय एटलो धर्मांतरे वस्तु तेमनमां विचारणो यथाकाशादिकने धर्मास्तिकायादिगत स्पर्शना देखाडेछे—अधोलोकसंभंतेधम्मत्थिकायस्सकेवइयं फर्शति । अधोलोक हेभगवन् ! धर्मास्तिकायने केतलुं भागे स्पर्श्य फरसे । गोयमा सातिरेगअद्धफुसइ । हेगौतम ! धर्मास्तिकाय लोकव्यापकछे अने अ धोलोकसाधिक सातराज प्रमाणछे तेभणी साधिक अर्द्धभागे । तिरियलोएणंभंते पुच्छा । तिर्यग्लोक हेभगवन् ! केतला फरसे इम पूछ्यु । गोयमा असं खेज्जइभागफुसइ । हेगौतम ! धर्मास्तिकाय असंख्याता योजन प्रमाणछे अने लोकालोक १८०० योजनछे तिवारे असंख्यातमे भागे फरसे । उड्ढलोएण भंतेपुच्छा । ऊर्ध्वलोक हेभगवन् ! केतला फरसे इम पूछ्या । गोयमादेसूणंअद्धफुसइ । हेगौतम ! ऊर्ध्वलोक सातराजप्रमाण ऊणोछे तेमाटे देशोन अ र्द्धफरसे । इमाणभंतेरयणप्पभापुढवीधम्मत्थिकायस्सकिंसंखेज्जइभागफुसइ । एह वली आकाशकारे, रत्नप्रभानामा पृथिवी धर्मास्तिकायना स्युं संख्यातमा भाग फरसे । असंखेज्जइभागफुसइ असंखेज्जेभागेफुसइ । अथवा असंख्यातमाभाग फरसे अथवा संख्यातमाभागभेदविषे फरसे अथवा । असंखेज्जेभागेफुसइ । असंख्यातमा भागभेदविषे फरसे अथवा । सव्वंफुसइ । सर्व फरसे इतिप्रश्न उत्तर गोयमा णोसंखेज्जइभागफुसइ । हेगौतम ! नथी संख्यातमाभाग फरसे ।

संखेज्जइभागं फुसइ, असंखेज्जइभागं फुसइ। णोसंखेज्जेभागे फुसइ, णोअसंखेज्जेभागे फुसइ, नोसव्वं फुसइ। इमीसेणं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए घणोदही धम्मत्थिकायस्स किं संखेज्जइभागं फुसइ? गोयमा! जहा रयणप्पभाए तहा घणोदहिघणवायतणुवायावि। इमीसेणं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए उवासंतरे धम्मत्थिकायस्स किं संखेज्जइभागं फुसइ, असंखेज्जइभागं फुसइ पुच्छा? गोयमा! संखेज्जइभागं फुसइ णोअसंखेज्जइभागं फुसइ नोसंखेज्जे नोअसंखेज्जे नोसव्वं फुसइ। उवासंतराइं सव्वाइं जहा रयणप्पभाए पुढवीए वत्तव्वया भणिया एवं जाव अहे सत्तमाए जंबूद्दीवाइयादीया लवणसमुद्दाइया समुद्दा एवं

असंखेज्जइभागफुसइ। असंख्यातमा भागफरसे एतलाथ असोसफरस वाजन पिण माटे। णासंखे णोअसंखे णोसव्वफुसइ। संख्यातमाभागनेविषे स्पर्शं नही असंख्यातमाभागनेविषे स्पर्शेनही सर्व स्पर्शेनही पूछवे—इमीसेणंभंतेरयणप्पभाएपुढवीएघणोदही। एह हे भगवन्! रत्नप्रभा पृथिवीनो घनोदधि। धम्मत्थिकायस्स किंसंखेज्जेभागेफुसइ। धर्मास्तिकायने स्यूं संख्यातमाभाग फरसे इत्यादि। जहारयणप्पभातहाघणोदहि घणवाय तणुवायावि। जिम रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे कह्यो तिम घनोदधि १ घनवात २ तनुवात ३ एतीन कहवा, एतले प्रत्येके असंख्यातमेभागे फरसे। इमीसेणभंतेरयणप्पभाएपुढवीएउवासंतरे। एह हे भगवन्! रत्नप्रभा पृथिवीना आकाशांतर ते। धम्मत्थिकायस्स किंसंखेज्जइभाग फुसइ। धर्मास्तिकायनो स्यूं संख्यातमाभाग फरसे किंवा। असंखेज्जइभागफुसइपच्छा। असंख्यातमो भाग फरसे इत्यादि पूछ्यूं। गोयमा संखेज्जइभाग फुसइ। हे गोतम! संख्यातमे भागे फरसे ए असंख्यात योजनने तेमाटे। णोअसंखेज्जइभागेफुसइ। असंख्यातमो भाग फरसेनही। णासंखेज्जे णोअसंखेज्जे णासव्वफुसइ। संख्यातमाभागनेविषे फरसेनही असंख्यातमाभागनेविषे फरसेनही सर्व फरसेनही। उवासंतराइसव्वाइ। आकाशांतर सर्व। जहारयणप्पभाए पुढवीए वत्तव्वया भाणियव्वा एवंजावअहे सत्तमाए। जिम रत्नप्रभा पृथिवीना आकाशांतर कह्या, तिम सातेई नरक पृथिवीना कहवा, एतले संख्यातमोभाग फरसे इत्यादि, इम यावत् नीचे सा

पिंयिपन्नमूत्राणि, देवलोकसूत्राणि द्वादश' ग्रैवेयकसूत्राणि त्रीणि, अनुत्तरेषत्प्राग्भारासूत्रे द्वे एव द्वीपसमुद्रसूत्राणि' धर्मास्तिकायस्य किं सङ्ख्ये यं भागं स्पृशन्ती त्यादिनिलापेना पञ्चाशि, तथा अवकाशान्तराणि सङ्ख्येयभाग स्पृशन्ति शेषा स्त्वसङ्ख्येयभागमिति नियम, एतान्येव सूत्रा ण्य धर्मास्तिकायलोकाकाशयोरिति, एतो स्सार्थसङ्ग्रहगाथा प्रागेवोक्तेति ॥ इतिद्वितीयशतदशमः ॥ १० ॥ समाप्तद्वितीयशत ॥ २ ॥

सोहम्मेकप्पे जाव इसिपब्भाए पुढवीए तेसब्बेवि असंखेज्जइ भाग फुसइ । सेसा पडिसेहेयव्वा । एवं अधम्मत्थिकाए एवं लोयागासेवि ॥ गाहा ॥ पुढवोदहीघणतणू कप्पागेवेज्जणुत्तरासिद्धी संखेज्जइभागंतरे सुसेसाअसंखेज्जा ॥ बितियस्सदसमो उद्देसोसम्मत्तो ॥ १० ॥ बितियसय सम्मत्त ॥ २ ॥

तमीनरक पृथिवीतांइ सर्वकहना । जम्बूद्वीपादिकद्वीपा । जम्बूदीप आदिदेई असंख्याताद्वीप । लवणसमुद्रादयासमुद्रा । लवण समुद्र आदिदेई असंख्या ता समुद्र । पवनासमेकस्पे । इम सोधम आदिदेइ बार देवलोक नव ग्रैवेयक पंच अनुत्तरविमान । ईषत्प्राग्भारापृथ्वीए । यावत् सिद्धि शिला तांई । तेसर्वेविअसंख्यातभाग फरसइ । ते सगलांई धर्मास्तिकायना असंख्यातमोभाग फरसइ । सेसापडिसेहियव्वा । शेष असंख्यातमोभाग आदिदेइ बारभाना प्रतिषेध करवा । एवअधम्मत्थिकाए । इम अधर्मास्तिकायनो पणि आलावा कहवो । एवलोयागासेवि । इम लोकाकाशनो पणि आलावा कहवो । गाथा । संग्रहगाथा कहिहै—पुढवीउदहिघणतणू कप्पागेवेज्जणुत्तरासिद्धी संखेज्जइभागंतरेसुसेसाअसंखेज्जा ॥ १ ॥ सात पृथिवी सात घनोदधि सात घनवात सात तनुवात । बार देवलोक नव ग्रैवेयक पंच अनुत्तरविमान सिद्धशिला एसर्वमांहे जे आकाशांतर ते धर्मास्तिकायादिकनो असंख्यातमोभाग फरसे गाथा अक्षरार्थकह्या, पृथिवी १ घनोदधि २ घनवात ३ तनुवात ४ आकाशांतर ५ तिवारे सातेइ पृथिवीमा ३५ सूत्रथया बा रदेवलोकना १२ सूत्र नव ग्रैवेयकना १ सूत्र पंचअनुत्तरना १ सूत्र ईषत्प्राग्भाराना १ सूत्र इम ५२ सूत्र थया ते धर्मास्तिकायना असंख्यातमोभाग फरसे इमादि आलावेकरी कहवा, तिहां आकाशांतर संख्यातमेंभागे फरसे बीजा सर्व असंख्यातमेंभागे फरसे । [illegible] सम्मत्ता । एव बी जा शतकनो दसमो उद्देसो संपूर्णो थयो ॥ १ ॥ [illegible] । एबीजा शतक संपूर्ण हुवा ॥ २ ॥

चिविपन्नसूत्राणि, देवलोकसूत्राणि द्वादश ग्रैवेयकसूत्राणि त्रीणि, अनुत्तरेषत्प्राग्भारासूत्रे द्वे, एवं द्विपञ्चाशत्सूत्राणि धर्मास्तिकायस्य किं सङ्ख्येयं भागं स्पृशन्ती त्यादिजिज्ञासायां वसेयानि, तथा अवकाशान्तराणि सङ्ख्येयभागं स्पृशन्ति शेषा स्त्वसङ्ख्येयभागमिति निर्वचन, एतान्येव सूत्रा ण्य धर्मास्तिकायलोकाकाशयोरिति एषो व्यायसङ्ग्रहगाथा ज्ञातितार्थैव ॥ इतिद्वितीयशतदशमः ॥ १० ॥ समाप्तञ्चद्वितीयशतं ॥ २ ॥

सोहम्मेकप्पे जाय इसिपब्भाए पुढवीए तसव्वेवि असखेज्जइ भाग फुसइ । सेसा पडिसेहेयव्वा । एव अध म्मत्थिकाए एवं लोयागासेवि ॥ गाहा ॥ पुढवोदहीघणतणू कप्पागेवेज्जाणुत्तरासिद्धी सखेज्जइभागश्च तरे सुसेसाअसखेज्जा ॥ वितियस्सदसमो उद्देसोसम्मत्तो ॥ १० ॥ वितियसय सम्मत्त ॥ २ ॥

तयोनरक पृथिवीतार्ह सर्वकहवा । जम्बूदोपादिदोपा । जम्बूदोप आदिदेह असख्यातादोप । लवणसमुद्रादयासमुद्रा । लवण समुद्र आदिदेह असख्याता समुद्र । एवसाहम्मेकप्पे । इम सोधर्म आदिदेइ बार देवलोक नव ग्रैवेयक पच अनुत्तरविमान । आवइसिप्पभारापुढवीए । यावत् सिद्ध शिला ताइ । तिसव्वेविअसखेज्जइभाग फुसइ । ते सघलाइ धर्मास्तिकायना असख्यातमाभाग फरसहे । सेसापडिसेहेयव्वा । शेष असख्यातमाभाग आदिदेइ चारभाया प्रतिषेध करवा । एवमहम्मत्थिकाए । इम अधर्मास्तिकायनो पणि आलावा कहवो । एवलोयागासेवि । इम लोकाकाशनो पणि आलाव कहवो । गाहा । सग्रहगाथा कहेहे—पुढवोउदहिघणतणू कप्पागेवेज्जणुत्तरासिद्धी सखेज्जइभागश्च तरेससेसाअसखेज्जा ॥ १ ॥ सात पृथिवी सात घनोदधि सात घनवात सात तनुवात । बार देवलोक नव ग्रैवेयक पच अनुत्तरविमान सिद्धशिला एसर्वमाहि जे आकाशांतर ते धर्मास्तिकायादिक ना सख्यातमोभाग फरसे माटे पचसूत्रकहवा, पृथिवी १ घनोदधि २ घनवात ३ तनुवात ४ आकाशांतर ५ तिवारे सातेइ पृथिवीना ३५ सूत्रथया बा रदेवलोकना १२ सूत्र नव ग्रैवेयकना ९ सूत्र पचअनुत्तरना १ सूत्र ईषत्प्राग्भारानो १ सूत्र इम ५२ सूत्र थया ते धर्मास्तिकायनो असख्यातमोभाग फरसे इत्यादि आलावेकरी कहवा, तिहा आकाशांतर सख्यातमेभागे फरसे बीजा सब असख्यातमेभागे फरसे । विस्तरार्थमध्ययनमालोकयेत । अल्पसो । एह बी जा शतकनो दशमो उद्देशा अर्थथी कह्यो ॥ १ ॥ २ ॥ द्वितियशतकसपूर्ण । एबीजा शतक अर्थथी पूर्णथयो ॥ २ ॥